प्रकाशक
मुक्तवाणी प्रकाशन
मॉडर्न मार्केट
बीकानेर

मूल्य तीस रुपये मात्र

प्रथम संस्करण

मुद्रक
शिक्षा-भारती प्रेस
बीकानेर

विषय सूची

भारत महिमा

बता दो उस धरती का नाम
युग-युग में जहां पैदा होते
गांधी, गौतम, राम
बता दो उस धरती का नाम
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान
बता दो·····

(वर्माजी के गीतो, में से)

निवेदन

२४ जनवरी को लेखक अपने कक्ष मे बैठा हुआ एक लेख लिख रहा था कि फोन की घन्टी बजी और यह हृदय विदारक समाचार मिला कि उदयपुर में श्री माणिक्यलाल वर्मा का स्वर्गवास हो गया। इस समाचार से लेखक को ऐसा गहरा आघात लगा कि अल्पकाल के लिए लेखक सज्ञाशून्य सा हो गया। तेतालीस वर्षो के दीर्घ काल के वर्माजी से निकट संबध की स्मृतिया उसके मानसपटल पर चल-चित्र की भांति एक के बाद दूसरी उभर आई। सोचा कि शोषितो और पीड़ितो का परम हितैषी, उनके लिए जीवन भर सघर्ष करनेवाला महान देशभक्त, मेवाड़ तथा राजस्थान की राजनैतिक जागृति का सूत्रधार, जिसने अपने को देश के लिए खपा दिया, एक वीर योद्धा जिसने कभी अन्याय और अत्याचार से समझौता नही किया, चला गया।

दूसरे दिन शोकसंतप्त वर्मा परिवार के शोक में सम्मिलित होने के लिए उदयपुर पहुँचा। वर्माजी से निकट की आत्मीयता होने के कारण उनके परिवार से मेरा घनिष्ट संबंध रहा है। उनकी पुत्रिया और पुत्र दीनबन्धु मेरे शिष्य रहे है। मैने बहिन जी श्रीमती नारायणी देवी को सावधान किया कि वर्मा जी की डायरियो तथा उनके समस्त पत्रव्यवहार को सावधानी से सुरक्षित कर लें वे इधर उधर न हो जावें क्योकि उनकी डायरियो तथा पत्रो मे मूल्यवान सामग्री उपलब्ध होगी। उस समय श्रीमती नारायणी देवी वर्मा तथा उनकी सभी पुत्रियो तथा पुत्र ने यह इच्छा प्रगट की कि मै वर्माजी की जीवनी लिखूं। वर्माजी जैसे शीर्षस्थ महत्वपूर्ण राजनीतिक नेता की जीवनी लिखने के लिए लेखको का अभाव नही रहता। तत्कालीन मुख्य मत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया की भी यह गहरी इच्छा थी कि वर्माजी के यशस्वी और गौरवपूर्ण व्यक्तित्व के अनुरूप ही उनकी जीवनी प्रकाशित की जावे, अतएव अनेक प्रतिभावान और यशस्वी लेखक इस कार्य को अपने हाथ मे लेने के लिए तैयार हो सकते थे। परन्तु वर्मा परिवार तथा वर्माजी के प्रशसको ने मुझे यह उत्तरदायित्व सौपा तो मै अपने में उनके विश्वास की अवहेलना न कर सका और मैने एक क्षण भी सोचे बिना वर्माजी की जीवनी लिखना स्वीकार कर लिया। सोचा कि वर्माजी से जो मेरा तेतालीस वर्षो का निकट का सम्बन्ध रहा है उनसे जो गहरी आत्मीयता रही है, उसके स्मृति चिन्ह स्वरूप उनकी जीवनी को लिख कर मुझे आत्मसंतोष और सुख प्राप्त होगा, और उनके कार्यकलापो की अधिक जानकारी प्राप्त होगी। अतएव मै वर्माजी की डायरियो, समस्त पत्रव्यवहार की फाइलो, उनकी मासिक रिपोर्टो की प्रतिया, उनके अपने सस्मरण आदि सभी सामग्री ले आया।

जब मैने वर्माजी की उन डायरियो तथा पत्रों को पढना और आवश्यक नोट लेना आरंभ किया तो मुझे अनुभव हुआ कि वर्माजी के कार्य का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उस पर पुस्तक लिखना सरल नही है वर्माजी महीने मे केवल तीन चार दिन अपने

मकान या खेत पर रहते, शेष समय अपने कार्यक्षेत्र में दौरा करते थे। प्रतिमास वे अपने कार्य की रिपोर्ट उन केन्द्रीय संस्थाओ को भेजते जिनसे उनका संबंध था। वे अपनी नियमित डायरी लिखते। उनकी सभी डायरियां मुझे मिलीं परन्तु १९४८-४९ की डायरी नही मिली जबकि वे पूर्व राजस्थान के मुख्यमंत्री बने थे। संभवत उन्होने वह डायरी सरदार पटेल को दी होगी और वह गृह मंत्रालय की किन्ही फाइलों मे दबी पटी होगी।

वर्माजी के बहुसख्यक प्रशसको अनुयायियो तथा उनके सहयोगियों से मैं मिला, उनसे पत्रव्यवहार किया। राजस्थान स्टेट आरकाइव्ज (पुरालेख विभाग) बीकानेर मे दस दिन रह कर उनके सबंध मे सभी कागज देखे। दो बार बिजोल्यां जाकर बिजोल्या आन्दोलन के समय उनके साथियो और ग्रामवासियो से जानकारी प्राप्त की। खेड़लाई गया जहा रह कर वर्माजी ने भीलो में रचनात्मक कार्य किया था। कुमारी डाक्टर पद्मजा शर्मा ने मेरे लिए नेहरू म्यूजियम तथा नेशनल आरकाइव्ज दिल्ली मे बिजोल्यां आन्दोलन सम्बन्धी सामग्री के नोट उपलब्ध कर दिए। सर्वश्री भोगीलाल पडया ने, वर्माजी ने जब डूंगरपुर मे भीलसेवा कार्य किया था उसका विवरण, श्री अमृतलाल यादव ने वर्माजी के सम्बन्ध मे अपने संस्मरण, श्री ओंकार लाल बोहरा ने वर्माजी के अंतिम वर्षो मे उनके विचारो के संबंध मे लिख भेजा, श्री बनवारी लाल गौड ने तथा श्री सत्यदेव व्यास ने आदिवासी तथा सीमा क्षेत्र मे वर्माजी के कार्य की जानकारी उपलब्ध की। श्री गरणपतलाल वर्मा ने बिजोल्यां आन्दोलन संबधी जानकारी दी परन्तु मुझे खेद है कि श्री नरेन्द्रपाल चौधरी मेवाडप्रजा मंडल संबंधी उन कागजो को जो कि वे कहते है उनके पास है मुझे न दे सके।

जब मैंने उस समस्त सामग्री को पढा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वर्माजी का कार्यक्षेत्र कितना विस्तृत था। पुस्तक का कलेवर बहुत अधिक न बढ जावे इस कारण सक्षेप मे ही उनकी गतिविधियो और कार्यो का ब्यौरा देकर सतोष करना पडा। वर्माजी मेवाडी भाषा मे गीत बनाते थे और अपने विचारो का उनके द्वारा ग्रामीण जनता मे प्रचार करते थे। बिजोल्या आन्दोलन के समय जो उन्होने पछीड़ा बनाया था। वह एक इतिहास बन गया है। इसी प्रकार उनके जीवन के अंतिम दिनो के गीतो मे उनकी अन्तरवेदना और रोष फूट पडा है। यद्यपि उनके सभी गीतो को देना तो संभव नही था परन्तु कुछ चुने हुए गीत मैंने दिए हैं क्योकि वे गीत उनके विचारो को प्रतिध्वनित करते है।

वर्माजी ने केवल राजस्थान की राजनीति को ही प्रभावित नही किया वरन उन्होने देश की राजनीति को भी प्रभावित किया था। उन्होने अपने समकालीन राजनीतिक सहयोगियो तथा कांग्रेस कार्यकर्त्ताओ के सबध मे विचार अपनी डायरी तथा संस्मरण में व्यक्त किए हैं। उनके उन विचारों को न देना फिर चाहे वे व्यक्ति विशेष के लिए शोभाजनक अथवा प्रशसात्मक न हो वर्माजी के प्रति अन्याय होता। यदि उनके

जीवन काल में लिखने का प्रश्न उपस्थित होता तो उनसे बात करके उन व्यक्तियो के संबंध में लिखा जा सकता था परन्तु उनके पीछे उनके विचारो का संशोधन करने का लेखक को नैतिक अधिकार नहीं है इस कारण लेखक ने उनके विचारो को ज्यो का त्यो दे दिया है परन्तु साथ ही पुरालेख विभाग (आरकाइव्ज) के तत्संबंधी पुरालेखों की छानबीन करके लेखक ने इस बात का भरसक प्रयत्न किया है कि किसी के प्रति अन्याय न हो। यह कार्य अत्यन्त कठिन था अतएव मै नहीं कह सकता कि उसमे कहाँ तक सफलता मिली है।

वर्माजी के कार्यो, उनके विचारों और सार्वजनिक जीवन मे उनकी आश्चर्यजनक प्रगतिशीलता का पाठकों को दिग्दर्शन हो सके और राजस्थान तथा देश की भावी पीढियां उनके प्रेरणामय जीवन से प्रेरणा लेकर देश तथा पिछड़े और शोषित वर्गो के लिए अपने जीवन को उनकी भाति उत्सर्ग करने की तैयारी कर सकें, इसी उद्देश्य से लेखक ने उनकी जीवनी को लिखने का दुस्साहस किया है। लेखक अपने लक्ष्य मे कहां तक सफल हुआ है यह तो पाठक ही बता सकेंगे। लेखक को तो केवल इस बात का संतोष और हर्ष है कि अपने अत्यन्त आत्मीय और स्नेही वर्माजी जैसे महान देशभक्त के जीवन चरित्र को लेखबद्ध करने का अवसर उसे मिला।

खेद है कि वर्माजी के भक्तो, अनुयायियो और राजनीतिक शिष्यो ने उनकी स्मृति को चिरस्थायी करने का कोई प्रयत्न नही किया। सरकार ने कतिपय शिक्षण संस्थाओ का नामकरण अवश्य उनके नाम पर कर दिया है। आशा है कि राजस्थान में हजारो की संख्या मे बिखरे हुए कार्यकर्त्ता जिन्होने वर्माजी के चरणो मे बैठकर देश सेवा के कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया और उनके प्रगतिशील नेतृत्व मे वर्षो कार्य किया है तथा उनके सैकडो सहयोगी शीघ्र ही उनकी स्मृति को चिरस्थायी करने का प्रयत्न करेंगे।

जयपुर

—शंकर सहाय सक्सेना

अध्याय पहला

प्रथम और अंतिम दर्शन

सन् १९२६ के मार्च महीने की बात है दिन और तारीख तो आज याद नही आ रही है। श्री हरिभाऊ उपाध्याय उदयपुर मे मुझसे मिलने आये थे। उस समय मैं महाराणा कॉलेज मे व्याख्याता के पद पर अध्यापन कार्य करता था। पथिक जी जेल मे थे और उस समय हरिभाऊ जी बिजोल्या पचायत के परामर्शदाता थे। मेरा उनका परिचय 'त्यागभूमि' के लेखक के नाते पत्रव्यवहार मे हो गया था। वे उस समय त्यागभूमि' के सम्पादक थे। क्योंकि मैं अर्थशास्त्र का विद्यार्थी था और विशेषकर ग्राम्य अर्थशास्त्र पर लिखता था वे मुझसे बिजोल्या के किसानों की लगान सबंधी समस्याओ पर सुझाव लेने आए थे। दूसरे ही दिन उन्हे मेवाड राज्य के तत्कालीन सैटिलमेंट कमिश्नर श्री ट्रैंच से बिजोल्या सम्बन्धी चर्चा करनी थी। मुझे उस समय उदयपुर आए कुछ महीने ही हुए थे। अतएव बिजोल्या सत्याग्रह के संबन्ध मे पथिक जी के अतिरिक्त मैं अन्य किसी से परिचित नही था।

जब श्री हरिभाऊ जी मेरे निवास स्थान पर आए तो मैंने देखा कि उनके साथ एक सज्जन और है। श्री हरिभाऊ जी ने प्रथम तो अपना परिचय दिया फिर अपने साथी की ओर सकेत करके मुझे बताया कि उक्त सज्जन बिजोल्या निवासी श्री विजय सिह पथिक के अनन्य सहयोगी और साथी श्री माणिक्यलाल वर्मा है, जिन्होने बिजोल्या ठिकाने के किसानो का अभूतपूर्व सगठन किया है और उनके नेतृत्व मे किसानो ने ठिकाने से मोर्चा लिया है।

खद्दर का कुर्त्ता, दो लांगवाली खद्दर की ऊची धोती, सिर पर श्वेत गाधी टोपी, पैरो में देशी जूता और हाथ में खादी का एक झोला जिसमें कुछ कागज पत्र थे लिए वे मेरे सामने खडे थे। मेरी दृष्टि श्री हरिभाऊ जी से हट कर उन पर गई। देखा कि उनके चेहरे पर स्वाभिमान, आत्म-विश्वास और दृढता का प्रतिबिम्ब अपने सम्पूर्ण तेज से उद्भासित था। मैं सहज ही उनके आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित हो गया।

जब बिजोल्यां की चर्चा छिडी और श्री वर्मा जी मुझे बिजोल्यां सत्याग्रह की कहानी सुनाने लगे तो मैं आश्चर्य चकित रह गया। मेरे सामने एक ऐसा क्रांतिकारी व्यक्ति बैठा था जिसने भारत के प्रथम किसान सत्याग्रह का, श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व में सचालन किया था, जिसने विधिवत किसी उच्च शिक्षण सस्था मे शिक्षा नही पाई थी, परन्तु जिसने मानव सेवा, निस्सहाय पीड़ित और शोषित निर्धन किसानो के कष्टो को मिटाने का सकल्प

लिया था, और सेवा और त्याग के विश्वविद्यालय मे दीक्षा प्राप्त की थी ।

जब वे बिजोल्या किसान आन्दोलन की प्रेरणादायक कहानी सुना रहे थे और तत्सबन्धी राज्य सरकार तथा बिजोल्या ठिकाने के सम्मिलित भयकर दमन और अत्याचारो का ब्योरा सुना रहे थे, तो वे बीच बीच मे अट्हास करते हुए उस रोमाच उत्पन्न कर देने वाले घोर दमन का विवरण देते जा रहे थे । मै उनकी ओर भौचक्का हो देख रहा था, और मन ही मन आश्चर्य चकित हो सोच रहा था कि अद्भुत है यह व्यक्ति जो राज्य और ठिकाने के भयकर दमन की कहानी इस प्रकार सुना रहा है जैसे वह कोई रोचक अभिनय देख कर लौटा हो और उन दृश्यो का विवरण सुना रहा हो जो उसे रोचक लगे हो ।

आज उस बात को ४५ वर्ष हो गए । वर्मा जी से मेरा सबन्ध घनिष्ठ होता गया । बहुधा उनसे मिलना होता । परन्तु मेरे जैसे व्यक्ति के लिए उस समय मेवाड़ जैसे देशी राज्य मे नौकरी कर सकना कठिन था । मेवाड के स्फूर्तिदायक और गौरवपूर्ण इतिहास, महाराणा प्रताप, हल्दी घाटी और चित्तौर का रोमाचकारी इतिहास, मुझे खीच कर मेवाड लाया था । बिजोल्या किसान सत्याग्रह मेवाड के गौरवपूर्ण इतिहास की परम्परा मे एक नया उज्ज्वल और प्रकाशवान अध्याय और जुड गया था । पथिक जी और वर्मा जी उसके दो तेजोमय नक्षत्र थे, वे भी मेरे आकर्षण के केन्द्र बन गए । मेवाड के प्रति गहरा आकर्षण और ममता होते हुए भी लेखक के लिए उस समय मेवाड मे रहना सभव नही था अतएव वह मेवाड छोडकर बरेली कॉलेज-उत्तर प्रदेश मे चला गया । परन्तु मेवाड से और वर्मा जी से मेरा सबन्ध टूटा नही । पत्रव्यवहार होता, प्रतिवर्ष ग्रीष्म अवकाश मे आता तो उनसे मिलता तथा विचार विनिमय होता । जब वर्मा जी कुम्भलगढ की नजरबन्दी के बाद डूगरपुर राज्य मे सागवाडा के पास खडलाई मे भीलो मे रचनात्मक कार्य कर रहे थे तो उनके कार्य को देखने का सौभाग्य लेखक को मिला था । जितना अधिक वर्मा जी के सम्पर्क मे आने का अवसर लेखक को मिला उतना ही अधिक वह उनकी ओर आकर्षित और श्रद्धावान होता गया, उनका भी लेखक पर प्रगाढ स्नेह होता गया । वे अपने सभी राजनीतिक और रचनात्मक कार्यो के सबन्ध मे मुझसे चर्चा करते और मुझे विश्वास मे लेते थे ।

लेखक को यह तो आरम्भ मे ही समझ मे आ गया था कि वर्मा जी जन्मजात प्रगतिशील व्यक्ति थे । किन्तु जैसे जैसे उनसे लेखक का सम्पर्क बढता गया उसे यह देखकर थोडा आश्चर्य हुआ कि केवल राजनीतिक सघर्ष और शोषित और पीडितो के कष्टो को मिटाने के लिए किए जानेवाले सघर्षो मे ही उनके क्रान्तिकारी विचारो और जीवन की झलक दृष्टिगोचर नही होती थी परन्तु वे समाज की कुरीतियो पर भी उतनी ही तीव्रता से प्रहार करते थे । बिजोल्या जैसे यातायात के साधनो से हीन अत्यन्त पिछडे प्रदेश मे सामन्ती ठिकाने के रूढिवादी कर्मचारी परिवार मे जन्म लेनेवाला और अग्रेजी शिक्षा से वचित तथा रूढिग्रस्त किसानो मे जागरण का कार्य करनेवाला व्यक्ति केवल राजनीति और आर्थिक क्रान्ति का ही उपासक नही था वरन सामाजिक क्रान्ति का भी प्रबल समर्थक हो यह मुझे आश्चर्य मे डाल देता था । पारिवारिक परम्पराओ, प्राचीन सस्कार तथा जिस वातावरण मे मनुष्य पलता है उसका प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से उसके अन्तर मे ऐसा

प्रविष्ट हो जाता है कि जीवन भर उसका प्रभाव बना रहता है। परन्तु रूढिवादी वातावरण और परम्पराओ मे जन्म लेकर और बडे होने पर भी वर्मा जी सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त प्रगतिशील और क्रान्तिकारी थे यह उनके जन्मजात क्रान्तकारी विचारो का होने का प्रमाण था। जब मै देखता कि वर्मा जी अपने मित्रो सहकर्मियों तथा परिचितो के यहा भोजन करने मे यह शर्त लगाते कि उनकी पत्नी घूघट खोलकर परसकारी करेगी, विवाह मे सम्मिलित होने मे यह आग्रह करते कि कन्या घूंघट नही रखेगी, भीलो तथा पिछडी जातियो से यह प्रतिज्ञा कराते कि वे अपनी पुत्री को बेचेगे नही तब मैं सोचता कि वे राजनीतिक तथा आर्थिक क्रान्ति से भी अधिक सामाजिक क्रान्ति के समर्थक है।

डूंगरपुर मे रचनात्मक कार्य करते हुए वर्मा जी को यह सत्य स्पष्ट हो गया कि देश के स्वतत्र हुए बिना और राज्यो मे उत्तरदायी शासन स्थापित हुए बिना न तो किसानो, पीडितो और शोषितो के कष्टो का निवारण ही हो सकता है और न देश प्रगति ही कर सकता है। जब लेखक खडलाई मे उनसे मिलने गया तो यह विचार उनके हृदय को उद्वेलित कर रहा था। लेखक ने उनके विचार का समर्थन किया और मेवाड राज्य मे उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन करने के उद्देश्य से मेवाड प्रजामडल की स्थापना के उनके विचारो को मूर्तरूप देने का आग्रह किया।

मेवाड से वर्मा जी निर्वासित थे, उसकी तनिक भी परवाह न कर उन्होने मेवाड प्रजामंडल की १६३० मे स्थापना की और साईकिल पर ही मेवाड का दौरा कर मेवाड प्रजामडल के सदेश को मेवाड के ग्रामो और कस्बो मे पहुचाया। लेखक को लिखा "सकसेना जी, मेवाड की जनता मे अभूतपूर्व उत्साह है हजारो की सख्या मे मेवाडी प्रजामडल के सदस्य बन रहे हैं आप शीघ्र आइये आपसे आवश्यक परामर्श करना है।" मै तुरन्त ही उदयपुर की ओर चल पडा। चित्तोड़गढ स्टेशन के उदयपुर चित्तोर रेलवे के प्लेटफार्म पर प्रात काल टहल रहा था कि मेरा एक भूतपूर्व छात्र जो पुलिस इन्स्पेटर था मिला और उसने सूचना दी कि कल ही मेवाड प्रजामडल गैरकानूनी घोषित कर दिया गया है और पुलिस बडी सतर्कता से मेवाड प्रजामडल के कार्यकर्ताओ तथा सहायको की गतिविधियो पर कडी दृष्टि रख रही है। उसने मुझे परामर्श दिया कि मै उदयपुर न जाऊ। मन मे भॉति भॉति के विचार उठने लगे, और सोचने लगा कि कही ऐसा तो न हो कि वर्मा जो शीघ्र गिरफ्तार हो जावे उनसे मिलना भी न हो सके। मन मे एक के बाद दूसरा विचार तेजी से आ रहा था। मेवाड राज्य मेवाड प्रजामडल पर इतना शीघ्र प्रहार करेगा इसकी मुझे भी कल्पना नही थी उदयपुर चित्तौर रेलवे ट्रेन मे उदास मन बैठ गया। उदयपुर स्टेशन पर मेरे कई भूतपूर्व छात्र तथा मित्र मिले उनसे यह जानकर सतोष हुआ कि राज्य सरकार ने अभी वर्मा जी अथवा अन्य किसी को गिरफ्तार नही किया है। वर्मा जी स्वय स्टेशन नही आए थे परन्तु उन्होने एक विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा कहलाया था वे शीघ्र से शीघ्र मुझसे मिलना चाहते है आवश्यक परामर्श करना है। मैंने वर्मा जी को उक्त सज्जन द्वारा सूचित कर दिया कि मै अपने भूतपूर्व छात्र श्री विजयलाल मेनारिया के मकान पर ठहरूंगा जो कि जनाने अस्पताल के सामने सड़क पर है। श्री विजयलाल मेनारिया उस समय मेवाड राज्य सरकार

कि स्टोर विभाग के अधिकारी थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या ऐसी परिस्थिति में वर्मा जी से उनके मकान पर मिलना उचित होगा। उन्होंने बडे साहस के साथ कहा कि वर्मा जी से मकान पर ही मिलिए बाहर मिलेगे तो पुलिस की दृष्टि से बच नही सकेंगे क्योंकि प्लेटफार्म पर भी पुलिस आप पर दृष्टि रख रही है आप जहा जावेगे पुलिस आप पर नजर रखेगी। परन्तु मेरे मकान के पीछे तग गली मे एक गुप्त द्वार है वर्मा जी उससे आवेगे सामने सडक के दरवाजे से न आवे क्योकि सामने के द्वार पर पुलिस की दृष्टि रहेगी। दोपहर को वर्मा जी आए। उन्होने तब तक की सारी घटनाओ का वर्णन किया। जनता मे मेवाड प्रजामडल के लिए अभूतपूर्व उत्साह था। एक सप्ताह के अन्दर ही कई हजार सदस्य बन गये थे। सदस्यों मे व्यापारी, राज्यकर्मचारी, साधारण कार्यकर्त्ता सभी लोग थे। गावो मे भी प्रजामडल के लिए वर्णनातीत उत्साह था किसान मजदूर धडाधड सदस्य बन रहे थे कि राज्य ने प्रजामडल को गैरकानूनी घोषित कर दिया। वर्मा जी ने लेखक से कहा "सकसेना जी, मुझे स्वय को यह कल्पना नही थी कि प्रजामडल का ऐसा अभूतपूर्व स्वागत होगा। परन्तु अब समस्या यह है कि राज्य की पुलिस बडी सरगर्मी से सदस्यो के नामों का पता लगाने का प्रयत्न कर रही है तथा प्रजामडल के रेकार्ड की खोज मे ऐडी से चोटी का पसीना बहा रही है यदि दुर्भाग्यवश सदस्यता के प्रतिज्ञापत्र तथा रजिस्टर आदि पुलिस के हाथ मे पड गए तो हजारो व्यापारियो और राज्य कर्मचारियो को अपनी आजीविका से हाथ धोना पडेगा और शेष को पुलिस बहुत तग करेगी उसका परिणाम यह होगा कि आगे प्रजामडल पर तथा मुझ पर जनता का विश्वास उठ जावेगा और भविष्य मे मेवाड प्रजामडल को पुनः स्थापित कर सकना भी संभव नहीं होगा। प्रजामडल के रेकार्ड को नष्ट किया जा सकता है परन्तु उसके नष्ट हो जाने पर हमे भविष्य मे प्रजामडल से जो लोग सहानुभूति रखते है उनका पता भी नही रहेगा तथा समस्त सूत्र खो जावेगे। प्रजामडल के कार्य की दृष्टि से रेकार्ड को सुरक्षित रखना आवश्यक है। अभी प्रजामडल को गैर कानूनी घोषित हुए दूसरा दिन है हम रेकार्ड को प्रत्येक रात्रि एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाते रहे है। आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अब इसे अधिक समय तक उदयपुर मे रखना भयकर हो सकता है। मैने यह भी निश्चय किया है कि मेवाड प्रजामडल का कार्यालय अजमेर मे स्थापित किया जावे और प्रजामडल के कार्यो को वहा से सचालित किया जावे अतएव इन कागजो को शीघ्र से शीघ्र अजमेर पहुचाना चाहिए। पुलिस बहुत सतर्क है। जो भी व्यक्ति कागजो के सन्दूक को ले जावेगा कागजो के साथ गिरफ्तार हो जावेगा। जिस पर तनिक भी पुलिस को सदेह है कि वह प्रजामडल से सहानुभूति रखता है उसकी तलाशी लिए बिना पुलिस स्टेशन तक किसी को भी नही जाने देती। दाग चुँगी पर सबके सामान की तलाशी ले रही है। बिना विश्वसनीय व्यक्ति के यह कागज किसी को दिए भी नही जा सकते। आप स्वय तो इन्हे ले नही जा सकेंगे क्योंकि आपके सामान की भी तलाशी ली जावेगी परन्तु यदि आपके शिष्यो मे कोई भरोसे का व्यक्ति हो तो यह कार्य हो सकता है।

मैंने वर्मा जी से कहा कि आप आज रात्रि को बारह बजे उस सदूक को मेरे पास पहुचा दीजिए, आगे की व्यवस्था मेरे ऊपर छोड दीजिए। वर्मा जी चले गए मैने अपने एक

प्रिय शिष्य "हेनरी" को बुलाया । ईसाई होने के कारण उस पर किसी को सदेह नही हो सकता था उसका राजनीति की ओर तनिक भी आकर्षण नही था । मैने उसे हाकी खेलना सिखाया था वह एक वहुत अच्छा खिलाडी था, उस कारण मेरे वहुत निकट था और मेरा प्रिय था । मैने उसको परिस्थिति से अवगत कराया और हैनरी से कहा हैनरी, यह जोखिम का काम है क्या तुम इसे कर सकोगे ? उसने कहा, "मास्टर साहव" वह मुझे इसी प्रकार सम्वोधित करता था प्रजा मडल से तो मुझे कोई वास्ता नही है पर आप चाहते है तो मैं यह कार्य सहर्ष करूंगा । फिर भी मे यह नहा चाहता था कि हैनरी को अधिक जोखिम मे डालू । क्योकि अन्तत जव पुलिस को यह पता तो चल ही जावेगा कि प्रजामडल के कागजात मेवाड़ से वाहर निकल गए और यदि उसको यह पता चल गया कि हेनरी उनको निकाल ले गया तो भविष्य मे उसको तथा उसके भाई जान शोर को और उसके पिता को वडी कठिनाई उठानी पड़ती । अतएव मैने उसको कहा कि वह मेरे पास से रात्रि को ट्रक ले जावे और दूसरे दिन एक तागे मे रखकर वह स्टेशन पहुच जावे । उस ट्रंक को वह जिस रेल के डिव्वे मे रखे मुझे वतला दे और वह चला जावे । जिस डिव्वे मे म वैठूं उसमे उस ट्रंक को कदापि न रखे ।

रात्रि को वर्मा जी वारह वजे स्वय अपने सिर पर उस भारी ट्रक को रखकर लाए और उसको मुझे सौंप गए । निश्चय अनुसार हेनरी उसको ले गया । दूसरे दिन जब मै स्टेशन को चला तो मैने देखा कि गुप्तचर मुझ पर वरावर नजर रख रहे हे । दाण चौकी पर पुलिस ने मेरे तागे को रोक लिया मेरे होलडआल, ट्रक तथा वैग की तलाशी ली गई । उसी समय हैनरी उस ट्रक को तागे मे रखे हुए वहा से निकला उसने मेरी ओर तनिक भी ध्यान नही दिया । तलाशी समाप्त होने पर मेरा छुटकारा हुआ और स्टेशन पर आया । जिस डिव्वे मे मैं वैठा उसके चारो ओर पुलिस लगी थी यहा तक कि स्वय मेवाड़ के इस्पैक्टर जनरल प्लेटफार्म पर उपस्थित थे । हैनरी ने मेरे पास वाले अजमेर के थर्ड क्लास की एक सीट के नीचे उस ट्रक को रख दिया और विजयलाल मेनारिया के द्वारा मुझे सूचित कर दिया कि ट्रक कहा रखा है । ट्रेन जव तक चली नही तव तक पुलिस मेरे डिव्वे को घेरे रही उन्हे यह सदेह था कि ट्रेन के चलने पर कोई मुझे कागज इत्यादि न दे दे । चित्तौरगढ जकशन तक पुलिस के आदमी आए ।

प्रात.काल चार वजे जब गुलाबपुरा (मेवाड़ राज्य की सीमा मे अन्तिम स्टेशन) निकल गया और विजयनगर (व्रिटिश राज्य) आया तो उस ट्रक को मैने अपने पास ले लिया और अजमेर मे श्री ऋषिदत्त मेहता जो राजस्थान पत्र का सम्पादन करते थे उनको सुपुर्द कर वर्मा जी को सूचित कर दिया कि मेवाड़ प्रजामडल के कागज सुरक्षित राजस्थान प्रस मे श्री ऋषिदत्त मेहता के पास पहुच गए है । मै वहा से उत्तर प्रदेश चला गया ।

वर्मा जी ने अजमेर मे मेवाड़ प्रजामडल का कार्यालय खोल दिया और सत्याग्रह आरभ हो गया । लेखक ने कलकत्ते मे जो भी मेवाड़ी छात्र शिष्य थे उन्हे लिखा और बाहर से जो भी आर्थिक सहायता हो सकती थी उसकी व्यवस्था की ।

मेवाड़ प्रजामडल के सत्याग्रह के सवन्ध मे लेखक ने वर्मा जी की इच्छानुसार पत्रो मे

प्रचारात्मक लेख लिखना आरंभ किया । अन्त मे लम्बे समय के उपरान्त मेवाड प्रजामडल पर से रोक उठी और वर्मा जी जेल से रिहा हुए उन्होने पुनः जोर शोर से प्रजामडल का सगठन किया । प्रजामडल एक शक्तिशाली सगठन बन गया । तब से मृत्यु पर्यन्त वर्मा जी का स्नेह और विश्वास लेखक पर गहरा बना रहा ।

भारत स्वतत्र हुआ, पूर्व राजस्थान की स्थापना हुई श्री वर्मा जी मुख्य मत्री बने । उनके मत्रि मडल मे शिक्षा मत्री श्री प्रेमनारायण माथुर के आग्रह तथा वर्मा जी की इच्छा को शिरोधार्य कर लेखक महाराणा भूपाल कालेज के आचार्य पद को स्वीकार कर उदयपुर आ गया । कुछ समय उपरान्त राजस्थान की राजनीति मे भारी परिवर्तन हुए । वृहद राजस्थान बना । श्री हीरालाल शास्त्री के मत्रीमडल मे चले जाने के कारण श्री प्रेमनारायण माथुर तथा वर्मा जी मे गहरी खाई बन गई, श्री प्रेमनारायण माथुर का लेखक का घनिष्ट सबन्ध था परन्तु फिर भी वर्मा जी का लेखक पर पूर्ववत् विश्वास और स्नेह बना रहा । उनके व्यवहार मे और आत्मीयता मे तनिक भी अन्तर नही आया । श्री प्रेमनारायण माथुर का और लेखक का जो घनिष्ट पारिवारिक सबन्ध था उसके कारण वर्मा जी के स्थान पर अन्य व्यक्ति होता तो वह लेखक से सशकित हो उठता । कतिपय राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ ने लेखक के विरोधी दल से घनिष्ट सबन्ध की ओर सकेत कर वर्मा जी को सावधान भी किया तो उन्होने मुस्करा कर यही कहा "तुमने जब राजनीति मे प्रवेश भी नही किया था तब से मै सक्सेना जी को जानता हू" यह वर्मा जी की उदार हृदयता का एक प्रमाण है । उदयपुर मे महाराणा भूपाल कालेज के आचार्य पद पर लेखक को ग्यारह वर्ष रहना पडा । बहुधा वर्मा जी से मिलना होता, देश की परिस्थिति पर कांग्रेस सगठन तथा कांग्रेस सरकार की नीतियो के सबन्ध मे उनसे लबी चर्चा होती । वे खुलकर बात करते परन्तु वर्मा जी का ध्यान अधिकतर पिछडी जातियो के उत्थान की ओर अधिक लग रहा था । उन्होने आदिम जातियो मे कार्य करने के लिए आदिम जाति के तरुणो को प्रशिक्षण देने के लिए एक सस्था स्थापित की तो उसके सचालन का भार मुझे सौपा ।

राजस्थान सरकार ने जब मेरी नियुक्ति डायरेक्टर कालेज शिक्षा के पद पर करदी और मै उदयपुर से बीकानेर चला गया तो आदिम जाति के तरुणो के प्रशिक्षण से लेखक का सबन्ध समाप्त हो गया । परन्तु बहुधा जब भी लेखक उदयपुर जाता अथवा दौरे मे अन्य स्थानो पर वर्मा जी से मिलना होता तो देश तथा कांग्रेस के सगठन के सबन्ध मे गभीर वार्ता होती ।

जब मैने विश्वविद्यालय राजस्थान कालेज से जुलाई १९६८ मे अवकाश ले लिया उसके कुछ ही समय उपरान्त श्री वर्मा जी राजस्थान खादी बोर्ड के सचालक बनकर जयपुर आए । उन्हे यह ज्ञात हो चुका था कि मै नौकरी से मुक्त हो चुका हू अतएव जिस दिन उन्होने खादी बोर्ड का कार्यभार सम्हाला उसी दिन सबसे पहला कार्य यह किया कि वे एक खादी कार्यकर्त्ता को लेकर मेरे मकान पर इस उद्देश्य से आये कि मैं उनकी खादी बोर्ड के कार्य मे सहायता करूँ । दुर्भाग्यवश मै बाहर गया हुआ था इस कारण मिलना न हो सका । वे मेरे नौकर को एक पत्र दे गए । जब मैं कुछ दिनो बाद जयपुर वापस आया तो मुझे उनका

पत्र मिला। पता लगाया तो वे लम्बे दौरे पर निकल गये थे। दो तीन महीने बाद जब वे अपने लबे दौरे से वापस आएतो मिलना हुआ। दो घटे तक लबी वार्ता हुई। उनकी इच्छा थी कि अब क्योंकि मे वचन मुक्त हो गया हू मे उनके नए कार्य मे सहायक बनू। बोले सक्सेना जी, मैने खादी बोर्ड का कार्य इसीलिए स्वीकार किया है कि आदिवासी पिछडी जातियो और सीमा-क्षेत्र की निर्धन जनता की खादी और ग्रामोद्योग द्वारा निर्धनता और भूख को समाप्त किया जा सके। जब मै उनमे जाता हू तो सोचता हूँ कि स्वतत्रता का उनके लिए कोई अर्थ नही हे। मेरा मन उनकी दयनीय स्थिति को देखकर पीडा से भर जाता है। आपने ग्राम्य अर्थशास्त्र का विशेष अध्ययन किया हे अभी तक आपने शिक्षा का कार्य किया अब मुझे किसानों, आदिवासियो, पिछडी जातियो और सीमा क्षेत्र के ग्रामीणो की दैन्यता से सघर्ष करने मे सहायता दीजिए।" वर्मा जी के उस आवाहन को अस्वीकार न कर सका मैने स्वीकृति दे दी। वर्मा जी फिर सीमा के दौरे पर जाने वाले थे। निश्चय यह हुआ कि उनके वापस आने पर कार्य की रूपरेखा तथा योजना पर विचार करेगे।

जब मे उनसे मिलकर लोटा तो कार मे बैठे बैठे मे सोच रहा था कि कैसा अद्भुत है यह व्यक्ति, जीवन भर देशी राज्य के निरकुश शासन से जूझने के उपरान्त आज भी उसी उत्साह के साथ दैन्यता मे सघर्ष करने को तैयार हे। यद्यपि वर्मा जी अपने अन्तिम दिनो मे काग्रेस दल से सतुष्ट नही थे, उन्हे हार्दिक क्षोभ था परन्तु उनके उत्साह मे और कार्यक्षमता मे तनिक भी शिथिलता का चिन्ह दृष्टिगोचर नही हो रहा था। यही नही उनकी दृष्टि सदैव ऐसे लोगो की खोज करती रहती थी जो उनके साथ कार्य कर सके। आज के इस सत्ता और आपाधापी के युग मे वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनमे क्राति की भावना उसी तेज से विद्यमान थी जो कि आज से पचास वर्ष पूर्व भारतीय देशभक्तो और क्रातिकारियो मे थी। स्वतत्रता प्राप्ति के उपरान्त काग्रेस जनो मे जो सत्ता और पद के लिए अशोभनीय मोह उत्पन्न हो गया था और उसके कारण उनका व्यवहार और आचरण जनता की आलोचना का विषय बन गया वर्मा जी उससे बहुत दूर थे। यही कारण था कि उनमे क्रातिकारी भावना लुप्त नही हुई थी, वे पहले की ही भाति तेजवान थे।

परन्तु वर्मा जी के साथ किसानो, आदिवासियो और पिछडे वर्ग मे कार्य कर सकने का सौभाग्य लेखक को नही मिल सका। लेखक का उनसे यह अन्तिम मिलन था। उसके कुछ दिनो दो सप्ताह बाद ही उस महापुरुष ने महाप्रयाण किया। उनके महाप्रयाण का सामाचार सुनकर मै स्तब्ध रह गया सोचा कि उनकी इच्छा पूरी हुई। कई बार वे मुझसे कहा करते थे 'सक्सेना जी, मेरी यही कामना है कि मै कार्य करते हुए सघर्ष करते हुए मरूँ'। जब उनकी मृत्यु का सामाचार मिला तो सोचा कि उनकी इच्छा पूरी हुई अवश्य ही राजस्थान और देश निर्धन हो गया। वे अपने कार्य क्षेत्र का दौरा कर लौटे थे अल्प समय की बीमारी मे ही यह जीवन लीला समाप्त हो गई।

अध्याय दूसरा

प्रारंभिक जीवन

श्री माणिक्यलाल वर्मा के पूर्वजो के इतिहास के सबन्ध मे आज कोई जानकारी उपलब्ध नही है। उनके परिवार मे परिवार का वशवृक्ष भी न होने के कारण पूर्वजो के सबन्ध मे कुछ कह सकना कठिन है। केवल इतनी जानकारी अवश्य मिलती है कि उनके पूर्वज बूँदी राज्य मे बूँदी नरेश की सेवा मे थे। मुगलकाल मे मुगल सम्राटो के केन्द्रीय सचिवालय मे बहुत बडी सख्या मे कायस्थ कर्मचारी कार्य करते थे। मुन्शीगिरी उनका जातीय व्यवसाय था और इस कार्य मे वे कुशल और दक्ष थे। यही कारण था कि मुगल सम्राट के सचिवालय मे हजारो की सख्या मे कायस्थ मुंशी नियुक्त किए जाते थे। जो भी राजे महाराजे और मसबदार मुगल दरबार मे रहते थे वे कुशल और दक्ष मुंशियो को अपने राज्य मे आने के लिए प्रोत्साहित करते थे बूँदी नरेश भी मुगल सम्राट के ऊचे मसबदार थे अतएव इस बात की सभावना है कि वर्मा जी के पूर्वज बूदी नरेश की सेवा में आ गए हो और तब से राजस्थान मे ही बस गए। राजस्थान के विभिन्न राज्यो की राजधानियो मे आज जो कायस्थ पाए जाते है उनके राजस्थान मे आने का यही इतिहास है।

बूंदी से वर्मा परिवार बिजोल्या ठिकाने मे क्यो और किस परिस्थिति में आया इसकी भी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नही है। बिजोल्या बूदी से सटा हुआ मेवाड़ का ठिकाना था। अतएव किसी समय वर्मा परिवार बूदी से बिजोल्या आ गया होगा।

वर्मा जी के पितामह श्री पन्नालाल तथा पिताश्री श्री छगनलाल माथुर बिजोल्यां राव की सेवा मे थे। उन्होने बिजोल्या में अपना मकान भी बनवा लिया था जो आज भी विद्यमान है। उसी मकान मे वर्मा जी का जन्म हुआ था। श्री छगनलाल बिजोल्या राव के विश्वासपात्र तथा कृपापात्र कर्मचारी थे। उनके परिवार का समस्त वातावरण अपने स्वामी की भक्ति और निष्ठा से सेवा करने की भावना से ओतप्रोत था। किसी को क्या मालूम था कि ऐसे परिवार मे जो पीढियो से नरेशो और सामतो की निष्ठा और भक्ति से सेवा करने मे ही अपने जीवन का साफल्य मानता रहा हो एक ऐसा क्रातिकारी व्यक्ति जन्म लेगा जो नरेशो और सामतो की सत्ता को केवल चुनौती ही नही देगा वरन उनकी सत्ता और अधिकारो को समाप्त करने का देश और राजस्थान मे सूत्रपात करेगा।

वर्मा जी ने ही पूर्व राजस्थान के मुख्य मत्री पद को स्वीकार कर नरेशों की सत्ता को

सर्व प्रथम समाप्त किया और उनके मुख्य मन्त्रित्व काल के अल्प समय (ग्यारह महीनो) मे ही उन्होने पूर्व राजस्थान मे जागीरदारी उन्मूलन अधिनियम बनाकर सामत प्रथा की अन्त्येष्ठि कर दी। विभिन्न राज्यो को मिलाकर बननेवाले पूर्व राजस्थान की प्रशासकीय समस्याए कितनी जटिल रही होगी उसकी कल्पना आज नही की जा सकती। परन्तु अपने अल्प शासन काल मे ही उन्होने जागीरदारी प्रथा को समाप्त कर देने का क्रातिकारी कदम उठाया।

जन्म

वर्मा जी का जन्म बिजोल्या मे अपने पैतृक गृह मे मार्ग शीर्ष शुक्ल एकादशी शनिवार को रेवती नक्षत्र प्रथम चरण सम्वत १९५४ तदनुसार ४ दिसम्बर १८९७ ईसवी को हुआ। वर्मा जी को अपने पिता श्री छगनलाल माथुर का अभिभावकत्व भी प्राप्त नही हुआ। उनके जन्म के सवा साल पश्चात् पिता श्री छगनलाल जी का स्वर्गवास हो गया। वर्मा जी की दो बड़ी बहिने और एक बडे भाई श्री मोतीलाल थे। वर्मा जी की दो बडी बहिनें सुश्री नारायन बाई तथा ग्यारसी बाई उनसे तथा बड़े भाई मोतीलाल से बड़ी थी। परन्तु वे भी आयु मे बहुत छोटे थे। अतएव उनका लालन पालन उनकी मातेश्वरी की ही देख रेख मे हुआ। यद्यपि वर्मा जी की माता कोई शिक्षित महिला नही थी परन्तु वे अत्यन्त साहसी, धार्मिक, ममतामयी, दृढ स्वभाव वाली, परिश्रमी, स्वाभिमानी और तेजस्वी महिला थी। यह गुण वर्मा जी ने अपनी ममतामयी मा से उत्तराधिकार मे प्राप्त किए थे। यद्यपि पति के अकस्मात स्वर्गवासी हो जाने से परिवार पर घोर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा, छोटे बच्चो के लालन पालन की समस्या उनके सामने थी परन्तु उन्होने साहस और दृढता से पति के दायित्व को भी अपने कधो पर ले लिया और बच्चो का लालन पालन किया।

शिक्षा दीक्षा

क्रमश: वर्मा जी छ सात वर्ष के हुए। अब यह समस्या उपस्थित हुई की उनकी शिक्षा की क्या व्यवस्था हो। बिजोल्या मे उस समय कोई स्कूल या पाठशाला तो थी नही जिसमे बालक माणिक्य लाल को प्रवेश दिलाया जा सकता। यदि पिता जीवित होते तो वे स्वय अपने पुत्र को शिक्षित बना सकते थे। कायस्थ जाति मे अत्यन्त प्राचीन काल से बालको को अनिवार्य रूप मे शिक्षा देने की परम्परा रही है। कायस्थ कुल मे जन्म लेकर बालक अशिक्षित रहे इसकी कोई कल्पना भी नही कर सकता। कायस्थ परिवार मे यदि कोई बालक पढने मे तनिक भी उदासीनता प्रदर्शित करता था तो उसको अपने पिता माता बड़ो से बहुधा सुनने को मिलता था "कायस्थ बच्चा पढा भला या मरा भला" अस्तु बालक माणिक्यलाल की शिक्षा का प्रश्न जटिल बन गया। परिवार की आर्थिक स्थिति भी ऐसी नही थी कि उनको बू दी अथवा उदयपुर भेजकर पढाया जाता। अतएव स्थानीय पडित से ही उन्होने शिक्षा प्राप्त की। ठिकाने मे जागीरदार सस्कृत पडित को अपनी सेवा मे रखते थे। अतएव बालक माणिक्यलाल की शिक्षा दीक्षा बिजोल्या मे ही हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हे अन्य विषयो का तो अध्ययन करने का अवसर नही मिला परन्तु हिन्दी और सस्कृत भाषा का उन्हें ज्ञान हो गया। हिन्दी और सस्कृत उन्होने पढ़ी थी पर लेखक

को यह जानकर थोडा आश्चर्य हुआ कि वर्मा जी को उर्दू का भी ज्ञान था। वे शेर बडे चाव से पढते थे। शेरे लिखते भी थे उनकी प्रत्येक डायरी मे उनकी पसद की शेरे लिखी मिलती है। कायस्थो मे उर्दू पढने का उस समय चलन था अतएव सस्कारवश उनकी उर्दू के प्रति रुचि हुई हो और किन्ही मुसलमान मौलवी और कर्मचारी से सभवत' उन्होने उर्दू पढी हो। अतएव वर्मा जी की शिक्षा विधिवत किसी नियमित स्कूल या पाठशाला मे चाहे नही हुई हो पर वे उर्दू हिन्दी और सस्कृत भाषाएं अवश्य जानते थे।

जब कोई व्यक्ति किसी नियमित स्कूल या कालेज मे पढता है तो कई वर्षो तक साथ रहने के कारण उसके कुछ सहपाठी मित्र बन जाते है जिनसे उसके शिक्षा काल के जीवन के सम्बन्ध मे जानकारी मिल सकती है परन्तु वर्मा जी के सबन्ध मे जानकारी प्राप्त करने का यह स्रोत भी उपलब्ध नही है। लेखक ने बिजोल्या मे उनके समकालीन जो दो चार व्यक्ति मिले उनसे उनके सबन्ध मे जो कुछ जानकारी प्राप्त की उससे पता चला कि वर्मा जी बाल्यकाल से ही साहसी स्पष्ट वक्ता, निर्भीक और स्वाभिमानी थे। नए काम करने की जोखिम को उठाने मे वे तनिक भी हिचकिचाते नही थे। अपने सगी साथियो को भी वे साहसिक कार्यो को करने के लिए उत्साह दिलाते थे। पहाडो पर चढना, जगलो मे घूमना और खेलना तथा तालाब मे तैरना उनको बहुत प्रिय था। वे बहुधा अपने साथियो को लेकर पहाडो और जगलो मे निकल जाते, कभी कभी दिन भर पहाडो और जगलो मे ही रहते। उनकी इस भ्रमण रुचि तथा जोखिम भरे साहसी कार्यो को करने की अभिरुचि ने ही उनमे राजनीतिक कार्य मे दृढता से कष्टो का सामना करने, दमन के सामने न झुकने तथा जो भी कुछ अशोभनीय तथा अन्यायपूर्ण है उससे समझौता न करने का साहस और क्षमता प्रदान की थी।

हिन्दी सस्कृत का साधारण ज्ञान प्राप्त कर वर्मा जी भी अपने वश के परम्परागत कार्य को अर्थात ठिकाने मे नौकरी करने लगे। देशी राज्यो और ठिकानो मे पुराने कर्मचारी परिवारो के नवयुवको को कार्य मिलने मे तनिक भी कठिनाई नही होती थी वरन वे परिवार जो परम्परागत कर्मचारी होते थे उनका ठिकाने या राज्य मे अपने परिवार की प्रतिष्ठा तथा स्थिति के अनुसार ही पद अथवा कार्य प्राप्त करने का परम्परागत अधिकार स्वीकार किया जाता था। राजे तथा सामत उन परिवारो के प्रति अपना उतरदायित्व स्वीकार करते और निभाते थे। इस कारण वर्मा जी सहज मे ही ठिकाने मे कर्मचारी हो गए। आयु तथा किसी परीक्षा विशेष उतीर्ण करने का इस प्रकार की नियुक्तियो मे कोई प्रश्न ही नही उठता था।

विवाह

सन् १९१७ मे वर्मा जी का विवाह श्रीमती नारायणी देवी जी से हुआ। उस समय श्रीमती नारायणी देवी की आयु बारह या तेरह वर्ष की थी। उनके पिता श्री रामसहाय भटनागर सिंगोली के निवासी थे। मूलत. श्रीमती नारायणी देवी का परिवार भी उत्तर प्रदेश से इस ओर आया था आज यह तो उन्हे याद नही है कि उनके पूर्वजो का मूल

स्थान उत्तर प्रदेश का कौनसा कस्बा था परन्तु उन्हे इतना अवश्य याद है कि उनका परिवार का मूल स्थान गगा किनारे कोई कस्बा था। श्रीमती नारायणी देवी के पिताश्री श्री रामसहाय जी ने वर्मा जी के सबन्ध मे सुना तो उन्हे देखने स्वय बिजोल्या आए जब वे बिजोल्या पहुचे तो उन्हे ज्ञात हुआ कि वर्मा जी स्नान करने गये है। वे स्वय उस कुड की की ओर गए जहा वर्मा जी स्नान कर रहे थे। जब उन्हे ज्ञात हुआ कि उक्त सज्जन उन्हे देखने आए है तो वे कुड से बाहर निकले शरीर पोछकर सुखाया और वस्त्र पहनकर अपने भावी श्वसुर से मिले।

श्री रामसहाय दूरदर्शी बुद्धिमान और अनुभवी व्यक्ति थे। अतएव वे उस युवक की योग्यता की जाच कर लेना चाहते थे कि जिसे वे अपना जामाता बनाना चाहते थे। ठिकाने मे वे नौकर हैं उनका व्यक्तित्व आकर्षक है केवल यही उनके लिए यथेष्ठ नही था। वे उस युवक की भली प्रकार परीक्षा ले लेना चाहते थे। उन्होने बहुत देर तक वर्मा जी से बात की, बहुत से प्रश्न किये अन्त मे उन्होने तुलसीकृत रामचरित मानस उनके सामने रख दी और कहा कि इसे पढो और अर्थ करो। भावी श्वसुर की कठोर परीक्षा मे युवक वर्मा जी उत्तीर्ण हो गए। उनके रामायण पाठ को सुन कर उनके भावी श्वसुर अत्यन्त सतुष्ट और प्रसन्न हुए उन्होंने सब प्रकार से जिस युवक को अपना जामाता बनाना चाहते थे उसकी परीक्षा ले ली थी अस्तु उन्होने वही पान का बीडा उन्हे देकर सबन्ध पक्का कर दिया। आज तो भावी जामाता ने कोनसी परीक्षा उत्तीर्ण की है कौनसी विश्वविद्यालय की उपाधि प्राप्त की है इत्यादि जानकारी लडके के पिता को अनायास ही मिल जाती है परन्तु उस समय जबकि कोई परीक्षा अथवा विश्वविद्यालय की उपाधिया नही थी तब कायस्थ परिवारो मे लडके की योग्यता की परीक्षा करने की यही विधि थी। किसान जब अपनी लड़की के सबन्ध की बात करता है तो वह देखता है कि लडके के घर मे कितने बीघा भूमि है, कितने हलो की खेती होती है। यदि कोई व्यापारी है तो उसकी पूजी कितनी है उसकी दुकान की बिक्री कैसी है। यह पता लगाया जाता है। यदि जागीरदार या जमीदार है तो उसकी लगान की आय कितनी है यह देखा जाता है यह स्थूल बाते हैं जिनकी जाच दूसरो से पूछ कर की जा सकती है परन्तु जब परीक्षाए और उपाधिया नही थी तो युवक की शैक्षणिक योग्यता को जानने का दूसरा उपाय क्या हो सकता था। क्योकि कायस्थ परिवारो मे शैक्षणिक योग्यता को जानने का दूसरा उपाय और क्या हो सकता था। क्योकि कायस्थ परिवार मे शैक्षणिक योग्यता ही भावी उन्नति और समृद्धि का आधार था अतएव प्राचीन समय मे उत्तर भारत मे कायस्थ जाति मे विवाह के समय वर से एक पत्र पढवाया जाता था और उससे उसकी शैक्षणिक योग्यता की परीक्षा ली जाती थी। श्री रामसहाय जी ने रामायण को पढवाकर वर्मा जी की परीक्षा ली और सतुष्ट होने पर ही उनको अपना जामाता बनाना स्वीकार किया।

वर्मा जी का विवाह श्रीमती नारायणी देवी से हुआ। वे वर्मा जी के जीवन मे उनकी भावी कर्मठता और सफलता की आधार शिला सिद्ध हुईं। यो तो प्रत्येक हिन्दू पत्नी अपने पति के विचारो के अनुसार अपने को ढालने का प्रयत्न करती है परन्तु श्रीमती नारायणी

को बिल्कुल नई दिशा में मोड दिया। मैंने पीडितों की सेवा को अपना जीवन मंत्र बनाया और तूफानी समुद्र मे कूद पडा। जीवन मे बहुत उतार चढाव देखे किन्तु मैं उस संकल्प को आज भी स्मरण करता हूं। पथिक जी की प्रेरणा अंग्रेजी हकूमत को हटाकर देश को आजाद करने की थी।" *

दीक्षा के उपरान्त नौकरी से त्याग पत्र

वर्मा जी ने जब आजन्म देशसेवा की शपथ ले ली तो पथिक जी ने वर्मा जी को राज्य (ठिकाने) की नौकरी छोडकर किसानो की सेवा मे लगने की सलाह दी। पथिक जी के परामर्श के अनुसार वर्मा जी ने तुरन्त ठिकाने की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। श्री डूंगर सिंह भाटी उस समय बिजोल्या के नायब मुसरिम थे। वे एक उदार और सज्जन व्यक्ति थे वर्मा जी के प्रति उनको स्नेह और ममता थी उन्होने वर्मा जी को समझाया त्यागपत्र वापस लेने को कहा किन्तु दृढ प्रतिज्ञ वर्मा जी ने जब एक बार निश्चिय कर लिया तो त्यागपत्र वापस नही लिया। श्री डूगर सिंह भाटी ने एक महीने तक त्यागपत्र को बिना स्वीकार किए पडा रहने दिया। उन्होने सोचा कि कुछ दिनो उपरान्त सभवत उनकी समझ मे यह आ जावेगा कि नौकरी से त्यागपत्र देना बुद्धिमानी नही है और तब वे त्यागपत्र वापस लेने के लिए तैयार हो जावेगे। उन्हे यह ज्ञात नही था कि वर्मा जी ने आजन्म देश सेवा करने की प्रतिज्ञा की है और अब वे केवल देश के लिए ही जीवित रहने वालो की टोली मे सम्मिलित हो गए है। एक मास उपरान्त भी जब श्री डूगर सिंह भाटी ने वर्मा जी को पहले की ही भांति त्यागपत्र देने पर दृढ देखा तो वे समझ गए कि देश सेवा का उत्साह क्षणिक नहीं है उनके जीवन की धारा ही बदल गई है वे सच्चे अर्थो मे देश सेवक बन गए हैं अस्तु उन्होने वर्मा जी का त्यागपत्र स्वीकार कर लिया। वर्मा जी स्वतत्र हो गए।

वह दिन राजस्थान के राजनीतिक इतिहास मे चिरस्मरणीय दिन था। वर्मा जी उस दिन सामती चाकरी छोडकर देश की आजन्म सेवा के लिए देश सेवक बने थे। जिस सामत शाही की उन्होने और उनके पुरखो ने अभी तक सेवा की थी उसको समाप्त करने, शोपितो और पीडितो को सामन्ती अत्याचार और शोषण के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए सगठित करने तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पोपक देशी राज्यो के शासन को उखाड़ फेंक कर प्रजा की सत्ता को स्थापित करने, और अंग्रेजो की दासता से मातृभूमि को आजाद करने के लिए उन्होने "करो सब निछावर बनो तुम फकीर" के क्रान्तिकारी सिद्धान्त को अपना लिया था।

आज देश जब आजाद हो गया है, राजनीतिक अवसरवादिता पदलोलुपता और परस्पर एक दूसरे को धक्का देकर आगे बढने के लिए अशोभनीय साधन और उपाय काम में लाए जा रहे हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानो त्याग और बलिदान का समय चला गया। आज की खेदजनक स्थिति देखकर कोई कल्पना भी नही कर सकता था कि स्वतत्रता के पूर्व भारत मे एक नही लाखो की सख्या मे देशभक्त भारतीयो ने देश को स्वतत्र बनाने के लिए अपना सर्वस्व यहा तक कि अपने प्राणो को भी मातृभूमि की बलिवेदी पर अर्पण कर दिया था। उस समय मे उन देशभक्तो की टोलिया "शहीदो की चिताओ पर लगेगे

* (श्री मणिक्यलाल वर्मा संस्मरण डायरी से)

देवी ने तो मानो अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही वर्मा जी के व्यक्तित्व मे समाहित कर दिया। उनका जन्म एक रूढिग्रस्त कायस्थ परिवार मे हुआ था जब उनका विवाह हुआ उस समय उनकी आयु बारह या तेरह वर्ष की थी। उनकी शिक्षा लगभग नही के बराबर थी। उस प्रकार की लडकियो का जब विवाह होता है वे अपने पतिगृह आती है तो उन्हे बहुमूल्य वस्त्रो और आभूषणो से अपने शरीर को सजाने, सौन्दर्य को निखारने तथा पति के प्रणय के सुख को प्राप्त कर रगरेलियो मे जीवन व्यतीत करने की कामना होती है। नारायणीजी को यह सब कुछ नही मिला। उसका कारण यह था कि शीघ्र ही विवाह के एक वर्ष बाद वर्मा जी ने श्री विजयसिह पथिक की प्रेरणा से ठिकाने की नौकरी छोड दी और बिजोलिया के समीप मे पथिक जी से आजन्म देश की सेवा के व्रत की दीक्षा ले ली। जीवन मे सुख आनन्द भोग विलास के स्थान पर सतत कष्ट और परिश्रम, त्याग और साधना का उन्होने वरण किया। जीवन सगिनी ने उन्हे उस कटकाकीर्ण मार्ग पर चलने मे विरत नहीं किया वरन उनके मार्ग को प्रशस्त बनाने मे जुट गई। जब वर्मा जी ने ठिकाने की नौकरी छोड कर देश सेवा का व्रत लिया तो मा ने उन्हे अवश्य उलाहना दिया कहा "रे माणिक्यलाल, यदि यही करना था तो विवाह क्यो किया? दूसरे घर की लडकी को इस कष्ट मे क्यो डाला?" वर्मा जी की माताजी ने अपनी प्रिय बहू के मोह वश ही यह कहा था। उन्होने देखा कि अभी विवाह की मेहदी भी हाथो से नही छूटी कि साधना और तपस्या के लिए आवाहन कर दिया गया। एक ममतामयी सास की राय मे उनके पुत्र के लिए यह शोभनीय और पुरुषोचित नही था। परन्तु मोहवश माता जी भूल गई कि कोई भी यज्ञ अर्द्धांगिनी को साथ लिए बिना सफल नही होता। वर्मा जी ने आजन्म देश सेवा का यज्ञ रचाया था बिना शक्तिदायिनी अर्द्धांगिनी के वह सफल कैसे होता?

भारत के और विशेष कर राजस्थान के इतिहास मे ऐसे असख्य ऐतिहासिक उदाहरण मिलते हैं जिनमे भयकर युद्ध मे जाते हुए पति को अर्द्धांगिनी ने अस्त्र शस्त्रो से स्वय अपने हाथो से सजाया है, पति के तिलक लगाकर उनकी आरती उतार कर उनको युद्ध के लिए सहर्ष विदा कर उनकी विजय की कामना की है। यह युगो युगो से हिन्दू नारी करती आई है। नारायनी देवी जी ने केवल परम्परागत हिन्दू नारी के कर्त्तव्य को ही नही निभाया उन्होने केवल वर्मा जी को देश की स्वतत्रता के लिए पीड़ितो शोषितो और निर्धनो के अधकारमय जीवन में प्रकाश लाने के लिए होने वाले सघर्ष के लिए ही सुसज्जित नही किया वरन वे स्वय एक वीर रमणी की भाति वर्मा जी के साथ कदम से कदम मिलाकर सघर्ष रत हुई। राजस्थान मे वर्मा जी के बहुसख्यक प्रशसक जो उन्हे श्रद्धा से देखते हैं लेखक स्वय उनमे से एक है, परन्तु वह कभी कभी सोचता है कि वर्मा जी ने जो कुछ किया। वे जो कुछ कर सके, उसके पीछे नारायणी देवी की अथक साधना और तपस्या थी। उन्हीके त्याग और तपस्या का बल था कि वर्मा जी वह सब कुछ कर सके। जिन्हे परिवार के निर्वाह के लिए वर्मा जी के साथ नारायनी देवी जी को खेतो पर मजदूरी करते, और जब मेवाड़ प्रजा मडल के सत्याग्रह मे वर्मा जी के गिरफ्तार हो जाने पर प्रजामडल के सत्याग्रह का अजमेर से सचालन करते, तथा महिलाओ का जत्था बनाकर उन्हे सत्याग्रह कर जेल जाते देखा है

वे इस तथ्य को जानते हैं। यही कारण था कि जब कांग्रेस ने उन्हें राज्य सभा का टिकट दिया और कुछ लोगो को लेखक ने टिप्पणी करते सुना तथा कुछ पत्रो मे इस संबन्ध में जो प्रकाशित हुआ देखा, तो लेखक को हंसी भी आई और मन को पीडा भी हुई। जिन्होने इस प्रश्न को लेकर टिप्पणी की थी वे या तो नारायनी देवी जी के व्यक्तित्व के सबन्ध मे नितान्त अनभिज्ञ थे अथवा ईर्षा ने उनके हृदयो को कलुषित कर दिया था।

वर्मा जी ने विवाह के उपरान्त अधिक समय नौकरी नही की। उन्होने ठिकाने के किसानों के प्रति अत्याचार को देखा उनका हृदय द्रवित हो उठा। उधर साधु सीताराम दास तथा अन्य किसान कार्यकर्त्ताओ के आमत्रण पर श्री विजय सिंह पथिक बिजोल्यां आ चुके थे। उन्होंने वहा आते ही पाठशाला आरंभ कर दी थी तथा किसान पचायत का सगठन आरंभ कर दिया था। विद्या प्रचारिणी सभा मे साप्ताहिक बैठको मे वर्मा जी जाते। पथिक जी के तेजस्वी व्यक्तित्व, गहरी देश भक्ति, तथा पीडित और शोषितो के लिए उनकी गहरी सहानुभूति ने वर्मा जी को आकर्षित किया। उधर वर्मा जी को पथिक जी भी पहचान गए कि युवक माणिक्यलाल मे छिपी हुई क्रांति और देश प्रेम की अग्नि सुलग रही है केवल उसको प्रज्ज्वलित मात्र करना है। अतएव उन्होंने वर्मा जी की ओर अधिक ध्यान देना प्रारम्भ किया।

पथिक जी सम्वत १९७३ मे बिजोल्या आए और आते ही उन्होने बिजोल्या मे विद्या प्रचारिणी सभा स्थापित की। उन्होने वर्मा जी को सभा का मत्री बनाया। अब वर्मा जी पथिक जी के निकट सपर्क मे आ गए। पथिक जी उन्हे राष्ट्रीय विचारो की पुस्तके पढने को देते तथा देश की समस्याओं पर घटों चर्चा करते। पथिक जी के निकट सपर्क में आने का परिणाम यह हुआ कि वर्मा जी को एक प्रतिभावान उद्बोधक मिल गया, जिसने उनके जीवन की दिशा को ही बदल दिया। वर्मा जी का राजनीतिक शिक्षण पथिक जी के द्वारा हुआ। पथिक जी क्रान्तिकारी देशभक्त थे उन्होने वर्मा जी को भी देशभक्ति का मत्र देकर दीक्षित कर दिया।

देश सेवा की दीक्षा

वर्मा जी के जीवन मे जो यह राजनीतिक परिवर्तन हुआ उसके सबन्ध मे स्वयं अपनी डायरी तथा सस्मरण सग्रह मे उन्होने लिखा है—

"पथिक जी ने कुछ उत्साही कार्यकर्त्ताओ को छाटा और बिजोल्या से आधा मील दूर "पार्श्वनाथ जी" नामक स्थान पर उन्हे कुछ गुप्त बाते करने के लिए बुलाया। उसमे मैं, साधु सीताराम दास, तथा अन्य तीन व्यक्ति और थे। पथिक जी ने हम सबो को देश की स्थिति बतलाते हुए हमको उद्बोधित किया कि आज देशभक्ति का यही तकाजा है कि तुम लोग आजन्म मातृभूमि की सेवा की शपथ लो। आज से तुम अपने लिए नही देश के लिए जीवित रहोगे। उनमे से एक ने अपनी असमर्थता प्रकट की, दो ने यथासभव देश सेवा करने का वचन दिया। केवल मैने और साधु सीताराम दास ने ही यह व्रत और शपथ ली कि वे अपना समस्त जीवन देश सेवा के लिए उत्सर्ग कर देगे।

साधु जी परोपकार थे, मैं राज्य (ठिकाने) की गुलामी मे पडा हुआ था फिर भी पथिक जी के बताए कार्यों को करता रहता था। पार्श्वनाथ की बैठक ने मेरी जीवन धारा

अध्याय तीसरा

बिजोल्यां किसान आन्दोलन

आन्दोलन की विशेषता

मेवाड के विजोल्यां ठिकाने के किसानों का आन्दोलन भारतवर्ष में अपने ढंग का पहला किसान आदोलन था जिसने समस्त देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। वास्तव मे विजोल्या का किसान आन्दोलन और किसान सत्याग्रह केवल बिजोल्या के राव के निरकुश शोषण तथा अत्याचार के विरुद्ध ही नही था वरन वह ब्रिटिश शासन, देशी राज्यो (मेवाड राज्य) और जागीरदारो की सम्मिलित शक्ति के लिए भारत मे पहली गम्भीर चुनौती थी। यही कारण था कि जब विजोल्या के किसानो ने विजोल्यां के राव को लगान देना वन्द कर दिया और किसान सत्याग्रह हुआ तो उससे केवल मेवाड के महाराणा तथा अन्य देशी नरेश ही नही तत्कालीन राजपूताने के ए. जी. जी. से लेकर भारत के वायसराय और गर्वनर जनरल तक चौकन्ने हो उठे थे। ब्रिटिश सरकार ने जो देशीराज्यो मे अपनी प्रभुसत्ता के आधीन सामत वर्ग को संरक्षण देकर अपनी व्यूह रचना रची थी, उस ब्रिटिशवाद के गढ पर यह पहला आक्रमण था। विजोल्यां किसान आन्दोलन इतना प्रवल और सशक्त था कि उसके कारण जागीरदार तो क्या मेवाड़ राज्य सरकार हिल उठी और ब्रिटिश सरकार का विदेश विभाग भी चिन्तित हो उठा।

भारत मे प्रथम किसान सत्याग्रह होने के नाते ही विजोल्या आन्दोलन का भारतीय जन आन्दोलनो के इतिहास मे गौरवपूर्ण स्थान रहनेवाला था परन्तु विजोल्या आन्दोलन की कुछ अपनी विशेषताए थी जिनके कारण विजोल्या आन्दोलन इस देश के पीडितो और शोषितो के सघर्ष के इतिहास मे विशेष गौरवपूर्ण स्थान रखता है।

विजोल्या के किसानो ने केवल अपने सीमित साधनो के भरोसे ही जागीरदार, मेवाड राज्य और ब्रिटिश सरकार की दुर्दमनीय शक्ति को ललकारा था। विजोल्या आन्दोलन को कोई वाहरी सहायता प्राप्त नही थी। देश मे जो भी और सत्याग्रह तथा जन-आन्दोलन हुए है उनमे घन वाहर से और जन की विपुल सहायता प्राप्त हुई थी। विजोल्या के किसानों का आन्दोलन कोई अल्प कालीन आन्दोलन नही था कि जो केवल आवेश और तत्कालीन भावावेश के वातावरण मे चलाया गया हो वह निरतर वीस वर्षो तक चलता रहा और किसानों को वार वार अकथनीय तथा रोमांचकारी अत्याचारों को सहना पड़ा। इस आदो-

लन में कूद पड़े थे। आन्दोलन को चलाने के लिए जो भी अर्थ की आवश्यकता होती थी किसान स्वय जुटाते थे बाहर से कोई आर्थिक सहायता न ली गई थी। यही कारण था कि आन्दोलन इतना सबल और तेजवान वन सका था। जिस समय बिजोल्या के किसान ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा पोषित और सरक्षित सामन्ती शक्ति से जूझ रहे थे उस समय देश मे न तो देशी राज्यो का ही कोई राजनीतिक सगठन था और न उस समय तक महात्मा गांधी के नेतृत्व मे देशव्यापी प्रथम सत्याग्रह आन्दोलन छिडा था उसमे भी लगान बन्दी का आवाहन नही किया गया था। लेकिन उससे वर्षो पहले बिजोल्या के किसानो ने लगानबन्दी का आन्दोलन सफल कर सत्याग्रह के इतिहास मे एक गौरवपूर्ण अध्याय जोड़ दिया था। तभी गाधी जी ने एक बार बिजोल्यां के किसानो से कहा था मै तुम्हे क्या कह सकता हूँ तुम मुझे शिक्षा देने आए हो कि जो मै नही कर सका वह तुमने पहले ही कर दिखाया है।

बिजोल्यां के किसानो के उस तेजस्वी आन्दोलन का रहस्य इस बात मे छिपा है कि उसको श्री विजयसिंह पथिक और उनसे प्रेरणा प्राप्त उनके पश्चात श्री माणिक्य लाल वर्मा का महान क्रान्तिकारी नेतृत्व प्राप्त हुआ था। यह उसी क्रांतिकारी तेजस्वी नेतृत्व का परिणाम था कि बिजोल्या ठिकाने के किसान बीस वर्षो से अधिक एकाकी बिना किसी की वाह्य अर्थ और जनबल की सहायता के ब्रिटिश साम्राज्यशाही द्वारा पोषित देशी राज्य (मेवाड) सरकार तथा उसके प्रथम श्रेणी के सामन्त बिजोल्या राव से टक्कर लेते रहे। आज जबकि देश आजाद हो गया है, परिस्थितिया बदल गई है तब यह कल्पना कर सकना भी सम्भव नही है कि उस समय इस प्रकार का आन्दोलन चलाने मे कितने अधिक साहस शौर्य और चरम सीमा के उत्पीडन को सह सकने की शक्ति की की आवश्यकता थी। इस पृष्ठभूमि मे श्री विजयसिंह पथिक और श्री माणिक्यलाल वर्मा का वह महान क्रान्तिकारी कार्य भारतीय जन आन्दोलनो के इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो मे लिखा जाने योग्य हैं।

बिजोल्या किसान सत्याग्रह के दूरगामी प्रभाव तथा उसके राजनीतिक महत्व को समझने के लिए हमे बिजोल्या की भौतिक आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियो को समझ लेना होगा तभी हम उसके महत्व को जान सकेंगे।

बिजोल्यां ठिकाने का इतिहास

बिजोल्या मेवाड़ का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था। उसके सामन्त को पहले 'राव' की पदवी दी गई थी बाद मे उसके चौथे वशधर शुभकरण की वीरता से प्रसन्न होकर महाराणा अमरसिंह (दूसरे) ने बिजोल्या राव को 'सवाई' की उपाधि से भी विभूषित किया था।

बिजोल्या के राव परमार (पवार) राजपूत है। वे मालवे के परमारो के वशज है। परमारो की राजधानी कभी उज्जैन और कभी धार रही थी। दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद तुगलक के समय मालवे का समस्त प्रदेश उनके अधिकार मे चला गया। जिससे परमारो के कुछ वशधर अजमेर कुछ दक्षिण और अन्यत्र चले गये।

बिजोल्यां के परमारों का मूल पुरुष 'अशोक' जगनेर भरतपुर में (बयाना के पास) के राव थे। वहा से वे महाराणा सग्रामसिंह (सांगा) के पास आए और महाराणा ने उन्हें बिजोल्या का पट्टा दिया था। खानवा के युद्ध मे राव अशोक ने महाराणा सांगा के पक्ष मे वीरतापूर्वक युद्ध किया था। उस सेवा के उपलक्ष्य में सांगा ने उन्हें बिजोल्या का पट्टा दिया था तभी से परमारो के वंशधर बिजोल्यां के स्वामी बन गये।

आन्दोलन के समय ठिकाने की स्थिति

बिजोल्या राव मेवाड के प्रथम श्रेणी के सरदार थे बिजोल्यां ठिकाने की वार्षिक आय लगभग एक लाख रुपये थी तथा राव को पाच वर्ष की कैद तथा सातसौ रुपये तक जुर्माना करने के दीवानी तथा फौजदारी अधिकार थे। मेवाड के सामन्त आरम्भ से ही बहुत प्रभावशाली थे मुगलकाल मे तो जब कभी मेवाड के सिंहासन के उत्तराधिकार का प्रश्न खडा होता था तो वे ही उसका निर्णय करते थे। अस्तु उनका राजनीतिक प्रभाव बहुत अधिक था। इसका परिणाम यह हुआ कि यद्यपि यह प्रभावशाली सामन्त महाराणा को अपना अधीश्वर तो मानते थे परन्तु जहा तक अपनी जागीर के प्रशासन का प्रश्न था वे निरकुश स्वेच्छाचारी शासक बन गए थे। उनकी जागीर में उनका निर्वाध शासन चलता था और उनका शब्द ही कानून था।

बिजोल्यां की भौगोलिक स्थिति

बिजोल्या ठिकाने का मुख्य स्थान है बिजोल्या। बिजोल्या बूंदी राज्य की सीमा पर उदयपुर से उत्तर पूर्व मे लगभग ११२ मील पर स्थित है। इस ठिकाने की सीमा ग्वालियर राज्य से भी मिलती है। यह एक अत्यन्त रमणीक प्रदेश है और समीपवर्ती भूभाग से ऊंचा चौरस एक विशाल पठार के रूप मे फैला हुआ है। इसी कारण उसे 'ऊपरमाल' कहते है। वहा की मिट्टी अत्यन्त उपजाऊ है। माल की भूमि होने के कारण तथा ऊंचा पठार होने के कारण उसका नाम 'ऊपरमाल' पड गया। जब भीलवाडे से पर्यटक बिजोल्या जाता है तो उसे ऊपरमाल का वह नैसर्गिक सौंदर्य से भरा हुआ पठार ऐसा प्रतीत होता है मानो वह समीपवर्ती भूखड का शिखर हो इस कारण स्थानीय लोग उसे 'उत्तम-शिखर' भी कहते हैं।

ऊपरमाल प्रदेश की भूमि तो उर्वरा है परन्तु वहा सिंचाई के साधनो का अभाव रहा है। यहा के धाकड किसान अत्यन्त परिश्रमी तथा सफल कृषक हैं यही कारण है कि उन्होंने इस प्रदेश को अपने परिश्रम से उपजाऊ तथा श्री सम्पन्न बना दिया।

बिजोल्यां के किसान

बिजोल्या पट्टे में सबसे अधिक जनसख्या धाकड जाति की है। धाकड जाति पुरुषार्थी, परिश्रमी साहसी तथा कष्ट सहिष्णु है। पुराने समय से वे कठिनाइयो का साहस से सामना करते आये हैं। बात यह है कि बिजोल्यां मेवाड की सुदूर सीमा पर स्थित है अतएव जब भी मराठो आदि के मेवाड़ पर आक्रमण होते थे तो इसी प्रदेश पर आक्रमण होता था। शत्रु का अधिकार हो जाने पर यहा के किसानो का जीवन अस्त-

व्यस्त हो जाता था। अतएव वे अपने जागीरदार के साथ पूरा सहयोग कर पुन' शत्रुओं से युद्ध कर अपने जागीरदार की शासन सत्ता को पुन' जमाने में सहायक होते थे। एक प्रकार से विजोल्या राव और वहां की ग्रामीण जन सख्या उन सकट के दिनो एक विशाल परिवार के रूप मे रहते थे। स्वाभाविक था कि जब अपने और अपनी जागीर के अस्तित्व की रक्षा के लिए बिजोल्यां राव विजोल्या पट्टे के किसानो पर निर्भर रहते थे तब उनके सम्बन्ध अत्यन्त सद्भावनापूर्ण और मधुर थे। यदि बिजोल्या राव की पट्टे की सुरक्षा व्यवस्था करने के लिए सेना के लिए अथवा उनकी विशेष पारिवारिक आवश्यकताओ के लिए विशेष धन की आवश्यकता पडती तो विजोल्या पट्टे के गावो की किसान पंचायतें लगान के अतिरिक्त राव को और अधिक राशि देने का निश्चय कर लेती और यदि कभी फसलो के खराब हो जाने मे पैदावार कम हो जाती तो ठिकाना लगान छोड देता। यही नही विजोल्या के राव व्यक्तिगत रूप से भी किसानो की आवश्यकताओ का ध्यान रखते थे। यदि किसी किसान के यहा लडकी का विवाह होता या कोई मृत्यु हो जाती तो विजोल्यां राव उस किसान का लगान ही माफ कर देते। इसी प्रकार ग्राम्य किसान पंचायते भी यदि राव साहब के यहां कोई विवाह आदि विशेष व्यय का अवसर आता तो वस्तुओ तथा सेवा के तथा नकदी के रूप मे अधिक देने का निश्चय कर लेते थे। जब तक राजनीतिक परिस्थिति अनिश्चित और संकटपूर्ण रही तब तक बिजोल्यां राव और उनकी प्रजा का यह सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बना रहा। प्रजा को जागीरदार की और जागीरदार को प्रजा की आवश्यकता थी अतएव इस प्रकार का मधुर सम्बन्ध बना रहना स्वाभाविक ही था।

यह स्थिति राव केशवदास तक बनी रही राव केशवदास के समय मराठो ने बिजोल्या पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकार मे कर लिया था। राव केशवदास निराश हो दूर किसी अन्य प्रदेश में जाकर बसने की सोच रहे थे परन्तु विजोल्या पट्टे के किसानो ने उनसे एक बार मराठो को उस प्रदेश से निकाल बाहर करने का प्रयत्न करने का आग्रह किया। राव केशवदास को विजोल्यां के ग्रामवासियो ने धन जन सभी प्रकार की सहायता दी और राव केशवदास ने विजोल्या से मराठों को मार भगाया और पुन अपना शासन स्थापित कर लिया। अतएव राव केशवदास तक विजोल्या के किसानो तथा जागीरदार के सम्बन्ध बहुत ही सौहार्दपूर्ण रहे।

स्थिति में परिवर्तन

परन्तु जब मराठो की शक्ति का पतन हो गया ग्वालियर, होल्कर आदि ने भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी की आधीनता स्वीकार करली और राजस्थान के नरेशो ने तो पहले से ही अंग्रेजो का संरक्षण स्वीकार कर लिया था तो देश मे जो राजनीतिक अशान्ति और अनिश्चितता थी वह समाप्त हो गई। देशी राज्यो को अब बाह्य आक्रमण का भय नही रहा। विजोल्या राव को अब अपनी प्रजा की सद्भावना और सहयोग की पूर्व जैसी आवश्यकता नही रही अस्तु कुछ समय तक तो पुरानी परम्परा चलती रही परन्तु जागीरदार के दृष्टिकोण मे परिवर्तन होने लगा। किसान लगान के अतिरिक्त

जो वस्तुएं और सेवायें जागीरदार के यहां विवाह मृत्यु, पर्व तथा अन्य अवसरों पर स्वेच्छा से सामाजिक व्यवहार के रूप में देता था उसको बाधित और नियमित रूप दिया जाने लगा। यही नही जागीरदार को जब कोई व्यय विशेष करना पडता तो किसानो पर उसका भार डाल दिया जाता और आगे चल कर वह भी एक बाधित और नियमित कर बन जाता। इस प्रकार लाग बेगारो की संख्या बढती चली गई।

लागतो का इतिहास

लागतो का इतिहास सक्षेप मे यही था कि यदि किसी घटनावश या कारणवश किसान ने एक दो बार कोई भेट स्वेच्छा से दे दी तो फिर वह सदैव के लिए लागत बन जाती और उसे विवश होकर हमेशा देना पडता था। हम यहा एक-दो घटनाओ का उल्लेख करेगे जिनसे लागतो के जन्म पर प्रकाश पड़ता है।

एक बार जावदा के पटेल के यहा गन्ने का बहुत अच्छा गुड बना। उसने कुछ गुड राव साहब को भेट किया। राव साहब बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे वर्ष उन्होने फिर गुड मगवाया और तीसरे वर्ष तो गुड की भेली के नाम से वह नई लागत (कर) समस्त ऊपरमाल के पटेलो से वसूल किया जाने लगा।

साभरी की लाग का भी अनोखा इतिहास है। एक बार मीनपुर के भील जंगल से एक जीवित साभरी पकड लाए। एक दो वर्ष होली के समय ठिकाने से साभरी की माग की गई। साभरी न मिलने पर कुछ खरगोश और सवा रुपया (कर) लागत देना स्वीकार कराया गया और उसका नाम साभरी पड गया।

एक बार राव साहब शिकार खेलने आए तो उनका घोडा मर गया। किसानो ने यह सोच कर कि हमारे गाव मे घोडा मरा है तो राव साहब को एक घोडा लेकर दे दिया, बस गाव से वह कर वसूल किया जाने लगा।

आंदोलन के समय की स्थिति

बिजोल्या मे क्रमश शोपण और अत्याचार बढता ही गया। बिजोल्या का किसान उस शोपण और अत्याचार से कराहने लगा। अब वह असहनीय हो उठा था। भूमि कर निश्चित करने के लिए 'कूता' की प्रथा प्रचलित थी। पूर्वकाल मे ठिकाने के कर्मचारी गाव के पचो की सम्मति से खडी फसल का अनुमान कर ठिकाने के हिस्से (भाग) को निश्चित करते थे। परन्तु बाद को ठिकाने के कर्मचारी आते उनके खाने पीने का भार किसानो पर पडता वे खडी फसल का कूता करते, किसान को फसल बैलगाडियो मे भर कर बिजोल्या ले जाकर जमा करनी पडती थी। ठिकाने के कर्मचारी मनमाने ढग से कूंता करते थे। कूता करते समय किसान का भयकर दोहन होता था। कूत के द्वारा केवल अन्धाधुन्ध ऊचा भूमि कर ही नही लिया जाता था ऊपर से अनेक लागते भी ली जाती थी। उस समय बिजोल्या ठिकाने मे कुल मिलाकर चौरासी लागते ली जाती थी।

ज्वार मक्का के भुट्टे, गन्ने का रस, अफीम पोस्त गेहूँ की बालिया, जलाने की लकडी, जागीरदार के पैदा होने, विवाह और मरने का सारा व्यय लागत अथवा—टैक्स

के नाम से वधा हुआ था जो निर्धन किसान को देना पड़ता था। जब विजोल्या का कोई राव मरता और उसके उत्तराधिकारी की गद्दीनशीनी होती तो ठिकाने को मेवाड दरवार को ६० हजार रुपए तलवार वधाई के देने पडते थे। यह तलवार वधाई ६० हजार रुपये भी निर्धन किसानो से ही वसूल किये जाते थे। लागतो के अतिरिक्त वेगार का भी विजोल्या मे बोलवाला था। अनेक प्रकार की वेगारे कठोरतापूर्वक ली जाती थी। लागते और वेगारे इतनी अधिक थी और ऐसी क्रूरता से वसूल की जाती थी कि किसान अत्यन्त दुखी था।

आन्दोलन का सूत्रपात

ठिकाने का अत्याचार चरम सीमा पर पहुच चुका था किसान उस भयकर शोषण और अत्याचार से कराह रहे थे। उसी समय सवत १९५४ (सन् १८९७) गिरधरपुरा गाव के गगाराम धाकड के पिता के मृत्यु भोज के अवसर पर समस्त ऊपरमाल के किसान एकत्रित हुए। ठिकाने के वढते हुए अत्याचार के सम्बन्ध मे वहा चर्चा होना स्वाभाविक ही थी। जाति के वडे वूढो ने यह निश्चय किया कि इस शोषण और अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए कुछ किया जाना चाहिये। अतएव उन्होने प्रत्येक गाव के पचो को रोक लिया। दूसरे दिन सभी ने विचार कर यह निश्चय किया कि वेरीसाल निवास के नानजी पटेल और गोपाल निवास के ठाकरी पटेल उदयपुर जाकर महाराणा को किसानो की कष्ट गाथा सुनाकर कष्टो के निवारण की प्रार्थना करे। दोनो पटेलो ने उदयपुर प्रस्थान किया। छ सात महीने तक उदयपुर मे प्रयत्न करने पर महाराणा फतेहसिह ने सुनवाई की और असिस्टैंट माल हाकिम को जाच कमीशन के रूप मे नियुक्त कर दिया।

असिस्टैंट माल हाकिम विजोल्या आया ठिकाने से लागतो के वारे मे लिखित जानकारी चाही। ठिकाना टलता रहा क्योंकि कोई लिखित जानकारी उसके पास नही थी। राव साहव ने हाकिम के ठहरने का प्रवन्ध किया था और एक कर्मचारी को वगीचे के वाहर खेमा लगाकर बैठा दिया था जो उसे किसी से मिलने नही देता था। ठिकाना लागतो के सम्वन्ध मे कोई लिखित प्रमाण न दे सका। इस कारण कमीशन ने ठिकाने के विरुद्ध फैसला दिया, परन्तु महाराणा ने कमीशन की रिपोर्ट पर अधिक ध्यान नही दिया। केवल कुछ चेतावनी भर दी और एक दो साधारण लागतो को कम कर दिया।

उधर विजोल्या के तत्कालीन राव श्री कृष्णसिह ने भेद नीति से काम लिया कुछ किसानो को पटेल और नवरदार वना दिया कुछ को अन्य प्रकार से सम्मानित किया। इस प्रकार रावजी ने किसानो की एकता को तोड दिया और नानजी और ठाकरी को जो उदयपुर महाराणा के पास प्रार्थना करने गए थे ऊपरमाल से निर्वासित कर दिया। उन दोनो की खेती नष्ट हो गई किसी ने उनकी सहायता नही की। कई वर्षो वाद रावजी को जुर्माना देकर और खुशामद करके ही वे अपने गाव मे आ सके। उसी समय सवत १९५६ मे भयकर दुर्भिक्ष पडा। विजोल्या राव श्री कृष्णसिह ने गोविन्द सागर वाध वनाकर लोगो को मजदूरी मे अनाज देकर उनकी सहायता की जो

किसानो के नेता थे उनसे विना काम लिए उन्हे अनाज दिया । इस प्रकार वे किसानो के सगठन को निर्बल कर देने मे सफल हो गए ।

सम्वत १९६० मे रावजी ने एक नया कर (लागत) चवरी और लगा दिया । जो भी अपनी लडकी की शादी करता उसको ५ रुपये रावजी को देने पडते थे । विरोध स्वरूप किसानो ने लडकियो का विवाह करना वद कर दिया । दो वर्ष तक कोई विवाह नही हुआ । सम्वत १९६२ मे दो सौ लडकियो को जो शादी के योग्य हो गई थी किसान लेकर (कृष्ण सिह जी) राव जी के पास पहुचे और प्रार्थना की कि विना 'चवरी' दिए उनके विवाह की आज्ञा दी जावे किन्तु रावजी ने उनकी प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया ।

इस बार किसानो ने फिर सगठन किया और यह निश्चय किया कि समस्त ऊपरमाल की जमीन पडत रख दी जावे ! ऊपरमाल के समीपवर्ती ग्वालियर बूदी तथा उदयपुर के अन्य क्षेत्रो मे खेती करके अपना निर्वाह किया जावे । ठिकाने को एक पैसा भी लगान नही मिलेगा । अक्षय तृतीया को हल हाकने का महूर्त होता है, ऊपरमाल के किसानो ने उस दिन हल नही हाका । यह समाचार मिलने पर रावजी ने किसानो को महलो की छत पर ऊपर बुलाया और उन्हे बैठाया । स्वय भी धूप मे कुर्सी पर किसानो के बीच आकर बैठ गए । किसानो ने उनसे छाया मे बैठने की प्रार्थना की तो रावजी ने उत्तर दिया मुझे रोटी देने वाले ही जब धूप मे बैठे है तो मै छाये मे कैसे बैठू । तुमको मनाने पर ही उठूगा । रावजी न चवरी की लागत उठा देने, फसल मे ठिकाने का हिस्सा २,५ लेने, कूता करन वाले अहलकारो के साथ बीसियो आदमियो को न बुलाने की घोषणा की । फिर राव जी ने मुखियो और पटेलो को अपने हाथ से अमल (अफीम) पिलाई इस व्यवहार से किसानो के प्रतिनिधि पिघल गए और यह वचन दे दिया कि जमीन पडत नही रखेगे ।

कुछ समय के उपरात राव कृष्ण सिह जी की निस्सतान मृत्यु हो गई उनके निकट सबधी पृथ्वीसिह सन् १९०६ मे गद्दी पर बैठे । गद्दीनशीनी के समय तलवार बधाई की बड़ी रकम ठिकाने को देनी थी । ठिकाने ने भूमि कर को बढा कर तथा तलवार बधाई कर लगा कर उस रकम को इकट्ठा करना चाहा । जो कुछ सुविधाएं राव कृष्णसिह के समय दी गई थी समाप्त करदी गई कूता मे फिर बहुत अन्याय किया जाने लगा ।

उस समय श्री फतहकरण चारण, ब्रह्मदेव तथा श्री साधू सीताराम दास के नेतृत्व मे किसानो ने इसका सगठित विरोध किया । सम्वत् १९६९ (सन् १९१३) के मार्च महीने मे ऊपरमाल के लगभग एक हजार किसान इस सम्बन्ध मे रावजी से मिलने महलो मे गए किन्तु रावजी उनस नही मिले । किसान दिन भर महल मे बैठे रहे । साय-काल चार बजे जब रावजी शिकार के लिए निकले तो किसानो की तरफ पीठ फेरली किसी से बात नही की, घोडे पर बेठकर चले गये । किसानो को उनका यह व्यवहार बहुत अखरा और उन्होने वही यह निश्चय किया कि अगले वर्ष बिजोल्या ठिकाने को

जमीन पर कोई किसान खेती न करे। ग्वालियर बूंदी तथा मेवाड के खालसे की भूमि पर खेती की जावे।

इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १६१३ मे समस्त ऊपरमाल का क्षेत्र पडत (बिना जुता) पडा रहा। पन्द्रह हजार किसानो ने ऊपरमाल की एक इच भूमि को भी नही जोता। ठिकाने को भूमि कर नही दिया। समस्त प्रदेश मे अन्न की कमी के कारण भूखमरी जैसा दृश्य उपस्थित हो गया।

अन्त मे ठिकाने ने भयकर दमन करना शुरू कर दिया। मेवाड राज्य भी किसानो की इस जागृति से सशक हो उठा था उसने भी ठिकाने की सहायता की। आन्दोलन करने वालो मे फतहकरण जी चारण तथा ब्रह्मदेव को निर्वासित कर दिया गया। प्रमुख कार्यकर्ताओ को जेल मे रख दिया गया और घोर दमन किया गया। इस प्रकार बिजोल्या का यह आन्दोलन दब गया। परन्तु ठिकाने के प्रति किसानो मे रोष और घृणा घनीभूत हो गई।

उसी समय राव पृथ्वीसिह की मृत्यु हो गई। उनका बडा पुत्र केसरीसिह राव बना परन्तु वह नाबालिग था इस कारण ठिकाने की व्यवस्था कोर्ट आफ वार्ड्स (मुसरमात) के आधीन आ गया।

अत्याचार बढते ही जा रहे थे। बेगार की कुछ ऐसी दुर्घटनाए हुई कि किसानो मे तीव्र क्षोभ उत्पन्न हो गया। रैजीडेट के दौरे मे बेगार के कारण समस्त प्रजा त्राहि त्राहि कर उठी। शीतकाल था गिरधारी कुम्हार के पास निर्धनता के कारण ओढने बिछाने के लिए कुछ नही था। उसको रैजीडेट के शिविर मे रात्रि मे रोक लिया गया शीत के कारण वह बेचारा मर गया। इसी प्रकार राव जी की मा माताजी के दर्शन करने गई तो तीन सौ किसानो की बैल गाडिया पन्द्रह दिन के लिए बेगार मे पकडली गई। किसानो ने बेगार न देने का का निश्चय कर लिया।

सितम्बर सन् १६१८ की बात है। ठिकाने के कामदार ने घीसा (लकड़ी डालने) की बेगार देने के लिए किसानो के प्रमुख गोविन्दपुर के नारायण पटेल से कहा। उन्होंने बेगार देने से इनकार कर दिया। इस पर उन्हे पकड लिया गया और बिजोल्यां ले जाया गया। रात भर में यह समाचार समस्त ऊपरमाल मे फैल गया। प्रत्येक गाव से झुड के झुड सत्याग्रही आने लगे। सब एक ही नारा लगा रहे थे "इन्हे छोड दो या हमे जेल दो।" लगभग दो हजार सत्याग्रही इकट्ठे हो गए तब मुसरिम ने नारायण पटेल को छोड दिया।

वर्मा जी का किसानों की दशा से द्रवित होना

युवक माणिक्यलाल वर्मा ठिकाने के कर्मचारी थे उन पर किसानो के साथ किए जाने वाले इस दुर्व्यवहार मे बहुत बुरा असर पडा। वे द्रवित हो उठे किसानो के प्रति उनकी सहज सहानुभूति उत्पन्न हो गई और वे उनके सुख दु.ख में उनका साथ देने लगे।

पथिक जी का आगमन

उन्ही दिनो बिजोल्यां मे पथिक जी का आगमन हुआ था। बात यह थी कि

जब श्री साधु सीताराम दास तथा मगनलाल जी चित्तौर विद्या प्रचारिणी सभा के अधिवेशन मे गये थे तो पथिक जी को बिजोल्या आकर किसानो का सगठन करने का निमत्रण दे आए थे । पथिक जी ने बिजोल्या आकर पाठशाला स्थापित की और विद्या प्रचारणी सभा मे साप्ताहिक बैठके करने लगे । पाठशाला को चलाने मे उनका एक ही उद्देश्य था, बालकों का सर्वांगीण विकास करना और उनमे देशभक्ति की भावना उत्पन्न करना । वे अपने शिष्यो को सैनिक शिक्षा भी देते थे । अपने विद्यार्थियो मे वीरता, साहस, शौर्य, स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने के लिए सैनिक शिक्षा देते थे । उन्होने विद्यार्थियो की वर्दी बनवाई और उनकी एक सेना तैयार करली । बिजोल्या आन्दोलन मे पथिकजी की इस विद्यार्थी सेना ने बहुत प्रशसनीय कार्य किया ।

परन्तु पथिकजी बिजोल्या मे केवल पाठशाला चलाने नही आए थे उनका मुख्य लक्ष्य किसानो को सगठित कर उनको सामन्तशाही के विरुद्ध खडा कर देना था । अस्तु दिन मे वे पाठशाला मे पढाते और रात्रि मे श्री साधु सीताराम दास तथा वर्मा जी के साथ गावो मे घूमते और किसानो को सगठित होने के लिए कहते ।

बिजोल्या मे आते ही पथिक जी की दृष्टि मे वर्मा जी आ गए थे । उन्होने यह देख लिया था युवक वर्मा मे पीडितो के प्रति गहरी सहानुभूति है अत्याचार के विरुद्ध वे साहस के साथ खडे होने की क्षमता रखते है, उनमें शौर्य और स्वाभिमान की भावना विशेष रूप से विद्यमान है । पथिक जी ने वर्मा जी को भावी किसान नेता के रूप में प्रशिक्षित करना आरम्भ कर दिया । वे उनको देश का इतिहास बतलाते, देश को स्वतन्त्र बनाने के लिए वीर देशभक्त क्रान्तिकारियो ने क्या-क्या किया है उसकी कहानी सुनाते, देशी राज्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पृष्ठपोषक है और उसको शक्ति प्रदान करते है इसका ज्ञान कराते तथा उन्हे देश भक्त क्रातिकारियो के जीवन चरित्र पढने को देते । वर्मा जी पथिक जी के अब बहुत निकट आ गए थे किसानो को सगठित करने मे उन्होने वर्मा जी का भरसक उपयोग किया । उन्होने वर्मा जी तथा प्रेमचन्द भील को मेवाड़ी भाषा मे गीत बना कर किसानो मे प्रचार करने के लिए कहा । वर्मा जी ने प्रचार की उस पद्धति को खूब विकसित किया किसानो की समस्याओ को लेकर वे गीत लिखते उनको स्वय गाते दूसरो से गवाते और किसानो को सगठित हो अत्याचार के विरुद्ध खडे होने का आवाहन करते ।

जब वर्मा जी पथिक जी के बहुत निकट आ गए तो पथिक जी ने उनको आजीवन देश सेवा का व्रत लेने की दीक्षा पार्श्वनाथ मे दे दी और उन्होने वर्मा जी से ठिकाने की नौकरी छोड कर उनके साथ किसानो के सगठन का कार्य करने के लिए आमंत्रित किया । वर्मा जी का विवाह हुए अभी एक वर्ष भी पूरा नही हुआ था, घर की आर्थिक दशा बहुत गिरी हुई थी, परिवार के लोग ठिकाने की नौकरी को छोडना कभी पसद नही करेगे रावजी नाराज होगे, इन सब विरोधी परिस्थितियो की तनिक भी परवाह न कर वर्मा जी ने आजन्म देशसेवक बनने के लिए अपने मार्ग निर्देशक पथिक जी के आदेशानुसार ठिकाने की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया । त्यागपत्र मे वर्मा जी ने ठिकाने

के अमानवीय अत्याचारो का वर्णन करते हुए लिखा था कि मै उस अत्याचार का भागीदार नही बनना चाहता।

पथिक जी ने वर्मा जी को भी एक गाव मे बैठ कर पाठशाला स्थापित करने के लिए कहा। सबमे पहले वर्मा जी ने बारीसाल गाव मे पाठशाला स्थापित की। वहाँ मन्ना जी पटेल बहुत साहसी और जीवट वाले व्यक्ति थे। परन्तु वहा छात्रो की सख्या कम थी। "उमजी का खेडा" गाव मे स्थिति अधिक अनुकूल देखकर एक महीने के उपरान्त भाद्रपद शुक्ला ११ सवत १९७६ को उन्होने "उमाजी के खेडे" मे पाठशाला का शुभारभ किया। वर्मा जी दिन मे बालको को पढाते और रात्रि मे दल्ला जी पटेल तथा उनके साथी किसानो को अखबार सुनाते। वे लोग उन समाचारो को औरो को सुनाते थे। उन दिनो रूस मे जब जारशाही का अन्त हुआ और किसान मजदूरो का राज्य स्थापित हो गया तो उस खबर से दल्ला जी और उनके साथी इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने सैकडो किसानो को एकत्रित कर उस प्रजा राज्य के स्थापित होने का समाचार उन्हे सुनाया।

पाठशाला के छात्रो से फीस के रूप मे थोडा अनाज आदि मिलता था। दिन मे श्रीमती नारायणी देवी और अवकाश होने पर स्वय वर्मा जी किसानो के खेतो पर मजदूरी कर मजदूरी मे दो आना कमाते थे। एक सच्ची अर्धांगिनी की भाति श्रीमती नारायणी देवी ने भी आजीवन देश सेवा की शपथ लेनेवाले युवा पति के मार्ग को प्रशस्त करने का अनजाने मे ही व्रत ले लिया था। कभी कभी लेखक सोचता है कि अपने जीवन मे वर्मा जी जो कुछ कर सके उसका बहुत बडा श्रेय श्रीमती नारायणी देवी को है। एक दीपक की न दिखनेवाली बत्ती की भाति वे स्वय जलती रही और अपने वीर और कर्मठ पति के व्यक्तित्व के रूप मे देश और समाज को प्रकाश देती रही। घर गृहस्ती का सारा कार्य करना खेतो पर मजदूरी करना और किसान स्त्रियो मे प्रचार करना यह सारे कार्य वे उमाजी के खेडे मे करती थी। आज भी उमाजी के खेडे मे वह मकान उनके त्याग साधना और परिश्रम के प्रतीक रूप मे खडा है।

पथिक जी वर्मा जी तथा साधु सीताराम दास के साथ गाव गाव मे घूम कर किसानो का सगठन करते पथिक जी जैसे क्रातिकारी और प्रतिभाशाली सगठनकर्ता को यह समझने मे देर नही लगी कि ऊपरमाल के किसानो मे साहस और स्वाभिमान प्रचुर मात्रा मे है परन्तु उनको ठिकाने के विरोध मे जो कई बार पराजित होना पडा उसका एक मात्र कारण सुदृढ सगठन का अभाव था। अतएव वे ठिकाने से टक्कर लेने के पूर्व किसानो का एक दृढ सगठन खडा कर देना चाहते थे। इसी बीच पथिक जी ने नायब मुसरिम श्री डूगरसिंह भाटी के सहयोग से ठिकाने के सभी कागजपत्र देख लिए उन्हे विश्वास हो गया कि ठिकाना जो बहु सख्यक भयकर लागते और बेगार लेता है उनके लिए उसके पास कोई प्रमाण या औचित्य नही है यह ठिकाने की मनमानी मात्र है।

पथिक जी का वास्तविक नाम भूपसिह था वे उत्तर प्रदेश के बुलदशहर के गुठावली ग्राम के निवासी थे। महाविप्लवी क्रातिकारी रासबिहारी बोस तथा शचीन्द्र

सान्याल के साथ वे क्रांतिकारी दल में काम करते थे। जब तत्कालीन खरवा ठाकुर राव गोपालसिंह के साथ टाटगढ़ मे वे नजरबंद थे तो उन्हे ज्ञात हो गया कि फीरोजपुर षड्यंत्र केस के सम्बन्ध में उनका गिरफ्तारी का वारंट निकल गया है तो वे टाटगढ से निकल भागे और अज्ञातवास मे चले गए। लम्बे समय ओछडी तथा पुठोली ठाकुरो के यहाँ छिप कर रहे। दाढी बढाली और अपना नाम भूपसिंह से बदल कर विजयसिंह पथिक रख लिया।

जब वे बिजोल्या साधू सीतारामदास तथा श्री मगनलाल जी के निमंत्रण पर आए थे तो एक प्रकार से वे अज्ञातवास से निकल कर नए नाम और नए वेष मे पुनः सक्रिय हुए थे। विद्या प्रचारिणी सभा को उन्होने अपने कार्य का माध्यम बनाया।

यद्यपि बिजोल्या की विद्या प्रचारिणी सभा को नायब मुसरिम डूंगरसिंह भाटी, प्रसिद्ध क्रांतिकारी बारहट केसरीसिंह के जमाता श्री ईश्वरदान आसिया तथा साधू सीतारामदास ने स्थापित किया था परन्तु पथिक जी ने बिजोल्या पहुचते ही उसको अपने प्रभाव मे ले लिया और उसको अपने कार्य का मुख्य माध्यम बनाया। उन्होने दूसरे वर्ष श्री माणिक्यलाल वर्मा को उसका मंत्री बनाया और वर्मा जी उनके निर्देशन मे कार्य करने लगे।

ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर भूपसिंह (पथिक जी) की खोज कर रहे थे। टाटगढ से भाग जाने के उपरांत मेवाड सरकार की पुलिस भी उनके पीछे थी, अस्तु वे जानते थे कि बहुत दिनो तक वे प्रगट रूप मे बिजोल्या मे काम नही कर सकेगे। उन्हे डूंगरसिंह भाटी के द्वारा यह पता चल गया था कि ठिकाने ने मेवाड राज्य को उनके विरुद्ध रिपोर्ट भेजी है। जब मेवाड राज्य ने उनके विरुद्ध गिरफ्तारी का वारंट निकाला तो उन्हे उसकी पूर्व सूचना मिल चुकी थी।

उन्होने विद्या प्रचारिणी सभा के कार्यकर्ताओ को सायकाल सभा मे बुलाया और घोषणा की कि मैं आज आप लोगो से विदा हो रहा हूँ फिर कभी आप लोगो के दर्शन करूंगा। शीघ्र ही अंग्रेजो और सामन्तशाही के विरुद्ध जनता उठेगी मैंने इतने दिनों तक भाषणो द्वारा जो आपकी सेवा की है उसे भूलना मत।

उसी समय रात्रि मे वे बिजोल्यां से चल पडे। बाहर दरवाजे तक तो सभा के सभी सदस्य उन्हे पहुँचाने आए। वहां से पथिक जी श्री माणिक्यलाल वर्मा, साधू सीतारामदास को लेकर उमाजी के खेड़े (जो दो मील दूर था) पहुचे और वहा श्री दरला जी पटेल के यहा शरण ली।

प्रात काल होने से पूर्व ही पथिक जी श्री दरला जी के मकान से भी खिसक गए और समीपवर्ती प्रदेश मे छिप कर रहने लगे। प्रात काल पुलिस ने बिजोल्या और उमा जी के खेडे पर छापा मारा परन्तु पथिक जी का पता नही लगा सके। पुलिस शिथिल हो गई तो वे पुन उमा जी के खेड़े आ गए और एक वीरान आधे गिरे हुए मकान मे छिप कर रहने लगे। उस मकान मे कोई रहता नही था। मकान मालिक बहुत समय से कही बाहर गया हुआ था। मुख्य दरवाजे पर ताला पड़ा था। पीछे एक कोठरी गिर

गई था उसमें से कठिनाई से मकान मे घुसा जा सकता था। मकान बहुत बुरी अवस्था म था उसकी सफाई कर पथिक जी ने वहा अपना अड्डा जमाया और आन्दोलन का सचालन करने लगे। वह वीरान मकान किसान क्राति का मुख्य केन्द्र बन गया। वर्मा जी तथा प्रमुख कार्यकर्ताओ ने उनका सम्पर्क बराबर बना रहा और वे किसानों का सगठन करते रहे।

जब बिजोलया ठिकाने के सभी गावो का सगठन हो गया तो पथिक जी ने साधु सीतारामदास तथा माणिक्यलाल वर्मा को बुलाकर उमाजी के खेडे के उस वीरान मकान मे अपना निश्चय बताया कि श्रावण को हरियाली अमावस्या के दिन ऊपरमाल किसान पचायत का स्थायी सगठन बना लिया जावे और आन्दोलन को आरभ कर दिया जावे। पथिक जी ने वर्मा जी, साधु सीतारामदास तथा अन्य कार्यकर्ताओ को कहा कि इस निश्चय की सूचना गाव-गाव पहुंचाओ और स्वय कविता की दो लाइने लिख कर दी कि उन्हे नोटिस मे दे दो —

हरियाली अमावस, सुखद शुभ महूर्त मनालो,
स्वतन्त्रता के अर्थ सब धर्म युद्ध को ठान लो।

हरियाली अमावस्या के चार दिन पहले इस आशय की विज्ञप्ति प्रकाशित कर दी गई। हरियाली अमावस्या के दिन ऊपरमाल के सभी गावो के हजारो किसान बेरीसाल नामक ग्राम मे इकट्ठे हुए। पथिक जी स्वय तो सभा मे नही आए क्योकि वे भूमिगत रहकर ही किसानो का सगठन उमा जी के खेडे के उस टूटे हुए वीरान मकान से कर रहे थे परन्तु सभा स्थल के समीप ही एक मकान मे छिपे हुए श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा साधु सीतारामदास के द्वारा सभा का सूत्र सचालन कर रहे थे। उन्होने सभा मे यह प्रस्ताव रखवाया कि लाग बेगारो के अत्याचार के विरुद्ध युद्ध सचालन के लिए ऊपरमाल के सभी किसानो के एक स्थायी सगठन की आवश्यकता है अस्तु ऊपरमाल पचायत बोर्ड की स्थापना की जानी चाहिए। सभी उस प्रस्ताव के पक्ष मे थे किन्तु कोई भी उसका सरपच बनने को तैयार नही था। सभी प्रमुख पटेल राज्य और ठिकाने के दमन से भयभीत थे। सभी उपस्थित किसानो मे निराशा छा गई। पथिक जी ने जब यह सुना तो मन्नाजी पटेल को बुला भेजा और उन्हे ऐसी प्रेरणा दी कि उन्होने सभा मे आकर घोषणा की कि मै सरपच बनने को तैयार हूं जो भी विपत्ति कष्ट दमन और अत्याचार होगा उसको झेलू गा सभी किसान भाई मजबूत रहे हमारे नेता पथिक जी के आदेश पर पचायत के नेतृत्व पर चले, डरने की कोई बात नही है। सगठन के द्वारा ही हम ठिकाने के अमानवीय अत्याचारो से अपनी रक्षा कर सकते है।

मन्ना जी पटेल द्वारा सरपच बनने की घोषणा करते ही किसानो मे उत्साह की लहर फैल गई। महात्मा जी की जय (पथिक जी को बिजोल्या के किसान महात्मा जी कहते थे)। पथिक जी की जय, भारतमाता की जय, मन्ना जी पटेल की जय से वह नीरव रात्रि के अधकार मे डूबा हुआ प्रदेश गू ज उठा।

उस समय ऊपरमाल की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो उठी थी। ठिकाने का

शोषण और दमन चरम सीमा पर पहुँच चुका था। बात यह थी कि फसलें खराब हो गईं थी बहुत से किसानो को बीज भी नही मिला था परन्तु ठिकाने के कर्मचारी मन माना कूंता कर पूर्ववत ऊंचा भूमि कर वसूल कर रहे थे। किसानो की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब हो गई थी। उधर प्रथम विश्व युद्ध छिड गया था। ब्रिटिश सरकार के दबाव से युद्ध का चन्दा और ऋण भी किसानो से जबरदस्ती उगाहा जाने लगा। इसी के साथ राव साहब की तलवार बधाई की जो बडी धन राशि मेवाड राज्य सरकार को देनी थी वह भी किसानो से बलपूर्वक वसूल किया जाने लगा। इस आर्थिक दोहन से ऊपरमाल की जनता तिलमिला उठी।

श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा साधू सीतारामदास जी पथिक जी के पास गए उनसे परामर्श किया। बिजौलया के सभी स्थानीय कार्यकर्ताओ का विचार था कि जमीन न जोत कर पड़त रख दी जावे। पथिक ने उनको समझाया कि इससे किसानो की हानि होगी। उनकी आर्थिक स्थिति और अधिक बिगड जावेगी और वे अधिक दिनो तक ठिकाने के विरुद्ध खडे न रह सकेंगे। अतएव हमे किसानो को युद्ध-ऋण और युद्ध का चन्दा न देने के लिए कहना चाहिए। जब समस्त प्रदेश मे अकाल की स्थिति है और किसानो की फसले खराब हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति विशेष रूप मे खराब हो गई है तो युद्ध-ऋण अथवा युद्ध का चन्दा नही दिया जा सकता। पथिकजी के आदेशानुसार साधू जी तथा वर्मा जी तथा अन्य सभी स्थानीय कार्यकर्ताओ ने किसानो को युद्ध का चन्दा न देने के लिए आवाहन किया। वर्मा जी, साधू सीतारामदास, प्रेमचन्द भील तथा अन्य कार्यकर्ता घूम-घूम कर बिजोलया के किसानो को चन्दा न देने के लिए तैयार करने लगे। वर्मा जी प्रेमचन्द भील तथा साधू सीतारामदास चन्दा देने के विरुद्ध गीत बना कर स्वय गाते तथा युद्ध का चन्दा न देने तथा सत्याग्रह के लिए बिजोलया के किसानो का उद्बोधन करते। पथिक जी के नेतृत्व मे श्री माणिक्यलाल वर्मा ने ऐसा घनघोर प्रचार कार्य किया कि ऊपरमाल के किसानो मे साहस और शौर्य जाग पडा। पीडितो का पछीडा जब वे गाते तो बिजोलया के किसानो को ऐसा प्रतीत होता कि मानो कोई देवदूत उनके दुखो की कहानी सुना रहा है और उस अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए सत्याग्रह रूपी औषधि लाया है। वर्मा जी तथा उनके साथियो ने पथिक जी के छिपे रहने पर भी ऐसा साहस किसानो मे भर दिया कि बिजोलया के समस्त किसानो ने युद्ध का चन्दा देने से स्पष्ट और दृढतापूर्वक इनकार कर दिया। ऐसा साहस बिजोलया के किसानो मे पहले कभी भी दिखलाई नही दिया था।

उसी समय एक ऐसी घटना घटी जो ऊपरमाल के इतिहास मे चिरस्मरणीय रहेगी और जिसने समस्त ऊपरमाल मे उत्साह और आशा की लहर उत्पन्न कर दी।

बात यह थी कि हरियाली अमावस्या को बारीसाल मे हुई हजारो किसानो की सभा मे यह निर्णय किया गया था कि कोई किसान बेगार नही देगा। अतएव उन्होने राव साहब के रसोडे मे जलाने की लकडिया बेगार मे नही डाली थी। रसोडे मे लकड़ियो की कमी अनुभव हुई तो ठिकाने के कामदारो ने बेगार मे किसानो को पकड़ कर

लकडिया डलवाने का निश्चय किया। सबसे पहले ठिकानेवालों ने किसानो मे प्रमुख अत्यन्त प्रभावशाली गोविन्द निवास गाव के नारायण पटेल को बेगार में पकडा और उनसे कहा कि "घीसा की बेगार" देने चलो। नारायण पटेल ने हरियाली अमावस्या को बारीसाल की सभा मे बेगार न देने की प्रतिज्ञा के अनुसार बेगार देने से साफ इनकार कर दिया फलस्वरूप ठिकाने के सिपाही उन्हे बन्दी बनाकर बिजोल्या ले गए। श्री नारायण पटेल के बेगार न देने पर बन्दी बनाए जाने का समाचार रात्रिभर मे वन अग्नि की भानि समस्त ऊपरमाल मे फैल गया। पथिक जी के शिष्य तथा वर्मा जी की उमाजी के खेडे की पाठशाला के छात्रो ने इस समाचार को फैलाने में सहायता दी। देखते-देखते रात्रि भर मे ही यह समाचार एक गाव से दूसरे गाव मे फैल गया। पथिक जी ने माणिक्यलाल वर्मा जी के द्वारा गाववालो को यह कहलाया कि प्रत्येक गांव से सत्याग्रहियो के जत्थे प्रात काल बिजोल्या पहुँचे। श्री माणिक्यलाल जी ने रात्रि भर मे ही सारी व्यवस्था कर ली।

प्रात.काल होते ही ऊपरमाल के प्रत्येक गाव से सत्याग्रहियो के जत्थे बिजोल्यां पहुँचने लगे। सत्याग्रहियो का केवल एक ही नारा था "नारायण पटेल को छोड दो या हमे भी जेल दो।" दोपहर तक लगभग दो हजार सत्याग्रही बिजोल्या पहुंच गए। बिजोल्या का कस्बा "नारायण पटेल को छोड दो या हमे भी जेल दो" के नारो से गूजने लगे। पथिक जी, वर्मा जी, साधु जी आदि ने सोई हुई जनशक्ति को जगा दिया था। बिजोल्या वालो ने यह चमत्कार अपने जीवन मे पहली बार देखा था। जो किसान भीरु बन कर ठिकाने के सिपाही के सामने भी अन्नदाता कह कर गिडगिडाता था और उसका सामान सर पर लादकर उसके पीछे पालतू जानवर की भाति चलता था उसमे उस दिन ऐसा साहस जाग पडा कि वह बिजोल्या राव के महल की प्राचीरो को अपने युद्ध घोष से हिला रहा था। अधिकारी उस दृश्य को देखकर स्तब्ध और विमूढ हो गए तत्कालीन मुसरिम दीपलाल जी ने नारायण पटेल को छोड दिया। किसानो की यह पहली विजय थी। इससे किसानो मे सत्याग्रह के प्रति श्रद्धा आत्मविश्वास और उत्साह की लहर फैल गई।

जब पथिक जी ने सत्याग्रह आरभ किया तो उन्हे इस बात की आवश्यकता प्रतीत हुई कि सत्याग्रह आन्दोलन के समाचारो की विज्ञप्ति के लिए समाचार पत्रो का सहयोग आवश्यक है अस्तु उन्होने श्रद्धेय गणेश शकर विद्यार्थी को लिखा कि वे सत्याग्रह आन्दोलन चला रहे है उनके प्रसिद्ध और प्रभावशाली पत्र की आन्दोलन को सहायता की आवश्यकता है, साथ मे बिजोल्या के किसानो की ओर से उन्होने स्वर्गीय गणेश शकर विद्यार्थी को राखी भेजी। प्रताप के यशस्वी सपादक श्री गणेश शकर विद्यार्थी ने उत्तर दिया कि बिजोल्या आन्दोलन के लिए प्रताप के पृष्ठ सदैव खुले रहेगे आप निश्चिन्त रहे। पथिक जी भूमिगत थे इस कारण वे पकडाई नही दिए। साधू सीतारामदास तथा प्रेमचन्द भील को पकड लिया गया। उन पर युद्ध ऋण तथा चन्दा न देने के लिए तथा किसानो को उकसाने का मुकदमा चलाया। ठिकाने ने इस मुकदमे के सबध मे तीन महीने

तक तेरह सौ व्यक्तियों के बयान लिए। जिन्हे ठिकाने की कचहरी मे बयान देने के लिए सुबह बुलाया जाता, पथिक जी उन्हे रात्रि को समझा देते कि क्या बयान देना। सबो ने यही बयान दिया कि हमे किसी ने नही बहकाया हमारी दशा इतनी दयनीय है कि हम चन्दा नही दे सकते।

अब प्रताप के द्वारा बिजोल्या आन्दोलन की विज्ञप्ति देशभर मे होने लगी। प्रताप के अतिरिक्त अन्य समाचार पत्र भी बिजोल्या के समाचार प्रकाशित करने लगे। समस्त देश का ध्यान इस नए किसान आन्दोलन की ओर आकर्षित हो गया। राज्य सरकार तथा ठिकाना समाचार पत्रो की इस विज्ञप्ति मे क्रोध से बौखला उठे वे और अधिक दमन पर उतारू हो गए। ठिकाना तथा राज्य सरकार ने सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। यह घटना सन् १९१६ अर्थात संवत् १९७३ की है। पथिक जी, श्री माणिक्यलाल वर्मा, साधु सीताराम दास, गणपतिलाल माथुर, प्रेमचन्द भील पर अभियोग चलाया गया। गणपतिलाल जी बीमार थे। श्री माणिक्यलाल वर्मा की मामी का उन्हीं दिनों स्वर्गवास हो गया था अतएव उन दोनो को जमानत पर छोड दिया। श्री पथिक जी तो छिपकर आन्दोलन का सचालन कर रहे थे वे पुलिस और न्याय की पकड़ के बाहर थे। अब केवल साधु सीतारामदास तथा प्रेमचन्द भील रहे उन्हे पकड़ कर जेल मे रख दिया गया। परन्तु उनके विरुद्ध पुलिस कोई ठोस साक्षी उपस्थित न कर सकी जिससे उनके विरुद्ध राजद्रोह का अपराध प्रमाणित होता। अस्तु कुछ समय के उपरान्त उन्हे भी जेल से छोड दिया गया। इसका भी किसानो पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

पथिक जी इस बीच कानपुर श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के पास चले गए थे। बिजोल्या सत्याग्रह के लिए प्रताप मे गणेश शंकर जी ने पृष्ठ निश्चित कर दिए थे। पथिक जी उनका सपादन करते थे। आन्दोलन का कार्य श्री माणिक्यलाल वर्मा साधु सीतारामदास पथिक जी के निर्देशन के अनुसार चला रहे थे।

बिजोल्या ठिकाने के कामदार किसान सत्याग्रहियो पर बहुत झल्लाए हुए थे। विशेष कर बेगार बन्द कर देने मे वे बहुत ही क्षुब्ध थे। सत्याग्रहियो ने गोविन्द निवास के नारायण जी पटेल को छुडा लिया था वह बात उनके मन मे कसक रही थी। अब उन्होने एक चाल चली। इस बात की घोषणा की कि उदयपुर से महाराणा की सरकार की आज्ञा आ गई है कि किसानो से बेगार ली जावे। किसान दृढ रहे उन्होने बेगार देने से साफ इनकार कर दिया। उस पर ठिकाने ने ५१ किसानो को गिरफ्तार कर लिया। यह बिजोल्या आन्दोलन की प्रथम सामूहिक गिरफ्तारी थी।

सब किसान सत्याग्रही बिजोल्या राव के महलो के जेलखाने मे कैद किए गए। जेल इतनी छोटी थी कि उतने कैदी उसमे नही आ सकते थे अस्तु वे ५१ किसान मैदान में ही रहते थे। ठिकाने की ओर से उनके खाने-पीने का कोई प्रबंध नही था। किसान अपने घरो से आटा तथा अन्य सामान मगाकर अपना खाना स्वय बनाते थे। इस काम के लिए किसानो ने कल्याणपुर के देवा जी को नियुक्त कर लिया उन्हे वे कोतवाल कहते

थे। प्रतिदिन देवाजी प्रात:काल ५१ किसानों के यहां से सीधा सामान लाता और सायकाल उनकी खबर उनके घरवालो को पहुचाता।

पथिक जी बाहर थे उनसे सलाह करना आवश्यक था, किसानो में बेचैनी थी। वर्मा जी ने उन्ही देवा जी के द्वारा ४०, ५० प्रमुख किसानो को बुलाकर सलाह की और निश्चय किया कि पथिक जी से आन्दोलन के सम्बन्ध में परामर्श करने के लिए जाया जाय। उसी समय पथिक जी की सूचना आई कि तुम लोग दिल्ली काग्रेस मे आओ वहीं मिलेगे किसान प्रतिनिधि कांग्रेस भी देख लेंगे।

अतएव १९१८ के दिल्ली कांग्रेस के अधिवेशन को देखने के लिए श्री माणिक्य लाल वर्मा के साथ उमा जी खेड़ा के चम्पा जी और चतुर्भुज जी तथा माजी के खेड़ा के लक्ष्मण जी बूदी के रास्ते से दिल्ली के लिए रवाना हुए उन्होने कोटा से पथिक जी को दिल्ली पहुचने का तार दे दिया।

जब वर्मा जी और उनके साथी दिल्ली में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी से मिले तो विद्यार्थी जी ने उन चारो को गले से लगा लिया और उन्हें सत्याग्रह करने पर बहुत शाबाशी दी।

काग्रेस मे महामना मालवीय जी का अध्यक्षीय भाषण सुनकर उन्हें बहुत भरोसा और उत्साह हुआ। किसानो पर मालवीय जी के भाषण का बहुत अच्छा प्रभाव पडा। उन्होने देखा कि ब्रिटिश सम्राट जिसके सामने देशी महाराजे भय से कापते हैं उसकी तनिक भी परवाह न कर मालवीय जी अग्रेजो के खिलाफ बोल रहे थे तो अपना बिजोल्या राव की तो ब्रिटिश सम्राट के सामने कोई हैसियत ही नहीं है उससे डरना व्यर्थ हे। बिजोल्या के किसान दिल्ली से नया उत्साह और निर्भयता लेकर बिजोल्या वापस लौट आए। उन्होने पथिक जी से शीघ्र बिजोल्या वापस लौटने का आग्रह किया।

बिजोल्या पहुचने पर वर्मा जी को ज्ञात हुआ कि दीपानाल जी नायब मुंसरिम बदल गए है और उनके स्थान पर माधूसिंह कोठारी नए नायब मुसरिम होकर आ गए हैं। माधूसिंह ने आते ही फाल्गुन शुक्ल ४ सवत १९७५ को श्री माणिक्य लाल वर्मा को उन किसानो के साथ ही जेल में बद कर दिया। उस दिन शाम को साधू सीतारामदास को भी गिरफ्तार कर लिया गया। नायब मुंसरिम की युक्ति यह थी कि श्री माणिक्य लाल वर्मा तथा साधू सीतारामदास को जेल मे बद कर देने पर किसानो का कोई नेता नहीं रहेगा और आंदोलन ठप्प हो जावेगा। उसने दोनो को पृथक स्थानो पर कैद किया। वर्मा जी को कचहरी के पास की बुर्ज में कैद किया गया और साधू जी को नीचे जेल के अन्दर रखा गया। किसान मैदान में रहते थे।

इस समाचार की सूचना मिलने पर पथिक जी इदौर राज्य के तेजपुर गांव मे आ गए जो बिजोल्या की सीमा थडोद (ग्वालियर) से मिला हुआ गाव है। बिजोल्या से उनके पास डाक आती थी और वे किसानो को क्या करना चाहिए उसके आदेश भेजते तथा उधर मेवाड सरकार तथा ए. जी जी को किसानो के प्रार्थनापत्र भेजते। पथिक जी के पास रात्रि को आदमी पहुँचता तो सारे समाचार जान लेते और किसानों

को क्या करना चाहिए उस संबंध मे आदेश दे देते थे। उमा जी का भेजा तथा गोविंद निवास के कार्यकर्ता डाक को पथिक जी के पास ले जाते और लाते थे।

ठिकाने के अधिकारियो ने नायब मुंसरिम से मिलकर यह युक्ति निकाली कि किसानों से कहा जावे कि उदयपुर के मुहकमा खास (सचिवालय) से आज्ञा आई है कि किसानो के प्रतिनिधियो को यहा भेजा जावे और ठिकाने के प्रतिनिधि भी आवें। नायब मुंसरिम ने उन ५१ कैदी किसानो से कहा कि वे उदयपुर चलने के लिए तैयार हो जावे। ठिकाने वालो की चाल यह थी कि उदयपुर ले जाकर सवत १९७० की तरह फिर समझौता करवा लिया जावे जिसमे नाम मात्र की छूट देकर बेगार तथा लागतो को स्थायी करवा लिया जावे। कैदी किसानो ने कहा कि जब तक उन्हें अन्य किसानो से नही मिलने दिया जाता वे इस सम्बन्ध मे कोई निर्णय नही कर सकते। निदान ठिकाने के अधिकारियो ने बाहर से ३०० किसानो को और बुलाया।

वर्मा जी को कैदखाने मे यह सूचना मिली उन्होने अपनी बुर्ज की कोठरी की खिडकी से प्रात: काल ६ बजे झाक कर देखा तो नीचे एक किसान दिखलाई पड़ा उससे उन्होने कह दिया कि सभी किसानो से कह दो कि उदयपुर जाने की मुहकमा खास की आज्ञा की नकल ठिकाने खास वालो से मागे। राजूदीन सिपाही ने वर्मा जी को किसान को यह बात कहते देख लिया तुरन्त वह खिडकी बन्द करवा दी गई।

दूसरे दिन जब वे ३०० किसान आये तो उनके पास वर्मा जी का सदेश पहुंच चुका था। यद्यपि नायब मुंसरिम ने किसानो को बहुत डाटा, डराया, धमकाया परन्तु सभी किसानो ने एक स्वर से कहा "मुहकमा खास की आज्ञा बतलाओ तभी हम उदयपुर जावेंगे।"

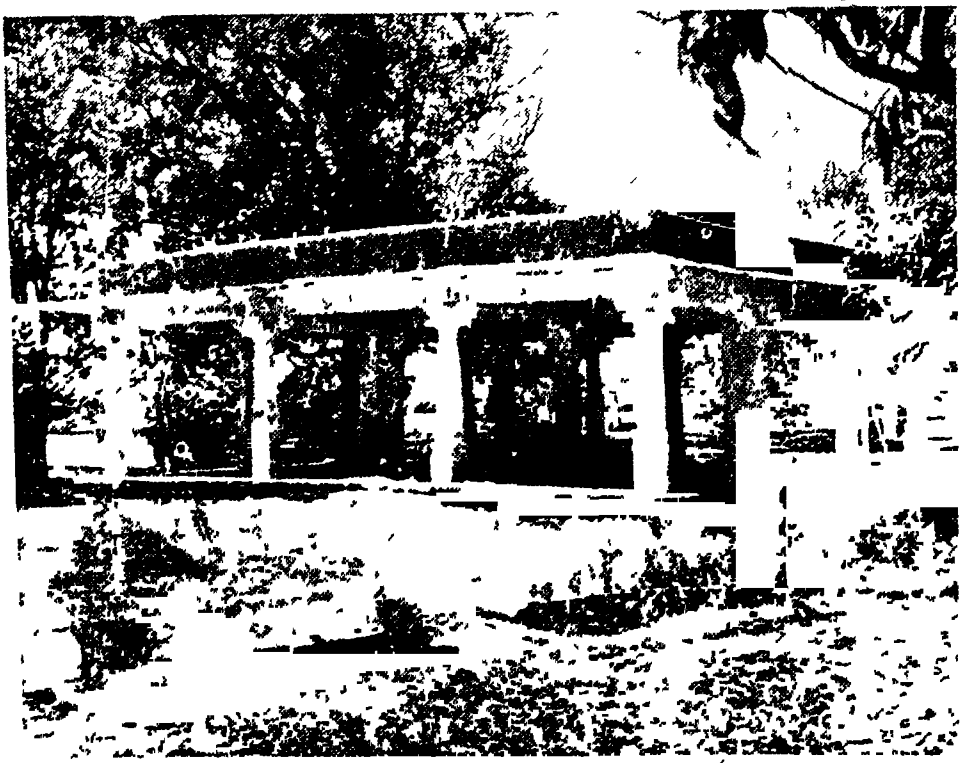
नायब मुंसरिम माधुसिंह बौखला गए। उन्होने सिपाहियों को सकेत किया कि इन्हे मुहकमा खास की नकल बता दो। सिपाही किसानो को घोड़ों के अस्तबल की ओर ले जाते और एक एक किसान की पिटाई करते। इस पर सब किसानो ने एक स्वर मे कहा हमे एकान्त मे मत पीटो खुले मे मारो और यह कहकर वे सब के सब वहा से निकल कर जेल के दरवाजे के बाहर खडे हो गए।

सभी बदियो को बाहर खडे देखकर ठिकाने के अधिकारियो ने उन पर जेल तोड़ने का आरोप लगाया और २५ व्यक्तियो को बुलाकर उनसे पचनामा लिखवा लिया। किसानों ने कहा कि हम अब भी जेल मे है हम अकेले मे पिटना नही चाहते थे। ठिकाने के अधिकारियो ने ठिकाने की ओर गाव के दोनो फाटक बद करवा दिये जिससे कि बाहर से किसान सत्याग्रह के लिए न आ सके। तीन चार सौ ३ ०, ४०० किसान महल के सामने बिना पहरे के बैठे रहे। वे खाने पीने का सामान घरो से मगवाते थे। देवा जी कोतवाल सारी व्यवस्था करते थे।

जब किसानो पर जेल तोडने का अभियोग लगाया गया तो वे घबरा गए। उनमे भय और घबराहट फैल गई। श्री माणिक्यलाल वर्मा उसी रात को पेशाब करने के बहाने पास की जेल की टूटी दीवार फलाग कर किसानो के पास पहुचे और उनसे



विजोलिया में वर्मा जी का जन्मस्थान



पार्श्वनाथ मदिर का वह स्थान जहा पथिकजी ने वर्माजी
को आजन्म देशसेवा की शपथ ग्रहण कराई थी



वर्माजी पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ

कहा कि तुम घबराओ नहीं। जब कल नायब मु'सरिम अभियोग की सुनवाई करें तो उनसे कहना कि आप तो फरियादी हैं आपको खुद मुकदमे की सुनवाई करने का कोई अधिकार नही है। इसकी सुनवाई का आपका प्रयास अवैध है। इसकी सुनवाई और फैसला तो मुहकमा खास उदयपुर ही कर सकता है। किसानो को समझा कर वर्मा जी वापस आ गए। जब वे वापस आ रहे थे तो पहरे के सिपाही दीना ने देख लिया और उनसे कहा कि मैं तुम्हारी शिकायत करूंगा। वर्मा जी वापस जेल की दीवार पर चढ़कर ऊपर चढ़ अपने बुर्ज मे आ गए और सिपाही से उन्होने कहा, देखो अगर तुम शिकायत करोगे तो मेरी तो अधिक से अधिक इतनी ही हानि होगी कि चार छः माह की सजा बढ जावेगी लेकिन तुम नौकरी से अवश्य निकाल दिये जावोगे। यह तुम्हारी गलती थी कि तुमने मुझे जेल फलांग कर जाने दिया। यदि नौकरी से हाथ धोना हो तो अवश्य कह देना। बेचारा दीना सिपाही भयभीत हो गया। वह चुप रहा। उसने इस बात का किसी से जिक्र भी नही किया कि रात्रि को वर्मा जी किसानो को पाठ पढा आए हैं।

दूसरे दिन जब किसान नायब मु सरिम माधोसिंह के समक्ष उपस्थित किए गए तो सबो ने एक स्वर से कहा कि इस अभियोग की सुनवाई करने का उन्हे कोई अधिकार नही है इसका फैसला मुदकमा खास उदयपुर करेगा।

नायब हाकिम माधोसिंह का चेहरा तेजहीन हो गया वे समझ गए कि वर्मा जी ने अथवा साधू सीतारामदास ने उन्हे यह सब पढाया है। उन्होने दोनो को बुलाया और उनके पैरो मे बेड़िया डाल दी गई और उनको जेल की एक कोठारी मे बन्द कर दिया गया।

जेल में पहुँचते ही वर्मा जी तथा साधू जी ने वन्देमातरम का घोष किया। जो भी किसान उधर से निकलता वही वन्देमातरम कहता। अन्दर से वर्मा जी तथा साधू जी और बाहर से किसान वन्देमातरम का घोष करते। इससे किसानो का नैतिक बल बना रहा। ठिकाने के अधिकारियों का भय जाता रहा।

ठिकाने के अधिकारियो का दमन क्रूरता की चरम सीमा पर पहुँच गया था। मकानो से सामान उठवा लेना, खडी फसल नष्ट करवा देना पशुओ को पकडवा लेना साधारण बात थी। किसानो पर लाठी, बरलम और तलवार से वार होता। कभी-कभी किसानों को भयभीत करने के लिए बदूक के फायर किए जाते। जो किसान घायल हो जाते उनकी माडलगढ का डाक्टर राज्य के भय मे चिकित्सा भी नही करता था। किसानो के साथ अमानवीय अत्याचार किए जाने लगे किसानो के दोनो पैर खेडा (काठ का यन्त्र) मे डाल कर ताला लगा दिया जाता। उनके पैरो को चौडा करवाकर उनमे भारी पत्थर बाध दिये जाते और उन्हे चिलचिलाती धूप मे बैठाया जाता। कहने का अर्थ यह है कि ठिकाने के अधिकारी किसानो को भयभीत करने के लिए नए-नए अत्याचार के तरीको को अपनाते परन्तु किसान दृढ थे वे नही डिगे। वे पथिक जी की जय बोलते और यही कहते कि हमे मरना मञ्जूर है पर लागत बेगार देना मञ्जूर नही।

उधर पथिक जी पत्रो मे विजोल्या ठिकाने के अत्याचारो की कहानी का धुआँधार प्रचार कर रहे थे। मेवाड सरकार ए. जी. जी तथा भारत सरकार के विदेशी विभाग के पास किसानो की ओर से प्रार्थना-पत्र स्मृति पत्र धडाधड भेजे जा रहे थे। अंत मे इस सारी परिस्थिति को देख कर महाराजा साहब ने बिन्दुलालजी भट्टाचार्य, अमर सिंह राणावत तथा अफजल अली को बिज्योल्यां जाच कमीशन मे नियुक्त कर जांच के लिए विजोल्या भेजा।

वैशाख शुक्ल १३ सवत् १९७६ अर्थात अप्रेल १९१९ को कमीशन बिजोल्यां पहुँचा और दूसरे ही दिन १४ को वर्मा जी तथा साधू जी को जेल से मुक्त कर दिया गया। बात यह थी कि पथिक जी ने किसानो से कहला दिया कि वे यह मांग करें कि हमारे प्रमुख कार्यकर्ता छोडे जावे तभी हमारा पक्ष कमीशन के सामने रखा जा सकता है। अतएव कमीशन ने वर्मा जी तथा साधू जी को मुक्त करवा दिया। पथिक जी ने किसानो की ओर से एक स्मृतिपत्र तैयार किया। वर्मा जी तथा साधू जी को सब बातें समझा दी। साधू जी और वर्मा जी ने कमीशन के सामने वह स्मृतिपत्र रखा तथा किसानों के साथ हुए अमानवीय अत्याचारों का ब्योरा सुनाया। ठिकाने की ओर से हीरालाल जी तथा तेजसिंह ने केवल यह कहा कि लागते और वेगारे पुराने समय से चली आ रही हैं परन्तु वे अपने पक्ष मे कोई प्रमाण उपस्थित न कर सके। वर्मा जी ने पथिक जी के सुझाये अनुसार बढते हुए भूमिकर अनुचित लागते अमानवीय वेगारो का कच्चा चिट्ठा कमीशन के सामने रखते हुए ठिकाने के निर्दयतापूर्ण अत्याचारो का इतिहास बतलाया और कहा कि यदि हमारे साथ न्याय नही हुआ तो तो हम सघर्ष जारी रखेगे। उन्होंने ठिकाने की लूट और क्रूर दमन के प्रमाण पत्र उपस्थित किए और बतलाया कि ठिकाने ने किसानो का दमन और शोषण करने की नीति बनाली है। कमीशन ने ठिकाने का दमन और शोषण का विरोध करते हुए सब कैदियो को छोड देने तथा लगान, लागते और वेगारो के सम्बन्ध मे उचित फैसला किए जाने की सिफारिश की। किसानो को कमीशन ने आश्वासन दिया कि तुम्हारे कष्ट शीघ्र दूर होगे।

कमीशन के निर्णय के अनुसार सब कैदी छोड दिए गए परन्तु लगान (भोग) लागतो और वेगार का प्रश्न फैसला होने तक स्थगित रहा। जनता की यह अभूतपूर्व विजय थी। जब कैदी छूटे तो किसान स्त्री पुरुष उमड पडे। गाजे बाजे से जयजयकार के साथ पुष्पो की वर्षा के बीच उनका अपूर्व स्वागत हुआ। समस्त ऊपरमाल आचल में उत्साह की लहर फैल गई और पचायत की धाक बैठ गई। यद्यपि कमीशन ने किसानो को आश्वासन दिया था कि लागतो और वेगारो के सम्बन्ध मे आगे फैसला होगा परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मेवाड सरकार ने कमीशन की रिपोर्ट पर कोई ध्यान नही दिया दिया इसलिए महकमा खास ने उस पर कोई कार्यवाही नही की। किसानो को न्याय नही मिला। पथिक जी के नेतृत्व मे किसानो ने यह प्रतिज्ञा करली थी कि वे लाग वेगार नही देंगे और ठिकाने की यह जिद थी कि बिना लाग बेगार के लगान नही लेगे।

उन्ही दिनो एक विचित्र घटना घटी जिससे ऊपरमाल के किसानो की एकता का

आश्चर्यजनक प्रभाव प्रकट होता है। सवत १९७६ के कार्तिक मास में ज्वार की बालो (फुडके) की लागत देने जब कोई किसान नही आया तो ठिकाने वालो ने ३०,३५ सेहणों को इकटठा किया और सबसे पहले कल्याणपुरा गांव मे ज्वार की बालो (फडको) को तोड़ने के लिए हरिजनो (वेगारियो) को वेगार मे पकडा। उन सेहणो ने अपने हाथ से पाच सात व्यक्तियो के खेतो मे ज्वार की बाले (फडके) तोडे। किसानो ने उमा जी के खेडे मे श्री माणिक्यलाल वर्मा से जा कर कहा। वर्मा जी ने उन किसानो से कहा कि तुम अपनी बालों भुट्टो (फडको) को पकड कर बैठ जाओ उन्हे मत ले जाने दो यदि वे तुम्हे पकड कर जेल ले जावे तो उन्हे छोड कर जेल चले जाओ। इधर ठिकानेवाले ज्वार के भुट्टों को वेगारियो पर लाद कर लक्ष्मीनिवास गाव गये वहां भी पांच सात खेतो मे ज्वार के भुट्टे (फडके) तोडे। जबकि वेगारियो के ऊपर लदवाकर वे आ रहे थे तो लक्ष्मी निवास और कल्याणपुर के ६० ७० किसान लक्ष्मीनिवास और विजोल्यां के बीच मिल गए। उन्होने आवाज दी कि खडे हो जावो। हरिजनो ने गट्ठर जमीन पर डाल दिए और खडे हो गये। जैसे ही वे किसान समीप आए ठिकाने के सेहणे ज्वार के भुट्टो (फडको) को छोडकर विजोल्या भाग गए। किसान अपने भुट्टे (फडके) उठा लाए। ठिकाने वालो का उनको गिरफ्तार करने का साहस ही नही हुआ।

ठिकाने ने पीवल (सिंचित भूमि) का लगान बहुत बढा दिया था तथा गन्ने की पिलाई (सिंचाई) का टेक्स भी वहुत ऊचा था अतएव पथिक जी ने पचायत को सलाह दी कि केवल माल की जमीन को जोता जावे और पीवल की जमीन को पडत रख दिया जाय। माल की जमीन का लगान नाममात्र का था। पचायत ने यह निर्णय कर लिया कि कोई पीवल जमीन नही जोतेगा। ठिकानेवालो ने किसानो से कहा कि यदि तुम माल की जमीन जोतोगे तो सिंचित भूमि का भी लगान देना होगा। एक वार पुन पचायत तथा ठिकाने मे सघर्ष छिड गया। पथिक जी की राय से पचायत ने नए राव साहब को प्रार्थनापत्र दिया क्योकि उसी वर्ष कोर्ट आव वार्डस (मु सरमान) उठ गई थी और नए राव साहब गद्दी पर बैठे थे। परन्तु उन्होने किसानो के प्रार्थनापत्र पर कोई ध्यान नही दिया।

इस बार फसल के कूते मे ठिकाने वालो ने ऐसे व्यक्तियो को लिया जो ठिकाने के पक्ष के थे उन्होने वहुत अधिक कूता किया। किसान उतना अधिक दे नही सकते थे। अभी तक किसान पचायत मे धाकड जाति के किसान ही थे परन्तु इस कूंते के कारण भील, कराड, तथा अन्य जातियो के भी किसान सम्मिलित हो गये। पचायत ने कूते का दृढता के साथ विरोध करने का निर्णय किया। वर्मा जी, तथा अन्य कार्यकर्ता जेल से छूट आए थे इस कारण किसान पचायत अधिक सुसगठित और सतेज हो गई थी।

पथिक जी ने प्रताप के द्वारा तथा अन्य समाचार पत्रो के द्वारा धुआधार प्रचार करना आरम्भ कर किया। धाकडो के अतिरिक्त अन्य जातियो के किसान पचायत मे सम्मिलित होने से ठिकानेवाले चौके उन्होने उन जातियो के दो सौ मुखियो को पकड कर जेल मे डाल दिया और उन पर घोर अत्याचार और दमन करना शुरू कर दिया।

पथिक जी ने प्रताप तथा अन्य समाचार-पत्रों द्वारा इस दमन की कहानी देश भर को सुनाना आरंभ कर दी। पचायत द्वारा महाराणा को, प्रार्थनापत्र भेजा गया तार पर तार दिए विवश होकर मेवाड राज्य को ठिकाने को आदेश देना पडा कि किसानो ने जिस भूमि (माल) को जोता है केवल उसी का भोग (मालगुजारी) लिया जावे। किसान पचायत की यह अभूतपूर्व विजय थी इससे किसान पचायत की धाक समस्त ऊपरमाल आचल मे बैठ गई।

उसी वर्ष १६१६ में अमृतसर कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। पथिक जी ने निश्चय किया कि बिजोल्या का मामला काग्रेस मे रखा जावे। पथिक जी स्वयं अमृतसर गए। लोकमान्य तिलक से मिलकर उन्होंने किसानो की करुण कथा सुनाई उनके त्याग और बलिदान तथा एकता की जानकारी दी। लोकमान्य तिलक पथिक जी की उत्कट देशसेवा और उनके बिजोल्या किसान आदोलन के कार्य से बहुत प्रभावित थे। उन्होने स्वयं बिजोल्या के सम्बन्ध मे प्रस्ताव रखना स्वीकार कर लिया। लोकमान्य तिलक ने प्रस्ताव रखा तथा श्री केलकर ने उसका समर्थन किया। महामना मालवीय जी तथा महात्मा गाधी ने प्रस्ताव का विरोध किया। उनका कहना था कि काग्रेस को देशी राज्यो में आदोलन नही करना चाहिए। मालवीय जी ने यह आश्वासन दिया कि वे महाराणा से मिल कर इस मामले को तय कराने का प्रयत्न करेगे। अस्तु बिजोल्या संबधी प्रस्ताव तो काग्रेस मे पास न हो सका परन्तु समस्त देश का ध्यान बिजोल्या की ओर आकर्षित हो गया।

उसी समय राजपूताना मध्य भारत सभा ने स्वामी भवानी दयाल सन्यासी के नेतृत्व मे बिजोल्या जाच आयोग नियुक्त कर दिया। जब स्वामी जी ने बिजोल्यां जाकर जाच करने की सूचना महाराणा को दी तो महाराणा ने तुरन्त एक कमीशन स्वय नियुक्त कर उन्हे लिखा कि इस कमीशन की रिपोर्ट आने तक वे प्रतीक्षा करे। महाराणा की इस युक्ति से भवानीदयाल कमीशन मेवाड़ नही जा सका।

महाराणा ने पडित रमाकान्त मालवीय (प्रधान महद्राज सभा) तखतसिंह मेहता, तथा ठाकुर राजसिंह को कमीशन मे नियुक्त कर दिया।

यद्यपि महात्मा गाँधी देशी राज्यो मे काग्रेस के हस्तक्षेप के विरोधी थे पर बिजोल्या के किसान सत्याग्रह ने उन्हे भी आकर्षित किया था। बिजोल्या सबधी जानकारी प्राप्त करने के लिए महात्मा गाधी ने फरवरी १६१६ मे पथिक जी को बम्बई बुलाया। पथिक जी ने महात्मा जी को किसानो की करुण कथा सुनाई। महात्मा जी ने अपने सेक्रेटरी श्री महादेव देसाई को बिजोल्या के किसानो के कष्टो की जाच करने के लिए पथिक जी के साथ बिजोल्या भेजा। बिजोल्या आकर महादेव देसाई ने जाच की और अपनी रिपोर्ट महात्मा जी के पास भेज दी। महात्मा जी उस रिपोर्ट से बहुत अधिक प्रभावित हुए और उन्होने पथिक जी को वचन दिया कि यदि मेवाड राज्य ने बिजोल्यां के किसानो को शीघ्र न्याय नही दिया तो वे स्वय बिजोल्या सत्याग्रह का सचालन करेगे। महात्मा गाधी उसी समय बिजोल्या आदोलन को तीव्र बनाने के लिए उद्यत

थे परन्तु मालवीय जी ने गांधी से कहा—आप तनिक ठहरे मुझे प्रयत्न कर लेने दे। इस कारण बापू ने स्वयं उसी समय आदोलन मे कूदना उचित नही समझा।

उधर महाराणा ने जो जाच कमीशन नियुक्त किया था वह बिजोल्या नही गया। उसने बिजोल्या के पचो को उदयपुर बुलाया। पथिक जी की राय से श्री माणिक्य-लाल वर्मा के नेतृत्व मे मोतीचद खेडा, हीरालाल जावदा, गोकुल जी जावदा, गोकुलजी गिरधरपुरा तथा कालू जी कल्याणपुरा को कमीशन के सामने किसानो का पक्ष रखने के लिए भेजा।

वर्मा जी ने बिजोल्यां के किसानो की कठिनाइयों और दुख दर्द का सप्रमाण ब्यौरा रखा, अनुचित लागतो और बेगारो को बन्द करने बन्दोबस्त करके मालगुजारी निश्चित करने तथा लाटा और कूता को समाप्त करने की माग की। कमीशन ने पहले कमीशन की ही भाति किसानो के पक्ष को सही माना और उनको न्याय देने की राय दी। परन्तु राज्य कमीशन की रिपोर्ट से सतुष्ट नही था मालवीय जी भी उस समय गाधी जी को दिए हुए अपने वचन के अनुसार महाराणा से मिलने आए परन्तु वे भी असफल रहे। बात यह थी कि राज्य कोई समझौता नही चाहता था। इसका कारण यह था अग्रेज सरकार बिजोल्या आदोलन को अत्यन्त खतरनाक मानती थी। बिजोल्या किसान पंचायत को वह सोवियत रूस के 'कम्यून' का दूसरा रूप मानती थी अस्तु भारत सरकार का परराष्ट्र विभाग मेवाड राज्य पर बिजोल्या आदोलन को दबाने के लिए बराबर दबाव डाल रही थी। उधर मेवाड के जागीदार भी मेवाड राज्य पर बिजोल्या आदोलन का कोई फैसला न करने के लिए दबाव डाल रहे थे। अस्तु सारे प्रयत्न असफल हो गए कोई फैसला न हो सका।

वर्मा जी ने जिस निर्भयता तथा साहस के साथ किसानो का पक्ष कमीशन के समक्ष रखा उससे सभी लोग बहुत प्रभावित हुए। वर्मा जी ने कमीशन से स्पष्ट शब्दो में कह दिया था कि यदि न्यायपूर्ण फैसला नही हुआ तो पचायत पुनः सत्याग्रह छेड देगी। अस्तु समझौते के प्रयत्न असफल होते ही वर्मा जी ने किसानो को सत्याग्रह के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। उधर ठिकाने ने भी दमन करना आरभ कर दिया।

जब पथिक जी बबई मे महात्मा गाधी से मिलने गए थे तभी वहा यह तय हो गया था कि श्री जमनालाल बजाज पथिक जी के सपादकत्व और सचालकत्व मे वर्धा से एक पत्र निकालने की व्यवस्था करेंगे जो कि राजस्थान के जन जीवन को प्राणवान बनाने तथा राज्यो की प्रजा के अभाव अभियोगो को प्रकाश मे लाने का कार्य करेगा। अस्तु पथिक जी वर्धा चले गए और वहा से 'राजस्थान केसरी' पत्र निकालना आरभ कर दिया।

पथिक जी अभी तक यद्यपि भूमिगत थे परतु वे रहते बिजोल्या के आस-पास ही थे। या तो उमा जी खेडे के उस वीरान मकान मे रहते अथवा बिजोल्या की सीमा से लगे हुए ग्वालियर इन्दौर या बूदी के किसी गाव में रहते थे अतएव वर्माजी तथा अन्य कार्यकर्ता उनसे रात्रि मे मिलकर प्रत्येक समस्या के सबध मे मार्गदर्शन प्राप्त कर लेते थे। वस्तुत, आदोलन की व्यूह रचना तथा दिन प्रतिदिन आदोलन का सचालन

स्वय पथिक जी ही करते थे। परतु अव पथिक जी विजोल्या से दूर चले गए अस्तु आदोलन का निर्देशन तो वे ही करते थे परन्तु आदोलन का दिन प्रतिदिन का सचालन और स्थानीय सगठन का नेतृत्व वर्मा जी के हाथ मे था। पथिक जी ने देख लिया था कि वर्मा जी मे किसानो को एक साहसी कर्मठ और योग्य मार्गदर्शक मिल गया है। अस्तु वे इस ओर से निश्चिन्त होकर समस्त राजस्थान के लिए एक सस्था खड़ी करने मे लग गए। विजोल्या से वर्मा जी बराबर उनके पास डाक भेजते थे और पथिक जी से निर्देशन लेते रहते थे।

राजस्थान केसरी को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई। पथिक जी के सम्पादकत्व मे राजपूताने और मध्य भारत की पीडित जनता का वह एकमात्र सहारा बन गया था। ब्रिटिश सरकार तथा देशी नरेशो पर उसकी धाक जम चुकी थी। परन्तु पथिक जी जैसे क्रातिकारी राष्ट्रकर्मी का श्री जमनालाल बजाज की विचारधारा से मेल खाना कठिन था। अतएव वे राजस्थान केसरी को छोडकर अजमेर चले आए और उन्होने 'राजस्थान सेवा सघ' की स्थापना की और 'नवीन राजस्थान' पत्र प्रकाशित करना आरभ कर दिया। यह नागपुर काग्रेस के बाद की घटना थी।

१९२० मे नागपुर की ऐतिहासिक काग्रेस हुई। वहा पथिक जी ने अपने सहयोगियो की सहायता से देशी राज्यो मे होनेवाले अत्याचारो की प्रदर्शनी लगाई। यह प्रदर्शनी पथिक जी की मौलिक सूझ थी इसका देश भर से आए हुए राष्ट्रकर्मियो पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनका ध्यान पहली बार देशी राज्यो की प्रजा की दुहरी गुलामी की ओर खिच गया। पथिक जी उस सहानुभूति का लाभ उठाकर काग्रेस के विधान मे मौलिक परिवर्तन कराने मे सफल हो गए। नागपुर काग्रेस मे काग्रेस ने ब्रिटिश भारत की सकुचित परिधि को छोड कर सम्पूर्ण हिन्दोस्तान की आजादी प्राप्त करना अपना ध्येय घोषित किया और राज्यो की प्रजा को भी काग्रेस का प्रतिनिधि बनने का अधिकार दिया।

पथिक जी ने वर्मा जी को लिखा था कि वे विजोल्या के किसानो के प्रतिनिधियो को लेकर नागपुर पहुचे। राज्य ने कमीशन की रिपोर्ट को स्वीकार नही किया था, मालवीय जी का प्रयत्न असफल हो गया था किसानो को न्याय नही मिला था अतएव पुन. सत्याग्रह छेडने के पहले महात्मा गाधी का आशीर्वाद लेने के लिए वर्मा जी के नेतृत्व मे किसान पचो को पथिक जी ने नागपुर बुलाया। वर्मा जी अपने साथ गोकुल जी, नन्दा जी तथा कालू जी को ले गए थे।

किसान पचो की महात्मा गाधी से मिलने की उत्कट इच्छा थी। वे काग्रेस के पडाल के बाहर बैठे थे। इतने मे अकस्मात महात्मा जी बाहर आए और कही बाहर जाने के लिए मोटर मे बैठने लगे। वर्मा जी ने जोर से चिल्लाकर कहा, 'बापू विजोल्या के किसान दर्शनार्थ बैठे है। जैसे ही विजोल्या का नाम महात्मा जी के कानो मे पडा, महात्मा गाधी मोटर से उतर आए किसानो से मिले उनको गले लगाया और कहा 'शाबाश वीरो' और रात्रि मे मिलने के लिए कह कर चले गए।

जब रात्रि को पथिक जी, वर्मा जी, श्री रामनारायण चौधरी, श्री हरिभाई किंकर और किसान महात्मा गाधी से बिजोल्या सत्याग्रह के सम्बन्ध मे मिलने गए तो उन्हे देखते ही महात्मा जी बोले 'क्यो पथिक जी, काग्रेस ने असहयोग आदोलन छेड दिया है परन्तु मैने आपको बिजोल्या आदोलन का स्वय सचालन करने का वचन पहले ही दे दिया था। कहिये कांग्रेस का असहयोग आदोलन चलाऊ या पहले बिजोल्या सत्याग्रह के सचालन का वचन पूरा करू।' पथिक जी महात्मा जी के वचन सुनकर आत्मविभोर हो उठे बोले 'नही महात्मा जी आप देश की स्वतन्त्रता के इस महान कार्य को सभालिए। यह छोटे मोटे कार्य हमारे लिए छोड दीजिए। जागीरदारो तथा राजेरजवाडो से तो हम आपके अनुयायी ही निपट लेगे।' गाधी जी से आशीर्वाद लेकर पथिक जी ने देशी राज्यो के कार्य को अधिक सतेज करने के लिए एक ऐसी सस्था स्थापित करने का निश्चय किया कि राजस्थान की सेवा के लिए देशभक्त साहसी कार्यकर्ताओ को सगठित करे। जब पथिक जी का जमनालाल बजाज से विचार-भेद हुआ तभी वे राजस्थान केसरी छोडकर अजमेर आ गए और उन्होने राजस्थान सेवासघ की स्थापना की।

महात्मा गाधी से बिजोल्या सत्याग्रह के लिए आशीर्वाद लेकर जब वर्मा जी किसानो के साथ नागपुर से बिजोल्या पहुँचे तो उनके मन मे भारी उत्साह था। महात्मा जी से मिलकर किसानो में बहुत जोश उत्पन्न हो गया था।

बिजोल्या लौटने के उपरान्त आदोलन और अधिक तीव्र हो गया। जनवरी १९२१ में मेवाड रेजीडेन्ट श्री विल्किसन का बिजोल्या की ओर दौरा हुआ। ठिकाने को बेगार लेने का यह अच्छा अवसर मिल गया। उन्होने सोचा कि जब वे रेजीडेन्ट के लिए बेगार लेगे तो राज्य भी कुछ नही कहेगा और पचायत भी चुप हो जावेगी। परन्तु वर्मा जी के नेतृत्व मे पचायत ने बेगार देने से साफ इन्कार कर दिया, उन्होने कहा कि किसान बेगार नही देगे यदि उचित मजदूरी मिलेगी तो काम करेगे। फल यह हुआ कि किसानो ने बेगार देना अस्वीकार कर दिया।

उमा जी के खेडे मे स्वय वर्माजी बैठे थे इस कारण वह किसान पचायत का मुख्य केन्द्र था। तत्कालीन कामदार मुहम्मद अली ने सोचा कि यदि उसके समीप के गांवो के प्रमुख किसानो को बेगार के लिए बिजोल्या ले जाया जा सके तो किसानो का साहस टूट जावेगा। अस्तु सबसे पहले उन्होने माजी के खेड़े मे नारायण जी, लक्ष्मण जी तथा जयचन्द के मकानो को घेर लिया। उनमे कहा कि या तो बेगार दो या फिर बिजोल्या चलो। समस्त गाव सगठित हो उठ खडा हुआ वर्माजी के पास समाचार पहुचा तो उन्होने अन्य गाव वालो को भी वहा पहुचने का आदेश दिया। माजी के खेडे मे सैकडो किसान जमा हो गए। दोपहर कामदार २०० आदमी लेकर माजी के खेडे आए परतु किसानो को सगठित देखकर कुछ देर बातचीत कर वापस लौट गए। फरवरी १९२१ के अंतिम सप्ताह मे एक घटना घटी जिसका ठिकाने ने लाभ उठाना चाहा। देगोली के नंदराम अहीर को रात्रि मे किसी ने पीटा। नदराम राव साहब के धाय भाइयो मे से था। कामदार के कहने पर उसने उमा जी के खेड़े के चपालालजी, रामा जी और

तुलसीराम के नाम लिखवा दिए। दूसरे दिन ठिकाने के २०० व्यक्तियो का दल उन्हे गिरफ्तार करने के लिए उमा जी के खेडे आया। परन्तु किसानो ने कहा कि हम ठिकाने को नही मानते राज्य के अधिकारी आवेगे तो हम गिरफ्तार होगे। अतएव उस समय तो ठिकाने के आदमी वापस चले गए परन्तु कुछ ही दिनो उपरांत माघ शुक्ल १० संवत् १९७७ को तुलसीराम जी जब जगल मे घास खोदने गए तो वहा ठिकाने के आदमियो ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया।

यह खबर एक व्यक्ति ने भाग कर उमा जी के खेडे मे पहुचाई। खबर सुनते ही वर्मा जी ने अपनी पाठशाला के ८० छात्रो को छुट्टी दे अन्य गांवो मे आदमियों को बुलाने भेज दिया इधर ठिकाने के आदमी तुलसीराम जी को गिरफ्तार कर बिजोल्यां ले जा रहे थे उधर दो हजार किसानो ने उन्हे रास्ते मे घेर लिया। ठिकाने के आदमियो ने भयभीत हो तुलसीराम को छोड दिया।

दूसरे दिन माघ शुक्ल ११ को ठिकाने के तीन सौ आदमी उमाजी के खेड़े आए। उन्होने वर्मा जी के साथ उन तीनों को भी गिरफ्तार कर लिया। प्रातःकाल यह समाचार आस पास के गांवो मे पहुंच गया तीन हजार किसान अपने नेता के गिरफ्तार होने का समाचार सुनकर उमा जी का खेडा आ गए। किसानो मे उस समय अद्भुत उत्साह था। जो देखने के योग्य था। ठिकाने के कर्मचारी कालूसिंह ने सरदारराम जी का खेडा के चतुर्भुज जी को ललकारा और कहा "पहला वार यह तेरे पर होता है" ऐसा कहकर उसने बन्दूक तानली। श्री चतुर्भुज भी अत्यन्त निर्भयतापूर्वक सीना खोल कर सामने आ गए और कहा "हा काका साहब पहला मुजरा मै ही करना चाहता हूं।" किसानो के संगठन और साहस को देख ठिकाने के सिपाही भयभीत हो गए। किसानो ने कहा कि हम ठिकाने के अस्तित्व को ही स्वीकार नही करते। उस समय नन्दा जी से दरीबी के अहीर खेमा जी ने कहा कि तूने ही यह बखेडा करवाया है। यदि तू राजीनामा कर लेता है तो यह मिट जावेगा नही तो अनर्थ हो जावेगा। हम कोई तेरा साथ नही देगे, खेमा जी की बात का नन्दा जी पर प्रभाव हुआ और उसने भी झगड़ा समाप्त करने के लिए कहा। इस पर ठिकाने के आदमी स्तब्ध रह गए। वे अहीरो को भला बुरा कह वहा से चले गए।

माघ शुक्ला १२ तक पथिक जी की ओर से कोई उत्तर नही आया और न नारायण जी लौटे तो श्री माणिक्यलाल वर्मा दो अन्य किसानों को साथ लेकर पैदल कोटा के लिए रात्रि मे चल पडे। उस पहाडी और वन आच्छादित प्रदेश में रात्रि भर चलकर वे प्रातःकाल कोटा पहुचे वहा से पथिक जी को वर्धा तार दिया।

पथिक जी पर मेवाड मे प्रवेश करने पर निषेध था अतएव वे स्वय तो आ नही सकते थे उन्होंने श्री अर्जुनलाल सेठी को भेजा। तार द्वारा उत्तर दिया कि श्री सेठी जी पहुँच रहे है। सेठी जी वर्मा जी को कोटा मे ही मिल गए। सेठी जी को लेकर वर्मा जी पैदल ही कोटा से सभी साथियो के साथ चल कर लक्ष्मीपुरा गाव आए और रात्रि में वही रहे। रात को सेठी जी के साथ कुछ आदमियो को छोड़ कर वर्मा जी अपने कुछ

साथियो को लेकर पैदल ही चल दिए। बात यह थी कि वर्मा जी पहले पहुँच कर सेठी जी के स्वागत की तैयारियां करना चाहते थे।

वर्मा जी की कष्ट सहिष्णुता का यह एक अद्भुत उदाहरण है। तीन दिन और तीन रात वे न तो सोये और न आराम ही किया पैदल बिजोल्या आचल से कोटा और कोटा से बिजोल्या उस पर्वतीय और वन आच्छादित प्रदेश मे वे चलते रहे। उस समय एक दुर्घटना होते होते बच गई। वर्मा जी और उनके साथी थकान मे चूर हो गए थे उन की आखों मे नींद झुक रही थी परन्तु बिजोल्या शीघ्र पहुँचना था अतएव वे बिना विश्राम किए चले जा रहे थे जब वे गरडवा के पास पहुचे और नदी मे चल रहे थे तो उनके एक साथी को नीद आ गई वह गिर पडा और उसके कधे पर भरी हुई बन्दूक रखी थी छूट गई परन्तु किसी के लगी नही। पहाडी और वन आच्छादित प्रदेश मे जगली पशुओ के कारण बन्दूक लेकर चलना पडता था।

फाल्गुन कृष्ण १३ को वर्मा जी अपने साथियो के साथ उमाजी के खेडे पहुचे और समस्त ऊमरमाल मे सेठी जी के स्वागत की तैयारिया की जाने लगी।

ऊपरमाल के किसान स्त्री पुरुष सभी सदाराम जी के खेडे मे इकट्ठे हुए। सदाराम जी के खेडे मे लगभग सात हजार का ग्रामीण जनसमूह एकत्रित हुआ। ऐसा प्रतीत होता था कि समग्र ऊपरमाल आचल की जनसख्या ही उमड कर आ गई हो। सेठी जी का बिजोल्या के किसानो ने अत्यन्त भव्य स्वागत किया। लक्ष्मीनिवास तक उनका बहुत बडा जलूस निकाला गया। लक्ष्मीनिवास मे सभा हुई, सेठी जी का भाषण हुआ। उस विशाल जनसमूह मे वर्मा जी ने जब पछीडा गाया तो स्वय सेठीजी गद्गद हो गए।

सेठी जी को ठिकानेवालो ने बिजोल्या के कस्बे मे नही घुसने दिया अतएव वे दरवाजे के बाहर रामस्नेही कल्याणराम जी के पास ही ठहर गए। सेठी जी ने सारी परिस्थिति देखी किसान पचो से बात की उन्हे उचित परामर्श देकर कि वे शान्ति-पूर्वक आन्दोलन चलाते रहे भड़के नही वे कोटा के मार्ग से वापस चले गए। वहा जाकर उन्होंने पथिक जी को सारी परिस्थिति से अवगत कराया।

उस समय ठिकाने की दशा अत्यन्त दयनीय हो उठी थी। आय के साधन समाप्त हो गए थे। किसानो ने लगान लागत, और बेगार बन्द कर रखी थी। साथ ही ठिकाने पर व्यय का भार बहुत हो गया था। क्योंकि आन्दोलन को दबाने के लिए उसे बहुत बड़ी सख्या मे सिपाही आदि रखने पड़ रहे थे। अतएव ठिकाना बहुत कर्जदार हो गया था।

बात यह थी कि पथिक जी ने किसान पचायत को सलाह दी थी कि ठिकाने का पूर्ण बहिष्कार कर देना चाहिए। वर्माजी के नेतृत्व मे किसान पचायत ने ठिकाने के बहिष्कार को ऐसा कठोर और पूर्ण बना दिया कि जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। वर्मा जी ने किसान पचायत से यह प्रस्ताव पास करा दिया कि कोई ऊपर-माल का किसान ठिकाने की कोई आज्ञा नही मानेगा लगान बेगार नही देगा। बिजोल्या के कस्बे में नही जावेगा। ठिकाने की कचेहरी से कोई वास्ता नही रखेगा। जो किसान

विजोल्या कस्बे मे रहते थे उन्होंने कस्बा छोड दिया, बाहर जगल मे डेरे डाल दिए। शराब छोड दी, शादी और मृत्यु भोज बन्द कर दिए गए। ठिकाने की जमीन की पडत रख कर समीपवर्ती राज्यो ग्वालियर कोटा बून्दी मे खेती करने लगे। इस आन्दोलन से छुटभइयो (राव साहब के छोटे जागीरदारो) की स्थिति तो वास्तव मे अत्यन्त दयनीय हो उठी। वे गुप्त रूप से पथिकजी के पास अजमेर जाते। लाग बेगार न लेने का वचन देते तो राजस्थान सेवा सघ से उनके गाव के पटेलो को तथा किसान पचायत को सूचना भेजी जाती कि उक्त छोटे जागीरदार ने लाग बेगार न लेने का लिखित वचन दे दिया है उसने राजस्थान सेवा सघ की शर्तों को मान लिया है उसको लगान उगाहने देना। तब जाकर उसको लगान मिलता था।

समस्त ऊपरमाल आचल के किसानो का ऐसा दृढ और अद्भुत संगठन हो गया था कि ठिकाने का सारा प्रभाव समाप्त हो गया। ठिकाने की आर्थिक स्थिति बहुत गिर गई उस पर भयकर कर्ज हो गया। राव साहब की आर्थिक स्थिति ऐसी दयनीय हो उठी कि उनके रसोडे (भोजनालय) का खर्च चलाना कठिन हो गया। अस्तु राव साहब भी समझौता कर लेना चाहते थे। उन्होने कई बार पचायत से सधि वार्ता करनी चाही तो पचायत ने पथिक जी से बात करने को कहा। जब सेठी जी बिजोल्या आए थे तो राव साहब ने पचायत से समझौता करने की इच्छा व्यक्त की थी। उन्होने सेठी जी से यह इच्छा प्रकट की थी कि पथिक जी से कहकर ठिकाने का किसान पचायत से समझौता करावे। पथिक जी बेगार प्रथा की जाच के लिए कोटा आए हुए थे वे बिजोल्या की ओर आ रहे थे कि बडगाव मे सूचना मिली कि सेठी आ रहे है तो वे वही रुक गए। सेठी जी ने पथिकजी को सारी परिस्थिति से अवगत कराया कि राव साहब ने समझौता करने की इच्छा प्रकट की। अस्तु पथिक जी बडगाव मे ही ठहर गए और उन्होने ठिकाने तथा किसान पचायत के प्रतिनिधियो को वही बुला लिया।

श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे दस बारह किसान प्रतिनिधि बड़गाव पहुँच गए। ठिकाने की ओर से सावललाल जी पुरोहित, हीरालाल जी कामदार तथा तेजसिंह फौजदार आए। एक सप्ताह तक सधिवार्ता चलती रही परन्तु बेगार के प्रश्न पर कोई समझौता न हो सका। वर्मा जी किसी भी रूप मे किसी प्रकार की बेगार देने के विरुद्ध थे उधर ठिकाने के प्रतिनिधि बेगार को पूरी तरह छोड देने को तैयार नही थे। उस समय कई बार राव साहब ने किसान पचायत से समझौता करने की इच्छा प्रकट की परन्तु हर बार किसान पचायत यही उत्तर देती कि पथिकजी के पास चलो। ठिकाने वाले पथिकजी तथा राजस्थान सेवा सघ से बात न करके सीधे पचायत से बात करना चाहते थे। एक बार राव साहब ने किसान पचायत से पुन. समझौते की बात चलाई पचायत ने कहा कि हम पथिक जी को सूचित कर देते है। किसान पचायत ने पथिक जी के पास अपने प्रतिनिधि भेजे और कहलाया कि राव साहब समझौता करना चाहते है आप आइए। पथिक जी अस्वस्थ थे फिर भी बिजोल्या आए। परन्तु उनके आने के पहले ही राव साहब बिजोल्या से उदयपुर चले गए। पथिक जी कई दिन बिजोल्या ठहरे

परन्तु तब संधि चर्चा करना तो दूर रहा उनसे कहा गया कि आप बिजोलिया से निकल जाइए। वस्तुस्थिति यह थी कि आर्थिक स्थिति के अत्यन्त भयावह हो जाने से विवश होकर वे चाहते थे कि कुछ समझौता हो जावे परन्तु परामर्शदाताओं, राज्य अधिकारियो तथा अन्य जागीरदारो का दबाव पडने पर पुन हट जाते। मन से तो वे भी नही चाहते थे कि पचायत से समझौता करे।

किसानो ने सवत १९७६ मे पीवल और १९७७ मे सारी ही जमीन पडत रखी थी। संवत १९७८ मे वर्षा होते ही किसानो ने फसले बोई और आसोज शुक्ल ७ सवत १९७८ दिनाक ८ अक्टूबर १९२१ को जब फसले पक गई तो ठिकाने को कूता के लिए सूचना दी कि एक सप्ताह के अन्दर कूता करालो अन्यथा हम फसले काट लेगे। उसके उत्तर मे दिनाक १०-१० २१ को ठिकाने ने लिखा कि पुराना लगान, तथा लागते जमा कराओ उसके बाद कूता होगा तब तक फसल काटने की आज्ञा नही दी जा सकती फिर भी पचायत ने निश्चित अवधि तक प्रतीक्षा की। जब कोई नही आया तो पचायत ने फिर उन्हे सूचना दी फिर भी ठिकाने की ओर से कोई नही आया।

पचायत ने किसानो को आज्ञा दे दी कि वे फसल काटकर घर ले आवें। किसानो ने फसल काटनी आरम्भ करदी और अनाज घर लाने लगे। जब ठिकाने को यह मालूम हुआ तो उसने अपने छोटे जागीरदारो को एकत्रित किया और किसानो पर आक्रमण कर दिया।

परन्तु किसान वर्मा जी के नेतृत्व मे पूर्ण रूप से संगठित और शान्त रहे। किसान तनिक भी नही घबराए वे फसल काट कर घर लाने का कार्य निर्भय होकर कर रहे थे कमदार ने उन छोटे जागीरदारो को किसानो पर गोली चलाने के लिए कहा परन्तु उन्होने गोली चलाने से इनकार कर दिया। उन्होने कहा कि हम छुटभइये लोग बाहर के आक्रमण से रक्षा करने के लिए है निहत्थो पर गोली चलाना हमारा काम नही है। कामदार तथा ठिकाने के कर्मचारियो का जोश ठन्डा पड़ गया।

दूसरे दिन श्री माणिक्य लाल वर्मा को फौजदार तेजसिंह राव साहब की विधवा मा के पास समझौते के लिए ले गया परन्तु कामदार ने फिर समझौता नही होने दिया।

इसी बीच श्री माणिक्यलाल वर्मा ने उमाजी के खेडे मे अपने रहने के लिए मकान बनाना तय किया। वर्मा जी का किसानो पर इतना अधिक प्रभाव था तथा वे उनकी इतनी श्रद्धा करते थे कि सारा गाव उनका मकान बनाने के लिए जुट गया। परन्तु ठिकानेवालो ने यह कह कर कि ठिकाने से आज्ञा नही ली इस कारण जितना भी गाव वाले मकान बनाते उसे दिन मे ठिकाने वाले गिरा जाते। परन्तु किसान उसे फिर रात मे बनाते। यह क्रम कई महीने तक चलता रहा अत मे ठिकाने वाले थक कर हार गए और उमाजी के खेड़ा के किसानो ने अपने मार्गदर्शक वर्मा जी के लिए मकान बना कर तैयार कर दिया।

ठिकाने की दशा अत्यन्त बिगड चुकी थी। तीन साल से लगान नही मिला था। लगान, लागते और बेगार न मिलने से ठिकाना बेहद कर्जदार हो गया था। राव साहब

का निजी व्यय तथा कर्मचारियो का वेतन चुकाना भी कठिन हो गया था। विवश होकर ठिकाने ने पुनः समझौते की बात चलाई और पथिक जी को लिखा। पथिक जी ने किसान पचायत तथा ठिकाने को बुला भेजा। ठिकाने की ओर से सावललाल जी पुरोहित श्री तेजसिंह जी, तथा कामदार हीरालाल तथा पचायत के प्रतिनिधि श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे अजमेर पहुचे।

पथिक जी ने कुछ शर्ते रखी। प्राय. सभी शर्तो को ठिकानेवालो ने मान लिया। पन्द्रह दिन तक राजस्थान सेवा सघ के कार्यालय मे उन शतो पर बहस होती रही। जबकि पथिक जी के नेतृत्व मे समझौते की चर्चा चल रही थी तो ठिकाने के अधिकारियो को यह ध्यान आया कि यदि पथिक जी द्वारा किए गए फैसले को उन्होने स्वीकार कर लिया तो बिजोल्या के किसानो पर पथिक जी का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ जावेगा और भविष्य मे ठिकाने को अधिक कठिनाइयो का सामना करना पड़ेगा। अस्तु उन्होने यहा कुछ शर्तो को नही माना और उन पर अड़ गए। उनका सोचना यह था कि वे उन शर्तों को विजोलिया जाकर स्वीकार लेगे तो पचायत समझौता करने पर तैयार हो जायेगी। अन्तिम समझौता बिजोल्या किसान पचायत से होने पर पथिक जी और राजस्थान सेवा सघ को श्रेय नही मिलेगा।

बिजोल्या पहुंच कर ठिकाने ने वे शर्ते भी मान ली जो अजमेर मे नही मानी थी परन्तु किसानो ने कहा कि जब तक इस फैसले पर पथिक जी की स्वीकृति की मुहर नही लग जाती हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते। अस्तु फैसला न हो सका और आन्दोलन तथा दमन पूर्ववत चलता रहा।

उधर बिजोल्या आन्दोलन का प्रभाव केवल मेवाड तथा समीपवर्ती राज्यो की जागीरो पर ही नही वरन समस्त राजस्थान पर पडने लगा। बारवा, आतरी, भेसरोगढ़ बेगू, बस्ती, पारसोली, खैराड, अमरगड तथा जहाजपुर के किसान भी उठ खडे हुए। वहा भी किसान लोग बेगार तथा जागीरदारो के अत्याचारो तथा शोषण के विरुद्ध आन्दोलन करने लगे। राजस्थान के भीलो पर भी बिजोल्या आन्दोलन का प्रभाव पडने लगा। सिरोही के भी लोग उठ खडे हुए, बूदी मे भी किसानो मे अभूतपूर्व जागृति की उत्पत्ति होगई वे भी उठ खड़े हुए। उस समय बिजोल्या आन्दोलन का प्रभाव समस्त राजस्थान पर पड रहा था।

बिजोल्या सत्याग्रह के बढते हुए प्रभाव के कारण भारत सरकार के विदेशी विभाग के उच्च अधिकारियो का धैर्य छूटने लगा। उनको भय होने लगा कि कही यह अग्नि समस्त राजपूताने (राजस्थान) मे न फैल जावे। अस्तु सरकार ने मेवाड राज्य पर दबाव डाला कि बिजोल्या आन्दोलन को समाप्त करने के लिए पचायत से शीघ्र ही समझौता कर लिया जावे।

इस उद्देश्य से एक बडा कर्मचारी मडल बिजोल्या पहुँचा। ब्रिटिश सरकार की ओर, से ए. जी जी हालैंड, उनके सेक्रेटरी ओगल्वी तथा मेवाड के रेजीडेन्ट विल्किन्सन, मेवाड़ राज्य की ओर से राज्य के मत्री प्रभाषचन्द्र चटर्जी, बिहारीलाल सायर हाकिम

तथा ठिकाने के प्रतिनिधि के रूप मे कामदार हीरालाल, फौजदार तेजसिंह तथा जालिम सिंह थे।

ए. जी. जी हालैंड ने ४ फरवरी १९२२ को बिजोल्यां पहुँच कर किसान पंचायत को कहलाया कि हम किसानों के कष्टों को मिटाने आए हैं अत वे उपस्थित हो और अपने कष्टों के सबंध में हमे बतलावें। वर्मा जी ने पचायत की ओर से यह उत्तर भिजवाया कि यह लडाई हमारे तथा मेवाड राज्य और ठिकाने के बीच है अत हम आपसे (तीसरी शक्ति) से फैसला करवाना नही चाहते। इस पर प्रभापचन्द्र चटर्जी ने लिखा कि हालैंड साहब मेवाड राज्य की ओर से प्रतिनिधि है और मैं मेवाड के मत्री की हैसियत से आपको निमत्रण दे रहा हूँ। अत आप लोग पधारने का कष्ट करे। श्री चटर्जी के पत्र आने पर पंचायत ने अपने प्रतिनिधि भेजना निश्चित किया उत्तर मे यह भी प्रकट कर दिया कि यदि किसान प्रतिनिधियो के साथ बराबरी का और सम्मान पूर्ण व्यवहार होगा तभी हमारे प्रतिनिधि सधिवार्ता मे भाग लेगे अन्यथा नही। पचायत ने यह भी आग्रह किया कि हम सधि चर्चा तभी करेंगे जबकि राजस्थान सेवासघ को बुलाया जावे।

पथिक जी पर मेवाड मे प्रवेश करने पर प्रतिबन्ध था अतएव उन्होने राजस्थान सेवा सघ के मत्री श्री रामनारायण चौधरी को बिजोल्या पचायत को परामर्श देने तथा आन्दोलन के सचालन मे सहायता करने के लिए भेजा था। ए जी जी हालैंड के सेक्रेटरी का शिविर से इस आशय का पत्र चौधरी जी के पास आया कि ए जी जी. महोदय राव साहब तथा किसानो के बीच समझौता कराने आए हुए है यदि आप इसमे सहायता देंगे तो राव साहब तथा ए जी जी महोदय को प्रसन्नता होगी। चौधरी जी को निमत्रण मिलने पर किसान पचायत सधि चर्चा के लिए तैयार हो गई।

किसानो की ओर से श्री माणिक्यलाल वर्मा, पचायत के सरपच मोतीचन्द जी पटेल तथा मत्री नारायणजी पटेल, तथा श्री रामनारायण चौधरी प्रतिनिधि होकर गए।

५ फरवरी १९२२ को प्रातःकाल दस बजे बिजोल्या के बाहर तालाब के पास बाग मे खुले मैदान में संधि परिषद की बैठक आरंभ हुई। वह दृश्य बिजोल्या ही नही राजस्थान के इतिहास में अभूतपूर्व था। ऊपरमाल आचल मे समाचार वन की अग्नि के समान फैल गया कि अजमेर से ए जी जी ठिकाने और किसान पचायत मे सधि कराने आए है, समस्त ऊपरमाल क्षेत्र की जनता उस बाग मे उमड पडी। नदी की धाराओ की भाति सब दिशाओ से जनता आकर इकट्ठी हो गई। सत्याग्रहियो के मुखो पर विजय का गर्व था परन्तु उनमे मर्यादा और सयम भी था। यह देशी राज्यो के इतिहास में पहला अवसर था कि शोषित और पीडित किसान जो दीर्घकाल से राज्य तथा ठिकाने के द्वारा पद दलित किए जा रहे थे वे सिर ऊचा कर आत्मविश्वास और गर्व के साथ प्रबल शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार, मेवाड़ के महाराणा तथा बिजोल्या राव के प्रतिनिधियो से समान स्तर पर बात कर रहे थे।

बिजोल्या आन्दोलन का महत्व इसी से प्रकट होता है कि स्वय ए जी जी को उस छोटे से ठिकाने के प्रश्न को सुलझाना पडा। जिस ए जी जी के भवन में जाने पर बडे-बडे राजस्थान के महाराजे भी आतकित हो जाते थे और जिसकी टेढी भृकुटि को देखकर नरेश भयभीत हो काप उठते थे उसे किसान पचायत से समझौता करने के लिए स्वय चलकर बिजोल्या आना पडा। राजस्थान मे ऐसा भी हो सकता है यह किसी की भी कल्पना के बाहर की बात थी। किसानो की यह अभूतपूर्व विजय थी।

ए जी जी हालैंड के साथ मेवाड राज्य के प्रतिनिधि और समीप ही ठिकाने के प्रतिनिधि कुर्सियो पर बैठे थे। उनके ठीक सामने श्री माणिक्यलाल वर्मा श्री रामनारायण चौधरी, सरपच मोतीचन्द पटेल तथा मत्री नारायण जी पटेल भी कुर्सियो पर बैठे थे। पचायत ने निमत्रण स्वीकार करते समय यह शर्त रख दी थी कि उनके प्रतिनिधि भी अधिकारियो के समान ही कुर्सियो पर बैठेगे। उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि नेतृत्व राजसत्ता के हाथ से निकल कर जनता जनार्दन के हाथ मे चला गया। किसानो की हजारो की भीड की व्यवस्था पचायत के वृद्ध कर्मचारी देवाजी, जो आन्दोलन के समय डाक एक गाव से दूसरे गाव ले जाते थे और जिन्हे किसान कोतवाल जी कहते थे, कर रहे थे।

जब किसान पचायत के प्रतिनिधि उस सधि परिषद मे चर्चा करने आए तो उन्होने बन्देमातरम कहकर अभिवादन किया और ए जी जी हालैंड आदि ने हाथ जोड कर अभिवादन किया।

सबसे पहले श्री हालैंड ने लागतो तथा वेगार आदि की सूची मागी जो उन्हे दे दी गई। अब एक एक लागत पर बहस होने लगी किसको रखा जावे किसको समाप्त किया जावे। इस पर किसानो की ओर से श्री माणिक्यलाल वर्मा ने कहा "इस प्रकार कमी वेशी करने से फैसला असभव होगा। ठिकाने के अधिकारियो ने जो फैसला अजमेर मे श्री पथिक जी के साथ किया था उसे आधार बनाइए बाद को किसानो को जिन जिन बातो पर आपत्ति हो आप उनको सुनिए और उन कष्टो को दूर कीजिए।" ए जी जी हालैंड ने वर्मा जी की इस बात को स्वीकार किया और अजमेर मे हुए फैसले तथा उसमे किसानो ने जो परिवर्तन चाहा उसकी प्रतिलिपिया कराई गई और श्री हालैंड एक दिन वहा और अधिक ठहर गए। श्री हालैंड ने अधिकाश लागतो को समाप्त कर दिया। भोग की रकम मे कमी की गई खडलाखड छटूद तथा तलवार बधाई की रकमों को भी बहुत कम कर दिया। बाद मे वेगार के सम्बन्ध मे बात हुई। श्री हालैंड ने कहा कि रेजीडेंट के आने पर तो काम करना ही पडेगा। किसान, कल इसका उत्तर देगे, कह कर चले गए।

रात्रिभर किसानो मे वेगार के सम्बन्ध मे काफी बहस हुई। प्रात काल होते होते यह निश्चय हुआ कि वेगार बिलकुल स्वीकार नही करना है। लागत एक भी नही रखना और पैमाइश (बन्दोबस्त) कराने का निश्चय हुआ। हालैंड को यह उत्तर देने के लिए श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे तीन किसानो को भेजा गया। वर्मा जी पहले

मेवाड राज्य के मंत्री श्री प्रभाषचन्द्र से मिले उसके उपरान्त श्री हालैंड से मिले उन्होंने वर्मा जी की तीनो बाते स्वीकार कर ली। फिर भी कुछ थोडी सी बाते शेष रह गई थी। उनके सम्बन्ध में पथिक जी अजमेर तथा आबू मे श्री हालैंड से मिले परन्तु फिर भी उन बातो पर कोई समझौता न हो सका। पथिक जी की यह इच्छा थी कि किसी प्रकार ए जी जी के हस्तक्षेप मे समझौता हो जावे तो राज्य और ठिकाना भविष्य मे उसके विरुद्ध जाने का साहस नही करेंगे परन्तु समझौता न हो सका। ऊपरमाल पचायत वेगार आदि के प्रश्न पर झुकने को तैयार नही थी।

जब श्री हालैंड बिजोल्यां से चले गए किन्तु कुछ बाते तय होना शेष रह गई तो मेवाड राज्य के तत्कालीन मत्री श्री प्रभाषचद चटर्जी तथा माल विभाग के अधिकारी पं० बिहारीलाल जी ठहर गए और किसान पचायत मे शेष प्रश्नो के सम्बन्ध मे वार्ता करते रहे। कुछ प्रश्न तय भी हुए शेष को तय करने के लिए वे अजमेर गए परन्तु उनकी इच्छा काम मे कम देने की थी। पथिक जी से भी वे मिले। यद्यपि चाहते थे कि समझौता हो जावे परन्तु ऊपरमाल के किसानो की मनोभावना को जानते थे। वर्मा जी वेगार के उग्र विरोधी थे। अतएव कोई समझौता न हो सका। अन्तिम बार मेवाड के मंत्री श्री प्रभाषचन्द्र चटर्जी जो समझौता की शर्ते लेकर आए उन्हे वर्मा जी तथा किसानो ने अस्वीकार कर दिया। श्री चटर्जी वहुत क्रुद्ध हो गए वे वापस चले गए। ऐसा प्रतीत होने लगा कि पुन भयकर दमन आरम्भ होगा। ऊपरमाल पचायत भी आन्दोलन की तैयारियां करने लगी।

परन्तु हालैंड नही चाहते थे कि बात टूट जावे। वे अजमेर तथा आबू मे पथिक जी से मिले बातचीत हुई समझौते की शर्तो मे कुछ परिवर्तन हुए पथिक जी के किसानो को समझाने पर पाच वर्षों के उस आन्दोलन का अन्त हुआ और किसानो की अभूतपूर्व विजय हुई। भारत मे यह पहला किसान आदोलन था। इस कारण इसका विशेष महत्व है। पाच वर्ष तक लगातार पथिक जी के नेतृत्व मे किसान ठिकाने, मेवाड राज्य तथा ब्रिटिश सरकार की सम्मिलित शक्ति से मोर्चा लेते रहे। उन्होने जिस दृढता तथा संगठन शक्ति का परिचय दिया अदभुत थी। किसानो की विजय का केवल मेवाड पर ही प्रभाव नही पडा वरन समस्त राजस्थान पर पडा।

जहां इस आन्दोलन के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक व्यापक प्रभाव हुए वहा इस आन्दोलन को सबसे महत्वपूर्ण देन श्रीमाणिक्यलाल वर्मा थे। पथिक जी ने वर्मा जी को खोज निकाला उन्हे पीडितो की सेवा की दीक्षा दी किसानो तथा शोषितो का सगठन कर उनको स्वाभिमानपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए किस प्रकार अत्याचार और उत्पीडन के विरुद्ध खडा किया जा सकता है इसका प्रशिक्षण दिया। बिजोल्या आन्दोलन मे वे पथिक जी के दाहिने हाथ रहे। पथिक जी बिजोल्या से जब चले गए तो यद्यपि वे आन्दोलन की व्यूह रचना करते और नीति निर्धारित करते थे किन्तु उसको कार्यान्वित करने का दायित्व मुख्यत श्री माणिक्यलाल वर्मा और साधु सीतारामदास पर था।

परन्तु इस फैसले से भी बिजोल्यां के किसानों के कष्टों का अन्त नही हुआ क्योकि ठिकाने की नियत ठीक नही थी। नए कामदार मकसूद अली ने फैसले की शर्तों को पूरी तरह पालन नही किया अतएव किसान पचायत और ठिकाने में सौहार्द्र उत्पन्न नही हो सका। किसान पचायत फैसले की शर्तो का जो अर्थ स्वीकार करती थी, कामदार उससे भिन्न अर्थ निकालता था। इसका परिणाम यह हुआ कि फैसले की विभिन्न शर्तों का वास्तविक अर्थ क्या है, इस पर ठिकाने और किसान पंचायत मे खीचा तानी होने लगी।

इसी बीच बिजोल्या राव साहब का विवाह (सवत १९८०) मे हुआ। परम्परा के अनुसार किसानो ने राव साहब को दावत देनी चाही। परन्तु ठिकाना विवाह मे किसानो से वेगार लेना चाहता था। श्री माणिक्यलाल वर्मा के परामर्श पर किसानो ने वेगार देना अस्वीकार कर दिया। अस्तु राव साहब ने किसानो की दावत को स्वीकार नही किया।

ठिकाने ने श्री माणिक्यलाल वर्मा श्री साधू सीतारामदास तथा कतिपय अन्य व्यक्तियो पर मुकदमा चलाया। इन पर आरोप लगाए गए कि इन लोगो ने विदेशी वस्त्रो की होली जलाने, वेगार नही करने और शराबबदी करने के लिए लोगो को भडकाया आदि आदि। मुकदमा चला परन्तु श्री वर्मा व साधू सीतारामदास निर्दोष प्रमाणित हुए।

यह हम ऊपर कह आए हैं कि किसान पंचायत १९२२ के फैसले को कार्यान्वित कराने के लिए प्रयत्नशील थी ठिकाना इस चिन्ता मे था कि किसी प्रकार से यह समझौता भग हो जावे।

दैवयोग से (सवत १९८० से ८३ तक किसी वर्ष वर्षा न होने से किसी वर्ष अधिक वर्षा होने से और रोलो तथा अत्यधिक शीत से फसले नष्ट हो गई ठिकाने ने व्यापारियो और महाजनो को अपने साथ ले लिया। किसान के सामने दुष्काल भयकर मुंह बाए खडा था उसी समय ठिकाने ने पिछले वर्षो के शेष लगान छूटद नूत तथा वराड वसूल करना आरभ कर दिया ठिकाने के संकेत पर महाजनो तथा व्यापारियों ने भी किसान को अपना ऋण चुकाने के लिए दबाना शुरू किया। किसान को तत्कालीन लागत देना भी कठिन था वह सब कैसे चुका सकता था। उधर जो बन्दोवस्त में लगान निर्धारित हुआ वह भी बहुत ऊंचा था। किसान पंचायत ने ठिकाने तथा मुहकमा खास (मेवाड राज्य के सचिवालय) मे प्रार्थना-पत्र भेजे परन्तु उनकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नही दिया गया।

उन्ही दिनों ११-२-१९२६ को मेवाड के बन्दोवस्त विभाग के सर्वोच्च अधिकारी (सेटिलमेंट कमिश्नर) श्री ट्रैंच बिजोल्या आए। ठिकाने तथा किसान पंचायत ने श्री ट्रैंच को मध्यस्थ स्वीकार कर दोनो पक्षो के झगडे को तय करने के लिए कहा।

किसान पंचायत ने श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे १६ प्रतिनिधियो का एक मंडल किसानो की मांगो को श्री ट्रैंच के समक्ष रखने के लिए भेजा।

श्री माणिक्यनाल वर्मा ने श्री ट्रैंच के सामने १६२२ के हुए फैसले के विरुद्ध ठिकाने के आचरण की अनेक घटनाए वताई और किसानो की पद्रह मागो को अत्यन्त प्रभावशाली ढग से श्री ट्रैंच के सामने रखा किसानो पर महाजनो के कर्ज के संवध मे वर्मा जी ने ट्रैंच से कहा कि ऊपरमाल के ३४ गावो के किसानो पर ६ लाख रुपए कर्ज है यह कई पीढियो का है। और व्याज दर व्याज लगा कर कई गुना कर लिया गया है इसको वहुत घटा कर कम कर दिया जावे और साधारण व्याज से किश्तो मे चुकाया जावे। श्री ट्रैंच के सामने जब श्री वर्माजी ने किसानो की कठिनाइयो का वर्णन किया तो उन्होने उनके औचित्य को स्वीकार किया और किसानो के कर्ज लगान, तथा छट्टूद आदि मे वहुत कमी की गई।

वर्मा जी की जमानत.

जबकि ट्रैंच महोदय ने किसान पचायत और ठिकाने के मध्य मध्यस्थता स्वीकार की और वर्मा जी ने किसानो का पक्ष उनके सामने रखा तो ट्रैंच समझ गए कि वे ही किसानो के आदोलन के पीछे वास्तविक शक्ति है अस्तु मेवाड सरकार ने मुहकमा खास के द्वारा ठिकाने को एक पत्र भेजा कि श्री माणिक्यलाल वर्मा को भविष्य मे राजनीतिक व्यक्तियो से पत्र व्यवहार या वातचीत करने तथा मिलने न दिया जाय और उनसे जमानत मागी जावे।

सन् १६२७ के मार्च के प्रथम सप्ताह मे वर्मा जी को उमाजी के खेडे मे गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हे जेल मे डाल दिया गया। जेल मे उनसे ५०० रु की जमानत मागी गई, उन्होने जमानत देने से साफ इनकार कर दिया परन्तु किसान पचायत ने जमानत जमा करादी। अस्तु वर्मा जी को जेल से वारह दिनो के वाद मुक्त कर दिया गया।

उसी समय पथिक जी लम्बे कारावास की अवधि समाप्त कर उदयपुर जेल से मुक्त हुए। परन्तु उन पर मेवाड राज्य की सीमा मे प्रवेश करने पर प्रतिवध लगा दिया गया। अस्तु विजोल्या के किसानो के विशेष आग्रह पर वे ग्वालियर राज्य के सिंगोली परगने के फुमरिया गाव आकर रात्रि को रहे और वहा से उन्होने विजोल्यां अपने पहुँचने के समाचार भेजे। विजोल्या से वडी सख्या मे किसान उनके दर्शनो के लिए गए। श्री माणिक्यलाल वर्मा पर प्रतिवन्ध था वे जमानत पर थे इस कारण वे नही गए। पथिक जी के साथ श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त भी थे विजोल्या से जाने वालो मे साधू सीतारामदास भी थे वर्मा जी ने एक पत्र लिखकर पथिक जी को भेजा था। वाद मे वह पत्र पकड लिया गया। उस पत्र लिखने के अपराध मे वर्मा जी को पुन गिरफ्तार कर लिया गया और उनकी ५०० रु की जमानत जप्त करली गई। किसान पचायत ने अपने कोष मे से यह रकम दी तब जाकर सात महीने के उपरान्त वर्मा जी जेल मे छूटे।

विजोल्या के किसान वन्दोवस्त मे माल की जमीन की जो लागत निर्धारित की गई थी उससे वहुत परेशान थे क्योकि माल की जमीन का वहुत ऊचा लगान निर्धारित

किया गया था जो उनकी सामर्थ्य के बाहर था। उन्होने अपनी कठिनाई को पथिक जी के सामने रखा। पथिक जी ने किसानो को सत्याग्रह का परामर्श दिया और उसके लिए उनसे प्रतिज्ञा करवाई कि वे पचायत की आज्ञानुसार कार्य करेगे। किसानो का आग्रह था कि वे सामूहिक रूप से माल की जमीन से त्याग-पत्र दे दे। आज इस सम्बन्ध मे दो मत है कि माल की भूमि से त्याग-पत्र देने का सुझाव पथिक जी का था अथवा किसानो का ही यह आग्रह था। लेखक ने साधू सीतारामदास से बिजोल्यां में इस सम्बन्ध मे पूछा था तो उन्होने लेखक से यह कहा था कि पथिक जी ने किसानो को सामूहिक त्यागपत्र देने का परामर्श नही दिया था वह किसानो का ही आग्रह था। श्री रामनारायण चौधरी का भी यही मत है कि पथिक जी ने माल की भूमि से त्यागपत्र देने का परामर्श नही दिया था परन्तु उन्होने उन्हे सावधान किया था किंतु श्री हरिभाऊ उपाध्याय का कहना है कि पथिक जी ने बिजोल्या के किसानो को माल की भूमि से त्यागपत्र देने का परामर्श दिया था। इससे आगे वर्मा जी और पथिक जी में घोर मनोमालिन्य हो गया और उनके आपसी सम्बन्ध समाप्त हो गए।

लेखक ने श्री रामनारायण चौधरी को इस सम्बन्ध मे लिखकर पूछा था। उन्होंने जो उत्तर दिया उसका अंश नीचे लिखा है —

"जमीन वाले मामले मे तो निश्चय ही पथिक जी ने अस्तीफा देने की बात किसानो से कभी नही कही। सन १८-१९ मे सत्याग्रह के प्रारभ मे अवश्य ही ठिकाने के अत्याचार बहुत बढ जाने पर पथिक जी ने जमीन पडत रखने की सलाह दी थी। लेकिन अस्तीफे तो तब दिए गए थे जब पथिक जी जेल मे थे। उस समय तो माणिक्यलाल जी ही नेता थे। किसान पथिक जी के जेल से छूटने पर कहा और कब मिले मुझे याद नही परन्तु मेरी जानकारी मे तो वे सिंगोली (ग्वालियर) मे जब मिले और जब मे और शोभालाल जी मौजूद थे तब पथिक जी ने किसानो को जमीन छोड देने की कोई सलाह नही दी थी।"

रामनारायण चौधरी
(३१-१२-६९)

श्री हरिभाऊ जी ने लेखक को जो उत्तर दिया वह निम्नलिखित था "जहां तक मुझे याद है मुझे तो सभी ने यही बताया कि पथिक जी के सुझाव पर सशर्त अस्तीफे दिए थे।"

हरिभाऊ उपाध्याय
(५-१-७०)

श्री शोभालाल जी ने इस सम्बन्ध मे जो उत्तर दिया वह नीचे लिखा है:—

"मुझे अब यह स्मरण नही है कि पथिक जी और श्री माणिक्यलाल जी के सम्बन्ध किस बात को लेकर बिगडे। मेरा ख्याल है कि जब जमीनो का इस्तीफा देने की बात तय हुई उसके पहले ही माणिक्यलाल जी ने किसान पचायत से अपना हाथ खीच लिया था और वह उससे तटस्थ हो गए थे। राजस्थान सेवा सघ के साथ भी उन्होने पहले

ही अपना संबंध विच्छेद कर लिया था किन्तु किसान पचायत का सम्बन्ध राजस्थान सेवा संघ से बना रहा। मेरा ख्याल है कि जब बिजोल्या मे चर्खा सघ की ओर से खादी का काम शुरू हुआ और यह उस समय की बात है जब पथिक जी जेल मे थे तो माणिक्यलाल जी का झुकाव हरिभाऊ जी आदि की ओर हो गया। चौधरी जी कुछ समय बिजोल्या रहे थे और उस समय वह राजस्थान सेवासघ के मत्री थे। माणिक्यलाल जी के साथ उनकी पटरी नही बैठी थी। पथिक जी जब जेल से छूट कर आए तो चौधरी जी उनके साथ थे शायद इसलिए माणिक्यलाल जी ने सेवा संघ और पथिक जी से किनाराकशी की हो।"

शोभालाल गुप्त
(४-१२-७०)

श्री शोभालाल गुप्त को यद्यपि आज निश्चित रूप से स्मरण नही है कि वर्मा जी तथा पथिक जी के सबध-विच्छेद का क्या कारण था परन्तु यह स्पष्ट है कि जमीन के इस्तीफे के प्रश्न को लेकर सम्बन्ध नही बिगडे थे।

स्पष्ट है कि श्री रामनारायण चौधरी श्री शोभालाल गुप्त तथा साधू सीता-रामदास फुसरिया सिंगोली (ग्वालियर) मे उस समय मौजूद थे जब पथिक जी जेल से छूटकर वहा किसानो से मिलने आए थे उनका कहना है पथिक जी ने इस प्रकार माल की भूमि से इस्तीफा देने का किसानो को परामर्श नही दिया था। श्री हरिभाऊ जी बिजोल्या पंचायत के परामर्शदाता बाद को बने उन्हे केवल कही हुई बात याद है अस्तु लेखक का भी यही मत है कि भूमि से इस्तीफा देने का परामर्श पथिक जी का नही था। किसानो का ही यह आग्रह रहा होगा।

फिर प्रश्न उठता है कि श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा पथिक जी मे गहरा मतभेद तथा मनोमालिन्य क्यो उठा खडा हुआ। उस सम्बन्ध मे मैंने श्री रामनारायण चोधरी से पूछा था उनका उत्तर नीचे लिखा है :—

"पथिक जी और माणिक्यलाल जी के मतभेदो पर एव उनकी जड पर प्रकाश डालने मे तो मुझे उतना और वैसा ही सकोच है जो मैने उस समय रखा था जब आपने जयपुर मे मुझसे पथिक के तथा मेरे व शोभालाल जी के अलग होने के कारण पूछे थे। मगर मैं इतना कह सकता हूँ कि यह कारण सार्वजनिक नही था।" रामनारायण चौधरी (३१-१२-६९)

श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त तथा पथिक जी के बीच जो घोर मतभेद तथा वैमनस्य उस समय फूट पडा और जिसके परिणामस्वरूप राजस्थान सेवासघ जैसी तेजस्वी और अद्वितीय सस्था का दुखद अन्त हो गया उसका क्या कारण था उसके सबध में श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त आज तक मौन है। अवश्य ही मतभेद का कारण सार्वजनिक न होकर निजी था। पथिकजी तथा वर्माजी के मतभेद का कारण भी सार्वजनिक न होकर निजी रहा होगा।

पथिक जी ने भूमि का इस्तीफा देने का परामर्श किसानों को दिया ऐसा कहना उनके प्रति न्याय नही होगा। फिर लेखक के मन में यह प्रश्न भी उठता है कि एक क्षण के लिए हम यदि यह स्वीकार भी करलें (जो कि सही नही) कि पथिक जी ने इस प्रकार की सलाह दी थी तो भी प्रश्न उठता है उसमे दोनो के व्यक्तिगत सम्बन्धों के समाप्त हो जाने की भूमिका कहा बनती है। नीति सम्बधी मतभेद तो कार्यकर्ताओं मे उत्पन्न हो ही सकते है उससे व्यक्तिगत सम्बन्ध समाप्त नही हो जाते। अतएव हमे इसी निष्कर्ष पर पहुचना पडता है कि पथिकजी तथा वर्माजी के सबध विच्छेद के कारण निजी रहे होगे, सार्वजनिक नही। और जिस प्रकार पथिक जी तथा श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त के मतभेद के कारण प्रकाश मे नही आए पथिक जी तथा वर्मा जी के मतभेद के कारण भी प्रकाश मे नही आवेगे।

जो भी हो किसान पचायत ने २०-५ २७ को माल की जमीन से सामूहिक त्यागपत्र ठिकाने को दिया परन्तु ठिकाने ने त्यागपत्र नही लिया। साथ ही ठिकाने ने राज्य को सूचित कर दिया कि किसानो ने त्यागपत्र दिया है और बन्दोबस्त मे जो लगान की दर निर्धारित की गई है उसका वे विरोध करते है। यह समाचार पहुचते ही श्री ट्रैंच सेना लेकर बिजोल्या आए और किसानो को आतकित किया जाने लगा। श्री ट्रैंच तथा ठिकाना नही चाहते थे कि किसान इस्तीफा दें। ट्रैंच ने किसानो को सलाह दी कि माल की भूमि की जो लगान निर्धारित की गई है उसके विरुद्ध अपील करे परन्तु पचायत ने यह सोचकर कि अपील अन्तत श्री ट्रैंच के पास जावेगी उसको स्वीकार नही किया और फिर ठिकाने के पास त्यागपत्र भेजा। उधर पचायत ने महकमा खास को लिखा कि ठिकाना त्यागपत्र स्वीकार नही करता है। मुहकमा खास ने ठिकाने से त्यागपत्र स्वीकार न करने के लिए उत्तर मागा। इस पर ठिकाने ने सामूहिक त्यागपत्र स्वीकार न कर व्यक्तिगत त्यागपत्र स्वीकार करने की आज्ञा दे दी। पचायत ने समान भाषा और शैली के त्यागपत्र छपवाकर व्यक्तिगत रूप से ठिकाने को दिए जिसे ठिकाने ने स्वीकार कर लिया।

उस समय स्वय राव साहब किसान पचायत से समझौता कर लेना चाहते थे। वे स्वय उमाजी के खेडे श्री माणिक्यलाल वर्मा से मिलने गए और समझौते की बातचीत की। वे चाहते थे कि कामदार मक्सूद अली को किसान पचायत के समर्थन से निकाल दिया जावे। उन्होने वर्मा जी से कहा कि यदि कामदार को निकलवाने मे वे उनका समर्थन करे तो बाद को वे उनकी सभी बातो को स्वीकार कर लेगे।

श्री माणिक्यलाल वर्मा भी कामदार मक्सूद अली को एक अभिशाप मानते थे क्योकि उससे पूर्व भी राव साहब ने किसानो को समझौते के लिए बुलाया था परन्तु मक्सूद अली ने यह कह कर कि मेरी आज्ञा के बिना समझौता नही हो सकता समझौता नही होने दिया था। राव साहब तभी से कामदार को किसी प्रकार हटाना चाहते थे पर विवश थे। उन्होने वर्मा जी का समर्थन प्राप्त करने के लिए उनको वचन दिया था कि मक्सूद अली के निकल जाने के उपरान्त वे उनकी सब बाते स्वीकार कर लेगे अस्तु

वर्मा जी ने भी किसान पचायत की ओर से कामदार मकसूद अली को बिजोल्या से हटाने के लिए राज्य सरकार को लिखा। राज्य ने कामदार मकसूद को हटाने का आदेश दे दिया।

कामदार मकसूद अली के हटते ही राव जी ने वर्मा जी से किए गए फैसले को अमान्य कर दिया। उन्होने अपने भाई गोवर्द्धन सिह तथा मामा तेजसिह को कामदार का कार्यभार सौप दिया। वास्तव मे उन दोनो के प्रभाव मे होने के कारण ही राव साहब ने वर्मा जी को जो वचन दिया था वे उससे पीछे हट गए।

गोवर्द्धन सिह तथा तेजसिह ने किसानो के माल की भूमि से इस्तीफे को स्वीकार करने के दूसरे ही दिन से भूमि को धाकडो को छोड कर अन्य जाति के लोगो को नीलाम करना आरभ कर दिया। पचायत ने नए किसानो से जिन्होंने माल की जमीन ली थी उस पर खेती न करने की प्रार्थना की परन्तु उन्होने पचायत की प्रार्थना पर ध्यान नही दिया और ठिकाने से परवाना लेकर वे उस पर खेती करने लगे।

दिसम्बर १९२७ मे एक घटना ऐसी हुई कि जिससे स्पष्ट हो गया कि ठिकाना पुन. दमन पर उतारू है। पथिक जी बिजोल्या से दूर थे साथ ही राजस्थान सेवा सघ पथिक जी और रामनारायण चौधरी और श्री शोभालाल गुप्त के परस्पर मतभेद तथा वैमनस्य के कारण विघटन की स्थिति मे से निकल रहा था। ऐसी दशा मे बिजोल्या के किसानो के मार्गदर्शक एकमात्र वर्मा जी थे। वे पचायत की इस कठिन परिस्थिति मे उसका मार्ग निर्देशन कर रहे थे। इसी संबध मे दिसम्बर १९२७ मे रोडी की पचायत मे आनेवाले ठिकाने के सिपाही से वर्माजी ने सबो के मध्य मे न बैठकर एक ओर बैठने को कहा। इस पर सिपाही ने ठिकाने मे इस आशय का प्रार्थनापत्र दिया कि वर्माजी ने उसे मारा। ठिकाना तो वर्माजी पर आघात करने की ताक मे ही था सिपाही के उस प्रार्थनापत्र पर ही उन्हे एक मास का कारावास का दड दे दिया गया।

इस समय किसानो की स्थिति दयनीय हो गई। आपसी मतभेद के कारण राजस्थान सेवासघ जैसी तेजस्वी सस्था का विघटन हो गया। पथिकजी अपने सहायको शिष्यो और कार्यकर्ताओ से दूर पड़ गए। वे बिजोल्या के किसानो की सहायता करने की स्थिति मे नही थे। किसानो की भूमि नए किसान जोत रहे थे। किसान पचायत ने प्रार्थनापत्र दिया। मेवाड सरकार के सैटिलमेट कमिश्नर श्री ट्रैंच ने उत्तर दिया कि हम नए किसानो को भूमि पर से नही हटा सकते। किसान चिन्तित हो उठे।

ऊपरमाल पचायत ने वर्माजी के पास सदेश भेजा और उनसे प्रार्थना की कि वे बिजोल्या के किसानो का नेतृत्व करे। परन्तु राजस्थान सेवासंघ छिन्नभिन्न हो गया था। सघ के कार्यकर्ता बिखर गए थे, पत्र तथा प्रेस इत्यादि भी बद था, और अन्त वह श्री मणिलाल कोठारी को सौप दिया गया। पथिक जी का श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त से मनमुटाव चल रहा था अतएव पथिक जी इस स्थिति मे नही थे कि वे बिजोल्या के किसानो के नेतृत्व को स्वीकार करते। पथिक जी ने अपनी असमर्थता प्रकट की। वर्माजी श्री जमनालाल बजाज तथा श्री हरिभाऊ उपाध्याय से

मिले। उन्होंने बिजोल्या के प्रश्न को अपने हाथ मे लेना स्वीकार किया परन्तु यह शर्त रखी कि जब पथिकजी बिजोल्या की बागडोर छोड देगे तभी वे पचायत की सहायता कर सकते है। पथिकजी ने सहर्ष बिजोल्या किसान पचायत के नेतृत्व से त्यागपत्र लिखकर भेज दिया।

श्री किसनलाल कल्याणपुरा (सरपच) की अध्यक्षता मे नारायणजी पटेल बडोदा ने प्रस्ताव रखा कि पथिकजी की महान सेवाओ के प्रति पचायत श्रद्धा सहित कृतज्ञता प्रकट करती हे भविष्य मे श्रीजमनालाल बजाज तथा श्री हरिभाऊ उपाध्याय को अपना नेता तथा परामर्शदाता तथा श्री माणिक्यलाल वर्मा को स्थानीय नेता तथा प्रधान कार्यकर्ता स्वीकार करती है।

पथिक जी का नेतृत्व

इस प्रकार श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व मे बिजोल्या के किसानो का जो भारत मे सर्व प्रथम और अद्‌भुत सगठन खडा हुआ और उनके नेतृत्व मे बिजोल्या के किसानो ने ठिकाने, मेवाड राज्य और परोक्ष रूप से ब्रिटिश सरकार की सम्मिलित शक्ति से मोर्चा लिया था वह गौरवमय परिच्छेद समाप्त हो गया। इस आन्दोलन का इतिहास अत्यन्त रोमाचकारी और प्रेरणास्पद है। इसमे तनिक भी सदेह नही है कि बिजोल्या के इस किसान सत्याग्रह का अत्यन्त दूरगामी प्रभाव पडा था। राजस्थान मे बेगार प्रथा के विरुद्ध तथा सामती अत्याचार और शोषण के विरूद्ध जो आन्दोलन भविष्य मे हुए उनको प्रेरणा बिजोल्या से ही मिली थी। मेवाड तथा उनके समीपवर्ती अन्य रियासतो के जागीरी इलाको पर तो बिजोल्या का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा था और वहा के किसान भी उठ खड़े हुए थे।

जहा बिजोल्या किसान सगठन तथा सत्याग्रह का मुख्य श्रेय पथिकजी की सूझबूझ, सगठन शक्ति, शौर्य, साहस व नेतृत्व की कुशलता और तेजस्विता तथा क्रान्तिकारी रणनीति को है वहा श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा साधू सीतारामदास का भी इस आन्दोलन मे महत्वपूर्ण भाग रहा। श्री वर्माजी पथिकजी के दाहिने और साधूजी बाये हाथ के समान थे। दोनो ने ही इस आन्दोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका उपस्थित की थी इसके उपरान्त साधूजी किसान सगठन से हट गए वे खादी के कार्य मे लग गए। किसान पचायत के मार्गदर्शन का कार्य श्री माणिक्यलाल वर्मा करने लगे।

बिजोल्या के इस ऐतिहासिक सघर्ष के सबध मे दो व्यक्तियो का उल्लेख न करना कृतघ्नता होगी। जिस समय पथिकजी ने बिजोल्या के किसानो का सगठन किया उस समय श्री डूंगरसिंह भाटी वहा नायब मुसरिम थे। वे राष्ट्रीय विचारो के उदारमना व्यक्ति थे। उन्हीके प्रोत्साहन से बिजोल्या मे विद्याप्रचारिणी सभा स्थापित हुई थी और उनकी पथिकजी के प्रति श्रद्धा थी। वे पथिकजी को समय समय पर महत्वपूर्ण ठिकाने की तथा राजकीय नीति सबधी जानकारी देते थे जिससे पथिकजी को सघर्ष की व्यूह रचना करने मे बहुत सहायता मिली थी।

दूसरे व्यक्ति तरुण क्रान्तिकारी ईश्वरदान आसिया थे। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के जामाता तथा शहीद प्रताप सिंह बारहठ के बहनोई होने के

साथ ही वे स्वय क्रान्तिकारी थे। विप्लवी महाक्रान्तिकारी रासविहारी बोस के दल मे वे रहे थे और मास्टर अमीचन्द जैसे क्रान्तिकारी से उन्होने क्रान्ति की दीक्षा ली थी। उनके पिता ने उन्हे डूगरसिह भाटी के पास इस आशय से भेजा था कि वे क्रान्तिकारियो से दूर रहे और उनकी आधीनता मे काम सीखे परन्तु बिजोल्या मे उन्हे पथिकजी मिल गए और वे ठिकाने की कचहरी मे एक प्रकार से पथिकजी के गुप्तचर के रूप मे काम करने लगे। ठिकाने और राज्य के गुप्त पत्रव्यवहार को वे पथिकजी को वतला देते थे। ठिकाने मे रहकर उन्होने किसान आन्दोलन की महत्वपूर्ण सेवा की थी।

इस आन्दोलन की विशेषता यह थी कि पुरुष किसान तो इसमे सक्रिय थे ही उन्होने आश्चर्यजनक साहस और त्याग का परिचय दिया था परन्तु किसानो की पत्नियो ने अपने पतियो को भी पीछे छोड दिया। कई वार ऐसे अवसर आये कि जब पुरुष ठिकाने के भीषण अत्याचार से विचलित हो उठे तो उनकी पत्नियो ने उन्हे ललकारा और सघष मे अडिग रहने के लिए प्रोत्साहित किया। बिजोल्या किसान स्त्रियो का इस आन्दोलन मे गौरवपूर्ण स्थान रहा। पथिक जी ने स्वय पाठशाला के वालको ने आन्दोलन मे जो महती सेवा की उसकी अपने लेख मे भूरि भूरि प्रशसा की है। पाठशाला के वे बालक एक गाव से दूसरे गांव समाचार पहुँचाते थे जव ठिकाने के सिपाही किसी गाव मे किसी को गिरफ्तार करने जाते तो यह बालक खेतो और पगडडियो से दौड कर पहले ही वहा पहुच कर सूचना दे देते। गुप्त रूप से सभाए रात्रि को होती थी स्थान और समय की सूचना यह बालक ही पहुँचाते थे। तो विजोल्या सत्याग्रह में स्त्री पुरुष वाल वृद्ध सभी का गौरवशाली भाग रहा और आन्दोलन की सवसे वड़ी विशेषता यह थी कि उसके लिए वाहर से आर्थिक सहायता प्राप्त नही की गई थी। किसान स्वय ही पचायत का आर्थिक भार उठाते थे। सक्षेप मे हम कह सकते है कि पथिक जी के नेतृत्व मे विजोल्या आन्दोलन केवल तेजवान ही नहीं पूर्णरूप से स्वालम्बी भी था। महात्मा गाधी तक इस आन्दोलन से वहुत प्रभावित हुए थे और उसके प्रशसक वन गए थे। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नही होगी कि भारत मे हुए किसान सघर्षो मे वह बहुत दृष्टियो मे अद्वितीय था। और जहा इस आन्दोलन का नेतृत्व पथिकजी का था श्री माणिक्यलाल उनके निकटम सहयोगी और कर्मठ सहकारी के रूप मे किसानो मे बैठकर उनका स्थानीय नेतृत्व करते रहे और पथिक जी के विजोल्या के नेतृत्व से हट जाने के उपरान्त तो वास्तविक नेतृत्व श्री माणिक्यलाल वर्मा का ही रहा। बिजोल्या किसान सगठन को क्रियाशील और तेजवान वनाए रखने का सपूर्ण भार वर्मा जी के कधो पर आ गया। यद्यपि राज्य से सन्धिवार्ता करने अथवा परामर्श इत्यादि मे श्री जमनालाल बजाज और विशेष कर हरिभाऊ उपाध्याय का सहयोग और सहायता उन्हे अवश्य मिली परन्तु किसान सगठन को तेजवान और सक्रिय वनाने का कार्य वर्मा जी ने ही आगे चल कर किया।

सच तो यह है कि विजोल्या किसान आन्दोलन का सघर्ष युग तो पथिक जी के नेतृत्व मे हुए आन्दोलन के वाद समाप्त हो गया। उसके उपरान्त श्री जमनालाल

बजाज तथा श्री हरिभाऊ जी के मार्गदर्शन मे राज्य से सविवार्ता युग आरभ हुआ। केवल एक बार सघर्ष की स्थिति आई जो कि श्री वर्मा जी का निज का निर्णय था श्री हरिभाऊ जी से बिना परामर्श किए ही उन्होने उस नीति को अपनाया था।

पथिक जी की कार्यप्रणाली .

जब कुपरिया गाव मे किसानो ने माल की भूमि से त्यागपत्र देने का निश्चय कर लिया तो पथिक जी ने पुन सघर्ष की व्यूह रचना की थी। उन्होने कहा कि इस बार आन्दोलन अधिक दृढता से चलाना है और सत्याग्रह के सिद्धान्तो को लेकर कार्य करना है। प्रत्येक किसान से पथिक जी ने अपने समक्ष कुपरिया मे प्रतिज्ञा करवाई, सिद्धान्त समझाए, और आदोलन का स्वरूप और उस सम्बन्धी बाते समझाई। पथिक जी ने किसानो से जो प्रतिज्ञा कराई वह निम्नलिखित है .—

मै प्रतिज्ञा करता हू कि आपके बताए पाचो नियमो को पालन करना अपना कर्तव्य समझू गा और प्राण देकर भी उन्हे निभाऊगा —

१ सत्य की खोज करना और यथा समय उसके ज्ञान के अनुसार व्यवहार करना।

२ आश्रितो और न्याय की रक्षा को छोडकर किसी के लिए भी हिंसा न करना।

३ पचायत को स्थिर रखना और उनके विरुद्ध बाते न मानना।

४ सब प्रकार के नशे से विरक्त रहना।

५ सदैव खादी का व्यवहार करना।

प्रतिज्ञा की पाच शर्तो को ध्यानपूर्वक पढने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जेल से छूटने के उपरान्त पथिकजी की विचारधारा महात्मा गाधी के विचारो के पहले की अपेक्षा बहुत समीप पहुंच चुकी थी परन्तु अहिंसा के सम्बन्ध मे थोडा मतभेद अब भी शेष था। पथिकजी प्रत्येक स्थिति मे अहिंसा को वर्जित नही मानते थे।

भूमि से त्यागपत्र दे देने के फलस्वरूप माल की भूमि दो वर्ष तक पड़त पड़ी रही और ठिकाने का दमन फिर आरभ हुआ। दो वर्षो तक आन्दोलन तथा दमन चलता रहा। इस बार मेवाड सरकार ने मिस्टर ट्रैंच को आन्दोलन को दबाने के लिए भेजा। मिस्टर ट्रैंच सेना की टुकडी लेकर आए। किसानो को घेर लिया, सब जगह पहरे बिठा दिए गए। किसानो का एक गाव से दूसरे गाव जाना रोक दिया गया। घोर दमन आरभ हुआ। जनता को आतकित करने के लिए जो 'बन्देमातरम' कहता जूतो से पिटवाया गया। एक बडा जूता लटकाया गया जिससे सर्वसाधारण भयभीत हो। परन्तु बिजोलिया के किसान भयभीत नही हुए वे सगठित होकर 'बन्देमातरम' का घोष करते। सेना ने बहुत सख्ती की लोगो के घरो से बलपूर्वक सामान उठा लाते। कजरो के साथ मिलकर लूट चोरी करते। स्त्रियो— को छोडते, लोगो को मारते पीटते, किसानो के पशु खोल लते, बेगार लेते, और तरह तरह से लोगो को अपमानित करते परन्तु किसान विचलित नही हुए। उसी समय राजस्थान सेवासंघ मे फूट पड़

गई। पथिकजी मे तथा रामनारायण चौधरी, श्री शोभालाल गुप्त मे गहरा मतभेद उत्पन्न होगया जिसके फलस्वरूप पथिक जी बिजोल्या आन्दोलन के नेतृत्व से हट गए और बिजोल्या किसान संगठन का नेतृत्व पथिक जी के हाथ से निकल कर श्री जमनालाल बजाज तथा श्री हरिभाऊ उपाध्याय के हाथ मे आ गया।

बदला हुआ नेतृत्व और बिजोल्यां आन्दोलन

श्री जमनालाल बजाज तथा श्री हरिभाऊ जी मार्गदर्शन मे पचायत ने माल की भूमि को पुन उसके पूर्व स्वामियो को दिलाने का प्रयत्न आरभ किया। श्री हरिभाऊ उपाध्याय श्री ट्रैंच से मिले तथा मेवाड राज्य के मत्रियो का द्वार खटखटाया। मेवाड सरकार को उन्होने यह बतलाने का प्रयत्न किया कि अब बिजोल्या पचायत की नीति मे आमूल परिवर्तन हो गया है। वह शुद्ध गाधीवादी नीति के अनुसार कार्य करने के लिये प्रतिज्ञावद्ध हे। वह पहले समझौते का प्रयत्न करेगी यदि किसी प्रकार समझौता न हो सका तो अन्त मे सत्याग्रह करेगी।

चतुर ट्रैंच ने उनसे कहा कि वह इस बात का पूरा प्रयत्न करेगे कि ठिकाना समझौते की शर्तो का पालन करे किन्तु जिन किसानो ने माल की भूमि से त्याग-पत्र दे दिया था और वह भूमि अन्य लोगो ने नीलाम मे ले ली थी उनसे भूमि दिलवाने की बात को उन्होने स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया। हा यदि जिन्होने जमीन नीलाम मे ले ली है यदि उनसे आपसी समझौता हो जावे तो राज्य को कोई आपत्ति नही होगी। जब हरिभाऊजी ने बन्दोवस्त मे बहुत ऊचा लगान निर्धारित करने की शिकायत की और पुन. बन्दोबस्त की माग की तो इस माग को भी मिस्टर ट्रैंच ने ठुकरा दिया। नए नेतृत्व को सान्त्वना देने के अभिप्राय से उन्होने यह अवश्य स्वीकार किया कि फसलो के खराब हो जाने से तथा किसानो की आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाने से लगान और बकाया मे छूट दे दी जावेगी।

सक्षेप मे श्री हरिभाऊजी से जो समझौता हुआ वह इस प्रकार था। सन् १९२२ के समझौते की शर्तो का ठिकाने से पालन करवाना ठिकाने के कब्जे मे जो जमीन अभी तक भी थी और जो नीलाम नही हुई थी उसको उसके पूर्व स्वामियो को दिलवादी जावेगी। जो जमीन नीलाम करदी गई थी उसको लेने वालो मे आपसी समझौते के द्वारा दिलाने का प्रयत्न किया जावेगा।

ऊपर के समझौते की शर्तो से यह स्पष्ट हो जाता है कि राज्य ने किसान पंचायत की किसी भी महत्वपूर्ण और मूलभूत माग को स्वीकार नही किया। न राज्य ने पुन बन्दोबस्त करना ही स्वीकार किया, और नीलाम हुई भूमि को वापस दिलाने की माग भी अस्वीकार करदी। केवल आसू पोछने के लिए वह सान्त्वना भर दे दी कि जिन लोगो ने नीलाम मे जमीन ले ली है उन्हे समझा कर वापस दिलाने का प्रयत्न किया जावेगा।

इस समझौते का जो परिणाम होना चाहिए था वही हुआ। नीलाम हुई माल की भूमि मे से एक बीघा भूमि भी पूर्व स्वामियो को नही मिल सकी। किसान विचलित

हो उठे। परन्तु हरिभाऊ जी ब्रिटिश भारत मे होने वाले सत्याग्रह मे जेल चले गए थे। जब वे जेल मे थे लेखक ग्रीष्मावकाश मे मेवाड आया। महाराणा फतेहसिंह का स्वर्गवास हो गया था उसने पैदल मेवाड की यात्रा की। उसने उस यात्रा के सम्बन्ध मे 'त्यागभूमि' मे एक लेख लिखा जिसमे मेवाड सरकार के शासन की थोडी आलोचना भी थी। हरिभाऊ जी 'त्यागभूमि' के सपादक थे परन्तु जब लेखक का मेवाड़ सम्बन्धी लेख 'त्यागभूमि' मे प्रकाशित हुआ वे जेल मे थे। लेख के सबध मे उनका उत्तरदायित्व नही था परन्तु ट्रैंच तथा मेवाड सरकार के उच्च अधिकारी उससे चिढ गए उन्होने महाराणा को भी यह कहकर विरुद्ध कर दिया कि वह लेख अत्यन्त आपत्तिजनक है। इसका परिणाम यह हुआ कि जब श्री हरिभाऊ उपाध्याय जेल से छूटे और उन्होने बिजोल्या पचायत के बारे मे पुन सधिवार्ता आरभ की तो ट्रैंच ने उनसे मिलने से भी अस्वीकार कर दिया। हरिभाऊ जी बराबर राज्य सरकार मे लिखा पढी करते रहे परन्तु राज्य सरकार ने उनके पत्रो का उत्तर तक देने की आवश्यकता नही समझी।

बात यह थी कि मेवाड सरकार ब्रिटिश भारत मे महात्मा जी के नेतृत्व मे हुए द्वितीय सत्याग्रह आन्दोलन के पूर्व यह नही चाहती थी कि बिजोल्या किसान आन्दोलन भडक उठे। क्योकि उसे इस बात की आशका थी कि भारत सरकार का वैदेशिक विभाग इसको राज्य के कुशासन का उदाहरण मानकर राज्य की सरकार को अधिक दबाना चाहेगा। अस्तु वे श्री हरिभाऊ जी से तथा श्री जमनालाल बजाज से बहुत शालीनता से बात करते थे और उन पर यह छाप डालने का प्रयत्न करते थे कि वे पथिक जी की अपेक्षा उनको अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण समझते है और उनसे समझौता करना चाहते है। परन्तु वास्तव मे उनके मन मे समझौता करने की इच्छा नही थी।

ब्रिटिश भारत मे सत्याग्रह होते ही परिस्थिति मे परिवर्तन हो गया। भारत सरकार इस प्रकार के आन्दोलन का कठोर दमन कर रही थी अस्तु यदि मेवाड सरकार अपने यहा इस प्रकार के आन्दोलन का दमन करे तो उसको भारत सरकार के कोपभाजन होने का भय जाता रहा। अस्तु लेखक के मेवाड सबधी लेख का बहाना लेकर उन्होने सधिवार्ता समाप्त करदी। नही तो यह कैसे मान लिया जावे कि ट्रैंच जैसा अनुभवी और उच्च कोटि का प्रशासक इस बात को न समझ सका कि जब लेखक का लेख 'त्यागभूमि' मे प्रकाशित हुआ उस समय हरिभाऊ जी जेल मे थे अस्तु वे किसी भी प्रकार उस लेख के लिए उत्तरदायी नही ठहराए जा सकते थे।

यहा लेखक यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता है कि परिस्थिति का जो विश्लेषण उसने किया है वह स्वय उसका है, परन्तु श्री हरिभाऊ जी तथा अन्य व्यक्तियो की यही मान्यता रही कि महाराणा श्री भूपाल सिह तथा ट्रैंच बहुत सहानुभूतिपूर्ण थे, और वे चाहते थे कि जमीने लौटाने के सबध मे किसानो की माग स्वीकार करली जावे किन्तु उस लेख के कारण वे चिढ गए और समझौता होते होते रह गया।

जो भी हो मेवाड सरकार का रुख अत्यन्त कडा हो गया। किसानो की जमीने

नही लौटाई जावेगी यह स्पष्ट हो गया ।

वर्मा जी के नेतृत्व मे किसान पचायत ने पहले ही यह निर्णय ले लिया था कि सत्याग्रह छेड दिया जावे । वर्मा जी ने किसान पचायत की ओर से रियासत को चेतावनी दे दी और सत्याग्रह की तैयारियां की जाने लगी ।

सत्याग्रह के पूर्व पचायत की ओर से उन व्यक्तियो के नाम एक अपील निकाली गई जिन्होने किसानो की माल की जमीन नीलाम मे ले ली थी और अब उसको छोडने से मना करते रहे थे । उस अपील को छपाकर बटवाया गया । अपील का कोई असर नही हुआ । अस्तु पचायत के सामने आन्दोलन छेड देने के सिवाय और कोई विकल्प नही रहा ।

यह हम पहले ही लिख आए है कि पचायत ने ठिकाने तथा रियासत को चेतावनी दे दी थी कि यदि हमारी जमीने अमुक समय तक नही लौटाई गई तो हम सत्याग्रह करेगे और उसके लिए जो भी कष्ट हमे सहन करना पडे हम उसके लिए तैयार है ।

राज्य के पास चेतावनी तथा चुनौती पहुँचते ही राज्य ने घोर दमन करना आरम्भ कर दिया । सत्याग्रह आरभ होन की भी राज्य ने प्रतीक्षा नही की । राज्य ने सेना भेज दी उसने किसानो पर अत्याचार करना आरम कर दिया । किसानो को धमकाया गया कि यदि उन्होने जमीन पर कब्जा किया तो उनको कठोर दड दिया जावेगा । उधर ठिकाने के आदमियो ने उन लोगो को भड़काया जिन्होने जमीन नीलाम मे ली थी । वे यह चाहते थे कि किसानो और उनमे झगडा हो जावे । सेना घोडे दौड़ाती हुई निकलती, खडी फसलो को नष्ट कर देती, किसानो पर अत्याचार होने लगे परन्तु श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे किसान अविचल डटे रहे । वर्मा जी ने एक अतिम प्रयास किया । पचायत ने राज्य सरकार के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि राज्य एक जाच कमीशन बिठादे और जब तक वह कमीशन फैसला न दे उन जमीनो को नीलाम मे लेने वाले जोते नही । जमीने पडत रखी जावे । परन्तु श्री ट्रेंच ने उनकी इस माग को भी ठुकरा दिया ।

जब कोई विकल्प नही रहा तो अक्षय तृतीया के दिन किसानो ने सत्याग्रह आरम कर दिया । उन्होने अपनी जमीनो पर कब्जा कर हल चलाना आरभ कर दिया । अब क्या था सेना और पुलिस ने निरीह किसानो पर अकथनीय अत्याचार करना आरभ कर दिया । श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा पचायत के अन्य प्रमुख व्यक्तियो को गिरफतार कर लिया गया और जेल मे डाल दिया गया । वहा उनके साथ अत्यन्त कठोर व्यवहार किया गया, परन्तु किसान विचलित नही हुए ।

यद्यपि पचायत ने सत्याग्रह करने का निश्चय स्वय किया था परन्तु श्री हरिभाऊ जी ने किसान पचायत की बहुत सहायता की । उन्होने वर्माजी को लिखा कि वे बाहर से जो भी सहायता हो सकती है करेगे आवश्यकता पडने पर अपने साथियो सहित स्वय भी सत्याग्रह करने आवेगे । हरिभाऊ जी ने देश के नेताओ को बिजोल्या सत्याग्रह से अवगत कराया, पत्रो मे खूब प्रचार किया, लेख लिखे । इसके अतिरिक्त

खटाई मे पड गया।

अन्त मे जब १९४१ मे विजय राघवाचार्य मेवाड के प्रधान मत्री बन कर आए तब इस प्रश्न का निपटारा हुआ। कारण यह था कि उस समय महायुद्ध चल रहा था मेवाड सरकार किसी आन्दोलन के खतरे को मोल नही लेना चाहती थी। भारत सरकार उसको पसद नही करती। सर टी विजयराघवाचार्य एक अत्यन्त प्रभावशाली तथा प्रगतिशील प्रशासक थे। देश के राजनीतिक वायुमडल मे जनशक्ति का प्रभाव बहुत बढ गया था। उसकी अब अवहेलना नही की जा सकती थी। देशी राज्यो की प्रजा जागरूक हो गई थी। देशी राज्य परिषद ने अपने बम्बई अधिवेशन मे पहले ही बिजोल्या के किसानो की भूमि की वापसी का समर्थन करते हुए प्रस्ताव पास कर दिया था। इधर वर्माजी ने मेवाड प्रजामडल की १९३८ मे स्थापना कर दी थी। राज्य से सघर्ष और दमन के उपरान्त प्रजामडल पर से प्रतिबध हटा लिया गया। मेवाड प्रजामडल एक अत्यन्त प्रभावशाली और सुदृढ सगठन बन चुका था। श्री माणिक्यलाल वर्मा उसके जन्मदाता सर्वमान्य नेता और प्रेरक शक्ति थे उनके साहसी और क्रान्तिकारी नेतृत्व मे मेवाड प्रजामडल एक शक्तिवान सगठन बन गया। राज्य सरकार को उसकी शक्ति और प्रभाव का भान हो चुका था। श्री माणिक्यलाल वर्मा मेवाड प्रजामडल के सर्वे सर्वा और एकछत्र नेता थे। उन्होने यह दृढ निश्चय कर लिया था कि बिजोल्या के किसानो की जमीन उन्हे वापस मिलनी ही चाहिए। मेवाड सरकार अब इस प्रश्न पर बिजोल्या की किसान पचायत तथा मेवाड प्रजामडल से सघर्ष नही करना चाहती थी अतएव सर टी विजयराघवाचार्य ने दूरदर्शिता से काम लिया और किसानो की जमीने वापस दिलवा दी।

इस प्रकार बिजोल्या किसान आदोलन किसानो की विजय के साथ समाप्त हुआ। इस आदोलन का जहा यह प्रभाव तो हुआ ही कि मेवाड तथा अन्य राज्यो के किसानो मे अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न हुई, बेगार लाग तथा अन्य प्रकार के शोषण के प्रतिकार के लिए किसान उठ खडे हुए। प्रथम बार निरीह किसानो को अपनी शक्ति का भान हुआ और उनको यह विश्वास हो गया कि यदि प्रजा सगठित हो जावे तो ठिकाने और राज्य की दुर्दमनीय शक्ति को भी झुकाया जा सकता है और अत्याचार और शोषण का प्रतिकार किया जा सकता है। परन्तु बिजोल्या आदोलन का एक बडा और महत्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि शोषितो और पिछडे हुए वर्गो को श्री वर्मा जी जैसा तेजस्वी और कर्मठ नेता प्राप्त हो गया।

दीर्घकाल तक चलनेवाले बिजोल्या आदोलन के द्वारा ही वर्मा जी के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास हुआ था। पथिक जी द्वारा आजन्म देशसेवा और जनसेवा की दीक्षा लेकर उनके नेतृत्व मे बिजोल्या किसान सघर्ष की प्रखर अग्नि मे तप कर वर्मा जी का व्यक्तित्व उभरा था। वर्मा जी को सहज ही सर्वसाधारण का विश्वास श्रद्धा और नेतृत्व प्राप्त नही हो गया था। बिजोल्या ठिकाने के एक साधारण कर्मचारी के यहा उन्होने जन्म लिया था। शिशु अवस्था मे ही पिता का स्वर्गवास हो गया,

उनकी शिक्षा दीक्षा भी बहुत ही साधारण हो पाई, भौतिक समृद्धि उनके पास छू तक नही गई थी, ऐसी परिस्थितियो मे रहकर उन्होने देश सेवा का व्रत लिया और एक साधारण ग्राम्य कार्यकर्ता से ऊचे उठकर वे राजस्थान के सर्वमान्य नेता बन सके और पडित जवाहरलाल के प्रिय और विश्वासभाजन बने उसका रहस्य बिजोल्यां किसान आन्दोलन के गर्भ मे छिपा है।

बिजोल्यां आन्दोलन मे लम्बे वर्षो तक भाग लेने के कारण वे साधारणजन के बहुत निकट पहुँच सके। शोषित और पीडित जन-समुदाय की इच्छाओ भावनाओ और विचारो को उनसे अधिक अन्य कोई भी राजनीतिक कर्मी नही जानता था। साथ ही बिजोल्या आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ता होने के नाते वे किसानों और पिछडे वर्ग के लोगों के मनोविज्ञान से भी भली भाति परिचत हो गए थे। उनको इतना आत्मविश्वास उत्पन्न हो गया था कि वे कही भी किसी स्थान पर जाकर पिछडे वर्गो का सगठन कर सकते थे। यही कारण था कि वे किसानो के अतिरिक्त गाडिया लुहारो, कालबेलियो, कजर सासी, भील इत्यादि पिछडे तथा उपेक्षित वर्गो का विश्वास प्राप्त कर सके। बिजोल्या आन्दोलन की प्रखर अग्नि मे से निकलने के कारण उनका अन्तर केवल शोषितो और पीडितो से एकात्मता ही अनुभव नही करता था उनके अन्तर मे सामन्तशाही और पू जीपतियो के विरुद्ध एक गहरी वितृष्णा और क्षोभ उत्पन्न हो गया। वे जीवन के अन्तिम क्षण तक उनसे समझौता करने के लिये तैयार नही थे। जीवन के अन्तिम दिनों मे उन्हे काग्रेस दल तथा अपने सहकर्मियो के प्रति जो रोष और क्षोभ था यह इसी कारण था।

बिजोल्या आन्दोलन मे ग्रामीण वे समाज के इतने निकट पहुँच गए थे कि उस समाज मे गहरे घुमे हुए दोषो को भी उन्होने जान लिया था। यही कारण था कि वे जहा एक ओर राजनीतिक क्रान्ति के द्वारा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को बदल डालना चाहते थे वहा वे उतना ही तीव्रता से सामाजिक कुरीतियो और अधविश्वासो पर भी प्रहार करते थे।

सच तो यह है कि वर्मा जी पूर्णतया बिजोल्या आन्दोलन की उपज थे। बिजोल्यां सघर्ष ही उनका विश्व विद्यालय और निर्माणशाला थी जहा उनका व्यक्तित्व निर्मित हुआ और तेजवान बना था।

माल की जमीन का त्यागपत्र देने के संबंध में विभिन्न मत—

फुसरियां ग्राम मे माल की जमीन के त्याग-पत्र के सबध मे लेखक ने श्री साधु सीतारामदास से बिजोल्या मे विस्तारपूर्वक बात की। साधुजी का कहना था कि सभी इस सबध मे एकमत थे कि माल की जमीन का त्यागपत्र दे दिया जावे। उनका कहना है कि स्वय वर्माजी भी इसी मत के थे। वर्मा जी फुसरिया ग्राम मे स्वय मौजूद थे या नही इस सबध मे उनकी स्मृति स्पष्ट नही थी। उनसे बात करने के उपरान्त लेखक ने उमा जी के खेड़ा तथा बिजोल्या के समीपवर्ती उन किसानो से बात की उनका कहना था

उन्होने सर्व श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी, वर्तमान सपादक नवज्योति, ओकारलालजी, अचलेश्वर प्रसाद शर्मा वर्तमान सपादक प्रजासेवक, प्यारचन्द विश्नोई, रमादेवी, आदि को सत्याग्रहियो की सहायता करने के लिए भेजा । उस समय बिजोल्या के पट्टे मे कोई भी वाहरी व्यक्ति घुस नही सकता था अतएव उनको गुप्त रूप से जगलो पहाडो मे से होकर पहुँचना पड़ा । वे गुप्त रूप से वहा छिपे रहे और एक एक कर गिरफतार हुए । जिन लोगो के यहा वे छिपे थे उन्हे भी गिरफतार कर लिया गया । उस समय मेवाड़ सरकार के अधिकारी बौखला उठे थे वे किसानो को पीस डालना चाहते थे । श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी तथा अन्य व्यक्तियो के साथ भी अभद्र व्यवहार किया गया । किसानो को तरह तरह की यातनाए दी गई । स्त्रियो को भी नही छोडा गया, दमन की पराकाष्ठा हो गई थी । उस पाशविक और बर्बर दमन के पीछे अधिकारियो का अभिप्राय यह था कि किसान भड़क उठे और हिंसक कार्य कर वैठे तो सेना और पुलिस को बर्वरता का नगा प्रदर्शन करने का अवसर मिल सके । एक महिला के बाल पकड कर घसीटा गया और उसको नग्न करने की धमकी दी गई तो उसके पुत्र का रुधिर खौल उठा, वह बदूक उठा लाया मरने मारने को तैयार हो गया परन्तु उसकी माता ने उसको रोक दिया ।

जबकि बिजोल्या से पाशविक दमन का नगा नृत्य हो रहा था । श्री हरिभाऊजी का अन्तर पीडा से भर गया । उन पर मेवाड़ प्रवेश निषेध का प्रतिबध पहले ही लगा दिया था । उन्होने बिजोल्या की ममस्पर्शी दशा का विवरण सेठ जमनालाल बजाज को को लिख भेजा । हरिभाऊ जी ने सेठ जमनालाल बजाज को अपने हृदय की पीड़ा से अवगत कराया और लिखा कि मै ऐसी दशा मे आमरण अनशन करने के सिवाय और क्या कर सकता हूँ ? मैं अनशन करने के लिए कृत सकल्प हूँ । परन्तु महात्मा गाधी ने उन्हे अनशन करने की सहमति नही दी । श्री जमनालाल बजाज ने महात्मा जी को सारी परिस्थिति से अवगत कराया । महात्मा जी ने परामर्श दिया कि सत्याग्रह स्थगित कर समझौते के लिए पहल की जावे । महात्माजी ने मालवीयजी को बिजोल्या के किसानो के आन्दोलन के सम्बध मे कहा । मालवीय जी ने सर सुखदेवप्रसादजी जो उस समय मेवाड के प्रधान मत्री थे लिखा । महात्मा जी की प्रेरणा से श्री जमनालाल बजाज ने समझौता कराने मे मध्यस्थता करना स्वीकार कर लिया । जमनालाल बजाज ने सर सुखदेव से समझौते के सबध मे लिखा पढी की । यह निश्चित हुआ कि सर सुखदेव जब बम्बई जावे तो वहा मिले । अस्तु बम्बई मे महामना मालवीय जी, श्री घनश्यामदास बिड़ला तथा श्री जमनालाल बजाज मे सर सुखदेव की बात हुई । आपसी वार्तालाप से यह तय हुआ कि १९२२ के हुए समझौते की शर्तों का ठिकाने से पालन करवाया जावे । गिरफतार लोगो को छोड़ दिया जावे । जो माल की जमीन नीलाम नही हुई थी वह ठिकाने के पास थी वह किसानो को वापस दिला दी जावे और जो जमीन नीलाम की जा चुकी थी उसको वापस दिलवाया जावे । यद्यपि आपसी बातचीत से यह तय हो गया था परन्तु उन शर्तों को वैधानिक रूप देने के लिए आवश्यक था कि उनको

लिखित रूप देकर महाराणा साहब से स्वीकृति प्राप्त की जावे। अस्तु सेठ जमनालाल बजाज उदयपुर आये महाराणा से मिले और बम्बई मे हुए समझौते की राज्य द्वारा वैधानिक रूप से स्वीकृत किए जाने की प्रार्थना की। महाराणा साहब का रुख सहानुभूति पूर्ण था परन्तु उनके अधीनस्थ राज्य कर्मचारी तथा जागीरदार यह नही चाहते थे।

बम्बई के समझौते के अनुसार सर सुखदेव के पास तथा उच्च न्यायालय में अपील करने पर ही बंदियो की मुक्ति होनी थी। किसानो की अपीलें लिखने और उनकी वकालत करने के लिए बाहरी वकील तो आ नही सकता था। देशी वकील कोई तैयार नही था। अस्तु श्री शोभालाल गुप्त को बिजोल्या भेजा गया और उन्होने अपीलें लिखना आरभ किया। परन्तु ठिकाने को यह सब पसन्द नही आया। शोभालाल जी गुप्त और उनके सहयोगी साथियो को बुरी तरह पीटा गया। अतएव शोभालाल जी ग्वालियर राज्य के सिंगोली नामक स्थान पर चले गए जो बिजोल्या के बहुत समीप था और वहा बैठ कर किसानो की अपीलें लिखी। सर सुखदेव ने बम्बई के समझौते के अनुसार जमीनों को वापस करने के लिए लिखा। परन्तु कोई फल नही हुआ। किसान बंदी नही छोडे गए, जमीने वापस नही की गई। यहा तक कि किसानो के पशुओ को नीलाम और कर दिया गया।

ठिकाना राज्य की आज्ञा की अवहेलना कर रहा था। उधर जो ठिकाने ने भीषण अत्याचार किया था उसके विरुद्ध पचायत ने मेवाड सरकार को लिखा तथा उसका विरोध किया। सरकार ने श्री लक्ष्मीलाल जोशी तथा श्री गुलजारीलाल माथुर का एक कमीशन अत्याचारो की जांच के लिए बिठाया। कमीशन ने जाच की, स्त्री पुरुषो के बयान लिए और ठिकाने के अमानुषिक अत्याचार प्रमाणित हो गए। श्री जोशी ने ठिकाने की जमीनो को लौटाने तथा पशुओ जिनको ठिकाने ने नीलाम कर दिया था वापस करने की सरकारी आज्ञा से अवगत कर दिया परन्तु ठिकाने ने उसकी कोई परवाह नही की। जमीने वापस नही की।

श्री माथुर और जोशी जी की रिपोर्ट पर मेवाड सरकार ने ठिकाने पर मुंसरमात बिठादी, और श्री यमुनालाल दशोरा को मुंसरिम नियुक्त कर दिया। श्री दशोरा ने जमीनें दिलाने का प्रयत्न किया परन्तु वे सफल नही हुए। कारण यह था कि प्रधान मत्री सर सुखदेव तथा श्री ट्रैंच को यह कहा गया कि यदि किसानो के आन्दोलन के परिणामस्वरूप उनको जमीने दिलवादी जावेगी तो किसानो का साहस बहुत अधिक बढ जावेगा और वे ठिकाने अथवा मेवाड सरकार की परवाह नही करेगे। अतएव सरकार की नीति मे पुन परिवर्तन आ गया। किसानो की जमीनें वापस नही मिली। यहीं नही वर्मा जी जब जमीनो की वापसी के सम्बन्ध मे उदयपुर प्रधान मत्री सर सुखदेव से किसान पचो के साथ बातचीत करने गए तो उन्हे बगले पर ही गिरफ्तार कर कुम्भलगढ भेज कर नजरबन्द कर दिया गया। कहने का तात्पर्य यह कि मेवाड़ राज्य ने एक बार फिर दमन का मार्ग अपनाया और जमीनो की वापसी का प्रश्न

खटाई मे पड गया ।

अन्त मे जब १९४१ मे विजय राघवाचार्य मेवाड के प्रधान मत्री बन कर आए, तब इस प्रश्न का निपटारा हुआ । कारण यह था कि उस समय महायुद्ध चल रहा था मेवाड सरकार किसी आन्दोलन के खतरे को मोल नही लेना चाहती थी । भारत सरकार उसको पसद नही करती । सर टी विजयराघवाचार्य एक अत्यन्त प्रभावशाली तथा प्रगतिशील प्रशासक थे । देश के राजनीतिक वायुमडल मे जनशक्ति का प्रभाव बहुत बढ गया था । उसकी अब अवहेलना नही की जा सकती थी । देशी राज्यो की प्रजा जागरूक हो गई थी । देशी राज्य परिषद ने अपने बम्बई अधिवेशन मे पहले ही बिजोल्यां के किसानो की भूमि की वापसी का समर्थन करते हुए प्रस्ताव पास कर दिया था । इधर वर्माजी ने मेवाड प्रजामडल की १९३८ मे स्थापना कर दी थी । राज्य से सघर्ष और दमन के उपरान्त प्रजामडल पर से प्रतिबध हटा लिया गया । मेवाड़ प्रजामडल एक अत्यन्त प्रभावशाली और सुदृढ सगठन बन चुका था । श्री माणिक्यलाल वर्मा उसके जन्मदाता सर्वमान्य नेता और प्रेरक शक्ति थे उनके साहसी और क्रान्तिकारी नेतृत्व मे मेवाड प्रजामडल एक शक्तिवान सगठन बन गया । राज्य सरकार को उसकी शक्ति और प्रभाव का भान हो चुका था । श्री माणिक्यलाल वर्मा मेवाड़ प्रजामडल के सर्वे सर्वा और एकछत्र नेता थे । उन्होने यह दृढ निश्चय कर लिया था कि बिजोल्या के किसानो की जमीन उन्हे वापस मिलनी ही चाहिए । मेवाड सरकार अब इस प्रश्न पर बिजोल्या की किसान पचायत तथा मेवाड प्रजामडल से सघर्ष नही करना चाहती थी अतएव सर टी विजयराघवाचार्य ने दूरदर्शिता से काम लिया और किसानो की जमीने वापस दिलवा दी ।

इस प्रकार बिजोल्या किसान आदोलन किसानो की विजय के साथ समाप्त हुआ । इस आदोलन का जहा यह प्रभाव तो हुआ ही कि मेवाड तथा अन्य राज्यो के किसानो मे अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न हुई, बेगार लाग तथा अन्य प्रकार के शोषण के प्रतिकार के लिए किसान उठ खडे हुए । प्रथम बार निरीह किसानो को अपनी शक्ति का भान हुआ और उनको यह विश्वास हो गया कि यदि प्रजा सगठित हो जावे तो ठिकाने और राज्य की दुर्दमनीय शक्ति को भी झुकाया जा सकता है और अत्याचार और शोषण का प्रतिकार किया जा सकता है । परन्तु बिजोल्या आदोलन का एक बडा और महत्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि शोषितो और पिछडे हुए वर्गो को श्री वर्मा जी जैसा तेजस्वी और कर्मठ नेता प्राप्त हो गया ।

दीर्घकाल तक चलनेवाले बिजोल्या आदोलन के द्वारा ही वर्मा जी के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास हुआ था । पथिक जी द्वारा आजन्म देशसेवा और जनसेवा की दीक्षा लेकर उनके नेतृत्व मे बिजोल्या किसान सघर्ष की प्रखर अग्नि मे तप कर वर्मा जी का व्यक्तित्व उभरा था । वर्मा जी को सहज ही सर्वसाधारण का विश्वास श्रद्धा और नेतृत्व प्राप्त नही हो गया था । बिजोल्या ठिकाने के एक साधारण कर्मचारी के यहा उन्होने जन्म लिया था । शिशु अवस्था मे ही पिता का स्वर्गवास हो गया,

उनकी शिक्षा दीक्षा भी वहुत ही साधारण हो पाई, भौतिक समृद्धि उनके पास छू तक नही गई थी, ऐसी परिस्थितियो मे रहकर उन्होने देश सेवा का व्रत लिया और एक साधारण ग्राम्य कार्यकर्ता से ऊचे उठकर वे राजस्थान के सर्वमान्य नेता वन सके और पडित जवाहरलाल के प्रिय और विश्वासभाजन वने उसका रहस्य बिजोल्या किसान आन्दोलन के गर्भ मे छिपा है।

बिजोल्यां आन्दोलन मे लम्वे वर्षो तक भाग लेने के कारण वे साधारणजन के वहुत निकट पहुँच सके। शोषित और पीडित जन-समुदाय की इच्छाओ भावनाओ और विचारो को उनसे अधिक अन्य कोई भी राजनीतिक कर्मी नही जानता था। साथ ही बिजोल्या आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ता होने के नाते वे किसानों और पिछड़े वर्ग के लोगो के मनोविज्ञान से भी भली भांति परिचित हो गए थे। उनको इतना आत्मविश्वास उत्पन्न हो गया था कि वे कही भी किसी स्थान पर जाकर पिछडे वर्गो का सगठन कर सकते थे। यही कारण था कि वे किसानो के अतिरिक्त गाडिया लुहारो, कालवेलियो, कजर सासी, भील इत्यादि पिछडे तथा उपेक्षित वर्गो का विश्वास प्राप्त कर सके। बिजोल्यां आन्दोलन की प्रखर अग्नि मे से निकलने के कारण उनका अन्तर केवल शोषितो और पीडितो से एकात्मता ही अनुभव नही करता था उनके अन्तर मे सामन्तशाही और पूजीपतियो के विरुद्ध एक गहरी वितृष्णा और क्षोभ उत्पन्न हो गया। वे जीवन के अन्तिम क्षण तक उनसे समझौता करने के लिये तैयार नही थे। जीवन के अन्तिम दिनो मे उन्हे काग्रेस दल तथा अपने सहकर्मियो के प्रति जो रोष और क्षोभ था यह इसी कारण था।

बिजोल्यां आन्दोलन मे ग्रामीण वे समाज के इतने निकट पहुँच गए थे कि उस समाज मे गहरे घुसे हुए दोषो को भी उन्होने जान लिया था। यही कारण था कि वे जहा एक और राजनीतिक क्रान्ति के द्वारा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को वदल डालना चाहते थे वहा वे उतना ही तीव्रता से सामाजिक कुरीतियो और अधविश्वासों पर भी प्रहार करते थे।

सच तो यह है कि वर्मा जी पूर्णतया बिजोल्यां आन्दोलन की उपज थे। बिजोल्यां सघर्ष ही उनका विश्व विद्यालय और निर्माणशाला थी जहा उनका व्यक्तित्व निर्मित हुआ और तेजवान वना था।

माल की जमीन का त्यागपत्र देने के संबंध में विभिन्न मत—

फुसरियां ग्राम मे माल की जमीन के त्याग-पत्र के सवंध मे लेखक ने श्री साधू सीतारामदास से बिजोल्या मे विस्तारपूर्वक वात की। साधूजी का कहना था कि सभी इस सवध मे एकमत थे कि माल की जमीन का त्यागपत्र दे दिया जावे। उनका कहना है कि स्वय वर्माजी भी इसी मत के थे। वर्मा जी फुसरिया ग्राम मे स्वय मौजूद थे या नही इस सवध मे उनकी स्मृति स्पष्ट नही थी। उनसे वात करने के उपरान्त लेखक ने उमा जी के खेड़ा तथा बिजोल्या के समीपवर्ती उन किसानो से बात की उनका कहना था

वर्मा जी फुसरिया ग्राम मे जब माल की भूमि का त्यागपत्र दिया गया तव उपस्थित नही थे। श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त का भी यही कहना है कि वर्मा जी वहा उपस्थित नही थे। अस्तु यह निर्विवाद सत्य है कि वर्मा जी फूसरिया गाव मे उपस्थित नही थे।

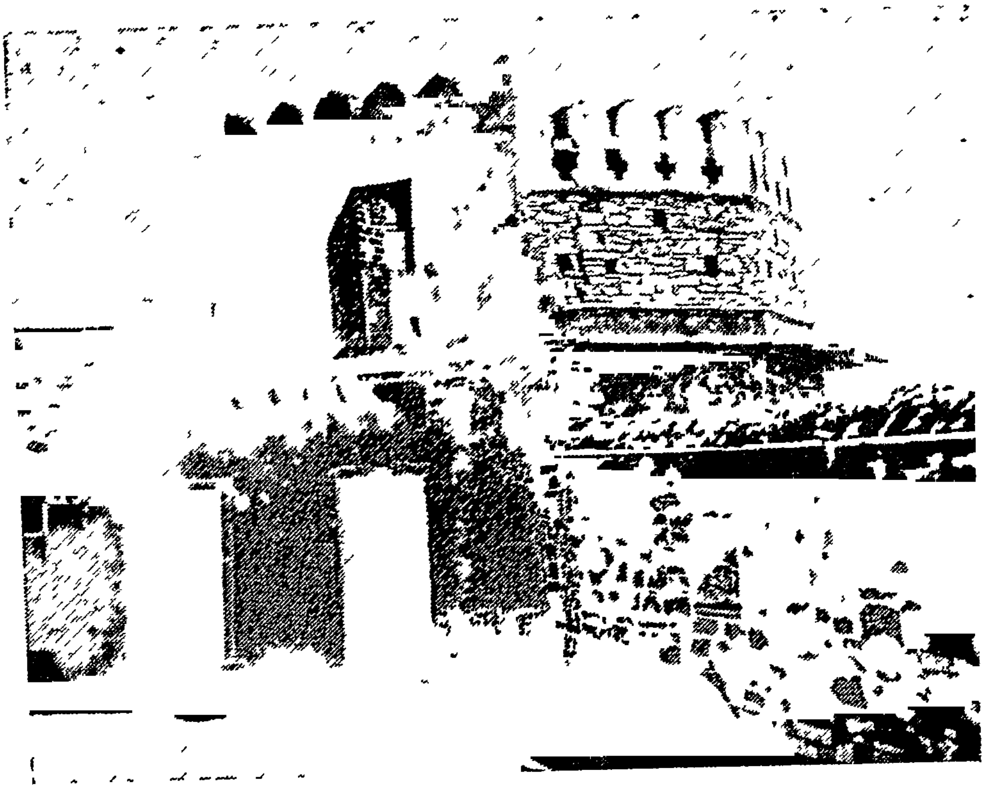
ऐसा प्रतीत होता है कि ऊपरमाल पचायत को अपनी शक्ति और सगठन पर बहुत अधिक भरोसा था। उनको बिजोल्या राव के तथा मेवाड सरकार के विरुद्ध सघर्ष मे सफलता मिल चुकी थी। ठिकाने को पचायत के समक्ष नतमस्तक होना पडा था उस समय पचायत का सर्व व्यापी प्रभाव था। जब बन्दोवस्त मे माल की जमीन की मालगुजारी बहुत बढा दी गई तो किसानो ने सोचा कि यदि माल की जमीन को छोड दिया जावे तो ठिकाने को विवश होकर मालगुजारी घटाना पडेगी। यह उनकी कल्पना के बाहर की बात थी कि ठिकाना उस जमीन को नीलाम कर सकेगा और उसको लेने वाले खडे हो जावेगे।

पथिक जी लम्बे समय तक जेल मे थे। ऊपरमाल की वास्तविक स्थिति उनको मालूम नही थी उस समय पचायत का प्रभाव अधिकतर धाकडो पर ही अधिक था। उन्होने किसानो को इस खतरे से सावधान भी किया था। परन्तु किसानो मे पचायत के प्रभाव और शक्ति के प्रति आवश्यकता से अधिक विश्वास था उनका यही आग्रह रहा कि माल की जमीन से त्यागपत्र दे दिया जाय। अस्तु सर्व सम्मति से यह निश्चय किया गया था उसमे कोई मतभेद नही था।

अस्तु माल की भूमि से त्यागपत्र देने का परामर्श पथिक जी ने दिया यह कहना सही नही होगा। परन्तु यदि थोडी देर के लिए यह मान भी लिया जावे कि पथिक जी की उससे सहमति थी तो भी यह पथिक जी तथा वर्मा जी के मनोमालिन्य का कारण नही हो सकता। उसका कोई अन्य निजी कारण रहा होगा जो सभवत. अज्ञात ही बना रहेगा।

श्री शोभालाल जी का मत

"मुझे अब यह स्मरण नही है कि पथिकजी और श्री माणिक्यलाल जी के सबध किस बात को लेकर विगडे। पथिक जी जेल से रिहा होने के वाद विजोल्यां के किसानो से मिलने के लिए सिंगोली (ग्वालियर) के निकटवर्ती गाव गए थे। उस समय मैं और श्री रामनारायण जी चौधरी दोनो उनके साथ गए थे। उस समय माणिक्यलाल जी वहा नही आए थे। बढे हुए लगान का प्रतिकार कैसे किया जाय यह सवाल था आपसी परामर्श के वाद माल जमीनो का त्यागपत्र देने की वात तय पायी थी। खयाल यह था कि विजोल्या क्षेत्र मे पचायत के प्रभाव को देखते हुए इस्तीफा शुदा जमीन को और कोई दूसरा लेने को तैयार नही होगा और ठिकाने को किसानो की लगान कम करने की माग को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पडेगा। किन्तु वैसा हुआ नही ठिकाने ने इस्तीफे शुदा जमीन को नीलाम पर चढाया तो ठिकाना ऐसे आदमी ढूढ



विजोलिया के गढ के उस भाग का दृश्य जहा वर्मा जी कैद रहे



उमा जी खेडा गाव में वर्मा जी द्वारा स्वय वनाया हुआ मकान
जहा आन्दोलन के समय वे रहे थे ।



वर्माजी पूर्व राजस्थान के मुख्यमन्त्री पद की शपथ लेते हुए



पूर्व राजस्थान के मुख्यमन्त्री के रूप मे वर्मा जी सरदार पटेल महाराजप्रमुख महाराणा भूपालसिंह तथा अपने मन्त्रिमन्डल के साथ

निकाले जो उस समय जमीन को लेने को तैयार हो गए। यह लोग मुख्यत: महाजन वर्ग के थे।"

(शोभालाल ४-१२-७०)

श्री शोभालाल जी के लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि पथिकजी का जमीन से इस्तीफा देने का कोई आग्रह नही था। सम्भवत: किसान पचो मे पचायत की शक्ति और प्रभाव का अतिरजित विश्वास था वे यह समझते थे कि जब किसान भूमि का इस्तीफा दे देंगे तो पंचायत के प्रभाव के कारण कोई उस जमीन को लेने का साहस नही करेगा। साधू सीतारामदास ने लेखक से यही बात कही थी कि पथिकजी ने किसानो को यह चेतावनी भी दी थी कि यह निर्णय तभी करे कि जब उन्हे यह विश्वास हो कि अन्य कोई उन जमीनो को नही लेगा परन्तु किसानो मे अपनी पचायत के प्रभाव और शक्ति के सबध में बहुत उत्साह था अस्तु यह निर्णय लिया गया। यह सही है कि अन्ततः पथिकजी भी सहमत हो गए थे। परन्तु एक तो वे लम्बे वर्षो में जेल मे रहने के उपरान्त छूट कर आए ही थे, पचायत का कैसा प्रभाव और शक्ति है उसका ठीक अनुमान वे नही कर सकते थे अस्तु जो स्थानीय कार्यकर्ताओ ने बताया और आग्रह किया उसी के अनुसार निर्णय हुआ।

श्री रामनारायण चौधरी का मत :

लेखक कुमारी डाक्टर पद्मजा शर्मा एम ए, पी एच डी जिन्हे राजस्थान सरकार ने बिजोल्यां किसान आन्दोलन का इतिहास लिखने के लिए आवश्यक सामग्री एकत्रित करने के लिए नियुक्त किया था— के साथ २० मार्च १९७१ को श्री रामनारायण चौधरी के बंगले पर अजमेर मे इस प्रश्न पर उनका स्पष्ट मत जानने के लिए गया था। श्री चौधरी ने लेखक को बतलाया कि वे फुसरियां गांव मे पथिकजी के साथ गए थे। वहां बिजोल्यां से भारी सख्या मे आए हुए किसानो ने पथिकजी को बतलाया कि उन्होने माल की जमीन का लगान बहुत अधिक बढा देने के फलस्वरूप माल की जमीन के इस्तीफे दे दिए है। पथिकजी ने कहा कि तुम लोगो ने सोच समझ कर ही इस्तीफे दिए होगे श्री रामनारायण चौधरी का कहना था कि पथिकजी ने किसानो को माल की जमीन के इस्तीफे देने का परामर्श नही दिया वे पहले ही इस्तीफे देने का निर्णय कर चुके थे। पथिकजी को तो उन्होने फुसरिया गाव मे यह बतलाया भर था।

श्री साधू सीतारामदासजी से चर्चा :

लेखक कुमारी डाक्टर पद्माजा शर्मा के साथ बिजोल्या गया और वहा १८ मार्च १९७१ को श्री साधू सीतारामदास जी से इस सबध मे चर्चा की। साधूजी फुसरिया गांव में मौजूद थे। उनका कहना था कि पथिकजी जनवरी १९२८ मे उदयपुर जेल से छूट कर फुसरिया गांव (ग्वालियर राज्य) मे आए क्योकि मेवाड मे प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। ऊपरमाल के हजारो किसान उनके दर्शन के लिए फुसरिया ग्राम आए थे।

इससे पूर्व ही किसानो ने मुहकमा खास उदयपुर को सामूहिक इस्तीफे भेज दिए थे। महकमा खास ने कहा कि सामूहिक इस्तीफे नही लिए जा सकते। तब दो हजार इस्तीफे छपवाये गए और व्यक्तिश. उनको भर कर भेजा गया।

पथिकजी ने पूछा कि क्या पूरी तैयारी है। ऊपरमाल के सभी लोग इसके लिए तैयार है ? किसानो ने कहा कि हा सभी ऊपरमाल के लोग पंचायत के साथ हैं। जब किसानो ने पथिकजी को विश्वास दिलाया तो उन्होने कहा कि वे इस्तीफा दे सकते है। साधू सीतारामदास का कथन था कि केवल धाकडो ने इस्तीफा दिया अन्य जातियो ने इस्तीफा नही दिया था।

श्री साधू सीतारामदास जी के अनुसार श्री पथिकजी ने इस्तीफा देने का परामर्श नही दिया। इस्तीफा देने का किसानो ने पहले ही निश्चय कर लिया था।

अध्याय चौथा

कुशलगढ़ की नजरबन्दी

सन् १९३१ का विजोल्या किसान सत्याग्रह राजस्थान सेवक सघ के टूटने के वाद हुआ था। पथिकजी ने विजोल्या पचायत का मार्गदर्शन करने तथा विजोल्यां से अपने को हटा लिया था। यो नाम मात्र का नेतृत्व श्री जमनालाल वजाज के हाथ में पहुँच गया था और उन्होने अपने प्रतिनिधि के रूप मे श्री हरिभाऊ उपाध्याय को बिजोल्यां आन्दोलन की गति-विधियो को देखने के लिए नियुक्त कर दिया था। वे बिजोल्यां पचायत के परामर्शदाता थे। बात यह थी कि वर्माजी यह जानते थे कि किसान सत्याग्रह को तेजवान वनाने के लिए देश के नेताओ की सहानुभूति तथा समाचार पत्रो का समर्थन आवश्यक था अतएव पथिकजी के विजोल्या आन्दोलन से हट जाने के उपरान्त उन्होने श्री जमनालाल बजाज को अपना नेता स्वीकार कर लिया था जिससे कि उन्हें देश के नेताओ तथा पत्रो का समर्थन मिल सके। परन्तु वस्तुस्थिति यह थी कि पथिक जी जैसा सक्रिय और तेजवान नेतृत्व उनके वाद बाहर से विजोल्या को नही मिल सका। दिन प्रति-दिन की समस्याओ का सामना करना आन्दोलन को चलाना, विजोल्यां पट्टे के किसानो का संगठन करना। ठिकाने तथा राज्य के अधिकारियो से वात करना यह सारे कार्य वर्माजी ही करते थे। वास्तविक स्थिति तो यह थी कि १९३१ के विजोल्यां किसान आन्दोलन का औपचारिक नेतृत्व तो श्री जमनालाल बजाज के हाथ में था तथा हरिभाऊजी परामर्शदाता थे ऐसा कहा जा सकता है परन्तु स्थानीय और क्रियात्मक नेतृत्व एक मात्र श्री माणिक्यलाल वर्मा के हाथ मे था। उन्होने ही उस आन्दोलन का सचालन किया था।

१९३१ के आन्दोलन से प्रभावित होकर महात्मा गाधी ने महामना मालवीयजी को मेवाड सरकार से बातकर बिजोल्या के किसानो को न्याय दिलाने के लिए लिखा। महात्मा गाधी बिजोल्यां किसानो की करुण कथा सुनकर द्रवित हो उठे थे। उन्हे पथिक जी को दिया हुआ वचन याद था। अतएव उन्होने महामना मालवीय जी को बिजोल्यां के किसानो के कष्टो को दूर कराने के लिए लिखा क्योकि महात्मा जी जानते थे कि मेवाड़ के महाराणा महामना मालवीय को अत्यन्त श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे।

महात्मा जी के अनुरोध के फलस्वरूप महामना मालवीय जी ने मेवाड के

तत्कालीन प्रधान मंत्री सर सुखदेव को बिजोल्या ठिकाने के किसानो के साथ न्याय करने के लिए पत्र लिखा। सर सुखदेव अपने समय के प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ थे लोग उन्हें देशी राज्यों के चाणक्य की सज्ञा देते थे। उन्होने देखा कि महात्मा गाधी और मालवीय जी जैसी महान शक्तियां जिस प्रश्न को लेकर चिन्तित है उसकी उपेक्षा करना बुद्धिमत्ता नही होगी और न यह राज्य के हित मे होगा। अतएव उन्होने मालवीय जी को लिखा कि मैं बम्बई आ रहा हू सेठ जमनालाल बजाज मुझे वहा मिले तो मैं इस विषय मे उनसे बातचीत करने के लिए तैयार हूँ। परिणामस्वरूप सर सुखदेव और सेठ जमनालाल बजाज की बम्बई मे बात हुई और यह तय हुआ कि राज्य (१) किसानो की जमीन जो नीलाम करदी गई हैं वापस दिला देगा (२) सत्याग्रही किसानो को जेल से मुक्त कर दिया जावेगा (३) किसानो से जो जुर्माना वसूल कर लिया गया है और उनके पशुओ को कुर्क कर लिया गया है उनको उन्हे वापस लौटा दिया जावेगा।

चतुर कूटनीतिज्ञ सर सुखदेव की युक्ति यह थी कि यह समझौता करके वह महात्मा गाधी तथा मालवीय जो को बिजोल्या आन्दोलन से पृथक कर देगे और आगे चलकर उस समझौते को क्रियान्वित करने मे देरी करते रहे गे साथ ही किसानो के वास्तविक नेता श्री माणिक्यलाल वर्मा को उनसे पृथक कर बिजोल्यां के किसानों को नेतृत्वहीन बना देंगे अतएव आन्दोलन शिथिल होकर स्वयं अपनी मृत्यु से मर जावेगा।

सेठ जमुनालाल बजाज से फैसले की सूचना पाते ही श्री वर्मा जी कुछ किसान पचो को लेकर उदयपुर आए। सूरजपोल पर ठहरे और सरसुखदेव से मिलने का समय मांगा। वर्मा जी सर सुखदेव और सेठ जमुनालाल बजाज के बीच हुए समझौते को शीघ्र से शीघ्र कार्यान्वित करना चाहते थे। अस्तु निर्धारित समय पर वे किसान पचो के साथ प्रधान मत्री के बगले पर उनसे मिलने और फैसले की शर्तो को कार्यान्वित कराने के लिए उनसे बातचीत करने पहुँचे।

कूटनीतिज्ञ सर सुखदेव ने देखा कि श्री माणिक्यलाल वर्मा पर वार करने का और उन्हे किसानो से अलग कर देने का यही अनुकूल अवसर है। यह उनकी कूटनीति थी कि किसानो को थोडी राहत तथा सुविधाएँ देकर महात्मा गाधी व मालवीय जी की दृष्टि मे उदार बन जावे, किसानो की सहानुभूति प्राप्त करले किन्तु आदोलन के प्राण और वास्तविक नेता को किसानो से पृथक कर किसान आदोलन को प्राणहीन बना दिया जावे।

अतएव जब वर्मा जी सर सुखदेव के बगले पर पहुंचे और उन्होने बिजोल्यां के फैसले को राज्य द्वारा पूरी तरह से कार्यान्वित कराने की बात कही तो सर सुखदेव ने बहुत गम्भीर मुद्रा बनाली। बोले राज्य ने बिजोल्या के किसानो की जमीन दिलाने, कैदियों को रिहा करने, तथा कुर्क किए हुए पशुओ को वापस करने के सबन्ध में निर्णय लिया है उसको कार्यांविन्त करने की बात राज्य स्वय सोच लेगा इस संबन्ध में राज्य तुमसे कोई बात नही करेगा क्योकि राज्य तुमको गम्भीर अपराधी मानता है। तुम पर गम्भीर अपराधो के आरोप हैं।

बात यह थी कि जब दूसरा किसान सत्याग्रह हुआ था उस समय लगभग सवा सौ वाकड़ ठिकाने और सरकार के साथ मिल गए और उन्होने किसानो का साथ छोड़ दिया था । सरकारी आतक तथा व्यक्तिगत लाभ का लालच ऐसे प्रभाव थे कि जिनके कारण कुछ भीरु और कायर व्यक्ति सत्ता से सघर्ष छिडने पर किसानो का साथ छोड देते थे । पहले भी कई बार ऐसा हुआ था । कुछ किसान सदैव आन्दोलन के समय किसानो का साथ छोड़ कर ठिकाने और सरकार के साथ चले जाते थे । वर्मा जी आगे ऐसी पुनरावृत्ति न हो, और इस प्रकार थोडे से किसान आदोलन को कलकित न कर सके इस उद्देश्य से उन भगोडे किसानो को पाठ पढाना चाहते थे जिससे भविष्य मे फिर वे ऐसा करने का साहस न करे । अतएव उन्होने किसान पचायत से उनके सामाजिक वहिष्कार का फैसला करवाया जो नीचे लिखे अनुसार था:— फैसला यह था कि जो किसान सत्याग्रह की शपथ लेकर प्रतिज्ञा करके किसान पचायत का साथ छोड दे उसका वहिष्कार किया जाय—

(१) जो किसान ठिकाने और सरकार के पक्ष मे चले गए उनका सामाजिक वहिष्कार किया जाय । वहिष्कार का रूप नीचे लिखे अनुसार निश्चय किया गया ।

(क) जब तक वहिष्कृत किसान पचायत के समक्ष क्षमा प्रार्थी हो अपनी भूल को स्वीकार न करे और पचायत द्वारा निर्धारित जुरमाना या दड न चुकादे तब तक जाति के किसी भी भोज मे निमन्त्रित नही किया जावेगा ।

(ख) उसके पुत्र पुत्रियो का जाति मे विवाह सबन्ध नही किया जावेगा । यदि सगाई इससे पूर्व हो चुकी है वह तोड दी जावेगी । कोई किसान न तो उसके लड़के को अपनी पुत्री देगा और न उसकी पुत्री लेगा ।

(ग) वहिष्कृत किसानो की स्त्रिया जब पनघट पर पानी भरने जावे तो जब तक पहले गाव की अन्य स्त्रिया पानी न भरले तब तक वे कुएँ के नीचे खडी रहे ।

(घ) वहिष्कृत किसान की विवाहित लड़की यदि इस समय सुसराल में हो तो वह वही सुसराल मे ही रहे उसे अपने पीहर (मायके, न भेजा जावे और यदि पुत्री वहिष्कृत किसान के यहा व्याही है तो उसको बुलाया न जावे । कभी माता पिता से मिलने जाये तो व्यक्तिगत सम्बन्ध भले ही रहे मगर उसके माता पिता अथवा सास ससुर अपने घर के परिवार मे विवाह करे तो वहिष्कृत परिवार मे रहने वाली लड़की बुलाई नही जावे और पीहर मे रहने वाली लड़की भेजी नही जावे ।

(ङ) गाव भर के किसानो के साथ जिन सेवा कार्य करनेवालो का संबंध है वह वहिष्कृत परिवारो के साथ नही रहे अर्थात् बहिष्कृत परिवार का (१) नाई बाल नही बनाए, (२) कुम्हार पानी नही भरे,

(३) चमार मरे हुए पशुओ को नही ले जावे और उसके फटे जूते और चरस नही सिये (४) ढोली उसके होने वाली शादी मे ढोल नही बजावे, इत्यादि ।

पचायत ने बहिष्कार की शर्तो का कडाई से पालन करवाया। उसका परिणाम यह हुआ कि वहिष्कृत परिवार के लोगो की दशा खराब हो गई। मेवाड़ सरकार के रेवेन्यू विभाग के सर्वोच्च अधिकारी (सैटिलमेंट कमिश्नर) श्री ट्रैंच जब जमीन वापस लौटाने का समझौता कराने आए तब वहिष्कृत परिवारो के किसान उनके सामने बहुत रोये और गिडगिडाये कि राज्य का किसान पचायत से समझौता तो हो गया, राज्य और किसान एक होगए हमारे वहिष्कार का क्या होगा। हमारा सरकार के साथ रहना व्यर्थ हुआ। हमको राज्यभक्ति का दड मिला कि हम बहिष्कृत हो गए। तब ट्रैंच साहब ने किसान पचायत के तत्कालीन अध्यक्ष श्री किसनाराम जी पटेल कल्याणपुरा निवासी को बुला भेजा और उनसे कहा कि तुम्हारा और मेवाड़ राज्य सरकार का समझौता हो गया अब राज्य सरकार का साथ देनेवाले इन किसानो का वहिष्कार उठा दो। किसान पचायत के अध्यक्ष श्री किसनाराम जी ने कहा— "आप इन्हे समझा दे कि हम इन पर जुर्माना नही करेगे परन्तु उन्हे किसान पचायत की बैठक मे अपने अपराध की क्षमा मागनी होगी। उस समय श्री माणिक्यलाल वर्मा जेल में थे उन्हे वर्मा जी से परामर्श करने का भी अवसर और सुविधा नही थी परन्तु वर्मा जी ने किसानो का ऐसा सबल सगठन खडा कर दिया था, पंचो को ऐसा दृढ़ और स्वाभिमानी बना दिया था कि उनके पीछे भी वे पचायत के अनुशासन को भग करने वालो से विना क्षमा याचना किए वहिष्कार उठाने के लिए तैयार नही हुए। इस पर ट्रैंच साहब क्रुद्ध होकर बोले समझौते मे दोनो पक्षो को झुकना पड़ता है अतएव क्षमा याचना किस बात की ? यदि तुम मेरी इस बात को स्वीकार नही करोगे तो तुम लोगो को हानि उठानी पड़ेगी और पछतावोगे। किसनाराम जी ने ट्रैंच की धमकी की तनिक भी चिन्ता नही की उनके चेहरे से स्वाभिमान का आवेश फूट पड़ा उन्होने दृढ़ शब्दो मे कहा "आप नुकसान की बात कहते है ? आप माल की बत्तीस हजार बीघा जमीन नीलाम कर चुके हो तीन हजार बीघा पीवल जमीन जो बची है वह फिर नीलाम कर देना। श्रीमान् ट्रैंच साहब उन बहिष्कृत किसानो को यदि बेटी लेने की आवश्यकता होगी तो वे विवश हो हमारे पैरो मे पड़ेगे आप तो उन्हे बेटी दे नही सकोगे। अतएव जब वे क्षमा प्रार्थी हो पचायत के पैरो मे पड कर क्षमा याचना करेगे वहिष्कार तभी उठेगा अन्यथा बहिष्कार ज्यो का त्यो रहेगा।" किसान पचायत के अध्यक्ष की इस दृढता से ट्रैंच साहब के स्वाभिमान को गहरा धक्का लगा वे क्रुद्ध होकर चले गए और समझौता दस वर्ष के लिए फिर खटाई मे पड़ गया।

अब वहिष्कृत किसान घबरा गए वे एक एक कर फूटने लगे। पचायत से उन्होने माफी मागी और अपराध का दड भुगतने के लिए अपनी तैयारी बतलाई। जब बहिष्कृत किसान अध्यक्ष के पास जाता, माफी मागने और दन्ड भुगताने की

तैयारी बतलाता तो प्रत्येक गांव के प्रमुख लगभग तीन सौ से एक हजार तक उस किसान का बहिष्कार उठाने के लिए एकत्रित होते। उनके भोजन की सारी व्यवस्था बहिष्कृत किसान को करनी पड़ती और दड स्वरुप वह पाच सौ से तीन हजार रुपये जो पच निश्चित करे जमा कराता तब बहिष्कार उठता था।

यद्यपि जमीन दिलाने का समझौता औपचारिक रूप से हो गया था परन्तु मेवाड सरकार ने न तो उस समझौते को कार्यान्वित किया और न उसे भग करने की ही घोषणा की। इसका परिणाम यह हुआ कि किसानो की जमीन उन्हे वापिस नही मिली।

जब फरवरी १९३२ मे वर्मा जी तथा अन्य कार्यकर्ता जेल से निकले तो फरवरी के अन्तिम सप्ताह मे वे नारायणजी पटेल थडोदा, नारायण जी बैरीसाल, अमरचन्द जी सदारामजी का खेड़ा और किसनाराम जी, कल्याणपुर निवासी के साथ मेवाड के प्रधान मत्री सर सुखदेव प्रसाद जी से इस संबन्ध मे बातचीत करने उदयपुर आए। यह उस समय की बात थी।

तो जब वर्मा जी का सर सुखदेव से समझौते के अमल के सबन्ध मे वार्तालाप हुआ तो सर सुखदेव बहुत गुस्से मे थे ट्रैन्च ने उन्हे किसान पचायत द्वारा राज्यभक्त किसानो के बहिष्कार की कहानी सुना दी थी। वे बोले "माणिक्यलाल, तुम बदमाश हो सरकार को तुम मानते नही, तुमने राजभक्त किसानो का सामाजिक बहिष्कार करवाया है, उनसे रोटी बेटी का सबन्ध तुमने तुडवा दिया है, और उनसे तीन हजार रुपये जुर्माना तुम वसूल करते हो। तुम वहा के सर्वेसर्वा बन गये हो तुमने वहा एक दूसरी सरकार बनाली है।" सर सुखदेव क्रोध मे भरे हुए वर्मा जी को उनके अक्षम्य अपराधो की सूची सुनाने लगे। वर्मा जी ने पूछा। आपके पास शिकायत करने कौन आया तो सर सुखदेव ने उत्तर दिया "कि यदि सरकार के पास कोई शिकायत करने आना चाहे तो वह तुम्हारे भय से भयभीत हो कांपता है सरकार तक आने का साहस नही करता तुमने वहा सरकार को खत्म कर दिया है तुम खुद सरकार बन गए हो।"

कूटनीतिज्ञ सर सुखदेव अभी तक क्रोध में बात कर रहे थे उनका चेहरा क्रोध से लाल था परन्तु एक साथ ही उनके क्रोध की मुद्रा लुप्त हो गई अपने को उन्होने सम्हाला नरमी के साथ बोले—माणिक्यलाल तुम सरकार की एक शर्त स्वीकार करलो तुम सरकार का पद स्वीकार करलो सरकारी अफसर बन जावो। मेवाड सरकार तुम्हे आठ सौ रुपये मासिक वेतन और सवारी (घोड़ा) रखने का व्यय देगी तुम मेवाड़ मे रचनात्मक कार्य करो। समाज सेवा का कार्य करो। इस कार्य के लिए लाखो रुपये के बजट की राज्य तुम्हारे लिए व्यवस्था कर देगा।

समाज सेवा और रचनात्मक कार्य करने का प्रलोभन और उस समय की दृष्टि से कल्पनातीत ऊँचा वेतन तथा अन्य सुविधाए और समाज सेवा तथा रचनात्मक कार्य के लिए लाखो रुपये की व्यवस्था अत्यन्त आकर्षक प्रलोभन वर्मा जी के सामने उस कूटनीतिज्ञ ने फेका। सर सुखदेव मानव स्वभाव को बहुत अच्छी तरह से जानते थे

उन्होंने अपनी चतुराई से बड़े बडे सामंतो नरेशो अधिकारियों और सेवा कार्य करने वालो को परास्त कर उन्हे धर्मच्युत कर दिया था। वे जानते थे कि यदि मैं वर्मा को केवल सरकारी नौकरी का लालच दूंगा तो उनके अहं की तुष्टि नही होगी, वह उसे स्वीकार नही करेंगे परन्तु रचनात्मक कार्य के लिए लाखो रुपये के प्रलोभन से वे सम्भवत. फस जावे। परन्तु सर सुखदेव को यह ज्ञात नही था कि वर्मा जी दूसरी ही धातु के बने है उन्होने आजन्म देश सेवा की दीक्षा ली है उनमें क्रान्तिकारी भावना गहरी बैठ चुकी हे और वे सतत क्रातिकारी जीवन व्यतीत करने के लिए दृढ प्रतिज्ञ हैं।

उन्होने सर सुखदेव को उत्तर दिया कि वह उनके तेजवान शौर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होने उस समय सर सुखदेव को जो उत्तर दिया था वह उनके व्यक्तित्व को वहुत ऊँचा और दीप्तपूर्ण बना देता है।

वर्मा जी ने उत्तर दिया 'हमारे 'ऊपरमाल' (बिजोल्या) मे एक ऊँचा पहाड है जिसे 'दरोली की धार' कहते हैं। जब मै उस पर चढ कर देख लूगा कि बिजोल्या के किसानो की एक एक इच भूमि उनके मूल मालिको को वापिस मिल गई तो मैं आपके प्रस्ताव पर विचार करने की सोचूगा, आज तो मुझे ऐसे किसी प्रस्ताव पर विचार करने की फुर्सत ही नही है।" (माणिक्यलाल वर्मा के सस्मरण) सर सुखदेव के चेहरे पर रोष की लाली छा गई उनका चेहरा तमतमा उठा बोले—'इतना घमड'

एक पुलिस इस्पेक्टर वहा उपस्थित था उसकी ओर सकेत कर रोष भरे शब्दों मे कहा। "पकड़ो इसे और लेजा कर कुम्भलगढ मे नजरबद कर दो।" तत्काल वर्माजी की नजरबन्दी की आज्ञा दे दी गई। कुम्भलगढ़ उदयपुर राज्य का कालापानी के नाम से कुख्यात था सरकार वहा उन लोगो को रखती थी जो मेवाड़ सरकार के अत्यन्त कोपभाजन होते थे।

वर्मा जी ने सर सुखदेव से कहा कि जब मै आपसे मिलने आया तो सूरजपोल की धर्मशाला से जहा मै ठहरा था किसानों के प्रतिनिधियो के साथ पैदल चल कर आया था क्योकि मै किसानो का सेवक था। परन्तु अब तो मैं मेवाड़ राज्य का अतिथि हू मैं पैदल नही जा सकता। आप जहा चाहे मुझे भेजें परन्तु अब तो यहा से सवारी पर ही जाऊँगा।

सर सुखदेव ने जीवन मे प्रथम बार ऐसे व्यक्ति को अपने सामने खड़ा देखा कि जो उनकी पद गरिमा और रोब दाब से तनिक भी आतकित न होकर उनकी रोषपूर्ण धमकियो की तनिक भी परवाह न कर स्वाभिमान पूर्वक उनकी नितात अवहेलना कर उनके सामने अडिग खडा था। उनके द्वारा दिए गए बहुत बड़े प्रलोभन को तिरस्कार पूर्वक ठुकरा कर वर्मा जी ने सर सुखदेव को उनके ही खेल मे जिसमे वे अपने को पारगत और दक्ष समझते थे उन्हे बुरी तरह पराजित कर दिया था। वर्मा जी का मुख विजय श्री की कान्तिपूर्ण आभा से देदीप्यमान हो रहा था और मेवाड़ के प्रधान मत्री उस पराजय से श्री हीन हो गए थे।

आखिर झुंझला कर उन्होंने तांगा लाने की आज्ञा दी पुलिस इस्पेक्टर ने तागा

मंगवाया वर्मा जी ने किसान प्रतिनिधियो, अपने साथियों से विदा ली और तागे मे बैठ गए। बिजोल्यां के किसान प्रतिनिधियो का सर श्रद्धा से झुका और उन्होने विह्वल हृदय से अपने प्रिय नेता को सादर विदा किया।

पुलिस वर्मा जी को रंग विलास थाने मे ले गई। उस थाने मे वर्मा जी रातभर रहे। उन पर पहरा बिठा दिया गया। पहरेदारो का जमादार (हैड-कास्टेबिल) एक मुसलमान था जो बाद को देवारी के पास वर्मा जी के खेत के पास ही रहने के कारण उनका निकट पड़ौसी बनकर मानो उनके खेत की पहरेदारी करता था।

रंगविलास थाने मे रात्रिभर रहकर प्रातकाल ऊट पर सवार होकर वर्मा जी दो दिन मे उस कठिन और कष्टपूर्ण यात्रा समाप्त कर कुम्भलगढ मे पहुँचे। कुम्भलगढ दुर्ग मे वर्मा जी को उस स्थान मे रखा गया जहा कि पहले "घागड मह" के जागीरदार नजरबद थे। उन्हे हटाकर उनके स्थान पर वर्मा जी को नजरबंद कर दिया गया। यद्यपि कहने के लिए वर्मा जी को नजरबंद कर दिया गया परन्तु उन पर कडा पहरा बिठा दिया गया था मानो वे कोई भयकर कैदी हो।

कुम्भलगढ उदयपुर से बहुत दूर पर निर्जन पहाड़ी स्थान है। उस समय कोई पहियेदार गाड़ी वहा नही पहुँच सकती थी क्योकि सड़क का अभाव था। जगलो और पहाड़ो से भरा वह प्रदेश गमनागमन तथा यातायात के साधनों से नितान्तहीन था। एक प्रकार से वहा पहुँचकर व्यक्ति बाहरी दुनिया से अलग पड़ जाता था। यही कारण था कि मेवाड़ के प्रधान मंत्री ने वर्मा जी को कुम्भलगढ़ में नजरबन्द करवाया। कुम्भलगढ मे चिकित्सा की भी कोई सुविधा नही थी।

कुछ समय के उपरान्त वर्मा जी का परिवार भी पहुँच गया। कुम्भलगढ़ की नजरबन्दी के समय वर्मा जी की माता बीमार पडी और चिकित्सा के अभाव मे वहा उनकी मृत्यु हो गई। मेवाड़ सरकार की यह निर्मम क्रूरता थी कि वर्मा को एक ऐसे निर्जन स्थान मे नजरबन्द किया गया कि जहा चिकित्सा की कोई सुविधा नही थी। उन दिनो देश पर अपने को निछावर कर देने वालो को इस सब के लिए तैयार रहना पड़ता था। अपने प्रियजनो को भी देश भक्तो को देश के लिए बलिदान कर देना पड़ता था। तो वर्मा जी की मातेश्वरी का कुम्भलगढ मे स्वर्गवास हो गया। वर्मा जी का हृदय मात्र शोक से भर गया। जिस माता ने पिता के मर जाने पर परिवार को पिता का अभाव नही खटकने दिया वर्मा जी की देश सेवा के कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने से जिसने कभी नही रोका और जिसने बालकपन से ही वर्मा जी की स्वातत्र्य प्रियता स्वाभिमान वीरत्व, और कठिन श्रम करने के गुणो का विकास किया वह मा वर्मा जी जैसे वरद पुत्र को देश के लिए देकर स्वर्ग सिधार गई। वास्तव मे ऐसी ही माताए धन्य है जिन्होने ऐसे पुत्रो को जन्म दिया जो केवल अपने लिए अपने परिवार के लिए ही जीवित नही रहे वरन जो देश और समाज के लिए जिये और मरे। वर्मा जी की माता ऐसी ही वीर महिला थी।

जिस दिन वर्मा जी की माता का स्वर्गवास हुआ उस दिन समस्त कुम्भलगढ

कस्बे का जन समुदाय उनकी शव-यात्रा में उमड़ पड़ा। उनकी शवयात्रा और दाह संस्कार ऐसा भव्य हुआ कि जो बिरलो को ही भाग्य से प्राप्त होता है।

यद्यपि उस समय तक वर्मा जी का कार्य क्षेत्र अधिकतर विजोल्या बेगू तथा समीपवर्ती प्रदेश ही रहा था परन्तु उनकी यशकीर्ति समस्त मेवाड़ मे फैल गई थी। लोग जान गए थे कि किमानो और पीड़ितो का सहायक, रक्षक और त्राता कुम्भलगढ़ मे नजरवन्द है। अस्तु जब उनकी माता के स्वर्गवास का समाचार कुम्भलगढ़ वासियो को मिला तो अपार जन समूह उमड पडा। माता के अतिम सस्कार सम्बन्धी धार्मिक कृत्यों से जब वर्मा जी निवट गए, तो पुन. उनके पास मेवाड़ राज्य का एक प्रस्ताव आया। मेवाड के शासक यह भली भाति जान गए थे कि मेवाड के किसानो में जो चैतन्य, अपने अधिकारो के लिए सघर्ष करने का हौसला और जागृति दिखलाई देती है उसका एक मात्र सूत्रधार, सगठन और सचालनकर्त्ता माणिक्यलाल वर्मा है। सर सुखदेव अपना ब्रह्मास्त्र उन पर चला चुके थे परन्तु वह व्यर्थ हो गया इस बार स्वय महाराणा की ओर से उनको सदेश आया।

इस सम्बन्ध में श्री हेमराज धाकड़ खादी कार्यकर्त्ता ग्राम घडोदा विजोल्यां का नीचे लिखा पत्र महत्वपूर्ण है। वे उस समय कुम्भलगढ मे ही थे जबकि महाराणा के सदेशवाहक श्री लक्ष्मीचन्द वर्मा जी के पास आए थे।

कुम्भलगढ किला
ता० ५-१-१९३३

हम लोग नित्यकर्म से निवट कर बाहर धूप मे चर्खे से सूत कात रहे थे कि लक्ष्मीचन्द जी मन्त्री* महाराणा भूपालसिह जी के भेजे हुए उदयपुर से आए और वर्मा साहब से कहा कि आपके पास राणा जी ने मुझको भेजा है और कहलवाया है कि श्री माणिक्यलाल वर्मा को किसी भी ठिकाने का मुसरिम बना देगे यदि वे विजोल्यां के किसानो का साथ छोड दे। वे आराम से जीवन वितावे क्यो मारे मारे फिरते है। वर्मा जी ने लम्बी सास खीचकर लक्ष्मीचन्द की पीठ पर हाथ रखकर कहा कि मुसरम साहब आप पधारे सो अच्छा किया परन्तु राणा जी को कह देना कि "मीरा के गिरधर गोपाल दूसरा न कोई" "मेरे भी ऊपरमाल बिजोल्यां के किसान दूसरा न कोई" मै विजोल्या के किसानो की माल की जमीन दिलाए बिना दम नही लूगा। यह महाराणा जी को कह देना। मुझे मुसरिम नही वनना है। लक्ष्मीचन्द के जाने के वाद हम सबने भोजन किया। वहा से मैं फिर पूज्य गाधी जी के आश्रम अनन्तपुर सी पी चला गया।

हेमराज धाकड
ग्राम थडोदा विजोल्यां

देशी राज्यो मे और ब्रिटिश भारत मे भी देश सेवको की कठिनाइयो का लाभ उठाकर शासन उन्हे पथ भ्रष्ट करने का निरन्तर प्रयास करता था। निर्बल कार्यकर्ताओ का

* श्री हेमराज ने लक्ष्मीचन्द जी को भूल से मन्त्री लिख दिया वे महाराणा के विश्वास प्राप्त दरबारी थे।

पतन भी हो जाता था। महात्मा गांधी बहुधा राष्ट्रीय कर्यकर्त्ताओं को इस खतरे से सजग रहने के लिए कहा करते थे।

राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जन्मदाता प्रताप जयन्ती के प्रवर्तक राजस्थान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और 'त्यागभूमि' के सहसम्पादक श्री क्षेमानन्द राहत* का कुछ देशी राज्यों के नरेशों से अच्छा सबन्ध था वे उनसे मिलते रहते थे। एक जब वे वर्धा मे महात्मा गाधी से मिलने गए तो गाधी जी ने उनसे कहा था "मुझे ऐसा ज्ञात हुआ है कि आप राजे महाराजो से अधिक मिलते हे। एक राष्ट्रकर्मी और देश सेवक के लिए इसमें खतरा है तुम्हे उस ओर से सचेत रहना चाहिए। मे जानता हूँ कि बहुत से कार्यकर्ताओं और राजनीतिज्ञो का इस कारण पतन हो गया।"

जब वर्मा जी ने महाराणा जी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तो उनके साथ साधारण कैदी की भांति व्यवहार होने लगा। मेवाड़ के अधिकारी मानो नजरबन्दी और जेल मे कोई भेद ही नहीं करते थे।

वर्मा जी का परिवार अत्यन्त विपन्न दशा मे जीवन व्यतीत कर रहा था। आर्थिक कठिनाइयो की चरम सीमा पहुच चुकी थी पेट भरना और तन ढकना भी कठिन हो रहा था ऐसी घोर निर्धनता के समय मे एक बड़े ठिकाने के मु सरिम पद को अस्वीकार कर देना वर्मा जी जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ और दृढ चरित्र वाले व्यक्ति के लिए ही सम्भव था वर्मा जी ने अपनी डायरी मे एक स्थान पर लिखा हे कि जब मेरे जीवन मे कठिन परीक्षा और सकट के क्षण आते हैं तो मेरे सामने पथिक जी द्वारा पार्श्वनाथ में आजन्म देश सेवा की दिलाई गई प्रतिज्ञा का चित्र खिच जाता है और वह मुझे बल और साहस देता है। यही कारण था कि वे दैन्यता के दिनो मे भी उन ऊंचे राजकीय पदो को ठुकरा सके कि जिनके लिए मेहता मुतसद्दी पृथ्वी आकाश एक कर देते थे।

वर्मा जी की नजरबन्दी के समय उनकी देखरेख केलवाड़ा निवासी रामनिवासजी हैड मुर्हरिर के जिम्मे थी जो राजस्थान बन जाने पर पुलिस इन्स्पैक्टर बन गए थे। उनके सहायक श्री रामनारायण देवपुरा थे। वे दोनो ही वर्मा जी का आदर करते थे। वर्मा जी का कुम्भलगढ की नजरबदी मे भोजन घाराथोरया के एक राजपूत भीमसिह बनाते थे।

यद्यपि वर्मा जी राज्य के कोप भाजन नजरबन्दी थे परन्तु सभी अहलकार और सिपाही उनको अत्यन्त श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे। वर्मा जी ने अपने सस्मरणो मे लिखा "सिपाहियो और अहलकारो से मुझे मुहब्बत थी और सरकारी कायदे कानूनो के अलावा उनका व्यक्तिगत सद्व्यवहार जो देशभक्तो के साथ करना चाहिए था उससे भी ऊपर था परन्तु मैने उनमे कभी व्यक्तिगत लाभ नही लिया। तीन मास तक मुझे कपडे धोने का साबुन नहीं मिला। कुम्भलगढ के हाकिम श्री ओकारलाल ढीकड़िया थे। दफतर के काम मे कुछ नही समझते थे केवल महाराणा जी की कृपा पर

* श्री क्षेमानन्द राहत अब एक सन्त का अध्यात्मिक जीवन व्यतीत कर रहे है वे अधिकतर मसूरी में रहते है और भगवान के नाम से प्रसिद्ध है।

हाकिम बने हुए थे। मगर उनके बजाय रामप्रताप जी पारीख नायब हाकिम होशियार सबसे ज्यादा मुहब्बत मेरे से रखते थे। मेरे मैले कपडे देखकर वे मुझे व्यक्तिगत रूप से साबुन देने लगे। मैने कहा आपको धन्यवाद। जाडने से मेवाड़ सरकार मुझे साबुन नही देगी तो मै मैला रहना पसद करूँगा मगर चोरी से कोई लाभ नही उठाऊगा। उनपर मेरी इस बात की बहुत अच्छी छाप पडी। इसी दृढता की छाप ने उनका मेरा सम्बन्ध जीवन भर का बना दिया उनके रिटायर होने के बाद एक बार मै उनके गाव (रश्मी तहसील) मे भी गया।"

वर्मा जी को कुम्भलगढ मे डेढ़ वर्ष नजरबन्द रखा गया। मेवाड़ सरकार अपने मन मे दोषी अनुभव कर रही थी वर्मा जी पर कोई अपराध सिद्ध नही हुआ था न उन पर कोई मुकदमा ही चलाया गया था। उन्हे बिना किसी कारण के नजरबन्द कर दिया गया तथा उनके साथ कैदी जैसा व्यवहार किया जाता था। महाराणा जी तथा सर सुखदेव प्रसाद के पास सैकड़ो की सख्या मे बाहरी राजनीतिक कार्यकर्ताओ तथा नेताओ के उनको छोड़ देने के लिए पत्र आए थे। समाचार पत्रो मे वर्मा जी की नजरबन्दी की कटु आलोचना होती थी इस कारण मेवाड सरकार उनको छोड देना तो चाहती थी परन्तु साथ ही वह यह नही चाहती थी कि वर्मा जी मेवाड की सीमा मे न रहे क्योंकि वे जानते थे कि यदि वे मेवाड मे रहे तो बिजोल्या बेगू के पट्टो के किसानो पर तो उनका प्रभाव है ही समस्त मेवाड के किसानो पर उनका प्रभाव बढ जायेगा और उनके नेतृत्व मे किसान उठ खडे होगे। अस्तु कूटनीतिज्ञ प्रधान मत्री सर सुखदेव प्रसाद ने एक युक्ति निकाली कि जिसमे मेवाड सरकार की अपकीर्ति भी न हो और उनका उद्देश्य पूरा हो जावे। मेवाड सरकार ने वर्मा जी से कहा कि मेवाड राज्य उन्हे इस शर्त पर रिहा करने को तैयार है कि स्वेच्छा से मेवाड छोड कर चले जावे और फिर वापस न आवे। वर्मा जी से कहा गया कि यदि वे स्वेच्छा से मेवाड से बाहर चले जावे और भविष्य में मेवाड मे वापस न आने का लिखित वचन दे दे तो उन्हे नजरबन्दी से रिहा कर दिया जावेगा। दूसरे अर्थो मे चतुर दीवान वर्मा जी को अपने निष्कासन को स्वय स्वीकार करने के लिए कह रहे थे। परन्तु वर्मा जी इस शर्त पर अपनी स्वतत्रता क्रय करना नही चाहते थे। उन्होने मेवाड राज्य सरकार से स्पष्ट शब्दो मे कह दिया कि वे ऐसी कोई शर्त स्वीकार करने के लिए तैयार नही है यह उनका मौलिक नागरिक अधिकार है कि वे मेवाड मे स्वतत्रतापूर्वक रहे अतएव मेवाड़ को स्वेच्छापूर्वक नही छोड सकते। राज्य चाहे तो उन्हे मेवाड से निर्वासित करने की आज्ञा निकाल सकता है और यदि वे निर्वासन की आज्ञा को भग कर मेवाड मे प्रवेश करे तो जो भी चाहे उन्हे सजा दे सकता है।

मेवाड राज्य के सभी प्रलोभन व्यर्थ हो गए। ऊचे राजकीय पद उन्हे पथ भ्रष्ट नही कर सके और न रिहाई का लोभ ही उन्हे स्वेच्छा से निर्वासन स्वीकार करने के लिए तैयार कर सका।

कुम्भलगढ़ की नजरबन्दी के अन्तिम चरण मे वर्मा जी भयंकर रूप से रोग

ग्रस्त हो गए। उनको इक्कीस दिन का मोतीझरा (टायफाइड) हुआ उनकी स्थिति गम्भीर हो गई। प्रारभ मे राज्य ने उनकी चिकित्सा की कोई व्यवस्था नहीं की। उन दिनो कुम्भलगढ मे राज्य की ओर से कोई चिकित्सालय नही था। किले पर केवल एक कंपाउडर रहता था। एक दो देशी वैद्य निजी रूप वैद्यक धंधा करते थे।

आज कोई इस बात की कल्पना भी नही कर सकता कि राज्य सरकार ऐसी निष्ठुरता का भी व्यवहार कर सकती है कि एक नजरबन्द राजनीतिक कार्यकर्ता के गम्भीर रूप से बीमार हो जाने पर भी उसकी चिकित्सा का प्रबन्ध भी न करे। परन्तु उस सामन्ती युग के निरकुश शासन का ऐसा ही क्रूर व्यवहार था। ब्रिटिश भारत की जेलें देशी राज्यो की जेलो की अपेक्षा कही अधिक सुविधाजनक थी। देशी राज्यो मे राजनीतिक कार्य करना वास्तव मे बहुत कठिन था क्योंकि वहां कोई नियम अथवा कानून तो थे नही पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारी शासन था। नरेश की इच्छा ही कानून था।

वर्मा जी के परिवार के लोग तथा मित्र और हितैषी उनकी गम्भीर बीमारी से चिन्तित हो उठे। उन्होने वर्मा जी से बहुत आग्रह किया कि वे निजी रूप से अपनी चिकित्सा करावे परन्तु वर्मा जी ने व्यक्तिगत रूप से चिकित्सा कराना स्वीकार नही किया। उनका कहना था कि मै मेवाड़ राज्य का नजरबद कैदी हूँ। राज्य सरकार का यह कर्तव्य है कि वह मेरी चिकित्सा की उचित व्यवस्था करे मैं स्वयं अपनी चिकित्सा नही कराऊँगा।

जब वर्मा जी भयंकर ज्वर से पीड़ित थे तो उनके मित्र तथा राजस्थान सेवा संघ के सहकर्मी प्रसिद्ध पत्रकार श्री शोभालाल गुप्त उनको देखने कुम्भलगढ पहुंचे। वे वर्मा जी के स्वास्थ्य की गिरती हुई दशा और उनके स्वय चिकित्सा न कराने के आग्रह से बहुत चिन्तित हो उठे। उन्होने तुरन्त ही सेठ जमुनालाल बजाज को वर्मा जी के चिन्ताजनक स्वास्थ्य से अवगत कराया और समाचार पत्रो मे लिखकर मेवाड़ राज्य की उनके स्वास्थ्य की ओर से गहरी उदासीनता की कठोर आलोचना की। सेठ जमुनालाल बजाज ने मेवाड के प्रधान मत्री सर सुखदेव प्रसाद को पत्र लिखा उधर समाचार पत्रो मे राज्य सरकार की कडी आलोचना के फलस्वरुप सर सुखदेव ने आवश्यक डाक्टरी चिकित्सा की व्यवस्था की। वर्मा जी के ज्वर के बीसवे दिन राजनगर के डाक्टर राधाकृष्ण उनकी चिकित्सा के लिए भेजे गये। उनकी चिकित्सा से कुछ दिनों मे वर्मा जी का ज्वर जाता रहा और उन्होने स्वास्थ्य लाभ किया।

बीमारी के बाद नजरबन्दी की कडाई कुछ हलकी करदी गई। राज्य सरकार ने श्रीमती नारायणी देवी को वर्मा जी के साथ रहने की आज्ञा दे दी। श्रीमती नारायणी देवी की सेवा सुश्रूषा और देख रेख से वर्मा जी के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार होने लगा। अपने वीर देशभक्त और समाज सेवी पति के साथ रहने के कारण अब तक श्रीमती नारायणी देवी स्वयं वर्मा जी के विचारो और सिद्धान्तो को आत्मसात कर उन्हें पूरी तरह अपना चुकी थी। अतएव उन्होने केलवाडा कुम्भलगढ मे एक कन्या पाठशाला

चलाई और केलवाडा मे सबसे पहले कन्याशिक्षा का श्रीगणेश किया। उस समय मेवाड में युवको की शिक्षा की ही व्यवस्था नही थी कन्या शिक्षा की बहुत ऊँचे और शिक्षित घरो को छोड़ कर कोई कल्पना भी नही करता था उन घरों मे भी कन्याओ की शिक्षा केवल साधारण हिन्दी भाषा के ज्ञान तक ही सीमित थी।

यह वर्मा जी के जीवन की एक उल्लेखनीय बात है कि यद्यपि वर्मा जी को स्वय उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नही मिला। उन्होने किसी स्कूल या पाठशाला मे विधिवत शिक्षा प्राप्त नही की परन्तु उन्होंने सदैव पिछड़ी जातियो और महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया। उनकी प्रेरणा से श्रीमती नारायणी देवी ने केलवाड़ा कुम्भल गढ मे कन्या पाठशाला स्थापित कर वहा की कन्याओ मे भी शिक्षा की भूख जाग्रत करदी। केलवाड़ा की उनकी यह महती सेवा थी।

वर्मा जी गम्भीर बीमारी और उसके परिणाम स्वरूप मेवाड राज्य शासन की जो सर्वत्र कटु आलोचना हुई उससे मेवाड सरकार ने वर्मा जी को और अधिक समय तक नजरबद रखने की जोखिम को उठाना बुद्धिमानी नही समझा। अस्तु उन्होने उन्हे वर्मा जी को नजरबन्दी से कुछ समय उपरान्त रिहा तो कर दिया परन्तु साथ ही उन्हे निर्वासित किए जाने की आज्ञा भी निकाल दी। मेवाड की पुलिस ने अपनी हिरासत मे उन्हे नवम्बर १६३३ मे अजमेर ले जाकर छोड दिया और उन्हे मेवाड़ से निर्वासित कर दिया गया।

निर्वासित होने पर वर्मा जी के मन मे जो प्रतिक्रिया हुई उसके सबन्ध मे उन्होने अपने ससमरण मे नीचे लिखे अनुसार उस प्रतिक्रिया को व्यक्त किया है।

"अनेक जेलयात्राओं की भाति कुम्भलगढ़ की नजरवदी भी सामन्ती निरंकुशता की एक कटु स्मृति हृदय पर छोड़ गई। उससे यह सकल्प और भी मजबूत हुआ कि इस निरंकुशता से भविष्य मे और भी डट कर मोर्चा लेना होगा। और तब तक रियासतो मे सामन्तवाद की समाप्ति नही होगी नागरिक स्वतन्त्रता सुरक्षित नही हो सकती।" (श्री माणिक्यलाल वर्मा)

अब वर्मा जी अजमेर पहुचे। मेवाड़ सरकार ने उन्हे निष्कासित कर दिया था वे बिजोल्यां अथवा मेवाड के किसी भाग मे जा नही सकते थे। यहां तक कि मेवाड की सीमा मे घुसना भी उनके लिए वर्जित था। यदि वे निष्कासन की अवहेलना कर मेवाड़ मे घुसते तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता। ऐसी दशा मे एकमात्र विकल्प यही था कि या तो राज्य आज्ञा की अवहेलना कर सत्याग्रह किया जाता अथवा अजमेर मे रहा जाता। एकाकी सत्याग्रह करने से कोई लाभ नही था। बिजोल्यां के किसानो का जो संगठन खड़ा किया गया था वह किसानो के आर्थिक कष्टों को दूर कराने के लिए खडा किया गया था। किसानो का आंदोलन किसी राजनीतिक उद्देश्य को लेकर नही किया गया था। यदि बिजोल्यां किसान पचायत को उस राजनीतिक संघर्ष मे डाला जाता तो किसानो के हितो को हानि पहुंचती राज्य सरकार को किसान संगठन को नष्ट कर देने का बहाना मिल जाता। वर्मा जी किसान पचायत को राजनीतिक

संघर्ष मे नही डालना चाहते थे। उस समय तक मेवाड में प्रजामण्डल जैसी कोई संस्था नही थी जो कि नागरिक अधिकारो के लिए संघर्ष करती। इसके अतिरिक्त उस समय महात्मा गांधी तथा कांग्रेस देशी राज्यो मे राजनीतिक सघर्ष करने के विरुद्ध थे। राष्ट्र पिता महात्मा गाधी की देशी राज्यो के कार्यकर्ताओ को यही सलाह थी कि देशी राज्य रचनात्मक कार्य करे राज्य से जहा तक सम्भव हो संघर्ष न करे। सम्भवत· गांधी जी की मान्यता यह थी कि जब ब्रिटिश शक्ति से हमारा संघर्प चल रहा है उस समय देशी राज्यो के विरुद्ध दूसरे मोर्चे पर युद्ध छेड देना बुद्धिमानी नही होगी उससे ब्रिटिश सरकार को शक्ति मिलेगी अस्तु कांग्रेस तथा महात्मा जी उस पक्ष मे नही थे कि देशी राज्यो मे राजनीतिक अधिकारो के लिए सघर्प छेडा जावे। उनकी वह भी मान्यता थी कि भारत के स्वतत्र होते ही देशी राज्यो की समस्या स्वय हल हो जावेगी।

ऐसी दशा मे वर्मा जी के लिए एक मात्र विकल्प यह था कि वे रचनात्मक कार्य मे जुट जावे। यही सोचकर वर्मा जी ने अजमेर मे ही रहने का निश्चय किया।

अध्याय पांचवां

डूंगरपुर के भीलों में

राजस्थान सेवक मंडल

श्री वर्मा जी जब कुम्भलगढ़ से अजमेर ले जाकर मेवाड पुलिस द्वारा छोड़ दिए गए तो वर्मा जी के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित था कि वे कहां रहे और किस क्षेत्र में सेवा का कार्य करे। राजस्थान सेवा संघ आपसी वैमनस्य के कारण टूट चुका था। पथिक जी तथा उनके मुख्य कार्यकर्त्ताओ श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त में भयंकर मतभेद उठ खड़े हुए थे। अवश्य ही वे मतभेद वैयक्तिक कारणो से थे। सिद्धान्त तथा नीति सबन्धी कोई मतभेद नही था। प्रताप के यशस्वी संपादक श्री गणेश शंकर विद्यार्थी रुग्ण अवस्था में दौड़े आए उन्होने भरसक प्रयत्न किया कि राजस्थान की एकमात्र कर्मठ और तेजस्वी सस्था को नष्ट होने से बचाया जावे किन्तु ,व्यक्तिगत मतभेद इतने गहरे पैठ चुके थे कि संस्था समाप्त हो गई। राजस्थान के राजनैतिक इतिहास की यह सबसे अधिक दुखद घटना थी उसके उपरान्त ऐसी तेजस्वी संस्था का राजस्थान मे उदय नही हुआ। पथिक जी अजमेर से चले गये और उसके उपरान्त उनका राजस्थान के सार्वजनिक जीवन से सबन्ध टूट गया। परन्तु जब वर्मा जी अजमेर पहुँचे तो श्री रामनारायण चौधरी और श्री शोभालाल गुप्त अजमेर में ही थे। उन्होने श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल गुप्त से मिलकर एक नई संस्था "राजस्थान सेवक मंडल" को जन्म दिया। उनका उस सस्था को जन्म देने का लक्ष्य यह था कि उनके द्वारा राजस्थान मे रचनात्मक तथा राजनीतिक कार्य किया जावे। बाद को श्री चन्द्रभान जी गुप्त, जयसिंह, नथनराम जी शर्मा, रामसिंह, हुक्मीचंद, दुर्गाप्रसाद तथा मास्टर ओंकार लाल बाकलीवाल को भी उन्होने मंडल का सदस्य बना लिया। दूसरे शब्दो मे पथिक जी तथा हरि जी को छोडकर पुराने राजस्थान सेवासंघ के सभी पुराने कार्यकर्त्ता एक संगठन में आ गए। नरेली आश्रम की स्थापना की गई। वर्मा जी उसके संस्थापक थे।

वर्धा में

उधर श्री जमुनालाल बजाज को जब यह ज्ञात हुआ कि वर्मा जी को मेवाड़ से निर्वासित कर दिया गया है तो उन्होंने वर्मा जी को तार दिया कि तुम वर्धा

आओ। सेठ जमनालाल बजाज का तार पाकर वर्माजी वर्धा गए। सेठ जी ने वर्मा जी को गांधी आश्रम के मेहमानो की देखभाल का कार्य सौप दिया। दूसरे शब्दो मे वर्मा जी को अतिथिशाला के व्यवस्थापक का कार्य सोप दिया गया।

भला क्रांतिकारी वर्मा जी को यह कार्य क्योकर रुचिकर होना। यद्यपि वर्धा उन दिनों भारत की राजनीति का केन्द्र था। शीर्षस्थ राजनीतिक नेता वहा आते ही रहते थे, महात्मा गाधी जैसे युगपुरुष का सान्निध्य अनायास ही मिलता था, अवश्य ही एक राजनीतिक कार्यकर्त्ता के लिए यह अत्यन्त लुभावना कार्य था। परन्तु वर्मा जी के अन्तर मे जो देशी राज्यो विशेषकर राजस्थान मे निरकुश सामन्ती शासन मे जनता अत्याचार से कराह रही थी उसको सगठित कर अत्याचार के विरुद्ध खडा कर देने तथा पीडित और शोपित जनसमूह के दुख-दर्द को दूर करने के लिए उनमे सेवाकार्य की जो भूख थी वह वहा रहकर शान्त नही हो सकती थी। वास्तव मे वर्मा जी का जन्म अत्याचार जो कुछ समाज मे शोपण और पीडन है उसके विरुद्ध सतत सघर्ष करने के लिए हुआ था। अतएव उन्हे अतिथिशाला की व्यवस्था का कार्य तनिक भी नही रुचा। जब उनके अन्तर का द्वन्द तीव्र हो गया तो उन्होने सेठजी से स्पष्ट कह दिया कि उन्हें उस कार्य मे रुचि नही है वे उसे छोड देना चाहते हैं। सच तो यह था कि दो मास मे ही वर्मा जी उस कार्य से ऊब चुके थे। सेठ जी की वर्मा जी के साथ सहज सहानुभूति थी। वे वर्मा जी के उज्ज्वल चरित्र, अथक परिश्रम करने की शक्ति साहसिकता तथा उत्कट देशप्रेम से प्रभावित थे। परन्तु साथ ही वे मानवी स्वभाव के विलक्षण पारखी भी थे। वे जान गए थे कि क्रातिकारी सघर्ष मे सुख और सतोप माननेवाले वर्माजी के यह उपयुक्त कार्य नही है। उनकी आत्मा राजस्थान के लिए छटपटा रही है। राजस्थान की रियासतो की निरीह प्रजा का करुण क्रन्दन उन्हे अपनी ओर खीच रहा है। वे बोले कि मेवाड़ राज्य ने तो तुम्हे निर्वासित कर दिया है कहा रहकर काम करोगे? वर्मा जी ने कहा राजस्थान बहुत बडा है, राजस्थान की अन्य रियासतो मे कही भी काम करूगा। अस्तु वर्मा जी गाधीआश्रम वर्धा को छोड कर पुन अजमेर वापस आ गए। उस समय वर्मा जी के सामने यह प्रस्ताव भी रखा गया कि वे गाधी सेवा सघ के सदस्य बन जावे परन्तु वर्मा जी उस समय अहिंसा को नीति के रूप मे ही मानते थे धर्म के रूप में उसे स्वीकार नही करते थे अतएव यह प्रस्ताव भी उन्होने अस्वीकार कर दिया।

नरेली आश्रम :

उस समय गाधी जी ने हरिजन आंदोलन आरभ किया था। वे देशव्यापी दौरा कर रहे थे, और हरिजनो के उद्धार के कार्य को उन्होने अपने रचनात्मक कार्यक्रम में सर्वोच्च स्थान दिया था। महात्मा जी सभी रचनात्मक कार्य करने वालो को हरिजन कार्य मे जुट जाने के लिए आह्वान करते थे। जब गाधी जी हरिजनोद्धार यात्रा के लिए निकले तो श्री रामनारायण चौधरी भी उनकी यात्रा मे सम्मिलित हो गए। एक मास तक वे गाधी जी की महत्वपूर्ण यात्रा मे उनके साथ रहे। महात्मा गाधी की यात्रा से

लौटकर चौधरी जी ने राजपूताने के हरिजन कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। राजपूताना हरिजन सेवकमघ की उन्होने स्थापना की। वे उसके अध्यक्ष थे और शोभालाल गुप्त उसके मंत्री निर्वाचित हुए। सम्पूर्ण राजपूताना मे हरिजन सेवक संघ की शाखाए स्थापित करदी गई।

यह हम पहले ही कह आए हैं कि जब श्री वर्मा जी कुम्भलगढ की नजरवन्दी से रिहा होकर अजमेर आए तो उन्होने श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री शोभालाल जी के सहयोग से राजस्थान सेवकमडल नामक सस्था को जन्म दिया था। चौधरी जी ने हरिजन सेवा कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया था। परन्तु श्री वर्मा जी को केवल हरिजन कार्य जैसे सामाजिक कार्य से सनोष नहीं हो सकता था। अतएव इन तीनो ने राजस्थान सेवक मंडल स्थापित किया जिसके सदस्य रचनात्मक कार्य करने के अतिरिक्त कुछ सीमाओ मे देशी राज्यो मे राजनीतिक कार्य भी कर सकते थे। राजस्थान सेवक मडल मे श्री रामनारायण चौधरी, शोभालाल जी गुप्त तथा श्री माणिक्यलाल वर्मा के अतिरिक्त चन्द्रगुप्त, नयनूरामजी शर्मा, रामसिह, हुक्मसिह, श्री दुर्गाप्रसाद तथा श्री बाकलीवाल भी सम्मलित हो गए।

१९३४ मे वर्मा जी तथा शोभालाल जी ने अजमेर से सात मील दूर नारेली नामक एक छोटे से गाव में सेवाआश्रम खोला। आश्रम का मुख्य उद्देश्य प्रान्त के रचनात्मक कार्य के लिए योग्य कार्यकर्ताओ को तैयार करना और उनको प्रशिक्षण देना था। श्री माणिक्यलाल वर्मा उसके सचालक थे उन्होने आश्रम की बडी सुन्दर व्यवस्था की और रचनात्मक कार्य के लिए युवको को प्रशिक्षित करने लगे। प्रत्येक प्रशिक्षण प्राप्त करनेवाले कार्यकर्ता को इस आश्रम मे दो महीने रहना अनिवार्य था। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को खादी पहनना, सूत कातना तथा गाधी साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक था। वे लोग गांव के गदे मुहल्लो मे सफाई करते, मल मूत्र की सफाई करते, झाडू लगाते, मिट्टी खोदते और अपना सब काम स्वय करते थे।

अब आश्रम खोला गया तो सबको सलाह से वर्मा जी ने अपने नाम से नारेली मे जमीन ली थी एक वर्ष उपरान्त वहां कार्यकर्ताओ के लिए पक्के मकान भी बनवा लिए। आश्रम का कार्य मुख्यत. हरिजन सेवा से आरभ हुआ परन्तु वर्मा जी जैसे प्रगतिशील व्यक्ति को केवल मात्र हरिजन सेवा कार्य सतोषप्रद नही था। एक घटना ऐसी हुई कि जिससे वर्मा जी ने इस कार्य से अपने को हटा लेने का निश्चय कर लिया। घटना इस प्रकार थी—

एक दिन रेगर मुहल्ले मे एक कुत्ता मर गया। रेगरो ने उसे रात भर नहीं उठाया, मरा पडा रहने दिया। वे इस बात की प्रतीक्षा करते रहे कि जब आश्रम के हरिजन कार्यकर्ता (नए भंगी) आवेगे तब वे उसे उठायेंगे। प्रात काल वर्मा जी से रेगरो ने उस मरे हुए कुत्ते को उठाने को कहा। वर्मा जी का अन्तर उनके इस अशोभनीय कार्य से रोष और घृणा से भर गया। उन्हें यह देख कर गहरा रोष हुआ कि हम तो इन लोगो की सेवा करते हैं परन्तु वे इतने परावलम्बी होगए हैं कि

स्वयं अपने मुहल्ले की सफाई भी नहीं करना चाहते। हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम उनकी सफाई करें। यों भी क्रान्तिकारी वर्मा जी को केवल हरिजन सेवाकार्य से संतोष नहीं था। इस घटना ने उनके मन को अत्यन्त खिन्न कर दिया। उस मरे हुए कुत्ते को तो उन्होंने उठा लिया परन्तु उन्होंने इस कार्य को समाप्त करने का निश्चय कर लिया। वे हरिजन सेवाकार्य को छोड़ कर अजमेर मेरवाड़ा में अन्य रचनात्मक कार्य करने के उद्देश्य से क्षेत्र चुनने के लिए निकल पड़े। वे लगातार अजमेर मेरवाड़ा में कार्यक्षेत्र की खोज मे कई दिन इधर उधर घूमे। परन्तु उन्हे यह देखकर आश्चर्य और खेद हुआ कि अजमेर मेरवाड़ा कांग्रेसी नेता यह नही चाहते थे कि श्री वर्माजी अजमेर मेरवाड़ा मे बैठें। वे वर्मा जी की किसानो में बैठकर उनका सगठन करने की अद्भुत शक्ति से परिचित थे। उनको भय था कि यदि वे अजमेर मेरवाड़ा मे जम गए तो उनके रचनात्मक कार्य से उनका राजनैतिक प्रभाव बढ़ेगा अस्तु वर्मा जी को अजमेर मेरवाड़ा में कार्य करने के लिए वहां के कांग्रेसियो से कोई सहयोग नही मिला। वे कोटा गए परन्तु वहा का वातावरण भी उन्होंने अनुकूल नही पाया; अन्त मे वर्मा जी डूंगरपुर गए।

डूंगरपुर के भीलों में :

डूंगरपुर में समाज सेवा मे रुचि लेने तथा सार्वजनिक कार्य करने के एक मात्र साधन और स्रोत श्री भोगीलाल पांडिया थे। डूंगरपुर के हाई स्कूल मे अध्यापक थे। जो कुछ डूंगरपुर में सेवाकार्य होता था उसमे उनका योगदान रहता था। महारावल भी उन पर भरोसा रखते थे। वहा जो हरिजन कार्य हो रहा था उसमे भी उनका सहयोग था। वे हरिजन कार्यकर्ताओ तथा महारावल के बीच की कड़ी थे। अतएव वर्मा जी श्री पड्या जी से मिले। उन दिनो पड्या जी के पैर मे 'नारू' * (बाला) निकला हुआ था। वर्मा जी रातभर उनके मकान पर रहे और भावी कार्यक्रम के संबध में उन्होने चर्चा की। वर्मा जी भीलो मे सेवा कार्य करना चाहते थे डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा जो वागड के नाम से प्रसिद्ध हैं भीलक्षेत्र है। उस क्षेत्र की अधिकाश जनसख्या पचहत्तर से नब्बे प्रतिशत भील थी इस कारण वर्मा जी इस क्षेत्र मे बैठकर भीलसेवाकार्य करना चाहते थे। पंड्या जी ने वर्मा जी को सलाह दी कि यदि वे भीलो में सेवा कार्य करना चाहते हैं तो उन्हे डूंगरपुर महारावल वर्तमान श्री लक्ष्मणसिंह से बात कर लेनी चाहिए और उनसे सलाह लेनी चाहिए परन्तु वर्मा जी को महारावल से परामर्श करने की बात कुछ जंची नही। महारावल ने हरिजन उत्थान के कार्य की अनुमति दे दी थी वह उनकी इच्छा और सद्भावना के साथ डूंगरपुर क्षेत्र मे किया जा रहा था। हरिजन सेवाकार्य से महारावल को कोई खतरा या भय नहीं था वरन उस कार्य की ओर उदार दृष्टिकोण

* नारु (बाला) एक प्रकार का कीड़ा जो जल में होता है और मनुष्य जब उस जल को पी लेता है तो कई महीनों के उपरान्त वह शरीर के किसी भी भाग से निकलता है उसके निकलने में बहुत कष्ट होता है।

रखने से उन्हें अनायास ही प्रगतिशील शासक होने का यश प्राप्त होता था। देशवासियों पर तथा ब्रिटिश सरकार पर भी उनका अच्छा प्रभाव पडता था परन्तु भीलो का उत्थान महारावल के निरकुश शासन के लिए खतरा बन सकता था। वह हरिजन-सेवा कार्य जैसा निर्दोष तथा राज्य के लिए खतरे से खाली नही था।

जिस राज्य की तीन चौथाई से अधिक जनसख्या भील हो वहा भीलों के उत्थान के कार्य करने का अर्थ होता उन्हे शिक्षित बनाना उनकी गिरी हुई आर्थिक दशा को ऊंचा उठाना, उनके लिए कुटीर उद्योग चलना, खेती तथा जगल पर आधारित उद्योगो के लिए राज्य से सुविधा प्राप्त करना, उनकी ऋणग्रस्तता को दूर करना आदि। अवश्य ही यदि भील जाग पडते, उनमे जागृति उत्पन्न हो जाती तो वह राज्य के लिए एक सिर दर्द बन सकते थे। अस्तु वर्मा जी के मन मे पड्या जी की सलाह नही बैठी। उन्होने सोचा कि यदि वे महारावल से मिले और भील सेवा कार्य के लिए उनसे अनुमति चाही तो सभवत उनको अनुमति न मिले और फिर उनको भील सेवाकार्य करने का विचार ही छोड देना पडे। वर्मा जी का मन यह कहता था कि महारावल भील सेवा कार्य को कभी भी पसद नही करेगे अस्तु उन्होने महारावल से न मिलने का निश्चय किया। अतएव प्रात:काल होते ही वर्मा जी पड्याजी के मकान से चल दिए।

भीलों का अपमानजनक व्यवहार :

जब वर्मा जी ने नारेली आश्रम के हरिजन कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्य को छोडा तो श्री शोभालाल गुप्त और उनका एकमत था। उन्हे भी केवल हरिजन कार्य से सतोष नही था। वे वर्मा जी से पहले ही डूगरपुर से २५ मील दूर सागवाडा नामक स्थान पर आ चुके थे। शोभालालजी गुप्त, बाबा लक्ष्मणदासजी के साथ सागवाडा मे हरिजन आश्रम चलाते थे। आश्रम मे एक भी हरिजन बालक नही था। तीन भील लडके थे जो सागवाडा के समीप ही भीमदडी गाव के थे। यद्यपि वे उस आश्रम मे रहते थे, शोभालालजी तथा बाबा लक्ष्मणदासजी उन्हे पढाते थे, परन्तु वे लड़के उन दोनो से अछूतों जैसा व्यवहार करते थे। बात यह थी कि उन बालको को यह ज्ञात हो गया था कि यह लोग हरिजनो के साथ मिलते जुलते है उन्हे छूते है, उनके द्वारा लाया हुआ जल और भोजन कर लेते हूँ अतएव वे भील बालक उन्हे भी भगी के समान ही समझते थे। वे भील बालक अपना भोजन अलग पकाते थे। अपने चूल्हे और चौके के पास श्री शोभालाल गुप्त और बाबा लक्ष्मणदास जी को आने भी नही देते। वे भील बालक शोभालाल जी तथा बाबा जी को रोटिया देते तो दूर से उनके हाथों मे छोड देते जैसा कि ऊची जाति के लोग हरिजनो के साथ करते हैं। आश्रम के कार्यकर्ता तथा अन्य आश्रमवासी जिस कुएं से पानी लाते थे उस मुहल्ले के लोग भी उनसे अत्यन्त लज्जाजनक दुर्व्यवहार करते थे। जब सब सब अन्य मुहल्लेवाले कुये से पानी भर लेते तब कही आश्रमवासी उससे पानी भरते थे। आश्रमवासी कुयें पर तभी चढ सकते थे कि जब सभी मुहल्लेवाले पानी भर कर चले जावे।

बाबा लक्ष्मणदास जी तथा श्री शोभालाल जी गुप्त का विचार यह था कि

कालान्तर मे उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा और उनका हृदय परिवर्तित हो जावेगा। वे इस बात की आशा करते थे कि वे कुछ समय के उपरान्त इन अधयिश्वासो और रुढ़ियो को छोड देगे।

वर्मा जी ने यह तो निश्चय कर ही लिया था कि उन्हे भीलो में कार्य करना है क्योकि भीलो के प्रति उनको गहरा मोह था। सघन वनो से आच्छादित पर्वतीय प्रदेश मे जहां कि गमनागमन के साधनो का नितान्त अभाव था अलग अलग पहाडो पर भील पाल वसी हुई थी। भीलो मे कुछ जन्मजात गुण थे। वे अत्यन्त परिश्रमी, साहसी और वीर होते हैं परन्तु शताब्दियो के अनवरत शोषण तथा आर्थिक दैन्यता ने उनमें अनेक कुरीतियो को जन्म दे दिया था। कन्या विक्रय की प्रथा भीलो मे सर्वत्र पाई जाती थी। निर्धन भील के पास धन प्राप्त करने के लिए मूल्यवान वस्तु तो रहती नही थी वह अपनी पुत्री को ही वेच कर धन प्राप्त करने लगा। इसका एक भयकर परिणाम यह हुआ कि अनमेल तथा वृद्ध विवाह होने लगे। एक स्वस्थ समान आयु के युवक के पास वधू को खरीदने के योग्य धनराशि नही हो सकती थी अतएव अधिक आयु के पुरुष बहुत कम आयु की लड़कियो से विवाह करते थे। उसका अवश्यम्भावी परिणाम होता कि भील युवतियां वहुधा अपने प्रेमियो के साथ भाग जाती। भील की असीम निर्धनता के कारण वह ऋणग्रस्त वन जाता था विशेषकर विवाह के समय वधू का मूल्य चुकाने के के लिए तो उसको ऋण लेना ही पडता था। वह केवल ऋणी ही नही वन जाता था वरन एक प्रकार से अपने साहूकार का दास ही वन जाता था, वह अपने श्रम को गिरवी रख देता। शोषित और पीड़ित भील को जिसका जीवन असीम निर्धनता मे व्यतीत होता था उसके मनोरंजन के साधन और अवसर प्राय. नही मिलते थे। भील क्षेत्र में महुआ बहुतायत से उत्पन्न होता था और शराव बनाने की सुविधा थी अतएव भील मद्यपान का अभ्यस्त हो गया। सभ्य जगत से बहुत दूर शिक्षा के नितान्त अभाव मे यदि भील रूढिवादी और अन्धविश्वासी वन गया तो इसमें आश्चर्य की कौनसी बात थी।

वर्मा जी ने भीलो का वारीकी से अध्ययन किया, उनके जन्मजात गुणो ने उन्हे आकर्षित कर लिया कि वे भीलो मे ही बैठेगे और उनकी सेवा करेगे।

यह सब होते हुए भी उस नीति को स्वीकार करने के पक्ष मे वे नही थे जो श्री शोभालाल गुप्त तथा बाबा वहा अपना रहे थे।

वर्मा जी ने पहली रात को आश्रम मे भील वालको द्वारा आश्रम के कार्यकर्ताओ के प्रति जो अपमानजनक व्यवहार किया उसका दृश्य देखा। उनका मन क्षोभ से भर गया वे उसे सहन नही कर सके। वर्मा जी ने रात्रि को श्री शोभालालजी तथा बाबा जी से विचार विनिमय किया। उन्होंने अपना दृढ निश्चय प्रकट कर दिया। मै भीलो मे बैठूंगा और भीलो में ही सेवा कार्य करूँगा परन्तु मेरे कार्य करने की पद्धति और नीति मेरी अपनी होगी। आपके हृदय परिवर्तन के प्रयोग की दीर्घकालीन प्रतीक्षा नही कर सकूगा। वर्मा जी की यह मान्यता थी कि अपने को अस्पृश्यो जैसी स्थिति मे

रखकर हम भीलो के उन कुसंस्कारों को और बढावा देंगे, उनके उन कुसंस्कारों को तथा अन्ध विश्वासो को दृढ करेगे । अतएव आवश्यकता इस बात की है कि उनको एक बार झकझोर दिया जावे और उन्हे इन अंध-विश्वासो और रुढियों को छोड़ने पर विवश किया जावे । जिस प्रकार फोड़ा बहुत खराब हो जाने पर इस बात का भय रहता है कि उसका विष समस्त शरीर मे फैल न जावे अतएव आपरेशन के द्वारा उसको काट कर निकाल देना आवश्यक हो जाता है उसी प्रकार भीलो के अन्दर जो यह कुसंस्कार तथा अंधविश्वास जहर की तरह फैला हुआ है वह साधारण उपचार से दूर नही होगा। यदि हम लोग उनके प्रति इसी प्रकार अपमानजनक व्यवहार सहते रहे तो उनके यह कुसंस्कार दृढ होते जावेंगे । अस्तु रात को वर्मा जी ने निश्चय कर लिया कि भीलो मे काम करने की नीति को बदलना होगा ।

प्रात.काल हुआ वर्मा जी उठे और भील छात्रो को बुलाकर उनसे स्पष्ट शब्दों मे कहा कि आज से यदि तुम हम लोगो के हाथ का बनाया हुआ भोजन करते हो तो यहा रहो अन्यथा यहा से चले जावो । भील छात्र आश्रम छोड़ कर चले गये । साथियो ने वर्मा जी को अपनी नीति मे परिवर्तन करने का उपदेश दिया परन्तु वर्मा जी अडिग रहे उन्होंने किसी की भी बात नही सुनी । उन्होने कहा कि उनके अपमानजनक व्यवहार को सहनकर अपने को अस्पृश्यो जैसा बनाकर हम उन्हे ऊँचा नही उठा सकते । उन्हें शिक्षा देने वालो और उनके उत्थान का कार्य करने वालो के प्रति यदि उनकी आदर भावना नही बन सकी तो यह आशा करना व्यर्थ है कि वे अपनी सेवाकार्य करनेवालों की बात को सुनगे और स्वीकार करेंगे । अस्तु आश्रम के साथियो के आग्रह तथा सुझाव की तनिक भी परवाह न कर वर्मा जी अडिग बने रहे और भील सेवाकार्य की अपनी नीति का ही आग्रह रखा ।

दूसरे ही दिन अर्थात १० अगस्त १९३४ को वर्मा जी भीलो के समीपवर्ती गाव भीमदड़ी में गए । वे भील छात्र उसी गाव के थे । भीमदड़ी के भीलो को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि तुम अपने बच्चो को आश्रम मे भेज दो । एक वर्ष में मैं यहा बैठकर भीलो मे इतनी जागृति उत्पन्न कर दूगा कि १० अगस्त १९३५ को हजारो भील हमारे हाथ का भोजन करने आवेगे, और उनके सैकड़ो बच्चे हमारे पास रहने के लिए आवेगे शिक्षा प्राप्त करेंगे, उद्योग धन्धे सीखेगे, मनुष्य बनेंगे, उस समय स्थानाभाव के कारण हम तुम्हारे बच्चो को तुम चाहोगे फिर भी प्रवेश दे नही सकेंगे । उस समय तुम्हे पश्चाताप होगा कि तुम्हारे समीप होते हुए भी आश्रम तुम्हारे बच्चो को अपने यहां नही रखता । ऊंच नीच का भेद स्वार्थी लोगो और तुम्हारे शोषको ने उत्पन्न कर दिया है । मनुष्य ऊँचा और नीचा अपने विचारो और कर्मो से होता है । तुम्हे भी उच्च वर्ग के लोग नीचा मान कर तुम्हारे साथ खानपान का सम्बन्ध नही रखते । होना तो यह चाहिए कि तुम इस अपमानजनक परंपरा को समाप्त कर दो जो मनुष्य मनुष्य मे भेद करना सिखाती है पर तुम हो जो उसको स्वयं अपना कर उसकी जड़े मजबूत बना रहे हो । वर्मा जी मे ग्रामीण और पिछड़ी जातियो के लोगो का विश्वास प्राप्त करने की

अद्भुत क्षमता थी वे उनकी ही भाषा मे उनसे बात करते, उनके मनोगत भावों को जानकर उनकी शकाओं का समाधान करते, और उनके साथ इस प्रकार घुलमिल जाते मानो वे उनमे से ही एक हैं। यह क्षमता लेखक को किसी अन्य रचनात्मक कार्य करने वाले मे दिखलाई नही दी। वर्मा जी द्वारा भीलो से बातचीत करने का परिणाम यह निकला कि भीलो की समझ मे बात आ गई और उन्होने सहर्ष अपने बच्चो को उनके सुपुर्द कर दिया। वर्मा जी ने भीलो के अधविश्वास के गढ़ मे अपनी तेजस्वी नीति से पहली दरार कर दी यह उनकी विजय थी।

भील बालक तो उन्हे मिल गये अब प्रश्न यह था कि आश्रम कहा स्थापित किया जावे। सागवाडा बहुत बड़ा कस्बा था वहां अधिकाश जनसख्या सवर्णों की थी फिर वर्मा जी की मान्यता थी कि भीलो मे सेवाकार्य भीलक्षेत्र मे बैठकर भीलो के वातावरण मे ही किया जावे। नगर मे उन्हे रखने से जो उनके नैसर्गिक जन्मजात गुण हैं वे समाप्त हो जावेगे और वे नगरो मे प्रचलित बुराइयो की ओर झुक जावेगे। अस्तु उन्होने सागवाडा से दस मील दूर सघन वनो से भरे हुए और पहाडो की श्रेणियो की उपत्यका में बसी हुई भीलो की पालों के मध्य खड़लाई पाल को चुना और वहां अपना आश्रम स्थापित किया।

खड़लाई आश्रम :

वर्मा जी ने सर्व प्रथम भील बच्चों को पढाने के लिए आश्रम मे पाठशाला स्थापित की क्योंकि उनका मानना था कि भीलो का उत्थान तभी होगा कि जब बच्चों मे नए संस्कार उत्पन्न किए जा सके और उन्हे शिक्षा दी जावे। जो रुढिग्रस्त और अधविश्वास मे ग्रस्त प्रौढ और वृद्ध है उनमे इतना परिवर्तन लाया जा सकता है कि वे अपने कुसस्कारो और रुढियो को छोड दे परन्तु उनके अतर के विश्वासो मे परिवर्तन लाना कठिन होगा। वह तो केवल शिक्षा के द्वारा ही लाया जा सकता है अतएव उन्होने सर्व प्रथम आश्रम मे पाठशाला स्थापित की और भील बच्चो को पढाने लगे।

आरभ मे पन्द्रह भील बालक पाठशाला मे पढ़ने आए। भीलो के लिए यह बड़े कौतूहल की बात थी। बच्चो के माता-पिता तथा अभिभावक पाठशाला मे बच्चो को पढ़ते देखने आते थे। वर्मा जी बच्चों को अक्षर ज्ञान करा रहे थे। वृद्ध भील आश्रम के कार्यकर्त्ताओ के हरिजन सेवाकार्य से पहले ही सशंकित थे, उनका समस्त कार्य कलाप और जीवनयापन ही उन्हे आश्चर्य मे डाल देनेवाला लगता था। फिर अभी तक जिन शहरी लोगो से उनका सम्बन्ध पड़ा था वे सब के सब उनका शोषण करने वाले थे अतएव उनको यह विश्वास ही नही होता था कि श्वेत वस्त्रधारी लोग वास्तव मे उनके हितैषी है और उनके हितवर्धन के लिए वहा धूनी जमाकर बैठे है। वे इस सारे अनोखे व्यापार को शका और कौतूहल की दृष्टि से देखते थे।

हां तो वर्मा जी भील बालको को हिन्दी का अक्षर ज्ञान करा रहे थे। उस समय भील बालक 'ए' 'ऐ' 'ओ' 'औ' अक्षरो के उच्चारण का अभ्यास कर रहे थे। वे वृद्ध भील जो कौतूहलवश वहां खड़े थे भड़क गए। उन्होने अन्य भीलो से जाकर

कहा कि अरे यह लोग तो छोरो (लडको) को छोरियो (लड़कियो) की तरह बोलना सिखाते हैं। बात यह थी कि वागडी भाषा (वागड़ अर्थात् डूगरपुर वासवाडा क्षेत्र की बोली) मे 'ए ऐ' का अर्थ होता है ऐमा अथात् मा को पुकारना और उत्तर मे ओ ओ' का अर्थ होता है "हां बेटा आ रही हू।" भीलो मे यो ही आश्रम के प्रति कौतूहल भरी आशका थी उन्होने कहा कि हमे ऐसी पढाई नही करानी जिसमे लडके लडकियों की तरह बोलना सीखे। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होने अपने बच्चो को पाठशाला से उठा लिया। पन्द्रह छात्रो मे से बारह छात्र भाग गए। केवल तीन छात्र जो अधिक मेधावी थे और जिनके अभिभावको का वर्माजी पर इतने दिनों मे ही गहरा विश्वास जम गया था पाठशाला मे शेप रह गए। वर्माजी इस घटना से निराश नही हुए। वे जानते थे कि अज्ञानवश वे बालक अभी चले गए है कुछ दिनो बाद वे वापस आ जावेगे। अतएव वर्मा जी ने उन बालको को वापस लाने का प्रयत्न न करके उन शेष तीन भील छात्रो पर अपना सारा समय और शक्ति लगाई। उन भील छात्रो को पढाने के अतिरिक्त उन्होने भीलो की दुर्दशा का चित्र एक कविता मे भीलो की भाषा मे ही खीचा और तीनो भील छात्रो को उस गीत को गाना सिखाया। वर्मा जी ने भीलक्षेत्र मे भी सगीत के द्वारा प्रचार को अपनी कला का खूब उपयोग किया। उस गाने की प्रथम पक्ति थी :—

"भाई मनख जमारो रामे आल्योरे,
पोतानी करणी थी चौपा थई गया।"

अर्थात् ऐ भाइयो ईश्वर ने तुम्हे मनुष्य जन्म दिया मानव की जिंदगी दी परन्तु तुम अपने ही कर्मो से पशु बन गए हो।

कविता बहुत लम्बी थी उसमे भीलो मे जो प्रचलित कुरीतिया, रुढि संस्कार तथा अधविश्वास प्रचलित थे उनका चित्र तो खीचा ही गया था उनकी आर्थिक दैन्यता और साहूकारो तथा राज्य द्वारा उनके आर्थिक शोषण का भी चित्रण था और अत मे उनसे यह कहा गया था कि मद्यपान, कन्या विक्रय, आदि कुरीतियो को तो छोड़ो ही पर यदि चाहते हो कि तुम लोग भी मनुष्यो जैसा जीवन व्यतीत करो तो अपने लड़को को पढ़ावो।

भीलो मे मृतकभोज बहुत बड़े होते थे जब कोई भील मर जाता तो बीस पालो के हजारो भीलो को भोज दिया जाता। जहा भी कोई मृत्युभोज होता वर्मा जी अपने उन शिष्यों को लेकर पहुँचते और भीलो की दुर्दशा सम्बन्धी अपने उस गीत को गवाकर उन एकत्रित भीलो को सुनवाते।

वर्मा जी की यह युक्ति आशातीत रूप से सफल हुई। मृत्युभोज मे एकत्रित हजारो भील जब भील बालको के मधुर कण्ठ से भीलो की भाषा मे भीलो की दुर्दशा की वह कहानी सुनते तो आत्मविभोर हो उठते और अपनी कुरीतियो और अधविश्वासो पर पुन. सोचने के लिए विवश हो जाते।

वर्मा जी के इस सगीत द्वारा प्रचारकार्य का परिणाम यह हुआ कि आश्रम

की पाठशाला के प्रति जो अज्ञानवश भीलो मे भ्रम फैल गया था दूर हो गया और भील बच्चे क्रमश पाठशाला मे आने लगे। तीन मास के अल्पकाल मे पाठशाला मे लगभग डेढ सौ भील बालक नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त करने लगे। पन्द्रह बालको से बढ़कर भील छात्रो की सख्या १५० हो गई।

यही नही भील अपने बालको को आश्रम की पाठशाला मे अध्ययन के लिए भेजने लगे, वे स्वय भी दूर दूर से चलकर आश्रम मे आते और वर्मा जी से बात करते। दूर दूर के गावो से आनेवाले भील जब वर्मा जी से मिलते तो पूछते कि आपको हमारी दयनीय दशा का पता कैसे चला जो सगीत मे सुनाई जाती है। वर्मा जी उन्हे बतलाते कि हम लोग तुम्हारी सेवा करने के लिए आए हुए है तुम मे बहुत से जन्मजात गुण है केवल यह कुरीतियां तुम मे घुस आई है जिनके कारण तुम्हारी ऐसी दुर्दशा हो रही है, और तुम्हारा शोषण होता है। यदि तुम इन्हे छोड़ दो और जैसा हम कहे वैसा करो तो तुम्हारी यह दैन्यता दूर हो सकती है। अब भीलो मे वर्मा जी के प्रति विश्वास और आस्था उत्पन्न होने लगी वे उन्हे परम हितैषी और पूजनीय समझने लगे।

जब श्रीमान महारावल को यह ज्ञात हुआ कि खड़लाई की पाल पर जो भील आश्रम वर्मा जी ने स्थापित किया है उसके प्रति उस क्षेत्र के भीलो का विश्वास और श्रद्धा उत्पन्न हो गई है तो उन्होने उस क्षेत्र के गिरदावर को भीलो के पास भेजा। गिरदावर ने भीलो को बहुत समझाया कि तुम इस आश्रम को तोड़ दो, ये आश्रम वाले तुम्हे भ्रष्ट कर देगे। यो गिरदावर का भील क्षेत्र तथा गावो मे बहुत अधिक प्रभाव होता है परन्तु अब तो भील वर्मा जी को पहचान चुके थे अतएव गिरदावर की बातो का उन पर तनिक भी प्रभाव नही पडा। वे टस से मस नही हुए। बात यह थी कि राज्य रचनात्मक कार्य को राजाज्ञा से तो बन्द करना नही चाहता था उससे राज्य की अपकीर्ति होती परन्तु साथ ही राज्य इस कार्य से सशक था अतएव उसने गिरदावर के द्वारा भीलो को भड़काने का प्रयत्न किया जिससे आश्रम टूट जावे परन्तु वर्मा जी ने इतने दिनो मे ही भीलो के हृदयो को जीत लिया था अतएव वे अडिग रहे। आश्रम के प्रति उनमे आदर की भावना उत्पन्न हो गई थी। अतएव राज्य का भील-आश्रम को समाप्त कर देने का प्रयत्न असफल हो गया।

रात्रिभर भीगते रहे ·

तब तक श्रीमती नारायणी देवी बच्चो सहित अजमेर से खडलाई पहुच गई थी। वर्मा जी के परिवार के लिए कोई मकान तो वहा था नही कुछ पेडो के नीचे डेरा जमाया। भीलो ने निश्चय किया था कि उनके परिवार के लिए मकान वे स्वय बनावेगे। वर्मा जी ने खडलाई मे जब भील सेवाकार्य आरभ किया तो यह आग्रह रखा था कि भील स्वय कार्यकर्ताओ के लिए न्यूनतम साधन और सुविधाए उपलब्ध करे। अस्तु भीलो ने वर्मा परिवार के लिए मकान (झोपडा) बना देने का वचन दिया था। परन्तु आलस्यवश उन्होने शीघ्र मकान नही बनाया वे भूल गए कि वर्षा सर पर आगई है। एक रात वर्षा आगई वर्मा जी और उनका परिवार नीम के पेड़ो के खलिहान मे

पड़े भीगते रहे। केवल वर्मा जी श्रीमती नारायणी देवी जी ही नही वरन सभी बच्चे भी थे। वर्षा हो रही थी सबके सब भीग रहे थे और कुछ थोड़ा बहुत गृहस्थी का सामान था वह भी भीग रहा था। वर्मा जी तथा उनके परिवार की भगवान मानों परीक्षा ले रहा था कि उनमे भीलो की सेवा करने के लिए आवश्यक कष्ट सहिष्णुता तथा धैर्य है या नही। जबकि उस सघन वन से और हिंसक पशुओ से भरे हुए पर्वतीय प्रदेश मे वर्मा परिवार भीग रहा था तो समीपवर्ती पहाड़ी पर रहनेवाला बील-जी भील आया और उसने वर्मा जी से अपने मकान मे चलने के लिए कहा परन्तु वर्मा जी ने उसके यहां जाना अस्वीकार कर दिया। वर्मा जी ने बील-जी भील के यहा जाना इस कारण कारण अस्वीकार कर दिया जिसमे भीलो को अपनी भूल का भान हो जावे और उनमें जो आलस्य के कारण उत्तरदायित्व को निवाहने के गुण की कमी है वह दूर हो। वे अनुभव करे कि जो लोग उनकी सेवा के लिए खप रहे है उनके प्रति उनका भी कुछ कर्तव्य है।

प्रात काल का प्रकाश अभी नही फैला था अधेरा उस समस्त वनप्रदेश को अपनी काली चादर मे ढके हुए था। चार और पाच बजे के बीच का समय था कि जहा वर्मा जी तथा उनके परिवार के सभी लोग पेड़ों के नीचे बैठे थे सौ भील आकर आकर इकट्ठे हो गए। बात यह थी कि वर्षा बन्द होते ही बील-जी भील ने जाकर भील-पाल के भीलो से रात्रि में वर्मा जी के परिवार के लोगो के तथा उनके सामान के भीगने की सूचना दे दी थी।

जब वे लगभग एक सौ भील एकत्रित हुए तो पूछने लगे 'बाबजी पलली गया" अर्थात भीग गये। प्रात काल का प्रकाश फूटते ही उन्होने जातीय ढोल बजाया। ढोल बजने ही उस भीलपाल की सभी दूर दूर स्थित टेकरियो से भील आकर एकत्रित हो गए। सभी ने जुटकर वर्मा जी के परिवार के लिए रात्रि पडने से पूर्व एक दिन मे मकान बनाकर खडा कर दिया। एक थोड़ा ऊँचा मिट्टी का चबूतरा बनाकर उसकी मिट्टी की दीवारे खडी कर दी और उसको छा दिया। रात्रि पड़ने से पूर्व वर्मा जी का मकान (मिट्टी की झोपड़ा) बन कर तैयार हो गया।

वर्मा जी ने खडलाई मे यह नियम आगे भी रखा कि कार्यकर्ताओ के लिए आवास, स्कूल, छात्रावास, कताई पिजाईगृह, जिस भी कार्य के लिए मकान की आवश्यकता होती थी स्वय भील उस मकान को आश्रम के लिए बनाकर देते थे। वर्मा जी इस बात में विश्वास करते थे कि जिन भीलो मे वे सेवा कार्य करने बैठे है उन्हे भी उन लोगो के प्रति तथा उस कार्य के प्रति स्नेह ममता और लगाव होना चाहिए। नही तो वे उसके महत्व को नही समझ सकेगे, और भिक्षुक जैसी मनोवृत्ति उत्पन्न हो जावेगी। ऐसी दशा मे जो सेवाकार्य उनमे बैठकर किया जावेगा वह उनको छूयेगा नही वे उसे हृदय से अपना नही सकेगे। उस कार्य के प्रति अपनापन, स्नेह और ममता उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक था कि वे उसके लिए जो भी त्याग कर सके साधन जुटा सकें अवश्य जुटाये। फिर वर्मा जी कोई साधनसम्पन्न व्यक्ति तो थे नहीं और न उस समय तक उन्हे बाहरी कोई सहायता ही प्राप्त हुई थी अस्तु उन भीलो से ही आवश्यक साधन और

सुविधाएँ प्राप्त करना आवश्यक था।

बागड़ सेवा मंदिर :

अब वर्मा जी के कार्य का क्षेत्र बढ़ने लगा। वर्मा जी ने एक संस्था को जन्म दिया और उसकी स्थापना की। उसका नाम उन्होने 'बागड़ सेवामदिर' रखा। उस संस्था के द्वारा वे बागड़ (डूगरपुर बासवाडा के प्रदेश को बागड़ कहते हैं) की सेवा का कार्य करना चाहते थे।

वर्मा जी ने अपने अपने कार्य के लिए खड़लाई भील पाल को चुना था। यह भीलपाल अनेको भीलपालो के बीच में स्थित थी चारो ओर पर्वतश्रेणियां थीं और देवदारु के सघन वन। इन्ही पर्वत श्रेणियो मे भील पाले स्थित थी। प्रत्येक पाल में सौ से तीन सौ घर होते थे परन्तु भील कभी वस्ती बना कर तो रहते नही हैं वे अलग अलग टेकरी (छोटी पहाडी) पर अपना झोपड़ा अलग बना कर रहते हैं अस्तु प्रत्येक पाल में सो दो सौ टेकरियो पर भीलो के झोपड़े थे। खड़लाई की पाल मे ३०० घर थे जो तीन सौ टेकरियो पर स्थित थे। वर्माजी ने एक टेकरी पर अपना आश्रम स्थापित किया था। उस आश्रम का वर्णन सुनिए।

आश्रम :

एक टेकरी (छोटी पहाड़ी) की चोटी को काट कर लगभग छः या सात बीघा भूमि को समतल कर लिया गया था। अवश्य ही चोटी को काट कर समतल करने में भीलो का श्रम लगा था। पहाडी की चोटी पर इस विशाल समतल चबूतरे पर भीलों की सहायता से एक पाठशाला भवन, वाचनालय, दवाखाना, सुथारी शिक्षण शाला (बढई गीरी सिखाने की शाला) कपास के ओटने और पीजने की शाला, सूत कताई तथा खादी बुनाई घर, वस्तु रगाई घर, भीलो और किसानों से बातचीत करने का चौक और नृत्य घर था। कुए खोदने का औजारघर, बीजघर, गोशाला और घासघर, शौचालय आदि मकान बनवाए गए। इन मकानो को बनवाने मे कोई बाहरी सहायता नही ली गई। भीलो ने ही श्रम दिया और जगल की लकड़ी तथा पत्तों का उपयोग किया गया। स्वावलम्बन का ऐसा सुन्दर उदाहरण सम्भवत. कही भी नही मिल सकता।

पाठशाला भवन को लताओ से घेर दिया गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो पाठशाला के चारो ओर और ऊपर लताए ही लताए हो। वह एक विशाल लताकुंज जैसा प्रतीत होता था जिसमे बैठकर वर्माजी तथा उनके सहायक कार्यकर्ता दिन मे भील बालको को पढाया करते थे। भीलो की कताई के उद्योग तथा कपास ओटने और पीजने की शिक्षा दी जाती थी। यही नही कपास की खेती करने की भी शिक्षा दी जाती थी और कपास का बीज बाटा जाता था। भील स्त्रियो को सूत कातने की शिक्षा दी जाती थी। साधारण लकड़ी की वस्तुए बनाने की शिक्षा, सुथारीशाला बढईगिरी मे दी जाती थी। पशुपालन इत्यादि की भी जानकारी कराई जाती थी।

को युवक तथा प्रौढों की शालाएं लगती थीं। अक्षर ज्ञान के साथ उन्हें स्नान करना, शरीर की स्वच्छता आदि की भी शिक्षा दी जाती थी।

भील खेती पशुपालन तथा रहनसहन सभी मे पिछडे हुए थे। खाद को सुखा कर नष्ट कर देते थे। वर्मा जी ने अपने कार्यकर्ताओ के द्वारा गोबर को गड्हे में दाब कर खाद बनाने का प्रचार किया। पशुओ की देखभाल भी भील ठीक से नही करते थे। पशुओ को अपने रहने के मकान मे ही बाधते थे। आश्रम के कार्यकर्ताओ ने उन्हे पशुओ को आदमियो के रहने के घरो मे न बांध कर दूर रखने तथा उनको ठीक से खिलाने पिलाने की शिक्षा दी। जहा तक खेती का प्रश्न था भील केवल वर्षा पर ही निर्भर रहता था इस कारण वर्ष मे केवल एक फसल मक्का अथवा कूरवट्ठी आदि मोटे अनाज की ही पैदावार करता था। वर्मा जी ने भीलों को कुए खोदकर गेहूँ, कपास, तिलहन, आदि मूल्यवान फसलें उत्पन्न करने की प्रेरणा दी। कुएं खोदने आदि के लिए औजार आश्रम से दिए जाते थे और श्रम भील स्वय करते थे। इस प्रकार उस क्षेत्र में पाच सौ से अधिक कुएं खोदे गए।

शराबबन्दी आन्दोलन :

जब वर्मा जी ने देखा कि अब भीलों का विश्वास उन्हें प्राप्त हो गया है तो उन्होंने शराबबन्दी आन्दोलन चलाया। जहा भी भील जातीय भोज इत्यादि के अवसर पर एकत्रित होते वर्मा जी अपने बनाए शराब विरोधी गीतो के द्वारा उसके विरुद्ध प्रचार करवाते। अन्तत. उन्होने पालो की भील पंचायत से यह निश्चय करवा दिया कि शराब बन्द की जावे। क्योंकि भीलो की पचायत बहुत सजीव दृढ सामाजिक संगठन था। उन पालो मे शराबबन्दी हो गई।

दापा और सागड़ी :

भीलों में कन्या विक्रय की भयंकर प्रथा थी। वर ऋणी हो जाता था और जीवन भर आर्थिक दास बना रहता था। अपने साहूकार के यहा केवल रोटी कपड़े पर सेवा करता रहता था और क्योंकि उसके पास इतना रुपया कभी जमा नही होता था कि महाजन का कर्ज चुका सके। वह आजीवन 'सागड़ी' दास के रूप मे महाजन की मजदूरी करता रहता था। वर्मा जी ने पंचायतो के द्वारा इस प्रथा को भी बद करवाया।

कार्यकर्ताओं का जीवन :

वर्मा जी स्वयं और अपने सहयोगी कार्यकताओ से आश्रम की सेवा भावना के अनुरूप ही अपना जीवन रखने का आग्रह रखते थे। वे जिस किसी भी कार्यकर्ता को अपने साथ सेवाकार्य करने को बुलाते थे तो उसको स्पष्ट बतला देते थे कि उसे वहां कष्टो का जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। लेखक यहा उस पत्र को उद्धृत करने का लोभ सवरण नही कर सकता जो उन्होने खादी कार्यकर्ता श्री हेमराज जी को लिखा था। पत्र इस प्रकार था—

प्रिय भाई हेमराज—वन्दे.

आपने पांच वर्ष पूज्य महात्मा गांधी के आश्रम मे रहकर खादी बी० ए० कर लिया है। धन्यवाद। अब आप मेरे पास चले आवे। हरिजनो और भीलो में काम करना है।

आने जाने के खर्च और यहां भोजन के अलावा कुछ नही है।

आपका
माणिक्यलाल वर्मा

कठिन साधना :

वर्मा जी ने स्वयं अपने संस्मरण में एक स्थान पर लिखा है कि कार्यकर्ताओं को बुलाकर मैंने जगह जगह गांवो (भील पालो) में बिठाया। हमने उस समय छात्रालय के बजाए स्कूल (पाठशालाए) ही स्थापित की। भील मकान इत्यादि तो श्रम से बना देते थे परन्तु मासिक चदा या सहायता कठिनाई से ही प्राप्त होती थी। (वर्मा जी का लक्ष्य था कि सेवाकार्य जहां तक हो सके स्वावलंबी बने) परन्तु भील इतने निर्धन थे कि उनसे कुछ सहायता मिल नही सकती थी उनके पास थोड़ी सी पहाड़ी भूमि खेती की थी वे अपनी उदरपूर्ति ही कठिनाई से कर सकते थे। अधिकाश भील कर्जदार थे अतएव श्रम के अतिरिक्त उनसे और अधिक सहायता मिलना सभव नही था।

"मुझे एक बात याद है जब केवल एक सौ रुपया सहायता आई। हमारे कार्यकर्ता बारह थे और उनके परिवार के सदस्य मिलकर उन्चास थे। सब को प्रति सदस्य दो रुपये देकर बचत से सस्था का दफ्तर चलाया"

एक स्मरणीय घटना :

यह २७ जून १९३७ की बात है। खडलाई पाल के भील आश्रम में सागवाड़ा से वर्मा जी से मिलने चार मेहमान आगए। उस दिन घर मे दो सेर आटे से अधिक था नही, वर्मा जी ने आश्रम में यह नियम बना दिया था कि कोई आश्रमवासी कोई चीज न तो उधार लेगा और न उधार दूकानदार से खरीदेगा। श्रीमती नारायणीदेवी क्या करें घर में उस समय ग्यारह व्यक्ति पहले से ही खाने वाले मौजूद थे चार मेहमान और आगए पंद्रह व्यक्तियो के लिए यथेष्ट आटा नही था। अतएव श्रीमती नारायणीदेवी ने खादी कार्यकर्ता श्री हेमराज को साथ लिया। वे दोनो थानाभाई भील के कुएं पर गए। उसके खेत मे से खुखुरडी * के नरम नरम पत्ते चुने। उन्हे धोकर और उबाल कर पीस कर आटे के साथ गूद दिया और उसकी रोटियां बनाई। जब सब लोग भोजन करने बैठे वर्मा जी ने हेमराज जी से कहा हेमराज जी नारायणी देवी को बुलावो यह हरी हरी रोटियां बहुत स्वादिष्ट लग रही हैं उन्हें कैसे बनाया है। स्नेहलता सत्यवती, सुशीला और सुमित्रा पुत्रियो ने भी वर्मा जी की बात का समर्थन किया कि रोटियां बहुत स्वादिष्ट बनी हैं। नारायणीदेवी जी आई हसकर बोली कि आटे की कमी होने

---

* खुरखंडी एक प्रकार की जंगली घास

आरंभ में जहा वर्माजी ने अपना आश्रम स्थापित किया था वहा आसपास कोई कुआं नही था। स्नान करने और पीने का जल तीन चार मील की दूरी पर एक कुआ था वहा से लाना पडता था। प्रात.काल होते ही आश्रमवासी शौचादि के लिए जगल मे चले जाते और वहा से कुए पर जाकर स्नान इत्यादि से निवृत हो जल भरकर सर पर मटका रख कर लाते थे।

श्रीमती नारायणी देवी कुये से जल भर मटका सर पर रख आधी दूर लाती वर्मा जी वहा उनसे मटका ले लेते, वे फिर कुये पर दूसरा मटका भरने के लिए चली जाती जब तक वे दूसरे मटके को भरकर आधे मार्ग मे पहुँचती वर्माजी घडे का पानी बर्तनो मे भर कर खाली मटका लेकर उनसे आधे रास्ते मे मिल जाते और भरा मटका ले जाते। एक वर्ष तक यही क्रम चलता रहा परन्तु इसी बीच धीरे धीरे आश्रम की पहाडी की तलहटी मे वर्मा जी ने कुआ खुदवाना आरंभ कर दिया था। भील श्रम करते। पक्का कुआ बन जाने पर जल का कष्ट नही रहा और समीप ही एक स्नानगृह भी बना दिया गया। परन्तु कुयें से टेकरी पर स्थित आश्रम मे पानी ले जाने का श्रम तो करना ही पडता था।

वर्माजी ने केवल खड़लाई पाल मे सेवाकार्य ही को सीमित नहीं रखा। खड़लाई के अतिरिक्त ग्यारह मील पला मे उन्होने भीलसेवा कार्य को फैलाया। ग्यारह भील पालो मे ग्यारह पाठशालाए स्थापित की जहा भील बालको को शिक्षा दी जाती थी। उन ग्यारह भील पालो मे कपास की खेती को प्रारभ किया गया। कपास को ओटना पीजना तथा सूत कातना सिखलाया गया। भील अभी तक केवल मक्का उत्पन्न करते थे। उन्हे गेहूँ, कपास, तिलहन उत्पन्न करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। भील स्त्रियो को कपास ओटना पीजना और सूत कातना सिखलाया गया। चर्खे बनाने के लिए लकडी जगल से उपलब्ध हो जाती थी।

सामाजिक सुधार कार्य :

वर्मा जी ने केवल शिक्षण और खादी के कार्य से ही सतोष नही किया। भीलो मे प्रचलित कुरीतियो से उन्हे सघर्ष करना था। भीलो मे शराब पीने तथा कन्या विक्रय की भयकर कुरीतिया प्रचलित थी। वर्मा जी ने उनके विरुद्ध प्रबल सघर्ष छेड दिया। वे रात्रि को भील पालो मे जाते। स्त्री पुरुषो की पहले से सूचना रहती वे एकत्रित हो जाते। वर्मा जी के गीतो को गाया जाता, वर्मा जी उनकी भाषा मे ही उनको समझाते और उनसे शपथ लेते। वर्माजी ने देखा कि भील हनुमान की मूर्ति के सामने पाडे की बलि चढाते है। उन्होने भीलों को उसे बद कर देने के लिए राजी कर लिया। वर्माजी की यह अभूतपूर्व सामाजिक सफलता थी। क्रमश भील वर्माजी से अपनी सारी समस्याओ के बारे मे परामर्श लेने लग गये। वर्माजी उनकी समस्याओ का समाधान करते।

महाजनों से छुटकारा

डूगरपुर राज्य मे भूमि का लगान ऐसे कुसमय मे वसूल किया जाता था कि उस समय भीलो तथा किसानो की फसल तैयार नही हो पाती थी जिसे वेच कर वे लगान चुका सकते। अतएव उन्हे कमर तोड ऊँचे सूद पर महाजनो तथा साहूकारो से ऋण लेना पडता था। जब फसल तैयार होती और उनके पास पैसा आता तो वे शराब आदि अन्य सामाजिक कृत्यो मे उसको व्यय कर देते। इसका परिणाम यह होता कि वे महाजन के दास बन जाते और महाजन उनका शोषण करता। राज्य मे उन महाजनो और साहूकारो का प्रभाव था उनके वन्धु वाधव ही राज्य कर्मचारी तथा अधिकारी थे। अस्तु लगान वसूली का समय जानवूझ कर ऐसा रखा गया था कि किसान को लगान चुकाने के लिए ऋण लेना पडे।

वर्मा जी ने इस समस्या को हल करने की एक युक्ति निकाली। श्री भोगीलाल पांडया के द्वारा उन्होने डूगरपुर के कतिपय सभ्रान्त व्यक्तियो से जिनकी इस प्रकार के सेवा कार्य मे रुचि थी कुछ रुपया उधार लिया और भीलो को लगान चुकाने के लिए बांट दिया। फसल तैयार हो जाने पर उसको वेच कर उचित सूद के साथ यह रकम भर दी जाती। वर्मा जी की इस युक्ति से महाजनो को वहुत गहरी क्षति हुई और वहुत से भील उनके चगुल से छूट गए।

पाठशालाओ में भील वालको को अक्षरज्ञान तो कराया ही जाता परन्तु साथ ही शराव पीने, कन्या विक्रय आदि कुरीतियो के विरुद्ध भी उन्हे वतलाया जाता। खेती की पैदावार को किस प्रकार वढाया जावे इसकी शिक्षा दी जाती और प्रत्येक भील परिवार को आम और महुआ के फलदार वृक्ष लगाने को कहा जाता। वर्मा जी ने देख लिया था कि उस क्षेत्र मे आम और महुआ सरलता से फलता है अतएव इन फलो के वृक्षो को लगाने का उन्होने खूव प्रचार किया।

कहने का अर्थ यह कि खड़लाई पाल के 'वागड सेवामदिर आश्रम केन्द्र' से वर्मा जी ने उस विशाल भील क्षेत्र मे फैले हुए अज्ञान, दैन्यता, अधविश्वास तथा सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध युद्ध छेड दिया।

इस कार्य के लिए उन्हे सहायको की आवश्यकता पडी तो उन्होने खोज खोज कर अपने सहयोगी जुटाये। अजमेर से उन्होने दुर्गाप्रसाद चौधरी (वर्तमान संपादक तथा व्यवस्थापक नवज्योति तथा नवज्योति हैराल्ड) को वुला लिया। उनके अतिरिक्त श्री कल्याणजी विद्यार्थी (भूतपूर्व मत्री राजस्थान विमुक्तजाति सेवकसघ), श्री स्वर्गीय गौरीशकर जी उपाध्याय, श्री चदू भाई जी, श्री रेवाशकर जी, खादी के कार्य के जानकार श्री हेमराज जी, श्री मदनसिंह, श्री भैरुलाल और श्री गोवर्धनलाल मुख्य थे।

सभी कार्यकर्ताओ के लिए स्वच्छ और हवादार झोपडे आश्रम मे भीलो से बनवाए गए जिससे कि वे भी उस प्रकार के स्वच्छ तथा हवादार मकान अपने रहने के बनावें।

पाठशालाओ मे दिन मे भील लड़के लडकियो को पढाया जाता था और रात्रि

से खुरखडी के पत्ते उबाल कर आटे मे गूथ कर रोटिया बनाई हैं।

खडलाई में भीलसेवा कार्य का जैसा ऊचा मानदड वर्मा जी ने स्थापित किया था उसकी एक झलक लेखक को भी तब देखने को मिली थी जब वह वर्मा जी से उन्ही दिनो मिलने के लिए खड़लाई आया था। कभी कभी लेखक यह सोचने लगता है कि आज से पचास सौ वर्ष के उपरान्त सभवत कोई व्यक्ति यह विश्वास ही नही कर सकेगा कि ऐसा भी कोई व्यक्ति था जिसने अपरिग्रह की चरम सीमा को स्वीकार कर अपने परिवार और सहयोगियो को देश की सबसे अधिक निर्धन उपेक्षित और पीड़ित आदिवासी समुदाय की सेवा मे इस प्रकार झोक दिया था। देशसेवा की वह पावन गंगा आज अवसरवादिता, भ्रष्टाचार, और पदलोलुपता के दूषित जल से भरे गन्दे नालो के मिलने से दूषित हो गई।

हृदय विदारक शोकपूर्ण दुर्घटना :

वर्मा जी ने जिस साधना और त्यागमय जीवन को स्वीकार कर भीलसेवा मे अपने तथा अपने परिवार को झोक दिया था नियति केवल उससे ही संतुष्ट नही थी। वह उनकी अधिक कठोर और क्रूर परीक्षा करना चाहती थी। वर्माजी का छोटा पुत्र सुरेन्द्र वर्मा जो केवल तीन वर्ष का बालक था अस्वस्थ हो गया। जब उसकी दशा चिन्ताजनक होगई तो श्रीमती नारायणी देवी को लेकर वर्मा जी सागवाड़ा आए। सागवाडा मे भी चिकित्सा की कोई सतोषजनक व्यवस्था नही थी। साधन और सुविधाओ का नितान्त अभाव था। सुरेन्द्र वर्मा की दशा गिरती ही गई। जानकार व्यक्तियों ने बतलाया कि यदि ब्राडी (शराब) मिल जावे तो बच्चे का जीवन बच सकता है। वर्मा जी घर घर गए पर ब्राडी नही मिल सकी। बालक की दशा बिगड़ रही थी अन्त समय निकट आ रहा था। श्रीमती नारायणी देवी का मातृ हृदय अत्यन्त व्यथित और शोकग्रस्त हो उठा। वर्मा जी समझ गए कि नारायणी देवी यह आघात सहन नही कर सकेंगी। उन्होने चन्दू भाई से कहा सुरेन्द्र को नारायणी देवी की गोद से तुम ले लो। चन्दू भाई ने बालक को गोद मे ले लिया। उपचार औषधि के अभाव मे बालक सुरेन्द्र चिरनिद्रा मे सो गया। नारायणी देवी पर वज्रप्रहार हुआ वे शोकातुर हो उठी। वर्मा जी के मन पर भी गहरा आघात लगा परन्तु जीवन तो दूसरो की सेवा करने के लिए अर्पण था। खडलाई का कष्टमय कठोर साधनामय और जोखिम से भरा जीवन उनको पुनः बुला रहा था। सेवा के उस यज्ञ मे उन्होने अपने पुत्र की आहुति दे दी फिर भी वे विचलित नही हुए। साधारण व्यक्ति सम्भवत पुन ऐसे क्षेत्र मै वापस न जाना चाहता। परन्तु वर्माजी एक दूसरी ही धातु के बने थे। यह दुखद घटना उन्हे अपने पथ से विचलित न कर सकी, वे श्रीमती नारायणी देवी के साथ खड़लाई आगए और भीलो के सेवाकार्य मे अपने शोक को भुलाने का प्रयत्न करने लगे।

खड़लाई की ओर देश का ध्यान आकर्षित हुआ :

अभी तक खड़लाई में तो सेवाकार्य ही हो रहा था परन्तु धीरे धीरे इस

अनोखे और तेजस्वी सेवायज्ञ की सुरभि फैलने लगी और लोगों का ध्यान उस ओर गया। खड़लाई के आश्रम को देखने के लिए श्री लक्ष्मीदास भाई सेठ भील सेवामंडल गुजरात के उपाध्यक्ष खड़लाई आए। सागवाडा से उन्होने बैलगाडी की और बेलगाड़ी द्वारा वे खडलाई पहुचे। वहा वे रहे उस सेवा के महान यज्ञ को भली भाति देखा। बारीकी से उसकी छानबीन की। उन्होने जो कुछ देखा वे आश्चर्य चकित रह गए। इतने अल्प साधनो से ऐसा बडा काम हो सकता है यह उनकी कल्पना के बाहर की बात थी, और न उन्होने वैसा कार्य कही देखा ही था। उन्होने जाकर स्वर्गीय ठक्कर बापा को रिपोर्ट दी। उनकी रिपोर्ट को सुन कर भीलो के प्रति असीम ममता रखनेवाले ठक्कर बापा रुक नही सके वे गुजरात से चलकर खडलाई आए और वर्माजी के भील सेवाकार्य को देखा। ठक्कर बापा खडलाई मे जो कार्य हो रहा था उससे इतने अधिक संतुष्ट हुए कि उन्होने भीलकार्य को भी हरिजन सेवाकार्य मानकर हरिजन सेवकसंघ से उदार सहायता दिलवाई। वे खडलाई के कार्य से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने सेठ घनश्यामदास बिरला से भी उसकी प्रशसा की और श्री बिरला ने भी इस कार्य के लिए सहायता प्रदान की। बाद को जब श्री भागीरथ कानोडिया ने भी रामनारायण चौधरी के कलकत्ता जाने पर इस कार्य के लिए सहायता भिजवाई थी। टक्कर बापा तो खड़लाई के कार्य से इतने अधिक सतुष्ट और प्रभावित हुए कि तीन बार खडलाई जैसे दुर्गम स्थान पर यात्रा का कष्ट भुगत कर पहुँचे। इसमे तनिक भी सदेह नहीं कि खडलाई मे जो भील सेवा कार्य वर्मांजी के सक्रिय और तेजवान नेतृत्व मे हुआ वह कई अर्थो मे अनोखा और भव्य था।

वर्मा जी की पीड़ा :

जहा भीलसेवा कार्य का फल आ रहा था। भीलो मे खडलाई आश्रम के कार्यकर्ताओ के प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया था। उनकी आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियो मे सुधार के चिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे थे, भीलो मे शिक्षा की अभिरुचि बढ रही थी, वहा वर्माजी को पग पग पर राज्य द्वारा भीलो का शोपण और उत्पीडन अखरता था। उनका मन पीडा से भर जाता था। राज्य आदिवासियो का बुरी तरह शोषण करता था बेगार कर का स्वरूप वहा और भी अधिक भयकर और क्रूर था। खेत में हल चलाते हुए किसान को पुलिस का पाच रुपए पाने वाला सिपाही बेगार मे अपने सामान को उठाकर ले चलने के लिए बुलाता तो उसे बैलो को जुना खेत मे छोडकर आना पडता था उसकी स्त्री को बेगार मे जाना पडता। मजदूरी देना तो दूर रहा उसको खाना भी नही दिया जाता था। कभी कभी भीलो को पीटा भी जाता था। वर्माजी का शौर्य जाग उठा। वे सोचने लगे कि क्या यह उचित है कि रचनात्मक कार्यकर्ता इस अत्याचार को चुपचाप देखते रहे और भीलो को इस अत्याचार सहन न करने की प्रेरणा भी न दे।

डूंगरपुर राज्य मे उस समय आश्रम द्वारा बारह केन्द्र चल रहे थे। वर्माजी ने सभी रचनात्मक कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओ को बुलाया। उनसे परामर्श किया

कि क्या वेगार तथा अन्य अत्याचारों की ओर से रचनात्मक कार्यकर्ताओ का उदासीन रहना उचित है। वर्मा जी की मान्यता थी कि भीलो को अत्याचारो को न सहन करने की प्रेरणा देना रचनात्मक कार्यकर्ताओ का कर्तव्य होना चाहिए। अन्य कार्यकर्ता भी वर्मा जी से सहमत हो गये। अब वर्मा जी तथा उनके सहयोगी कार्यकर्ताओ ने भीलो को सलाह देना शुरू कर दी कि उन्हे वेगार देने से साफ इन्कार कर देना चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि उन क्षेत्रो मे जहा वर्मा जी रचनात्मक कार्य कर रहे थे वहां के भील वेगार देने से इन्कार करने लगे। डूगरपुर राज्य सरकार चौकन्नी हुई। महारावल समझ गए कि यह वर्मा जी के रचनात्मक कार्य का प्रभाव है अतएव उन्होने वर्माजी से कहलाया कि वे डूगरपुर से बाहर चले जावे। कहा तो यह गया कि भारत सरकार का विदेशी विभाग इस कार्य को सन्देह की दृष्टि से देखता है परन्तु वास्तविकता यह थी राज्य वर्माजी के कार्य से चौकन्ना हो गया था। वह नही चाहता था कि वे वहा रहे। अब वर्माजी के सामने यह प्रश्न था कि या तो संघर्ष किया जावे अथवा क्षेत्र को छोड दिया जावे। बात यह थी कि जब वर्माजी डूगरपुर मे बैठे थे तो वहां केवल रचनात्मक कार्य करने की दृष्टि से ही बैठे थे कोई राजनीतिक सघर्ष का लक्ष्य उनके सामने नही था। वहा रचनात्मक कार्य करते समय भीलो पर होनेवाले अत्याचारो को देख कर उनकी पीडितो के प्रति सहज सहानुभूति जागृत हो गई और उन्हे यह विचार उद्वेलित करने लगा कि रचनात्मक कार्यकर्त्ता उनके उत्पीडन की ओर से उदासीन रहे यह उचित नही है। परन्तु रचनात्मक कार्यकर्ता की वेडी उनके पैरो में थी, उन्हे उसकी मर्यादाओ का भान था। जिन मित्रो का सहयोग और सहानुभूति वर्माजी को प्राप्त था जो उनके कार्य मे सहायक थे उनमे से कुछ महारावल के विश्वासभाजन भी थे। उनका भी यही परामर्श हुआ कि वर्मा जी को क्षेत्र छोड देना चाहिए। वर्मा जी संघर्ष खडा करके उन मित्रो तथा रचनात्मक कार्यकताओ के लिए कठिनाई उपस्थित नही करना चाहते थे। सबसे बडा कारण यह था कि ऐसा करने से जो कार्य भीलो में हो रहा था उसको धक्का लगता। अतएव डूगरपुर का भीलसेवाकार्य श्री भोगीलाल पाडया को सौंप कर वर्माजी ने डूगरपुर छोड दिया।

श्री भोगीलाल पाडया यद्यपि उस समय डूगरपुर हाई स्कूल मे अध्यापक थे परन्तु वे सार्वजनिक कार्यो मे रूचि लेते थे और यथाशक्ति सेवाकार्यो में सहयोग देते थे। उन्हे साधारणजन का आदर और विश्वास तो प्राप्त था ही महारावल को भी उनका विश्वास था। अस्तु वर्माजी ने डूगरपुर का कार्य पाडया जी के सुपुर्द कर दिया। इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ कि वह सेवाकार्य समाप्त नही हो गया वह चलता रहा। स्वर्गीय श्री गौरीशकर उपाध्याय, चन्दू भाई जिन्हे वर्माजी ने राजकीय सेवा से त्यागपत्र दिला कर रचनात्मक कार्य मे आकर्षित किया था तथा अन्य कार्यकर्ता जिन्हे वर्माजी ने तैयार किया था वे उसी क्षेत्र मे सेवाकार्य करते रहे। इन तीन वर्षों मे वर्माजी ने जो कार्य आरम्भ किया था वह चलता रहा। आज भी राजस्थान सेवा सघ के तत्वावधान मे वह कार्य चल रहा है। यद्यपि वर्मा जी डूंगरपुर से चले आए

परन्तु उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप कार्यकर्ताओं पर रही और उस क्षेत्र के आदिवासियो पर उनका अमिट प्रभाव रहा। अपने जीवन के अन्तिम दिनो तक उनका वहा के कार्यकर्ताओ से घनिष्ट सम्बन्ध था वे वर्माजी से मार्गदर्शन और प्रेरणा लेते थे। आज जो व गड क्षेत्र के सार्वजनिक जीवन मे विभिन्न दिशाओ मे कार्य करनेवाले कार्यकर्त्ता हैं फिर चाहे वे राजनीतिक क्षेत्र मे काम कर रहे हो अथवा रचनात्मक क्षेत्र मे सक्रिय हो वे सभी वर्माजी के द्वारा अनुप्राणित हुए है। उन्होने वर्माजी से केवल प्रेरणा ही नही सेवा की दीक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

खड़लाई की यात्रा :

लेखक उन दिनो मेवाड छोड कर बरेली कालेज मे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर पद पर कार्य कर रहा था जबकि वर्माजी खड़लाई मे बैठकर भीलो मे कार्य कर रहे थे तो एक बार वर्माजी से मिलने खडलाई आया था परन्तु जबकि वह इस पुस्तक को लिखने के लिए सामग्री एकत्रित कर रहा था तो एक बार पुन स्थान को देखने की इच्छा हुई जहा बैठ कर वर्मा जी ने उस सेवायज्ञ का अनुष्ठान किया था। १५ सितबर १९७० को श्रीमती नारायणी देवी के साथ जब वहा लेखक पहुचा तो एक के बाद दूसरे चित्र उसके सामने आते और ओझल हो जाते। जब लेखक उस स्थान पर पहुंचा जहां वर्मा जी रहते थे आज वहा केवल एक झोपडा भर शेष है तो उसके मन मे यह विचार उठ रहे थे कि कैसा अद्भुत था वह व्यक्ति जो आज से पैंतीस वर्ष पहले हिंसक पशुओ शेर चीतो और देवदार के सघन वनो से भरे हुए गमनागमन के साधनो से सर्वथा शून्य उस बीहड और भयावने स्थान में सेवा की धूनी रमा कर बैठा था। जहा उस दिन भी पहुचने मे हमें कई बार घुटनेघुटने जल मे होकर पैदल चलना पडा था। वहा आज से पैंतीस वर्ष पहले की स्थिति क्या रही होगी आज उसकी कल्पना कर सकना भी सभव नही है। यह देखकर मन को पीडा हुई कि उस स्थान की कोई ठीक देखभाल नही हो रही है। उस क्षेत्र के सरपच साथ थे। श्रीमती नारायणी देवी तथा मैने उनसे कहा कि इस स्मृतिचिह्न की रक्षा करने की व्यवस्था करनी चाहिए। सूर्य अस्ताचल की ओर अग्रसर हो रहा था अंधकार में उस बीहड प्रदेश मे जीप के लिए भी मार्ग सुगम नही था अतएव मन ही मन स्थान को नमस्कार कर चल पडा। क्या ही अच्छा हो कि वहा एक स्तम्भ वर्माजी की स्मृति मे खड़ा किया जा सके।

अध्याय छठा

मेवाड़ प्रजामंडल

जब वर्माजी खडलाई (डूंगरपुर) मे बैठकर भीलो मे सेवाकार्य कर रहे थे तो राजनीतिक कार्य न करने का नैतिक वचन उन्होने स्वीकार कर लिया था। बात यह थी कि जब डूंगरपुर महारावल ने भील सेवाकार्य के लिए अनुमति दी थी तो उन्हें एक प्रकार से यह वचन दे दिया गया था कि कार्यकर्त्ता शुद्ध रचनात्मक कार्य ही करेंगे वे राज्य की राजनीति से दूर रहेगे अतएव डूंगरपुर मे भील सेवाकार्य करते हुए वे राजनीतिक हलचल से दूर रहे। यो भी उस समय डूंगरपुर मे कोई राजनीतिक संगठन अथवा हलचल नही थी।

परन्तु वर्मा जी जैसे क्रातिकारी विचारो के व्यक्ति का अन्तर राज्य के अत्याचारो तथा निरीह प्रजा के शोषण को देखकर पीडा से भर जाता था। जब वे देखते कि अपने खेत मे काम करते हुए किसान को पुलिस अथवा रेवन्यू विभाग के निम्नकोटि के कर्मचारी बेगारो मे पकड ले जाते, उसका खेत आधा जुता पडा रहता, सर्दी और वर्षा मे उस पहाडी और सघन वनो से आच्छादित प्रदेश मे जहा कोई अच्छे मार्ग नही थे बरसाती नालो पर कोई पुल नही थे हिंसक जन्तुओ से भरे प्रदेश मे रात्रि के समय अधनंगा और भूखा ग्रामीण राजकर्मचारी के सामान को सिर पर उठाकर जाता था और तनिक भी सेवाकार्य मे भूल या त्रुटि होने पर उसे ताडना और अपशब्द सुनने को मिलते, निर्धन प्रजा पर करो का भारी बोझ लादा जाता उसके कल्याण के कोई कार्य नही किए जाते तो वर्मा जी का अन्तर रोष से भर जाता परन्तु वे विवश थे उस अन्याय और अत्याचार तथा शोषण का प्रतिकार करने के लिए वे उसे नैतिक वचन के कारण जिसे उन्होने रचनात्मक कार्य के सदर्भ मे स्वीकार कर लिया था कुछ कर सकने मे असमर्थ थे।

उनके अन्तर मे रह रह कर यह विचार उठता कि यह रचनात्मक भील सेवाकार्य ठीक उसी प्रकार है जैसे कि एक अत्यन्त जीर्ण वस्त्र मे जो जगह जगह फट गया है पैबद लगाना उसका कोई स्थायी लाभ नही हो सकता। क्योकि एक स्थान पर पैबद लगा भी दिया तो वस्त्र दूसरी जगह पर फट जावेगा आवश्यकता तो इस बात की है कि वस्त्र को ही बदल दिया जावे। नया वस्त्र तैयार किया जावे। क्रमशः उनके मन

मे यह धारणा दृढ होती जा रही थी कि पिछड़े और निर्धन वर्ग की समस्याएं वास्तव मे तभी हल हो सकती है कि जब राज्य सत्ता मे आमूल परिवर्तन हो, शासन सत्ता प्रजा के हाथ मे आवे। डूगरपुर के भीलो मे सेवाकार्य करते हुए भीलो पर होनेवाले अत्याचारो को देखकर उनके मन को यह विचार उद्वेलित करने लगा कि रचनात्मक कार्यकर्ता को उनके उत्पीडन की ओर से उदास रहना उचित नही है, और उस सबका एक मात्र उपचार यह है कि शासन सत्ता जनता के हाथ मे आनी चाहिए। अतएय प्रत्येक रचनात्मक कार्यकर्ता को जो कि पिछडी मानवता की सेवा कर उनके कल्याण के लिए प्रयत्नशील है उसका कर्तव्य हे कि वह इस बात के लिए प्रयत्नशील हो कि राजनीतिक सघर्ष के द्वारा शासन सत्ता पर जनता का अधिकार हो।

अस्तु जब वर्माजी को अनिच्छापूर्वक महारावल के दबाव के कारण और अपनी नैतिक सीमा क कारण डूगरपुर छोड़ना पड़ा तो उनके सामने यह प्रश्न एक गम्भीर चुनौती के रूप मे खड़ा हो गया। बिजोल्या आन्दोलन का उन्हे अनुभव था। वे जानते थे कि मजदूरो अथवा किसानो को उनके आर्थिक प्रश्नो को लेकर सगठित किया जा सकता है और आवश्यकता हो तो राज्य, जागीरदार अथवा पूजीपति के विरुद्ध सघर्ष भी किया जा सकता है। अवश्य ही इन सघर्षो के द्वारा शोषितो और पीडितो को सर्वसाधारण को अपने आर्थिक हितो को रक्षा के लिए सगठित कर देने से उनमे स्वाभिमान आत्म-विश्वास जागृत हो जाता है, वे अन्याय और अत्याचार को सहन न कर उसके विरुद्ध खडे होते है परन्तु इसमे भी शासन सत्ता को जनता के अधिकार मे नही लाया जा सकता। अन्तत इस प्रकार के सघर्षो का परिणाम भी यही आता है कि उसी शासन सत्ता से समझौता किया जावे जो शोषण और उत्पीडन को जन्म देती है। सत्ताधीश इस प्रकार के सघर्षो के सामने थोडा झुक कर समझौता कर लेते है और शोषितो को कुछ सुविधाए दे देते है परन्तु अनुकूल अवसर आने पर पुनः शोषण की पुनरावृत्ति होती है और पुन. सघर्ष करना पड़ता हे।

अब वर्माजी के मन मे यह विचार दृढ हो गया कि आर्थिक प्रश्नो को लेकर आन्दोलन अथवा सघर्ष करना अथवा सेवाकार्य करने का एक सीमा तक ही लाभ और महत्व है वह समस्या का स्थायी हल नही है। सर्वसाधारण की समस्याओ का स्थायी हल तभी निकल सकता है कि जब सत्ता पर जनता का अधिकार हो। अतएव जनता की सीधे राज्यसत्ता को अपने अधिकार मे लेने के लिए ही सगठित करना चाहिए। अस्तु उन्होने अपनी सारी शक्ति राष्ट्रीय आन्दोलन को तीव्र और सबल बनाने मे लगाने का निश्चय किया। अजमेर मेरवाडा देशी राज्यो के मध्य मे स्थित था। ए जी. जी. अजमेर मे रहता था राजस्थान के समस्त देशी राज्यो का शासन सूत्र वहा से ही सचालित होता था और वह मेवाड़ की सीमा से सटा हुआ था। अतएव वर्माजी ने निश्चय किया कि वे अजमेर मे रहकर राजनीतिक कार्य करेगे और राष्ट्रीय आन्दोलन को तेजवान और प्रभावशाली बनावेगे और उसके द्वारा क्रमश. अन्य राज्यो और विशेषकर मेवाड़ मे उत्तरदायी शासन के लिए जनमत तैयार करेगे। यही कारण था कि

भील सेवा कार्य से मुक्त होने पर वे डूंगरपुर से सीधे अजमेर आए।

अजमेर आकर वर्माजी को गहरी निराशा हुई। जब वे अजमेर के राष्ट्र-कर्मियो से मिले और उन्होने अपने विचार उनके सामने रखे तो उन्हे यह देखकर आश्चर्य और पीड़ा हुई कि स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ताओ ने उनका स्वागत नही किया। वे उनकी ओर से अत्यन्त उदासीन हो गए। आरभ मे वर्माजी इस उदासीनता का कारण नही समझ सके परन्तु बाद को उन्हे उसका कारण ज्ञात हो गया। वे समझ गए कि स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्त्ता उनका वहा रहकर राजनीतिक कार्य करना पसंद नही करेगे। बात यह थी कि १६३५ के उपरान्त ब्रिटिश प्रान्तो में उत्तरदायी शासन स्थापित हो गए थे। प्रान्तो मे काग्रेस सरकारे स्थापित हो चुकी थी। अजमेर मेरवाड़ा के राजनीतिक कार्यकर्ता जानते थे कि आगे पीछे अजमेर मेरवाड़ा में भी शासन सत्ता जनता के प्रतिनिधियो के हाथ मे आनेवाली है अस्तु उनकी दृष्टि निकट भविष्य में आनेवाली शासन सत्ता पर टिकी हुई थी। वे वर्माजी के किसानो मजदूरो तथा पिछड़े वर्गो के विश्वास को सहज ही प्राप्त कर सकने की अदभुत क्षमता और चमत्कारी व्यक्तित्व को जानते थे। वे वर्माजी जैसे प्रभावशाली प्रतिद्वन्दी को अजमेर मेरवाडा मे जमने नही देना चाहते थे। अस्तु वर्माजी को अजमेर मे स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ताओ से केवल उदासीनता ही नही मिली वरन उनको यह भी ज्ञात हो गया कि यदि उन्होने अजमेर मेरवाड़ा में राजनीतिक कार्य करना आरंभ किया तो उन्हे उनके विरोध का भी सामना करना होगा अस्तु उन्होंने अजमेर मे बैठने का विचार छोड़ दिया। मेवाड मे उनके प्रवेश पर निषेध आज्ञा थी अस्तु उन्होने कोटा मे बैठने का विचार किया। इस दृष्टि से परिस्थिति का सिहावलोकन करने के लिए वे कोटा गए परन्तु वहा भी स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ की घोर उदासीनता तथा विरोध ही मिला।

वर्माजी के हृदय मे इस कटु अनुभव के बाद घोर मथन चला। उन्होने सोचा कि अन्य किसी राज्य ब्रिटिश शासित प्रदेश मे बैठना व्यर्थ है। वैसा करने से अपनी शक्ति व्यर्थ के आपसी कार्यकर्ताओ के कलह मे नष्ट हो जावेगी, लक्ष्य और उद्देश्य पीछे छूट जावेगा, अस्तु उन्होने यह निश्चय कर लिया कि बिना राजज्ञा के ही मेवाड़ मे बैठकर कार्य करेगे। परन्तु वे सतर्कता और साधनो से आगे बढना चाहते थे अतएव उन्होने सोचा कि पहले रचनात्मक कार्य के बहाने मेवाड़ मे बैठा जावे और सहयोगियो को इकट्ठा कर तथा जनमत तैयार कर राज्य मे उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर जनता को सगठित किया जावे। अतएव वर्माजी मेवाड के तत्कालीन प्रधान मत्री श्री धर्मनारायण से मिले उन्होने उन्हे रेवेन्यू मिनिस्टर श्री कमलाकर के पास भेज दिया। श्री कमलाकर रेवेन्यू मिनिस्टर ने उनसे कहा कि यदि वे राज्य के तंत्र के द्वारा रचनात्मक कार्य करने को तैयार हो तो राज्य उन्हे सात सौ रुपए का ऊचा वेतन तथा हजारो रुपये का बजट रचनात्मक कार्य के लिए दे सकता है। राज्य वर्माजी को खरीदना चाहता था। मेवाड की सरकार वर्माजी के प्रभाव तथा साधारणजन को सगठित कर उनका विश्वास प्राप्त कर सकने की अपूर्व क्षमता

को जान गई थी। संभवत. मत्रीगण यह भी जानते थे कि अन्तत वर्माजी के रचनात्मक कार्य का परिणाम जनजागरण के रूप मे प्रगट होगा अस्तु यदि वर्माजी को राज्य के तत्र का एक पुर्जा बनाया जा सके तो निकट भविष्य मे राज्य के निरकुश शासन को चुनौती देनेवाला कोई नही है। परन्तु भला जो पीडितो और शोषितो की सेवा करने के लिए अपने जीवन को उत्सर्ग कर चुका था, अ जीवन जिसने देशसेवा की दीक्षा ले ली थी वह राज्य का दलाल कैसे बन सकता था। वर्माजी ने श्री कमलाकर रैवेन्यू मिनिस्टर के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। वास्तव मे यदि देखा जाय तो यह अत्यन्त आकर्षक प्रलोभन था। रचनात्मक कार्य करने का गौरव और यश भी प्राप्त होता और आर्थिक कष्ट भी नही रहता परन्तु जन्मजात क्रान्तिकारी विचारो के पोषक और विद्रोही वर्माजी राज्य के उस जाल मे नही फसे।

अब वर्माजी ने समझ लिया कि राज्य स्वतत्रतापूर्वक रचनात्मक कार्य भी करने देना नही चाहता। राज्य कोई ऐसा कार्य नही करने देगा जिससे जनसाधारण मे राजनीतिक चैतन्य तथा जागरण उत्पन्न होने की सभावना हो। अतएव वर्माजी ने निर्णय कर लिया कि राज्य से सीधी राजनीतिक टक्कर लेनी होगी।

मेवाड प्रजामडल की स्थापना के सबध मे स्वय वर्माजी ने अपने सस्मरण मे लिखा है :—

"डूगरपुर से मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध हटना पडा। मेवाड के अधिकारियो ने जब मुझे रचनात्मक कार्य स्वतत्रापूर्वक नही करने दिया तो अधिकारियो की इस मूर्खता के कारण मुझे निर्णय करना पडा कि मेवाड प्रजामडल कायम किया जावे और इस सामन्तशाही के विरुद्ध जोरदार सघर्ष किया जावे।

इसलिए मै अजमेर चला आया और डूगरपुर सेवासघ से प्राप्त एक साइकिल पर सारे मेवाड का दौरा किया और मेवाड प्रजामडल की हवा पैदा की"

—माणिक्यलाल वर्मा

वर्माजी के पास इतने बडे कार्य के लिए कोई साधन नही थे। उन्हे किसी बडे राजनीतिक नेता का जिसका अखिल भारतीय व्यक्तित्व हो न तो आशीर्वाद ही प्राप्त था और न सहारा ही था जो उन्हे कही से सहायता मिल सकती। उनका किसी सार्वजनिक सस्था से भी सबध नही था जिससे उनको कतिपय सहयोगी कार्यकर्ता मिल सकते। वर्माजी का नाम उस समय राजस्थान के बाहर के अधिकाश लोग नही जानते थे अतएव उनका किसी राष्ट्रीय विचारवाले उद्योगपति से घनिष्ठ परिचय भी नही था जो उन्हे इस कार्य के लिए उससे सहायता मिलती। गाधी विचारधारा के लोग देशी राज्यो मे सघर्ष के अधिक पक्षपाती नही थे। मेवाडी लोग बम्बई, कलकत्ता, मद्रास आदि व्यापारिक और औद्योगिक केन्द्रो मे भी व्यापार आदि नही करते थे जो उनसे कुछ आर्थिक सहायता मिल सकती और उनको मेवाड प्रजामडल के लिए समर्थन मिलता।

किसी भी राजनीतिक सगठन या आन्दोलन को चलाने के लिए तीन बातो की आवश्यकता होती है (१) पत्र तथा प्रचार करने के साधन (२) उत्साही और निष्ठावान

कार्यकर्ताओ की टोली (२) और अर्थ। परन्तु वर्माजी के पास इन तीनो साधनो मे से एक भी साधन उपलब्ध नही थे। वे साधनहीन तथा पूर्ण रूप से एकाकी थे। उनकी स्वय की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। उनके पास स्वय यात्रा करने तथा पत्र व्यवहार करने के लिए भी आर्थिक साधन नही थे। उनके पास कोई कार्यकर्ता अथवा सहायक नही था।

उसी समय जबकि उनका विचारमंथन चल रहा था तो एक हृदयविदारक घटना घटी। वर्माजी का ज्येष्ठ पुत्र जिसकी आयु अठारह वर्ष की थी जो काशी विद्यापीठ मे विद्या अध्ययन कर रहा था और अत्यन्त होनहार था काशी से आया हुआ था उसको बेरी बेरी रोग होगया। वर्माजी के पास चिकित्सा उपचार कराने के साधन भी नही थे। क्योकि उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। उचित चिकित्सा तथा उपचार के अभाव मे उसकी मृत्यु होगई। जो किसी ऊचे और महान उद्देश्य या लक्ष्य के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देते है, भगवान उनकी कठोर परीक्षा लेता है। वर्माजी की यह कठोर परीक्षा थी।

वर्माजी नितान्त एकाकी और साधनहीन व्यक्ति थे, ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु हो चुकी थी। इस दारुण आघात ने हृदय को मर्माहत कर दिया था, श्रीमती नारायणी देवी ने एक शिशु को जन्म दिया था नवजात शिशु केवल पन्द्रह दिन का था। घर की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी, नारायणी देवी जी की देखभाल करनेवाला कोई नही था परन्तु यह सारी कठिनाइया और विपत्तिया वर्माजी को अपने सकल्प से न डिगा सकी।

भारत जैसे महादेश के राष्ट्रीय आन्दोलन के दीर्घकालीन और रोमाचकारी इतिहास मे ऐसे उदाहरण खोजने से भी नही मिलेगे कि जब नितान्त साधनहीन और एकाकी किसी राष्ट्रकर्मी ने ऐसा भयानक दुस्साहस किया हो। नितान्त एकाकी साधन के नाम पर केवल डूगरपुर भील सेवासघ की मागी हुई साइकिल लेकर वर्मा जी मेवाड़ की निरकुश स्वेच्छारी सरकार को चुनौती देने के लिए उसको संघर्ष के लिए ललकारने के लिए निकल पडे। उस समय अनेक राजनीतिक कार्यकर्ताओ ने उनके इस प्रयास को हास्यास्पद और निरर्थक कह कर उसकी उपेक्षा की थी। परन्तु सभवतः वे वर्मा जी के पास अटूट आत्मविश्वास तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए खप जाने की साध रूपी महान शक्ति थी उसको देख नही सके।

लेखक जब वर्माजी की इस जोखिमभरी साइकिल यात्रा के सम्बन्ध मे सोचता है तो उसका ध्यान सहसा श्रीमती नारायणी देवी की ओर जाता है। ज्येष्ठ पुत्र की अकाल मृत्यु की गहरी वेदना लिए नवजात शिशु तथा परिवार के लालन पालन की दुश्चिन्ताओ को मन मे सजोये उस वीर पत्नी ने वर्माजी के उस देशसेवा के उस कठिन किन्तु शुभ सकल्प को तनिक भी कुठित करने का प्रयत्न नही किया। वर्माजी के सामने परिवार की कठिनाइया उपस्थित कर उनके कटकाकीर्ण मार्ग को अवरुद्ध नही किया वरन प्रसन्न मन परिवार की चिन्ता न कर अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्हें

विदा किया। उस वीर पत्नी ने मेवाड़ी पत्नियो की उस परम्परा को सजीव कर दिया जब देश की रक्षा के लिए पत्नी अपने पति को अस्त्रो से सुसज्जित कर आरती उतार कर रणभूमि के लिए विदा करती थी। जब मै नारायणी देवी जी के उस वीर पत्नी के आचरण का ध्यान करता हूँ तो मेरा मन उनके प्रति श्रद्धा से भर जाता है।

तो वर्माजी साइकिल पर सवार होकर मेवाड प्रजामंडल की स्थापना करने के उद्देश्य से मेवाड मे वातावरण उत्पन्न करने के लिए अजमेर से लम्बी यात्रा पर निकल पड़े। अजमेर से चलकर वर्माजी गुलाबपुरा पहुँचे और उस रात्रि को वही रुके। गुलावपुरा मेवाड़ राज्य की मेवाड़ और अजमेर मेरवाडा की सीमा पर प्रसिद्ध कपास की मडी है।

मेवाड़ प्रजामडल को स्थापित करने उसको शक्तिशाली सगठन वनाने का कार्य अत्यन्त कठिन और जोखिम भरा था। वर्मा जी को मेवाड प्रजामडल के लिए धन और जन दोनो ही मुख्यतः मेवाड से ही प्राप्त करने थे। क्योकि मेवाडी वाहर अधिक नही थे, और जो भी मेवाड़ी वाहर थे वे व्यापारी या उद्योगपति नही थे। अस्तु वर्मा जी को प्रजामडल के लिए आर्थिक साधन भी मुख्यत मेवाड़ से ही उपलब्ध करने थे। यही कारण था कि वे पहले गुलावपुरा गए क्योकि यदि वहा के कुछ आढतियो को आकर्षित कर सकते तो प्रजामडल को अर्थ की प्राप्ति हो सकती थी। परन्तु व्यापारी वर्ग राज्य से बहुत अधिक आतङ्कित था इस कारण वे वर्माजी से दूर रहना चाहते थे। वे उनसे कोई सम्वन्ध नही रखना चाहते थे।

परन्तु वर्माजी पराजय स्वीकार करनेवाले नहीं थे। वे व्यक्तिगत रूप से व्यापारियो तथा अन्य व्यक्तियों से मिले। मेवाड प्रजामडल की स्थापना की आवश्यकता क्यो है उन्हे समझाया और अन्त मे वे श्री मथुरालाल काला तथा दो अन्य व्यक्तियो को मेवाड़ प्रजामडल की स्थापना के पक्ष मे तैयार करने मे सफल हो गए। उन्होने वचन दिया कि वे मेवाड़ प्रजामडल की स्थापना होने पर गुलावपुरा मे उसकी शाखा स्थापित कर उसका कार्य करेगे।

गुलावपुरा से वर्माजी की साइकिल का हेडिल शाहपुरा की ओर मुडा। ऊबड़ खाबड़ मार्गो की परवाह न कर लम्बा, फासला तय कर वर्मा जी शाहपुरा पहुँचे वहां उनके अजमेर मेरवाड़ा के सहयोगी श्री रमेशचन्द्र ओझा का मकान था वे उनके घर गए रमेशचन्द ओझा स्वय तो वर्माजी के साथ मेवाड़ प्रजामडल का कार्य करने के लिए तैयार थे परन्तु विना अपने मातापिता की सहमति और आज्ञा के वे उस जोखिम के कार्य मे सम्मिलित नही हो सकते थे। वर्माजी ने उनके मातापिता से प्रजामडल की स्थापना के सवध मे चर्चा की उन्हे वतलाया कि जव तक उत्तरदायी शासन की स्थापना नही हो जाती तब तक सर्वसाधारण के शोषण और उत्पीडन का अन्त नही हो सकता। रमेशचन्द्र ओझा के माता पिता ने साहस के साथ मेवाड प्रजामडल की स्थापना के विचार का स्वागत किया और रमेशचन्द्र ओझा को वर्माजी के साथ कार्य करने की सहर्ष सहमति दे दी। यह उनके साहस तथा उत्कट देश प्रेम का परिचायक

था, क्योंकि उस समय देशी राज्यों में राजनीतिक कार्य करना बहुत जीवट और खतरे का काम था। शाहपुरा मे वर्माजी को श्री लादूराम व्यास सक्रिय सहयोगी के रूप मे और मिल गए। उन्होने भी मेवाड़ प्रजामडल की स्थापना में वर्माजी के साथ कार्य करने का साहसपूर्ण निश्चय किया।

शाहपुरा से वर्माजी ने श्री रमेशचन्द्र ओझा तथा श्री लादूराम व्यास को साथ लिया और वहा से तीनो जहाजपुर की ओर चले। जहाजपुर के रास्ते में वे श्री मोहनलाल पुरोहित के यहा ठहरे उनसे मेवाड प्रजामडल की स्थापना की चर्चा की। उन्होने श्री मोहनलाल पुरोहित का भी मेवाड़ प्रजामडल के लिए समर्थन और सहयोग प्राप्त कर लिया। अब वे जहाजपुर पहुँचे वहा वे श्री मथुराप्रसाद वैद्य से मिले। मथुराप्रसाद वैद्य जहाजपुर के प्रतिष्ठित सेवाभावी सज्जन थे, वर्माजी चाहते थे कि उनका सहयोग प्राप्त किया जावे। जब वर्माजी ने उनसे मेवाड़ प्रजामडल की स्थापना के सबध मे चर्चा की तो उन्होने अत्यन्त उत्साह से उस विचार का स्वागत किया और वर्माजी को वचन दिया कि वे जहाजपुर के क्षेत्र मे मेवाड प्रजामडल के कार्य का उत्तरदायित्व लेने को तैयार है। श्री मथुराप्रसाद जी के रूप मे वर्माजी को एक अत्यन्त कर्मठ और निष्ठावान सहयोगी प्राप्त हो गए। उनके अथक परिश्रम तथा ऊंचे व्यक्तित्व के कारण बाद को मेवाड प्रजामडल का वहा बहुत सबल सगठन खड़ा हो गया। वैद्य मथुराप्रसाद जी अन्त तक सामन्तशाही से जूझते रहे।

मेवाड प्रजामडल की भूमिका तैयार करने के लिए वर्माजी ने जो एकाकी यात्रा आरभ की थी वह अब फल ला रही थी उन्हे सहयोग मिल रहा था और वे देश के लिए सर्वस्व समर्पण कर देश भक्तो का दल बनाने के लिए और अधिक उत्साह से आगे बढे। जहाजपुर से वे भीलवाडा आए। भीलवाड़ा मे उन्होने श्री रामचरण वैद्य को मेवाड प्रजामडल का कार्य करने के लिए दीक्षित किया। श्री रामचरण वैद्य ने भी जब एक बार प्रजामडल के कार्य का भार अपने ऊपर लिया तो जीवन भर वे सामन्तवाद से सघर्ष करते रहे।

मेवाड की जनता के लिए उत्तरदायी शासन प्राप्त करने, सामन्तवाद के शक्तिशाली दुर्ग को ध्वस्त करने और अन्तत भारत से ब्रिटिश साम्राज्य का समूल नाश करने के लिए वर्माजी साइकिल पर सवार मेवाड के ऊबडखाबड कटकाकीर्ण देश मे कठिनाइयो की चिन्ता किए बिना आगे बढे जा रहे थे। कौन जानता था कि वह एकाकी साइकिल सवार जो आज अभावो से ग्रस्त नितान्त साधनहीन है उसकी साइकिल के पहिये की गति के साथ मेवाड की निरीह जनता की दोहरी दासता का अन्त समीप आता जा रहा है, और ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा देशी सामन्तवाद की समाप्ति के दिन समीप आते जा रहे हैं।

भीलवाडा से वर्माजी हमीरगढ गए यहा कुछ उत्साही कार्यकर्त्ताओ को तैयार कर वे आगे बढे और चित्तौरगढ पहुँचे। चित्तौरगढ मे ठहरकर वर्माजी ने मेवाड़ प्रजामडल की स्थापना के विचार पर वहा के सार्वजनिक

कार्यकर्ताओ से चर्चा की और श्री सेवालालजी अग्रवाल तथा श्री खूबचन्द जी को प्रजामडल के कार्य का उत्तरदायित्व लेने को तैयार किया। चित्तौर मे वातावरण अनुकूल बनाकर वर्माजी छोटी सादडी पहुँचे और जब वर्माजी साइकिल से अपनी मेवाड़ यात्रा कर रहे थे तभी उन्होने भीलवाडे से श्रीमती नारायणी देवी जी को अजमेर लिख दिया था कि वे बच्चो को लेकर उदयपुर चली जावे। अस्तु अजमेर से श्रीमती नारायणी देवी भी बच्चो के लेकर उदयपुर पहुच गईं और वे श्री हीरालाल कोठारी के मकान पर ठहर गए।

वर्माजी के परिवार की आर्थिक दशा कितनी शोचनीय थी यह तो इसी से विदित होता है कि श्रीमती नारायणी देवी को अजमेर से उदयपुर जाने के लिए रेल किराया जुटाने के लिए अपने भोजन पकाने के बर्तनो को बेच देना पडा था। जब लेखक उस स्थिति की कल्पना करता है तो सोचता है कि वर्माजी और उनकी सहधर्मिणी मे कितना साहस व शौर्य तथा देशके लिए सर्वस्व त्याग करने की चाह रही होगी कि उस विपन्न अवस्था मे भी अपना दुख और कष्ट भूलकर वे उस अत्यन्त जोखिम भरे मार्ग पर चल पडे जिसमे पग पग पर भयकर खतरा था। काल प्रवाह से आज स्थिति बिल्कुल बदल गई है। आज की पीढी के लोग उस समय देशी राज्यो मे जैसा भयकर आतक था सोच नही सकते किसी पर सदेह हो जाने पर कि वह राज्य की आलोचना करता है उसका सर्वनाश निश्चित था। उसको जैसे भयकर उत्पीडन और अत्याचार का सामना करना पड़ता था उसकी कल्पना करके ही रोमाच हो उठता है। लेखक को इस सबध मे अपने एक शिष्य शिवशकर के पिता श्री के साथ मेवाढ राज्य ने कैसा घोर अत्याचार किया उसकी कथा याद है। राज्य को उन पर सदेह हो गया था कि कानपुर के प्रताप मे मेवाड राज की आलोचनापूर्ण जो कुछ समाचार तथा लेख निकले वे उनके भेजे हुए थे। पुलिस कानपुर तक गई कोई प्रमाण उसे नही मिला और न उनके हाथ का लिखा कोई कागज का टुकडा ही मिला, पर सदेह मे ही उनको गिरफ्तार कर लिया गया। कई वर्षो तक मेवाड के अडमन कुम्भलगढ जेल मे उन्हे बद कर दिया गया और भीषण यातनाये दी गई। देशी राज्यो की जेलो की यातना प्रणाली के सामने नरक की यातनाए भी सुखद प्रतीत होती है। ऐसी भयकर यातनाए वहां दी जाती थी। इस सदर्भ मे जब वर्मा दम्पति के साहस का मूल्याकन करता हूँ तो अनायास ही उनके शौर्य और त्याग की प्रशसा करनी पडती है। अवश्य ही वर्माजी एक जन्मजात विद्रोही तथा क्रान्तिकारी विचारो के योद्धा थे। पथिकजी के सान्निध्य मे उन्होने त्याग और बलिदान का पाठ पढा था। बिजोल्या आन्दोलन की प्रचड अग्नि से तपकर वे निकले थे परन्तु उनकी सहधर्मिणी भी उनसे पीछे नही थी। लेखक तो ऐसा मानता है कि श्रीमती नारायणी देवी का त्याग देशभक्ति और देश के लिए सर्वस्व अर्पण कर देने की भावना वर्माजी के समान ही बलवती थी। उस वीर पत्नी ने कभी भी वर्मा जी के उत्साह, शौय और देशसेवा की भावना को कुठित नही होने दिया और उनके इस सर्वस्व बलिदान के यज्ञ मे अपनी भी आहुति दे दी।

उदयपुर पहुँच कर वर्माजी ने मास्टर बलवन्तसिंह मेहता, श्री हीरालाल कोठारी, श्री भूरेलाल बया, श्री रमेशचन्द्र व्यास, श्री भवानीशकर वैद्य, श्री जमनालाल वैद्य श्री परसराम तथा श्री दयाशकर श्रोत्रिय से मेवाड प्रजामडल की स्थापना के सबध मे विचार-विमर्श किया। प्रजामडल का विधान तैयार किया और उन मित्रो के सहयोग से विधिवत मेवाड प्रजामडल की स्थापना करदी। मास्टर बलवन्तसिंह मेहता के मकान 'साहित्य कुटीर' मे मेवाड प्रजामडल के सस्थापक सदस्य २४ एप्रिल १६३८ को एकत्रित हुए। विधान स्वीकार हुआ। मास्टर बलवन्तसिंह मेहता अध्यक्ष निर्वाचित हुए और कार्यकारिणी का गठन हुआ। श्री बलवन्तसिह मेहता उदयपुर के निष्ठावान सार्वजनिक कार्यकर्ता थे। उनके अध्यक्ष बनने से प्रजामडल को बल मिला। रमेशचन्द्र व्यास का क्रन्तिकारी दल से सम्बन्ध होने के कारण ब्रिटिश सरकार उन्हे खतरनाक व्यक्ति समझती थी उन्हे अजमेर मेरवाड़ा से निष्कासित कर दिया गया था वे भी मेवाड़ में आगए, और तब से ही मेवाड की जनजागृति में उनका प्रशसनीय योग रहा है। श्री हीरालाल कोठारी जैसे गम्भीर निष्ठावान और सच्ची लगनवाले तथा श्री भूरेलाल बया जैसे गाधीवादी कार्यकर्ताओ का सहयोग मेवाड प्रजामडल के लिए अत्यन्त मूल्यवान था।

वर्माजी ने श्री रघुनाथ के मकान पर प्रजामडल का बोर्ड लगाकर मेवाड प्रजामडल का कार्यालय स्थापित कर दिया। मेवाड प्रजामडल की सदस्यता के फार्म तथा विधान को छपवाया गया, और सदस्यता अभियान आरभ कर दिया। मेवाड प्रजामडल की कार्यकारिणी ने श्री वर्माजी को यह भार सौपा कि मेवाड़ प्रजामडल की स्थापना की जानकारी तथा विधान सरकार को सूचनार्थ पहुँचा दे। अतएव वर्माजी तत्कालीन मेवाड राज्य के प्रधानमत्री श्री धर्मनारायण के बगले पर पहुँचे। उस दिन सार्वजनिक अवकाश था। अर्दली ने रौब के साथ कहा प्रधानमत्री आज छुट्टी के दिन नही मिलेगे। वर्माजी ने अर्दली को झिडकते हुए तनिक तेज आवाज मे मेवाडी मे कहा " मै कोई अपने निजी स्वार्थवश यहा नही आया हूँ सार्वजनिक महत्वपूर्ण कार्य से प्रधानमत्री से मिलने आया हूँ " वर्माजी की आवाज श्री धर्मनारायण ने सुनली वे स्वय बाहर आगए। वर्माजी ने प्रधान मन्त्री के हाथो मे मेवाड़ प्रजाम डल के विधान की एक प्रति दे दी। श्री धर्मनारायण मे इतना साहस तो था नहीं कि वे यह कहते कि मेवाड प्रजाम डल की स्थापना क्यो की, उन्होने केवल इतना कहा कि इसे मेवाड पुलिस के इन्सपेक्टर जनरल को दे दीजिए। वर्माजी तुरन्त तत्कालीन इन्सपेक्टर जनरल आफ पुलिस श्री लक्ष्मणसिंह के बगले पर जाकर मेवाड प्रजामन्डल के विधान की एक प्रति उन्हे दे आए। उन्होने भी प्रगट मे उसका कोई विरोध नही किया।

मेवाड प्रजाम डल की स्थापना के समाचार से उदयपुर में अभूतपूर्व उत्साह उत्पन्न हो गया। सर्वसाधारण अभी तक वर्माजी को अधिक जानते नही थे। उन्होने जब सुना कोई माणिक्यलाल वर्मा ने मेवाड़ प्रजामडल की स्थापना की है और वे उत्तरदायी शासन के द्वारा प्रजा का राज्य स्थापित करना चाहते हैं तो उनके

कौतूहल का ठिकाना नही रहा। दूसरे ही दिन से कौतूहलवश मेवाड़ प्रजामडल के सामने भीड़ इकट्ठी होने लगी। वर्माजी और उनके सहयोगी उन लोगो को प्रजामन्डल के उद्देश्यो से अवगत कराते उन्हे विधान की प्रति देते तथा सदस्यता का प्रार्थनापत्र देते। दूसरे दिन से वर्माजी और उनके सहयोगी तथा प्रजामन्डल के कार्यकर्ता बाजार तथा मुहल्लो में घूम घूम कर प्रजामन्डल का जन जन को सदेश देकर उन्हे सदस्य बनाने लगे। वर्माजी जहा जाते उनका स्वागत होता। ऐसा प्रतीत होता कि मानो सर्व-साधारण प्रजामंडल की स्थापना की बाट ही जोह रहे थे। सर्वसाधारण मे प्रजामडल तीन दिन मे ही चर्चा का विषय बन गया। तीन दिनो मे ही प्रजामंडल के लगभग दो हजार सदस्य बन गए। यह समाचार महाराणा श्री भूपालसिंह के पास पहुँचा जब उन्हे मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना के सम्बन्ध मे ज्ञात हुआ तो उन्होने प्रधानमन्त्री श्री धर्मनारायण को बुला भेजा और उनसे पूछा कि क्या उन्होने प्रजामडल के स्थापित किए जाने की स्वीकृति देदी है? श्री धर्मनारायण जी ने स्वीकृति देना अस्वीकार किया और श्री महाराणा जी से कहा कि वर्माजी उनके पास प्रजामडल का विधान देने आए थे तो उन्होने उन्हे इन्सपेक्टर जनरल के पास भेज दिया था।

प्रधान मत्री श्री धर्मनारायण ने पुलिस के द्वारा श्री वर्माजी को बुला भेजा और महाराणा जी से हुई बात का उल्लेख करते हुए उन्हें यह चेतावनी दे दी कि प्रजा-मडल के स्थापित करने की राज्य से नियमानुसार स्वीकृति ली जावे। वर्माजी ने प्रधान मत्री से कहा "मै जो इस समत सांस ले रहा हूँ उसके लिए यदि राज्य से मजूरी लेने की जरूरत नही है तो अपना संगठन बनाने और अपने सामूहिक कल्याण के कार्य करने की जनता की स्वाभाविक स्वतत्रता होनी चाहिए" वास्तव मे उस समय तक जो भी धार्मिक अथवा सामाजिक सगठन मेवाड़ मे कार्य कर रहे थे किसी ने भी राज्य से आज्ञा नही ली थी और न इस प्रकार का कोई कानून है उसका ही किसी को ज्ञान था। इस कारण प्रधानमत्री का पक्ष निर्बल था। वे वर्माजी से बराबर यही कहते रहे कि वे मेवाड प्रजामडल की स्थापना के लिए राज्य सरकार से विधिवत स्वीकृति प्राप्त करें। परन्तु वर्माजी ने इसको स्वीकार नही किया और प्रधानमत्री से यह कहा कि अपने सामूहिक हितो की रक्षा करने तथा सबकी भलाई के कार्य करने के लिए सगठन खडा करने का जनता का जन्मसिद्ध अधिकार है अतएव मेवाड प्रजामडल की स्थापना के लिए वे राज्य से प्रार्थी नही होगे वे वापस चले आए।

वर्माजी को घर आए दो घन्टे भी नही हुए होगे कि पुलिस ने वर्माजी को बुलाकर राज्य का आदेश सुना दिया कि वे मेवाड से निष्कासित किए जाते है वे मेवाड़ छोड दें। पुलिस ने उनसे निष्कासन की आज्ञा पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा तो वर्माजी ने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। उसी क्षण से वर्माजी का मेवाड़ राज्य से नागरिक अधिकारो का सघर्ष छिड गया।

वास्तविकता यह थी कि उस समय तक मेवाड़ राज्य मे ऐसा कानून नही था कि यदि कोई सीमित संगठन या सस्था स्थापित की जावे तो राज्य से आज्ञा ली

जावे। दूसरे ही दिन एक राज्य आज्ञा निकाली गई कि भविष्य मे बिना राज्य आज्ञा प्राप्त किए कोई संस्था या सगठन न किया जावे और जहा तक मेवाड प्रजामडल का संबंध है उसको गैरकानूनी घोषित किया जाता है।

२४ अप्रेल १९३८ रविवार को प्रजामडल की स्थापना हुई और स्टेट गजट मे ११ मई १९३८ को एक राज्य आज्ञा प्रकाशित हुई जिसके अनुसार किसी भी समाचार पत्र के मेवाड़ में आने से रोकने का अधिकार मुहकमाखास को दे दिया गया। साथ ही सर्वसाधारण को उनके नागरिक अधिकारो से वचित करनेवाले ९ साल पहले के गश्तीपत्र को पुन जीवित किया गया जिसके अनुसार बिना अधिकारियो की आज्ञा लिए सभा, मौलूद, कथा, रास धार्मिक समारोह करने, सस्थाए बनाने, और जलूस निकालने पर पावन्दी लगा दी गई और पुलिस को उस राज्य आज्ञा की क्रियान्वित कराने के लिए आवश्यक अधिकार दे दिए गए। मेवाड़ प्रजामडल जो गैरकानूनी घोषित दिया गया। कहने का अर्थ यह कि मेवाड प्रजामडल की स्थापना के पन्द्रह दिन वाद ही उसको गैरकानूनी घोषित कर दिया गया।

श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा प्रजामंडल के अन्य प्रतिनिधि राज्य के मत्रियों से मिले उनसे कहा कि पन्द्रह दिनो मे प्रजामडल ने कौनसा गैरकानूनी काम किया है कि राज्य ने उस पर प्रतिवध लगा दिया। वर्माजी ने मत्री से कहा कि मेवाड प्रजा-मंडल राज्य से सहयोग कर सदभावना उत्पन्न करना चाहता है जिससे मेवाड की उन्नति हो अस्तु उन्होने उस आज्ञा पर पुन विचार करने का आग्रह किया परन्तु मन्त्रियो ने प्रजामडल के इस तर्क पर कोई ध्यान नही दिया। यही नही श्री वर्माजी को मेवाड से निष्कासन की आज्ञा निकाल दी। राज्य की धारणा थी और वह सत्य भी था कि मेवाड प्रजामडल श्री वर्माजी के मस्तिष्क की उपज है और उनके प्रयत्नो और परिश्रम का ही यह फल है अस्तु उनको मेवाड़ से निष्काषित कर देने से प्रजामडल की स्वत: मृत्यु हो जावेगी। इसी कारण उन्होने और किसी पर वार न कर वर्माजी पर ही प्रहार किया।

जब वर्मा जी ने मेवाड प्रजामडल स्थापित किया तो लेखक बरेली कालेज का प्रोफेसर था। वर्माजी की सूचना मिलते ही कि प्रजामडल की स्थापना हो गई है आप शीघ्र आ जावे। उदयपुर के लिए चल पडा। चित्तौड़गढ पर ही उसे मेवाड़ प्रजामडल के गैरकानूनी घोपित हो जाने की सूचना मिल चुकी थी परन्तु वह उदयपुर आया और किस प्रकार वर्माजी ने उसके द्वारा गुप्त रूप से प्रजामडल का समस्त रेकार्ड अजमेर भिजवाया इसका उल्लेख प्रारभ मे ही किया जा चुका है। बात यह थी कि प्रजामडल को स्थापित हुए केवल पन्द्रह दिन ही हुए थे उसका भली भाति संगठन नही हुआ था, जिला शाखाए स्थापित नही हुई थी। राज्य से इतनी जल्दी संघर्ष छिड जावेगा इसकी किसी को कल्पना तक नही थी। वर्माजी तुरन्त सघर्ष छेड़ना चाहते थे अस्तु उन्होने यही उचित समझा कि प्रजामडल के कार्यालय को अजमेर मे स्थापित किया जावे। अस्तु उन्होने लेखक के द्वारा प्रजामन्डल के समस्त कागजपत्र अजमेर भिजवा दिए।

प्रजामण्डल के गैरकानूनी घोषित होते ही उदयपुर में आतंक छा गया। जैसे ही लोगो को यह ज्ञात हुआ कि प्रजामण्डल गैरकानूनी घोषित हो गया वे वर्माजी से बचने लगे। उनसे मिलना जुलना बन्द कर दिया। वर्माजी ने सोचा कि यदि तुरन्त ही गिरफ्तार हो जाऊंगा तो उसका परिणाम यह होगा कि सत्याग्रह भी सफल नही होगा और प्रजामण्डल ठप्प हो जावेगा। अधिकारियो का कुचक्र सफल हो जावेगा। स्थिति यह थी कि प्रजामण्डल की स्थापना हुए इतना कम समय हुआ था कि सत्याग्रह की व्यूह रचना ही नही हो पाई थी। सत्याग्रह का सचालन कैसे होगा, कौन जेल में जावेंगे, बाहर रह कर कौन काम करेंगे, सहायता कहां से मिलेगी, कुछ भी तय नही था। क्योकि किसी को इस बात की कल्पना तक नही थी कि इतने शीघ्र राज्य का प्रहार होगा। अस्तु वर्माजी ने निश्चय किया कि अभी गिरफ्तार न होकर बाहर निकल जाया जावे और महात्माजी से मिलकर सत्याग्रह की व्यूह रचना की जावे, और तब सत्याग्रह प्रारंभ किया जावे।

मेवाड प्रजामण्डल के गैर-कानूनी घोषित होते ही मेवाड़ प्रजामण्डल की नव गठित कार्यकारिणी की आवश्यक बैठक बुलाई गई। कार्यकारिणी ने प्रजामण्डल के समस्त अधिकार वर्माजी को एक प्रस्ताव द्वारा सौंप कर उन्हे अधिनायक (डिक्टेटर) बना दिया और कार्यकारिणी को भग कर दिया गया।

जब वैज्ञानिक दृष्टि से प्रजामण्डल का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व वर्माजी के ऊपर आ गया। वर्माजी आगे के कार्यक्रम के सबन्ध मे सोचविचार कर ही रहे थे और इस उधेडबुन मे थे कि सत्याग्रह की व्यूह रचना किस प्रकार की जावे कि उदयपुर के पुलिस इस्पैक्टर उनके पास आए और उनसे पूछा कि उन्होने क्या तय किया है। वे मेवाड छोड़कर बाहर जावेंगे अथवा नही। वर्माजी ने इन्सपैक्टर जनरल से कहा कि मैं मेवाड़ छोड़कर बाहर जाने के लिए तैयार हूं परन्तु मेरे पास यहां से बाहर जाने के लिए मार्ग व्यय ही नही है यदि राज्य मुझे पच्चीस रुपये दे दे तो मैं मेवाड से बाहर चला जाऊगा। अधिकारियो ने वर्माजी के इस प्रस्ताव का स्वागत किया और उन्हे शीघ्र ही पच्चीस रुपये राज्य की ओर से दे दिए गए। पच्चीस रुपये मिलने पर वर्माजी ने श्रीमती नारायणी देवी तथा बच्चो को तो उमाजी के खेडे (बिजोल्यां के समीप गाव जहां वर्माजी ने एक कच्चा मकान बना लिया था) भेज दिया और स्वयं अजमेर आगए। अजमेर मे एक मित्र से बीस रुपये लेकर उन्होने महात्माजी से परामर्श और मार्गदर्शन लेने के हेतु वर्धा की ओर प्रस्थान किया।

गांधी जी का आशीर्वाद :

वर्धा पहुंच कर वर्माजी गाधी जी से मिले। सत्याग्रह के आविष्कर्ता से आशीर्वाद प्राप्त करना कोई सरल कार्य नही था। वर्माजी ने प्रजामण्डल की स्थापना, राज्य के दमन की कहानी उन्हे विस्तारपूर्वक सुनाई और सत्याग्रह के लिए महात्माजी का आशीर्वाद मांगा। महात्माजी ने उनकी बात को बड़े ध्यान से सुनने के बाद उनसे पूछा कि कितने सत्याग्रही गिरफ्तार होगे और जेल मे कितने दिनो टिकेंगे ? वर्माजी ने उत्तर

दिया" कि जब हिन्दुस्तान आजाद होगा और सब राजनैतिक कैदी छोडे जायेंगे तब छूटेंगे या जेल मे ही मर जावेंगे।" महात्मा जी वर्माजी के इस वीरोचित उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए और बोले "तब मेरा आशीर्वाद है" वर्माजी ने महात्मा जी से लिखित आशीर्वाद मांगा। महात्मा जी ने तुरन्त उन्हे लिखकर दे दिया "बापू के आशीर्वाद"।

महात्मा जी का आशीर्वाद लेकर वर्मा जी वापस अजमेर आ गए और सत्याग्रह की तैयारियो मे लग गए। सर्व प्रथम वर्मा जी ने अजमेर मे मेवाड प्रजामन्डल का कार्यालय स्थापित किया।

वर्माजी ने अजमेर से मेवाड प्रजामन्डल पर प्रतिबध लगाए जाने पर देश के समस्त पत्रों मे इस आशय का वक्तव्य प्रकाशित कराया।

"अभी तक मेवाड़ राज्य मे कोई ऐसा कानून नही था हमने २४ अप्रेल १९३८ को मेवाड़ प्रजामन्डल स्थापित किया। मैने इन्सपेक्टर जनरल को सूचित कर दिया। दूसरे दिन उन्होने मुझे बुलाया मैने उन्हे प्रजामन्डल का विधान दे दिया। उन्होने मुझ से मुसाहिब आला (दीवान) से मिलने को कहा ६ मई को हमने सदस्य बनाने का कार्य आरभ किया। १३ मई को मुसाहिब ने मुझे मौलिक रूप मे कहा कि प्रजामन्डल बन्द कर दो। कोतवाल से भी मुझे इसी प्रकार की गोपनीय आज्ञा मिली। एक सप्ताह मे ही लगभग दो हजार सदस्य बन गए। राज्य ने प्रजामन्डल पर प्रतिबंध लगा दिया। मेवाड सरकार ने रेजीडेन्ट के द्वारा प्रजामन्डल से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों की डाक खोलने सैंसर कराने की व्यवस्था करली।"

इसके उपरान्त वर्माजी ने "मेवाड का वर्तमान शासन" नामक छोटी सी पुस्तिका प्रजाम डल से प्रकाशित की जिसमे उन्होने मेवाड राज्य की सरकार को अग्रेज प्रभुओ के सकेत पर चलने, बाहरी अफसरो को अधिक वेतन पर बुलाने, अयोग्य कृपा पात्रो की ऊचे पदो पर नियुक्तियां करने, लगान मे वेहद वृद्धि होने, माफी, और जागीरों की जमीनें जब्त करने, का राज्य सरकार पर आरोप लगाया और कहा भीलों की अत्यन्त सोचनीय दशा मेवाड के लिए कलक की बात है। कस्टम की अधिकता का उल्लेख कर कस्टम विभाग मे व्याप्त रिश्वतखोरी की भर्त्सना की। आबकारी की अत्यधिक आय को अशोभनीय बताकर मादक वस्तुओ पर रोक लगाने की आवश्यकता बतलाई। उदयपुर चितौरगढ रेलवे लाइन (यह रेलवे लाइन राज्य की थी) की कुव्यवस्था और यात्रियो के कष्टो का विवरण देकर उसमे सुधार की आवश्यकता बतलाई। पुस्तिका में उन्होंने बसे चलाने का ठेका देने का विरोध किया जो यात्रियो से मनमाना किराया वसूल करते हैं। अतएव उन्होने मांग की ठेका देने की प्रथा को बन्द किया जाये और किराया घटाया जावे। करेड़ा (भूपालसागर का पूर्व नाम करेड़ा था) चीनी के कारखाने ने किसानो का सारा गन्ना नही खरीदा और राज्य के गन्ने को मेवाड़ से निकासी पर भारी कर लगा दिया इस कारण बहुत सा गन्ना नष्ट हो गया और किसानों को भयंकर आर्थिक हानि उठानी पड़ी। भीलवाड़ा के कपडे के कारखाने तथा सरकारी

कपास के पेंचो में मजदूरो को बहुत कम मजदूरी दी जाती है उनका भयंकर शोषण और दोहन होता है।

वर्माजी ने उस पुस्तिका मे यह भी लिखा कि स्वर्गीय महाराणा फतहसिंह अपने स्वयं के ऊपर बहुत कम व्यय करते थे परन्तु महाराणा भूपालसिंह तथा उनके चाटुकार भ्रष्ट दरबारियों पर राज्य की सम्पूर्ण आय की २५ प्रतिशत रकम व्यय की जाती है। सेना व्यर्थ मे रखी गई है वह ब्रिटिश साम्राज्य का हथियार है उस पर व्यय बहुत होता है। पुलिस मे घोर भ्रष्टाचार है वह सर्वसाधारण का शोषण तथा उत्पीडन करती है। शिक्षा और चिकित्सा पर नाम मात्र का व्यय होता है। सिंचाई और सडको का उचित प्रबन्ध नही है। नगरपालिका की व्यवस्था खराब है, न्याय की राज्य में दुर्दशा है। रियासत की अदालतें रिश्वतखोरी के अड्डे है। महाराणा साहब के मुंहलगे लोग फैसला बदलवा देते हैं। जागरीदारो का अत्याचार चरम सीमा पर है। राज्य छटूंद जागीरदारों से वसूल करता है और वे उसे प्रजा से वसूल करते हैं।

उदयपुर का चितौड़ी सिक्का कई वर्षों से भाव में कल्दार ब्रिटिश सिक्के के भाव मे बहुत गिरा हुआ है इस कारण किसानो, राज्य कर्मचारियो और व्यापारियो को हानि उठानी पड़ती है। उसका मूल्य कल्दार के बराबर होना चाहिए। वर्माजी ने " मेवाड का वर्तमान शासन " पत्रिका मे प्रमाणो सहित वर्तमान शासन की त्रुटियो का दिग्दर्शन कराया था। यह एक प्रकार से तत्कालीन मेवाड़ के शासन पर गम्भीर, साहसपूर्ण परन्तु सत्य आरोपपत्र था। इस पत्रिका की प्रतिया मेवाड़ तथा मेवाड़ से बाहर बहुत बडी संख्या मे पहुँची। मेवाड़ मे भी ऐसे बहुत से लोग थे जो उस पत्रिका को पढकर चौक उठे, मेवाड की तत्कालीन सरकार की प्रतिष्ठा को इस पत्रिका के प्रकाशन से गहरा धक्का लगा। भारत सरकार ने भी कुछ तथ्यो के बारे मे मेवाड सरकार से पूछताछ की। राज्य सरकार वर्माजी द्वारा इस पत्रिका के प्रकाशन से बहुत क्रुद्ध हुई।

इधर वर्माजी मेवाड़ प्रजामन्डल की ओर से बराबर मेवाड़ सरकार को प्रजामन्डल पर से प्रतिबंध हटा लेने की मांग करते रहे। मेवाड सरकार को उन्होने इस सम्बन्ध मे कई पत्र लिखे, तार दिए। श्री जमुनालाल बजाज ने भी मुसाहिब आला को मेवाड़ प्रजामन्डल पर से प्रतिबध उठा लेने के लिए लिखा, पर राज्य से कोई उत्तर प्राप्त नही हुआ। वर्माजी ने प्रेस मे भी खूब प्रचार किया। अजमेर मे सभाए की और उनके प्रस्ताव राज्य के पास भेजें परन्तु राज्य सरकार ने उनकी ओर तनिक भी ध्यान नही दिया।

वर्माजी यह जानते थे कि राज्य सरकार प्रजामंडल पर से प्रतिवन्ध नही उठावेगी परन्तु फिर भी वे यह सब प्रयत्न करते रहे उसके दो कारण थे। पहला कारण तो यह था कि वे राज्य सरकार को यह कहने का अवसर नही देना चाहते थे कि प्रजामडल ने विना समझौते की बातचीत किए ही आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। फिर महात्मा जी का भी यही परामर्श था कि सत्याग्रह छेड़ने के

पूर्व बातचीत और समझौते के द्वारा प्रतिबन्ध हटवाने का प्रयत्न करना, मेवाड़ियों की सहानुभूति तथा राजस्थान और कलकत्ता, बम्बई, मदरास और अहमदाबाद में रहने वाले राजस्थानियों का सहयोग प्राप्त करना उन्हे अभीष्ट था। इस कारण उन्होंने वह पुस्तिका प्रकाशित की। दूसरा कारण यह था कि सत्याग्रह की तैयारी के लिए समय चाहिये था। राज्य सरकार ने प्रजामडल के स्थापित होते ही उस पर वार कर दिया था इस कारण प्रजामडल की व्यूहरचना नही हो पाई थी। अस्तु वर्माजी के लिए यह आवश्यक था कि मेवाड प्रजामडल पर प्रतिबन्ध लगाए जाने के सम्बन्ध में जनता की दिलचस्पी भी बनी रहे साथ ही सत्याग्रह की तैयारिया भी पूरी हो जावे।

अब उन्होने सत्याग्रहियो को तैयार करने का कार्य आरंभ कर दिया। सत्याग्रहियो से नीचे लिखे अनुसार प्रतिज्ञापत्र भराकर उनसे प्रतिज्ञा कराई जाती थी।

मेवाड़ प्रजामण्डल के सत्याग्रही का शपथ-पत्र :

मेवाड रियासत ने मेवाड प्रजामडल पर अनुचित प्रतिबन्ध लगा दिया है। उसको उठवाने के लिए प्रजामडल ने जो सत्याग्रह छेडा है मै उसमें अपना नाम दर्ज कराता हूं और प्रतिज्ञा करता हू —

१ मै सदा प्रजामण्डल के अनुशासन मे रहूगा। जब कभी और जिस किसी हालत मे उसका आर्डर मिलेगा मैं उसकी सेवा के लिए परिवार और सम्पत्ति का मोह छोड कर तैयार रहूंगा।

२ मै सत्याग्रह मे कभी माफी नही मागूगा चाहे प्राण भी चले जावे और कितने ही शारीरिक कष्ट क्यो न दिए जावे।

३ मैं सत्य और अहिंसा का पालन करूगा और ईश्वर मे विश्वास रखूंगा।

४ मै अपने त्याग, सेवा, सच्चरित्रता और विनम्रता की छाप जनता और राज्य पर डालने की कोशिश करूगा।

वर्माजी ने सत्याग्रह मे इस बात की बहुत सावधानी रखी कि ऐसे निर्बल और कायर व्यक्ति सत्याग्रह मे न भर्ती किये जावे जो माफी मागले। वे जानते थे कि ऐसे साहसहीन कायर व्यक्तियो की भीड इकट्ठा कर लेने से आन्दोलन तेजहीन हो जावेगा अस्तु वे जाच पडताल के बाद ही सत्याग्रहियो की सूची मे अपना नाम लिखानेवालो को उपरोक्त शपथ दिलाते थे।

महाराणा भूपालसिह अपने चाटुकार स्वार्थी दरबारियो के चगुल मे थे, अस्तु मेवाड सरकार ने प्रजामडल के पत्रो पर तनिक भी ध्यान नही दिया। अतएव महात्माजी से आशीर्वाद प्राप्त कर वर्धा से अजमेर वापस लौटने के उपरान्त वर्माजी ने महाराणा श्री भूपालसिह को एक पत्र लिखकर सूचित किया यदि मेवाड़ प्रजामडल पर से प्रतिबंध नही उठा तो आगामी दशहरे से सत्याग्रह आरभ हो जावेगा। महाराणाजी एक प्रकार से अपने स्वार्थी तथा प्रतिक्रियावादी मुसाहिबो के बन्दी थे, जो उनके द्वारा मेवाड़ का भयंकर शोषण कर रहे थे- क्या उत्तर देते। निर्मल किन्तु उदार महाराणा भूपालसिंह के शासनकाल मे उनके मुहलगे दरबारियो ने मेवाड़ को एक प्रकार से चूस लिया था।

प्रजा का अनवरत शोषण हो रहा था वह अत्यन्त निर्धनता का जीवन व्यतीत कर रही थी परन्तु कुछ कृपापात्र परिवारो के पास मेवाड की लूट की अटूट सम्पति एकत्रित हो गई थी। भला वे महाराणा को मेवाड प्रजामडल पर से प्रतिबध कैसे उठाने देते क्योकि प्रजामडल उनकी उस लूट को रोकना चाहता था। अस्तु प्रजामडल पर से प्रतिबध नही उठा और विजयदशमी के दिन सत्याग्रह आरभ कर दिया गया। परन्तु मेवाड़ सरकार ने प्रजामडल के द्वारा सत्याग्रह आदोलन छेड़ने से पूर्व ही दमन आरंभ कर दिया। प्रो० प्रेमनारायण माथुर को मेवाड़ से निष्कासित कर दिया (२८-६-३८)।

विजयदशमी के पवित्र दिन सत्याग्रह आरंभ होने वाला था। पुलिस सतर्क थी, स्थान स्थान पर पुलिस तैनात करदी गई थी। वह दिन मेवाड़ के इतिहास में उल्लेखनीय रहेगा जबकि मेवाड प्रजामंडल ने वर्मा जी के नेतृत्व मे सामन्तशाही को चुनौती दी थी। मेवाड प्रजामंडल के सत्याग्रह को आरभ करने का तथा प्रथम सत्याग्रही बनने का गौरव और श्रेय क्रान्तिकारी उत्साही युवक श्री रमेशचन्द्र व्यास को प्राप्त हुआ। बाजार में घटाघर के समीप वे प्रजामडल के साहित्य को जनता मे बाटते हुए और उनको नागरिक अधिकारो को प्राप्त करने के लिए प्रजामडल के सत्याग्रह मे सम्मिलित होने के लिए आवाहन करते, मेवाड़ प्रजामडल जिंदाबाद के नारे लगाते हुए गिरफ्तार हो गए।

इसके उपरान्त क्रमशः सर्व श्री भूरेलाल बया, मास्टर बलवन्तसिंह मेहता, अमृतलाल यादव, जयचन्द रेगर, परुपराम अग्रवाल, दयाशकर श्रोत्रीय, भवानीशंकर जी वैद्य, मथुराप्रसाद जी वैद, रामचन्द्र जी वैद्य, रूपलाल सोमानी, गोकुल जी धाकड़, कन्हैयालाल धाकड, वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती नारायणी देवी वर्मा, रामादेवी ओझा, रामदेवी भारतीय, प्यारचन्द जी विश्नोई, और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भगवतीदेवी विश्नोई, नरेन्द्रपालसिंह चौधरी, वर्मा जी की ज्येष्ठ पुत्री कुमारी स्नेहलता वर्मा, नन्दलाल जोशी मोही, रामसिंह भाटी मोही, भवरलाल आचार्य नाथद्वारा, उमाशकर द्विवेदी, उदयपुर, अर्जुनसिंह राठोड उदयपुर, शम्भुलाल सनाढ्य काकरोली, एक के बाद दूसरे सत्याग्रही गिरफ्तार होने लगे।

श्री जनार्दन राय पोटा उदयपुर, प्रो०शम्भूदयाल जगधारी उदयपुर, श्री रामचंद्र अग्रवाल उदयपुर, भवरलाल अग्रवाल उदयपुर, श्री भूरेलाल गेलडा, श्रीकृष्ण पचोली उदयपुर, श्री अमृतलाल वैद्य उदयपुर, श्री ओकारलाल वैद्य उदयपुर तथा श्री मुरलीधर हैडमास्टर उदयपुर पर पुलिस को सदेह था कि वे प्रजामंडल की सहायता करते है और उनके समर्थक है उन्हे चेतावनी दी गई और पुलिस उन पर नजर रखती रही।

कुल मिलाकर २५० से अधिक लोगो ने सत्याग्रह मे भाग लिया और उन्हे दंड दिया गया अथवा उनको मेवाड से निष्कासित कर दिया गया। मेवाड प्रजामडल के सत्याग्रही 'मेवाड़ प्रजामडल की मेवाड़ी जनता से अपील' सम्बंधी पोस्टर दीवारो पर

चिपकाते, पर्चे बांटते और सर्वसाधारण को प्रजामडल के सत्याग्रह के लिए आवाहन करते । वर्मा जी साइक्लोस्टाइल से छपवाकर अजमेर से यह परिपत्र मेवाड में भिजवाते सत्याग्रही उन्हे दीवारो पर चिपकाते और बाटते । प्रजामडल के सत्याग्रह सबंधी समाचार तथा लेख सभी पत्रो मे प्रकाशित होते । यो तो सभी पत्रो ने मेवाड प्रजामन्डल के सत्याग्रह का प्रचार और प्रकाशन किया परन्तु अजमेर से प्रकाशित" रियासत के संपादक श्री ऋषिदत्त जी मेहता ने अपने पत्र द्वारा प्रजामन्डल का सबसे अधिक प्रचार किया ।

सत्याग्रह मे वर्माजी का सम्पूर्ण परिवार ही जेल में चला गया । केवल वर्माजी बाहर रहे जिससे कि वे सत्याग्रह की व्यूहरचना और संचालन कर सके ।

वर्माजी ने उन स्थानो का दौरा किया जहा मेवाड के लोग अधिक संख्या मे नौकरी करते थे और वहा मेवाड प्रजामडल की शाखाये स्थापित की । बम्बई, नागपुर जलगाव, तथा अकोला मे मेवाड प्रजामन्डल की शाखाए स्थापित की गईं । मेवाड़ी लोग व्यापारी या उद्योगपति तो थे नही कारखानो मे अथवा दफ्तरो में नौकर थे फिर भी इन शाखाओ ने मेवाड प्रजामन्डल के प्रचार का अच्छा कार्य किया । प्रचार के अतिरिक्त थोडा बहुत चन्दा भी वे आपस मे करके भेजते थे ।

वर्माजी मेवाड़ सत्याग्रह के लिए धन इकट्ठा करने के लिए बम्बई गए परन्तु राजस्थानी उद्योगपतियो और व्यापारियो ने मेवाड सत्याग्रह के प्रति तनिक भी उत्साह और सहानुभूति नही दिखाई उन्हे निराश होकर वहां से लौटना पडा । शेखावाटी तथा अन्य प्रदेशो के राजस्थानी मारवाडी व्यापारी या उद्योगपति या तो अपनी जाति के लिए अथवा अपने जन्मस्थान के गाव मे कुछ कराने के लिए ही धन देते है अन्य कायो मे उनकी रुचि नही रहती है । फिर मेवाड प्रजामन्डल का सत्याग्रह तो राजनीतिक जागरण को जन्म देनेवाला था अस्तु उन्होने वर्माजी को कोई सहायता नही दी ।

बम्बई मे धनकुबेरो से निराश होने के उपरान्त वर्माजी ने जो भी मेवाड़ी जहां थे उनसे सम्पर्क स्थापित किया और उनसे थोड़ा थोडा धन इकट्ठा कर प्रजामन्डल का काम चलाया यह लेखक उस समय बरेली कालेज मे था । उदयपुर के विद्यार्थी जो बाहर कलकत्ते आदि स्थानो पर कार्य करते थे उनसे प्रजामन्डल के लिए धन एकत्रित कर वर्माजी को भेजता । इस प्रकार मेवाड प्रजामन्डल के सत्याग्रह के लिए किन्ही धनकुबेरो से नही वरन साधारण स्थिति के मेवाडियो अथवा मेवाड से सहानुभूति रखने वालो से धन प्राप्त किया गया । मेवाड प्रजामन्डल सत्याग्रह सच्चे अर्थो मे जनआन्दोलन था । उसकी दूसरी विपशेता यह थी कि एक भी सत्याग्रही ने माफी नही मागी । पुलिस का घोर दमन, प्रजामडल को परास्त नही कर सका । पुलिस बौखला उठी थी उसके कार्य उपहास योग्य होने लगे थे । एक घटना से पुलिस की उपहासजनक स्थिति और ज्ञानशून्यता का परिचय मिल जाता है । भीलवाडा से जहाजपुर जानेवाली मोटर बनास नदी की रेती मे फंस गई । सवारियों ने उतरकर जोर लगाया तो भी नही निकली दो बच्चो ने जिनकी आयु बारह वर्ष के लगभग थी कहा भाइयो प्रजामन्डल की जय बोलकर धक्का दो बस निकल जावेगी । सबो ने प्रजामडल की जय बोलकर बस में

एक साथ धक्का लगाया बस निकल गई। कारण यह था कि जयघोष के साथ ही सबो ने एक साथ धक्का लगाया था। परन्तु अपराध मे उन दोनो बालको को गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना से यह पता चलता है कि पुलिस अधिक बौखला उठी थी।

इस प्रकार अक्टूबर १९३८ से जनवरी १९३९ तक प्रजामडल का सत्याग्रह चलता रहा। अनेक सत्याग्रही गिरफ्तार हो चुके थे। मेवाड सरकार से यह छिपा नही था कि सत्याग्रह इस कारण जीवित है समाप्त नही हो रहा है क्योकि श्री माणिक्यलाल वर्मा बाहर हैं गिरफ्तार नही हुए। अधिकारियो की मान्यता थी कि श्री माणिक्यलाल वर्मा के जेल मे बद होते ही सत्याग्रह और प्रजामडल की गतिविधिया समाप्त हो जावेगी। अतएव उन्होने किसी भी प्रकार हो वर्माजी को गिरफ्तार करने का निश्चय किया। पुलिस के उच्च अधिकारियो को आज्ञा दे दी गई कि किसी भी प्रकार क्यो न हो वर्मा को पकडना है। अब पुलिस ने अपनी सारी शक्ति वर्माजी को किसी भी प्रकार गिरफ्तार करने मे लगा दी।

मेवाड पुलिस ने पहला षड्यन्त्र तो यह रचा कि जब वर्मा जी रतलाम होकर निकले तो उनको रेलवे कोच से बलपूर्वक उठाकर मोटर मे डालकर शीघ्रतापूर्वक मेवाड की सीमा मे घुसवाया जावे। वर्माजी को दुरभिसन्धि की सूचना मिल गई अस्तु उन्होने रतलाम जाने के लिए जो तारीख निश्चित की थी उससे एक दिन पूर्व ही वे रतलाम से निकल गए इस कारण मेवाड पुलिस का वह षडयत्र असफल हो गया। वर्मा जी के इस प्रकार बच निकलने से मेवाड पुलिस और भी अधिक चिढ गई और वह किसी भी प्रकार वर्मा जी को गिरफ्तार करने की युक्तियां सोचने लगी।

जब पहला षडयत्र असफल हो गया तो दूसरा रचा गया। पुलिस ने दो मीणो गोरु और रामचन्द्र को इनाम का लालच देकर तथा धमकी देकर अपना एजेन्ट बना लिया। वे दोनो देवली के पुराने और निष्ठावान काग्रेसी श्री कन्हैयालाल गोयल के पास आए और उनसे अनुरोध किया कि वे मेवाड निवासी है और मेवाड़ सत्याग्रह मे भाग लेना चाहते हैं अतएव वे उन्हे श्री वर्माजी से मिला दे। श्री कन्हैयालाल क्या जानते थे कि यह मेवाड पुलिस का वर्मा जी को गिरफ्तार करने का षडयत्र है। अतएव उन्होने उन दोनो के सबन्ध मे वर्मा जी को पत्र लिखा। वर्मा जी ने उन्हे सूचित किया कि वे २ फरवरी १९३९ को देवली पहुच रहे है तभी उन दोनो से बात करके निश्चय करेगे।

निश्चित दिन वर्मा जी अजमेर से नसीराबाद बस से जाना चाहते थे परन्तु बस छूट गई तो वे रेल द्वारा नसीराबाद पहुँचे। स्टेशन से दौडते हुए जब बस स्टैण्ड पर पहुँचे तो देवली जानेवाली बस निकल चुकी थी। देवली बस सर्विस एक पारसी फ्रामजी की थी उनकी एक शाखा उदयपुर मे थी। इस कारण वे वर्मा जी तथा मेवाड सत्याग्रह से परिचित थे। वर्मा जी उनसे मिले और उनसे अनुरोध किया कि वे किसी प्रकार उन्हे देवली पहुँचाने का प्रबन्ध करदें। फ्राम जी वर्मा जी के व्यक्तित्व के प्रति मन ही मन

श्रद्धा रखते थे। यद्यपि यह उनका वर्माजी से प्रथम परिचय था। उन्होने अपनी निजी कार द्वारा वर्माजी को भेज दिया और वे केकड़ी पहुच गए जहां उन्होने देवलीवाली बस पकड़ ली और दोपहर बारह बजे वे देवली पहुच गए। श्री कन्हैयालाल ने वर्माजी को उन दोनों मीणो से मिलाया। वर्माजी ने देर तक उन दोनों से बात की तो उन्हे उन पर सदेह हो गया। मेवाड़ पुलिस के हथकडो से अवगत अनुभवी वर्माजी समझ गए कि वे दोनो मेवाड़ पुलिस के गुप्तचर है अस्तु बातचीत करके वर्माजी ने उन दोनों को विदा कर दिया। उन्होने उन दोनो को सत्याग्रह मे भर्ती करने से इन्कार कर दिया।

सायकाल ६ बजे के समय वर्माजी, श्री कन्हैयालाल गोयल तथा उनके अन्य साथी जगल मे शौचादि से निवृत होने गए। जब वे शौचादि से निवृत होकर वापस लौट रहे थे तो सादी पोशाक मे मेवाड पुलिस के सिपाहियो ने उन्हे बलपूर्वक पकड लिया। कन्हैयालाल गोयल तथा उनके साथियो ने वर्माजी को छुड़ाने का प्रयत्न किया परन्तु मेवाड पुलिस के सिपाही सख्या मे बहुत अधिक लगभग पैंतीस थे इस कारण वे उन्हे छुडा न सके। मेवाड पुलिस उन्हे घसीटते हुए बलपूर्वक ब्रिटिश सीमा से सटे हुए कुछ दूरी पर मेवाड की सीमा पर स्थित ऊंच गांव मे ले गई।

मेवाड पुलिस की योजना यह थी कि उनके ये दोनो गुप्तचर मीणे वर्माजी से कहे कि वे अनेक व्यक्तियो को सत्याग्रह के लिए तैयार कर सकते हैं यदि वर्माजी उनके साथ छिप कर चले और जब वर्माजी मेवाड़ मे उनके साथ आवे तभी उनको गिरफ्तार कर लिया जावे। परन्तु यह तभी सभव था कि जब वर्माजी के वे दोनो विश्वासपात्र बन जाते। परन्तु वर्माजी ने जब उन दोनो को सत्याग्रहियो मे भरती करने से ही इन्कार कर दिया तब मेवाड़ पुलिस को गहरी निराशा हुई। परतु वे किसी न किसी प्रकार वर्माजी को पकड़ने का निश्चय कर चुके थे अस्तु उन्होने इस प्रकार ब्रिटिश शासित प्रदेश से उन्हे बलपूर्वक पकड़ लाने की युक्ति सोची।

पुलिस वर्माजी को देवली के समीप जगल से ऊचागाव तक घसीटती हुई लाई इस प्रकार उनके कपड़े फट गये, वे नग्न हो गए और उनका शरीर स्थान स्थान पर छिल कर घायल हो गया। ऊँचागाँव पहुच कर पुलिस द्वारा वर्माजी को नग्न अवस्था में ही एक खम्भे से बाध दिया गया। खम्भे से बाधने के उपरान्त उन पर बर्बरतापूर्ण मार पड़ने लगी। मारनेवाले लात घूसो से नही बेतो तथा लकडी से उन्हे मार रहे थे। उन पर लकड़ी पडती और मारने वाला उनसे पूछता "बोल तू महाराणा का राज्य लेना चाहता है" मर्मान्तक पीडा से पीड़ित होते हुए भी वर्माजी वीरोचित उत्तर देते। "मै राज्य अपने लिए नही मेवाड़ की जनता के लिए लेना चाहता हूँ" उसी समय तड़ाक से उनकी हड्डी पर लकड़ी पडती। मेवाड़ की पुलिस वर्माजी से बहुत खिजी हुई थी इस कारण उसने वर्माजी को इस क्रूरता और नृशसतापूर्वक मारा कि उनके प्रत्येक जोड़ और हड्डी पर गहरी चोटे आगई। जीवन के अतिम दिनो मे वर्मा जी ने इन चोटो के संबन्ध में एक स्थान पर लिखा है "आज भी उस भयकर मार का प्रभाव मेरे शरीर से मिटा नही है कभी कभी जब बादल होता है या अधिक ठंड पड़ती है तो उन

स्थानो पर भयकर और असहनीय पीड़ा होती है। वह भयानक दृश्य आज भी अपनी नग्न क्रूरता और बर्बरता के कारण मुझे स्मरण हो आता है।"

जब वर्माजी पर लाठियो का प्रहार हो रहा था तो भविष्य मुस्करा रहा था। जब उनसे पूछा जाता "बोल तू महाराणा का राज्य लेगा" और वर्माजी उत्तर देते अपने लिए नही मेवाड़ की जनता के लिए" और तर्मा उन पर कठोर लाठी प्रहार होता तो उस समय सत्ता के मद से अधे वे सिपाही और पुलिस अधिकारी नही देख पा रहे थे कि उनकी प्रत्येक लाठी केवल महाराणा के शासन को ही नही उनके गौराग प्रभुओ के शासन और सत्ता को भी ध्वस करनेवाली है।

उन पुलिस अधिकारियो और पुलिस के सिपाहियो तथा महाराणा के अनुचरो को क्या मालूम था कि जिस वर्माजी को महाराणा का राज्य लेने का दुस्साहस करने के कारण मारा जा रहा है नो वर्षो के उपरान्त वही व्यक्ति केवल मेवाड़ का ही नही मेवाड़ सहित अनेक राज्यो का शासक बनेगा और मेवाड का महाराणा तथा अन्य राज्यो के नरेश उसके शासन की दी हुई पेशन पर अपना जीवन निर्वाह करेगे।

मानव जाति के प्रारम्भिक काल से आज तक का इतिहास निरन्तर एक ही कहानी कहता आ रहा है कि देशभक्तो के बलिदान और त्याग का मुकाबला बडे से बड़ा शक्तिशाली साम्राज्य भी नही कर सकता। एक सम्राट या साम्राज्य दूसरे सम्राट या साम्राज्य से अपनी सेनाओ द्वारा रणभूमि मे मुकाबला कर सकता है। परन्तु देश पर अपना सर्वस्व अर्पण करनेवालो के बलिदान और त्याग के सामने बडी से बड़ी शक्ति और साम्राज्य भी टिक नही सकता। इतिहास का यह ध्रुव सत्य सत्ता के मद से अन्धे शासको की पकड़ मे कभी नही आया। सभवत. नियति भी यह नही चाहती। यदि सत्तारूढ व्यक्ति या समूह इतिहास के इस, ध्रुव सत्य को अगीकार कर लेता तो सभवत. देश के लिए त्याग और बलिदान की गौरवमयी पावनधारा कुठित होकर लुप्त हो जाती और युगो युगो से जो मानवजाति मे मानवमूल्यो को प्रस्थापित करनेवाले बलिदानी पुरुष जन्म लेकर बलिदान और त्याग की अग्नि मे तपकर, सर्वसाधारण के लिए आदर्श स्वरूप निकलते रहे है वह परम्परा समाप्त हो जाती। तो वर्माजी भी उसी शृ खला के एक गौरवशाली कडी थे जो मानवजाति मे बलिदान और त्याग की गौरवमयी परम्परा को बलवान और अक्षुण्ण बनाते है।

हां तो वर्माजी नग्न खम्भे से बधे पिट रहे थे। ऊचागाव की पुलिस चौकी के हैड कास्टेबिल उन्हे नग्न देखकर लज्जित हो रहे थे। उन्होने एक मिल के कपडे की बनी धोती वर्माजी को लाकर दी परन्तु वर्माजी ने उसे पहनने से इसलिए इन्कार कर दिया क्योकि वह मिल की थी। हैडकान्सटेबिल भूपालसिंह ने कहा कि बहुत भद्दा लग रहा है तो वर्मा जी ने उत्तर दिया कि मै केवलमात्र खादी पहिनने की अपनी प्रतिज्ञा को नही तोड सकता। अतएव भूपालसिह ने आदमियो को भेजकर बुनकरो के यहां से मोटा रेजा मगवाया और उसकी तीन पट्टिया सिलवाकर वर्माजी को वह कपड़ा दिया गया तब वर्माजी ने उसे पहन अपनी लज्जा का निवारण किया।

उसके उपरान्त रात्रि मे ही उन्हे ऊचा गांव से भीलवाड़ा होते हुए उदयपुर पहुँचा दिया गया। रात्रि मे स्टेशन पर ही उन्हे पुलिस की चौकसी मे रखा गया। स्टेशन पुलिस चौकी मे मेवाड प्रजामन्डल के सत्याग्रही भवरलाल प्रेज्ञाचक्षु तथा गोकुलजी धाकड़ विजोल्या निवासी हिरासत मे थे। उन्हे जेल भेज दिया गया और वर्माजी को वहां रखा गया।

वर्माजी पर मेवाड़ प्रवेश निषेध की राज्य आज्ञा का उल्लंघन कर मेवाड़ की सीमा मे घुसने का आरोप लगाया गया। न्याय का नाटक किया गया और वर्माजी को दो वर्ष के कारावास का दण्ड दे दिया गया। जो मेवाड़ की पुलिस ब्रिटिश राज्य से डाकुओ की भाति वर्माजी को जबरदस्ती उठा लाई उसको दडित न कर वर्माजी पर झूठा अभियोग चलाकर उनको मेवाड़ की सीमा मे घुस आने के अपराध मे दडित किया गया। वह न्याय का उपहास नही तो और क्या था। परन्तु उस समय देशी राज्वो में न्याय की तुला शासन के सकेतो पर झुकती थी अतएव मेवाड़ के न्यायालय से और आशा ही क्या की जा सकती थी।

वर्माजी को ब्रिटिश प्रदेश से जबरदस्ती पकड ले जाने का समाचार जब महात्मा गाधी को मिला तो महात्मा जी को भी गहरी पीड़ा और क्षोभ हुआ। अभी तक उन्होने मेवाड़ प्रेजामन्डल के सत्याग्रह के सम्बन्ध मे मौन धारण किया हुआ था उसके सम्बन्ध मे कुछ भी लिखा या कहा नही था। किन्तु इस घटना से उनका भी मौन टूट गया उन्होने यग इडिया मे वर्माजी की गिरफ्तारी के इस घृणित तरीके की खुले रूप मे भर्त्सना और निन्दा की।

महात्मा गाधी ने मेवाड़ पुलिस द्वारा सत्याग्रहियो के साथ किए गए अमानवीय व्यवहार के प्रति प्रथम बार 'हरिजन' (अग्रेजी) मे अपना जो मत व्यक्त किया उसका हिन्दी अनुवाद नीचे लिखा है :—

मेवाड़ :

एक सवाददाता ने लिम्नलिखित सक्षिप्त व्यापारिक ढग का नोट लिख भेजा है :—

'प्रथम घटना' घटना की तारीख १४ दिसम्बर १९३८ घटना स्थल ब्रिटिश प्रदेश मे देवली कस्बे मे एक सड़क का पुल : मेवाड राज्य · लगभग बारह गज की दूरी पर।

सक्षेप मे घटना सम्बन्धी तथ्य चौदह दिसम्बर १९३८ को मेवाड़ प्रेजामन्डल के एक कार्यकर्ता श्री मथुराप्रसाद वैद्य जो कि मेवाड़ प्रजामन्डल का देवली मे प्रचार कार्य कर रहे थे उस पुल पर बैठे हुए मेवाड़ प्रजामन्डल सम्बन्धी साहित्य आनेजाने वालो को वितरित कर रहे थे। तभी यकायक मेवाड़ के ऊचा गाव थाने के दो पुलिस कांस्टेबिलो ने उन पर आक्रमण कर दिया। उनमे से एक ने जो भी उनके पास साहित्य

था छीन लिया और उसे वही जला दिया। दूसरे ने उन पर प्रहार करके उन्हे नीचे गिरा दिया और दोनो उन्हे अर्द्ध बेहोशी की अवस्था मे वलपूर्वक समीप ही बारह गज की दूरी पर स्थित मेवाड राज्य प्रदेश मे निर्दयतापूर्वक घसीट कर ले गए। वहा उनको गिरफ्तार कर लिया गया। वैद्य मथुराप्रसाद की उन कान्टेविलो ने ऊचागाव के थाने तक ले जाते समय मार्ग मे बुरी तरह से पिटाई की। अब उनको नौ मास के कारागार का दण्ड दे दिया गया है।

दूसरी घटना —घटना की तारीख २ फरवरी, १६३६, घटना स्थल देवली ब्रिटिश प्रदेश की सीमा पर।

मेवाड़ प्रजामण्डल के मन्त्री श्री माणिक्यलाल वर्मा २ फरवरी, १६३६ को कतिपय कार्यकर्ताओ से परामर्श करने के लिए देवली गए थे जो अजमेर मेरवाड़ा के ब्रिटिश प्रदेश का एक कस्वा है। सायकाल लगभग ६-३० (साढे छ बजे) उन पर तथा उनके चार साथियो पर मेवाड पुलिस के पन्द्रह आदमियो ने लाठियो से आक्रमण कर दिया। सभी पाचो व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गए और वे लोग श्री माणिक्यलाल वर्मा को झाडियो और काटो मे से अत्यन्त निर्दयतापूर्वक तथा अमानवीय ढग से मेवाड़ के प्रदेश तक घसीटते हुए ले गए जो कई सौ गज की दूरी पर स्थित था। देवली थाने में इस दुर्घटना की रिपोर्ट की गई किन्तु पुलिस ने रिपोर्ट पर कोई कार्यवाही नही की। थाने के दीवान को बहुत खोजा गया परन्तु वह नही मिला। ऐसा प्रतीत होता था कि सारी घटना पूर्व आयोजित थी। माणिक्यलालजी को मेवाड़ राज्य मे ले जाकर कैद कर लिया गया और उन्हे ऊचागाव के थाने मे ले जाया गया।

सवाददाता आगे लिखता है—

"श्री माणिक्यलाल बिजोल्या के निवासी है। वे पिछले बीस वर्षो से किसानो में सेवाकार्य कर रहे है। एक वर्ष पूर्व उन्होने मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना की थी। किन्तु स्थापना के कुछ ही दिनो बाद उसे गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। इस कारण उन्होने कुछ महीनो पहले सत्याग्रह आरम्भ किया था। मै इन घटनाओ की जानकारी आपके पास इसलिए भेज रहा हू क्योकि अब आपने सार्वजनिक रूप से देशी राज्यो के सम्बन्ध मे लिखना शुरू कर दिया है। क्या आप कृपा कर हम कार्यकर्ताओ का मार्गनिर्देश करेगे कि ऐसी परिस्थिति मे हमे क्या करना चाहिए।"

यदि यह सत्य है तो यह समाचार विचित्र है। यह समझना कठिन है कि मेवाड़ पुलिस ने इन कार्यकर्ताओ को मेवाड़ राज्य सीमा मे क्यो गिरफ्तार नही किया। अथवा क्या बात यह थी कि वे कार्यकर्ता मेवाड प्रदेश से दूर रहते थे? जो भी हो मुझे यह गिरफ्तारिया गैरकानूनी प्रतीत होती है। कार्यकर्ताओ को घसीटना आक्रमण अथवा प्रहार करना। मैं केवल यही परामर्श दे सकता हू कि यह कानूनी कार्यवाही करने का मामला है। प्रजामण्डल को कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए।

किन्तु राज्यो मे सविनय अवज्ञा करनेवालो को याद रखना चाहिए कि वास्तविक युद्ध तो अभी आनेवाला है। देशी राज्य फिर चाहे वे बड़े हो या छोटे हो

ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्मिलित ढग से कार्यवाही कर रहे है। वे अंग्रेजो द्वारा ब्रिटिश भारत मे सत्याग्रह आदोलन के विरुद्ध व्यवहार मे लाए गए तरीको की नकल कर रहे है और इस बात की सभावना है कि वे उनकी भयकरता और भयानकता में और अधिक सुधार करे। वे सोचते है कि उन्हे जनमत का कोई भय नही है। क्योकि राज्यो मे विरले व्यक्तियो को छोड कर कोई कुछ कहनेवाला नही है। परन्तु सविनय-अवज्ञा करनेवाले (सत्याग्रहियो) जो कि सच्चे है वे कैसे भी भयानक तरीके हो उनसे डरेगे नही।

सेगांव—हरिजन १८-२-३९

मेवाड पुलिस द्वारा ब्रिटिश शासित प्रदेश से वर्मा जी को डाकुओ की भाति बलपूर्वक पकड ले जाने के इस जघन्य कार्य की सभी समाचारपत्रो ने कठोर निन्दा की। महात्मा गाधी द्वारा हरिजन मे उसकी भर्त्सना और कडी आलोचना से भारत सरकार के विदेशी विभाग मे भी खलबली मच गई। मेवाड रैजीडैंट से रिपोर्ट मांगी गई। मेवाड रैजीडेंट ने मेवाड़ के प्रधान मन्त्री दीवान बहादुर पडित धर्मनारायण से पूछा कि इस आरोप मे कितना तथ्य है कि माणिक्यलाल वर्मा को मेवाड पुलिस ब्रिटिश शासित प्रदेश अजमेर मेरवाडा के देवली स्थान से धोखा देकर बलपूर्वक पकड़ ले गई। भारत सरकार द्वारा इस पूछताछ से मेवाड़ का शासन भयभीत हो उठा। प्रधानमत्री ने इस्पैक्टर जनरल पुलिस से रिपोर्ट मागी और उत्तर स्वरूप रैजीडेट द्वारा वही रिपोर्ट भारत सरकार को भेजदी गई।

इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस ने दीवान बहादुर श्री धर्मनारायण को जो रिपोर्ट भेजी उसका साराश नीचे लिखा है।

"पुलिस पार्टी जिसमे एक हैड कान्स्टेबिल तथा तीन सिपाही थे जहाजपुर सर्किल इन्स्पेक्टर द्वारा जहाजपुर जेल से भागे हुए कजरो को पकडने गई। जब पुलिसदल कुछलवास से ऊचागाव को लौट रहे थे उन्होने कुछ लोगो को मेवाड प्रजामडल के गाने गाते और मेवाड प्रजामण्डल की जय के नारे लगाते सुना। पुलिस पार्टी उधर गई वहा माणिक्यलाल वर्मा, देवली के कन्हैयालाल, घिसालाल महाजन, मघिया खाती तथा रामा नाई और ऊचागाव श्रीकृष्ण कोटिया और किशोरीलाल ब्राह्मण गोसाइयो के कुए पर बैठे गा रहे थे। पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया परन्तु उन्होने लाठियो और पत्थरो से पुलिस दल पर हमला कर दिया। इस झगडे मे और सब तो भाग गए परन्तु माणिक्यलाल पकडे गए। पुलिस को चोटे लगी। यह कहना गलत है कि माणिक्यलाल को देवली से उड़ाया गया"

कोई साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी ऊपर लिखे उत्तर से यह जान सकता है यह पुलिस की गढी हुई कहानी है। अस्तु ए. जी. जी तथा भारत सरकार का वैदेशिक विभाग इस स्पष्टीकरण से सतुष्ट नही हुआ। मेवाड के प्रधान मन्त्री से ए. जी जी ने अप्रसन्नता प्रकट की परन्तु प्रकट रूप मे मेवाड़ सरकार के अनुनय विनय पर इस मामले आगे नही बढाया।

मेवाड़ की अदालत मे न्याय का नाटक समाप्त होने पर जब वर्मा जी को दो

वर्ष की सजा हो गई तो कुछ दिनो तक उनको शिकारवाड़ी मे रखा गया। जहा पहले किसी समय श्री विजयसिह पथिक को क़ैद किया गया था। बाद को वर्माजी को भी सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। मेवाड प्रजामडल के सत्याग्रही वहा पहले से ही कैद थे। सत्याग्रहियो को साधारण कैदियो से न मिलने देने के उद्देश्य से सभी को "पृथक वार्ड" मे रखा गया था। वर्माजी को भी वही रख दिया गया। जब श्री विजयसिह पथिक को मेवाड़ सरकार ने लम्बी सजा दी थी तब मुख्य जेल के बाहर की ओर एक विशेप वार्ड उनके लिए बनवाया गया था। मेवाड़ प्रजामडल के सत्याग्रहियो को उसी मे रखा गया।

जब वर्माजी सेन्ट्रल जेल पहुँच गए तो वहा से उन्होने प्रजामडल के कार्यकर्ताओ के पास गुप्त रूप से विस्तृत आदेश भेजे कि किसको कहा बैठकर क्या करना है, किसको कितनी आर्थिक सहायता देनी है। श्रीमती नारायणी देवी तब तक छूट चुकी थी ? उनके लिए वर्माजी ने जेल से प्रजामडल कार्यालय को आदेश भेजा कि उन्हे पच्चीस रुपए मासिक से अधिक आर्थिक सहायता नही देना उन्हे २५) मे ही अपने परिवार का निर्वाह करना चाहिए। उन्हे (वर्माजी को) छुडाने के प्रयत्न मे व्यर्थ शक्ति नष्ट न की जाय। सब कार्यकर्ता जमकर और एकता के साथ काम करे। यद्यपि वर्माजी जेल मे बद थे परन्तु वे जेल से ही सत्याग्रह का मार्ग निर्देशन और सचालन करते थे। जो भी सत्याग्रही जेल से अपनी सजा समाप्त कर छूटते उन्हे वे विस्तारपूर्वक सब बाते समझा देते और उन्हे क्या काम करना है इसके सम्वन्ध मे आदेश देते थे। यो भी मेवाड़ सेन्ट्रल जेल से गुप्त रूप से मेवाड प्रजामडल के बाहरी कार्यकर्ताओ से वे सम्पर्क बनाए हुए थे और उन्हे समय समय पर विस्तृत आदेश भेजते थे। जो भी सत्याग्रही जेल से छूटते उनके आदेशानुसार निर्धारित कार्य मे जुट जाते।

मेवाड सरकार का विश्वास और मान्यता थी कि वर्माजी के गिरफ्तार होते ही सत्याग्रह समाप्त हो जायेगा परन्तु वैसा नही हुआ सत्याग्रह पूर्ववत चलता रहा। श्रीमती नारायणी देवी वर्मा उनके जेल जाने से पहले ही छूट चुकी थी उन्होने अजमेर जाकर प्रजामडल के मन्त्रिपद का भार सम्हाला और श्री नन्दलाल जोशी (वे भी जेल से छूट चुके थे) उनके सहायक के रूप मे कार्य करने लगे। इस प्रकार वर्माजी के गिरफ्तार हो जाने पर भी मेवाड प्रजामन्डल का कार्य तथा सत्याग्रह पूर्ववत चलता रहा। सत्याग्रही मेवाड प्रजामडल का झडा और बोर्ड लेकर निकलते प्रजामडल सम्बधी साहित्य बाटते, सर्वसाधारण को सत्याग्रह मे सम्मिलित होने का आह्वान करते, मेवाड़ प्रजामडल के उद्देश्यो को बतलाते, तथा नारे लगाकर गिरफ्तार हो जाते।

वर्माजी के गिरफ्तार हो जाने के उपरान्त मेवाड़ पुलिस निश्चिन्त हो गई थी। सोचती थी कि अब सब शान्त हो जावेगा। परन्तु एक सप्ताह बाद ही ६ फरवरी १९३९ को उदयपुर मे घटाघर के (कोतवाली के नीचे) नीचे मेवाड़ प्रजामंडल की जय का घोष सुनाई दिया। श्री पन्नालाल दर्जी अपने हाथ मे मेवाड़ प्रजामंडल का झडा लिए मेवाड़ प्रजामडल सबधी गाने गाते हुए प्रचार कर रहे थे। पुलिस ने उन्हे

तुरन्त गिरफ्तार कर लिया। अब पुलिस की समझ मे आया कि वर्माजी की गिरफ्तारी से सत्याग्रह समाप्त नही हो गया। अस्तु पुलिस सतर्क और चौकन्नी हो गई। १२ फरवरी १९३९ श्री धनराज भारती ने, जो हिसार (पजाब) के निवासी थे पर उस समय मेवाड मे रहते थे, सत्याग्रह किया। एक हाथ मे उनके मेवाड़ प्रजामडल का झडा था और दूसरे मे प्रजामडल का बोर्ड था। मेवाड प्रजामडल की जय का घोष करते हुए वे चल रहे थे उन्हे पुलिस ने कैद कर लिया और उन्हे एक वर्ष का कठोर कारावास दे दिया गया। इनके अतिरिक्त श्री मोहनलाल सोनी, श्री रोशनलाल बुडिया, चन्दुलाल सुखवाल अनेक सत्याग्रही पकडे गए परन्तु प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ दिये गए। श्री चुन्नीलाल देवगढ से उदयपुर सत्याग्रह के लिए आ रहे थे खेमली स्टेशन पर ही पुलिस ने उन्हे पकड लिया। उन्हे अदालत ने एक वर्ष की सजा दे दी। दस मार्च को श्री शकर काकरोली मे सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हे ६ महीने की सजा दे दी गई। प्रोही के श्री नन्दलाल जोशी ने राज्य के विरोध मे रचनात्मक कार्य की एक प्रदर्शनी करने को महात्मा गाधी से सलाह मागी। इसको भी इन्सपैक्टर जनरल पुलिस ने राजद्रोहात्मक कार्यवाही समझा और उन्हे पकड लिया गया। परन्तु बाद को छोड़ दिया गया।

मेवाड़ इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस की जानकारी और अज्ञता का एक नमूना यह था कि जब वर्धा से श्री कृष्णदास जाजू मेवाड मे खादी प्रचार के लिए आए तो इन्स्पेक्टर जनरल महोदय ने उनके सम्बन्ध मे लिखा "एक समाजवादी सुधारक तथा वर्धा के प्रमुख काग्रेसी कार्यकर्ता" जिस राज्य की पुलिस का सर्वोच्च अधिकारी इतना अबूझ हो उससे क्या आशा की जा सकती थी। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्माजी की गिरफ्तारी के उपरान्त भी सत्याग्रह रुका नही चलता रहा।

जेल जीवन की झाकी :

मेवाड सरकार ने सत्याग्रहियो को राजनीतिक कैदी स्वीकार नही किया। उनके साथ साधारण कैदियो से भी बुरा व्यवहार होता था क्योकि राज्य सरकार प्रजामण्डल के सत्याग्रह से बौखला उठी थी। वह बहुत रुष्ट थी। सत्याग्रहियो के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। मिट्टी मिले हुए जौ के आटे की रोटी उन्हे खाने को दी जाती थी। केवल बीमार होने पर डाक्टर की रिपोर्ट पर गेहूँ की रोटी खाने को दी जाती थी। गिरफ्तार करने के समय जो वर्माजी की भयकर पिटाई हुई थी उससे उनके शरीर मे दर्द था। उनका स्वास्थ्य खराब था फिर मिट्टी मिले हुए जौ के आटे की रोटी खाने के कारण उनकी पाचन क्रिया खराब हो गई। कभी कभी जेल कर्मचारी सत्याग्रहियो के साथ अशोभनीय और अभद्र व्यवहार भी करते थे। जयचन्द रेगर को बहुत पीटा गया जिसके कारण उनकी आख की ज्योति जाती रही। यदि सत्याग्रही बीमार हो जाता तो डाक्टर उपेक्षा करते उसकी ओर ध्यान नही देते। कैदियो के रहने का स्थान खराब और अस्वास्थ्यकर था। पाखाने की उचित व्यवस्था नही थी। इस कारण सत्याग्रहियो का स्वास्थ्य गिर गया।

जेलर किशनसिंह अत्यन्त प्रतिक्रियावादी दम्भी और रुढिवादी थे। अतएव वे आए दिन सत्याग्रहियो से उलझते रहते थे। यद्यपि वर्माजी तथा अन्य सत्याग्रही साधारण बदियो से पृथक रखे गये थे परन्तु स्नान करने के लिए एक ही स्थान था। स्नान के लिए सत्यागहियों को जिस मार्ग से जाना पडता था उसके मध्य जेल का कार्यालय भी था। एक वार जब मथुरालाल वैद्य स्नान के लिए जा रहे थे तो जेलर श्री किशन सिंह ने उन्हे रोक कर कहा कि जेल के दफ्तर के सामने नंगे सिर जाना मना है। जब कभी दफ्तर के सामने से निकलो टोपी लगाकर निकलना होगा। वैद्य जी उस दिन तो अच्छा कहकर चल दिए। दूसरे दिन ठीक उसी समय फिर नगे सिर स्नान करने के लिए निकले। ठीक दफ्तर के सामने जाकर सत्याग्रही कैदियो को सबोधित कर बड़े जोर से चिल्लाए "दौडो दौडो" मै अपनी टोपी लगाना भूल गया हूँ दफ्तर की इज्जत बिगड़ रही है। टोपी ले आइए जिससे सर पर लगालू सभी कैदी खूब कहकहा लगाकर हस रहे थे। साधारण कैदी भी इस काड से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने अपने जेलजीवन मे पहली बार किसी कैदी द्वारा जेलर की ऐसी कठोर मजाक वनाते देखा था। बेचारे जेलर महोदय चुप थे। लज्जा के मारे उनका मुख श्रीहीन होगया था। उस दिन से फिर उन्होने किसी नगे सिरवाले को नही टोका।

बड़ो हुकुम :

उत्तर प्रदेश का एक व्यक्ति जमादार पद पर नया नियुक्त होकर आया था। जेलर किशनसिंह जब उन्हे पुकारते तो वे अपने स्वभाववश उत्तर देते "जी साब" जेलर साहब बहुत नाराज होते एक दम आगबबूला हो जाते उसे डाटते— कहते "बेवकूफ बोलने की भी तमीज नही है" बेचारा परेशान था साथियो से पूछने पर पता चला कि उसे 'जी साहब' नही "बडो हुकुम" कहना चाहिए किन्तु वह बेचारा उत्तर प्रदेश का रहनेवाला जीवन भर की आदत से मजबूर था। बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी मुंह से 'जी साहब' निकल ही जाता तो डांट खानी पडती।

एक दिन उसने वर्माजी के पास जाकर उन्हे अपनी कष्ट गाथा सुनाई। स्वभाव से ही उग्र क्रान्तिकारी विचारो के वर्माजी को "बडो हुकूम" मे गहरे सामन्तवाद की ध्वनि सुनाई पडती थी। वे इस शब्द के प्रयोग के कट्टर विरोधी थे। जमादार की कहानी सुन कर उन्हे बहुत क्रोध आया उन्होने उससे कहा अच्छा तुम जाओ इसकी चिकित्सा मैं करूगा। दूसरे दिन जब जेलर महोदय आए तो वर्माजी ने उनसे कहा " जब हमारी हकूमत होगी तो पहला कानून यह बनेगा कि 'बडो हुकुम" कहनेवाले पर एक आना और सुननेवाले पर दो आना जुर्माना किया जावे। जेलर महोदय उनके सकेत को समझ गए और उस जमादार के फिर वे कभी "जी साहब" कहने पर नही बिगडे।"

वर्माजी को उन सभी बातो से बहुत चिढ थी जिनसे किसी भी प्रकार फिर चाहे वह परीक्षा रूप से ही क्यो न हो सामन्तवाद का तनिक भी सम्बन्ध होता था। एक बार स्वयं लेखक "बड़ो हुकुम" सुनने का दोषी बन गया। बात तब की

है जबकि लेखक महाराणा भूपाल कालेज का आचार्य था। बहुधा वर्माजी से मिलना होता। एक बार लेखक और वर्माजी ने कहीं जाने का निश्चय किया। लेखक का ड्राइवर अर्जुन उदयपुर के समीप भुआणा ग्राम का रहनेवाला था उसे मेवाडी होने के कारण "वड़ो हुकम" कहने का अभ्यास था। लेखक ने उसको कई बार टोका, उसे समझाया कि "जी" कहा करो परन्तु अभ्यास होने के कारण उससे बहुधा "बड़ो हुकम" निकल ही जाता था। जब लेखक वर्माजी के साथ गाड़ी मे बैठने लगा तो उसने अर्जुन से कहा कि अमुक स्थान पर चलो वह बोला "वडो हुकम"। वर्माजी ने लेखक से हंसते हुए कहा "सक्सेना जी आपसे दो आना दण्ड का वसूल करना होगा" लेखक ने तुरन्त दो आने उनके हवाले कर दिए।

मेवाड़ में अकाल :

जब वर्माजी गिरफ्तार हो गए और सेन्ट्रल जेल मे कैद कर लिए गए उसी समय मेवाड़ मे भयकर दुर्भिक्ष पड गया। वर्माजी ने जेल से श्रीमती नारायणीदेवी को तथा अन्य सभी कार्यकर्ताओ को कहलाया कि प्रजामडल को तुरन्त "अकाल सहायता समिति" की स्थापना कर लेनी चाहिये और अकाल राहत का कार्य शुरू कर देना चाहिये। श्री नन्दलाल जोशी उदयपुर आकर वर्माजी से मिले। वर्माजी ने अकाल राहत कार्य के सबध मे उनको विस्तारपूर्वक निर्देशन देकर विदा किया। वर्माजी ने अकाल राहत कार्य के सबध मे विस्तृत निर्देशन देने के उपरान्त नन्दलाल जोशी से कहा कि जब "अकाल सहायता समिति" की उदयपुर मे स्थापना करो तो राज्य से उसके स्थापित करने की आज्ञा कदापि न लेना। यह हमारी नीति के सर्वथा विरुद्ध है। यद्यपि अकाल सहायता का कार्य शुद्ध सेवा का रचनात्मक कार्य था उससे राजनीति का तनिक भी सबध नही था। 'अकाल सहायता समिति' मेवाड़ प्रजामडल से और पृथक सस्था होनी परन्तु फिर भी वर्माजी जैसे स्वाभिमानी और क्रान्तिकारी विचारो के व्यक्ति के लिए यह सह्य नही था कि जिस प्रश्न पर मेवाड़ प्रजामंडल और राज्य का मौलिक विरोध है रचनात्मक कार्य के लिए ही सही मेवाड़ प्रजामडल के कार्यकर्ता राज्य सरकार की उस आज्ञा को कि कोई भी सस्था बिना राज की आज्ञा के स्थापित नही की जासकती स्वीकार करले। अस्तु उन्होने प्रजामडल के कार्यकर्ताओ को दृढ़ता-पूर्वक बिना राजाज्ञा प्राप्त किए अकाल सहायता समिति स्थापित करने और अकाल सहायता का कार्य आरभ कर देने का आदेश दिया। प्रजामडल के कार्यताओ ने अकाल सहायता समिति को बिना राज्य से आज्ञा लिए स्थापना कर दी और सहायता कार्य आरभ कर दिया परन्तु इस बार राज्य ने कोई हस्तक्षेप नही किया।

वर्माजी से आदेश पाकर श्रीमती नारायणीदेवी वर्मा तथा श्री नन्दलाल जोशी ने जेल के बाहर जो भी मेवाड प्रजामडल के कार्यकर्ता थे उनको नाथद्वारा अकाल समस्या पर विचार करने के लिए आमन्त्रित किया। नाथद्वारा मे उन कार्यकर्ताओ ने मेवाड़ अकाल सहायता समिति की स्थापना की। प्रजामडल को अकाल सहायता की ओर से कुम्भलगढ, बारापाल, जहाजपुर, बनेड़ा, कांकरोली आदि स्थानो पर सहायता केन्द्र

खोले गए। श्री मनोहरसिंह मेहता का वोगोद सेवा सघ स्वतत्र रूप से अकाल सहायता कार्य कर रहा था उसे आर्थिक सहायता दी गई। मेवाड़ प्रजामडल के कार्यकर्ताओं ने वर्माजी के निर्देशन मे अकाल सहायता कार्य जिस निष्ठा और लगन से किया उसकी प्रशंसा राज्य के अधिकारियो ने भी की थी।

जिस समय मेवाड़ भीषण दुर्भिक्ष की विभीषिका का सामना कर रहा था। मेवाड़ प्रजामंडल के कार्यकर्ता उससे युद्ध कर रहे थे, मेवाड प्रजामडल के प्राण ,तथा सर्वमान्य नेता वर्माजी जेल मे थे। श्री ऋषिदत्त मेहता ने अपने पत्र "राजस्थान" के द्वारा इस बात की ओर राज्य का ध्यान भी दिलाया परन्तु मेवाड सरकार ने इस कठिन समय मे भी वर्माजी को कारगार से मुक्त करना उचित नही समझा।

वर्माजी का जेल मे स्वास्थ्य वहुत खराव हो गया। एक तो पकड़े जाने पर उनकी भयंकर पिटाई की गई थी उससे उनके शरीर और विशेष हड्डियो और जोडो मे दर्द रहने लगा था साथ ही जेल मे मिट्टी मिले हुए जौ के आटे की रोटिया खाने के कारण उनका पेट वहुत खराव हो गया और रह रह कर पेट मे दर्द उठता जो असह्य हो जाता। उनके पेट में अलसर हो गए थे जो वहुत कष्ट देते थे। कभी कभी उन्हें खून के दस्त हो जाते थे। वर्माजी का स्वास्थ्य गिरने लगा। उनके स्वास्थ्य के सम्वन्व मे सभी चिन्तित हो उठे। समाचारपत्रो मे उनके स्वास्थ्य के सम्वन्ध मे चिन्ता व्यक्त की जाने लगी। मेवाड़ सरकार ने उन्हे कुम्भलगढ ले जाकर वहा एकान्त मे कैद कर दिया।

कुम्भलगढ में वर्माजी के पेट का रोग और अधिक वढ गया। उनका स्वास्थ्य इतना अधिक गिर गया कि स्थिति चिन्ताजनक हो गई थी। डाक्टरो ने राज्य सरकार को उनके गिरते हुए स्वास्थ्य के सम्वन्ध में सावधान कर दिया। राम्य सरकार ने वर्माजी को अजमेर हास्पिटल मे इलाज के लिए भेजा और वहां उन्हे रिाह कर दिया गया। वर्माजी को ८ जनवरी १९४८ को रिहा किसा गया।

अजमेर के डाक्टरो ने वर्माजी की जाच की और वतलाया कि उनको एपेन्डिसाइटिस (आत वृद्धि) का रोग है। जव सेठ जमुनालाल जी को वर्माजी की गम्भीर अस्वस्थता और रिहाई का समाचार मिला तो उन्होने तार देकर वर्माजी को बम्बई इलाज के लिए वुला भेजा और वहा प्रसिद्ध चिकित्सालय जे जे. हास्पिटल मे उनकी जाच हुई और चिकित्सा हुई। गाधीजी के चिकित्सक श्री देशमुख ने उनको चिकित्सा की। श्री देशमुख ने उनकी चिकित्सा करने के उपरान्त वर्माजी से कहा कि यह बीमारी जीवन पर्यन्त जानेवाली नही है जव भी यह उभरे अन्न खाना छोड़ केवल दूध पीना चाहिए। वर्माजी ने उनके परामर्श के अनुसार ही भविष्य में अपनी जीवनचर्या रक्खी। लेखक जव उनकी डायरियो को पढ रहा था तो भावी जीवन में अनेक स्थलो पर वे लिखते आज पेट में दर्द शुरू हुआ अतएव मैने अन्न छोड़ दिया है और कई दिन तक वे केवल दूध पर ही रहते। वास्तव मे मेवाड़ जेल मे कैद रहने पर जो उन्हे पेट की बीमारी हो गई वह जीवन पर्यन्त उन्हे परेशान करती रही वे कभी रोग मुक्त नही हुए। मेवाड जेल के कारण उनका स्वास्थ्य स्थायी रूप से

खराव हो गया सम्भवत: देश भक्तो को देश के लिए सर्वस्व अर्पण कर देने का यही पुरस्कार मिलता है कि उनको यातना और उत्पीड़न मिले, उनके जीवन का लम्बा भाग जेल में व्यतीत हो और उसके कारण उनका स्वास्थ्य जीवन भर के लिए जर्जर हो जावे।

उसी समय महात्मा गांधी ने वर्माजी को यह आदेश दिया कि मेवाड़ प्रजामंडल सत्याग्रह बंद कर दे। महात्माजी के आदेशानुसार वर्माजी ने सत्याग्रह रोक दिया। महात्माजी की युद्ध पद्धति ही यह थी। वे एक अवधि तक सत्याग्रह चलने के उपरान्त उसको इसलिए रोक देना उचित समझते थे कि सरकार को अपनी नीति के संबंध मे पुन विचार करने का तथा नीति परिवर्तन का अवसर दिया जाय। अस्तु उन्होने मेवाड प्रजामडल को सत्याग्रह बद करने का आदेश दे दिया। यह भी संभव है कि महात्माजी को किसी सूत्र से यह सकेत मिला हो कि राज्य की नीति मे परिवर्तन आरहा है अस्तु प्रजामडल को सत्याग्रह बद कर देना चाहिये जिससे कि मेवाड़ का वातावरण क्षुब्ध न रहकर शान्त हो। जो भी हो महात्माजी के आदेश पर मेवाड़ प्रजामंडल ने सत्याग्रह बद कर दिया।

जेल से छूटने के उपरान्त वर्माजी ने प्रजामंडल के कार्यकर्ताओ का भीलवाड़े में एक सम्मेलन बुलाया। कार्यकर्ता सम्मेलन मे सर्वसम्मत से यह निश्चय किया कि मेवाड़ मे बेगार और बलेठ प्रथा बहुत अधिक प्रचलित है सर्वसाधारण निम्न वर्ग के लोग इससे बहुत दु:खी हैं, राज्य कर्मचारी मनमाने ढग से अत्याचार करते है अस्तु इसके विरुद्ध आन्दोलन किया जावे। जब प्रजामडल के कार्यकर्ताओ ने स्थान स्थान पर सभाए करके तथा समाचारपत्रो मे बेगार और बलेठ के विरुद्ध प्रचार करना आरंभ कर दिया तो मेवाड सरकार ने बेगार और बलेठ प्रथा निषेध कानून बनाकर उस प्रथा को मेवाड़ राज्य मे समाप्त कर दिया। मेवाड़ प्रजामडल की यह पहली नैतिक विजय थी। वर्माजी जानते थे कि केवल कानून बन जाने से ही बेगार प्रथा समूल रूप से समाप्त नही हो जावेगी, अस्तु उन्होने कार्यकर्ताओ को आदेश दिया वे लोगो को इस कानून से अवगत करावें उन्हे समझावे कि उन्हे बेगार नही देना चाहिये। यदि उनसे कोई राज्य कर्मचारी या जागीरदार बेगार ले तो वे कार्यकर्ता को बतावे और कार्यकर्ता राज्य अधिकारियो से इस सबध मे मिलकर बेगार लेने के विरुद्ध कार्यवाही करें। प्रजा मंडल के कार्यकर्ताओ के बेगार के विरुद्ध प्रचार करने तथा दोषी व्यक्तियो के विरुद्ध कार्यवाही करने का परिणाम यह हुआ कि मेवाड मे बेगार प्रथा बन्द हो गई और निम्न वर्ग के लोगो किसानो, भीलो, आदि को उससे मुक्ति मिल गई।

राज्य प्रजामडल के प्रभाव को कम करना चाहता था अतएव उसने ८ जुलाई १९४० को उदयपुर मे म्यूनिसीपेलटी नगरपालिका स्थापित करने की पहल की। उदयपुर नगरपालिका की योजना प्रकाशित की। वह योजना जनतांत्रिक सिद्धांतो के विरुद्ध थी। उसमे मनोनीत सदस्यो का बहुमत था। वर्मा जी ने इसका कडा विरोध किया सभाए करके तथा पत्रो मे लेख लिखवाकर इस योजना का कड़ा विरोध किया गया। राज्य को विवश होकर उसमे सशोधन करने पडे। इसके उपरान्त म्यूनिसीपेलटी के

चुनाव हुए परन्तु क्योकि मेवाड़ प्रजामंडल पर पावन्दी लगी हुई थी वह अब भी गैर कानूनी था इस कारण वर्माजी ने यह निश्चय किया प्रजामडल के कार्यकर्ता चुनावो का बहिष्कार करे। प्रजामडल का कोई कार्यकर्ता चुनावो मे खड़ा नही हुआ।

उसी समय १९४० में वर्षा अधिक होने के कारण कपासन का तालाव फूट गया और उसकी तलहटी मे वसा गांव बह गया। गांव के लोग वेघरबार के हो गए उनकी बहुत हानि हुई। वर्मा जी प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओ को लेकर वहा पहुचे और वहा सेवा कार्य किया। गांव वालो को पुन वसाने उनकी कठिनाइयो को दूर करने मे जुट गए।

प्रजामण्डल पर से पाबंदी उठी :

परन्तु अभी तक प्रजामण्डल पर से पावदी नही उठी थी इस कारण केवल कार्यकर्ता सेवाकार्य तथा रचनात्मक कार्य करते थे तथा गांधी जयन्ती तथा राष्ट्रीय पर्वों को मनाकर और खद्दर प्रचार के द्वारा जनता मे राष्ट्रीय विचारो का प्रचार करते थे परन्तु वे राजनैतिक आधार पर कोई सगठिन कार्य नही कर सक्ते थे। वर्माजी ने देखा कि यह स्थिति वांछनीय नही है यदि प्रजामण्डल राजनीतिक सगठन के रूप मे सक्रिय नही हुआ तो राज्य उत्तरदायी शासन कभी भी नही देगा। छोटी मोटी सुविधाएं तथा सुधार करके सर्वसाधारण का ध्यान और शक्ति मूल प्रश्न से हटाने का प्रयत्न करता रहेगा। सर्व साधारण उन थोथी सुविधाओ और अधिकारों मे उलझ जावेंगे और उसमें सही अर्थों मे राजनीतिक चैतन्य का उदय नही होगा, अस्तु उन्होने मेवाड़ प्रजामंडल पर से प्रतिवन्ध उठाने के लिए आदोलन करने का निश्चय किया। वर्माजी के नेतृत्व मे प्रजामन्डल पर से प्रतिबन्ध उठाये जाने का आंदोलन आरम्भ हुआ। सभाएं की जाने लगी पत्रो मे मेवाड़ प्रजामन्डल पर से प्रनिबन्ध उठाये जाने के सम्बन्ध मे लेख लिखे जाने लगे। वर्माजी की योजना यह थी कि यदि मेवाड सरकार प्रजामन्डल पर से प्रतिबन्ध नही उठाती तो पुन सत्याग्रह आरम्भ किया जावे परन्तु वे मेवाड सरकार को थोडा समय देना चाहते थे। इसका कारण यह था कि १९४० के मध्य मे मेवाड़ में सर टी. विजय राघवाचार्य दीवान बनकर आ गए थे। वे एक अनुभवी प्रगतिशील प्रशासक थे वर्माजी उन्हे समय देना चाहते थे कि वे राज्य की नीति मे परिवर्तन ला सकें। अतएव उन्होने मेवाड़ प्रजामडल पर से प्रतिवन्ध उठाने के लिए उग्र आदोलन खड़ा नही किया वरन सभाओ, पत्रों तथा समाचारपत्रो द्वारा ही मेवाड़ सरकार का ध्यान आकर्षित किया।

वर्माजी ने महाराणा साहब तथा दीवान श्री सर टी. विजयराघवाचार्य को मेवाड़ प्रजामन्डल पर से प्रतिवन्ध उठाने के लिए एक लम्बा स्मरणपत्र लिखा और मेवाड प्रजामन्डल के कार्यकर्ताओ का एक प्रतिनिधि मण्डल वर्माजी के नेतृत्व मे दीवान श्री सर विजयराघवाचार्य से मिला।

दीवान सर टी. विजयराघवाचार्य ने देख लिया कि यदि प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध नही उठा तो उग्र आदोलन उठ खड़ा होगा। वे मेवाड़ मे जो शासन सुधार करना चाहते थे वे नही कर सकेंगे। फिर देश के अन्य देशी राज्यो मे राज्यो की नीति

मे परिवर्तन हो रहा था अस्तु उन्होने मेवाड सरकार की नीति मे परिवर्तन कर उसे अधिक उदार वनाने का प्रयत्न किया। फलस्वरूप महाराणा साहब के जन्मदिन २२ फरवरी १९४१ को मेवाड प्रजामडल को स्वतत्रतापूर्वक राजनीतिक कार्य करने की छूट मिल गई।

वर्मा जी ने प्रजामडल पर से प्रतिवध उठाये जाने का स्वागत किया और प्रजामडल के कार्यकर्ताओ को आदेश भेजा कि वे दो कार्यों में अपनी शक्ति लगावें, प्रथम वे प्रजामंडल की शाखाओ की स्थापना करे प्रजामडल के अधिकाधिक सदस्य बनावें जिससे कि मेवाड प्रजामडल का एक सुदृढ सगठन जिला परगना तथा ग्राम स्तर तक खड़ा हो जावे। उन्होंने कार्यकर्ताओ को यह भी आदेश दिया कि वे स्थानीय समस्याओ की ओर मेवाड सरकार विशेषकर प्रगतिशील दीवान का ध्यान आकर्षित करे तथा भ्रष्ट और निकम्मे राज्य अधिकारियो की शिकायते उनके पास भेजे जिससे मेवाड़ का शासन भ्रष्ट और निकम्मे अधिकारियो से मुक्त हो सके और सर्वसाधारण उनके अत्याचार और शोषण से वचे।

वर्माजी के कार्यकर्ताओ को इस आदेश का परिणाम यह हुआ कि मेवाड़ प्रजामंडल के सदस्य बनाने तथा उसकी शाखाए स्थापित करने मे जुट गए और दीवान सर टी विजयराघवाचार्य के पास भ्रष्ट और निकम्मे अधिकारियो के सवध में विस्तृत विवरण तथा स्थानीय समस्याओ की जानकारी पहुँचने लगी।

दीवान सर टी विजयराघवाचार्य प्रजामडल की शिकायतो की जांच करते दोषी अधिकारियो को दण्ड देते थे। इसमे प्रजामडल का सर्वसाधारण पर प्रभाव वहुत वढ गया। लोगो को यह विश्वास हो गया कि प्रजामडल के द्वारा उनकी कष्ट गाथा सरकार तक प्रभावशाली ढग से पहुँचायी जा सकती है और उसका प्रतिकार किया जा सकता है।

श्री रमेशचन्द्र व्यास की रिपोर्ट पर तत्कालीन भीलवाडा हाकिम (जिलाधीश) को वहा से हटा दिया गया। महाराणा साहब के मुह लगे और कृपा पात्र हेल्थ सुपरिटेन्डेन्ट (स्वास्थ्य विभाग के सर्वोच्च अधिकारी) श्री छगननाथ को इस आरोप पर राजकीय सेवा से च्युत कर दिया कि जव राज्य में हैजे का प्रकोप हुआ तो उन्होने अपने कर्त्तव्य को पालन नही किया रोग की रोकथाम मे लापरवाही वरती। इसी प्रकार श्री प्यारेलाल लाल जिला हाकिम जो श्री लाला अमृतलाल के पुत्र थे के विरुद्ध प्रजामडल के कार्यकर्त्ताओ ने रिश्वत लेने तथा वाढ पीड़ितो की सहायता करने मे लापरवाही की शिकायते की और उन्हे सत्य पाया गया तो दीवान महोदय ने उन्हे भी राजकीय सेवा से च्युत कर दिया।

इस प्रकार अनेक भ्रष्टाचारी और निकम्मे राज्य कर्मचारियो के विरुद्ध प्रजामडल के कार्यकर्त्ताओ ने राज्य सरकार को जानकारी देकर उनके अत्याचारो और शोषण से जनता को मुक्ति दिलाई उससे सर्वसाधारण मे प्रजामडल का प्रभाव वढा। वर्मा जी की यह युक्ति और यह सूझ प्रजामंडल को लोकप्रिय बनाने मे बहुत कारगर सिद्ध हुई।

प्रजामण्डल का पुनर्गठन :

वर्माजी के आदेश के अनुसार कार्यकर्ताओ ने प्रजामण्डल के सदस्य बनाना आरम्भ किया। और जिला तथा परगना शाखाए स्थापित करली। प्रतिबन्ध हटने के उपरान्त आठ महीने के अन्तर्गत वर्माजी के अथक परिश्रम और दौडधूप के परिणामस्वरूप प्रजामण्डल का एक शक्तिशाली सगठन खडा हो गया।

प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन :

द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया था। ब्रिटेन अपने जीवन मरण मे फसा हुआ था। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने काग्रेस का ब्रिटिश साम्राज्यवाद के चगुल से भारत को स्वतन्त्र करने के लिए अन्तिम सघर्ष छेडने के लिए आवाहन किया था परन्तु कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओ ने उनकी बात न मानकर ब्रिटिश सरकार को युद्ध के समय उलझन और परेशानी मे डालना उचित नही समझा। नेताजी को काग्रेस से हटना पडा। उन्होने अग्रगामी दल की स्थापना की और ब्रिटिश सरकार से समझौता के विरुद्ध वातावरण उत्पन्न कर दिया तथा उन्होने भारत से निकलकर आजाद हिन्द सेना का गठन किया। भारत के राजनीतिक मच पर घटनाए तेजी से घट रही थी देश मे राजनीतिक परिवर्तन शीघ्र आवेगा उसके चिह्न दृष्टिगोचर हो रहे थे। वर्माजी आने वाले उस राजनीतिक परिवर्तन के समय मेवाड़ मे उत्तरदायी शासन की स्थापना हो सके उसके लिए सचेष्ट और कृतसकल्प थे। वे जानते थे कि यदि मेवाड प्रजामण्डल का संगठन तेजवान और सुदृढ न बन सका तो जब उत्तरदायी शासन की स्थापना होगी तो प्रतिक्रियावादी वर्ग उसका लाभ उठाने का प्रयत्न करेगा। और यदि प्रजामण्डल सशक्त न बन सका तो उत्तरदायी शासन की स्थापना के उपरान्त भी जनता को वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त न हो सकेगी। अस्तु उन्होने प्रजामण्डल को मेवाड की बीस लाख जनता का सच्चे अर्थो मे प्रतिनिधित्व करने के लिए एक सबल और तेजवान सगठन बनाने का प्रयत्न किया।

यद्यपि प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध उठे केवल आठ महीने ही हुए थे, सदस्य संख्या हजारो मे पहुच गई थी, परन्तु प्रत्येक जिले और परगने मे प्रजामण्डल की शाखा सुदृढ और सक्रिय नही हो पाई थी। फिर भी उन्होने मेवाड प्रजामण्डल का प्रथम वार्षिक अधिवेशन वृहद रूप मे करने का निश्चय किया। उनकी धारणा थी कि मेवाड प्रजामंडल के अधिवेशन को बडे रूप और धूमधाम से करने से प्रजामण्डल का बहुत अधिक प्रचार होगा, मेवाड की जनता अनायास ही उसकी ओर आकर्षित होगी, देश के चोटी के राजनीतिक नेताओ के विचारो को मेवाड की प्रजा को सुनने का अवसर मिलेगा इससे प्रजामण्डल की शक्ति मे वृद्धि होगी और प्रतिक्रियावादी वर्ग को अपनी शक्ति मे वृद्धि करने का अवसर नही मिलेगा।

अस्तु उन्होने बहुत बडी तैयारी के साथ प्रजामण्डल का अधिवेशन बुलाया। आचार्य कृपलानी और श्रीमती विजयलक्ष्मी पडित उस अधिवेशन मे सम्मिलित हुए। मेवाड़ के सुदूर ग्रामो से मेवाड़ के ग्रामीण जन उस अधिवेशन मे आए। यही नही

शाहपुरा, डूंगरपुर तथा बांसवाडा, राज्यो के कार्यकर्ता तथा राजस्थान के राजनीतिक कार्यकर्ता भी उसमे बडी संख्या मे सम्मिलित हुए। लेखक उस समय बरेली मे प्रोफेसर था। वर्माजी के आग्रह भरे निमन्त्रण को टाल न सका और वह भी उस अधिवेशन मे सम्मिलित हुआ। उस प्रथम विशाल अधिवेशन का मेवाड़ी जन-समूह पर गहरा प्रभाव पडा। लगभग दस हजार जन-समूह ने अधिवेशन मे भाग लिया। उस ऐतिहासिक मेवाड प्रजामण्डल के अधिवेशन का प्रभाव डूगरपुर, शाहपुरा और बांसवाडा के राजनीतिक कार्यकर्ताओ पर वहुत गहरा हुआ उससे प्रेरणा प्राप्त कर वे अपने अपने राज्यो मे अधिक सक्रिय हुए और वहां भी सगठन खडे हो गए।

जब अधिवेशन मे अपने अध्यक्षीय भाषण मे उत्तरदायी शासन की मेवाड़ में अविलम्ब स्थापना के लिए सर्वस्व निछावर कर देने के अपने सकल्प को दोहराते हुए वर्माजी ने भाषण के अन्त मे जो अपने सम्बन्ध मे शब्द कहे थे वे आज भी लेखक के कानो मे गूंज रहे हैं। उनके वे शब्द नीचे लिखे थे—

"मै आप लोगो से यह प्रार्थना करता हूं कि आपने मेरी इच्छा से या अनिच्छा से अध्यक्ष पद मुझे दिया है। मै आपके प्रेम का आभार मानता हूं। किन्तु साथ ही यह भी आपसे चाहता हूँ कि जिस आशा को लेकर आपने मुझे यह ड्यूटी दी है उसमे आपका पूरा साथ रहे। मुझे आप अध्यक्ष बनावे या सिपाही मै तो किसी भी पद पर किसी भी दशा मे आपका चाकर हूं। मेरी चाह यह है कि मै आपकी सेवा के लिए जिन्दा रहूँ और सेवा के लिए ही मरू और रात दिन पगली मीरा की तरह "म्हारे तो ओ हिन्द देश, दूसरो न कोई" गाता रहूं।" (वर्माजी के प्रथम अधिवेशन पर दिए गए अध्यक्षीय भाषण से)

अपने जीवन मे वर्माजी ने उस भाषण में व्यक्त की गई सेवा भावना को अक्षर अक्षर सत्य कर दिया। जीवन की अन्तिम घडी तक वे केवल पिछडे पीड़ित और शोषित जन समुदाय के लिए खपते रहे। उन्होने महान क्रातिकारी श्री विजयसिंह पथिक से देशभक्ति और आजन्म देश सेवा की जो दीक्षा ली थी उसको अपने जीवन के अतिम दिन तक वे नही भूले उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन देश की सेवा मे खपा दिया।

वर्माजी ने २५, २६ नवम्बर १९४१ को हुए मेवाड़ प्रजामण्डल के इस प्रथम अधिवेशन मे निम्नलिखित आशय के प्रस्ताव रखे और उन्हे पारित करवाया।

प्रथम प्रस्ताव—उन्होने उत्तरदायी शासन की स्थापना की अविलब मांग की और प्रजामण्डल का यह निश्चय दोहराया कि मेवाड़ मे उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए प्रजामण्डल सतत प्रयत्नशील रहेगा और उसके लिए जो त्याग और कष्ट सहने पडें सहेगा।

दूसरे प्रस्ताव के द्वारा प्रजामडल ने मेवाड़ सरकार द्वारा राज्य मे धारासभा स्थापित करने के विचार का स्वागत किया परन्तु इस संबध मे २९.४-४१ के मेवाड़ गजट मे प्रकाशित धारा सभा की योजना पर विचार करने के उपरान्त प्रजामंडल इस परिणाम पर पहुँचा कि धारा सभा की इस योजना का उद्देश्य जनता को पूर्ण उत्तरदायी

शासन की ओर ले जाना नही है। प्रस्तावित योजना मे जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियो को सच्चा बहुमत प्राप्त नही होता। मतदाताओ के लिए रखी गई योग्यताए काफी ऊंची है और धारा सभा को दिये जानेवाले अधिकार अत्यन्त नियन्त्रित और सीमित है। अतएव मेवाड़ प्रजामडल की निश्चित राय है कि धारा सभा की योजना मे कम से कम नीचे दिये गये सुझावो के आधार पर सुधार होना अत्यत आवश्यक है।

प्रत्येक बालिग स्त्री पुरुष को मत देने का अधिकार हो। धारा सभा मे मत्रियो का उपस्थित रहना अनिवार्य हो तथा राज्य के बजट पर धारा सभा की स्वीकृति आवश्यक हो। धारा सभा मे चुने हुए जनता के प्रतिनिधियो का बहुमत हो।

नागरिक अधिकार :

एक प्रस्ताव द्वारा प्रजामडल ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि मेवाड़ राज्य मे सभा करने, भाषण देने, सस्था स्थापित करने, सम्मेलन बुलाने तथा प्रेस सबंधी स्वतत्रता नही है। सरकार अविलब ऐसे कानूनो को रद्द करे।

मेवाड़ सरकार ने उन व्यक्तियो पर से और पत्रो पर से प्रजामडल के बार-बार अनुरोध करने पर भी स्थायी रूप से प्रतिबँध नही हटाया केवल दस दिन के लिए अस्थायी रूप से हटाया इस पर सम्मेलन शोक प्रकट करता है।

वर्तमान शासनव्यवस्था :

प्रजामडल का अधिवेशन राज्य की आय को व्यय करने की पद्धति पर गहरा असतोष व्यक्त करता है। बड़े राज्य अधिकारियो को बहुत ऊचा वेतन और छोटे कर्मचारियो को बहुत कम वेतन दिया जाता है जिससे शासन मे गडबड़ी और रिश्वतखोरी उत्पन्न होती है। शिक्षा, चिकित्सा, ग्रामसुधार तथा सार्वजनिक निर्माण कार्य पर बहुत कम व्यय होता है।

किसान :

प्रजामडल का यह अधिवेशन मेवाड़ के किसानो की शोचनीय दशा के प्रति गम्भीर चिन्ता व्यक्त करता है। वे कर्ज के भार से दब गए है। किसानो के कर्ज को कम करने के लिए राज्य को कारगर योजना काम मे लानी चाहिए। जहां वर्षा के अभाव मे सूखा पड़ जावे वहा लगान मे उचित छूट दी जावे। सिंचाई के नए साधन उपलब्ध किए जावे, जगलात मे जरूरी सुविधाए दी जावें। कृषि और ग्रामसुधार की व्यापक योजनाए हाथ में ली जावे।

व्यापार व्यवसाय और मजदूर :

मेवाड औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ राज्य है। मेवाड़ सरकार ने जो एकाधिकार और अनुचित सरक्षण की नीति अपनाई है उसे प्रजामण्डल मेवाड की आर्थिक उन्नति की दृष्टि से घातक समझता है मेवाड़ की कस्टम (दाण) नीति भी

अत्यत दोषपूर्ण है साथ ही भाषा जैसी अवाछनीय और स्वतन्त्र व्यापार मे बाधक होने वाली पद्धति का प्रचलित रहना भी मडल अनुचित समझता है। मेवाड प्रजामडल की यह मान्यता हे कि एकाधिकार तथा अनुचित सरक्षण की नीति को अविलम्ब समाप्त किया जाना चाहिए।

जागीरी जनता :

जागीरी जनता का बुरी तरह शोषण हो रहा है। सरकार को वे सब कानून जागीरो मे भी लागू करने चाहिए जो कि खालसा मे लागू है। जागीरी जनता के शोषण को शीघ्र समाप्त किया जावे।

ऊपर लिखे प्रस्तावो से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्माजी के नेतृत्व मे मेवाड़ प्रजामडल की नीति अत्यन्त प्रगतिशील थी और वह राज्य सरकार से भिक्षा मागने की भाषा मे अनुनय विनय करने की परम्परा को तिलाजलि देकर स्वाभिमान भरे शब्दो मे बोल रहे थे। मेवाड़ प्रजामडल के प्रथम अधिवेशन से जो प्रजामडल के पक्ष मे अनुकूल वातावरण बना था उसका वर्मा जी ने पूरा पूरा लाभ उठाया। एक बार उन्होने पुन मेवाड़ का दौरा किया मेवाड प्रजामडल की शाखाए प्रत्येक जिले और परगने मे स्थापित करदी और मेवाड प्रजामडल के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए नवयुवको को प्रजामडल की ओर आकर्षित किया।

प्रजामडल के सगठन को सुदृढ बनाने के अतिरिक्त उन्होने अपने मेवाड के दौरे का उपयोग मेवाड़ के जनमत को जाग्रत करने, मेवाडियो मे राजनीतिक चैतन्य का उदय करने के लिए भी किया। किसानो तथा अन्य पिछड़े वर्गो को राज्य के कानूनो के अन्तर्गत जो सुविधाए प्रजामडल के प्रयत्न से मिली थी वे उनका व्यापक लाभ उठावे इसके लिए वर्मा जी ने उनको प्रशिक्षित करने का कार्यक्रम भी अपने दौरे के साथ जोड़ दिया।

जहां भी वे जाते प्रजामडल के सगठन को दृढ बनाते, जहा शाखा नही थी वहा शाखा स्थापित करते, सेवाभावी राजनीतिक दृष्टि से जागरूक कार्यकर्ताओ को प्रजामडल में कार्य करने के लिए आवाहन करते। किसानो द्वारा राज्य के विरुद्ध वातावरण तैयार करते थे, और समाजसुधार का कार्य भी साथ साथ करते थे।

वर्मा जी प्रजामडल को मेवाड़ के बीस लाख मेवाडियो के राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक विकास का माध्यम बनाना चाहते थे। यही कारण था कि जहां वे एक ओर उत्तरदायी शासन की स्थापना पर बल देते थे उसके लिए आदोलन करते थे वहा दूसरी ओर यदि जागीरदार किसानो पर अत्याचार करते तो वे किसानो की सहायता के लिए दौड़ जाते। यदि दुर्भिक्ष पड़ता तो प्रजामडल के कार्यकर्ता दुर्भिक्ष सहायता मे जुट जाते। यदि बाढ आती तो बाढ पीड़ितो की सेवा के लिए वर्मा जी के नेतृत्व मे प्रजामडल कार्य करता। यदि मिल मालिको और मजदूरो मे सघर्ष होता तो वर्मा जी मजदूरो की सहायता के लिए दौड़ जाते।

२९ जून १९४२ को भीलवाड़ा के सूती कपड़े के कारखाने में भीषण असतोष

फूट पड़ा, २५० मजदूर वर्माजी के पास मार्गदर्शन के लिए आए। वर्माजी ने उन्हे सलाह दी कि वे मिल मालिक को कोई बात लिखकर न दे। आदिवासियो को प्रजामण्डल के प्रयत्न से जो सुविधाए मिली और उनकी भलाई के कानून बने उनकी जानकारी देने तथा उनको अपने समाज मे प्रचलित कुरीतियो को समाप्त करने की प्रेरणा देते थे।

उदाहरण के लिए १० जून १९४२ को जब श्री माणिक्यलाल वर्मा मोमट के दौरे पर गए तो मोमट के भीलो से उन्होने कहा कि राज्यकर्मचारियो को बेगार या खाने पीने की वस्तुए बिना मूल्य न दे यदि कोई राज्यकर्मचारी उचित मजदूरी दे और वस्तुओ का उचित मूल्य दे तभी उनको वे वस्तुएं दी जावे। वर्माजी ने केवल उनके आर्थिक हित की बाते ही उनसे नही कही वरन उनसे यह भी कहा कि चोरी करना और शराब पीना छोड़दे और अपने बच्चो को पढाना शुरू करे। उन्होने बहुत से भीलो से शराब न पीने की प्रतिज्ञा भी कराई।

किसानो से उन्होने बेगार न देने तथा जागीरदार को पैदावार का एक तिहाई से अधिक लगान के रूप मे न देने के लिए कहा।

वर्माजी के कार्य करने की पद्धति यह थी कि वे केवल राजनीतिक आदोलन तक ही अपने कार्य को सीमित नही रखते थे वरन किसान तथा पिछडे वर्ग मे जो भी कुरीतिया घर कर गई थी उन्हे भी दूर करवाने का प्रयत्न करते थे।

भीलवाड़ा सूती कपडे के मजदूर हडताल करने का विचार कर रहे थे क्योकि मिल मालिक ने उनकी महगाई भत्ते की माग अस्वीकार करदी थी। वस्तुओ का मूल्य आकाश छू रहा था मिल को कल्पनातीत लाभ हो रहा था परन्तु मिल मालिक महगाई भत्ता देने के लिए तैयार न था। मिल मालिक ने मजदूरो की शक्ति को कम करने तथा उनको वर्माजी तथा प्रजामडल से विमुख करने के लिए ४ बजे सायकाल को ही मिल बद करदी और मजदूरो को अपने बगले पर बुलाकर कहा कि तुम लोग प्रजामडल के नेता वर्माजी के पास न जाकर समझौता करलो। मिल मजदूर बिना वर्माजी के समझौता करने के लिए तैयार नही हुए। उन्होने कहा कि वर्माजी को बुलाया जाय तभी वे समझौते की बातचीत कर सकते है। मिल मालिको की अनिच्छा होते हुए भी मजदूरो के बुलावे पर श्री माणिक्यलाल वर्मा, श्री भवरलाल भदादा तथा श्री रूपलाल सोमानी मिल मे गए। वर्माजी ने मजदूरो से कहा कि तुम लोग एका रक्खो तुम्हे महगाई भत्ता अवश्य मिलेगा। वर्माजी ने मिल के मैनेजिग डायरेक्टर से बात कर आठ आना प्रति रुपया महगाई भत्ता देने के लिए स्वीकृति प्राप्त करने के बाद मजदूरो की सभा की और उन्हे बतलाया कि कारखाने के व्यवस्थापक ने आठ आना प्रति रुपया महगाई भत्ता देना स्वीकार कर लिया है। अतएव अब उन्हे काम पर जाना चाहिए। मजदूरो मे से कुछ श्री इब्राहीम छीपा के नेतृत्व मे यह चाहते थे कि मजदूरो को हडताल कर देनी चाहिए जिससे कि मिल मालिक उनमे फूट न डाल सके।

वर्माजी ने इसे मजदूरो की निर्बलता की सज्ञा दी उन्होने कहा कि यह मजदूरो के हित मे नही है अतएव उन्हे काम पर जाना चाहिए। वर्माजी ने मजदूरो को वापस

काम पर भेजा। इसके उपरान्त वर्माजी ने भीलवाडा मे मजदूर संगठन खडा कर दिया। वास्तव मे भीलवाडा मे जो मजदूर सगठन खडा हुआ उसको आरम्भ करने का श्रेय वर्मा जी को है।

इमी प्रकार जब राज्य किसानो से बहुत कम मूल्य देकर अनाज खरीदने लगा तो उन्होने इस अत्याचार के विरुद्ध प्रबल आवाज उठाई। प्रजामडल की ओर से इस अत्याचार का घोर विरोध किया जिसके परिणाम स्वरूप सरकार के अधिकारियो का अत्याचार कम हुआ और राज्य ने अनाज की कुछ अधिक कीमत देना स्वीकार किया।

कहने का तात्पर्य यह कि वर्मा जी के नेतृत्व मे मेवाड़ प्रजामडल एक सबल जनसगठन बन गया। बीस लाख मेवाड़ियो का वह केवल प्रतिनिधित्व ही नही करता था वरन् वह मेवाड़ियो की भावना का प्रतीक और उनकी प्रेरणा का स्रोत बन गया था। जो भी सकट या समस्या उपस्थित होती उसके समाधान के लिए मेवाड़ की जनता प्रजामडल की ओर देखती थी।

सच तो यह है कि मेवाड प्रजामडल स्थापित करने का विचार केवल मात्र वर्मा जी की सूझ थी और उनके अथक परिश्रम और लगन का ही यह परिणाम था कि १९३२ तक प्रजामडल एक शक्तिशाली और तेजवान सगठन बन गया था। मेवाड़ प्रजामण्डल वर्मा जी के व्यक्तित्व के साथ मानो एकाकार हो गया था।

अध्याय सातवां

भारत छोड़ो आंदोलन (१९४२)

१९३७ में भारत की राजनीति मे एक मोड आया। १९३५ के विधान के अन्तर्गत प्रान्तो मे चुनाव हुए और बहुत से प्रान्तो में कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ। कांग्रेस को प्रान्तो मे मन्त्रिमडल बनाना चाहिए या नही इस प्रश्न को लेकर कांग्रेस में गहरा मतभेद खड़ा हो गया। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व मे वामपक्ष प्रांतो मे मन्त्रिमडल बनाने का विरोधी था नेताजी का मानना था कि जब तक देश स्वतन्त्र न हो जावे तब तक प्रातो मे पद स्वीकार कर लेने का परिणाम यह होगा कि देश मे क्रांतिकारी भावना मद जावेगी और विधानवादी मनोवृत्ति उत्पन्न होगी। कांग्रेस के कार्यकर्ता सुधारवादी मनोवृत्ति अपनावेगे और अवसरवादिता तथा पदलोलुपता मे वृद्धि होगी। नेताजी की मान्यता थी कि पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त किये बिना और अंग्रेजो को भारत से निकाले बिना प्रातो मे मन्त्रिमडल स्वीकार करना देश के लिए घातक सिद्ध होगा परन्तु बहुत वादविवाद होने के पश्चात् कांग्रेस ने प्रातो मे मन्त्रिमण्डल बनाना स्वीकार कर लिया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसी दिन से कांग्रेस का नेतृत्व शिथिल हो गया वह ब्रिटिश साम्राज्यवाद से जहा तक सभव हो सघर्ष टालने का प्रयत्न करने लगा।

परन्तु प्रान्तो मे इस परिवर्तन का देशी राज्यो पर कोई प्रभाव नही पड़ा क्योंकि देशी राज्य तो दोहरी गुलामी मे पिस रहे थे। हा ब्रिटिश प्रान्तो मे जो यह राजनीतिक परिवर्तन आया उसका देशी राज्यो पर यह प्रभाव अवश्य पडा कि वहां प्रजामण्डलो द्वारा उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए आदोलन अधिक उग्र हो गया। ब्रिटिश प्रान्तो के इस परिवर्तन का एक परिणाम यह भी आया कि देशी राज्यो के नरेश भी इस प्रश्न पर सोचने लगे कि प्रजा को सतुष्ट रखने के लिए क्या किया जावे। वे भी थोथे सुधारो द्वारा प्रजा को सतुष्ट करने के उपाय सोचने लगे।

मेवाड प्रजामण्डल भी श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व मे उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए अधिक सक्रिय हुआ। कांग्रेस की नीति अभी तक यही थी कि वह सीधे देशी राज्यो मे कोई आदोलन नही करती थी। हां कांग्रेस के कतिपय नेता देशी राज्यो की राजनीति मे रूचि अवश्य लेते थे और प्रजामण्डलो का मार्ग निर्देशन करते थे

यद्यपि देशी राज्य प्रजापरिषद विद्यमान थी परन्तु प्रजामण्डल उसकी शाखाये नहीं थे प्रत्येक देशी राज्य का पृथक प्रजामण्डल था। अखिलभारतीय देशी राज्य परिषद उनका एक अखिल भारतीय मच था। यही कारण था कि प्रत्येक देशी राज्य प्रजामण्डलो की शक्ति और प्रभाव एक समान नही था। जहां कार्यकर्ता अधिक साहसी और क्रियाशील थे वहा प्रजामण्डल अधिक क्रियाशील और तेजवान था और जहां साहसी कार्यकर्ताओं का अभाव था वहा के प्रजामण्डल अपेक्षाकृत निर्बल थे।

मेवाड़ प्रजामण्डल वर्माजी के नेतृत्व मे आरभ से ही एक तेजवान और जागरूक सगठन बन गया था। जनता का उस पर सहज विश्वास था और अपनी प्रत्येक कठिनाई को हल करने के लिए वह प्रजामंडल की ओर निहारती थी। इसका कारण यह था कि वर्माजी प्रजामण्डल के द्वारा केवल उत्तरदायी शासन के लिए ही आदोलन ही नही करते थे वरन निर्धन और पिछडे वर्गो की कठिनाइयो को दूर कराने के लिए जहा एक ओर सरकार को प्रेरित करते थे वहां दूसरी ओर रचनात्मक कार्य द्वारा उनकी आर्थिक तथा सामाजिक दशा को सुधारने का प्रयत्न भी करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामीण, हरिजन, भील तथा अन्य पिछड़े वर्ग वर्माजी को अपना हितैपी और त्राता समझने लगे। उनको जब भी कोई कष्ट होता कोई समस्या उठ खड़ी होती तो वे भागकर वर्माजी के पास आते। वर्माजी का घर मानो उनका घर था। वर्माजी के प्रति उनका अटूट विश्वास और श्रद्धा थी। इसमे तनिक भी सदेह नही है। राजनीतिक नेताओ मे ऐसे बहुत कम नेता थे जिनको पिछड़े वर्गो का इतना गहरा विश्वास प्राप्त हो सका हो।

अन्तर्राष्ट्रीय रगमच पर तथा भारत मे घटनाए अब तेजी से घट रही थी। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस १९३७ मे हरिपुरा काग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। उनकी आरम्भ से ही यह मान्यता थी कि योरोप मे महायुद्ध की विभीषिका शीघ्र ही प्रज्ज्वलित होनेवाली है। काग्रेस को देश मे ब्रिटेन विरोधी उग्र आदोलन की तैयारी करना चाहिए और जब ब्रिटेन युद्ध मे फसा हो तब आदोलन को इतना तेज कर देना चाहिए कि ब्रिटेन भारत को स्वतन्त्र करने लिए विवश हो जावे। परन्तु महात्माजी तथा अन्य नेता इसके विपरीत यह मानते थे कि ब्रिटेन स्वयं ही भारत को स्वतत्रता प्रदान कर देगा सघर्ष की आवश्यकता नही होगी। जब नेता जी सुभाषचन्द्र बोस त्रिपुरी अधिवेशन के महात्मा जी के प्रबल विरोध करने पर भी सभापति चुन लिए गए तो उन्होने स्पष्ट शब्दो मे देश के समक्ष यह प्रोग्राम रखा कि महायुद्ध ६ महीने मे छिडनेवाला है। काग्रेस को ब्रिटिश सरकार को अतिम चेतावनी दे देना चाहिए और देश को स्वतत्रता के युद्ध के लिए तैयार करना चाहिए। यदि ब्रिटिश भारत को स्वतत्र नही करते तो काग्रेस को देश व्यापी आन्दोलन आरम्भ कर देना चाहिए। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का मानना था कि भारत मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर अतिम प्रहार करने का समय आ गया है, हमे इस अवसर को खोना नही चाहिए। किसी राष्ट्र के जीवन मे ऐसा अलभ्य अवसर कभी कभी ही आता है। परन्तु दक्षिण पक्ष के नेता इस संघर्ष के लिए तैयार नही थे, वे अब ब्रिटिश

साम्राज्यवाद से समझौते के द्वारा सत्ता प्राप्त करने के स्वप्न देखने लगे थे अस्तु कांग्रेस के बहुमत ने नेताजी सुभाषचन्द्र की उस क्रांतिकारी योजना को स्वीकार नही किया। परन्तु जब नेताजी की भविष्यवाणी सच निकली और ६ महीने के उपरान्त विश्व व्यापीयुद्ध छिड़ गया तथा ब्रिटिश सरकार ने देश के नेताओ को बिना पूछे ही भारत को युद्ध मे झोंक दिया तो कांग्रेस नेताओ का मन क्षोभ और रोष से भर गया। आठ प्रान्तों के कांग्रेसी मंत्रिमंडलो ने त्यागपत्र दे दिया। परन्तु कांग्रेस ने कोई राष्ट्र व्यापी आंदोलन खड़ा नही किया। क्योकि कांग्रेस के नेताओ को फिर भी यह विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार समझौता करेगी। महात्मा जी ब्रिटेन को इस राष्ट्रीय विपत्ति के समय आंदोलन खड़ा कर कठिनाई मे नही डालना चाहते थे पंडित जवाहरलाल नेहरू अधिनायकवाद के कट्टर विरोधी थे। उनकी सहानुभूति इस युद्ध मे ब्रिटेन के साथ थी वे भी आंदोलन के पक्ष मे नही थे। कांग्रेस नेतृत्व संघर्ष करने के पक्ष मे नही था।

परन्तु जैसे जैसे युद्ध लम्बा और भयंकर हो गया और ब्रिटिश सरकार की भारत को स्वतंत्र न करने की नीति स्पष्ट होती गई वैसे ही वैसे देश मे तीव्र रोष उत्पन्न होता गया। इधर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारत मे आंदोलन करने के पक्ष मे प्रबल जनमत तैयार कर दिया था और बाद को भारत से बाहर निकलकर उन्होने आजाद हिन्द फौज का संगठन कर विदेशियो से भारतीयो को ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खड़ा होने का आवाहन कर रहे थे। देश मे उस समय अंग्रेजो के विरुद्ध तीव्र आक्रोश उत्पन्न हो गया था। उधर महात्मा गांधी भी ब्रिटिश की भारत विरोधी नीति से अत्यन्त क्षुब्ध हो उठे थे अतएव उन्होंने अंग्रेजो को चुनौती दी 'भारत छोडो' और देशवासियो को 'करो या मरो' के मंत्र से दीक्षित किया।

उस समय देश म आश्चर्यजनक जागृति उत्पन्न हो गई थी। समस्त राष्ट्र स्वतंत्रता के उस अन्तिम संघर्ष के लिए अपने नेता के अनुसार 'करो या मरो' की भूमिका मे अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए तैयार था। महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' आंदोलन छेडा उस समय प्रथम बार उन्होने देशी राज्यो की जनता का भी इस स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए आवाहन किया। जिन्होने बम्बई मे अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद के सभी कार्यकर्त्ताओ को तथा सभी देशी राज्या के प्रजामंडलो के प्रमुख कार्यकर्त्ताओ को अगस्त १६४२ मे बम्बई आमंत्रित किया। महात्मा जी ने देशी राज्यो के कार्यकर्ताओ को संबोधित कर कहा कि ब्रिटिश भारत मे आंदोलन का नारा होगा। 'अंग्रेजो भारत छोडो'' और देशी राज्यो मे नारा होना चाहिए कि देशी राज्यो के नरेश अंग्रेजो का साथ छोड़े। प्रत्येक राज्य का प्रजामंडल अपने नरेश को अन्तिम चेतावनी अल्टिमेटम दे दे और यदि राजा उनकी बात स्वीकार न करे और ब्रिटिश सरकार से अपना संबंध विच्छेद न करे तो देशी राज्य के शासन से पूर्ण असहयोग किया जावे। वहा तीव्र असहयोग आंदोलन आरंभ कर दिया जावे और राज्य के शासन को ठप्प कर दिया जावे।

मेवाड प्रजामंडल के प्रतिनिधि के रूप मे वर्मा जी इस सम्मेलन मे भाग लेने

पहुँचे थे। जब महात्माजी ने 'करो या मरो' का देश को मन्त्र दिया था उस समय देश की स्थिति अत्यन्त गम्भीर थी। देश मे क्राति की अग्नि धधक रही थी परन्तु देशी राज्यों मे विभिन्न प्रजामण्डलो की स्थिति भिन्न थी उनके आदर्श, कार्यपद्धति और कार्यकर्ताओं की मान्यताए एक जैसी नही थी। जब महात्माजी ने देशी राज्यो के प्रतिनिधियो का युद्ध मे सम्मिलित होने का आह्वान किया और उनसे कहा कि वे अपने अपने राज्यो के नरेशो को अन्तिम चुनौती दे दे कि उन्हे ब्रिटिश सरकार से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए अन्यथा वहा उग्र आदोलन खडा कर राज्य के शासन को पगु बना देना चाहिए तो सभी कार्यकर्ताओ मे निस्तब्धता छा गई। सारा वातावरण गम्भीर हो उठा था। यह प्रथम अवसर था कि जब महात्मा जी ने देशी राज्यो के कार्यकर्ताओ को देश की स्वतन्त्रता के अन्तिम युद्ध मे अपनी आहुति देने का आह्वान किया था। अभी तक जो भी आदोलन काग्रेस ने महात्माजी के नेतृत्व मे किए थे वे केवल ब्रिटिश भारत तक सीमित थे। देशी राज्यो की प्रजा उससे अलग रही थी। महात्माजी का ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर यह अन्तिम प्रहार होने जा रहा था इस कारण ब्रिटिश, भारत और देशी राज्यो के भेद को उन्होने समाप्त कर दिया था। महात्माजी की विचारधारा यह थी कि यदि देशी नरेश ब्रिटिश सरकार से हुई सधियो को अमान्य कर उससे अपना सम्बन्ध तोड़ लेते हैं तो स्वत उन्हे अपनी प्रजा का समर्थन प्राप्त करना होगा और प्रजा तथा राजा मिलकर ब्रिटिश सरकार से सघर्ष करेगे और यदि देशी नरेश ब्रिटिश सरकार से अपना सम्बन्ध नही तोडते तो वहा जो जनआदोलन खड़ा होगा वह परोक्ष रूप से ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर ही प्रहार होगा। वे समस्त राष्ट्र को 'करो या मरो' के मन्त्र से दीक्षित कर देना चाहते थे अस्तु इस आदोलन मे उन्होने देशी राज्यो के कार्यकर्ताओ का भी आह्वान किया था।

यह हम पहले ही लिख चुके है कि विभिन्न प्रजामण्डलो की कार्यपद्धति, आदर्श, मान्यताए उनके कार्यकर्ताओ की तैयारी एक समान नही थी। जब महात्माजी देशी राज्यो के कार्यर्ताओ से बातचीत कर चले गए और सभा समाप्त हुई तो वर्माजी बाहर आए। उन्हे इन्दौर के एक मित्र, श्री हरिभाऊ उपाध्याय तथा श्री हीरालाल शास्त्री बाहर ही मिल गए। वर्माजी से उन लोगो की जो बात हुई वह इस बात की द्योतक थी कि देशी राज्यो के कार्यकर्ताओ की सोचने की दिशा एक नही थी। वर्माजी ने अपने सस्मरण मे इस घटना के सम्बन्ध मे जो लिखा है वह उन्ही के शब्दो मे नीचे लिखे अनुसार हे —

"गाधी जी से चर्चा करने के उपरान्त मै जब बाहर आया तो इन्दौर के एक मित्र, श्री हरिभाऊ उपाध्याय तथा श्री हीरालाल शास्त्री मुझे बाहर ही मिल गए। मैने श्री हीरालाल शास्त्री से पूछा "कहिए गाधीजी की सलाह के सम्बन्ध मे आपका क्या विचार है" तो शास्त्री जी ने उत्तर दिया कि उनकी समझ मे यह नही आता कि आखिर राजा लोग अग्रेजो का साथ कैसे छोड़ देगे। फिर मैने इन्दौर के मित्र से पूछा तो उन्होने मेरे विचार जानने चाहे मैने उत्तर दिया "भाई हम तो मेवाड़ी है हर बार हर हर

महादेव बोलते आए हैं इस बार भी बोलेंगे ।"

वर्मा जी का उत्तर एक जन्मजात क्रान्तिकारी विचारो के राजनैतिक कार्यकर्ता का उत्तर था । उनका मानना था कि जब देश स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अन्तिम संघर्ष करने जा रहा हो, राष्ट्र नेता ने युद्ध की रणभेरी बजवाकर देशभक्तो को स्वतन्त्रता सग्राम में कूच करने की आज्ञा दे दी हो, तब स्वतन्त्रता युद्ध के सैनिक के सामने यह प्रश्न कहा उठता है कि वह नेता के आदेश के सबध मे तर्कवितर्क करे । राष्ट्र के जीवन में ऐसे क्रातिकारी क्षण मे तर्कवितर्क वे ही करते है जिनमे क्रातिकारी भावना का अभाव होता है और जिनमें साहस की कमी होती है । अस्तु श्री वर्माजी के अन्तर मे तनिक सोचविचार नही था वे 'करो या मरो' के मत्र को स्वीकार कर मोर्चे की हरावल प्रथम पंक्ति मे रहने का उन्होने निश्चय कर लिया था । यही कारण है कि जब इन्दौर के मित्र ने उनके विचार जानने चाहे तो उन्होने क्षण भर भी रुके विना उत्तर दिया "हम तो मेवाडी है हर बार हर हर महादेव बोलते आए है इस बार भी बोलेगे" ऐसा उत्तर वही दे सकता था जिसका अन्तर गहन देशभक्ति और क्रांतिकारी भावना से ओतप्रोत हो ।

जब वर्मा जी ने बम्बई से उदयपुर के लिए प्रस्थान किया तो उन्होंने आने वाले सघर्ष की रूपरेखा तैयार करली थी । वे जानते थे कि महाराणा को अन्तिम चेतावनी देते ही धरपकड़ आरभ हो जावेगी और वे बाहर नही रहेगे उनको तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जावेगा, क्योकि इस बार ब्रिटिश सरकार का देशी राज्यो को गभीर आदेश होगा कि सत्याग्रहियो के साथ कोई नरमी न बरती जावे, आदोलन का कडाई से दमन किया जावे । वर्मा जी ने जब प्रजामडल का आदोलन चलाया था तब उन्होने आदोलन का सचालन करने के लिए जेल जाने की पहल नही की थी और वे अजमेर मे बैठकर आंदोलन का सचालन करते रहे परन्तु यह तो देशव्यापी क्राति का आवाहन था इसमे नेता को सर्व प्रथम अपने को झोकना था अस्तु उन्होने अपने सभी साथियो और सहयोगियो को रतलाम पहुँचते पहुँचते पत्र लिखकर उन्हे क्या करना चाहिए इसके आदेश दे दिए । वे जानते थे कि उदयपुर पहुँच कर उनको इतना समय नही मिलेगा कि वे आदोलन के सबध मे प्रजामडल के कार्यकर्ताओ का निर्देशन कर सके । अतएव उन्होने रतलाम से ही सबो को सूचनाए भेज दी थी ।

वर्मा जी ने नीमच से जो पत्र विजोल्या के एक कार्यकर्ता श्री हेमराज जी को लिखा था उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्मा जी परिस्थितियो के प्रति कितने जागरूक थे । रतलाम से ही उन्होंने अपना कार्य करना आरभ कर दिया था । वे जानते थे कि उनको आदोलन को चलाने का समय नही मिलेगा अस्तु वे अपने सभी कार्यकर्ताओ को आदेश भेज देना चाहते थे । वर्मा जी ने श्री हेमराज जी को नीचे लिखा पत्र नीमच से लिख कर भेजा—

नीमच
१२-८-१९४२

भाई हेमराज जी विजोल्या ग्राम थडोदा, भीलवाड़ा ।

मै अभी बम्बई से लौट रहा हूं और चित्तौड़ स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया जाऊगा। अबकी बार बिजोल्या के सैकडो किसान वहा सत्याग्रह करे। राजवी साहब से कहे कि आप अगर हमारे साथ हो तो हिन्दुस्तान की आजादी की लडाई मे हमारी पूरी मदद करे। यह लडाई आपके खिलाफ नही हैं न रियासत के खिलाफ ही है। यह तो सारे देश की आजादी के लिए है।

जैसा भी सत्याग्रह चले वैसा वहा भी करे मुझे नीचा नही देखना पडे कि बिजोल्यां के किसान स्वार्थी थे। इस मौके पर उन्होने देश का साथ नही दिया।

आपका

माणिक्यलाल वर्मा

कहने का तात्पर्य यह है कि बम्बई मे महात्माजी का आदेश मिलते ही वर्माजी ने मेवाड़ मे आंदोलन का मानचित्र तैयार कर लिया था और उदयपुर पहुचने के पूर्व ही उन्होने समस्त मेवाड मे कार्यकर्ताओ को आदेश भेज दिए थे। वर्माजी को यह भय था कि सम्भवत. वे चित्तौडगढ़ के स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर लिए जावे इस कारण वे सभी कार्यकर्ताओ को गिरफ्तारी से पूर्व आवश्यक निर्देशन भेज देना चाहते थे।

उदयपुर पहुच कर वर्माजी ने प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओ से बात की और महात्माजी के आदेशानुसार महाराणा को अन्तिम चेतावनी (अल्टीमेटय) भेजने का निश्चय किया। उस समय समस्त मेवाड़ की आखे प्रजामडल तथा वर्माजी की ओर लगी थी। मेवाड का शासन तथा मेवाड़ की प्रबुद्ध जनता वर्माजी की ओर निहार रही थी। राजस्थान के अन्य देशी राज्यो के कार्यकर्ता भी जयपुर, जोधपुर तथा उदयपुर की ओर देख रहे थे। जोधपुर मे लोकनायक श्री जयनारायण व्यास इससे पूर्व ही जागीरो में होनेवाले अत्याचारो के विरुद्ध तथा राज्य मे उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए आदोलन कर गिरफ्तार हो चुके थे। जोधपुर के सभी कार्यकर्ता स्वय लोकनायक जयनारायण व्यास भी जेल के सीकचो मे बन्द थे। अस्तु देश की स्वतत्रता के इस अन्तिम युद्ध मे राजस्थान के सभी कार्यकर्ताओ की दृष्टि जयपुर और उदयपुर पर लगी थी।

श्री माणिक्यलाल वर्मा ने २० अगस्त १९४२ को प्रजामण्डल की ओर से महाराणा को अन्तिम चेतावनी (अल्टीमेटम) भेज दी। २१ अगस्त को बारह बजे दिन के वर्माजी को गिरफ्तार कर लिया गया। मेवाड प्रजामन्डल और मेवाड शासन मे सघर्ष छिड गया।

वर्मांजी की गिरफ्तारी का समाचार समस्त उदयपुर मे विजली की भाति फैल गया। उदयपुर मे सम्पूर्ण हडताल हो गई। सारे बाजार बन्द हो गए, दूकाने ही नही खोमचे वालो तथा सड़क पर बैठकर वेचने वालो ने भी अपना धन्धा बद कर दिया। तांगे वालो ने हड़ताल करदी, तागे चलना बन्द हो गए। नागरियो ने अपना कार्य बन्द कर दिया। स्कूल तथा कालेजो मे सम्पूर्ण हडताल हो गई। स्कूल कालेज बन्द हो गये। नगर मे जलूस निकाले गये "अग्रेजो भारत छोडो" 'भारत माता की जय" 'भारत स्वतन्त्र है' 'महात्मा गाधी की जय' 'मेवाड़ प्रजामडल की जय' वर्माजी की जय

घोष से समस्त उदयपुर गूज उठा।

वर्मा जी की गिरफ्तारी से उदयपुर मे सनसनी फैल गई। जनता मे तीव्र क्षोभ और रोष फैल गया। महाराणा भूपालसिंह कालेज के विद्यार्थियो मे तीव्र रोष था उन्होने सम्पूर्ण हडताल कर दी और नगर की अन्य सभी शिक्षणसस्थाए उनके नेतृत्व मे वन्द हो गई। पुलिस ने वहुत से छात्रो को गिरफ्तार कर लिया।

मेवाड तथा राजस्थान के अन्य राज्यो मे भारत छोडो आदोलन के सवध मे श्री माणिक्यलाल वर्मा ने अपने सस्मरण मे जो भी लिखा है उसे हम यहा अविकल उद्धृत करते है।

अपने सस्मरण मे वर्मा जी ने लिखा है :

"डाक्टर मोहनसिंह मेहता श्री जनार्दनराय नागर को लेकर महाराणा भूपाल कालेज गए और कालेज के छात्रो को हडताल मे सम्मिलित होने तथा सत्याग्रह मे जाने से रोकने का प्रयत्न किया। जव डाक्टर मोहनसिंह मेहता वोलने लगे तो छात्रो ने उनका भाषण नही सुना और ६००-७०० छात्रो ने सत्याग्रह किया बहुत से छात्र गिरफ्तार हुवे जो वाद को छोड दिये गए।"

"राजस्थान के सभी राज्यो मे भारत छोडो आंदोलन हुआ केवल एक जयपुर वचा रहा। वहा के प्रधानमत्री सर मिर्जा इस्माइल आदोलन न होने देने मे सफल रहे। जयपुर प्रजामडल ने आदोलन नही किया, फिर भी वावा हरिश्चन्द्र, देशपाडे जी, दौलतमल जी भण्डारी, रामकरण जोशी, और उनके साथियो ने व्यक्तिगत सत्याग्रह किया।

"जयपुर प्रजामडल के तत्कालीन नेताओ ने उनका साथ नही दिया वरन सामने आए। जिसके प्रमाण पुरातत्व विभाग के पास इस समय मौजूद है कि ब्रिटिश भारत से तोड फोड कर भागे हुए कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार कराने मे श्री हीरालाल का सकेत था।" वर्मा जी का पुरातत्व विभाग से तात्पर्य राजस्थान के पुरालेख विभाग-राजस्थान से था।

'जोधपुर के श्री जयनारायण व्यास और उनके साथी जागीरी जुल्म के खिलाफ और उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन कर गिरफ्तार हो चुके थे।

'कोटा मे तीन दिन तक रियासत मे काम ठप्प रहा। अफसरो को जेल मे रख दिया गया। प्रजामडल के जिन लोगो को रियासत ने गिरफ्तार किया था हजारो की संख्या मे उनको छुडाने के लिए जनता ने भाग लिया। उधर मध्यभारत मे इन्दौर सबसे आगे रहा। ग्वालियर के नेताओ ने महाराजा से समझौता कर लिया।

वर्मा जी ने लेखक से जयपुर प्रजामडल के नेताओं के सवन्ध मे वह वात कई वार कही थी। उनका उनके प्रति वहुत रोष और क्षोभ था। वे इसे देशद्रोह की सज्ञा दिया करते थे परन्तु लेखक ने सहसा कभी विश्वास नही किया। वह यही समझता था कि क्योकि जयपुर प्रजामडल ने भारत छोडो आदोलन के समय देश का साथ नही दिया उन्होने आदोलन नही छेडा और सर मिर्जा इसमाइल से (जैंटिलमैन्स एग्रीमेंट) समझौता

कर लिया इसलिए एक क्रांतिकारी योद्धा होने के कारण वर्माजी का इनमे बहुत क्रुद्ध होना स्वाभाविक था और इसी कारण वे उनके कार्य को देशद्रोह मानते हैं। परन्तु जबकि उनके जीवनचरित्र को लिखने के लिए उनके संस्मरण तथा उनकी डायरी लेखक ने पढी और उसमे जयपुर प्रजामण्डल के नेताओ विशेषकर श्री हीरालाल शास्त्री के संबंध मे उपरोक्त लेख पढा तो उसके सामने धर्मसंकट खड़ा हो गया। आज जबकि वर्माजी जीवित नही हैं तब उनके विचारो, मान्यताओ, विश्वासो और लेख की उपेक्षा करना उसको छिपाना अपने स्वर्गीय श्रद्धास्पद मित्र के प्रति विश्वासघात होता। नैतिक दृष्टि से लेखक का जघन्य अपराध होता, अतएव उसने वर्माजी के उपरोक्त लेख को अविकल ज्यो का त्यो यहा दे दिया है।

परन्तु एक लेखक के नाते उसने यह भी अपना नैतिक कर्तव्य समझा कि वह राजस्थान अभिलेखागार (आरकाइव्ज) बीकानेर जाकर उन प्रमाणो को स्वयं देखे। अस्तु वह दस दिन तक स्टेट आरकाइव्ज के अतिथिगृह मे ही ठहर कर जयपुर राज्य की गोपनीय फाइलों को देखता रहा। तत्कालीन निदेशक श्री नाथूराम खड़गावत ने लेखक से कहा कि एक फाइल जिसमे सर मिर्जा इस्माइल तथा श्री हीरालाल शास्त्री का पत्र व्यवहार है वह मिल नही रही है। बहुत ढूंढने पर और प्रयत्न करने पर भी वह फाइल मुझे देखने को नही मिली परन्तु अन्य गोपनीय फाइलो मे सर मिर्जा इस्माइल, श्री घनश्यामदास बिरला तथा श्री हीरालाल शास्त्री के कतिपय पत्र मिले इनसे इतना स्पष्ट है कि घनश्यामदास बिरला के द्वारा श्री हीरालाल शास्त्री का सर मिर्जा इस्माइल से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो गया था और श्री हीरालाल शास्त्री सर मिर्जा इस्माइल के अत्यन्त विश्वासपात्र बन गए थे। लेखक को जो फाइले देखने को मिली उनमे ऐसा कोई पत्र उसे नही मिला जिससे यह सिद्ध हो कि शास्त्रीजी के संकेत पर कोई गिरफ्तार हुआ हो। हां इस तरह का पत्र अवश्य मिला जिसमे उन्होने शास्त्रीजी के मिर्जा इस्माइल को संयम से काम लेने को कहा था। हम आगे उन पत्रो को अविकल रूप से दे रहे हैं। सभी पत्र अंग्रेजी में है अस्तु मूल अंग्रेजी पत्र का हिन्दी अनुवाद भी साथ मे दे दिया गया है। यह सभी पत्र जयपुर राज्य की गोपनीय फाइलो मे राजस्थान अभिलेखागार (राजस्थान स्टेट आरकाइव्ज) बीकानेर मे मौजूद है। इन पत्रो के पढने से यह स्पष्ट हो जाता हैं कि तत्कालीन जयपुर राज्य के प्रधान मन्त्री सर मिर्जा इस्माइल, श्री हीरालाल शास्त्री से "भारत छोडो आंदोलन" के सम्बन्ध मे क्या नीति अपनावे इस पर परामर्श करते थे और उनके सुझावो को महत्व देते थे।

फाईल संख्या ५४ (१९३९-४२)

प्रधान मन्त्री कार्यालय — जी-१-६७५ भाग-१

जयपुर राज्य के प्रधान मन्त्री का विभिन्न व्यक्तियो से होनेवाला फुटकर पत्र व्यवहार

डी ओ संख्या १०२८/पी एम — ३ जुलाई १९४२

प्रिय श्री बिरला,

आपके ३० जून १९४२ के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मै उस समय आपका

जयपुर आना पसंद करता कि हिजहाइनेस यहां होते। परन्तु ऐसे बहुत से मामले है जिनकी ओर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है और जिनके सबंध मे आपसे चर्चा करना चाहता हूं इस कारण मै आपके आगमन के लिए अगस्त तक प्रतीक्षा करने का अत्यन्त अनिच्छुक हूं।

मुझे आशा है कि आपको मेरा तार मिल गया होगा जिसमे मैंने आपको सूचित किया था कि आप कलकत्ता जाते समय मार्ग मे जयपुर आसकते है। विभिन्न प्रश्नो पर आपसे चर्चा करने का अवसर मिलना मेरे लिए बहुत सहायक सिद्ध होगा। मुझे भय है कि आपने जो नोट (लेख) भेजने का जो वचन दिया है वह मिलकर चर्चा का एक बहुत ही हीन विकल्प होगा परन्तु मै उसका भी स्वागत करूंगा।

मुझे श्रीहीरालाल शास्त्री तथा प्रजामंडल के अन्य सदस्यो से मिलने का अवसर मिला और मैं निश्चयपूर्वक यह अनुभव करता हूं कि मुझे उनका तथा राज्य मे अन्य सभी दलो का सहयोग मिलेगा।

मै आपके शीघ्र ही दर्शन लाभ की आशा करता हूं।

श्री जी. डी. बिरला
नई दिल्ली

आपका
ह० मिर्जा इस्माइल

फाइ० संख्या ५४ (१६३६-४२)

बिरला हाऊस
६ जूलाई १६४२

प्रिय श्री मिर्जा,

मुझे जयपुर के अनेक व्यक्तियो से समाचार मिले है जिनमे आपके द्वारा प्रशासन मे किये गये सुधारो की प्रशंसा की गई है।

मुझे जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप श्रीहीरालाल जी से मिल लिए। मुझे विश्वास है कि वे आपको पूर्ण सहयोग देगे।

मैने आपकी श्रीशान्तिलाल जी को लिखा पत्र देखा जिसमे आपने श्रीसावरकर द्वारा की गई आलोचना की ओर संकेत किया है।

आपका सद्भावी,
ह० जी. डी. बिरला

File Serial No. 54 (1939-42)
P. M. S. Office G-1-675 Part I

Prime Minister Jaipur State Miscellaneous correspondence between him and various persons.

D. O. No. 1028/PMO

3rd July 1942

Dear Birla

Many thanks for your letter dated 30th June 1942.

I would have liked you to come to Jaipur when His Highness was here but there are so many matters which require immediate attention and which I wish to discuss with you that I

would be very relluctant to have to wait till August for your visit.

I hope you have received my telegram and that you can visit Jaipur on your way to Calcutta. It would be of great assistance to me to have an opportunity of discussing matters with you. I fear the note you have promised me will be a very poor subtitute although I would welcome that too

I have already had an opportunity of meeting Mr. Hira Lal Shastri and other members of Praja Mandal Party and I Certainly feel that I shall receive their cooperation and that of all parties in the State.

Looking forward to the pleasure of seeing you early.

I am yours Sincerely
Sd/- Mirja Ismail

New Delhi.
Shri G. D. Birla

Birla House
9th July 1942

My dear Shri Mirza,

I have received news from various people of Jaipur showing appreciation of work you have done to improve administration.

I am very happy to learn that you have seen Mr. Heera Lal Ji. I am sure he will give all the cooperation.

I have seen your letter to Shanti Lal Ji in which you have pointed out to some criticism made by Mr. Savarkar.

Sd/- G. D. Birla

Letter from Shri G. D. Birla to Shri Mirza Ismail

New Delhi
11th Sept. 1942

I am glad to hear that Tenancy Ligislation is being looked into. You are solving one after another question in a most business like manner. t is due to you that you nave been able to keep calm atmosphere in Jaipur State. Shastri is no doubt helping and I am keeping myself in touch with him. Thus, we may be able to do lot of good work in this State.

Yours Sincerely.
Sd/- G. D. Birla

नई दिल्ली,
११ सितम्बर १९४२

जी. डी. बिरला का सर मिर्जा के नाम पत्र

"......मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भूस्वामित्व कानून (टिनैन्सी लैजिशलेशन) पर आप विचार कर रहे है। आप एक के वाद दूसरे प्रश्न को एक व्यावहारिक तरीके से हल करते जारहे है। यह आपके कारण ही संभव हुआ है कि आप जयपुर राज्य में शान्त वातावरण रख सके।*

इसमे संदेह नही कि शास्त्री (श्री हीरालाल शास्त्री) सहायता कर रहे है। मैं उनसे सम्पर्क बनाये हुए हूं। इस प्रकार हम राज्य मे यथेष्ठ उत्तम कार्य कर सकेंगे।

आपका सद्भावी
ह० जी. डी. बिरला

Part I File No 42/Confidential
Page 4 A

Secret. Dated 14th August 1942

Letter from Mirja M. Ismail to Major H M. Poulton Political Agent at Jaipur.

There are good reasons for believing that the Praja Mandal is not likely to take action in sympathy with All India National Congress and it is felt that the arrest of the persons named might only provoke hostility and disturb the atemosphere which may now be described as reasonably clear and peaceful. It might also be mentioned that the persons indicated are not permanent residents of Jaipur and in all probabiiity are leaving the State.

उक्त पत्र का हिन्दी अनुवाद

भाग १ फाइल सख्या ४२/गोपनीय
पृष्ठ ४ ए

गोपनीय दिनाक १४ अगस्त १९४२

सर मिर्जा इस्माइल द्वारा जयपुर के पोलिटिकल एजेन्ट मेजर यच. एम. पाउल्टन को लिखा गया पत्र।

यह मानने के लिए विश्वसनीय आधार मौजूद है कि प्रजामंडल अखिल भारतीय राष्ट्रीय सभा (कांग्रेस) की सहानुभूति मे कोई कार्यवाही नही करेगा। यहां यह अनुभव किया जा रहा है जिन व्यक्तियो का आपने पत्र मे उल्लेख किया है उनको गिरफतार करने

* अगस्त १९४२ में महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन आरम्भ किया था उस समय ब्रिटिश भारत तथा सभी देशी राज्यो में तीव्र आंदोलन हुआ, तोड़फोड़ की घटनाएं हुई गोलियां चली थीं परन्तु जयपुर में पूर्ण शांति रही जयपुर राज्य प्रजामण्डल ने आंदोलन नहीं छेड़ा, यह उसकी ओर संकेत था।

का परिणाम होगा कि विरोध और कटुता बढ़ेगी तथा जो यहां का वातावरण साधारणतया शान्तिमय और स्वच्छ है वह विक्षुब्ध हो उठेगा। इस संवन्ध में यह भी वतला देना आवश्यक है कि जिन व्यक्तियों के सम्बंध में आपने अपने पत्र में संकेत किया है वे जयपुर राज्य के स्थायी निवासी नहीं है और इस वात की पूर्ण संभावना है कि वे राज्य से शीघ्र चले जाने वाले हैं।

सर मिर्जा इस्माइल के पत्र के उपरोक्त अश से यह स्पष्ट है कि पोलिटिकल ऐजेन्ट ने कतिपय राष्ट्रकर्मियो को जो वाहर से जयपुर राज्य मे उस समय भारत छोड़ो आंदोलन के सम्बन्ध मे आए हुए थे उनको गिरफतार करने के लिए कहा था। सर मिर्जा इस्माइल ने जो इस बात का पत्र मे संकेत किया कि प्रजामंडल द्वारा आंदोलन में भाग लेने की सभावना नही। उसमे श्री हीरालाल शास्त्री से हुए समझौते की पृष्ठ भूमि में लिखा था। ब्रिटिश सरकार ने सर मिर्जा इस्माइल को श्री सादिक अली, श्री जयप्रकाश नारायण, श्रीमती अरुणा आसफअली, श्री रामानन्द मिश्रा, श्री प्रेमकृष्ण खन्ना, श्री शीलभद्र याजी, श्री मुकुन्दलाल सरकार को गिरफतार करने के लिए सर मिर्जा इस्माइल को लिखा था। उस समय श्री जयप्रकाश नारायण भूमिगत होकर गुप्त रूप से क्रान्ति का देश मे नेतृत्व कर रहे थे और वे इसी सम्बन्ध मे अपने क्रान्तिकारी साथियो के साथ जयपुर आए हुए थे।

सर मिर्जा इस्माइल ने भारत छोड़ो आन्दोलन के सम्वंध मे राष्ट्रकर्मियो को गिरफतार करने या न करने के सबन्ध में श्री हीरालाल शास्त्री से परामर्श लिया था यह नीचे लिखे गोपनीय पत्र से स्पष्ट हो जाता है।

Part I File No 42/Confidential

Arrest of certain congressmen in Jaipur and other miscellaneous correspondence connected with Prime Minister Jaipur State.

Page III

Jaipur
19-9-42

My dear Brigadier,

I enclose you Hiralal Shastry's letter which I have just received.

I respect his judgement and have no doubt he means well. The point is whether we should arrest these 10 men or not. Shastry seems to think that it is better to wait. As arrests might possibly foment more trouble. Shall we wait or see what happens this evening ?

As regards picketing I am for taking action against, as I believe the police did this morning

Yours Sincerely,
Sd/- Mirza S. Ismail

उक्त पत्र का हिन्दी में अनुवाद

भाग १ फाइल सख्या ४२/गोपनीय

जयपुर मे कतिपय काग्रेसमैनो की गिरफतारी सबन्धी तथा अन्य फुटकर पत्रव्यवहार जिसका संबन्ध जयपुर राज्य के प्रधान मंत्री से था।

पृष्ठ (३)

जयपुर
१६-६-४२

प्रिय ब्रिगेडियर,

मै इस पत्र के साथ श्री हीरालाल शास्त्री के उस पत्र को भेज रहा हूं जो मुझे अभी प्राप्त हुआ है।

मैं उनके परिस्थिति सबन्धी विचार को आदर के साथ देखता हूँ और मुझे इसमें तनिक भी सदेह नही है कि वे राज्य के शुभचिन्तक है। प्रश्न यह है कि हम इन दस व्यक्तियो को गिरफतार करे अथवा नही। शास्त्री का सोचना है कि प्रतीक्षा करना श्रेयस्कर होगा। क्योकि गिरफतारियो से और अधिक अशान्ति उत्पन्न होगी। क्या हम प्रतीक्षा करे और यह देखे कि आज सायकाल को क्या घटना घटती है।

जहा तक धरने (पिकेटिग) का प्रश्न है मै धरना देनेवालो के विरुद्ध कार्यवाही करने के पक्ष मे हूँ। जैसा कि मेरा विश्वास है कि पुलिस ने आज प्रात काल किया।

आपका सद्भावी
हस्ताक्षर—मिर्जा इस्माइल

यह पत्र टाइप किया हुआ नही है वरन सर मिर्जा इस्माइल के हाथ का लिखा हुआ है। स्पष्ट है कि मिर्जा इस्माइल अपने स्टेनो को भी इस प्रकार का पत्र नही लिखाता था जिससे कि वह अत्यन्त गोपनीय रहे।

नीचे हम श्री हीरालाल शास्त्री का वह पत्र देते है जिसका सर मिर्जा इस्माइल ने ब्रिगेडियर को ऊपर लिखे पत्र मे उल्लेख किया है। यह पत्र भी श्री हीरालाल शास्त्री ने हाथ से लिख कर ही भेजा था।

Part File No 42/Confidential

Arrest of certain congressmen in Jaipur and other Miccellaneous correspondence connected with Prime Minister Jaipur State. Page 112.

Khejre-Ka Rasta
19-9-42
Time 3 30 P M.

Personal.

My dear Shri Mirza,

With reference to your talk on the phone I have to suggest that you might better act with restraint that may be easier way of dealing with the situation. This is all that I can say for the present, after all you

can judge best as to what course of action you should adopt. But I feel you can easily afford to whatch for some time.

Your Sincerely
Hira Lal Shastri

उक्त पत्र का हिन्दी अनुवाद

भाग १ फाइल सख्या ४२/गोपनीय

जयपुर मे कतिपय काग्रेसमैनो की गिरफ्तारी सम्बन्धी तथा अन्य फुटकर पत्रव्यवहार जिसका सम्बन्ध जयपुर राज्य के प्रधान मन्त्री से था। पृष्ठ ११२

खेजडे का रास्ता (जयपुर)

व्यक्तिगत

१६-६-४२
समय ३.३० सायकाल

प्रिय श्री मिर्जा,

आपसे फोन पर हुई बातचीत के सबध मे यह सुझाव दूंगा कि आप संयम से काम ले तो अधिक उपयुक्त होगा। परिस्थिति से निवटने का यह अधिक सरल तरीका हो सकता है। इस समय केवल इतना ही कह सकता हू। अन्तत आप ही इस सबंध मे अधिक अच्छी तरह तय कर सकते है कि परिस्थिति का सामना करने के लिए कौनसा तरीका सबसे उत्तम होगा। लेकिन मेरी मान्यता और धारणा यह है कि आप सरलता से कुछ समय तक परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए प्रतीक्षा कर सकते है।

आपका सद्भावी
हीरालाल शास्त्री

श्री हीरालाल शास्त्री द्वारा जयपुर राज्य की सरकार से १६४२ के भारत छोड़ो आंदोलन मे भाग न लेने के सम्बन्ध मे जो समझौता हुआ था उसका परिणाम यह हुआ कि राज्य सरकार तथा उसके उच्चाधिकारी यह आशा करने लगे थे कि केवल प्रजामण्डल ही नही श्री हीरालाल शास्त्री से सम्बन्धित वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं की भी भारत छोडो आदोलन से सहानुभूति नही रहनी चाहिए।

नीचे हम तत्कालीन जयपुर राज्य के इन्सपेक्टर जनरल पुलिस का एक पत्र उद्धृत करते है जिससे यह स्पष्ट हो जावेगा।

Part I File No 42/Confidential
Prime Minister Jaipur State
Page No. 24

Letter from Inspector General of Police Jaipur State dated 6.10.42 to the Army Minister No 1182/P

......In continuation of my note, one further bit of interesting news I have received and that is that in picketing of the Girls High School some girls of Banasthali Vidyapith are taking part. You will see that one girl by name Shanti Devi who is a student of this School even

spoke at the meeting last night. The obvious question is how, these girls are taking part in acitivities of the rebel party without permission or knowledge of Mrs. Hira Lal Shastri and if it is with knowledge and consent how can Mr. Hira Lal Shastri affirm that he has no dealing with and no approval for the activities of the rebel party.

उक्त प्रत्र का हिन्दी अनुवाद

इस्पेक्टर जनरल पुलिस द्वारा प्रार्मी मिनिस्टर को लिखे पत्र का हिन्दी अनुवाद

मेरे पूर्व नोट के सदर्भ मे मुझे एक और रुचिकर सामाचार प्राप्त हुआ है। वह सामाचार यह है कि गर्ल्स हाई स्कूल की (पीकेटिंग) धरने मे वनस्थली विद्यापीठ की कुछ लड़किया भाग ले रही हैं। आप देखेगे कि एक लड़की जो वनस्थली विद्यापीठ की छात्रा है और जिसका नाम शाति देवी है गत रात्रि की सभा में उसने भाषण भी दिया था। स्पष्ट प्रश्न यह कि विद्रोही दल की गतिविधियो मे यह लडकिया बिना श्रीमती हीरालाल शास्त्री (श्रीमती रतन शास्त्री) की आज्ञा अथवा जानकारी के क्योकर भाग ले सक रही है। और यदि यह उनकी सहमति और जानकारी से हो रहा है तो श्री हीरालाल शास्त्री यह कहने का दावा कैसे कर सकते है कि उनका विद्रोही दल (कांग्रेस द्वारा सचालित भारत छोड़ो आदोलन) से न तो कोई सवध है और न वे विद्रोही दल की कार्यवाहियो का समर्थन ही करते हैं।

बात यह थी कि चतुर मिर्जा इस्माइल ने जयपुर राज्य मे प्रजामडल को निष्क्रिय तथा तेजहीन बना दिया श्री हीरालाल शास्त्री उसकी कूटनीति को नही समझ सके और स्थानीय तथा अस्थायी लाभ के लोभ से वे राष्ट्रीय आदोलन की प्रबल वेगवती धारा से दूर होकर खडे हो गए।

श्री माणिक्यलाल वर्मा ने उन्हे इसी भूल के कारण कभी क्षमा नही किया। भारत के स्वतत्र हो जाने के उपरान्त और वृहद राजस्थान बनने पर श्री माणिक्यलाल वर्मा ने जो श्री हीरालाल शास्त्री का घोर विरोध किया उनके विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित करवाया तथा आजन्म वे उनके विरोधी रहे उसके मूल मे यही बात थी। उन्होने श्री हीरालाल शास्त्री को उनकी १९४२ मे भारत छोड़ो आदोलन मे भाग न लेने तथा जयपुर के प्रधानमत्री से समझौता कर लेने के लिए कभी क्षमा नहीं किया।

बात यह थी कि चतुर और कूटनीतिज्ञ सर मिर्जा इस्माइल ने श्री हीरालाल शास्त्री को आगे चलकर उत्तरदायी शासन की ओर राज्य को अग्रसर करने, लगान सबधी कुछ कठिनाईयो को दूर करने, राजस्व व्यवस्था मे सुधार करने, युद्ध मे राज्य द्वारा धन जन की सहायता न देने, तथा वनस्थली विद्यापीठ को सहायता करने का आश्वासन देकर उन्हे आंदोलन न करने के लिए राजी कर लिया था। श्री हीरालाल शास्त्री की मान्यता यह थी कि राजाओ से यह माग करना कि वे अग्रेजो से अपनी सधिया तोड़कर ब्रिटिश सरकार से अपने सबध तोड़ ले अव्यवहारिक है। यह कभी होनेवाला नही है वस्तु राज्य से उत्तरदायी शासन तथा अन्य शासनसुधार प्राप्त कर लेना बुद्धिमानी है।

परन्तु वे इस पक्ष को संभवत मिर्जा इस्माइल से समझौता (जेन्टिल मेन्स एग्रीमेंट) करते समय भूल गए कि जब राष्ट्र नेता ने सघर्ष का आवाहन कर दिया है सघर्ष हो रहा है, समस्त राष्ट्र उसमे कूद पड़ा है तो किसी एक घटक को उस सघर्ष के औचित्य पर अपना पृथक निर्णय करना उचित और क्षम्य नही कहा जा सकता। अवश्य ही यह एक भयंकर भूल थी। सर मिर्जा इस्माइल अपनी युक्ति मे सफल हो गए। उन्होने जयपुर प्रजामडल को निष्क्रिय तथा निस्तेज बना दिया। निराश और क्रुद्ध होकर बाबा हरिश्चन्द्र, श्री रामकरण जोशी आदि ने आजाद मोर्चा बनाया और सत्याग्रह किया।

मेवाड़ सरकार ने भी वर्मा जी के साथ इसी युक्ति से काम लेना चाहा। ग्वालियर के कार्यकर्ताओ ने अपने महाराजा से समझौता कर लिया था। ग्वालियर के महाराजा ने उन्हे यह कहकर शात कर दिया था कि मेरे और मेरी प्रजा के बीच कोई विरोध नही है उत्तरदायी शासन की भविष्य मे स्थापना हो इसके लिए मै तैयार हूँ। प्रजा का हित हो यही हमारा ध्येय है व्यर्थ मे ब्रिटिश सरकार से सबध तोड़ने का आग्रह कर राज्य मे अशाति उत्पन्न करने से क्या लाभ। ग्वालियर के कार्यकर्ता महाराजा के आश्वासन को स्वीकार कर चुप हो गए।

मेवाड के चतुर और अनुभवी दीवान सर टी विजयराघवाचार्य इसी युक्ति से मेवाड प्रजामडल को पगु और निष्क्रिय बना देना चाहते थे। महाराणा के सकेत पर उन्होने ग्वालियर के प्रमुख राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ को उदयपुर आमत्रित किया और उन्हे जेल मे वर्मा जी से मिलने भेजा। ग्वालियर के कार्यकर्त्ताओ ने वर्मा जी को बहुत कुछ समझाने का प्रयत्न किया। उन्होने कहा कि हमारा युद्ध अग्रेजो से है अपने नरेशों से नही है। यह स्वय अग्रेजो के आधीन है और दासता की पीडा को अनुभव करते है। यदि प्रजा और नरेशो का सहयोग हो जावे तो देशी राज्यो मे तो एक प्रकार की स्वतत्रता आ ही सकती है। नरेश उत्तरदायी शासन तथा शासन मे सुधारो के लिए तैयार है। यदि आप आन्दोलन को वापस लेने को तैयार हो तो महाराणा आपके कहे अनुसार उत्तरदायी शासन को मेवाड़ मे लागू करने के लिए तैयार हो जावेगे।

परन्तु मेवाड़ के दीवान टी. राघवाचार्य को सभवत. यह ज्ञात नही था कि श्री माणिक्यलाल वर्मा दूसरी ही धातु के व्यक्ति है। वे अपने ध्येय से विचलित नही हो सकते। जो जन्मजात योद्धा और क्रातिकारी विचारों का रहा हो उसको छोटे मोटे प्रलोभन अपने लक्ष्य से डिगा नही सकते। वर्मा जी ने ग्वालियर के मित्रो की रोष भरे शब्दो से भर्त्सना करते हुए कहा कि यह युद्ध केवल देशी राज्यो मे उत्तरदायी शासन के लिए नही छेड़ा गया है। यह समस्त राष्ट्र की स्वतत्रता का युद्ध है। राष्ट्र के नेता ने युद्ध छेड दिया है देशीराज्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद के स्थम्भ है इन स्थम्भो को गिराए बिना ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत मे धराशायी नही हो सकता। अतएव किसी राज्य के कार्यकर्ता को यह अधिकार नही है कि वह अपने महाराजा से समझौता करले। आप लोगो ने अपने महाराजा से समझौता कर देश की स्वतत्रता के इस युद्ध से हट कर तटस्थ दर्शक की भाति चुपचाप रहने का जो निर्णण किया है वह देश के प्रति विश्वासघात और

देशद्रोह है। ग्वालियर के कार्यकर्ता वर्मा जी के रोष भरी इस ताडना को सुन कर लज्जित हो चुपचाप जेल से चले गए। सर टी. विजयराघवाचार्य की युक्ति असफल हो हो गई। परन्तु सर टी. विजयराघवाचार्य जैसे अनुभवी दक्ष प्रशासक इस असफलता से निराश होनेवाले नही थे। उन्होने एक दूसरी युक्ति सोची। उन्होने चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य को वर्मा जी को समझाने के लिए आमन्त्रित किया।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य देश के वरिष्ठ नेता थे। उनकी राजनीतिक दूरदर्शिता अद्भुत मेधा और विलक्षण प्रतिभा को सभी स्वीकार करते थे। उस समय काग्रेस से पृथक हो गये थे।

वे 'भारत छोड़ो आन्दोलन' से सहमत नही थे। वे उसके विरोधी थे। साथ ही वे मुस्लिम लीग से समझौता कर उसकी पाकिस्तान की माग को स्वीकार कर लेने के पक्ष में थे। सर टी विजयराघवाचार्य ने उन्हे वर्मा जी को समझाने के लिए आमन्त्रित किया। श्री राजगोपालाचार्य उदयपुर आए। उनके उदयपुर आने से पूर्व ही चतुर दीवान ने वर्मा जी को कारागार से मुक्त कर दिया। श्री राजगोपालाचार्य ने वर्मा जी से भेट की और कई घटे वर्मा जी को देश की सकट की परिस्थिति तथा बदलती हुई राजनीतिक परिस्थिति का विश्लेषण कर यह समझाने का प्रयत्न किया कि भारत छोड़ो आदोलन का देशी राज्यो में कोई औचित्य नही हे। वह हानिकारक है। अत में उन्होने वर्मा जी से कहा कि यदि वे महाराणा को दिए हुए अल्टीमेटम को वापस ले ले तो मेवाड सरकार उत्तरदायी शासन की राज्य में स्थापना करेगा और शासन मे मेवाड़ प्रजामडल का सहयोग लिया जावेगा।

वास्तव मे यह एक बहुत बडी राजनीतिक युक्ति थी और वर्मा जी के लिए बहुत बड़ा राजनीतिक प्रलोभन था। देश के एक शीर्ष वरिष्ठ राजनीतिक नेता का सुझाव और प्रस्ताव, उनके द्वारा महाराणा तथा प्रजामडल मे राजनीतिक मध्यस्थता करने के के लिए तैयारी, मेवाड़ प्रजामडल का राजनीतिक वर्चस्व स्थापित होने का सुनहरा स्वप्न और स्वय के सत्ता मे आने का प्रबल प्रलोभन वास्तव मे वर्मा जी की यह कड़ी परीक्षा थी। वर्मा जी पर मनोवैज्ञानिक ढ ग से यह एक बहुत बडा वार था। साधारण राजनीतिक नेता इस अचूक अस्त्र के सामने नही टिक सकता था। अवश्य ही उसका पतन हो जाता पर जिसने आजीवन देशसेवा का अखड व्रत लिया हो जो जन्मजात योद्धा और क्रातिकारी विचारो का रहा हो और जिसने देश को स्वतत्र करने तथा देश के दलितो और पीड़ितो की सेवा करना ही अपना जीवन-ध्येय बना लिया हो उसे यह प्रलोभन नही डिगा सके।

वर्माजी ने श्री राजागोपालचार्य से यह कहकर उन्हें निरुत्तर और हतप्रभ कर दिया "आप हमारे नेता नही हे, महात्मा गाधी हमारे नेता है हम उनके अनुयायी सैनिक हैं देश की स्वतन्त्रता का युद्ध महात्मागाधी ने छेड़ा है जब युद्ध छिड़ा हो तब सैनिक का यह अक्षम्य अपराध है कि वह सेनापति की आज्ञा के औचित्य के सम्बन्ध मे तर्कवितर्क करे। अतएव महात्मा गाधी जैसी आज्ञा हमे देगे हम वही करेगे।" श्री राजगोपालाचार्य समझ गए कि वर्माजी को डिगा सकना सभव नही है।

परन्तु सर टी. विजयराघवाचार्य ने वर्माजी को श्री राजगोपालाचार्य के द्वारा पथभ्रष्ट करने मे असफल होने पर भी हार नही मानी। उन्होने दूसरी युक्ति सोची। उन्होने सोचा कि वर्मा जी अडिग और दृढ़ है उन्हे डिगाया नही जा सकता परन्तु यदि किसी प्रकार प्रजामंडल के अन्य कार्यकर्ताओ को समझा कर आन्दोलन को वापस लेने तथा मेवाड के महाराणा द्वारा उत्तरदायी शासन स्थापित करने पर पदो को स्वीकार करने के लिए तैयार किया जा सके तो वर्माजी अकेले पड जावेगे और सभव है कि वे उस समय इस प्रस्ताव को स्वीकार कर ले अथवा वे प्रजामडल से पृथक होकर प्रभावहीन वन जावेगे।

अतएव सर टी जिवयराघवाचार्य ने राजाजी को प्रजामडल के अन्य कार्यकर्ताओ से मिलाया। श्री राजगोपालाचार्य ने प्रजामडल के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओ से बात की उन्हे बहुत समझाने की चेष्टा की परन्तु वर्मा जी का नेतृत्व ऐसा सबल और दृढ़ था कि प्रजामंडल का कोई भी प्रमुख कार्यकर्त्ता विचलित नही हुआ।

मेवाड़ के चतुर दीवान सर टी विजयराघवाचार्य का प्रयत्न यह था कि सर मिर्जा इस्माइल ने जिस प्रकार जयपुर राज्य प्रजामडल को निष्क्रिय और प्रभावहीन कर दिया और उसके नेता श्री हीरालाल शास्त्री को समझौते के मोहक जाल मे फांसकर प्रजामडल के कार्यकर्ताओ को निस्तेज और प्रभावहीन बना दिया उसी प्रकार वे मेवाड़ प्रजामडल को पगु और प्राणहीन कर निस्तेज और प्रभावशून्य कर देना चाहते थे। परन्तु वर्मा जी अवसरवादी और सकुचित दृष्टिवाले राजनीतिक कार्यकर्त्ता नही थे वे योद्धा थे। यद्यपि वे मेवाड़ प्रजामडल के नेता थे परन्तु उनका लक्ष्य सम्पूर्ण भारत था। वे ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध अतिम स्वतत्रता सग्राम मे सम्मिलित न होने के मूल्य पर मेवाडियो को छोटी मोटी सुविधाए प्राप्त करने की भूल नही कर सकते थे। अतएव मेवाड़ मे सर टी. वियराघवाचार्य का प्रयत्न असफल हुआ। श्री राजगोपालाजार्य के सारे प्रयत्न विफल हो गए। वर्माजी तथा उनके सहयोगियो ने उनकी बात को सुनने से इनकार कर दिया। अस्तु उनका सारा प्रयत्न विफल हुआ और वे उदयपुर से वापस चले गए।

मेवाड के तत्कालीन महाराणा श्री भोपालसिंह तथा दीवान सर टी. विजयराघवाचार्य को इस वात का श्रेय देना होगा कि यद्यपि मेवाड प्रजामडल के भारत छोड़ो आन्दोलन का दमन राज्य सरकार ने किया परन्तु वह दमन सीमित था नृशस नही था। ब्रिटिश भारत की भाति वहा गोलीकाण्ड तथा अन्य पाशविक अत्याचार नही हुए।

मेवाड़ प्रजामडल के सभी सक्रिय कार्यकर्ता जेल मे चले गए। छात्रो का आन्दोलन कुछ समय के उपरान्त शान्त हो गया। आन्दोलन केवल राजधानी तक ही सीमित नही था वरन ग्रामीण क्षेत्र मे भी प्रजामडल के कार्यकर्ताओ ने आन्दोलन किया। कुल मिलाकर पाच सौ से अधिक कार्यकर्ता गिरफ्तार हो गए। जब भारत के अन्य भागो मे आन्दोलन समाप्त हो गया तो मेवाड़ सरकार ने क्रमश. प्रजामडल के कार्यकर्ताओं को छोड़ना आरम्भ कर दिया।

आंदोलन के उपरांत :

द्वितीय महायुद्ध काल मे तथा उसके पश्चात देश मे अभूतपूर्व जागृति और राजनीतिक जागरण होगया था । नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फौज तथा अस्थायी आजाद हिंद सरकार की देश को आजाद करने की वीरतापूर्ण बलिदानों की रोमांचकारी गाथा ने देश को सोते से जगा दिया था । ब्रिटिश भारत की सेना जो कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के गढ़ की सुदृढ प्राचीर थी उसमे भी दरार पड़ गई थी, वह भी राष्ट्रीय विचारधारा से अनुप्राणित हो चुकी थी । ब्रिटिश सत्ता अब सेना पर भारत को पराधीन बनाए रखने के लिए निर्भर नही रह सकती थी । सेना भी विद्रोही हो उठी थी । राष्ट्रपिता महात्मागाधी के नेतृत्व मे भारत-छोड़ो आन्दोलन ने अभूतपूर्व लोकशक्ति व जागृति प्राप्त करली थी यद्यपि द्वितीय विश्वयुद्ध मे मित्र राष्ट्र विजयी हो गए थे परन्तु ब्रिटेन आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टि से विश्व का द्वितीय श्रेणी का राष्ट्र बन गया था । वह सयुक्तराज्य अमेरिका का पिछलग्गू राष्ट्र बन गया । अस्तु अग्रेजो की समझ मे यह आगया था कि उन्हे अब भारत को छोड़ने पर विवश होना पडेगा । यह चिन्ह दिखलाई देने लगे कि भारत मे शीघ्र ही स्वतत्रता के सूर्य का उदय होनेवाला है । देशी राज्यो के नरेश इस भावी परिवर्तन की सम्भावना से शकित हो उठे थे । गौराग प्रभुओ की नींव हिल रही थी अतएव उन्होने अपने अपने राज्यो मे जागीरदारो तथा प्रजामन्डलो के प्रतिनिधियो को भी मन्त्री नियुक्त करना शुरू कर दिया । मेवाड़ मे महाराणा ने एक सलाहकार बोर्ड की स्थापना करदी थी । साथ ही एक विधान वनाने के लिए समिति भी नियुक्त की गई । १९४६ मे जब महाराणा भोपालसिह ने भी राममूर्ति के नेतृत्व मे एक मन्त्रिमण्डल गठित किया उसमे जागीरदारो के प्रतिनिधि और प्रजामडल के प्रतिनिधियों को भी लिया गया । प्रजामण्डल की सिफारिश पर श्री हीरालाल कोठारी तथा श्री मोहन लाल सुखाड़िया मन्त्री नियुक्त किए गए ।

जबकि मेवाड़ के राजनीतिक जीवन मे तेजी से ऊपर लिखे परिवर्तन हो रहे थे तब श्री माणिक्यलाल वर्मा ने मेवाड प्रजामण्डल के द्वारा मेवाड़ मे पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित करने का आदोलन आरम्भ कर दिया था । तब तक मेवाड़ का एक शासन विधान बनकर तैयार हो चुका था और महाराणा साहब ने उसको स्वीकार कर लिया था । उस विधान के अनुसार मेवाड़ में एक विधान सभा की स्थापना की घोषणा की गई । यद्यपि प्रस्तावित विधान पूर्ण उत्तरदायी शासन की दृष्टि से अत्यन्त अपूर्ण और असतोषजनक था परन्तु प्रजामण्डल ने उसके अन्तर्गत होने वाले चुनावो में भाग लेने का निश्चय कर लिया था । जहा प्रजामण्डल पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए प्रयत्नशील था वहा तक सामन्तवादी तथा अन्य प्रतिक्रियावादी तत्व भी सक्रिय हो गए थे । पूर्ण उत्तरदायी शासन के आदोलन के परिणामो से अपने निहित स्वार्थो की रक्षा करने के उद्देश्य से उन्होने भी 'राजपूत सभा' के रूप मे अपना सगठन खड़ा कर लिया था ।

राजपूत सभा के रूप मे सामन्ती और प्रतिक्रियावादी तत्व प्रजामडल के विरोध

सरदार पटेल ने लार्ड माऊट-वैटन को उत्तर दिया कि देशी राज्यो के विलय के संबध में जो कुछ किया जा रहा है वह एक निश्चित योचना के अनुसार किया जा रहा है।

जब लार्ड माऊट-वैटन उदयपुर आए और उन्होने महाराणा भूपालसिंह को मेवाड़ को भारत मे विलय करने मे जल्दी न करने की सलाह दी। उस समय मेवाड़ राज्य के मन्त्रिमडल मे प्रजामण्डल के दो मत्री थे। श्री माणिक्यलाल वर्मा ने श्री मोहन लाल सुखाड़िया तथा श्री हीरालाल कोठारी को प्रजामडल के प्रतिनिधि के रूप मे भेजा था। लार्ड माऊंट बैटन की सलाह के बारे मे श्री मोहनलाल सुखाडिया तथा श्री हीरा लाल कोठारी ने श्री वर्माजी को अवगत कराया क्योंकि लार्ड माऊट-बैटन ने उन दोनो से भी इस सबध मे चर्चा की थी, और मेवाड़ राज्य के विलय मे शीघ्रता न करने के अपने विचार व्यक्त किए थे।

श्री माणिक्यलाल वर्मा देशी राज्यो के विलय मे देरी किए जाने के विरुद्ध थे। वे उसको देश के लिए अत्यन्त हानिकारक और घातक मानते थे। अस्तु जब उन्हे यह ज्ञात हुआ कि माऊंट-बैटन ने मेवाड के महाराणा को मेवाड़ राज्य के विलय करने मे जल्दी न करने की सलाह दी है तो तत्काल दूसरे दिन वर्माजी सरदार पटेल के पास पहुंचे वर्माजी ने सरदार पटेल को सारी स्थिति से अवगत कराया। सरदार पटेल से उन्होने कहा कि देशी राज्यो ने भारत मे रहना स्वीकार किया यही यथेष्ट नही है इनकी सीमाए और सत्ता टूटनी चाहिए नही तो यह देश के भावी विकास मे बाधक सिद्ध होगे। सरदार पटेल भी इसी मत के थे। परन्तु प्रश्न यह था कि वे देशी नरेशो को विवश करने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रत्यक्ष दबाव डालने मे कठिनाई अनुभव कर रहे थे। लार्ड माऊट-वैटन इस पक्ष मे नही थे। वर्माजी ने सरदार पटेल से कहा कि यदि भारत सरकार हस्तक्षेप न करे तो प्रजा राजाओ का सिंहासन छीन सकती है। आप तो हमे यह आश्वासन दे दीजिए कि यदि प्रजा अपने नरेशो के विरुद्ध उठ खड़ी हो तो भारत सरकार कोई हस्तक्षेप नही करेगी तो हम राजाओ से निवट लेगे।

सरदार पटेल वर्माजी से बहुत अधिक प्रभावित हुए। उन्होने वर्माजी की बहुत सराहना की तथा उनके इस विचार का समर्थन ही नही किया वरन उनको अपना आशीर्वाद भी दिया। उन्होने कहा जाओ जहा जहा प्रजामडल तेजवान हैं वहा नरेशों को विवश करो कि वे प्रजा की आकांक्षाओ का आदर कर अपनी प्रभुसत्ता को भारत को सौप कर शासन में आवश्यक परिवर्तन करे।

सरदार पटेल से भारत सरकार द्वारा हस्तक्षेप न करने का आश्वासन लेकर और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर वर्माजी दिल्ली से उदयपुर वापस लौटे। दूसरे दिन उन्होने उदयपुर मे एक बहुत बड़ी सभा की। हजारो की सख्या मे उदयपुर निवासी अपने प्रिय नेता के मेवाड राज्य के भविष्य के सबध मे भाषण को सुनने के लिए एकत्रित हुए। वर्माजी ने देश की वर्तमान स्थिति तथा उसकी समस्याओ पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देशी राज्यो को अविलम्ब भारत मे अपने को विलय ही नही कर देना चाहिए वरन उत्तरदायी शासन की स्थापना करनी चाहिए। उन्होने मेवाड़ के महाराणा को

चेतावनी दी (अलटीमेटम) कि यदि उन्होने अपने सलाहकारो की बात मान कर मेवाड़ राज्य को अलग रखने का प्रयत्न किया तो मेवाड प्रजामडल उसका विरोध करेगा और मेवाड की प्रजा का सघर्ष के लिए आवाहन करेगा।

वर्माजी के भाषण का वाछनीय प्रभाव हुआ। महाराणा ने मेवाड का विलय करने तथा राज्य मे उत्तरदायी शासन स्थापित करने का निश्चय कर लिया। मेवाड़ राज्य के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री राममूर्ति तथा मत्री रामगोपाल एक हवाई जहाज चार्टर करके दिल्ली गए और सरदार पटेल से मिलकर उन्होने मेवाड़ राज्य का भारत विलय करना स्वीकार किया तथा राज्य मे उत्तरदायी शासन स्थापित करने का निश्चय हो गया।

राजस्थान मे सर्व प्रथम शाहपुरा जैसे छोटे से राज्य ने उत्तरदायी शासन प्रजा को सौंपने मे पहल की। तत्कालीन राजाधिराज ने अपने शासन में उत्तरदायी शासन की स्थापना की ओर और श्री गोकुललाल असावा जैसे निष्ठावान और प्रगतिशील राज-नीतिज्ञ उसको लोकप्रिय प्रधान मन्त्री के रूप मे प्राप्त हुए।

उधर अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करोली राज्यों को मिलाकर 'मत्स्य-राज्य' की स्थापना हुई। उसकी राजधानी अलवर थी और श्री शोभालाल उसके मुख्य मन्त्री नियुक्त हुए।

राजस्थान की उन्नीस रियासतो मे से जयपुर, जोधपुर, उदयपुर और बीकानेर बडे राज्य थे। शेष अन्य अपेक्षाकृत छोटे थे। कुछ तो बहुत ही छोटे राज्य थे जिनके साधन इतने कम थे कि वे स्वतन्त्र शासकीय इकाई के रूप मे जीवित नही रह सकते थे। अस्तु आरम्भ से ही यह विचार राजस्थान के राजनीतिक नेताओ तथा सरदार पटेल के मस्तिष्क मे घूम रहा था कि शीघ्र ही सयुक्त राजस्थान की स्थापना की जानी चाहिए। एक धारणा यह थी जयपुर, जोधपुर, बीकानेर यदि चाहे तो कुछ समय के लिए पृथक राज्य रह सकते है परन्तु शेष सभी रियासतो को मिलाकर संयुक्त राजस्थान का निर्माण किया जाना चाहिए। इसी विचार को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से सयुक्त राजस्थान की स्थापना हुई जिसके मुख्यमन्त्री श्री गोकुललाल असावा नियुक्त हुए थे और कोटा उसकी राजधानी घोषित की गई थी।

आरंभ मे जहां तक उदयपुर राज्य का प्रश्न था यह संभावना थी कि उदयपुर राज्य पृथक राज्य के रूप मे रहेगा, और वहा उत्तरदायी शासन की स्थापना की जावेगी। मेवाड प्रजामडल मन्त्रिमडल बनावेगा। उस समय वर्माजी ने यह निश्चय किया था कि श्री प्रेमनारायण माथुर मुख्यमत्री तथा श्री मोहनलाल सुखाडिया तथा तथा श्री हीरालाल कोठारी मत्री होगे। प्रजामडल की कार्यकारिणी ने वर्माजी के इस प्रस्ताव को एक मत से स्वीकार कर लिया था।

इस सबंध मे यह बात ध्यान रखने की है कि उस समय श्री माणिक्यलाल वर्मा का मेवाड़ मे तो एकछत्र नेतृत्व था ही राजस्थान के शीर्ष नेताओ मे उनकी गणना होती थी और वे सम्पूर्ण राजस्थान तथा केन्द्र में श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखे

में मोर्चा बनाकर खड़े हो गए थे। राजपूत सभा ने मेवाड़ प्रजामंडल के प्रत्याशियों के विरुद्ध अपने आदमियों को चुनाव मे खड़ा कर दिया था। इस कारण प्रजामण्डल तथा प्रतिक्रियावादी तत्वो मे सघर्ष तथा तनाव की स्थिति उत्पन्न होगई थी। चुनाव प्रचार के सम्बध मे निकलनेवाले जलूसो तथा प्रजामडल की चुनाव सभाओ मे विघ्न डालने के कारण प्रतिक्रियावादी तत्वो तथा प्रजामडल के मध्य तनाव की तीव्रता बढ गई थी। उसका अन्त दुर्भाग्यपूर्ण गोली काड में हुआ।

बात यह हुई कि राजपूत सभा के कार्यकर्ताओ ने नादडी की हवेली मे लगे हुए प्रजामडल के झन्डे को गिरा दिया और फाड़ दिया तथा साथ में लगे हुए कांग्रेस के झन्डे को कुए मे फेक दिया। इससे प्रजामडल के कार्यकर्ताओ मे उत्तेजना फैल गई। इसपैक्टर जनरल पुलिस को लोगो ने घेर लिया। प्रजामडल के तत्कालीन अध्यक्ष श्रीभूरेलाल बया ने इस अशोभनीय कृत्य का विरोध करते हुए महाराणा से हस्तक्षेप करने को कहा। प्रजामडल के कार्यकर्ताओं ने इसके विरोध स्वरूप एक जलूस निकाला। उधर राजपूत सभा का जलूस दूसरी ओर से आरहा था। बजार में घंटाघर के पास दोनो जलूसो की मुठभेड हो गई। दोनो पक्षो के लोग जोश मे भरे हुए थे तनाव चरम सीमा पर पहुच चुका था पुलिस ने जलूस को आगे बढने से रोका। जोश और भी बढ गया पुलिस ने फाइरिग किया। परिणाम स्वरूप प्रजामंडल के दो कार्यकर्ता शांतीलाल और आनन्दीलाल पुलिस की गोली से धराशायी होगए। गुलावसिंह शक्तावत परषराम त्रिवेदी तथा नन्दकुमार घायल होगए। गुलावसिंह शक्तावत के गोली टाग में लगी। उन्हे अपनी टांग कटवानी पड़ी। श्री हीरालाल कोठारी तथा श्री मोहनलाल सुखाडिया ने गोलीकाड के विरोध स्वरूप मत्रिपद से त्यागपत्र दे दिया। प्रजामडल ने राज्य सरकार की तीव्र और कठोर आलोचना की तथा आन्दोलन करने का निश्चय किया।

इस गोलीकाड से स्थिति बदल गई। मेवाड़ सरकार ने प्रस्तावित विधान सभा के चुनावो को स्थगित कर दिया और विधान को वापस ले लिया गया। उस समय घटनाचक्र तेजी से चल रहा था। देश के राजनीतिक मच पर तेजी से परिवर्तन हो रहे थे। प्रतिक्रियावादी तत्व भी सक्रिय हो गए थे वर्माजी सजग थे और प्रतिगामी शक्तियो का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रहे थे और उनका प्रतिकार करने मे प्रयत्नशील थे। प्रजामडल का मेवाड़ की जनता पर उस समय गहरा प्रभाव था।

अध्याय आठवां

संयुक्त राजस्थान के मुख्य मंत्री

१८५७ से लेकर १९४७ तक रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे से लेकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तक क्रांतिकारियो के आत्मबलिदान और राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने जो अद्भुत लोकशक्ति उत्पन्न की और उनके नेतृत्व मे लाखो भारतीयो ने देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया उसके परिणाम स्वरूप १५ अगस्त १९४७ को देश स्वतत्र हो गया। भारत जो अभी तक दासता के जुए को अपने कधो पर रख कर कराह रहा था वह स्वतंत्र होकर सर ऊंचा कर स्वाभिमान से स्वतत्र राष्ट्रो की श्रेणी मे खडा हुआ। परन्तु जहां भारत के राष्ट्रीय आदोलन की यह एक महान सफलता थी वहा चतुर अग्रेजो की, भारत का विभाजन कर पाकिस्तान का निर्माण कर भारत को पगु और निर्बल बनाने की दुरभिसधि भी सफल हो गई। देश का वर्तमान नेतृत्व जैसे थक गया था। उसने इस आत्मघाती प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और भारत तथा पाकिस्तान के रूप मे दो स्वतंत्र देशो का आविर्भाव हुआ। यही नही भारत में जो छोटे वडे सैकड़ो राज्य थे वे भी स्वतन्त्र घोषित कर दिए गए, और देश के सैकड़ों टुकडो मे बट जाने का खतरा उत्पन्न हो गया। परन्तु सरदार पटेल की दूरदर्शिता तथा दृढता के परिणाम स्वरूप देशी राज्यो का विलय हो गया और वे भारत के अविभाज्य अग बन गए। जो थोडे से देशी नरेश स्वतन्त्र शासक बने रहने के स्वप्न देख रहे थे उनके स्वप्न ध्वस्त हो गए और सरदार पटेल ने उन्हे भारत मे सम्मिलित होने पर विवश कर दिया।

१९४८ की अप्रेल के दूसरे सप्ताह मे स्वतन्त्र भारत के प्रथम गवरनर जनरल के रूप में लार्ड माऊन्ट वैटन उदयपुर आए। उन्होने महाराणा भूपालसिंह को सलाह दी कि वे अपने राज्य को भारत मे विलय करने मे जल्दी न करें। लार्ड माऊंट-वैटन की मान्यता थी कि वडे देशीराज्यो का विलय करने मे जल्दी न की जावे। उन्होंने सरदार पटेल से भी धैर्य से काम लेने के लिए कहा और शीघ्रता करने के विरुद्ध चेतावनी दी। परन्तु दूरदर्शी सरदार पटेल उस सम्भावित खतरे को देख रहे थे कि जो देश के समक्ष उन सैकड़ो छोटे वड़े स्वतन्त्र राज्यो के रूप मे खडा था। उन्होने माऊंट-वैटन के परामर्श की अवहेलता कर योजनावद्ध उन राज्यो का शीघ्र भारत मे विलय करने का कार्यक्रम वनाया और एक के वाद दूसरे देशी राज्य का विलय होने लगा।

जाते थे। यदि वे चाहते तो मेवाड़ के मुख्यमत्री स्वयं वन सकते थे। परन्तु उन्होंने पद लेने का कभी विचार भी नही किया। जब मेवाड़ प्रजामंडल के दो मन्त्रियो को मेवाड़ सरकार ने नियुक्त करना चाहा तो उन्होने श्री मोहनलाल सुखाड़िया और श्री हीरालाल कोठारी को मनोनीत किया और जव मेवाड़ मे पूर्णउत्तरदायी शासन की स्थापना का प्रश्न आया तो उन्होने श्री प्रेमनारायण माथुर को मुख्य मन्त्री तथा श्री मोहनलाल सुखाड़िया तथा श्री हीरालाल कोठारी को मन्त्री बनाने का प्रस्ताव रखा।

यही नही जव विधान निर्मात्री सभा (कास्टीटुऐंट एसेम्बली) मे प्रतिनिधि भेजने का प्रश्न आया तो भी वे चाहते थे कि श्री प्रेमनारायण माथुर वहां भेजे जावे परन्तु श्री माथुर तथा अन्य सहयोगियो के बहुत आग्रह करने पर और दबाने पर ही उन्होंने वहा जाना स्वीकार किया था। कहने तात्पर्य यह कि यद्यपि वर्माजी मेवाड़ प्रजामण्डल के संस्थापक और एकछत्र नेता थे। यदि यह कहा जावे कि वे ही उसके प्राण थे तो अतिशयोक्ति नही होगी परन्तु उनके मन मे पद लेने का कभी विचार नही उठा। वे सदैव उससे बचने का प्रयत्न करते रहे।

कोटा मे गठित सयुक्त राजस्थान जिसके मुख्यमत्री श्री गोकुललाल असावा नियुक्त हुए उसका जीवन कुछ दिनो का ही रहा क्योंकि उसी समय मेवाड के महाराणा ने मेवाड़ को सयुक्त राजस्थान मे सम्मिलित करने का निश्चय कर लिया। और सरदार पटेल को अपने विचार से अवगत करा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि कोटा मे गठित सयुक्त राजस्थान विधिवत स्थापित भी न हो सका कि पूर्व संयुक्त राजस्थान की स्थापना हुई। उदयपुर उसकी राजधानी घोषित की गई और महाराणा भूपालसिंह उसके राजप्रमुख नियुक्त हुए। अब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि मुख्यमत्री कौन हों। सयुक्त राजस्थान मे उदयपुर के अतिरिक्त कोटा, बूंदी, टोक भालावाड, शाहपुरा, डूगरपुर, बासवाड़ा, प्रतापगढ, किशनगढ राज्य सम्मिलित हुए थे। पहली बार राज्यो की सकुचित सीमाए टूट रही थी और सयुक्त राजस्थान का निर्माण किया जा रहा था। अस्तु आवश्यकता इस बात की थी कि मुख्यमन्त्री ऐसा व्यक्ति हो जिसको सभी की समान श्रद्धा और आदर प्राप्त हो और सभी उसके नेतृत्व को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करने के लिए तैयार हो। सभी की दृष्टि वर्मा जी पर थी। यद्यपि वर्माजी के मन मे पद लेने की तनिक भी इच्छा नही थी परन्तु सहयोगी कार्यकर्ताओ के विशेष आग्रह पर उन्होने मुख्य मंत्री पद स्वीकार कर लिया। क्योकि अन्य कोई ऐसा व्यक्ति नही था कि जो सभी सम्मिलित राज्यो के कार्यकर्ताओ का पूर्ण विश्वासभाजन रहा हो।

१८ अप्रेल १९४८ को उदयपुर मे श्री जवाहरलाल नेहरू के द्वारा प्रथम संयुक्त राजस्थान का उद्घाटन हुआ और श्री माणिक्यलाल वर्मा उसके मुख्य मन्त्री बने। ग्यारह महीने तक उस मत्रिमंडल ने कार्य कार्य किया।

जिन लोगो ने वर्मा मत्रिमंडल के कार्यो का निकट से अध्ययन किया है वे भली भाति जानते है कि ग्यारह महीने के अल्पकाल मे वर्मा मत्रिमडल ने जिस कुशलता और लगन से कार्य किया उसकी तुलना वाद का कोई मत्रिमडल नही कर सका। वर्मा

मंत्रिमंडल मे अभूतपूर्व एकता, विचार साम्य, और कर्मठता थी। वर्मा जी के नेतृत्व में मंत्रिमंडल ने बड़ी तेजी से प्रगतिशील नीतियों को अपनाया तथा शासन मे सुधार करना आरम्भ किया।

जब वर्मा जी संयुक्त राजस्थान के मुख्य मंत्री बने उस समय उनको अत्यन्त विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। सामन्ती तत्व सगठित हो गए थे। क्षेत्रीय परिषद ने सभी जागीरदारों का एक सबल संगठन खडा कर दिया था। वे कांग्रेस सरकार को उखाड़ने के लिए तरह तरह के षडयंत्र कर रहे थे। जिन प्रदेशो तथा जिलो में प्रजामंडल का प्रवेश नही हो पाया था वहां की जनता को कांग्रेस सरकार के विरुद्ध उभारने का प्रयत्न किया गया। जो भी रचनात्मक कार्य आदिवासियो के क्षेत्र मे किए जा रहे थे उसमे बाधा डालने के लिए आदिवासियो को उकसाया गया। अंधविश्वास मे फसे हुए आदिवासियो को झूठा प्रचार करके खूब बहकाया गया। सामन्ती शक्तिया स्वय तो संगठित होकर कांग्रेस के विरुद्ध मोर्चा खडा कर ही रही थी साथ ही वे आदिवासियो को भी भड़का कर कांग्रेस शासन के विरुद्ध खड़ा कर देना चाहते थे। बांसवाडा, प्रतापगढ कुशलगढ में आदिवासियों में कोई कार्य पहले नही हुआ था वहा प्रजामडल शक्तिशाली तथा तेजवान नही बने थे। इस कारण इस प्रदेश के आदिवासियो को आसानी से बहकाया जा सकता था। उदयपुर, बूदी और डूगरपुर मे भी कुछ आदिवासियो के क्षेत्र ऐसे थे जहां प्रजामंडल का प्रभाव नही था अस्तु जागीरदारो ने अपने परम्परागत संबन्धो और प्रभाव का लाभ उठा कर आदिवासियो को कांग्रेस शासन के विरुद्ध खड़ा करने का प्रयत्न किया। उन्हें खूब बहकाया गया, झूठा भय बताया गया।

जागीरदार केवल आदिवासियो को उकसाकर चुप नही रहे। उन्होने डाकुओ और असामाजिक तत्वों को भी उकसाया जिससे राज्य मे अशांति फूट पडे और ऐसा प्रतीत हो कि शांति और व्यवस्था भंग हो गई है। कांग्रेस शासन मे जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा नहीं हो सकी ऐसा वे प्रचार कर सकें। वर्मा मन्त्रिमण्डल बदनाम हो जावे।

जब राज्यों का विलीनीकरण हुआ तो सभी राज्यो मे कांग्रेस सरकार को अपना राज्य सौंपने के पूर्व खजाने खाली कर दिए। फर्राशखानो से मूल्यवान सामान महलो में अथवा नरेशो के मुंह लगे लोगों के यहां पहुंच गया। जब कुशलगढ का विलीनीकरण हुआ तो वहा के खजाने में सभवत. सवा रुपये रोकड़ मे शेष थे। वहां जो अधिकारी प्रशासक के रूप में पहुँचा उसने पहुँचते ही वर्माजी को सूचना भेजी कि खजाना खाली है तुरन्त हवाई जहाज द्वारा वहां कुछ रुपया भेजना पड़ा। केवल कोटा राज्य ने चम्बल बांध के लिए अस्सी लाख रुपये जोकि पृथक अमानत के रूप मे रखे थे दिए। सभी राज्यो ने विलीनीकरण से पूर्व रातोंरात सब खजाने खाली कर दिए।

हथियार भी गायब हो गए। आधुनिक ढंग के हथियार दिखलाई नही पडे पुरानी थोड़ी सी राईफिलें प्राप्त हुई। "वर्माजी ने अपने सस्मरण मे लिखा है 'हथियारो के नाम पर दो दर्जन राईफिलें मिली। यही दशा मोटर गैरेज की थी जो भी अच्छी मोटरें थीं सभी रातोंरात महलो के गैरेजो में पहुंच गई। राजकीय गैरेजो में पुरानी

बेकार, और न चलनेवाली मोटरें खड़ी थी जिन्हें वर्मा सरकार को तुरन्त नीलाम करना पड़ा और नई मोटरें खरीदनी पड़ी ।"

जिस दिन सत्ता वर्माजी के मन्त्रिमंडल के हाथ मे आनेवाली थी उससे पूर्व ही नरेशो ने अपनी मर्जी के अधिकारियो के पद और वेतन मनमाने ढग से बढा दिए । एक तहसीलदार जिसका वेतन सौ रुपए के लगभग था उसका वेतन एक हजार के लगभग कर दिया गया । वर्मा मन्त्रिमडल मे उसको तहसीलदार बना दिया गया । जब यह ज्ञात हुआ कि न तो वह पढा है और न कुछ कायदे कानून को समझता ही है तो उसकी जांच की गई । ज्ञात हुआ कि वह अमुक राजा का माली था वस्तुस्थिति ज्ञात होने पर उसे पूर्व पद और वेतन पर रखा गया ।

विभिन्न राज्यो मे कायदे कानून भिन्न थे इस कारण भी बहुत षडयन्त्र किया । जागीरदारो ने जाटो और किसानों को उकसा कर एक जलूस निकलवाया और महाराणा के शासन की पुनः स्थापना की माग की । जलूस महाराणा साहब से गुलाब बाग मे मिला और उसके नेताओ ने उनको एक ज्ञापन दिया जिसमे उनके राज्य की स्थापना की पुन. याचना की गई थी । महाराणा ने उस ज्ञापन को ले लिया ।

वर्माजी उस समय राज्य के दौरे पर गये थे जब उन्हें इस घटना की सूचना मिली तो वे तुरन्त उदयपुर वापस लौटे और महाराणा साहब से मिले । वर्माजी ने उन्हें समझाया कि आप वैधानिक राजप्रमुख हैं । राज्य शासन का उत्तरदायित्व मंत्रिमंडल पर है आपको इस प्रकार का ज्ञापन जो कि राष्ट्र विरोधी है स्वीकार कर लेना उचित नही था । महाराणा साहब समझ गए । बात यह थी कि महाराणा साहब की मेवाड़ मे वैधानिक स्थिति क्या है यह उनके ध्यान मे नही रहा । परन्तु इस घटना से महाराणा साहब तथा वर्माजी के बीच तनिक भी खिचाव या कटुता उत्पन्न नही हुई । वर्माजी वस्तु स्थिति को समझ गए और उन्होने उस बात को आगे नही बढ़ाया ।

दूसरे दिन वे किसान और जाट जिन्होने जागीरदारों के बहकाने से महाराणा साहब को ज्ञापन दिया था वर्माजी से मिलने गए और उनसे अपनी मांग के संबंध मे बात करनी चाही । वर्माजी ने उनसे मिलना अस्वीकार कर दिया । वर्माजी ने उन लोगो से कहला दिया कि उन्होने राष्ट्रविरोधी ज्ञापन महाराणा साहब को दिया । मैं ऐसे राष्ट्र विरोधी तत्वो से नही मिल सकता ।

परिस्थिति अत्यन्त विषम थी सामन्ती तत्व तथा राष्ट्रविरोधी शक्तियां अराजकता और अशान्ति उत्पन्न कर राज्य शासन को निर्बल कर देना चाहते थे । वे यह समझते थे कि यदि शासन ठप्प होगया और अशान्ति तथा अव्यवस्था फैल गई तो विवश होकर कांग्रेस सरकार को उनसे समझौता करना होगा और उनको भी सत्ता मे लेना होगा । केन्द्रीय सरकार भी राजस्थान के नव-निर्मित मन्त्रिमंडल पर और विशेष कर वर्माजी पर दबाव डालेगी । अवश्य ही यदि कोई निर्बल व्यक्ति होता तो इस विषम परिस्थिति से घबरा उठता । परन्तु विरोधी तत्व सभवतः वर्माजी को नही जानते थे । जीवन भर जो अन्याय और अत्याचार से संघर्ष करता रहा, देश की स्वतंत्रता के लिए

जिसने अपने को खपा दिया, जिसे सत्ता और पद का किंचित मात्र लोभ नही था; जो सौ युद्धो का योद्धा था उसे वे राष्ट्र विरोधी तत्व विचलित कर झुका सकेगे यह कल्पना ही हास्यास्पद थी। वर्माजी इन राष्ट्रविरोधी तत्वो के सामने अडिग खडे रहे। अवश्य ही उनको अपने मंत्रिमंडल का शत प्रतिशत समर्थन प्राप्त था। उस मत्रिमडल मे पद से चिपके रहने, एन केन प्रकारेण सत्ता को अपने हाथ मे रखने की कुत्सित और घृणित भावना का समावेश नही हुआ था। लेखक को वर्मा मत्रिमडल को समीप से देखने का अवसर मिला था। आज वह कभी कभी सोचता है कि काश हमारे मत्रियो मे वर्मा मत्रिमन्डल जैसी उत्कट निस्प्रहता और सेवा की भावना होती।

वर्माजी ने समझ लिया कि डाकुओ का यदि कठोरता से दमन नही किया गया तो राष्ट्रविरोधी तथा असामाजिक तत्व सबल हो जावेंगे। अस्तु उन्होने दो काम किए एक तो श्री बनर्जी को बाहर से बुलाकर इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस नियुक्त किया, एक दो और कुशल पुलिस अधिकारी बाहर से बुलाए और सरदार पटेल को लिखा कि मेरी पुलिस के पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र नही है। यहां तक कि रियासतो ने पुरानी और वेकार राइफले भी गिनती की दी हैं मुझे यथेष्ट सख्या मे राइफले तथा आधुनिक ढंग के हथियार चाहिए। सरदार पटेल ने तुरन्त हथियारों की व्यवस्था कर दी। वर्माजी ने इन्स्पेक्टर जनरल को बुलाकर कहा डाकुओ का आतंक निश्शेष करना है। पकड़े जा सके पकड़ो नही तो उन्हे मार दो, पर राज्य में डाकुओ का आतक समाप्त करने के लिए मैंने तुम्हे बुलाया है। वर्माजी ने अत्यन्त दृढता से काम लिया। वे प्रतिदिन इन्स्पेक्टर जनरल से डाकुओ के विरुद्ध अभियान की प्रगति की रिपोर्ट सुनते। उन्होने इन्स्पेक्टर जनरल से कह दिया डाकू समाप्त होने चाहिए, तुम्हे मै अपने ढग से कार्य करने की पूर्ण स्वतन्त्रता देता हूं, मेरा पूर्ण समर्थन और विश्वास तुम्हे प्राप्त होगा। राजस्थान की पुलिस ने वर्माजी की प्रेरणा से डाकुओ का ऐसा घोर दमन किया कि ६ महीने मे ही डाकुओ का सफाया हो गया। डाकुओ का आतक समाप्त हो गया। वर्माजी के शासन की यह अभूतपूर्व सफलता थी।

परन्तु वर्माजी की कठिनाइया केवल सामन्ती तत्वो तथा राष्ट्र विरोधी शक्तियो के विरोध तक ही सीमित नही थी। वर्माजी के प्रति आई. सी. एस.वर्ग का भी रुख अच्छा नही था। श्री वी पी मेनन तथा वर्माजी के बीच राजाओ की निजी सम्पत्ति के प्रश्न को लेकर गहरा मतभेद हो गया। श्री मेनन के राजाओ से बहुत अच्छे सबंध थे। वे नरेशों की अचल सम्पत्ति की सूची मे बहुत सी सम्पत्ति जोडने के लिए वर्माजी पर दबाव डाल रहे थे। मेनन उस समय गृहमत्रालय के सर्वेसर्वा थे। सरदार पटेल का उन्हे पूर्ण विश्वास और समर्थन प्राप्त था। राज्यो के मुख्य मंत्री उनको प्रसन्न रखने का प्रयत्न करते थे। वे वर्माजी को दबाकर राजस्थान के भूतपूर्व शासको की अचल सम्पत्ति की सूची में वह सम्पत्तिया भी जोड़ देना चाहते थे कि जो उन नरेशो के शासनकाल मे भी उनकी निजी सम्पत्ति नही थी। वर्माजी ने श्री मेनन के विचार और प्रयत्नो का घोर विरोध किया और उनकी नाराजगी की परवाह न कर अचल सम्पत्ति की सूची में से

इस प्रकार की संपत्तियो को निकाल दिया। श्री मेनन ने बहुत प्रयत्न किया वर्माजी पर बहुत दवाव डाला परन्तु वर्माजी अडिग रहे उनकी एक भी नही चलने दी। इस कारण श्री मेनन उनके विरोधी हो गए।

दूसरा प्रश्न जिस पर वर्माजी का गहरा मतभेद था चीफ सैक्रैटरी की नियुक्ति को लेकर उठ खडा हुआ। श्री मेनन का आग्रह था कि संयुक्त राजस्थान का चीफ सैक्रेटरी केन्द्र से भेजा हुआ कोई वरिष्ठ आई सी. एस. हो। उन्होने सरदार पटेल को भी इस विचार का सबसे बडा समर्थक बना लिया था। सरदार पटेल की भी यही मान्यता थी कि सभी नवनिर्मित राज्यो मे केन्द्र से भेजा हुआ कोई वरिष्ठ आई. सी. एस. चीफ सैकरेटरी होना चाहिए। वर्माजी पर स्टेट मिनिस्ट्री तथा सरदार पटेल का निरन्तर यह दवाव पड रहा था परन्तु वे बरावर इनकार कर रहे थे। इस सबंध मे श्री मेनन उन्हें वरावर लिख रहे थे और सरदार पटेल का भी यही कहना था परन्तु वर्माजी ने उसकी तनिक भी परवाह न कर चीफ सेक्रेटरी पद पर एक स्थानीय अधिकारी की नियुक्ति कर दी। उधर स्टेट मिनिस्ट्री ने श्री जैन को जो एक वरिष्ठ आई. सी. एस. थे राजस्थान का चीफ सैक्रेट्री नियुक्त कर उदयपुर भेज दिया। श्री जैन अपने समस्त परिवार, दो वैगन भर कर सामान, यहा तक कि अपनी गाय को भी लेकर उदयपुर जा पहुँचे। वे वर्मा जी से मिले और उन्होने वर्मा जी को स्टेट मिनिस्ट्री का उनकी नियुक्ति का पत्र बतलाया। वर्मा जी ने उनसे कहा "धन्यवाद आप हमारे मान्य अतिथि है आनन्द भवन में आराम से ठहरिए किन्तु चीफ सैक्रेटरी का चार्ज आपको नही दिया जावेगा। वर्मा जी ने सीधे मेनन से वात की और मेनन से स्पष्ट कहा कि मै श्री जैन को चीफ सेक्रेट्री का चार्ज नही दूगा। मैने एक चीफ सेक्रेट्री नियुक्त कर दिया है। श्री मेनन जो अभी तक उसके संकेत मात्र पर राज्यो के मुख्य मत्रियो द्वारा मनचाहे ढंग से कार्य करवाने का अभ्यस्त था अत्यन्त क्षुव्ध हो गया। उसने सरदार पटेल से कहा कि वर्मा जी स्टेट मिनिस्टरी की आज्ञा की अवहेलना कर रहे है। यदि उन्हे स्टेट मिनिस्टरी की आज्ञा को मानने पर विवश नही किया गया तो भविष्य मे स्टेट मिनिस्टरी का प्रभाव राज्यो पर नही रहेगा और अनुशासनहीनता उत्पन्न हो जायेगी। सरदार पटेल भी इस प्रश्न को लेकर नाराज हो गए। उन्होने वर्माजी को तुरन्त दिल्ली आने को कहा, वर्माजी दिल्ली गए उन्होंने सरदार पटेल से वात की। उन्होने सरदार से स्पष्ट कह दिया कि यदि उन्हे इस प्रश्न पर विवश करेगे तो कोई दूसरा मुख्य मत्री खोजना होगा उनके मुख्य मंत्री रहते यह नही हो सकेगा। इस प्रश्न पर अकेले वर्माजी ही नही समस्त प्रजामडल वर्माजी के साथ था। वर्माजी ने कहा कि आपको श्री मेनन तथा मुझमे एक को चुनना होगा। सरदार पटेल समझ गए कि वर्माजी को विवश नही किया जा सकता। अन्त मे सरदार पटेल मान गए और स्टेट मिनिस्ट्री की आज्ञा निरस्त कर दी गई। श्री जैन को सूचना भेजी गई कि उन्हें उदयपुर के स्थान पर हैदरावाद नियुक्त किया जाता है वे उदयपुर से हैदराबाद प्रस्थान कर गए।

जिस समय वर्माजी ने संयुक्त राजस्थान का शासन भार सम्भाला उस समय

परिस्थिति अत्यन्त विषम थी। राष्ट्रविरोधी तत्व तथा सामंती शक्तियां सक्रिय थी। नई सरकार के प्रति भूतपूर्व देशी राज्यो के पुश्तैनी कर्मचारियो तथा अधिकारियो की नई कांग्रेस सरकार के प्रति निष्ठा में भी सदेह था। तरह तरह की अफवाहे सुनाई दे रही थी। तोड़फोड़ की घटनाओ के घटने की सभावना थी। देशी राज्यो मे पहले तो गुप्तचर विभाग का कोई अच्छा सगठन नही था और जो कुछ भी था वह अत्यन्त अकुशल और अयोग्य था फिर वे नए शासन के प्रति कितने निष्ठावान होगे इसमे भी सदेह था। प्रति दिन वर्माजी के पास समाचार आते कि अमुक स्थान पर अस्त्र शस्त्रो का निर्माण हो रहा है। रेल, पुल तथा सड़को के नष्ट किए जाने का खतरा है। शासन को ठप्प करने का षड़यंत्र चल रहा है। अतएव वर्मा मत्रिमडल ने यह निश्चिय किया कि एक लाख रुपये ऐसा संगठन खड़ा करने के लिए पृथक रखे जावे जो वर्मा सरकार को जहा भी शासन विरोधी तथा राष्ट्रविरोधी षड़यत्र चल रहा हो, उसकी सूचना दे। यह भी तय हुआ कि इस एक लाख रुपए का कोई हिसाब रखना आवश्यक नही होगा। मुख्य मत्री वर्माजी उसका जिस प्रकार चाहे व्यय कर सकेगे, और गुप्तचर सगठन का मुख्य मत्री की आज्ञानुसार ही सचालन होगा उसकी कोई रिपोर्ट आदि तैयार नही की जावेगी और न किसी सचिव अथवा उच्च अधिकारी को ही यह पता लग सकेगा कि ऐसा कोई गुप्तचर संगठन है जो उनके कार्यों पर भी दृष्टि रख रहा है।

वर्माजी ने इस विशेष गुप्तचर सगठन का सचालन तथा निर्देशन का भार श्रीनिरजन-नाथ आचार्य को सौपा जो कि उस समय मुख्यमन्त्री के सचिव थे। श्री निरजननाथ आचार्य से अधिक उपयुक्त व्यक्ति वर्माजी इस कार्य के लिए नही चुन सकते थे। श्री आचार्य ने अपने गुप्तचरो तथा सूचना देनेवालो का जाल सभी जगह सभी विभागो में फैला दिया। वर्माजी को, कांग्रेस शासन के विरुद्ध कौन क्या षड़यन्त्र कर रहा है, कहां राष्ट्र विरोधी तत्व सक्रिय है, सामन्ती तत्वो की योजना क्या है, सारे समाचार मिलने लगे और पूर्व सूचना मिलने के कारण वर्माजी दृढता से समय रहते कार्यवाही करते जिससे विरोधी तत्वो की सारी योजना असफल हो जाती। यह वर्माजी की सतर्कता, दृढ़ता और दूरदर्शिता का ही परिणाम था कि कांग्रेस सरकार सफल हो सकी और विरोधी तत्वो के सभी प्रयत्न व्यर्थ हो गए।

राजनीति का खेल कितना कुत्सित, घृणित और भयानक होता है यह वर्माजी के साथ जो इस एक लाख रुपये के व्यय को लेकर हुआ उससे स्पष्ट हो जाता है। वर्माजी ने सत्ता को जमाने और राष्ट्र विरोधी तत्वो के सभी षडयत्रो को विफल कर देने के लिए जो यह व्यूहरचना की थी उसके लिए उनकी प्रशसा करना तो दूर सरदार पटेल ने वर्माजी पर अत्यत अशोभनीय प्रहार किया। एक प्रकार से उनके सावजनिक जीवन को ही वे ध्वस्त कर देना चाहा। इसका कारण यह था कि जब वृहद राजस्थान बना और उसके मुख्य मन्त्री श्री हीरालाल शास्त्री बने तो वर्माजी ने उनका घोर विरोध किया। उन्होने शास्त्रीजी के विरुद्ध प्रदेश कांग्रेस से अविश्वास का प्रस्ताव पारित करवाया। इसी को लेकर सरदार पटेल की वर्माजी पर कोपदृष्टि हो गई और उनकी

क्रोधाग्नि में वर्माजी को जलना पड़ा। हम इस संबंध में विस्तार से आगे लिखेंगे। परन्तु वर्माजी इस अग्निपरीक्षा से तपे हुए सोने की भाति शुद्ध और पवित्र होकर निकले और अत मे सरदार पटेल को अपनी भूल का आभास हुआ और उन्होने शास्त्रीजी को पद से हटाने का निर्णय कर लिया।

यद्यपि वर्माजी को सत्ता हाथ मे लेते ही विपरीत और विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा परन्तु उन्होने यथास्थिति को सहन नही किया। जीवनभर उन्होने जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध सघर्ष किया। जागीरदारी प्रथा मे होनेवाले अत्याचारों को उनसे अधिक कोई नही जानता था। उन्होने सबसे पहले जागीरदारी प्रथा को समाप्त कर दिया। जिस समय वर्माजी सयुक्त राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे थे उस समय स्टेट-मिनिस्ट्री तथा स्वयं सरदार ने उनको सचेत किया। उनसे कहा गया कि उन्हे अभी शासन को जमाने का काम करना चाहिए। जागीरदारी प्रथा को समाप्त कराने का प्रश्न बडा प्रश्न है उसके सबध मे सभी राज्यो मे एक समान नीति बरतना उचित होगा। राजस्थान मे ही जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, तथा मत्स्य, मे जागीरदारी प्रथा बनी रहे और सयुक्त राजस्थान मे उसको समाप्त कर दिया जाय यह उचित नही होगा। उन्हे जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने मे शीघ्रता नही करनी चाहिये। उसके दूरगामी परिणाम होगे। परन्तु वर्माजी दृढ़ रहे। उन्होने कहा कि यह प्रशासनिक कठिनाइया तो सदैव बनी रहेगी हमे इन कठिनाइयो से घबरा कर जो अत्यत वाच्छनीय क्रातिकारी कदम है उससे मुख न मोड़ना चाहिये। केन्द्र के विरोध और अनेक शुभचितको के सावधान करने की परवाह न कर वर्माजी ने साहस और दृढ़ता के साथ सयुक्त राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा समाप्त कर दी। केवल जागीरे ही उन्होने नही ले ली वरन जागीरदारो को जो माल तथा फौजदारी के कानूनी अधिकार थे वे भी समाप्त कर दिए।

वर्माजी का यह अत्यन्त साहसिक कदम था। भारत मे जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन मे मार्ग दर्शन का श्रेय वर्माजी को दिया जाना चाहिए। सर्व प्रथम वर्माजी ने ही सयुक्त राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा को समाप्त कर दिया। यदि वर्माजी ने पूर्व राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन की पहल न की होती तो जागीरदारी प्रथा की समाप्ति मे बहुत लबा समय लग जाता। परन्तु वर्माजी ने मुख्य मत्री बनते ही बिना विलब किए एक बार मे ही उस प्रथा को नष्ट कर दिया। वर्माजी के इस कार्य का राजनीतिक महत्व इसी से आंका जा सकता है कि जब वृहद राजस्थान बना और श्री हीरालाल शास्त्री मुख्य मत्री बने उस समय शास्त्री जी के मत्रिमंडल के समक्ष यह प्रश्न गभीरतापूर्वक उठ खडा हुआ कि राजस्थान के आधे में जागीरदारी प्रथा समाप्त हो चुकी शेष में वह प्रथा विद्यमान थी यह असंगत और अवांछनीय था। शास्त्री मत्रिमडल मे एक विचारधारा यह भी थी कि वर्मा मत्रिमंडल ने उतावली और शीघ्रता मे जागीरदारियो को समाप्त कर दिया यह भूल थी। उधर स्टेट-मिनिस्टरी के उच्च अधिकारी वर्ग मे यह विचार चल रहा था कि पूर्व

राजस्थान में समाप्त की हुई जागीर को पुन. वापस उनके पूर्व स्वामियो को दे दिया जावे । परन्तु शास्त्री मत्रिमन्डल मे कुछ मत्री इस प्रतगामी कदम के घोर विरोधी थे इस कारण वैसा नही हो सका । इतना होते हुए भी संपूर्ण राजस्थान में जागीरदारी उन्मूलन वहुत लवे समय के बाद हुआ और उसके विरुद्ध जागीरदारो ने एक प्रवल आंदोलन खडा कर दिया . अत मे पडित जवाहरलाल नेहरू को मध्यस्थता करनी पडी तब कही वह आन्दोलन समाप्त हुआ । वर्माजी ने पूर्व राजस्थान मे जिस तेजी से जागीरदारी प्रथा को समाप्त किया उसके परिणामस्वरूप वहां कोई आन्दोलन नही हो सका । जागीरदारो मे उसका विरोध करने का साहस ही नही हुआ ।

इसमे तनिक भी सदेह नही है कि यदि वर्माजी ने पूर्व राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन न कर दिया होता तो वृहद राजस्थान मे वहुत लवे समय के उपरान्त ही जमीदारी उन्मूलन हो पाती और दीर्घकाल तक किसान तथा अन्य प्रजा जागीरदारी प्रथा की चक्की में पिसती रहती । क्योकि कालान्तर मे कांग्रेस सरकार को विधान सभा में भूतपूर्व जागीरदारो के समर्थन की आवश्यकता पडने लगी थी । अस्तु राजस्थान ही नही देश मे जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन करने मे पहल करने का श्रेय वर्माजी को है जिन्होंने देश में जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन का मार्ग प्रशस्त कर दिया । अवश्य ही उनके सहयोगी मत्रियों का इस कदम को उठाने मे पूरा समर्थन था । वे भी जागीदारी प्रथा का उन्मूलन करने के उतने ही उत्साही थे जितने वर्माजी । एक भी मन्त्री ऐसा नही था जो इससे भिन्न विचार रखता हो या स्टेट मिनिस्ट्री के विरोध को देखकर हिचकिचाता हो । ऐसा विचार साम्य अन्य किसी मन्त्रिमण्डल मे देखने को नही मिला ।

जव वर्माजी मुख्य मन्त्री वने तो उन्होने अपने मन्त्रिमण्डल मे स्टेट मिनिस्ट्री के बहुत अधिक कहने पर भी किसी जागीरदार को नही लिया । उनके मन्त्रिमण्डल मे केवल प्रजामण्डलो के सक्रिय सदस्य और कार्यकर्ता थे । केन्द्र चाहता था कि एक मन्त्री भूतपूर्व मेवाड़ राज्य के उच्च अधिकारी और एक मन्त्री जागीरदारो के प्रतिनिधि के रूप मे लिया जाय परन्तु वर्माजी अड़े रहे उन्होने कांग्रेस जनो के वाहर से किसी को मन्त्री बनाना स्वीकार नही किया । वृहद राजस्थान बनने पर श्री हीरालाल शास्त्री के मत्रिमण्डल मे एक जागीरदार मन्त्री लिया गया । उनके मन्त्रिमण्डल मे नीचे लिखे मन्त्री थे :

१ श्री माणिक्यलाल वर्मा मुख्य मन्त्री
२. श्री गोकुललाल असावा
३. श्री प्रेमनारायण माथुर
४. श्री मोहनलाल सुखाड़िया
५. श्री वृजसुन्दर शर्मा
६. श्री भोगीलाल पड्या

७. श्री अभिन्न हरि

जब राजस्थान बना तो सम्मिलित होने वाले राज्यो की सेवाओं के एकीकरण का अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य सामने आया। परन्तु उस कार्य को भी वर्मा मन्त्रिमण्डल ने दस महीने मे निबटा दिया। सेवाओ के एकीकरण का कार्य इतना अधिक उलझन भरा था कि वह कई वर्षो मे भी होना कठिन था परन्तु वर्माजी के नेतृत्व मे सचिवो तथा मन्त्रियो ने रातदिन जुट कर वह कार्य समाप्त किया और पूर्व राजस्थान की सेवाओ की वेतन शृ खला मे वृद्धि की उसके परिणाम स्वरूप पूर्व राजस्थान के कर्मचारियो को आगे चलकर बहुत लाभ हुआ।

पूर्व राजस्थान के मुख्य मन्त्री बनने पर वर्माजी ने, उनके जीवनकाल मे जहां जहा किसान आदोलन हुए थे, पर वहा सफलता नही मिली थी, उनकी मागे पूरी करने के लिए एक सूची तैयार की और उन मागो को पूरा किया। उसी के आधार पर कोटा बूंदी मे प्रत्येक भैंस पर लगनेवाली चराई माफ करदी गई।

किशनगढ़ राज्य मे फसल का आधा हिस्सा लगान के रूप में लिया जाता था। किसान लगान के इस भयकर बोझ से त्रस्त थे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी वर्माजी वहा गए वहा की स्थिति देखी और फसल का आठवां हिस्सा लगान कर दिया। किसानो को लगान सबधी इस सुधार से बहुत राहत मिली और समस्त किशनगढ राज्य के किसानो मे हर्ष की लहर दौड़ गई।

पूर्व राजस्थान बनने के पूर्व उदयपुर सलूम्बर की सडक महाराणा साहब की निजी सम्पति मानी जाती थी उसका उपयोग जनता नही कर सकती थी। वर्माजी ने इस सड़क को जनता की सड़क बना दिया और सलूम्बर जाने के लिए जो कठिनाई थी दूर कर दी।

भूतपूर्व मेवाड़ राज्य मे महाराणाओं ने बहुत सख्या मे पहाड़ियो पर शिकारगाह वना रखे थे उनकी देखभाल के लिए भील रखे हुए थे। वे भील सुअर पालते थे और किसानो की फसल की चोरी करते थे। जब शिकारगाह समाप्त हुए तो वर्माजी ने उन भीलो को बसाया और जमीने दी जिससे किसानो की फसल को जो हानि पहुँचती थी वह हानि पहुँचना बद हो गई।

यद्यपि वर्मा मन्त्रिमण्डल केवल ग्यारह महीने ही सत्तारूढ़ रहा परन्तु उन ग्यारह महीनो मे उन्होने सड़को के निर्माण तथा सिंचाई की सुविधाओ पर अधिक ध्यान दिया। कई नई सड़को का इस अल्पकाल मे निर्माण उन्होने पूरा करवाया और बहुत सी सड़को का विस्तार तथा सुधार कराया। वे स्वय सड़को का निर्माण किस गति से हो रहा है यह देखते, इस कारण सार्वजनिक निर्माण विभाग अत्यन्त सजग और सक्रिय हो गया। भीलवाड़ा से विजोल्या तथा बू दी कोटा की सड़को का निर्माण केवल तीन चार महीनों में पूराकर उन्होने निर्माण कार्य की तीव्र गति का एक रिकार्ड ही स्थापित कर दिया था। इसी प्रकार उन्होने छोटी सिंचाई योजनाओ को भी तेजी से पूरा कराया। वर्माजी को एक बड़ी सुविधा यह थी कि उनको गांवो की आवश्यकताओ का जितना गहरा

अनुभव था किसी राजनीतिक कार्यकर्ता को नहीं था। अस्तु उन्होने अपना सारा ध्यान सिंचाई की सुविधाओ तथा सड़क निर्माण मे लगाया। इससे ग्रामीण जनता को वहुत लाभ पहुँचा। वर्माजी ने रेल यातायात के विकास की ओर भी ध्यान दिया और कोटा लाईन के निर्माण के लिए केन्द्रीय सरकार पर दबाव डाला।

श्री माणिक्यलाल वर्मा की इच्छा नही थी कि वे मुख्य मंत्री पद स्वीकार करें। परिस्थितिवश उन्हे मुख्य मत्री पद स्वीकार करना पड़ा। उनका मुख्य मत्रित्व काल अत्यन्त घटनापूर्ण रहा। अपने मुख्य मत्रित्व काल मे भी उन्हें सघर्षरत होना पड़ा। उन्हे केवल राष्ट्रविरोधी तथा सामन्ती शक्तियो से ही सघर्ष नही करना पड़ा वरन सरदार पटेल तथा स्टेट मिनिस्ट्री से भी टक्कर लेनी पड़ी। इन विपरीत परिस्थितियो के होते हुए भी उन्होने अपने सिद्धान्तो और मान्यताओ के विपरीत कभी समझौता नहीं किया। उनकी सफलता का रहस्य इस तथ्य मे छिपा था कि उन्हे पद का किंचित मात्र भी मोह नही था। वास्तविकता यह थी कि वे पद लेने के लिए अनिच्छुक थे और उनको अपने सहयोगी मत्रियो पर अटूट विश्वास था, उनके नेतृत्व में सभी मत्री एक जुट होकर राजस्थान के सामान्य नागरिक की सेवा के कार्य में जुट गए थे।

वृहद राजस्थान का निर्माण :

जब मत्स्य तथा पूर्व सयुक्त राजस्थान बना था उस समय से ही केन्द्रीय नेताओ के मस्तिष्क मे यह विचार घूम रहा था कि सपूर्ण राजस्थान का एक राज्य बनाया जावे उस समय पूर्व सयुक्त राजस्थान, मत्स्य के अतिरिक्त सिरोही, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर राज्य तथा अजमेर, मेरवाडा पृथक थे। इन सभी को मिलाकर एक राज्य बनाने की बात थी। केवल सिरोही के सबध मे यह प्रश्न अवश्य था कि वह राजस्थान में रहे अथवा वाहर रहे।

सरदार पटेल प्रयत्नशील थे। जब उन्होने जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर तथा जयपुर के नरेशो को मिलने के लिए तैयार कर लिया तो श्री गोकुलभाई भट्ट, श्री जयनारायण व्यास, श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा श्री हीरालाल शास्त्री को बुलाया और वतलाया कि जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर मिल रहे है। उस समय श्री जयनारायण व्यास जोधपुर के, श्री गोकुलभाई भट्ट सिरोही के, श्री माणिक्यलाल वर्मा सयुक्त राजस्थान के तथा श्री हीरालाल शास्त्री जयपुर राज्य के मुख्य मत्री थे। चारों ने सरदार पटेल के प्रस्ताव का समर्थन किया और वृहद राजस्थान के निर्माण की स्वीकृति दे दी।

श्री वर्माजी ने इस सबध मे अपने सस्मरण मे लिखा है "सरदार पटेल ने मुझे व्यासजी, हीरालाल शास्त्री तथा गोकुल भाई को वुलाया और कहा कि बीकानेर, जयपुर जोधपुर, जैसलमेर चारो मिलना चाहते है क्या राय है ? हम चारो ने स्वीकृति दे दी। श्री व्यास जी, हीरालाल शास्त्री तथा गोकुलभाई के चले जाने पर मैने कहा कि हीरालाल शास्त्री को सत्ता मत दे देना राजस्थान कार्यकर्ता इसको पसद नही करेंगे। सरदार ने मेरे विचार सुन लिए बोले नही। मुझे पता नही लगा कि आबू को गुजरात को दे देने

के सौदे पर जयपुर राजधानी, जयपुर का राजप्रमुख, और जयपुर का मुख्य मंत्री बनाना तय हो रहा है।" (श्री माणिक्यलाल वर्मा के सस्मरण)

जब वृहद राजस्थान बनना तय हो गया तो श्री हीरालाल शास्त्री तथा गोकुल भाई वर्मा जी के पास आए और उनको इस बात के लिए राजी करना चाहा कि आबू छोड़ दिया जावे तो सरदार सिरोही राजस्थान को देना स्वीकार कर लेगे। वर्मा जी इसके लिए तैयार नही हुए। वर्मा जी ने अपने सस्मरण में इस सबध मे इस प्रकार लिखा है—

"बडा राजस्थान बनने के समय श्री गोकुल भाई तथा श्री हीरालाल शास्त्री मेरे पास आए। कहा कि सरदार सिरोही को गुजरात मे मिलाना चाहते है। यदि हम आबू छोड दे तो वे तसल्ली कर लेगे और सिरोही छोड देगे। मैने कहा कि शरीर छोड दिया जाय तो नाक कटा लेने मे क्या हर्ज है। आबू राजस्थान की नाक है हम नही देगे। दोनो उठकर चले गए गोकुल भाई उस समय सिरोही के मिनिस्टर थे।" (श्री माणिक्यलाल वर्मा के सस्मरण)

मुख्य मत्री पद के लिए श्री वर्मा जी तथा श्री जयनारायण व्यास का मत था कि गोकुल भाई भट्ट को वृहद राजस्थान का मुख्य मत्री बनाया जाना चाहिए। उन्होने सरदार पटेल को भी अपने विचारो से अवगत करा दिया था "मेरा और श्री जयनारायण व्यास का मत था कि गोकुल भाई मुख्य मत्री बने। सरदार को हमने अपने मत का सकेत दे दिया था।"

जैसा कि हम ऊपर लिख आए है

वर्मा जी ने अपने सस्मरण मे लिखा है कि आबू के सौदे पर सरदार ने जयपुर को राजधानी, जयपुर का मुख्य मत्री, जयपुर का राजप्रमुख बनाना निश्चय कर लिया था। लेखक का मत है कि अवश्य ही आबू का सरदार के मन मे आग्रह था वे उसे राजस्थान से लेकर गुजरात को देना चाहते थे। किन्तु जयपुर के पक्ष में केवल यही अकेला कारण नही था सभवत. श्री घनश्यामदास बिड़ला का प्रभाव भी जयपुर के पक्ष मे कार्य कर रहा था। श्री हीरालाल शास्त्री श्री घनश्यामदास बिड़ला के अत्यन्त विश्वासपात्र और निकट थे। यह धारणा कि गोकुल भाई को वृहद राजस्थान का मुख्य मत्री बनाया जावे केवल व्यास जी और वर्मा जी की ही नही थी राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्त्ताओ में से अनेको की थी। किन्तु सरदार पटेल ने इन स्पष्ट सकेतो की ओर ध्यान न देकर अपनी मान्यता के अनुसार ही वृहद राजस्थान का सगठन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वृहद राजस्थान बनने के साथ ही राजस्थान काग्रेस सगठन मे दरार पड गई और एक दूसरे के विरुद्ध मोर्चाबन्दी होने लगी।

वर्मा जी के मन मे पद के लिए कितनी अनिच्छा और उदासीनता थी यह उनके एक वाक्य से जो उन्होने अपने सस्मरण मे लिखा है स्पष्ट हो जाता है। वर्मा जी ने लिखा है.—

"अत मे बड़ा सयुक्त राजस्थान बना और मुझे नरक यातना से छुट्टी मिली"

ऊपर लिखे वाक्य के प्रत्येक पद के प्रति वर्माजी की मनोदशा का परिचय हमें मिलता है।

सरदार पटेल ने वर्मा जी को शास्त्री मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित होने के लिए सलाह दी। परन्तु वर्मा जी ने स्पष्ट अस्वीकार कर दिया उन्होने सरदार से कहा कि मै पद नही ले सकता। बाहर रहकर ही काग्रेस का कार्य करूगा। इस सबध मे वर्माजी ने अपने सस्मरण मे लिखा है :—"मन्त्रिपद स्वीकार करने के विरुद्ध मेरे सारे परिवार का जबरदस्त विरोध था। पूर्व सयुक्त राजस्थान के मुख्य मंत्री बनने के समय भी उन लोगो की इच्छा नही थी कि मै मुख्य मत्री पद स्वीकार करू। इस बार मेरी पुत्री सत्यवती ने कहा कि मै पिताजी को मिनिस्टर नही होने दूगी, अनशन करूगी।"

बहुधा सुनने को मिला है कि राजनीतिक कार्यकर्ताओ के परिवार वालो का मंत्री पद स्वीकार करने के लिए विशेष आग्रह होता है परन्तु वर्माजी की धर्मपत्नी तथा पुत्रिया सभी मन्त्री पद स्वीकार करने की विरोधी थी। वर्माजी स्वय पद लेने के विरुद्ध थे पत्नी और पुत्रियो के विरोध ने उनके पद स्वीकार न करने के विचार को और भी दृढ कर दिया। यही कारण था कि आगे जब जब भी उनसे मन्त्रीपद स्वीकार करने के लिए आग्रह किया गया तो उन्होने उसे अस्वीकार कर दिया।

वर्माजी की महानता :

एक घटना वर्माजी के चरित्र की महानता और उनके हृदय की विशालता को प्रकट करती है लेखक उसका उल्लेख कर देना आवश्यक समझता है। उससे वर्माजी के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है।

जब वर्माजी मुख्य मन्त्री बने तो गृह विभाग उनके आधीन था। प्रजामण्डल के आदोलन के समय देवली की छावनी मे जब मेवाड़ पुलिस उनको ब्रिटिश भारत से खीच कर ले गई और उनकी बुरी तरह पिटाई की गई तो पुलिस अधिकारी श्री दशोरा जिन्होने उनको पिटवाया था जब उनसे मिले तो बहुत लज्जा अनुभव कर रहे थे परन्तु वर्माजी ने उनको आश्वस्त कर कहा दशोराजी, लज्जित और कुठित होने की जरूरत नही उस समय तुम महाराणा साहब की सरकार के कर्मचारी थे। मै चाहता हू कि तुम उसी निष्ठा और तत्परता से काग्रेस सरकार की सेवा करो। श्री दशोरा कृतज्ञता से गद्गद् हो गए। बाद को वर्माजी ने उनकी पदोन्नति कर उन्हे सुपरिन्टेन्डेट पुलिस बना दिया।

अध्याय नवां

कांग्रेस का गृह युद्ध

यह हम पिछले अध्याय मे कह आए है कि वर्माजी और श्री जयनारायण व्यास श्री हीरालाल शास्त्री के मुख्यमन्त्री बनाए जाने के विरुद्ध थे। साथ ही वे आबू को गुजरात से मिलाने के भी घोर विरोधी थे। अधिकांश काग्रेसजन श्री वर्माजी तथा व्यासजी के साथ थे परन्तु सरदार पटेल ने यह सोचकर कि जब वे श्री हीरालाल शास्त्री को मुख्य मन्त्री बना देगे तो यह विरोध शान्त हो जावेगा उस ओर ध्यान नही दिया।

जब श्री हीरालाल शास्त्री वृहद राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने तो व्यासजी और वर्माजी यह आशा करते थे कि जोधपुर तथा मेवाड़ के काग्रेसजनो को मत्रिमडल मे लेने के सम्बन्ध मे शास्त्रीजी उनके कहे अनुसार करेगे। परन्तु शास्त्रीजी तथा व्यासजी का यहां भी मतभेद हो गया। व्यासजी ने स्वय तो शास्त्रीमडल मे सम्मिलित होना अस्वीकार कर दिया परन्तु उन्होने जिन व्यक्तियों को मत्रिमडल मे लिए जाने की सिफारिश की उन्हे श्री हीरालाल शास्त्री लेने के लिए तैयार नही थे। अस्तु व्यासजी और शास्त्रीजी मे इस प्रश्न पर भी मतभेद हो गया।

वर्माजी ने इस सम्बन्ध मे अपने सस्मरण मे लिखा है "शास्त्री ने मुझसे टेलीफोन पर कहा कि मेवाड़ से जिनको कहोगे मन्त्री बना दूगा। मैंने उत्तर दिया पहले इस सम्बन्ध मे व्यासजी की सलाह मान लो जब शास्त्री जी ने उनके लिए इन्कार किया तो मैने कहा कि हम जोधपुर वालो का साथ देगे।"

बात यह थी कि राजधानी और मुख्यमत्री को लेकर काग्रेसजनो मे गहरा मतभेद था। व्यासजी तथा वर्माजी जयपुर को राजधानी बनाने के विपक्ष मे थे। राजधानी के प्रश्न पर वर्माजी ने अपनी डायरी में लिखा है —

"११ फरवरी १९४९ गोकुलभाई शास्त्रीजी, व्यासजी तथा मै चारो ने राजधानी के सबध मे बात की। मै और व्यासजी सगठन के फैसले को (प्रातीय काग्रेस) और शास्त्रीजी और गोकुलभाई सरदार के फैसले को अतिम मान रहे थे।"

वर्माजी ने जागीरदारो के अधिकार को समाप्त कर दिया था परन्तु जब वृहद राजस्थान बनने जा रहा था तो यह अफवाहे बल पकडने लगी कि वर्मा मत्रिमण्डल ने जागीरो को समाप्त करने का जो कानून बनाया है वह रद्द कर दिया जायेगा।

१२ फरवरी १९४९ को वर्माजी श्री भूरेलाल बया के साथ राजप्रमुख से मिले राजप्रमुख से अफवाहो के आधार पर पूछा कि क्या आपने जागीरदारो को आश्वासन दिया है कि रैवेन्यू पावर्स का कानून उठा लिया जावेगा। राजप्रमुख ने वर्माजी से कहा कि मुझे राजपूताना के रीजनल कमिश्नर ने कहा कि आप आश्वासन दे दें। जागीरदारों की दरख्वास्त पर मुझसे लिखा कर ले गए है कि यह कानून उठा लेना चाहिए।

वर्माजी राजप्रमुख के इस कार्य से बहुत क्षुब्ध हुए उन्होने १४ फरवरी को एक कड़ा विरोधपत्र लिखकर राजप्रमुख को भेज दिया (डायरी)

तुरन्त वर्माजी सरदार पटेल से दिल्ली मिलने गए साथ मे असावाजी तथा बयाजी भी थे। सरदार पटेल तथा शंकर से जागीरदारी उन्मूलन कानून के सम्बन्ध मे बातचीत हुई वर्माजी ने कानून को रद्द करने का बड़ा विरोध किया (डायरी)

३० मार्च १९४९ को वृहद राजस्थान का जयपुर मे उद्घाटन हुआ। जब वर्माजी वहा आए तो देखा कि बैठने की व्यवस्था ठीक नही है पूर्व राजस्थान के मन्त्रियो को उचित स्थान नही मिला। स्वाभिमानी वर्माजी उद्घाटन समारोह मे सम्मिलित नही हुए, वापस चले आए। उस घटना के संबध मे उन्होने डायरी लिखी.—

"३० मार्च को वृहद राजस्थान का उद्घाटन हुआ, सम्मान से स्थान न मिलने से वापस आ गया और जयपुर से रवाना होकर किशनगढ आकर ठहरा" (डायरी)

कहने का तात्पर्य यह कि वर्माजी और व्यासजी तथा वृहद राजस्थान के मुख्य मन्त्री के बीच खिचाव बढ़ता गया, शास्त्रीजी ने मेवाड़ से श्री भूरेलाल बया और श्री प्रेमनारायण माथुर को अपने मन्त्रिमण्डल मे लेना निश्चय किया। जब दोनो वर्माजी से मिले तो वर्माजी ने प्रेमनारायणजी से कहा कि काग्रेस सगठन उन्हे मन्त्रिमण्डल मे भेजने के लिए तैयार नही है साथी उनके मन्त्री बनाए जाने के विरुद्ध है उन्होने बयाजी से भी एक दो दिन रुकने के लिए कहा (डायरी ६ अप्रेल ४९)

श्री प्रेमनारायण माथुर तथा बयाजी ने शास्त्रीजी का आमन्त्रण स्वीकार कर लिया और वे जयपुर चले गए। उसी दिन से वर्माजी के सम्बन्ध उन दोनो से नितांत उदासीनता के हो गए। आरंभ मे वर्माजी श्री प्रेमनारायण माथुर को बहुत चाहते थे और उन पर उनका अगाध विश्वास था परतु श्री प्रेमनारायण माथुर के उनकी इच्छा के विरुद्ध श्री हीरालाल शास्त्री के मत्रिमडल मे चले जाने के कारण उनके निकट के सम्बन्ध समाप्त हो गए।

उस समय आपसी तनाव चरम सीमा पर पहुंच गया था। सोजत रोड मे राजस्थान प्रांतीय काग्रेस की बैठक हुई। भारत सरकार ने आबू को गुजरात मे मिलाने का निर्णय कर लिया था। वर्माजी ने काग्रेस की बैठक मे खुलकर भारत सरकार के उस निर्णय का विरोध किया। श्री जयनारायण व्यास ने उनका समर्थन किया परिणाम यह हुआ कि राजस्थान की पी० सी० सी० मे आबू के गुजरात मे विलय होने का विरोध हुआ और तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री हीरालाल शास्त्री को पद से हटाने का निर्णय हुआ।

गोकुल भाई भट्ट उस समय राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे उन्होंने ग्यारह जून १९४९ को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की एक आवश्यक बैठक जयपुर में बुलाई। बहुमत वर्माजी तथा व्यासजी के साथ था। शास्त्रीजी के विरुद्ध प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर दिया। और श्री गोकुलभाई भट्ट के स्थान पर श्री व्यास जी को अध्यक्ष चुन लिया। वर्माजी और व्यासजी ने आबू को गुजरात को देने तथा श्री हीरालाल शास्त्री का विरोध किया इस कारण सरदार पटेल उन दोनो से बहुत अधिक क्रुद्ध हो गए जिसका परिणाम दोनों को ही भुगतना पड़ा। वर्माजी का कहना था कि आबू राजस्थान में है वहां केवल ७०० गुजराती है ५० हजार के लगभग राजस्थानी हैं ऐसी दशा मे आबू को राजस्थान से छीन लेने का क्या औचित्य है? उस समय राजस्थान मे विधान सभा नही बनी थी। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ही मंत्रिमंडल को आदेश दे सकती थी। अतएव प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा श्री हीरालाल शास्त्री के प्रति अविश्वास प्रस्ताव पारित हो जाने का तार्किक परिणाम यह होना चाहिए था कि वे मुख्यमत्री पद से त्यागपत्र दे देते परन्तु सरदार पटेल का शास्त्री जी को आशीर्वाद प्राप्त था अतएव ऐसा नही हुआ। राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव अखिल भारतीय कांग्रेस की कार्यसमिति (वर्किंग कमेटी) के पास विचारार्थ भेजे गए।

१८ जुलाई को कांग्रेस की कार्यसमिति ने अपना निर्णय दे दिया। वर्किंग कमेटी का निर्णय यह था कि राजस्थान कांग्रेस कमेटी को यदि श्री हीरालाल शास्त्री के विरुद्ध कोई शिकायत थी तो उसे वर्किंग कमेटी के समक्ष रखनी चाहिए थी अविश्वास का प्रस्ताव नही लाना चाहिए था। अतएव श्री हीरालाल शास्त्री के विरुद्ध जो अविश्वास का प्रस्ताव पारित हुआ है उसको रद्द किया जाता है। श्री गोकुलभाई भट्ट के त्यागपत्र देने पर भी राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने जो उनमे अविश्वास जाहिर किया वर्किंग कमेटी इससे भी सहमत नही है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की वर्किंग कमेटी के उक्त निर्णय मे व्यासजी तथा वर्माजी के सहयोगियो मे गहरी निराशा और क्षोभ छा गया। व्यासजी ने कांग्रेस से त्यागपत्र देने की इच्छा प्रकट की। वर्माजी ने उन्हे समझाया और उनके मस्तिष्क को शान्त किया। वर्माजी ने व्यासजी को समझाया। कहा यह हमारी परीक्षा का समय है। देखना है कि हम कांग्रेस की आज्ञा को शिरोधार्य करते है अथवा गैरवफादारी बतलाते है। वर्माजी के समझाने से व्यासजी शान्त हुए और कांग्रेस से त्यागपत्र देने का विचार छोड दिया। (डायरी १८ जुलाई, १९४९)

२० जुलाई को वर्माजी उदयपुर पहुचे सभी कार्यकर्ताओ से मिले। वर्किंग कमेटी के फैसले के विरुद्ध उदयपुर के सभी कार्यकर्ताओ मे गहरा रोष था परन्तु वर्माजी ने उन सभी को कांग्रेस के प्रति वफादार रहने की सलाह दी।

२१ जुलाई को उदयपुर के समीप वेदला की पहाडी पर उदयपुर के कांग्रेसी कार्यकर्त्ता मिले। मास्टर किशनलाल जी, भवानीशंकर जी, रोशन जी, मोहनलाल सुखाड़िया जी, फतेहलाल बापू तथा शकर जी ने केन्द्रीय वर्किंग कमेटी के निर्णय के

विरुद्ध अपना गहरा क्षोभ प्रकट करते हुए कांग्रेस छोड़ने की इच्छा प्रकट की। वर्माजी ने कांग्रेस छोड़ने के विचार का जोरदार शब्दो मे विरोध किया। उन्होने कहा कि हम प्रजातंत्र का नारा लगाते रहे है आज हमारी इच्छा-विरुद्ध फैसला होता है तो हम नाराज होकर कांग्रेस छोडने की वात करते है यह हमे शोभा नही देता। केन्द्रीय कार्य समिति हमारी सुप्रीम कोर्ट है उसकी आज्ञा को हमे शिरोधार्य करना चाहिए। जहा तक मेरा सम्बन्ध है मै तो ऐसा कोई काम नही करूंगा जिससे मेरी प्रिय कांग्रेस की प्रतिष्ठा को धक्का लगे। (डायरी)

वर्माजी के विरोध का अच्छा परिणाम हुआ कांग्रेस के कार्यकर्ता दूसरे दिन पुन. मिले और वर्माजी के नेतृत्व में कांग्रेस मे ही रहकर डटकर काम करने की इच्छा प्रकट की।

वर्माजी तथा व्यास जी ने कांग्रेस के लौह पुरुष और स्टेट मिनिस्टरी के सर्वे सर्वा सरदार पटेल का विरोध किया था, एक प्रकार से उनको चुनौती दी थी। अतएव उनको सरदार पटेल की क्रोधाग्नि मे जलना अवश्यभावी था। जिन सरदार पटेल के सामने बडे बडे राजे और महाराजे भयभीत रहते थे जिनकी वक्र दृष्टि मात्र से वडे वडे अधिकारी और राजनीतिज्ञ कांप उठते थे उनके विरोध में खडे होने का वर्माजी और व्यासजी ने साहस किया था अतएव उसका परिणाम तो उन्हें भुगतना ही था।

शीघ्र ही व्यासजी पर मुकदमा चला दिया गया, और वर्माजी से पूर्व सयुक्त राजस्थान मे एक लाख रुपये जो गुप्त सर्विस (गुप्तचर सगठन) के लिए रखे गए थे उसका हिसाव मागा गया। इटेलीजेंस विभाग द्वारा वर्माजी के सवन्ध मे गुप्त कारवाई की गई। वर्माजी ने भूपालपुरे मे जो मकान वनाया था उसके सम्वन्ध मे भी जाच कराई गई। यह हम पहले भी लिख चुके है कि वर्मा मन्त्रिमडल द्वारा गुप्त सगठन स्थापित करते समय यह निश्चय किया गया था कि इसका कोई हिसाव नही रखा जावेगा। यह कोष मुख्यमंत्री श्री माणिक्यलाल वर्मा की इच्छानुसार व्यय होगा। वर्माजी ने श्री निरजन नाथ आचार्य को उस गुप्त सर्विस का सचालक नियुक्त कर दिया था। सारा रुपया उनके द्वारा व्यय हुआ था। अतएव श्री निरजननाथ आचार्य से अधिक उसके सबध मे कोई भी नही जानता। लेखक ने आचार्य जी से उसके बारे मे पूछा तो उन्होने लेखक को नीचे लिखा उत्तर लिख भेजा।

"मैंने गोपनीयता की शपथ ली थी मै कैसे उसके सम्वन्ध में कुछ वतला सकता हूँ।"

आज केवल श्री निरजननाथ आचार्य ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो उस काड पर पूरा प्रकाश डाल सकते हैं परन्तु वे चुप रहना चाहते है अस्तु इस संवन्ध मे अधिक जानकारी प्राप्त कर सकना कठिन है परन्तु वर्माजी की डायरी से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस व्यय का हिसाव रखा गया था। सभवत वर्माजी उस हिसाव को किसी को वतलाना नही चाहते थे। इस वात का सकेत मिलता है कि इस गुप्त सर्विस (गुप्तचर सगठन) मे ऐसे भी व्यक्ति थे जिन्होने इसी आश्वासन पर मन्त्रिमडल की

सहायता करना स्वीकार किया था कि उनका नाम किसी भी दशा में प्रकट नही किया जावेगा। यही कारण था कि उस रुपये का कोई हिसाब न रखने का निश्चय किया गया था और सम्भवतः यही कारण था कि वर्माजी उस हिसाब को दिखलाना नही चाहते थे।

वर्माजी ने २५ जनवरी १९५० को अपनी डायरी मे इस संबंध मे जो कुछ लिखा है वह इस प्रकार है :

"शाम को सरदार पटेल से मिला। उनसे कहा कि दैनिक भत्ते (डी ए.) के विषय में तो मैंने दस्तखत किए है उसका दोष क्लर्क पर डालना नही चाहता। शायद दस बारह दिन के दो सौ रुपए आए होगे। केस चलाया जावेगा तो मैं नैतिक जिम्मेदारी मंजूर करूंगा और कहूंगा कि कडी से कड़ी सजा दी जावे। किंतु गुप्त विभाग (गुप्तचर सगठन) का हिसाब स्टेट मिनिस्ट्री मे न दे। आप स्वयं जाच करावें, कांग्रेस से शंकरराव देव से, हरिभाऊजी से, खन्डूभाई से, खरे साहब से, भागीरथ कानोडिया किसी से भी करा लें। आपके सामने मैने जोधपुर मे बननेवाले छुरे और पिस्तौल पेश किए। क्षत्रिय परिषद को समाप्त किया। जागीरदारो के अधिकार लेने पर भी उनका आन्दोलन न होने दिया। इसमे बहुत से लोगो ने काम किया है। रोकड़ है वाऊचर हैं। इसे प्रकट न करें, सरदार ने कहा मैनन को देना चाहिए प्रकट न होगा। मैंने कहा कि अगर आपकी यही इच्छा है तो मैनन को दे दूंगा।" (डायरी २५ जनवरी १९५०)

२८ जनवरी १९५० को वर्माजी ने सरदार पटेल के आदेशानुसार रोकड़ की नकल ज्वाइंट सैक्रेट्री के पास भेजी। शाम को उनका पत्र आया कि असली रोकड़ और वाऊचर भी भेजें, जाच के वाद वापस लौटा दूगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि वर्माजी जब मुख्य मन्त्री थे तब किसी दौरे के सबध में दैनिक भत्ते का बिल दुबारा बन गया था। अवश्य ही कोई मुख्यमन्त्री अपने दौरे के भत्ते का बिल स्वयं नही बनाता। उनके पी ए. अथवा अन्य क्लर्क ने उसको बनाया होगा उसने भूल से दुबारा बना दिया। परन्तु वर्माजी ने उसको स्वयं अपनी भूल स्वीकार किया। जहां तक गुप्तचर संगठन सबंधी व्यय था उसमे जाच से यदि कोई कमी अथवा अनियमितता ज्ञात होती तो वर्माजी पर सरदार का कोप वज्र के सामान गिरता, परन्तु प्रतीत होता है कि जांच मे ऐसी कोई बात नही मिल सकी इस कारण स्टेट मिनिस्ट्री चुप हो गई, आगे इस प्रश्न को नही उठाया। उधर जो गुप्तचर विभाग के अधिकारी वर्माजी के मकान आदि के सबध मे जांच करने के लिए नियुक्त किए गए थे उनको भी पूरी छानबीन कर लेने के उपरान्त कुछ नही मिला जिससे वर्माजी पर कोई दोषारोपण हो सकता। अस्तु सरदार पटेल का वार खाली गया और वर्माजी उस अग्नि परीक्षा से निष्कलंक और शुद्ध होकर निकले। राजनीति एक भयानक खेल है वर्माजी को उसका शिकार बनना पड़ा परन्तु वे झुके नही, और न उन्होने कोई समझौता ही किया। यह उनके चरित्र की विशेषता थी वे जिस बात को गलत समझते थे उससे समझौता नही कर सकते थे। यही कारण था कि जीवन के अन्त तक वे सतत

संघर्ष करते रहे। परन्तु जो कुछ अवांछनीय है, तथा देश के लिए घातक है उससे समझौता नहीं किया।

श्री जयनारायण व्यास भावुक व्यक्ति थे। उन पर जो मुकदमा चलाया गया, उसने उनको अत्यन्त उद्वेलित कर दिया था। वे अत्यन्त क्रुद्ध थे। वर्माजी तथा व्यासजी के पास निरंतर यह सुझाव आ रहे थे कि वे श्री हीरालाल शास्त्री के विरुद्ध जो अविश्वास का प्रस्ताव पारित किया है उसे वापस ले लें। व्यासजी ने शास्त्रीजी को एक बहुत कड़ा और भद्दा पत्र लिखा। वर्माजी ने उनसे कहा कि इस मुकदमे से जो आपकी प्रतिष्ठा बढ़ी है उसे खोवें नहीं। कोई पत्र न लिखे और न ऊटपटाग बोले (डायरी १५ फरवरी १९५०)

वर्माजी व्यासजी को निरन्तर शांत रहकर संघर्ष करने का परामर्श देते रहे, नहीं तो संभवतः व्यासजी भी उग्र हो उठते। वे अपने साथ किये जानेवाले व्यवहार से बहुत क्षुब्ध थे। वर्माजी ने व्यासजी से कहा "साथियो की नब्ज देखकर चलिए। न प्रकाश मे लड़िये और न घुटने टेकिए। मैं तो यही रास्ता पसद करता हूं। अविश्वास का प्रस्ताव वापस लेने की बात मै सुनना पसंद नही करता। डायरी २१ फरवरी ५०)

ऐसा प्रतीत होता है कि वर्माजी तथा व्यासजी पर उस समय इस बात का भारी दबाव पड़ रहा था कि शास्त्रीजी के विरुद्ध जो अविश्वास का प्रस्ताव उन्होने पारित कराया है उसे वापस लेले। वर्माजी ने अपनी डायरी (२४ फरवरी ५०) में लिखा है कि हम दा साहब (श्री हरिभाऊ उपाध्याय) से और श्री शकर (सरदार पटेल के विश्वासपात्र सचिव) से मिले और उनसे कहा कि हम अविश्वास प्रस्ताव में अपनी गलती नही मानते हमारी मान्यता यही है हम अपनी आत्मा के विपरीत जाने को तैयार नही हैं। वर्माजी को व्यासजी से अलगकर व्यासजी को कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटाने का भी प्रयत्न किया गया परन्तु वर्माजी ने उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। २५ मार्च १९५० को डायरी मे उन्होने लिखा "आज शकर से बात की, फिर ढाई बजे सरदार ने बुलाया। शंकर ने वहां सगठन मे एक हो जाने की चर्चा दोहराई। श्री व्यासजी को अध्यक्ष पद से हटाने और नया अध्यक्ष चुनने को कहा कि यह आप तक ही सीमित रखे। मैंने असंभव बताया। आदित्येन्द्रजी से चर्चा की कि हम साथी को धोखा देंगे तो भविष्य मे कौन हमारा विश्वास करेगा। (डायरी २५ मार्च ५०)

एक प्रश्न और भी था जिसके कारण वर्माजी तथा श्री हीरालाल शास्त्री मे खिचाव था। जब वर्माजी पूर्व राजस्थान के मुख्यमन्त्री थे उस समय 'खडलाखड़' का एक कानून बनाया था। जो विजोल्यां के पट्टे मे लागू था। उस कानून के अनुसार किसान 'खड़लाखड़' नामक शुल्क देकर सरकारी जंगल में अपनी आवश्यकता के अनुरूप घास और लकड़ी ले सकता था। इस सबध मे तात्कालिक वर्मा मन्त्रिमडल के रैवेन्यू मिनिस्टर श्री भूरेलाल बया ने जो आज्ञा निकाली उन्होने उसकी मन्त्रिमडल से स्वीकृति नही ली थी। यह औपचारिक त्रुटि थी। वर्माजी का कहना यह था कि इस औपचारिक कमी के कारण कानून रद्द नही किया जा सकता उसको सुधार लेना चाहिए इस प्रश्न को लेकर बिजोल्यां क्षेत्र की किसान पंचायत बहुत क्रुद्ध और क्षुब्ध थी। बिजोल्या के किसान

पुन एक बार राज्य से संघर्ष करने के लिए तैयार थे। परन्तु वर्मा जी ने उन्हें यह कहकर रुकने को कहा कि यदि बिजोल्यां के किसानो ने इस प्रश्न पर आदोलन किया तो कांग्रेस के उच्च नेता यह समझेगे कि वर्माजी ने 'श्री हीरालाल शास्त्री के विरुद्ध यह नया षड्यंत्र किया है। अतएव वर्माजी ने तात्कालिक रैवेन्यू मिनिस्टर तथा शास्त्री जी से इस संबंध मे पत्रव्यवहार किया और वातचीत की। अत मे उन्होने बिजोल्यां के किसानो का एक प्रतिनिधि मडल सरदार पटेल के पास भेजा। वर्मा जी ने किसानो को यह आश्वासन दे दिया था कि यदि उनको सरकार से न्याय नही मिला तो वे स्वयं उनके आदोलन का नेतृत्व करेगे। यह वात उन्होने कांग्रेस के उच्च नेताओ को भी वतला दी थी। सरदार पटेल तक जव यह बात पहुँची तो इस प्रश्न का किसानो के पक्ष में निपटारा हुआ।

राजस्थान प्रान्तीय काग्रेस उस समय दो दलो में वंट गई थी। एकदल श्री वर्मा तथा व्यासजी के नेतृत्व मे सत्ताधारी दल का विरोधी था। दूसरा दल सत्ताधारियों के साथ था। बहुमत सत्ताविरोधी दल के साथ था। सरदार पटेल सभवत यह सोचते थे कि जब हीरालाल शास्त्री सत्ता मे आ जावेंगे तो कांग्रेस में उनके समर्थको का बहुमत हो जावेगा श्री वर्मा तथा व्यास जी अल्पमत मे रह जायेंगे, परन्तु ऐसा नही हुआ। वात यह थी कि अब राजस्थानी प्रान्तीय काग्रेस कमेटी ने श्री हीरालाल शास्त्री के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव स्वीकार किया था तो प्रस्ताव के पक्ष मे केवल पांच या छ मत ही अधिक थे। सरदार पटेल का सोचना था कि जब श्री हीरालाल शास्त्री सत्ता में होगे तो कांग्रेस के चुनाव होने पर उनके समर्थकों की सख्या मे वृद्धि हो जायेगी। उनके समर्थक अधिक सख्या मे चुन लिए जावेगे। परन्तु जब काग्रेस के चुनाव हुए तो सत्ताधारी तथा उनके समर्थक पराजित हो गए। विरोधी अधिक चुनकर आ गए। चुनाव मे कुछ अनियमितताओ की शिकायतो पर अखिल भारतीय काग्रेस की कार्यकारिणी (वर्किंग कमेटी) ने राजस्थान के चुनावो को रद्द कर दिया। पुन चुनाव हुए अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने अपने परिवीक्षक भेजे। इस वार के चुनावो मे शास्त्री समर्थक और अधिक बुरी तरह पराजित हुए। यहा तक की जो लोग शास्त्री मन्त्रिमंडल मे मंत्री थे वे भी काग्रेस के चुनावो मे बुरी तरह पराजित हुए।

शास्त्री समर्थको के काग्रेस के चुनाव मे निर्णायक ढग से पराजित हो जाने पर उनके सम्वन्ध मे सरदार पटेल का विचार और मान्यता वदल गई। वे समझ गये कि श्री हीरालाल शास्त्री को अधिकाश काग्रेसजन का विश्वास प्राप्त नही है। अन्त मे सरदार ने श्री वर्मा तथा व्यासजी को बुला भेजा तथा यह आश्वासन दिया कि श्री हीरालाल शास्त्री को अपने पद से त्यागपत्र देने के लिए वे आदेश दे देगे उधर श्री आचार्य कृपलानी तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टडन का काग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुआ। आचार्य कृपलानी को पडित जवाहरलाल नेहरू का तथा टडन जी को सरदार पटेल का समर्थन प्राप्त था। राजस्थान के काग्रेस जनो ने टडन जी का समर्थन किया। राजस्थान कांग्रेस के संगठन पक्ष के वल को सरदार पटेल समझ गए। उन्होने श्री वर्मा और व्यास जी

के नेतृत्व की शक्ति को जान लिया और श्री हीरालाल शास्त्री को मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देने का आदेश दे दिया। श्री हीरालाल शास्त्री ने त्यागपत्र देने मे थोड़ी देर की किन्तु अन्त मे त्यागपत्र दे दिया और इस प्रकार राजस्थान मे गृहयुद्ध समाप्त हो गया।

३ जनवरी १९५१ को शास्त्रीजी ने त्यागपत्र दे दिया। श्री वेंकटाचार्य मुख्य मंत्री तथा राधाकृष्ण मत्री नियुक्त किए गए। लोकप्रिय सरकार बनने तक उनको राजस्थान का भार सौंपा गया।

२० जनवरी को राजस्थान कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी की बैठक बीकानेर में हुई। कार्यकारिणी ने व्यासजी को वर्माजी, आदित्येन्द्रजी, और रामकरणजी की सलाह से मत्रिमंडल बनाने का अधिकार दिया।

२४ जनवरी को वर्माजी के साथ व्यासजी श्री मेनन से मिले। मेनन का सुझाव था कि एक आई सी. एस को मुख्यमत्री, शास्त्री के दल के व्यक्ति, तथा कांग्रेस के व्यक्तियों को मिलाकर मत्रिमडल गठित हो। वर्माजी ने मेनन का घोर विरोध किया उन्होने स्पष्ट कहा कि मै किसी भी संयुक्त मत्रिमंडल को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हूं। हम शुद्ध कांग्रेस मत्रिमण्डल का निर्माण करेंगे।

२५ जनवरी को व्यासजी को लेकर वर्माजी जवाहरलालजी से मिले। जवाहर लालजी ने वर्माजी तथा व्यासजी से कहा कि बाहर के अनुभवी व्यक्तियो को मत्रिमंडल मे लेना चाहिए। (डायरी २५ जनवरी ५१) वर्माजी ने व्यासजी को सलाह दी कि क्योंकि शास्त्रीजी ने एक जागीरदार प्रतिनिधि लेना स्वीकार कर लिया था इस कारण एक जागीरदार के अतिरिक्त अन्य किसी को मत्रिमण्डल मे लेना स्वीकार न करना।

७ फरवरी १९५१ को व्यासजी मत्रिमंडल के निर्माण के सबध मे श्री जवाहर लाल नेहरू से ढाई बजे मिले। नेहरूजी ने उनसे कहा एक आई सी एस, एक जागीरदार और शास्त्रीजी के दल के व्यक्ति को लेकर संयुक्त मत्रिमडल बनावे। फिर बोले कि जिन लोगो पर मुकदमे चले उनको भी लेंगे क्या? मेरी इच्छा है कि केयर टेकर सरकार चले। व्यासजी ने जागीरदार के अतिरिक्त अन्य किसी को मत्रिमडल मे न लेने पर बल दिया। जवाहरलालजी ने गोपाल स्वामी से बात करने के लिए कहकर चर्चा समाप्त करदी। व्यासजी लौट आए। व्यासजी हरलालसिंह, रामकरणजी, आदित्येन्द्रजी, पंड्याजी, मथुरादास माथुर सबो ने कहा कि एक बार वर्माजी नेहरूजी से मिलें। (डायरी ८ फरवरी ५१)

जब व्यासजी तथा अन्य सभी वरिष्ठ कांग्रेसजनो ने आग्रह किया तो वर्माजी ने नेहरूजी से बात करना स्वीकार कर लिया। ९ फरवरी १९५१ को प्रात. साढे दस बजे वर्माजी नेहरूजी से मिले। उनके वहां पहुँचते ही नेहरूजी क्रोध मे भरे हुए बोले— चुनाव तक मिनिस्ट्री बनाने की कोई जरूरत नही। वर्माजी ने कहा कि आप अपने मन की वास्तविक बात बतलाइए। तब नेहरूजी ने कहा व्यासजी के साथी मथुरादास माथुर, और एक दूसरे साहब पर से मुकद्दमे तो उठा लिए, किंतु कागजो पर ऐटार्नीजनरल का

नोट है "ऐवीडेंस में क्या हालत हो कह नही सकता किंतु मुकद्दमें उठाने योग्य नहीं है" यदि व्यासजी की वजह से ऐसे लोग मंत्रिमडल में आवें तो जनता पर बुरी छाप पड़ेगी। इसीलिए मै जोर दे रहा हूँ कि बहुमत कांग्रेस का रखो किंतु बाहर के भी लो। वर्माजी ने स्पष्ट पूछा आप किन्हे चाहते है तो नेहरूजी ने उत्तर दिया कि वैंकटाचार्य को और एक कांग्रेस के अल्पमत अर्थात शास्त्रीजी के समर्थकों में से चाहे शास्त्री को न लो मगर उनमे कोई तो अच्छा मिलेगा अपनी पसंद का लो, एक जागीरदार तो व्यासजी लेना ही चाहते है। (डायरी ६ फरवरी १६५१)

श्री नेहरूजी के कहने के अनुसार व्यासजी जब गोपालस्वामी आयंगर से मिले तो पता लगा कि वे वेकटाचार्य को चीफ मिनिस्टर और भगवानसहाय को रैवेन्यू मिनिस्टर बनाना चाहते है। व्यास जी सहमत नही हुए।

परिस्थिति उलझी हुई थी। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग देहली बुलाई गई। मन्त्रिमडल के निर्माण के संबध मे व्यासजी की गोपालस्वामी आयंगर से हुई बातचीत से उसे अवगत कराया गया। वर्मा जी ने सुझाव रखा कि गोपालस्वामी से कह दिया जाय कि हम वेकटाचार्य को मुख्य मत्री तो दूर मन्त्रिमडल मे लेने को भी तैयार नही है। शुद्ध कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बनेगा या हम बाहर रहेगे। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने वर्मा के सुझाव को स्वीकार कर लिया।

वर्मा जी अब व्यास जी के मुख्यमंत्रित्व में शुद्ध कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बनाने के प्रयास मे लग गए। वे श्री रफी अहमद किदवाई के पास गए। किदवई ने पूछा कि यदि राजस्थान मे दो तीन महीनो मे चुनाव करा दिए जावे तो कैसा ? वर्मा जी ने कहा पहले सरकार बना दो। हम को घोषणा करने दो फिर चुनाव की घोषणा भी हो। इधर जनता को कुछ राहत देदें फिर चुनाव भी हो। किदवई को वर्मा जी की बात पसंद आई।

उस समय उदयपुर मे इस बात को लेकर बहुत रोष था कि सरकार जागीरदारों के अधिकारो को पुनः वापस दे रही है। वर्मा जी ने नेहरू जी को एक कड़ा पत्र लिखा और पूर्व राजस्थान के जागीरी अधिकार वापस करने का विरोध किया। जबकि वर्मा जी व्यास मन्त्रिमडल के निर्माण के प्रश्न को लेकर दिल्ली में थे तब उदयपुर से फोन द्वारा यह सूचना आई कि जागीरी अधिकार वापस दिये जाने, जगलात के प्रश्न पर, और अनाज की कठिन समस्या को लेकर जनता बहुत क्षुब्ध हो रही है, वैधानिक ढंग से प्रयत्न करने पर भी यदि सरकार न सुने तो कांग्रेस कार्यकर्ता क्या करें ?

वर्मा जी ने उदयपुर के कार्यकर्ताओ को आदेश दिया कि आप जनता की समस्याओ मे पड़ जाइए, सरकार की नीति का सक्रिय विरोध कीजिए। सरकार गिरफ्तार करे तो गिरफ्तार हो जाइए। यदि आप लोग जेल चले जावेगे तो मै पार्लियामेंट छोड़कर आंदोलन का सचालन करने आ आऊँगा। सरकार की तरफ नही, जनता की मुसीबत की तरफ देखें जनता का साथ दो। (डायरी २४ फरवरी १६५१)

यद्यपि वर्मा जी कांग्रेस के बहुत भक्त थे, कांग्रेस के लिए वे अपने को खपा सकते

थे, परन्तु जब जब ऐसे क्षण आए कि उन्हे लगा कि कांग्रेस सरकार जनता के प्रति अन्याय कर रही है तो उनके अन्दर जो एक जन्मजात योद्धा की अग्नि थी वह भड़क उठती थी और वे कांग्रेस सरकार के विरुद्ध जनता का पक्ष लेते थे। ऐसे भी क्षण आए कि लगने लगा कि वे सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करेगे, आदोलन का नेतृत्व करेंगे। कहने का तात्पर्य यह कि वर्मा जी एक ऐसे नेता थे जिनमे क्रान्तिकारी विचारो की अग्नि स्वतत्रता के पश्चात सत्ता मे आ जाने पर भी बुझी नही।

वर्मा जी व्यास जी के नेतृत्व मे शुद्ध काग्रेसी मन्त्रिमण्डल बनाए जाने के पक्ष मे दिल्ली मे निरन्तर प्रयास कर रहे थे। १५ फरवरी १९५१ को वे श्री रफी अहमद किदवई से इस सबन्ध मे पुन. मिले। किदवई ने कहा कि चार पाच दिन मे राजस्थान की समस्या हल हो जावेगी।

२७ फरवरी १९५१ को प्रात काल वर्मा जी के पास प्राईममिनिस्टर के यहां से फोन आया कि चार बजे मिलो। चारबजे वर्मा जी श्री नेहरू से मिले। जागीरी अधिकार वापस दिए जाने तथा सेवाओ के एकीकरण के सबन्ध मे होनेवाली गड़बड़ी से उन्हे अवगत कराया। राजस्थान के सबन्ध मे नेहरू जी ने वर्मा जी से कहा "आप वहा के पच हो, आप वहां के झगड़े को सुलझाओ" वर्मा जी ने कहा "हमारे सरपच तो आप हो आप इस उलझन को सुलझाइये।" वर्मा जी व नेहरू जी की विस्तृत बातचीत हुई। आई. सी. एस. तथा बाहरी तत्वो को रखने की बात समाप्त हो गई। नेहरू जी ने वर्मा जी से कहा कि काग्रेस से बाहर का एक राजस्थानी ही रख लेना। इसको वर्माजी ने स्वीकार कर लिया। नेहरू जी ने शास्त्री जी के समर्थको मे से एक को लेने को कहा वर्मा जी ने इसका विरोध किया। वर्मा जी ने कहा कि यह आप ऊपर से तय न करे इस विषय मे राजस्थान प्रातीय काग्रेस को तय करने दीजिए। सेवाओ के एकीकरण मे होने वाली गड़बड़ियो तथा जागीरी अधिकार वापस दिये जाने के सबन्ध मे उन्होने अधिक जानकारी चाही। नेहरू जी ने वर्माजी से पूछा कि चुनाव जल्दी करादे तो कैसा? वर्मा जी ने कहा काग्रेस को सत्ता मे विठादे, जागीरे समाप्त करने की अनुमति दे दे, अनाज की समस्या और सेवाओ का असतोष दूर करदे तो हम अवश्य जीतेगे। (डायरी २७ फरवरी ५१)

वर्मा जी के प्रति नेहरू जी का अगाध विश्वास था। यही कारण था कि श्री नेहरू यद्यपि आरभ में इस बात पर बहुत दृढ थे कि राजस्थान मे आई. सी. एस. जागीरदार, शास्त्री समर्थक तथा राजस्थान के बाहर से किसी काग्रेस नेता को लेकर मत्रिमडल बनाया जाना चाहिये। परन्तु वर्माजी के विशेष आग्रह पर उन्होने वर्माजी की बात मानली और कहा कि गोपाल स्वामी से बात कर लो। गोपाल स्वामी से वर्माजी ने बात की और उनसे स्पष्ट कह दिया कि केवल एक कांग्रेस के बाहर का स्वतत्र व्यक्ति हम अपनी इच्छा का लेगे। गोपालस्वामी की इच्छा थी कि मत्रिमडल मे और भी लोग हो परन्तु वर्माजी ने उनका विरोध किया। अत में वर्माजी की बात को मान लिया गया। ८ मार्च श्री रफीअहमद किदवई ने वर्माजी से कहा "वर्माजी तुम्हारी जीत

हो गई। है अब स्वतंत्र भी तुम्हारी इच्छा का होगा और वह भी केवल एक ही होगा, मैंने आयगर से बात करली है" (डायरी ८ मार्च १९५१)

यह वर्माजी के प्रयत्नो का ही फल था कि व्यास मन्त्रिमडल के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। अन्यथा आरभ मे श्री नेहरू तथा अन्य वरिष्ठ नेताओ की धारणा थी कि किसी आई. सी एस. मुख्यमत्री के आधीन मिली-जुली सरकार बनाई जाय। वर्माजी कभी किसी भी दशा मे इस सबध मे समझौता करने के लिए तैयार नही थे। यहा तक कि जब व्यास जी ने राज्यप्रमुख (महाराजा जयपुर के) इस परामर्श को जल्दी में मान लिया कि जो एक जागीरदार मन्त्रिमडल मे लिया जाय उसकी नियुक्ति करते समय उनकी संस्था क्षत्रिय परिषद् से परामर्श किया जावे परन्तु वर्माजी ने इसका कडा विरोध किया। उन्होने कहा कि यदि हम जागीरदारो का चुना प्रतिनिधि मंत्रिमडल मे लेगे तो हम कभी भी प्रगतिशील कार्यक्रम नही बना सकेंगे। हमे उनका चुना हुआ प्रतिनिधि नही अपनी इच्छा का जागीरदार मन्त्रिमंडल मे लेना चाहिए। अस्तु व्यासजी ने इस आशय की सूचना क्षत्रियसभा के मत्री को दे दी।

जब व्यासजी ने अपना मन्त्रिमडल बनाया तो श्री गोकुललाल असावा ने यह कह कर उसका विरोध किया कि उसमे एक दो भ्रष्ट व्यक्ति लिए गए है। वे नेहरू और आयगर से भी इस सम्बन्ध मे मिले और अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया। आसावा जी चाहते थे कि मन्त्रिमडल मे एक भी ऐसा व्यक्ति नही होना चाहिए जिसके सबध मे तनिक भी भ्रष्टाचारी होने का सदेह हो। श्री मथुरादास माथुर को लेकर उनका विरोध था वर्माजी ने व्यासजी को यह परामर्श दिया था कि माथुर की प्रतिष्ठा रखने के लिए मन्त्रिमडल मे उन्हें लेकर नाम की घोषणा करदी जावे और दूसरे ही दिन उनसे त्यागपत्र दिलवा दिया जावे परन्तु श्री माथुर को वर्माजी का यह परामर्श पसद नही आया। असावा श्री व्यास मन्त्रिमडल के गठन से अत्यन्त क्षुब्ध और असतुष्ट रहे। (डायरी)

उस समय मेवाड के दक्षिण तथा भीलक्षेत्र मे अनाज की बहुत कमी थी। वर्माजी के बहुत दौड़ भाग करने पर तथा श्री कन्हैयालाल मुशी से बात करके उन्होने भारत सरकार को इसके लिए तैयार कर लिया था कि उदयपुर के क्षेत्र मे प्रति व्यक्ति ९ औंस देने की आज्ञा दी जाये। परन्तु सात अप्रैल १९५१ को जब वर्माजी श्री मुशी से मिले तो श्री मुशी फिर बदल गए बोले कि अनाज मे वृद्धि करने की आज्ञा नही दूंगा क्योकि राशन बढ़ाने से सात हजार टन अनाज अधिक देना होगा। अब वर्माजी का धैर्य छूट गया उन्होने क्षुब्ध होकर रोष भरे शब्दों मे श्री मुशी से कहा कि यदि आपने राशन नही बढाया तो मै उदयपुर जाकर स्वय आन्दोलन करूगा और समस्त जनता को सत्याग्रह करने के लिए तैयार करूगा। वर्माजी को इस प्रश्न पर इतना दृढ़ देखकर श्री कन्हैयालाल मुशी को झुकना पड़ा और उन्होने राशन बढ़ाने की आज्ञा निकाल दी। डायरी ७ अप्रैल ५१)।

अन्त मे व्यासजी ने वर्माजी की सम्मति से निम्नलिखित मन्त्रिमंडल बनाया। श्री बृजसुदर, श्री कुम्भाराम, श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी, श्री टीकाराम पालीवाल,

श्री नरोत्तम जोशी, श्री मथुरादास माथुर, श्री मोहनलाल सुखाड़िया, श्री बलवत सिह मेहता।

क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष पोकरण ठाकुर व्यासजी से जागीर मत्री के सम्बन्ध मे चर्चा करने आए व्यासजी ने वर्माजी को भी बात करते समय साथ रखा। वर्माजी ने उनसे स्पष्ट कह दिया कि हम जागीरदारो को लेने के पक्ष मे नही है। स्टेट मिनिस्टरी ने सरदार पटेल के समय यह प्रथा बनादी थी किन्तु आप यह स्पष्ट समझलें कि हमारा मत्रिमडल जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने का प्रयत्न करेगा। अत: आप समझले आपको भी उसमे समर्थन देना होगा। उन्होने यह तो स्वीकार किया किन्तु वे दो जागीरदार लेने का आग्रह कर रहे थे परन्तु वर्माजी ने स्पष्ट अस्वीकार कर दिया। (डायरी २० अप्रेल ५१)

व्यासजी के मुख्यमत्री बनने पर उन्होने प्रान्तीय काग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और वर्माजी को कार्यवाहक अध्यक्ष बना दिया। १० मई को किशनगढ मे प्रान्तीय काग्रेस कमेटी की मीटिग हुई और सर्वसम्मति से वर्माजी काग्रेस अध्यक्ष चुने गए। ग्यारह मई को सर्वसम्मिति से चुनाव समिति का भी चुनाव सम्पन्न हो गया।

वर्माजी का इस समय दो बातो की ओर विशेष ध्यान था एक तो आबू को पुन राजस्थान के लिए प्राप्त करना, दूसरे काग्रेस सगठन को दृढ बनाना जिससे कि आने वाले चुनावो मे काग्रेस की विजय हो। वे राजस्थान प्रदेश काग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से एक प्रतिनिधि मडल आबू के प्रश्न पर श्री जवाहरलाल नेहरू से बात करने के लिए ले गए। उस प्रतिनिधि मडल मे वर्माजी के अतिरिक्त श्री गोकुल भाई, श्री राजबहादुर, श्री गोकुललाल असावा, तथा लोकसभा के राजस्थान के सदस्य थे। जब वर्माजी नेहरूजी से समय लेने गए तो जवाहरलाल जी ने कहा"...... आप लोग आएगे तो सही मगर मे क्या कहूगा, मै कुछ कहूँगा नही सुनू गा।" वर्माजी ने कहा तो सुन ही लीजिए। वर्माजी ने प्रतिनिधि मडल के नेता के रूप मे आबू के सबध मे अपने विचार दृढ़ता के साथ कहे। नेहरूजी केवल सुनते रहे बोले नही।

वर्माजी की मान्यता थी कि अब समय आ गया है कि अजमेर को भी राजस्थान मे मिलाया जावे। अस्तु इस सम्बन्ध मे भी प्रयत्न कर रहे थे। जहाँ तक कांग्रेस सरकार का प्रश्न था वे चाहते थे कि काग्रेस सरकार अधिक सक्रिय और गतिशील हो अस्तु वे १७ जून १९५१ को मुख्यमत्री श्री जयनारायण व्यास से मिले और उनका ध्यान चूरू, रतनगढ, और सुजानगढ मे जो अशान्ति तथा अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो गई थी उसको शीघ्र सुधारने की ओर दिलाया। उन्होने व्यासजी से कहा कि इ स्पेक्टर जनरल पुलिस को चेतावनी दीजिए। राजस्थान से बाहर के सचिवो और पुलिस अधिकारियों को विदा कर दीजिए। १५ जुलाई तक जागीरे समाप्त हो। व्यासजी ने १५ जुलाई तक जागीर उन्मूलन अधिनियम बनाकर स्टेट मिनिस्टरी की स्वीकृति के लिए भेजने का वचन दिया।

मुख्य मंत्री पद से त्यागपत्र देने के लिए विवश किये जाने पर श्री हीरालाल शास्त्री ने काग्रेस से भी त्यागपत्र दे देने का निश्चय किया और वे एक नए राजनीतिक दल की स्थापना का प्रयत्न कर रहे थे। १० अगस्त १९५१ को वर्माजी उनके पास गए और उनसे आग्रह किया कि वे काग्रेस न छोडें। शास्त्री जी ने वर्माजी से कहा कि उन्होने नई पार्टी का अध्यक्ष पद स्वीकार कर लिया है और काग्रेस छोड़ने की घोषणा करने वाला हू। अब मेरे लिए निर्णय बदलना असभव है। फिर भी उन्होने १२ तारीख को उत्तर देने का आश्वासन दिया। वर्माजी ने सायकाल को शास्त्री से हुई बातचीत से मन्त्रिमण्डल को अवगत कराया। अधिकाश मन्त्री इस मत के थे कि वे शास्त्री जी को कोई महत्व न दिया जाय पर यह कोशिश अवश्य की जावे कि वे कांग्रेस मे रहे। वर्माजी ने सबो से कहा कि उनके काग्रेस मे रहने पर इस प्रकार की कोई शर्त नही है परन्तु हमारा प्रयत्न कि वे काग्रेस मे रहे दिल से होना चाहिए।

श्री गोकुल भाई शास्त्रीजी को तथा वर्माजी को मिलाने का प्रयत्न कर रहे थे, जिससे कि शास्त्री जी काग्रेस न छोड़े और कांग्रेस की फूट मिट जावे। वर्माजी ने गोकुल भाई से शास्त्री जी के यहा मिलने जाना अस्वीकार कर दिया क्योकि व्यासजी और शास्त्री के बीच हो रही बातचीत के मध्य शास्त्री जी ने अपने पत्र 'लोकवाणी' मे 'एक मित्र का आग्रह' शीर्षक एक टिप्पणी प्रकाशित करदी। उसी दिन ९ बजे शास्त्रीजी से बात हुई। उन्होने कहा कि किसान सभा से समझौता करना होगा। वर्माजी ने कहा कि हम इसी शर्त पर किसान सभा के कार्यकर्त्ताओ को कांग्रेस में लेगे कि किसान सभा समाप्त होकर काग्रेस मे मिल जावेगी। शास्त्री जी ने वर्माजी से पूछा कि यदि किसान सभा के नेताओं ने इस शर्त को न माना तो क्या होगा। वर्माजी ने स्पष्ट उत्तर दे दिया कि उस दशा में काग्रेस मे उनका कोई स्थान नही होगा। शास्त्री जी ने कहा तो अपनी बातचीत समाप्त हुई समझिए।

उस समय पडित जवाहरलाल नेहरू का काग्रेसाध्यक्ष राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास ठडन से सैद्धान्तिक विरोध चल रहा था। वर्माजी ने राजस्थान प्रान्तीय काग्रेस मे एक प्रस्ताव पारित कराकर नेहरूजी के नेतृत्व मे विश्वास प्रगट किया। वे स्वय नेहरूजी के पास गए और उन्हे आश्वस्त किया कि राजस्थान काग्रेस उनके साथ है।

यद्यपि शास्त्री जी ने उस समय तक काग्रेस से त्यागपत्र दे दिया था किन्तु केन्द्रीय नेताओ की इच्छा थी कि वे काग्रेस छोड़ कर नया दल न बनावे क्योकि चुनाव सर पर थे। राजस्थान मे भूतपूर्व नरेशो का प्रभाव था, काग्रेस की फूट का उन्हे लाभ मिलना था अतएव केन्द्रीय नेता किसी प्रकार शास्त्री के काग्रेस मे बने रहने के लिए प्रयत्नशील थे। परन्तु शास्त्री जी ने ८ सितम्बर १९५१ को काग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। और उन्होंने एक नया दल खडा करने की घोषणा कर दी। वर्माजी जानते थे कि शास्त्री जी को श्री घनश्यामदास बिड़ला का समर्थन तथा आर्थिक सहायता प्राप्त होगी तो चुनाव में थोड़ी कठिनाई हो सकती है अस्तु वे श्री जयनारायण व्यासजी को लेकर श्री घनश्यामदास बिड़ला से ८ सितम्बर १९५१ को मिले। शास्त्री जी के संदर्भ में भावी चुनावो के सम्बन्ध में

बात हुई। श्री बिड़ला ने वर्माजी से कहा चुनाव मे किसको खड़ा करना अथवा नही करना, यह आप सोचे मै कांग्रेस को अवश्य मदद दूंगा। शास्त्रीजी के विषय मे कहा, कि यदि वे कांग्रेस के विरुद्ध खडे होना चाहते है या दूसरी पार्टी खड़ी करना चाहते हैं तो मैं कांग्रेस के विरोध मे उन्हे मदद नही दूगा (डायरी)

पडित जवाहरलाल तथा श्री लालबहादुर शास्त्री चाहते थे कि श्री हीरालाल शास्त्री कांग्रेस के बाहर न जावे अस्तु श्री लालबहादुर शास्त्री ने वर्माजी व्यासजी तथा शास्त्रीजी को २८ सितम्बर १९५१ को बात करने के लिए बुलाया। शास्त्रीजी नही आए। वर्माजी ने श्री लालबहादुर शास्त्री से कहा—शास्त्रीजी और बयाजी (श्री भूरेलाल बया) पांच दिन के अन्दर कांग्रेस में आ जावे तो हम उन्हे खड़ा कर देगे। उसके उपरान्त वर्माजी ३ बजे सायंकाल को श्री जवाहरलाल नेहरू से मिले। नेहरूजी ने पूछा "कहो पचो राजस्थान मे चुनाव का क्या हाल है।" वर्माजी ने उत्तर दिया 'हमारा बहुमत होगा।" जागीरदार यदि अपनी जागीरे समर्पण कर दे तो हम उन्हे स्थान देगे। (डायरी)

यद्यपि श्री हीरालाल शास्त्री ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया था और नए दल को स्थापित करने की घोषणा भी करदी थी परन्तु केन्द्रीय नेतृत्व श्री गोकुलभाई के माध्यम से उन्हे कांग्रेस मे आने तथा जनता पार्टी को भग कर देने के लिए कह रहा था। श्री गोकुलभाई ने वर्माजी के सामने यह प्रस्ताव रखा कि शास्त्रीजी पार्टी को भग करने के पूर्व चुनाव मे उनके समर्थको मे से किनको कांग्रेस टिकट दिया जावे इस पर बहस करना चाहते है। वर्माजी ने उत्तर दिया कि पहले पार्टी तोड़ दी जावे फिर नामो पर बहस हो मतभेद होने पर श्री जवाहरलाल नेहरू का निर्णय मान्य हो। अन्तत श्री नन्दा तथा बाद को डाक्टर कैलासनाथ काटजू ने श्री हीरालाल शास्त्री को अपनी पार्टी भग करने के लिए समझाया और वे मान गए। उन दोनों ने वर्माजी से कहा कि कांग्रेस के चुनाव मे जो गड़बड हुई है उसमे गोकुलभाई को पच मानलो। वर्माजी ने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसके अतिरिक्त उन्होने वर्माजी से कहा कि चुनाव समिति मे ३ शास्त्रीदल के और एक आई० सी० सी० का ले लो वह आपके चुनावो को देखता रहेगा कि अल्पमत के साथ न्याय हो रहा है। वर्माजी ने इस प्रस्ताव पर गहरा रोष प्रकट किया। उन्होने कहा कि मैं इसे अपने प्रान्त का अपमान समझता हू।

११ नवम्बर, १९५१ को वर्माजी दिन को साढे बारह बजे राजस्थान की समस्याओ पर बात करने के लिए जवाहरलाल नेहरू से मिले और उन पर जोर डाला कि जागीर प्रथा शीघ्र समाप्त हो, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस को हटाया जावे, शाति व्यवस्था का तत्काल प्रबन्ध हो। श्री जवाहरलाल चुनाव प्रचार के लिए राजस्थान का दौरा करे। नेहरू जी ने वर्माजी की बातो को स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा कि शान्ति व्यवस्था के लिए स्पेशल आफिसर तथा मिलिटरी भेजी जा रही है। शास्त्री समर्थको के लेने के सम्बन्ध मे श्री नेहरू ने पाच सात व्यक्तियो को लेने के लिए कहा जिसे वर्माजी ने स्वीकार कर लिया। (डायरी)

अध्याय दसवां

व्यासजी से मतभेद

जनवरी १९५२ में राजस्थान मे लोकसभा तथा धारा सभा का प्रथम चुनाव था। अभी तक राजस्थान मे एसेम्वली नही थी। राजस्थान "वी" श्रेणी का राज्य था और गृह मत्रालय का उस पर वर्चस्व स्थापित था। वर्माजी इसका वरावर विरोध करते थे। उन्होने गृह मत्रालय द्वारा लगाए जानेवाले प्रतिबन्धो का खुलकर विरोध किया और यह इनके विरोध का ही परिणाम था कि गृह मन्त्रालय का राजस्थान पर दवाव कम हुआ। उनकी यह धारणा थी कि यदि आम चुनावो से पहले काग्रेस का मत्रिमडल राज्य मे स्थापित कर दिया गया और मत्रिमडल ने प्रगतिशील नीति अपनाई तो कांग्रेस चुनावो मे सफल होगी यद्यपि राजाओ और महाराजाओ का राजस्थान में परम्परागत वहुत प्रभाव था। उनकी यह धारणा आगे आनेवाली घटनाओ से सत्य सिद्ध हुई। यदि आरम्भ मे ही काग्रेस मत्रिमडल एक जुट होकर काम करता शास्त्री जी से विरोध न होता तो काग्रेस की स्थिति अधिक सुदृढ हो जाती। शास्त्रीजी के त्यागपत्र देने के उपरान्त भी व्यासजी मत्रिमडल को सत्तारूढ करने मे केन्द्रीय नेतृत्व ने वहुत देरी करदी इस कारण काग्रेस को अपनी स्थिति मजवूत करने के लिए अधिक समय नही मिल सका। राजस्थान मे सैकडो वर्ष पुराने राजवश थे। जनमानस मे महाराजा के व्यक्तित्व के प्रति परपरागत श्रद्धा और आदर था। समाज मे प्रमुख व्यक्तियो का तथा जागीरदारो का राजवश से परपरागत निकट के सम्बन्ध थे। उधर महाराजा जोधपुर श्री उम्मेदसिह ने काग्रेस के विरुद्ध एक प्रवल मोर्चा खड़ा कर दिया था। अस्तु राजस्थान का प्रथम आम चुनाव ऐसे विपरीत वातावरण मे हुए। श्री माणिक्लाल वर्मा राजस्थान प्रदेश काग्रेस के अध्यक्ष थे उन्होने एक मास तक लगातार सम्पूर्ण राजस्थान का धुंआधार दौरा किया। काग्रेस के सदेश को गाव गाव पहुचाया और लोकसभा तथा ऐसेम्बली के चुनावो की व्यवस्था की। महाराजा जोधपुर के प्रभावशाली नेतृत्व मे विरोधी पक्ष भी वहुत सबल था। परिणाम यह हुआ कि काग्रेस को यद्यपि वहुमत प्राप्त हुआ परन्तु वह नाममात्र का वहुमत था। काग्रेस सदस्यो की सख्या विरोधी पक्ष से केवल एक या दो ही अधिक थी। जोधपुर से श्री जयनारायण व्यास पराजित हो गए यह एक बड़ी राजनीतिक दुर्घटना हुई। अव प्रश्न यह था कि मुख्य मन्त्री कौन बने। काग्रेस क्षेत्र मे व्यासजी के नेतृत्व में

मत्रिमडल के बनने के सबध मे कोई मतभेद नही था परन्तु व्यासजी के एसेम्बली के चुनाव मे जोधपुर से पराजित हो जाने से एक कठिन समस्या उठ खड़ी हुई ।

वर्माजी ने २७ जनवरी १९५२ को श्री जवाहरलाल नेहरू को एक लवा पत्र चुनावो के अनुभव पर लिखा । उनकी मान्यता यह थी कि काग्रेस को अधिक तेजवान और क्रियाशील सगठन बनाने की आवश्यकता थी । अवसरवादी और प्रतिक्रियावादी तत्व जो कि कांग्रेस मे ले लिए गए है उनके कारण सगठन निस्तेज और निष्प्राण होता जा रहा है । उनका काग्रेस मे सामन्ती तत्वो तथा उद्योगपतियो को लेने के सबध में गहरा विरोध था, वे चाहते थे कि काग्रेस क्रियाशील तथा सेवाभावी व्यक्तियो को ही अपने सगठन मे ले ।

जब श्री वर्मा राजस्थान काग्रेस के अध्यक्ष वने तो वे अखिल भारतीय कांग्रेस वर्किग कमेटी के भी सदस्य थे । वर्किग कमेटी ने उनको त्रावकोर कोचीन, मद्रास और और राजस्थान मे आम चुनावो के सबध मे अध्ययन कर वर्किंग कमेटी को रिपोर्ट देने के लिए नियुक्त किया था । वर्माजी ने इन प्रदेशो का दौरा कर २ फरवरी, १९५२ को वर्किग कमेटी के पास अपनी रिपोर्ट उपस्थित करदी । काग्रेस वर्किग कमेटी की २ फरवरी की बैठक मे उन्होने इस वात पर वहुत बल दिया कि काग्रेस सगठन शिथिल हो गया है उसमे अवसरवादी तत्व जिनकी काग्रेस के सिद्धान्तो मे कोई आस्था नही है घुस आए है काग्रेस जनता से दूर पडती जा रही है । अस्तु काग्रेस के सगठन को दृढ करने का निर्णय हुआ । वर्किग कमेटी ने यह भी निर्णय लिया कि जो मत्री चुनावो मे हार गए है उन्हे साधारणतया चुनाव मे दुबारा खड़ा न किया जावे ।

३ फरवरी १९५२ को पार्लियामेन्टरी वोर्ड की मीटिग थी श्री नेहरू ने राजस्थान के सबध मे निर्णय करने के लिए श्री वर्माजी को विशेष रूप से पार्लियामेन्टरी बोर्ड की बैठक मे वुलाया । वर्माजी का मत था कि व्यासजी को किसी दूसरे स्थान से खडा किया जावे । श्री नेहरू ने वर्माजी के विचार का समर्थन किया और कहा कि व्यासजी को अन्य किसी स्थान से खडा होना चाहिए, परन्तु उस दिन कोई निर्णय नही हुआ । अन्तरिम काल के लिए श्री वर्माजी की सिफारिश पर श्री टीकाराम पालीवाल के नेतृत्व मे काग्रेस सरकार वनाने का निर्णय किया गया ।

२२ फरवरी १९५२ को काग्रेस पार्टी की बैठक बुलाई गई । वर्माजी ने ऐसेम्बली के काग्रेस सदस्यो को उद्वोधन किया और कहा कि उन्हे काग्रेस के अनुशासन को सच्चे अर्थों मे स्वीकार करना चाहिए, दिल और हाथ पवित्र रखने चाहिए, पाच हजार आमदनी से कम की जागीरो को भी शीघ्र समाप्त कर देना चाहिए तथा पक्षपात तथा सिफारिशो से दूर रहना चाहिए ।

काग्रेस के निर्णय के अनुसार पालीवालजी के नेतृत्व मे काग्रेस मत्रिमडल ने ३ मार्च १९५२ को शपथ ली । उससे एक दिन पूर्व किस मन्त्री को कौनसा विभाग दिया जावे इस सम्बन्ध मे चर्चा हुई । वर्माजी ने अपनी डायरी मे लिखा है "२ मार्च १९५२ को दिन भर विभागो के बटवारे सम्बन्धी चर्चा मे भाग लिया । अच्छा वातावरण

नही रहा।"

वर्माजी ने एसेम्बली पार्टी मे श्री नरोतम जोशी को स्पीकर तथा श्री कालूलाल श्रीमाली को राज्य सभा का सदस्य बनाने पर जोर दिया जिसे स्वीकार कर लिया गया।

वर्माजी ने मुख्य मन्त्री श्री पालीवाल को परामर्श दिया कि केन्द्रीय सरकार द्वारा भेजे ऐडवाइजर के अधिकारो की वर्तमान स्थिति को समाप्त कर देना चाहिए, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस को विदा कर देना चाहिए। राजस्थान की पूर्व राजधानियो का विकास करने का शासन को प्रयत्न करना चाहिए और उन्हे चाहिए कि वे जयनारायण व्यास को समय समय पर शासन सबंधी जानकारी से अवगत कराते रहे। स्पष्ट था कि पालीवाल जी को वर्माजी ने यह सकेत दे दिया था कि व्यासजी शीघ्र ही मुख्य मंत्री बनेगे अस्तु उनको शासन की नीतियो से अवगत करते रहे तथा उनसे परामर्श करते रहे।

वर्माजी अपने दीर्घ जनसेवा काल मे कभी पद के पीछे नही भागे। वरन उन्होने सदैव प्रयत्न किया कि जो निष्ठावान कार्यकर्त्ता है उनको आगे लाया जावे। चुनाव सम्पन्न हो गए थे। काग्रेस का राजस्थान मे मन्त्रिमण्डल बन गया था अतएव उन्होने कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। प्रातीय काग्रेस कमेटी के सभी सदस्यो ने उनके त्यागपत्र को अस्वीकार कर दिया और उनसे आग्रह किया कि वे अध्यक्ष बने रहे, परन्तु वर्माजी दृढ रहे उन्होने मास्टर आदित्येन्द्र को अध्यक्ष बनवाया।

वर्माजी का सदैव यह प्रयत्न रहा कि कांग्रेस के सच्चे कार्यकर्त्ताओ की देखभाल हो। जब कभी उन्हे पता चलता कि कोई कार्यकर्त्ता कष्ट में है वे उसकी सहायता के लिए किसी धनी व्यक्ति से प्रार्थना करते, अतएव उनके मन मे यह विचार उठा कि मेवाड़ इन्डस्ट्रीज के नाम से एक व्यावसायिक सस्थान खड़ा किया जावे वह सरकार से खानों का लाइसेन्स ले और उसके लाभ से कार्यकर्त्ताओ को आर्थिक सहायता दी जावे।

वर्माजी अब कांग्रेस अध्यक्ष पद के भार से मुक्त हो गए थे वे अब अपनी शक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा 'बी' श्रेणी के राज्यो पर से नियन्त्रण हटाने, आबू को राजस्थान को देने, अजमेर मेरवाडा को राजस्थान मे मिलाने और चबलघाटी योजना को प्राथमिकता दिलाने के कार्य मे जुट गए। इस सबध मे वे तत्कालीन गृह मन्त्री डाक्टर काटजू, श्री नदा और श्री टी टी कृष्णमाचारी से मिले। ३१ मई १९५२ को श्री नेहरू के मकान पर वर्किग कमेटी की बैठक मे भी उन्होने राजस्थान की इन समस्याओ को हल करने की माग प्रभावशाली शब्दो मे रखी।

दुर्भाग्यवश राजस्थान की कांग्रेस में पुन: उग्र मतभेद खड़ा हो गया। श्री पालीवाल के समर्थको ने व्यासजी के विरुद्ध और व्यासजी के समर्थको (वर्माजी के शब्दो मे नकली भक्तो) ने पालीवालजी के विरुद्ध प्रचार करना और विष फैलाना आरम्भ कर दिया। वर्माजी ने इस मतभेद को दूर करने का प्रयत्न किया। वे स्वय पालीवालजी से मिले और उन्हे समझाया।

उधर २८ जून १९५२ को काग्रेस की वर्किंग कमेटी मे व्यासजी को पुनः खड़ा करने पर भी चर्चा हुई। मध्यप्रदेश मे तखतमल जैन के द्वारा पराजित हो जाने के फलस्वरूप राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, मौलाना आज़ाद तथा सत्यनारायणजी ने व्यासजी के पुनः चुनाव में खडे होने का विरोध किया। परन्तु वर्माजी ने आग्रह किया कि पहले जाच करली जावे। जहां व्यासजी खडे हों वह क्षेत्र अच्छा है कि नही। श्री नेहरू ने वर्मा के मत का समर्थन किया और वर्किंग कमेटी ने क्षेत्र की जांच करने का अधिकार भी वर्माजी को सौंप दिया।

२९ जून को पुन: वर्किंग कमेटी के समक्ष व्यासजी को चुनाव लड़ना चाहिए या नही इस प्रश्न को लेकर चर्चा हुई। केन्द्रीय नेताओं के पास यह शिकायत आई कि किशनगढ से चुनाव मे जीतने वाले श्री चादमल मेहता ने एसेम्बली की सदस्यता से त्याग पत्र देकर व्यासजी के लिए जो स्थान रिक्त किया है उससे वहा के लोग इतने क्रुद्ध हैं कि उन्होंने चांदमल मेहता को बुरी तरह पीटा है वह अस्पताल मे है। डॉक्टर कैलासनाथ काटजू ने वर्किंग कमेटी के सामने कहा कि उनके पास सूचना आई है कि चादमल मेहता को पच्चीस हजार रुपए दिए गए हैं और तीन वर्षो तक मासिक वेतन देना तय हुआ है। तब उसने व्यासजी के लिए स्थान रिक्त किया है। वर्किंग कमेटी ने वर्माजी से सही स्थिति के बारे मे जानना चाहा तो वर्माजी ने उत्तर दिया कि मैं चांदमल मेहता को यही बुला लेता हूँ उसी से पूछ लीजिए। दू सरे दिन वर्माजी ने चांदमल मेहता को किशनगढ़ से बुलावा भेजा और उन्हे श्री नेहरू, श्री लालवहादुर शास्त्री, तथा श्री काटजू से मिलाया। श्री मेहता ने इस असत्य प्रचार का तीव्र खंडन किया। तब श्री लालबहादुर ने श्री नेहरू जी से इस सबध मे चर्चा करके वर्माजी को किशनगढ क्षेत्र को भली भांति जाच करने के उपरान्त व्यासजी को खड़ा करने के संवध मे ए. आई. सी. सी. मे रिपोर्ट भेजने का दायित्व दिया। (डायरी)

वर्माजी देहली से जयपुर आए पालीवालजी तथा व्यासजी के समर्थको के बीच इस अशोभनीय रस्साकसी से वे अत्यन्त क्षुब्ध थे। १ जुलाई, १९५२ को वे व्यासजी से मिले और कहा कि राजस्थान का राजनीतिक वातावरण इतना दूषित हो गया है कि कोई भी व्यक्ति भली प्रकार सरकार नही चला सकता। मैं पालीवालजी से वात करता हूँ यदि स्थिति में सुधार नही हुआ तो व्यासजी से कहूंगा कि इस गदे वातावरण मे खड़े न हो।

वर्माजी ने पालीवालजी से बात करके उनसे कहा कि श्री वेदपाल त्यागी आदि व्यासजी को न आने देने का प्रयत्न कर रहे है आपने श्री घनश्याम चौधरी से कहा कि व्यासजी माथुर (श्री मथुरादास) से सीट खाली कराकर जोधपुर से चुनाव लडे, किशनगढ से क्यो लड़ रहे है ? डी. आई. जी. पुलिस का इस समय वदलना सिद्ध करता है कि व्यासजी को आने देने के पक्ष में आप नही है। पालीवालजी से वर्माजी की लवी वात हुई। पालीवालजी त्यागपत्र देने को तैयार हुए। वर्माजी ने उन्हें समझाया कि यदि जिम्मेदारी समझते हो तो स्थिति को सम्भालो अन्यथा आप भी मरनेवाले

हैं। (डायरी)

वर्माजी कांग्रेस मे वैमनस्य को लेकर अत्यन्त क्षुब्ध थे। रात्रि मे उन्होने अपने मन मे निश्चय कर लिया कि यदि स्थिति मे सुधार नही हुआ तो वे व्यासजी को सलाह देंगे कि वे खड़े न हो और श्री सुखाड़िया तथा श्री रामकरण जोशी को मंत्रीपद से हटने को कहेगे।

दूसरे दिन वे किशनगढ गए वहा के कार्यकर्ताओ से मिले और वहा की स्थिति का अध्ययन किया। परिस्थिति बहुत स्पष्ट नही थी। व्यासजी के विरोध की संभावना थी, पुरुषोत्तमजी ने वर्माजी से कहा कि यदि चादमल, कान्तिचन्द तथा घनश्याम के दिल साफ नहीं हुए तो व्यासजी की सफलता सदेहास्पद है। वर्माजी ने व्यासजी, श्री वेदपाल त्यागी जोकि व्यासजी के खडे होने का तीव्र विरोध कर रहे थे उनसे, तथा पालीवालजी से बात की उन्हे समझाया कि राजस्थान का हित इसी मे है कि वे व्यासजी के चुनाव के प्रति अच्छा रुख अपनावे।

वास्तविक बात यह थी कि व्यासजी का जो उस समय कांग्रेसजनो के एक समूह विशेष ने विरोध किया उसके पीछे दो मुख्य कारण काम कर रहे थे। श्री पालीवाल तथा उनके अधिक निकट जो थोडे से व्यक्ति थे उनकी मान्यता और आग्रह यह था कि पालीवालजी के मुख्य मन्त्रित्वकाल मे शासन का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है अस्तु उनको हटा कर व्यासजी को लाने की कोई आवश्यकता नही। पालीवालजी स्वय मुख्यमत्री बने रहना चाहते थे। परन्तु दूसरा सबसे बडा और प्रभावशाली कारण यह था कि श्री गोकुललाल असावा व्यासजी को खड़ा करने का खुला विरोध कर रहे थे। उनका स्वयं व्यासजी के व्यक्तित्व और उनकी योग्यता और क्षमता के विरुद्ध कोई विरोध नही था परन्तु उनका मत था कि यदि व्यासजी मुख्य मत्री बने तो वे मत्रिमडल में अपने प्रिय और अत्यन्त निकट उन साथियो को अवश्य लेगे जो असावाजी की दृष्टि मे भ्रष्ट थे अतएव वे व्यासजी का ही विरोध कर रहे थे और ऐसे कई कांग्रेसजन थे जो कि असावाजी के नेतृत्व मे इस विचारधारा के पोषक और समर्थक थे। इसमे तनिक भी सदेह नही कि श्री गोकुललाल असावा की स्वय कोई महत्वाकाक्षा नही थी। उन्होने श्री हीरालाल शास्त्री को मुख्य मत्री पद से हटाने और व्यासजी को मुख्य मत्री बनाए जाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निबाही थी। परन्तु श्री व्यासजी द्वारा उनकी दृष्टि मे भ्रष्ट लोगो को मन्त्रिमंडल मे ले लेने के कारण वे उनके पुन चुनाव मे खडे किए जाने के विरोधी थे। श्री नेहरू, श्री मौलाना अब्दुलकलाम आजाद, श्री किदवई इत्यादि केन्द्रीय नेता श्री असावा के प्रति अच्छी धारणा रखते थे और उनकी बात को महत्व देते थे अतएव केन्द्रीय नेताओं मे भी व्यासजी को पुन खड़ा करने के सबंध मे शका उत्पन्न होगई। केवल श्री नेहरू व्यासजी से व्यक्तिगत रूप से अधिक निकट होने के कारण व्यासजी का समर्थन कर रहे थे।

व्यासजी को पुन. खडा करने के सम्बन्ध मे केवल राजस्थान मे ही नही वरन केन्द्रीय नेताओ मे भी मतैक्य नही था। अस्तु आल इडिया कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री ने

फोन द्वारा वर्माजी को सूचित किया कि व्यासजी को किशनगढ से खडा करने के बारे में ६ जुलाई, १९५२ को ६ बजे सायंकाल नेहरूजी के मकान पर पार्लियामेंटरी बोर्ड की बैठक होगी। वर्माजी, व्यासजी, पालीवालजी तथा आदित्येन्द्रजी को सम्मिलित होने के लिए बुलाया है।

वर्मा जी देहली पहुचे ६ जुलाई को दिल्ली मे श्री जवाहरलाल नेहरू ने वर्मा जी तथा आदित्येन्द्र जी को साढे बारह बजे दिन को इस संबंध मे बात करने बुला भेजा जब वर्मा जी श्री जवाहरलाल नेहरू से उनके कार्यालय मे मिले तो वर्मा जी ने उनसे कहा "आपके सुझाव के अनुसार व्यास जी को खड़ा कर वापस नेतृत्व सम्भलाने के लिए प्रस्ताव पास करने, श्री किदवई साहब के जयपुर आने और आपसे चर्चा करने के बाद व्यास जी को खड़ा करने की सूचना लेकर हमने व्यास जी के लिए चिन्ता की। चांदमल ने मुझसे स्वयं इच्छा व्यक्त की कि मै त्यागपत्र दे रहा हूँ। मैने कहा कि वह तो मै श्री व्यास जी और नेहरू जी से बात करके उत्तर दूगा। इसी बीच चाँदमल पर दबाव डालकर त्यागपत्र दिलाया गया। दबाव पेटीशन-फाइल का था। जल्दबाजी की गई बाद मे पालीवाल जी के पक्ष मे और व्यास जी के खडे होने के विरोध मे आवाज उठाई गई। दो तीन आदमी पालीवाल जी के साथी थे किन्तु सारा नेतृत्व वेदपाल त्यागी कर रहे थे। असावा जी की इस आग को लगाने मे दौड़धूप थी। पत्रो में किशनगढ में वातावरण बनाया गया। प्रश्न यह है कि पालीवाल जी के विरुद्ध कोई शिकायत नही है किन्तु इस समय वे पार्टी के द्वारा मुख्य मत्री के रूप मे लाद दिए गए हैं। उनकी कमजोरी से उनके साथी दब नही सके यदि यह कटुता रही तो पालीवाल जी की सरकार टिक न सकेगी। यह धारणा कि व्यास जी को केवल भीतर लाकर (मत्रिमडल मे मुख्य मत्री पद पर) मौजूदा टीम को चालू रखा जावे व्यास जी के पास कोई विभाग न रहे, इस नक्शे को बिठाने मे कोई शक्ति न लगाई जावे किन्तु जांच की जावे कि किशनगढ़ मे वे जीतेंगे या नही यदि न जीतते हो तो उनसे कह दिया जावे कि वे न खडे हो। जांच निष्पक्ष हो।"

सायकाल पार्लियामेंटरी बोर्ड की बैठक हुई वर्मा जी ने ऊपर लिखी बात श्री जवाहरलाल नेहरू से कही थी उसी को पार्लियामेन्टरी बोर्ड ने स्वीकार कर लिया और श्री जगन्नाथ को किशनगढ की स्थिति जानने के लिए नियुक्त किया गया।

१० जुलाई १९५२ को वर्मा जी जयपुर वापस आ गए। इसमे तनिक भी सदेह नही कि यदि वर्मा जी ने व्यास जी का इतना जोरदार समर्थन न किया होता और श्री नेहरू की व्यास जी के लिए कोमल भावना न होती तो उस समय व्यास जी को पुनः चुनाव मे खड़े करने के विरुद्ध निर्णय होता। श्री जगन्नाथ किशनगढ की स्थिति का अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट पार्लियामेंटरी बोर्ड मे भेज दी और व्यास जी को खड़ा करने का निश्चय हो गया।

श्री जवाहरलाल नेहरू तथा कांग्रेस अध्यक्ष का श्री राजबहादुर के द्वारा सदेश आया कि श्री नेहरू और कांग्रेस अध्यक्ष चाहते हैं कि किशनगढ से व्यास जी के चुनाव

को पूर्ण जिम्मेदारी वर्माजी सम्भालें। वर्माजी ने किशनगढ़ चुनाव का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व अपने कंधों पर ले लिया और ने उस कार्य मे प्राणपण से जुट गए।

वर्माजी ने चुनाव का उत्तरदायित्व लेते ही व्यासजी के चुनाव की व्यवस्था का संगठन किया। प्रत्येक तहसील को अपने भरोसे के कार्यकर्ताओं जिनमे सगठन तथा प्रचार की क्षमता थी बांट दिया। इसके लिए उन्होने राजस्थान के प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ताओं में से चयन किया। सरवाड़ तहसील के चुनाव संचालक श्री दयाशकर और उनके सहयोगी श्री मोहनलाल सुखाड़िया नियुक्त किए गए। अराई तहसील के चुनाव संचालक श्री कुम्भाराम आर्य और उनके सहयोगी श्री नाथूराम मिर्धा थे। किशनगढ़ तहसील का चुनाव सचालक उन्होने श्री हीरालाल सिह को बनाया और उनके सहयोगी के रूप श्री रामकरण जोशी को उन्हे दिया। किशनगढ़ शहर तथा मदनगज के चुनाव संचालन का उत्तरदायित्व उन्होने श्री आदित्येन्द्र को दिया। आचार्यजी तथा माथुरजी उनके सहयोगी थे। वर्माजी ने चुनावकाल मे किशनगढ मे ही रहने का निश्चय किया। वे समस्त क्षेत्र का धुआंधार दौरा करते रहे। यह उनके ही अथक परिश्रम का परिणाम था कि श्री जयनारायण व्यास किशनगढ़ के चुनाव में विजयी हुए।

जब श्री जयनारायण व्यास किशनगढ के चुनाव मे विजयी हो गए तो भी व्यासजी का विरोध समाप्त नही हुआ। श्री वेदपाल त्यागी, श्री मुक्तिलाल मोदी, श्री वीरेन्द्रजी, श्रीनारायण चतुर्वेदी व्यासजी के मुख्य मत्री बनाए जाने के विरोधी थे। उधर पालीवालजी ने व्यास मंत्रिमंडल मे रहना अस्वीकार कर दिया। वर्माजी ने सभी को समझाया पालीवालजी को व्यास मत्रिमंडल मे रहने के लिए राजी किया। १९ सितम्बर, १९५२ को वर्माजी देहली गए श्री जवाहरलाल नेहरू से मिले और व्यासजी को मुख्य मन्त्री बनाने की बात तय की। यदि वर्माजी उस समय अपनी शक्ति इस समस्या को सुलझाने में न लगाते तो कांग्रेस में गहरी दरारें पड़ जाती और कांग्रेस की राजस्थान में शक्ति क्षीण हो जाती।

वर्माजी व्यासजी के चुनाव से निश्चिन्त हुए ही थे कि भीलवाड़े में मिल मजदूरो का आंदोलन उग्र हो उठा। वर्माजी तुरन्त भीलवाड़ा गए और मिल मजदूरो के आंदोलन को अपना समर्थन तथा संरक्षण प्रदान किया। पालीवालजी, श्रममंत्री रामकरण जोशी तथा श्री मोहनलाल सुखाड़िया को मजदूरो के दृष्टिकोण से अवगत करवाया। वे लोग मजदूरों के वेतन संबधी प्रश्न को ट्रिब्यूनल को देना चाहते थे परन्तु मिल मालिक इसके लिए तैयार नही हुए। अतएव वर्माजी ने मजदूरो के हड़ताल करने का समर्थन किया। अंत मे वर्माजी के प्रयत्नो के फलस्वरूप मजदूरो को न्याय प्राप्त हो सका और वर्माजी ने उन्हें हड़ताल समाप्त करने की सलाह दी। तब कही भीलवाड़े का उग्र मजदूर आंदोलन शान्त हुआ।

यद्यपि वर्माजी ने पूर्व राजस्थान के मुख्य मंत्री पद को छोड़ने के उपरात किसी पद को स्वीकार नही किया परन्तु राजस्थान के आर्थिक विकास के लिए वे अत्यन्त सक्रिय थे। राजस्थान की कोई भी बड़ी योजना नही है जिसको केन्द्र से स्वीकार कराने मे

वर्माजी ने प्रयत्न नही किया। सच तो यह है कि राजस्थान की बहुतसी प्रमुख योजनाओ का संयोजन वर्माजी के अथक परिश्रम और दौड़धूप का ही परिणाम था।

७ नवंबर १९५२ को वर्माजी दिल्ली केवल चंबल योजना के संबंध में केन्द्रीय गृहमंत्री डाक्टर काटजू से मिलने गए यह वर्माजी के प्रयत्नों का फल था कि डाक्टर काटजू ने चंबल योजना के लिए राजस्थान को कर्ज दिलाने, राणा प्रताप सागर राजस्थान के लिए बनवाने, तथा गांधी सागर से उत्पन्न बिजली का कुछ भाग राजस्थान को मिलने की बात स्वीकार की।

उसके उपरांत वर्माजी ९ नवंबर को रेलवे मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री से हिम्मतनगर रेलवे लाईन बनवाने के लिए मिले। श्री लालबहादुर शास्त्री से उन्होने कहा कि राजस्थान के उस आदिवासी क्षेत्र के पंद्रह लाख भीलो की गरीबी मिटाने और उदयपुर की दशा को सुधारने के लिए हिम्मतनगर रेलवे लाईन बनवाना आवश्यक है। शास्त्रीजी ने कहा आप लिखकर भेजिये मैं अवश्य प्रयत्न करूंगा।

दस नवंबर, १९५२ को वर्माजी श्री किदवई से मिले और राजस्थान मे सिंचाई के साधनों का विकास करने के लिये दो करोड रुपए की सहायता का वचन श्री किदवई ने उन्हे दिया। वर्माजी की यह उत्कट इच्छा थी कि उदयपुर में हवाई अड्डे का निर्माण हो जिससे कि विदेशी भ्रमण-यात्री उदयपुर अधिक आ सके अस्तु उन्होने केन्द्रीय मंत्री से उदयपुर में हवाई अड्डे के निर्माण पर बल दिया और उन्हे राजी किया। वर्माजी केवल इतने से ही संतुष्ट नही हुए वे श्री पंजाबराव देशमुख से मिले और राजस्थान मे मछली उद्योग के विकास के लिए प्रयत्न करने का वचन लिया तथा उद्योग मंत्रालय मे जावर की खानो से निकले हुए खनिज के लिए स्मैल्टर लगाने की मांग की।

आज जो हिम्मतनगर की रेलवे लाईन चंबलघाटी योजना, देवारी, (उदयपुर) का जिंक-स्मैल्टर उदयपुर का हवाई अड्डा तथा कई सिंचाई योजनाए दिखलाई पड़ती है वे वर्माजी के परिश्रम का ही फल है। ऐसे बिरले ही राजनीतिक कार्यकर्ता और नेता हैं जो मंत्रिपद पर न रहकर अपने राज्य तथा कार्यक्षेत्र के विकास के लिए इतने जागरूक और प्रयत्नशील होते हैं। यह वर्माजी के चरित्र की विशेषता थी कि वे पद से दूर रहकर भी राजस्थान के सर्वांगीण विकास के लिए भटकते रहते और दौड़धूप करते थे।

वर्माजी को कांग्रेस में सत्तारूढ़ होने के उपरात जो अवसरवादिता, भ्रष्टाचार और पदलोलुपता घर कर गई थी उससे मार्मिक पीड़ा होती थी अतएव वे सदैव इस बात का प्रयत्न करते थे कि काग्रेस को शुद्ध बनाया जावे और कांग्रेसजनो पर कुछ नैतिक प्रतिबंध लगाए जावे। यही कारण था कि ३१ दिसम्बर १९५२ को वर्किंग कमेटी मे जब विहार मे गलत ढंग से काग्रेस के सदस्य बनाने के प्रश्न पर चर्चा हुई तो वर्माजी ने श्री जवाहरलाल नेहरू के समक्ष यह सुझाव रखा कि काग्रेस मे त्याग की प्रवृत्ति पैदा करने के निमित्त कम से कम कार्य समिति के सदस्यो की सारी आय और सम्पत्ति काग्रेस ले ले बाद मे उनकी आवश्यकतानुसार उनके उपयोग मे आवे। वर्माजी ने दूसरा सुझाव यह रखा कि सामुदायिक योजना मे केवल सरकार के अफसर ही सर्वेसर्वा है जनता के

प्रतिनिधियों को सौंप देना चाहिए। दूसरी बात को श्री जवाहरलाल नेहरू ने स्वीकार कर लिया परन्तु पहले प्रस्ताव के सम्बन्ध मे उन्होने कोई उत्तर नही दिया चुप रहे। (डायरी)

यद्यपि वर्मा जी अब न तो मंत्रिमण्डल मे ही थे और न प्रान्तीय कांग्रेस अध्यक्ष ही थे परन्तु केन्द्रीय नेताओ तथा राजस्थान के कांग्रेसजनो का उन्हे अटूट विश्वास प्राप्त था। एतएव प्रत्येक महत्वपूर्ण राजनीतिक चर्चा मे उन पर निश्चय छोड़ दिया जाता था। यही कारण था कि जागीर समाप्ति के सम्बंध मे पंत जी द्वारा निर्णय दिये जाने के उपरान्त जागीरदारो से अन्तिम बात करने का भार वर्मा जी को सौप दिया गया।

एक फरवरी १९५३ को वर्मा ने जागीरदारो के प्रतिनिधियो से जागीर समाप्ति के संबध मे चर्चा की निश्चय हुआ कि जागीरदारो को जागीर की आय की दस गुना क्षतिपूर्ति की रकम दी जावे परन्तु छोटे जागीरदारो को स्वय खेती करने के लिए जमीन देकर उन्हे आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्वी वनने मे सहायता दी जावे। जागीरदार अपनी पार्टी को समाप्त कर कांग्रेस मे सम्मिलित हो जावे। सत्ता मे जागीरदारों के प्रतिनिधियो को लेने पर विचार किया जावे।

वर्मा जी ने शासन के संबध में व्यास जी से भी बात की उनसे कहा कि मंत्री लोग जनता को दी जाने वाली सुविधाओ मे केवल अपने क्षेत्र का ही ध्यान रखते है यह नितान्त अनुचित है वे प्रात का सर्वागीण विकास नही देखते अतएव उनको परामर्श देने के लिए उनके साथ कमेटियां वना दी जावे। सचिवालय की कार्यवाही के नियम बदले और ढिलाई करनेवालो को दण्ड दिया जावे। मंत्रिमडल छोटा किया जावे।

यद्यपि व्यास मत्रिमण्डल बन गया था। परन्तु मत्रिमण्डल मे परस्परिक विश्वास और एकता नही थी। जब ४ फरवरी १९५३ को विधान सभा कांग्रेस पार्टी का चुनाव हुआ तो यह स्पष्ट हो गया कि मत्रिमण्डल मे दरार है। श्री कुम्भाराम आर्य तथा मथुरादासदास माथुर ने श्री पालीवाल को कार्य समिति मे लेने और डिप्टी लीडर चुने जाने का विरोध किया। कांग्रेस के महामत्री श्रीमननारायण ने फौरन आदेश दिया कि डिप्टी लीडर न चुनो। वर्मा जी ने श्री माथुर और कुम्भाराम जी का विरोध किया उन्होने कहा कि जब तक पालीवाल जी मत्रिमण्डल मे रहेगे तब तक वे कार्यसमिति मे भी रहेगे। वर्मा जी ने व्यास जी से कहा कि यदि पालीवाल जी से आपकी न बनती हो तो उनसे बात करें आप न करना चाहे तो हम करे और श्री जवाहरलाल नेहरू से मार्गदर्शन लें। उससे पूर्व किसी की प्रतिष्ठा कम न होने दे। (डायरी ६ फरवरी १९५३)

वर्मा जी ने पालीवाल जी को भी समझाया उनसे कहा कि आप रामकरण जोशी को समझें। वह योद्धा कार्यकर्त्ता है, हरलालसिंह स्पष्टवादी है उसे अपना हितैषी समझे। कुम्भाराम जी के गगानगर क्षेत्र मे पुलिस द्वारा कांग्रेस कार्यकर्त्ताओ को अपमानित तथा लाछित किया जा रहा है अस्तु श्री कुभाराम जी उस क्षेत्र का दौरा कर उनकी परेशानी दूर करें सभी कार्यकर्त्ताओ के साथ समानता का व्यवहार करे आप कार्यकर्त्ताओ से समानता

का व्यवार नहीं करते यह आपमें भारी कमी है। मालुम पडता है कभी न कभी श्री हीरालाल शास्त्री के साथ आपने खाना खाया है उसका प्रतिविम्ब (असर) आपमे रह गया है। उसको अपने से निकाले। केवल अफसरो की रिपोर्ट पर ही ध्यान न दे। वास्तविक स्थिति को समझने का प्रयत्न करे स्टेट मिनिस्ट्री के रुख पर आप पारस्परिक संबंधों का फैसला न करे। आप ऊपर से डिप्टी चीफ मिनिस्टर बना दिए गए है यदि नीचे की धरती मजबूत नही होगी तो आप खसक जावेंगे (डायरी ८ फरवरी १९५३)

वर्मा जी चाहते थे कि व्यासजी और पालीवालजी के सबधो मे सुधार हो जिससे कि शासन सुचारु रूप से चल सके इस कारण वे दोनो को समझाने का प्रयत्न करते थे और उन पर दबाव भी डालते थे। वर्मा जी चाहते थे कि व्यास जी शीघ्र मंत्रिमंडल का निर्माण कर ले परन्तु व्यास जी उसे टालना चाहते थे। व्यास जी की इच्छा थी कि जब जागीरदारो को कांग्रेस मे लेने की बात अन्तिम रूप से तय हो जावे और पार्टी मे जो मतभेद हैं वे निपट जावे तभी वे मन्त्रिमण्डल मे परिवर्तन करे। वर्माजी जो पालीवाल जी मे आपसी समझौता कराना चाहते थे उस सदर्भ मे कुछ ऐसी बाते हुई कि व्यास जी को इस बात का सदेह और भ्रम उत्पन्न हो गया कि वर्मा जी उनको गिराना चाहते हैं। श्री राजबहादुर ने वर्मा जी से यह कहा और व्यास जी से बात करने को कहा।

वर्माजी ने व्यास जी से सीधे बात की उनसे कहा "यद्यपि मैं जानता हूँ कि हम दूर हो गए है हमारी सलाह लेते नही हो फिर भी प्रान्त के हित में मुझे गरज है। कि आप चाहे जो ख्याल करें मै अपने सुझाव अवश्य दूंगा।"

कांग्रेस के महामत्री श्री बलवन्तराय मेहता ने व्यास जी को उपालम्भ दिया कि आपने श्री नेहरू को वचन दिया था कि श्री माथुर को मत्री नही बनावेंगे। नेहरू जी ने इनकार किया फिर भी आपने श्री मथुरादास माथुर को लेना तय किया। पडित जी की इच्छा के विरुद्ध चले आप जाने। वर्मा जी ने व्यास जी को समझाया कि हम पडितजी के नेतृत्व मे विश्वास करके चलेगे व्यास जी को यह बात रुचिकर नही लगी उन्होने त्यागपत्र देने को कहा। वर्मा जी ने कहा व्यक्ति रहे या जाये प्रान्त रहेगा किन्तु जवाहरलाल के नेतृत्व को हम नही खो सकते। बहुत कुछ समझाने पर व्यास जी छोटा मंत्रिमण्डल बनाने पर राजी हुए। ३ बजे वर्मा जी नेहरू जी से व्यास जी के साथ मिले नेहरू जी ने वर्मा जी के सुझाव को स्वीकार कर लिया और श्री कुम्भाराम को लेने की मंजूरी दे दी। परन्तु व्यास जी तथा वर्माजी दूर होते गए। मन्त्रिमडल मे दरार पड़ गई थी वह दूर नही हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि विधान सभा मे एक दिन यह स्थिति आ गई कि खेजडला ठाकुर के कांग्रेस को वोट दे देने से सरकार गिरने से बच गई अन्यथा सरकार गिर जाती यही नही पन्द्रह कांग्रेस जनो ने साम्यवादी दल के श्री हरेकृष्ण व्यास को वोट दिए। विधान सभा में डिवीजन के समय कतिपय कांग्रेस सदस्यो ने विरोध पक्ष का चुपचाप समर्थन किया। इस परिस्थिति को देखकर व्यास जी ने जागीरदारों को अपने साथ लाने का प्रयत्न किया। इससे कांग्रेस में एक पक्ष ऐसा था

कि जो क्षुब्ध था। कांग्रेस कार्यकर्ता, राजस्थान कांग्रेस के अध्यक्ष, तथा कुछ मंत्री यह अनुभव करने लगे कि हमलोग अब जागीरदारो की दया पर निर्भर हो गए हैं। उन्होंने वर्माजी से बात की वर्माजी का मत था कि इस परिस्थिति मे तभी परिवर्तन हो सकता है कि जब व्यासजी पालीवालजी को अपनावे। वर्माजी ने व्यासजी को पालीवालजी को अपने समीप लाने के लिए कहा। पालीवालजी ने भी वर्माजी से इस सम्बन्ध में बात की परन्तु स्थिति मे कोई परिवर्तन नही हुआ।

व्यासजी और उनके मंत्रियो में इस प्रश्न को लेकर गंभीर रूप से तनाव उत्पन्न हो गया था। यह स्थिति राजस्थान के लिए अत्यन्त अहितकर थी और कांग्रेस संगठन पर इसका भयावह प्रभाव पड रहा था। अस्तु १४ सितम्बर, १९५३ को वर्माजी मास्टर आदित्येन्द्र तथा श्री राजबहादुरजी को लेकर व्यासजी से मिले। उनसे कहा कि आपके तथा मन्त्रियो के बीच जो सबध टूट रहे है उन्हें सुधारिये। वर्माजी ने व्यासजी से कहा कि आप मंत्रियो से बिना पूछे नियुक्तिया और तबादले कर देते है यह जनतंत्री तरीका नही तानाशाही है। व्यासजी वर्माजी में दूरी बढती जा रही थी। कुछ कारणों से व्यासजी वर्माजी से नाराज थे। अतएव वर्माजी के कहने का व्यासजी पर कोई प्रभाव नही पड़ा। खिचाव बढता गया।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया व्यास मंत्रिमंडल मे थे उनके और व्यासजी के बीच भी गहरा तनाव था। सुखाडियाजी वर्माजी के बहुत निकट और विश्वासपात्र थे। वर्माजी के कारण ही वे मत्रिमंडल मे लिए गए थे। २८ दिसम्बर १९५३ को रात्रि के समय सुखाडियाजी ने वर्माजी से व्यासजी के रुख के बारे मे बात की और अपना त्यागपत्र देने की इच्छा जाहिर की। वर्माजी ने उन्हे रोक दिया कहा कि तुम्हारे त्यागपत्र देने से व्यासजी के सम्बन्ध मे और अधिक भ्रम फैलेगा।

वर्माजी व्यासजी के व्यवहार से क्षुब्ध थे फिर भी उन्होने एक बार पुनः व्यासजी को समझाया कि चीफ सेक्रेट्री राव आपके अलावा अन्य किसी मत्री की परवाह नही करता उनका अपमान करता है, उनसे बिना पूछे नियुक्तिया और तबादले करता है अस्तु उनको हटा देना चाहिए। (डायरी १० जनवरी, १९५४)

वर्माजी के पास मंत्री लोग व्यासजी के व्यवहार के संबध मे आकर शिकायत करते थे। वर्माजी और व्यासजी में दूरी बढती जा रही थी फिर भी वर्माजी के मन में व्यासजी के लिए कोमल भाव बहुत दृढ थे। २५ जनवरी, १९५४ को डायरी मे उन्होने लिखा था।

"आज व्यासजी से मिलने का तय था। स्वास्थ्य खराब होने से नही गया। उधर श्री चतुर्वेदी ने अध्यक्ष के सामने जिक्र किया कि व्यासजी से एकांत का समय चाहते हुए भी उन्होने समय का अभाव बतलाया। इससे मस्तिष्क में कुछ गड़बड़ रही। परन्तु कुछ देर बाद मानस को शात कर लिया। सोचा कि यदि व्यासजी के विषय में जरा भी मानस बिगड़ा तो प्रांत मे गडबड़ होगी। फिर यह भी ख्याल आया कि व्यासजी का आज मानस बदल गया हो किन्तु इस पुराने सेवक के विरुद्ध जरासी भी गलती की तो

फिर नई पीढी टिक न सकेगी। इसलिए व्यासजी के पक्ष मे मानस सुदृढ बनाना पडा।

वर्मा जी कांग्रेस मे राजो महाराजो, जागीरदारो, तथा उद्योगपतियों को लेने के विरोधी थे। उनका कहना था कि उनके कांग्रेस में आने से कांग्रेस की प्रगतिशील नीतियो की गति में बाधा पड़ेगी। इसी समय एक घटना घटी जिससे कि कांग्रेस के उच्च नेतृत्व और वर्मा जी मे तीव्र मतभेद उठ खडा हुआ। बात यह थी कि प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामनाथ पोद्दार को श्री जवाहरलाल नेहरू राज्य परिषद (कौंसिल आफ स्टेट) में भेजना चाहते थे। कारण यह था कि पोद्दार कांग्रेस को आर्थिक सहायता देते थे अस्तु मौलाना आजाद तथा कांग्रेस के महामत्री श्री बलवन्त भाई भी श्री रामनाथ पोद्दार का समर्थन कर रहे थे। परन्तु वर्मा जी के प्रभाव के फलस्वरूप राजस्थान प्रदेश कांग्रेस ने कांग्रेस अध्यक्ष मास्टर आदित्येन्द्र के नाम की सिफारिश कर दी। वर्मा जी ने कांग्रेस के पत्रों के द्वारा पडित जी को कहला दिया कि वे तथा अन्य सभी कांग्रेसजन रामनाथ पोद्दार को भेजने के पक्ष मे नही है।

पडित जवाहरलाल नेहरू ने वर्मा जी, व्यास जी और मास्टर आदित्येन्द्र को २३ फरवरी १९५४ को बुला भेजा। श्री रामनाथ पोद्दार तथा कमलनयन बजाज भी वहां उपस्थित थे। पडितजी ने वर्मा जी से कहा कि कल तुम्हारा उत्तर अच्छा नही था। वर्मा जी ने उत्तर दिया कि मैने जो वस्तुस्थिति थी रख दी। आप पूरे हालात जान लीजिए। पडित जी बोले "मै पी. सी. सी. के अध्यक्ष को यहां लाने के पक्ष मे नही हूँ? रामनाथ पोद्दार ठीक व्यक्ति है काम करते है फिर भी फैसला करने से पूर्व मै तुम्हारे से बात करू गा और आदित्येन्द्र जी का मानस जानूगा।

२४ फरवरी को वर्मा जी पडित जी से मिले और श्री रामनाथ पोद्दार को राज्य परिषद मे भेजने का कड़ा विरोध किया। गगानगर फेक्टरी मे किसानो और मजदूरो के साथ उनके द्वारा किये गए दुर्व्यवहार की भी चर्चा की परन्तु पडित जवाहरलाल नेहरू पर कोई प्रभाव नही हुआ। उन्होने फिर भी श्री रामनाथ पोद्दार को ही भेजने की अपनी दृढ़ संमति प्रकट की।

२५ फरवरी को वर्मा जी को पार्लियामेटरी बोर्ड की बैठक जो मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के मकान पर हुई थी बुलाया गया। वर्मा जी ने मौलाना आजाद के पूछने पर पार्लियामेटरी बोर्ड के सामने भी श्री पोद्दार का कड़ा विरोध किया और कहा कि अन्य कई प्रान्तो के कांग्रेस अध्यक्षो को राज्यसभा मे लिया गया तब राजस्थान के साथ ही भेदभाव क्यो बरता जा रहा है? यदि समस्त देश मे यह नीति लागू की जावेगी तो हम भी आदित्येन्द्र जी को नही भेजेगे। इस पर पडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि मै किसी नए को मजूरी नही दूगा। श्री बलवन्त भाई ने श्री पोद्दार की पिछली सेवा तथा आर्थिक सहायता का ब्यौरा बतलाया और कहा कि उन्होने बबई-कांग्रेस में काम किया था तो वर्मा जी ने कहा कि तब उन्हे बम्बई मे सीट देना चाहिए। वर्मा जी के कड़े विरोध के उपरांत भी मौलाना आजाद, पडित जवाहरलाल नेहरू तथा बलवत भाई ने श्री रामनाथ पोद्दार को ही लाने पर बल दिया क्योकि प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने

श्री आदित्येन्द्रजी का नाम सर्वसम्मति से भेजा था अस्तु आल इडिया कांग्रेस कमेटी के मत्री ने प्रातीय कांग्रेस के अध्यक्ष को सूचना भेजी कि प्रातीय काग्रेस कमेटी पुन. इस प्रश्न पर विचार करे साथ ही यह भी आदेश था कि (१) अध्यक्ष को न भेजो (२) यथा सभव श्री रामनाथ पोद्दार को भेजने की ही दृष्टि रखी जावे। २७ फरवरी, १९५४ को प्रातीय काग्रेस कमेटी की बैठक जयपुर मे हुई वर्माजी के सुझाव पर प्रातीय काग्रेस कमेटी ने पुन. अपने पूर्व निश्चय को दोहराया। और वर्माजी, व्यासजी और शोभारामजी को अधिकार दिया कि पडित नेहरू को प्रातीय काग्रेस कमेटी की इच्छा से अवगत करादें।

वर्माजी के मन मे इस प्रश्न को लेकर अत्यन्त क्षोभ और रोष था। धनकुबेर की थैली सेवा और देशभक्त कार्यकर्त्ता की प्रतिस्पर्धा मे विजयी हो यह वर्माजी के लिये सह्य नही था। वे दिल्ली गए और मौलाना आजाद से प्रात काल मिले। मौलाना से कहा आपके रहते धनकुबेर की थैली सच्चे कार्यकर्ता के मुकाबले में विजयी हो यह शोभा की बात नही है इससे काग्रेस की प्रतिष्ठा काग्रेस कार्यकर्ताओ मे बढेगी नही। पहले तो मौलाना ने वर्माजी को यह कहकर शात करना चाहा कि "भाई आदिन्येन्द्र को मत्री क्यो नही बना लेते" वर्माजी बोले यह श्री आदित्येन्द्र को पद देने का प्रश्न नही है बरन सिद्धांत का प्रश्न है क्या काग्रेस में सेवा की उपेक्षा की जावेगी। मौलाना आजाद ने कहा अच्छा मैं जवाहलालजी से बात करूगा। जब वर्माजी वापस लौट आए तो कुछ देर बाद मौलाना का फोन आया कि जवाहरलाल ने तुम्हे बुलाया है उनसे मिललें। मौलाना ने श्री नेहरू को जब बतलाया कि वर्मा हम लोगो के इस फैसले से बहुत क्षुब्ध है तो नेहरूजी ने उनसे कहा था कि आप उन्हे मेरे पास भेज दीजिए। वर्माजी समझ गए कि अब अन्तिम मोर्चा है दृढ रहने की जरूरत है वे व्यासजी के पास गए और उनको साथ चलने को कहा। व्यासजी ने कहा कि नेहरूजी अब नाराज होगे अस्तु मै कुछ कहूंगा नही वर्माजी ने उन्हे साथ चलने भर के लिए राजी कर लिया। जब वर्माजी श्री नेहरूजी के पास पहुचे तो देखा श्री रामनाथ पोद्दार भी वहा उपस्थित है। वर्माजी के पहुँचते ही श्री नेहरूजी ने क्रोधित स्वर मे कहा "क्या वाहियात बात है रामनाथजी ठीक आदमी हैं काम करते है, काग्रेस के समर्थक है, फिर तुम इनका विरोध क्यो करते हो इत्यादि। वर्माजी चुपचाप नेहरूजी की बात को सुनते रहै। जब नेहरू ने बात समाप्त की तो वर्माजी ने आवेश से कहा पूछिये रामनाथजी से गगानगर के चीनी के कारखाने में इन्होने किसानो और मजदूरो के साथ कैसा दुरव्यवहार किया, राजस्थान काग्रेस कमेटी मे इन्होने कोई रुचि प्रकट नही की। नवलगढ के चुनाव मे इनका आदमी काग्रेस के विरोध में खड़ा हुआ। क्या इन्होने कालाबजारी नही की इत्यादि। नेहरूजी थोडी देर के लिए हतप्रभ हो गए। श्री रामनाथ पोद्दार का हाथ पकड कर अपने विश्राम कक्ष (रिटायरिंग रूम) मे ले गए और वहा से आने पर हसते हुए वर्माजी से बोले, वर्मा तुम रहे गवार ही। आखिर उनके सामने यह सब कहने की बाते थी ? वर्माजी ने भी हसकर उत्तर दिया कि मुझे शिष्टाचार आता तो मै भी मत्री नही होता फिर आपने उनके सामने ही यह चर्चा छेड़ी थी। स्पष्ट था कि वर्माजी की विजय हो गई थी। नेहरूजी बोले "अच्छा अच्छा

आप लोगो का गला दबा कर तो कोई फैसला नही किया जा सकता आदित्येन्द्र काउन्सिल ऑफ स्टेट मे आए।"

इधर एक घटना ऐसी होगई कि जिससे व्यासजी और वर्माजी मे खिचाव बढ़ गया। उदयपुर में सरकार से स्वीकृति लेकर बिजली कपनी ने रेट बढ़ा दी उसके विरुद्ध विरोधी दलो ने आन्दोलन कर दिया। जनता आन्दोलन के साथ थी आन्दोलन-कारियो ने कपनी के मालिक भडारी की अर्थी का जलूस निकाला उसी दिन सायकाल को भंडारी की मृत्यु होगई। क्योकि आन्दोलन कांग्रेस विरोधी तत्वो के हाथ मे था अतएव शहर कांग्रेस के कार्यकर्ताओ ने वर्माजी से पूछा कि वे क्या करे? वर्माजी ने कहा कि आन्दोलन को कांग्रेस अपने हाथ मेंले ले। अन्यथा कांग्रेस की लोकप्रियता और प्रतिष्ठा समाप्त हो जावेगी। विरोधी दलो ने अगले दिन आम हड़ताल की घोषणा की थी कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने उस हड़ताल को असफल कर जनता की विचारधारा को बदल दिया और बिजली की दर को बढाने का आन्दोलन अपने हाथ मे ले लिया। व्यासजी ने इसको अनुशासनहीनता और सरकारविरोधी आन्दोलन की सज्ञा दी और वर्मांजी के विरुद्ध कांग्रेसाध्यक्ष को एक पत्र लिखकर वर्माजी द्वारा अनुशासनहीनता के लिए क्षमा प्रार्थना करने को कहा। अवश्य ही कांग्रेस द्वारा आन्दोलन किया जाना दिखता सरकार विरोधी कार्य था परन्तु वर्माजी ने यह सोच कर कि कांग्रेस की लोकप्रियता को आघात पहुंचेगा साथ ही वे यह भी मानते थे कि बिजली के रेट बढाना अन्यायपूर्ण है और जनसाधारण का बिजली कपनी द्वारा शोषण है अस्तु उन्होने आन्दोलन करने की कांग्रेस कार्यकर्ताओ को आज्ञा दे दी थी।

उधर श्री जयनारायण व्यास यह प्रयत्न कर रहे थे कि कुछ विधान सभा के जागीरदार सदस्यो को कांग्रेस दल मे ले लिया जावे। जिससे कि विधानसभा में कांग्रेस बड़े बहुमत मे आ जावे। वर्माजी आरम्भ से ही जागीरदारो को कांग्रेस मे लेने के विरुद्ध मे। व्यासजी ने श्री जवाहरलाल नेहरू से बात कर उनकी स्वीकृति ले ली थी जब यह प्रश्न प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष आया तो वर्माजी के सुझाव पर जागीरदारो को इस शर्त पर लेने की अनुमति दी गई कि वे जागीरो की समाप्ति के सम्बन्ध ये पत निर्णय का समर्थन करेगे और अपनी जागीरे सरकार को सौप देगे चाहे बहुमत विरोधी हो और कानून उनके पक्ष मे हो।

१४ एप्रिल १९५४ को राजस्थान कांग्रेस की कार्य समिति की बैठक हुई। व्यासजी ने रिपोर्ट दी कि २३ जागीरदार जागीरे समर्पण के लिए लिखकर देने के लिए तैयार है। और जो वे लिखने को तैयार है उसको सुनाया। उसमे कुछ सशोधन करके कार्य समिति ने उसको स्वीकार कर लिया। इसके उपरान्त व्यासजी चले गए। उनके चले जाने के उपरान्त मत्रियो के साथ व्यासजी के सम्बन्ध मैत्री-पूर्ण न होना, नियुक्तियो और स्थानान्तरो के लिए कमेटी न बनाकर मनमानी करना, सगठन की परवाह न करना, इत्यादि समस्याओं की तीन घटे तक चर्चा होती रही। जोधपुर कांग्रेस की बैठक मे जिसमे व्यास जी उपस्थित थे जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर,

को मिलाकर पृथक प्रान्त बनाने की चर्चा मे व्यासजी के सम्मिलित होने, उसका विरोध न कर और १७ एप्रिल को नक्शा तैयार कराने की सलाह देने के संबंध में बात निकली। वर्माजी ने व्यासजी को टेलीफोन किया परन्तु वे सोगए थे। कार्य-समिति ने प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष को अधिकार दिया कि वे व्यासजी से जल्दी कोई तारीख तय करे जहा इस समस्या के संबध मे आपसी बात करके उसका हल निकाला जावे। मास्टर आदित्येन्द्र ने जब व्यासजी से बात की तो उन्होने साथ बैठ कर चर्चा करने से इनकार कर दिया।

३ मई ५४ को प्रान्तीय काग्रेस की कार्य समिति मे पुनः यह प्रश्न उठा। वर्माजी ने व्यासजी से कहा कि वे मन्त्रियो के साथ अपने व्यवहार में सुधार करे। स्थानान्तरण तथा नियुक्तियों के सबंध मे मन्त्रियों से पूछकर प्रजातान्त्रिक तरीके से करें। पूर्व राजधानियो मे उद्योग-घधो का विकास करें। प्रशासन के नियम बनावे नियुक्तियां मन्त्रियो पर छोड दे। स्वाभिमानी व्यासजी को वर्माजी की यह बात रुचिकर नही लगी उन्होंने वर्माजी से कहा कि शासन में आप हस्तक्षेप न करे। इस पर वर्माजी ने उनसे कहा कि दो वर्ष तक शास्त्री जी से इसीलिए लड़ाई हुई कि वे संगठन की सलाह नही मानते थे। आप भी उसी मार्ग पर जा रहे है हम विरोध करेगे। इस विवाद से व्यासजी और वर्माजी की दूरी और बढ गई। व्यासजी की यह दृढ मान्यता थी कि कांग्रेस संगठन को केवल सैद्धान्तिक नीति निर्धारति करने का अधिकार है। शासन को चलाने का एक मात्र अधिकार मुख्य मत्री को है। वर्माजी इसके विपरीत संगठन को सर्वोपरि मानते थे। यही दोनों का विरोध था।

जहां तक वर्माजी और व्यासजी के विरोधी दृष्टिकोण का प्रश्न है यह अन्तर-विरोध केन्द्र में भी था। आचार्य कृपलानी तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन से श्री जवाहर-लाल का इसी प्रश्न पर गहरा मतभेद हुआ और दोनो कांग्रेस अध्यक्षो को अपने पदों से त्यागपत्र देना पड़ा। क्योकि जवाहरलालजी का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली और ऊंचा था। उसके उपरान्त कुछ समय तो पडित जवाहरलाल स्वय काग्रेस अध्यक्ष रहे और उनके बाद जो भी काग्रेस अध्यक्ष बना वह प्रधान मत्री का आज्ञाकारी अनुचर मात्र से अधिक कुछ भी नही था। आज तो स्थिति यह है कि प्रधान मत्री ही सरकार और काग्रेस सगठन है। सगठन उसकी नीतियो के लिए लोकमत तैयार करने का औजार मात्र है कोई उसका विरोध करने का साहस नही कर सकता। आज तो कांग्रेस अध्यक्ष प्रधान मत्री की प्रतिच्छाया मात्र है। उसका कोई पृथक अस्तित्व ही नही है। श्री व्यासजी भी श्री नेहरू के अनुसार ही सोचते थे कि शासन को चलाने का एकमात्र अधिकार मुख्य मत्री को है। सगठन को शासन कार्य मे हस्तक्षेप न करना चाहिए। लेखक यहाँ इस विवेचना में पडना नही चाहता कि कौनसा दृष्टिकोण सही है परन्तु यह अवश्य स्वीकार करना पडेगा कि यह स्पष्ट दो विरोधी दृष्टिकोण थे। और व्यासजी तथा वर्माजी सच्चाई और ईमानदारी से अपने अपने दृष्टिकोण को सही मानते थे। व्यासजी भावना प्रधान और अत्यन्त स्वाभिमानी व्यक्ति थे उनके लिए यह संभव नही था कि जो बात उन्हे

उचित न जान पड़ती हो वे उसे दबाव मे आकर स्वीकार कर ले। इधर वर्मा जी संगठन सर्वोपरि है, मुख्यमत्री को सगठन के आदेशानुसार चलना चाहिए इस सिद्धान्त को मानते थे यही कारण था दोनो मे दूरी वढती गई।

व्यास जी जो विधान सभा के कतिपय जागीरदार सदस्यो को कांग्रेस मे लेना चाहते थे उनके सहयोगी मंत्री जिनका व्यास जी से मतभेद था उसके विरुद्ध थे। श्री मोहनलाल सुखाडिया उनमे प्रमुख थे उनका सोचना यह था कि व्यास जी आज हमारी परवाह नही करते यदि यह जागीरदार सदस्य काग्रेस मे आ गए तव तो व्यास जी उनके वल पर हमारी और अधिक उपेक्षा करेगे यही कारण था कि वर्मा जी के जोर देने पर जब इन जागीरदारो ने काग्रेस महामत्री को यह लिखकर दे दिया कि पार्टी मे सम्मिलित होने के उपरान्त जागीर समाप्ति विल पर सशोधन नही लावेगे, अपने वोट का उपयोग पार्टी की दलवन्दी और जागीर समाप्ति पर संशोधन लाकर नही करेगे तव उनको कांग्रेस का सदस्य वनाया गया।

उस समय तक कांग्रेस मे एक ऐसा समूह तैयार हो गया था कि जो व्यास जी को हटाकर मोहनलाल सुखाडिया को मुख्य मत्री बनाना चाहता था। परन्तु सुखाडिया को नेता वनाने के इच्छुक व्यक्ति यह जानते थे कि जब तक वर्मा जी को उसके लिए राजी नही कर लिया जाता तव तक व्यास जी को हटाना सभव नही होगा। अस्तु २२ जुलाई १९५४ को रात्रि के ग्यारह वजे सर्व श्री हरलालसिह, कुम्भाराम, कपिलदेव, दामोदरलाल व्यास, मथुरादास माथुर इत्यादि सुखाडिया जी समर्थक लोग वर्मा जी के पास आए और उनसे व्यास को हटाकर सुखाड़ियाजी को नेता बनाने की वात की। वर्मा जी ने कहा "सुखाड़िया जी को आप अपना नेता वनाने की वात सोचेगे इसमे मैं खतरा मानता हूँ। श्री व्यासजी स्वेच्छा से जाते तो वात दूसरी थी किन्तु कटुता से जावेगे तो सुखाड़िया जी के सत्ता सभालने का अर्थ होगा कि इसमे मेरा हाथ था मै साहस के साथ वोल नही सकूगा और जब आप लोगो मे से किसी की स्वार्थ सिद्धि नही हुई तो आप सुखाड़िया जी को धक्का देने में देर नही करेगे। अस्तु मेरी सलाह है कि सुखाड़िया जी के लिए अभी उपयुक्त समय नही है और अभी तक मै व्यास जी के लिए आशा रखता हूँ कि यदि हम उनका यह सदेह दूर करदे कि हम उन्हे उखाड़ना नही चाहते तो उनका दिल साफ हो जायेगा।" (डायरी २२ जुलाई ५४)

वर्मा जी के ऊपर लिखे विचारो से स्पष्ट है कि उस समय तक वर्मा जी के मन में व्यास जी को मुख्य मत्री पद से हटाने का विचार दृढ नही हुआ था। केन्द्रीय नेता भी राजस्थान मे इस दलीय सघर्ष से चिंतित थे। श्री रफी अहमद किदवई ने वर्मा जी से कहा कि व्यास जी के साथियो का कहना है उनके साथ ३० काग्रेसी, २४ जागीरदार तथा २१ हरिजन एम एल. ए. है वहुमत व्यास जी के साथ है। वर्मा जी ने श्री किदवई से कहा कि व्यास जी के काम से पार्टी मे असतोष है घर में पूछा जावे तो वहुमत उनसे नाराज मिलेगा। व्यास जी को वहुमत और अल्पमत के चक्कर मे न पड़कर संगठन और सत्ता मे पुराने साथी है उनको एक साथ रखना चाहिए,

और उनकी सलाह लेनी चाहिए। जिस दिन यह प्रश्न उठ खड़ा होगा कि वहुमत किधर है वह दिन बुरा होगा। हम उसे टालना चाहते हैं और कुछ सुझाव देना चाहते हैं जिनको मानने से १९५६ में कांग्रेस जीत जाय व्यास जी इस रास्ते को पसद करेंगे तो प्रान्त का भला होगा (डायरी २७ जुलाई ५४)

श्री किदवई ने वर्माजी से कहा कि वे नेहरूजी से इस सम्बन्ध मे वात करेंगे। उधर व्यासजी ने श्री नेहरू से वर्माजी की शिकायत की। अस्तु नेहरू जी ने वर्माजी को एक गुप्त पत्र लिखा। उसमे उनके ऊपर उदयपुर बिजली कंपनी के विरुद्ध कांग्रेस को सत्याग्रह करने तथा किसानो को सरकार से विना पूछे वृक्ष काटने की सलाह देने, मुख्यमन्त्री को अपनी इच्छानुसार मत्री रखने मे रुकावट डालने, तथा मुख्यमत्री के विरुद्ध कुछ मन्त्रियो के असतोष की चर्चा थी। वर्माजी को तथा पी. सी. सी. के अध्यक्ष को दिल्ली बुलाया था।

जब यह वाते चल ही रही थी कि व्यासजी के मकान पर २८ जुलाई, १९५४ को रात्रि को मास्टर आदित्येन्द्र तथा मत्रिगण इस प्रश्न पर वातचीत करने के लिए एकत्रित हुए। उसी समय श्री राजबहादुर का ट्रककाल दिल्ली से व्यासजी के पास इस आशय का आया कि रफी अहमद किदवई का कहना है कि वहुमत व्यासजी के साथ नही है। व्यासजी को यह वात चुभ गई उन्होने सवो से कहा कि अब मै विश्वास का प्रस्ताव लाऊगा तभी आगे काम की सोचूगा। पडितजी तथा भोलानाथजी ने विश्वास के प्रस्ताव को लाना अनावश्यक बतलाया परन्तु स्वाभिमानी तथा भावुक व्यासजी को यह वात छू गई। उन्होने दूसरे दिन विधान सभा मे महादेव जी को बुलाकर कहा कि मै अब विश्वास का प्रस्ताव लाऊगा यह सव माणिक्यलालजी वर्मा करा रहे हैं। (डायरी २८, २९ जुलाई, १९५४)

१९ अगस्त, ५४ को व्यासजी, वर्माजी, आदित्येन्द्रजी, पालीवालजी तथा मोहनलाल सुखाड़ियाजी साढ़े तीन वजे सायकाल श्री नेहरू से मिले। नेहरूजी ने व्यासजी से कहा कि मेरी स्पष्ट सम्मति है कि आप पार्टी से विश्वास प्रकट करने के लिए न कहिए परन्तु स्वाभिमानी व्यासजी ने नेहरूजी से स्पष्ट कहा कि मै कठपुतली बनकर शासन नही चला सकता। व्यासजी का कहना था कि मै शासन अपने ढग से ही चलाऊगा। नेहरूजी ने कोई उत्तर नही दिया।

व्यासजी के सतत आग्रह करने पर श्री नेहरू ने अपनी इच्छा के विरुद्ध (उनका निश्चित मत था कि व्यासजी को विश्वास के प्रस्ताव को नही लाना चाहिए) व्यासजी को अपनी इच्छानुसार मन्त्रिमडल वनाने की अनुमति दे दी साथ ही उनको पार्टी का विश्वास प्राप्त करने के लिए भी कहा। वलवत भाई ने पार्लियामेंटरी बोर्ड को इस आशय की सूचना भी देदी।

व्यासजी यदि चाहते तो पहले अपने मन्त्रिमडल का नवगठन कर सकते थे। अपना विरोध करने वाले मन्त्रियो को मन्त्रिमडल से हटाकर अपने अनुकूल व्यक्तियो को मन्त्रिमडल मे ले सकते थे। यदि वे चाहते तो मन्त्रिमंडल का विस्तार भी कर सकते थे,

और उसके उपरात पार्टी के सामने अपने मे विश्वास का प्रस्ताव रख सकते थे। परन्तु व्यासजी उन थोड़े से तपे हुए राष्ट्रसेवको और देशभक्तो में से थे जिन्होंने अपने जीवन को देश की सेवा मे खपा दिया था जीवन भर भयंकर दमन का शिकार होते हुए भी देशी राज्यो की निरीह प्रजा के अधिकारो के लिए वे जूझते रहे थे। वे एक सच्चे निष्कपट सिद्धातवादी व्यक्ति थे। आजके राजनीतिक नेताओं के समान पदलोलुपता और सत्ता से चिपटे रहने की चाह उनमे नही थी। अस्तु व्यासजी ने पहले पार्टी से विश्वास प्राप्त करने और उसके उपरान्त अपने मत्रिमण्डल का पुनर्गठन करने का निश्चय किया। व्यासजी मे स्वाभिमान कूट कूट कर भरा था साथ ही वे भावना प्रधान और संवेदनशील व्यक्ति थे, अस्तु जब यह बात उनके विरोधियो ने उठाई कि बहुमत उनके साथ नही है तो यह उन्हे छू गई उन्होने पार्टी से पहले विश्वास प्राप्त करने का निश्चय कर लिया।

चार अक्टूबर १९५४ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महामंत्री श्री बलवंत राय मेहता जयपुर आये। वे दिन मे प्रांतीय कांग्रेस कमेटी तथा विधान सभा के कांग्रेसी सदस्यो से मिले। रात्रि को दोनो की सम्मिलित बैठक मे उन्होने भाषण दिया। विधान सभा के स्पीकर के विरुद्ध जो कांग्रेसजनो ने हस्ताक्षर अभियान चलाया उसको मूर्खतापूर्ण बतलाते हुए उन्होने व्यासजी का पक्ष समर्थन किया। उनके भाषण से यह ध्वनि निकलती थी कि यदि व्यासजी को हटाया गया तो हानि होगी। राजस्थान का विकास रुक जावेगा। उनके भाषण से ऐसा लगा कि मानो हाई कमाड व्यासजी को रखना चाहता है और कांग्रेस सदस्यो पर दबाव डाल रहा है।

उस समय तक वर्माजी अपने मन मे सभवत. यह निश्चय कर चुके थे कि व्यासजी को हटाकर सुखाड़ियाजी को मुख्य मन्त्री बनाना चाहिए। व्यासजी के विरोधी अपने प्रयत्न मे सफल हो गए वर्माजी ने व्यासजी का विरोध करने और सुखाड़ियाजी का समर्थन करने का निश्चय कर लिया था। जब स्थिति गम्भीर हो गई तो श्री लालबहादुर शास्त्री समझौता कराने के लिए आए परन्तु रोग असाध्य हो गया था।

श्री बलवन्तराय मेहता के भाषण का जब यह प्रभाव पड़ता दिखलाई दिया कि कांग्रेस का उच्च नेतृत्व (हाई कमांड) व्यासजी के पक्ष मे है और उन पर दबाव डाला जा रहा है तो वर्माजी ने उस प्रभाव को समाप्त करने के लिए श्री बलवन्तराय मेहता के भाषण का कड़ा विरोध किया। उन्होने अपने भाषण मे कहा "यदि किसी के पैरो के नीचे जमीन नही है, वह सगठन की परवाह नही करता, तो कोई उन्हे बचा नही सकता, बलवन्तभाई भी उन्हे बचा नही सकते फिर वर्माजी ने सगठन के प्रति व्यासजी की उपेक्षा के कुछ उदाहरण दिए (डायरी ४ अक्टूबर, ५४)

६ नवम्बर १९५४ को कांग्रेस विधान सभा पार्टी की बैठक हुई। कांग्रेस विधान सभा पार्टी के नेतृत्व के लिए व्यासजी और सुखाड़ियाजी खडे हुए। व्यासजी को ५१ और सुखाडियाजी को ५९ मत प्राप्त हुए। सुखाड़िया जी कांग्रेस दल के नेता चुन लिए गए।

राजनीति भी कैसा विचित्र और निम्न स्तर का खेल है। जिन लोगो ने

व्यासजी के चरणो मे बैठकर राजनीति की शिक्षा प्राप्त की राजनैतिक क्षेत्र में जिन्हे व्यासजी ने आगे बढाया। श्री जवाहरलाल नेहरू के कडे और स्पष्ट विरोध की परवाह न कर उनका कोपभाजन बन कर भी और कई ऊचे दर्जे के राजनीतिक सहयोगियों को नाराज करके व्यासजी ने जिन्हे अपने मत्रिमडल मे लिया उन्ही लोगो ने व्यासजी के विरुद्ध और सुखाडियाजी के पक्ष में मतदान किया। स्वयं कृतघ्नता भी उस दिन उन लोगो के आचरण को देखकर लज्जित और कुंठित हो गई।

चुनाव हो जाने के उपरान्त दूसरे दिन अर्थात् ७ नवम्बर १९५४ को वर्माजी व्यासजी से मिले उनसे कहा कि मै आपसे क्षमा चाहता हूँ। सिद्धांतो का प्रश्न था आज तो आपको नाराजगी होगी किन्तु दस पद्रह दिन के उपरान्त शान्ति से बात करेगे (डायरी)

यद्यपि सुखाड़िया जी को बहुमत प्राप्त हो गया था, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि श्री जवाहरलाल नेहरू तथा पार्लियामेन्टरी बोर्ड की इच्छा उनको मुख्य मत्री बनाने की नही थी। वर्माजी ने अपनी डायरी मे १ नवम्बर १९५४ की तारीख मे लिखा है। मै सुखाड़िया जी, तथा आदित्येन्द्रजी सुबह बलवतराय मेहता से, १२ बजे श्रीमन्ना-नारायण अग्रवाल से मिले। सुखाडिया जी साय ६ बजे श्री लालबहादुर शास्त्री और छै बजे जवाहरलालजी से मिले। रात्रि को श्री बलवत भाई ने कहा कि आदित्येन्द्रजी को मुख्यमत्री बना दो। श्री आदित्येन्द्रजी ने इनकार कर दिया। वर्माजी ने अपनी डायरी मे आदित्येन्द्रजी की इस सबन्ध मे अत्यन्त प्रशसात्मक शब्दो मे याद की है।

स्पष्ट है कि जब सुखाडियाजी नेहरूजी से मिल चुके उसके उपरान्त बलवन्त भाई ने वर्माजी से कहा कि आदित्येन्द्रजी को मुख्य मत्री बना दो तो यह स्पष्ट हो जाता है कि नेहरूजी सुखाड़िया जी को मुख्यमत्री नही बनाना चाहते थे। परन्तु वर्माजी के प्रयत्नो के फलस्वरूप अन्त मे श्री नेहरू सहमत हो गए। इस सम्बन्ध मे वर्माजी ने अपनी डायरी मे इस प्रकार लिखा है—

"१२ नवम्बर १९५४ अत में पडितजी (श्री नेहरू) का फैसला बलवत भाई ने सुना दिया कि सुखाड़िया जी मत्रि मडल बनावे। माथुर (श्री मथुरादास माथुर) के लिए पडित जी ने कहा मै हा नही कहूगा। पालियामेटरी बोर्ड भी उन्हे लेने से इनकार करता है। फिर भी सुखाड़िया जी चाहे तो ले सकते है। हमने पडित जी की इच्छानुसार चलने का फैसला किया।"

"मथुरादास माथुर के मत्री लेने के सबन्ध मे मैने कहा आज माथुर साहब हमारे पक्ष मे है इस मौके पर मै अपनी भाषा बदलू यह नही होगा। व्यासजी लेना चाहते थे पडितजी ने कहा मेरी सलाह नही है। उस समय मैने कहा था व्यासजी को पडित जी की सलाह पर चलना चाहिए। आज भी मेरी यही सलाह है सुखाडियाजी को पडितजी की इच्छानुसार लेना चाहिए।

अत मे वर्माजी के प्रयत्नो के फलस्वरूप सुखाडियाजी मुख्य मंत्री बन गए और सुखाड़िया मन्त्रिमडल ने १३ नवम्बर १९५४ को तीन बजे सायंकाल शपथ ली।

केन्द्रीय नेता और विशेषकर श्री जवाहरलाल नेहरू आरम्भ में सुखाड़ियाजी को मुख्यमंत्री बनाने के पक्ष मे नही थे। वर्माजी के प्रति जो श्री नेहरू की अच्छी भावना थी और वर्माजी का उन पर प्रभाव था उसके कारण ही यह संभव हुआ।

सुखाड़ियाजी के मुख्य मन्त्री वन जाने के उपरांत भी केन्द्रीय नेतृत्व आश्वस्त नही हुआ। राजस्थान काग्रेस मे एकता स्थापित करने के प्रयत्न श्री ढेवरभाई कांग्रेस अध्यक्ष कर रहे थे। श्री जयनारायण व्यास, गोकुल भाई, श्री हीरालाल शास्त्री, श्री आदित्येन्द्रजी तथा श्री वर्माजी सव कई बार मिले। श्री ढेवरभाई एक कमेटी वनाना चाहते थे कि जो कांग्रेस सरकार को एक प्रकार से आदेश देती। वर्माजी ने उसका विरोध किया। कुछ केन्द्रीय नेताओ की मान्यता थी कि श्री सुखाड़ियाजी से त्यागपत्र दिलाकर ही राजस्थान काग्रेस मे एकता स्थापित की जा सकती है। कहने का अर्थ यह है कि सुखाड़ियाजी के वहुमत्त मे मुख्यमन्त्री वन जाने के उपरात भी ऐसी प्रवल शक्तियां उनके विरुद्ध कार्य कर रही थी कि यदि वर्माजी का समर्थन उनको प्राप्त नही होता तो उनका टिका रहना कठिन था।

यद्यपि सुखाडियाजी मुख्य मन्त्री वन गये थे परन्तु काग्रेसजनों मे मतैक्य नही था। श्री जयमारायण व्यास क्षुब्ध थे। वर्माजी के मन मे यह बात खटक रही थी। उनका मन अत्यन्त व्यथित था। वे चाहते थे कि कांग्रेस मे आपसी वैमनस्य समाप्त हो और व्यासजी के मन मे जो क्षोभ और रोप है वह दूर हो। घटनावश २४ मार्च, ५६ में पी. सी. सी. की वैठक मे कार्यकर्ताओ द्वारा अपने मन के भीतर छिपे हुए क्षोभ को प्रकट करने का अवसर मिल गया। श्री शोभालालजी, श्री रामकरण जोशी और पालीवालजी ने अपने क्षोभ को कडे शव्दो मे व्यक्त किया। वर्माजी के मन को ठेस पहुँची उन्होंने साथी कार्यकर्ताओं को संयम से काम लेने तथा प्रजातन्त्र के तरीके को अपनाने का आग्रह किया। वर्माजी ने कहा कि यदि आप सव चाहते हैं कि वर्तमान मन्त्रिमण्डल समाप्त हो तो उसके लिए भी अपने मनो की सफाई करके प्रान्त में अच्छा वातावरण बनाने का प्रयत्न करना होगा तभी हम ऐसा मन्त्रिमण्डल वना सकेंगे जिसे सभी काग्रेसजनो का समर्थन प्राप्त हो। वर्माजी के भाषण का प्रभाव यह हुआ कि कटुता वहुत कुछ धुल गई और सवो ने प्रान्त का वातावरण अच्छा बनाने का आश्वासन दिया। वर्माजी ने उसी वैठक मे घोषणा की कि मैं प्रांतीय काग्रेस कमेटी तथा ए० आई० सी० सी० से त्यागपत्र दे रहा हूँ और मेरी समस्त सम्पति देश के नेता श्री जवाहरलाल नेहरू को अर्पित करता हूं वे मुझे मेरे व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन के लिए जो भी दिशा वतलायेगे उसे स्वीकार करूगा। नारायणी देवी से मैंने स्वीकृति ले ली थी। (डायरी २४ मार्च, ५६)

वर्माजी के इस त्यागपत्र का प्रभाव अत्यन्त शुभ्र हुआ व्यासजी ने उनके पी० सी० सी० के भाषण के सम्बंध में एक पत्र लिखा और उसकी सराहना करते हुए अपनी सद्भावना प्रकट की।

६ अप्रेल, १९५६ को वर्माजी ने पडित जवाहरलाल नेहरू को अपनी समस्त सम्पति को अर्पित करते हुए पत्र नीचे लिखा पत्र लिखा—

१५६ नार्थ ऐवेन्यू
नई दिल्ली
६ अप्रेल, १६५६

आदरणीय पडितजी,

भारत को समाजवाद के ढाचे पर ढालने का जो प्रयास आप कर रहे है। उसी भावना को लेकर मै यह सोचता हूँ कि मैं अपने परिवार के खाने, वस्त्र, मकान और शिक्षा, औषधि की क्यो चिन्ता करता रहूं और यह सब आप पर छोड़ू। आप राष्ट्र के प्राण हैं और विश्व के पथ रचयिता है इसलिए मेरे भी प्यारे नेता है और नेता के निश्चित मार्ग पर चलू तथा अपने व्यक्तित्व को समाप्त करूं।

मेरे पास खेती के लिए आठ एकड जमीन है जिस पर आठ हजार रुपया और रहने के मकान पर चौवीस हजार रुपये खर्च हुए है। करीब आठ साल की भारतीय संसद की सदस्यता से मैने अपने परिवार का खर्चा चलाने के बाद लगभग वीस हजार रुपयो की बचत से और १२ हजार कर्जा कर उपरोक्त सपत्ति बनाई है। यह सम्पत्ति आपके चरणो मे अर्पित करता हूं।

मेरे परिवार मे पाच कन्याए और एक लड़का तथा मेरी धर्मपत्नी है। तीन कन्याओ का विवाह हो चुका है एक कन्या उम्र २३ साल एम. ए. भील कन्या छात्रालय उदयपुर मे अवैतनिक सेवा करती है। मेरी धर्मपत्नी इस कन्या छात्रालय और भीलवाड़ा मे चलनेवाले महिला आश्रम की अवैतनिक सचालिका है।

सपत्ति तथा पारिवारिक रिपोर्ट सक्षेप मे जानने के बाद मुझे तन मन धन सहित आप अपने अर्पित समझेगे और इस भक्त के सर पर अपने प्रेम का हाथ बनाए रखेंगे।

आपका
माणिक्यलाल वर्मा

वर्माजी के ऊपर लिखे पत्र के उत्तर मे नेहरू जी ने नीचे लिखा पत्र भेजा—

न० १०१८ पी. रामराव ५६
नई दिल्ली
६ मई १६५६

प्रिय माणिक्यलालजी,

आपके दो पत्र मिले एक ६ अप्रेल का दूसरा ३० अप्रेल का। जवाब देने मे देरी हुई माफ कीजिएगा।

आपने जो लिखा है उस पर मैंने विचार किया और आपकी भावना से मुझ पर असर हुआ। लेकिन इसके मानी क्या है जैसा कि आप लिखते है कि आप सब मेरे ऊपर छोड़दें? वहुत दिन हुए आपने को देश के काम में लगा दिया और एक मानी मे देश पर छोड़ दिया। अब आपको किसी को देना क्या रहा?

राजस्थान मे आपको बडे काम करने हैं और इसकी बहुत आवश्यकता है। उस काम को तो आप छोड़ नही सकते कोई कठिनाई आपकी हो, काम के बारे मे, या अपने बारे मे तो जरूर मुझ से आकर कहिए, और हम सलाह मश्वरा करे।

एक दिन आप मुझसे मिलिए।

आपका
जवाहरलाल नेहरू

वर्माजी ने ए. आई. सी. सी. से त्यागपत्र भेजा उसके उत्तर मे कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेवर भाई ने नीचे लिखा उत्तर दिया।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

जन्तर मंतर रोड
नई दिल्ली-१
१९ अप्रेल, १९५६
जी ३४/७६५१

प्रिय वर्माजी,

आपका पत्र मिला। बीच मे आप यहा आए थे। मैने श्री आदित्येन्द्रजी से कहा था। आप मिल नहीं सकें।

आपका त्यागपत्र मैं अभी अपने पास ही रखता हूं। कई बार आपके दिल मे व्यथा हुई है। इस बार आपने जो कदम उठाया है उसे मै समझता हूं। आपके पास सत्य का भण्डार है तब ए. आई सी. सी. से अलग होने की मै आपको किस तरह छुट्टी दे सकता हू। आपका भंडार आपका भी है और कांग्रेस का भी है। इसलिए मैं आपका निवृतिपत्र मै आगे नही भेज रहा हूँ।

आपकी कुशलता चाहता हूँ।

आपका
उ. न. ढेवर

ऊपर दिये हुए पत्रो से यह स्पष्ट हो जाता है कि कांग्रेसजनो में पद और सत्ता के लिए जो वैमनस्य उत्पन्न हो गया था उससे वर्माजी को गहरी व्यथा हुई थी और वे सच्चे हृदय से यह प्रयत्न करना चाहते थे कि वह वैमनस्य समाप्त हो। उसी उद्देश्य से उन्होंने स्वय प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी तथा ए. आई सी. सी से त्यागपत्र ही नही दिया वरन अपनी समस्त सम्पत्ति को भी श्री नेहरू को अर्पण करने का सकल्प कर लिया था।

कांग्रेस जनो मे वैमनस्य दूर करने के लिए वर्मा जी १६ अप्रेल १९५६ को श्री जयनारायण व्यास से मिले और उनके सामने तीन प्रस्ताव रखे। श्री व्यासजी से उन्होने कहा (१) प्रान्त की एकता के नाम पर या तो आप मौजूदा मन्त्रिमण्डल मे अपने कुछ व्यक्तियो को मंत्री बना दो। व्यास जी ने कहा एक दो मन्त्रियो के शामिल होने से

क्या हेरफेर होने वाला है (२) हम अर्थात पी सी सी. के अध्यक्ष, मुख्य मंत्री, आप तथा मै हमारे नेता पडित जी के नाम पत्र लिख दें कि राजस्थान का मामला आप पर छोडते है श्री व्यास जी का कहना था कि इस तरह के हस्ताक्षर करने का न तो हमे अधिकार है न यह वैधानिक ही है। (३) श्री सुखाडिया जी को बुलाकर आपके हाथ मे त्याग-पत्र दिला दूँ आप चाहे उसे मुख्यमत्री तथा मत्री बनावे। यह चीज बनावटी हो तो घटे भर मे मैं परीक्षा कर ले शर्त यह है कि जिस प्रकार बहुमत से बिना पूछे मै साहस कर रहा हूँ आपको किसी से मिलने न दूगा। दो घन्टे मे मेरे सामने आप अध्यक्ष पी सी. सी. मुख्य मत्री की मौजूदगी मे यह फैसला हो। हाई कमाड को मनाने की जिम्मेवारी मै लेता हूँ। व्यास जी ने कहा मुख्यमत्री आप (वर्मा जी) हो जाए। मैने कहा मै अपनी सेवाओ पर पानी नही फेरना चाहता। व्यास जी बोले तो फिर पालीवाल चला नही सकते। शास्त्री जी को इस जन्म मे अवसर नही मिलेगा। मैं आपसे भी आगे रहूँगा इस मंत्रिमंडल को ही चलने दे। सगठन के सम्बन्ध मे हमको जरूर सोचना चाहिए। (डायरी १६ अप्रेल १९५६)

वर्मा जी सच्चे हृदय से कांग्रेस मे वैमनस्य मिटाना चाहते थे और श्री जयनारायण व्यास के मन में जो क्षोभ और रोष था उसको समाप्त करना चाहते थे। वर्मा जी को सत्ता से तनिक भी मोह नही था यह श्री ढेवर भाई से जो उनकी मुख्य मत्री बनने के संबध मे बात हुई उससे स्पष्ट हो जाता है।

१० मई १९५६ को डायरी मे वर्मा जी ने लिखा "श्री ढेबर भाई से ४ बजे मिला उन्होने मुझे राजस्थान का मुख्य मंत्री बनने को कहा। मैंने कहा मुझे इस नर्क-यातना मे क्यो डालते हो ? पडित जी का आदेश हो तो मानोगे उन्होने पूछा। मैने कहा वे देश के नेता है। दूसरा सब हुक्म मानूगा इसकी तामील नही करूगा।"

स्पष्ट है कि कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर भाई ने यह प्रस्ताव केवल अपनी ओर से ही नही रखा था वरन श्री जवाहरलाल नेहरू के कहने पर रखा था। यदि वर्मा जी को सत्ता का मोह होता तो वे राजस्थान के मुख्यमत्री कभी भी बन सकते थे। नेहरू जी का उनमे अटूट विश्वास था परन्तु पूर्व राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने के उपरान्त वर्मा जी ने सत्ता में न जाने का निश्चय कर लिया था। आज के अवसरवादिता और सत्ता के लिए अशोभनीय होड के युग मे वर्मा जी की सत्ता के प्रति गहरी उपेक्षा एक ऐसी घटना है जिस पर सहसा आज के राजनीतिक कार्यकर्ता विश्वास नही करेगे। यह वर्मा जी के चरित्र का अत्यन्त उज्ज्वल पक्ष है। यद्यपि वर्मा जी मतैक्य चाहते थे परन्तु वह हुआ नही। तब श्री लाल बहादुर शास्त्री ने कांग्रेस हाई कमाड के आदेशानुसार वर्मा जी से कहा कि जयनानारायण व्यास को प्रान्तीय कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जावे। वर्मा जी ने इसको स्वीकार कर लिया और श्री आदित्येन्द्र ने अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दिया। वर्मा जी, व्यास जी, आदित्येन्द्र जी और सुखाड़िया जी ने उस समय एक सम्मिलित बयान भी प्रकाशित किया था जिससे यह ध्वनि निकलती थी कि हम लोगो ने मिलकर यह निश्चय किया है कि व्यास जी प्रान्तीय सगठन के अध्यक्ष पद का भार सम्हाले।

आशा थी कि संबन्ध अच्छे होगे परन्तु व्यासजी तथा वर्माजी मे मतभेद समाप्त नही हुए । चुनाव मे टिकटो के बटवारे को लेकर मतभेद और अधिक उग्र हो गए । उदयपुर के क्षेत्र के जिन लोगो को टिकट दिए गए थे उन्होने वर्माजी के नेतृत्व मे कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व को सूचित कर दिया कि वे खड़े नही होगे । केवल आचार्य निरजननाथ ने टिकट नही लौटाया, वर्माजी ने श्री नेहरूजी को एक विरोध पत्र लिखा तब स्थिति मे सुधार हुआ और वर्माजी आदि खड़े हुए ।

वर्माजी तथा व्यासजी का मतभेद :

लेखक का यह निश्चित मत है कि राजस्थान के लिए अत्यन्त हानिकारक और अशुभ घटना थी कि वर्माजी और व्यासजी मे उग्र मतभेद खड़ा हो गया । दोनों राजस्थान के तपे हुए और शौर्यवान सेनानी थे जिन्होने अपने जीवन को देश को स्वतत्र करने तथा देशी राज्यों को प्रजा के लिए उत्तरदायी शासन प्राप्त करने के प्रयत्नो में खपा दिया था । दोनो ही आदर्शवादी और सिद्धातो के आग्रही थे । यदि वर्माजी और व्यासजी मे मतभेद न उठ खड़ा होता और व्यासजी दीर्घकाल तक शासन तथा वर्माजी सगठन का नेतृत्व करते तो राजस्थान का राजनीतिक जीवन अत्यन्त शुद्ध और तेजवान बनता । प्रादेशिक तथा जातिगत भावना समाप्त हो जाती और कांग्रेस अत्यन्त प्रगतिशील प्रभाव शाली तेजस्वी और लोकप्रिय राजनीतिक सगठन बनता । परन्तु राजस्थान का यह दुर्भाग्य था कि वे दोनो अलग होगए, सगठन और प्रशासन की सीमाओ पर दोनों मे मतभेद था ही उन दोनो के निकट जो लोग थे उन्होने इस मतभेद को अधिक तीव्र करने का प्रयत्न किया । व्यासजी को सामन्ती शासन का इतना कटु अनुभव नही था जितना कि वर्माजी को था यही कारण था कि वर्माजी का जागीरदारो तथा राजाओ के प्रति जैसा कठोर दृष्टिकोण था वैसा व्यासजी का नही था । व्यासजी की मान्यता थी कि जागीरदारो तथा राजाओ की मनोवृत्ति मे परिवर्तन हो जावेगी और उनको साथ लेकर कार्य किया जा सकता है यही कारण था कि जब काग्रेस सगठन का उन्हे पूरा सहयोग नही मिला तो उन्होने जागीरदारो को काग्रेस मे लाने का प्रयत्न किया । उससे वर्माजी तथा व्यासजी मे और भी अधिक दूरी उत्पन्न हो गई । परन्तु उग्र मतभेद होते हुए भी वर्माजी के हृदय मे व्यासजी के लिए आदर और श्रद्धा थी । यही कारण था कि जब साधारण चुनाव मे काग्रेस द्वारा ऐसे व्यक्तियो को टिकट दे दिए गए कि जो व्यासजी की दृष्टि मे अत्यन्त अवाछनीय थे और जिन्हे टिकट देकर काग्रेस ने अपने यश और प्रतिष्ठा को गिराया था तो एक साहसी निर्भीक राजनीतिक योद्धा की भाति व्यासजी ने खुले रूप मे सभाएं करके भाषण देकर उन अवाछित काग्रेस टिकट प्राप्त उम्मीदवारो का खुला विरोध किया और इस अनुशासनहीनता के लिए जब जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस का सर्वोच्च नेतृत्व (हाई कमाड) उनको काग्रेस से निलम्बित करने की बात गभीरता से सोच रहे थे तो वर्माजी ने श्री नेहरू को पत्र लिख कर श्री व्यासजी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने का विरोध किया और लिखा कि यदि व्यासजी को कांग्रेस से निकाला गया तो मै (वर्माजी) भी काग्रेस से त्यागपत्र दे दूंगा ।

अध्याय ग्यारहवां

वर्माजी द्वारा गाड़िया लोहारों की प्रतिज्ञा पूरी कराना

वर्माजी के हृदय मे शोषित, पीडित, तथा पिछडी, जातियो के लिए अगाव प्रेम था। वे सदैव उनके कल्याण की वात सोचा करते थे। जहा कही उन्हे कोई पिछडा और पीडित समुदाय दिखलाई पडता वे उसके उत्थान के कार्य को हाथ मे लेते और तन मन से उनके उत्थान के कार्य मे जुट जाते। यही कारण था कि पिछड़ी जातियो का उन्होने सहज विश्वास प्राप्त किया था। राजस्थान का ही नही भारत का कोई भी राजनीतिक नेता ऐसा नही था जिसे आदिवासियो और पिछडी जातियो का वर्माजी जैसा सहज विश्वास प्राप्त हो। स्वाभाविक ही था कि गाड़िया लुहार जो सैकडो वर्षो पूर्व चित्तौड छोडते समय उनके पूर्वजो ने जो प्रतिज्ञा को पालते हुए घुमक्कड जीवन व्यतीत कर रहे थे उनकी ओर उनका ध्यान गया।

वर्माजी जीप द्वारा अजमेर से अपने दौरे पर देवली की सडक पर जा रहे थे। सरवाडा के पास उन्हे गाडिया लुहारो का एक शिविर मिला। वर्माजी ने देखा कि पेड की छाया मे गाडिया लुहारो की गाडिया खडी हुई है वच्चे खेल रहे है तथा स्त्रियो भारी घन से गरम लोहे को कूट रही है तथा धौकनी से अगीठी की अग्नि को प्रज्वलित कर रही है। तथा पुरुष लोहे के औजार वना रहे है। वर्माजी ने जीप वही रोक दी और उनके शिविर मे चले गए। जिस राजनीतिक कार्य से वे दौरा कर रहे थे उस आवश्यक कार्य तथा मीटिंग में सम्मिलित होना वे भूल गए और वे गाडिया लुहारो के सम्वन्ध मे सव कुछ जान लेने के लिए वहा रुक कर वृद्ध गाडिया लुहारो से बात करने लगे।

वृद्ध गाडी लुहारो ने वर्माजी को अपने पूर्वजो की प्रतिज्ञा का जो इतिहास सुनाया उसे सुन कर वर्माजी आत्मविभोर हो उठे। उनका इतिहास अत्यन्त प्रेरणादायक और वीरतापूर्ण था। गाडिया लुहारो ने वर्माजी को वतलाया कि उनके पूर्वज प्रसिद्ध चित्तौडगढ की स्वतत्रता की रक्षा के लिए जूझने वाले वीर सैनिक थे। चित्तौड़ के तीसरे साके मे जव वादशाह अकवर ने चित्तौड को विजय कर लिया। अधिकाश वीर रणभूमि मे अपनी मातृ भूमि की रक्षा करते हुए सदैव के लिए सो गए तो बचे हुए गाडिया के पूर्वजो ने उस ऐतिहासिक दुर्ग के उदयापोल नामक विशाल द्वार के नीचे एकत्रित हो

चित्तोड़ से अन्तिम विदाई ली और यह प्रतिज्ञा की कि " हे वीरभूमि चितौड़ हम तुम्हारे पुत्र यह प्रतिज्ञा करते है कि जब तक हम तुम्हे पुन. स्वतत्र नही कर लेते तब तक हम तुम्हारी सतान :—

(१) बस्ती या जंगल कही भी घर बना कर नही रहेगे।

(२) शय्या (पलग) पर नही सोवेगे।

(३) दीपक नही जलायेगे।

(४) कुये या बावड़ी से पानी खीचने का रस्सा अपने पास नही रखेंगे।

(५) चितौड़ के दुर्ग पर नही चढेगे।

१५६८ मे जब बादशाह अकबर ने वीरभूमि चित्तौड पर आक्रमण किया और भयानक युद्ध के पश्चात जिसमे अधिकाश चितौडवासी अपनी मातृ भूमि की रक्षा करते हुए धराशायी हो गए और बहुत बडी सख्या मे स्त्रियो ने जौहर कर अपनी पवित्रता की रक्षा की। जब चित्तौड पर बादशाह का अधिकार हो गया यह घटना तब की थी। चार सौ वर्ष का समय व्यतीत हो गया था परन्तु गाड़िया लुहार देश मे हुए परिवर्तनो से नितान्त अनभिज्ञ थे। गाड़िया लुहारो को इस बात की कल्पना भी नही थी कि दिल्ली मे मुगल बादशाहत समाप्त हो गई और देश अग्रेजो के आधीन हो गया और १९४७ मे अग्रेजो का शासन समाप्त होकर भारत पूर्ण रूप से स्वतत्र हो गया है। वे अपने पूर्वजो की प्रतिज्ञा को देश के स्वतत्र हो जाने के उपरान्त भी पूर्ववत निभाते रहे। ससार के इतिहास मे ऐसा उदाहरण कही देखने को नही मिलता कि एक जाति अपनी मातृ भूमि की स्वतंत्रता के लिए चार सौ वर्षो तक खानाबदोश बन जीवन की सामान्य सुविधाओ से वचित रह कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमती रहे।

मुगल सेनाओ के चितौड विजय के उपरान्त गाडी लुहारो के पूर्वजो ने छापा मार युद्ध आरभ किया। वे जगलो मे रहते अस्त्र शस्त्रो को बनाते चितौड दुर्ग पर, पुन. अधिकार करने के लिए छापामार युद्ध करते परन्तु लम्बे समय तक प्रयत्न करने पर भी वे जब सफल नही हुए तो अपनी आन की रक्षा के लिए वे बैलगाडियो मे चित्तौड से चल पडे और जीवन निर्वाह के लिए अन्य उपाय न देखकर वे घरेलू काम मे आने वाली लोहे की वस्तुएं तथा खेती मे काम आने वाले औजार बनाने लगे।

तभी से बैलगाडी ही उनका चलता फिरता घर बन गया। उसी बैलगाड़ी मे वे अपना परिवार तथा गृहस्थी की आवश्यक वस्तुए लिए हुए गाव गाव घूमते फिरते रहते।

कालान्तर में यह सैनिक जाति लोहे की वस्तुओ के निर्माता के रूप मे प्रसिद्ध हो गई। सैकड़ो वर्षो तक लोहे की वस्तुओ का निर्माण करते रहने के कारण वे अत्यन्त निपुण हो गए और सफलतापूर्वक वे अपना जीवन निर्वाह करने लगे। प्रत्येक गाडी लुहारो का समूह अपने निश्चित क्षेत्र मे घूमता स्थान विशेष पर अपना शिविर लगाता अर्थात् गाड़िया खडी कर देना और समीपवर्ती ग्रामो की लोहे की वस्तुओ की आवश्यकताओ की पूर्ति करता था। गाववाले अपने औजारो के लिए

गाडिया लुहारो के आने की प्रतिक्षा करते रहते ।

परन्तु जैसे यातायात की सुविधाएं वढती गई और मशीन द्वारा वनी हुई सस्ती कारखानो की लोहे की वस्तुए वाजारो मे विकने लगी गाडिया लोहारों का लोहे का उद्योग पतनशील होता गया और उनकी आर्थिक स्थिति विगडती गई। आर्थिक दृष्टि से जव गाडिया लुहारो की स्थिति गिरने लगी तो उनमे सामाजिक रूढिवादिता का प्रावल्य हो गया। इस प्रकार चार सौ वर्षों के दीर्घकालीन समय में यह जाति आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड गई और उसकी दशा दयनीय हो गई। अधविश्वास, परपरागत अनुसरण, घोर निरक्षरता ने उनको रूढिवादी और अप्रयत्नशील बना दिया। उनका रहन सहन, आचार विचार तथा जीवन पद्धति आज से कई शताव्दी पूर्व जैसी है। प्राचीन काल की यह वीर जाति और पूर्व आधुनिक काल की यह कारीगर और कलाकार जाति आधुनिक युग मे निर्धनता तथा वेरोजगारी से त्रस्त हो अधविश्वासो और अपरिवर्तनशीलता की शिकार वन गई।

इस वीर जाति का ऐसा दुखद पतन होने पर भी उनमे ऊचे दर्जे की नैतिकता पाई जाती है। अशिक्षित तथा अधविश्वास होने भी कुछ बातो में वे कथित सभ्य और सुसस्कृत समाज से वहुत श्रेष्ठ हैं। यह लोग परिश्रमी और कमाकर जीवननिर्वाह करते है। वे लोग परिश्रम करना धर्म समझते है चोरी डाके जैसे अपराधो को वे अत्यन्त नीच और हेय समझने हैं। यदि किसी दिन उनकी लोहे की वस्तुए न विके और उनके पास खाने को अनाज न हो तो भी वे भिक्षा मागने की अपेक्षा भूखे सो जाना पसंद करते हैं, किसी से कभी कुछ मागते नही है। अपनी आन और मान मर्यादा के वे अत्यन्त धनी होते हैं। वडे से वडे कष्ट को वे सहन करते है परन्तु वे अपनी आन और मान मर्यादा पर आच नही आने देते।

गाडिया लुहार शपथ का अत्यन्त सम्मान करते है और शपथ मे विश्वास करते हैं। किसी भी गाडिया लुहार के लिए सवसे वडी शपथ चित्तौड दुर्ग के तीसरे साके के समय नरसहार की है। यह शपथ चित्तौड़ दुर्ग की दिशा मे मुह करके तथा हाथ में पानी लेकर ली जाती है कोई गाड़िया लुहार अपने सगोतिए बन्धुओ से उधार दिए हुए रुपए पर व्याज नही लेता। यदि कोई उधार दिये हुए रुपये पर व्याज ले लेता है तो जाति उसे प्रायश्चित कराती है।

गाडी लुहारो का जनतान्त्रिक संगठन है। पंचों का निर्णय मानना सवके लिए अनिवार्य है। पच लोग सारे झगड़ो को निपटा देते है। कोई गाड़ी लुहार आज तक पुलिस अथवा किसी भी न्यायालय की शरण नही गया। विवाह, तलाक, मृत्यु भोज आदि के सम्बन्ध मे जाति के नियमो तथा रीति रिवाजो का उल्लंघन दडनीय है। दंड अपराध की गुरुता पर निर्भर करता है। कही कही गाडी लुहारो को मूमलिया, पचाल, गिसाड़ी, वमरिया, धूलकूटिया आदि नामो से भी जाना जाता है। महाराष्ट्र कर्नाटक, बम्बई तथा मध्य प्रदेश मे फिरने वाले गाड़ी लुहारो ने वहां की भाषा अपनाली है परन्तु परिवार मे आपस मे वातचीत राजस्थानी मे ही करते है।

उनमे छोटी आयु में कन्या का विवाह करने कन्या विक्रय, मद्यपान, मृत्युभोज आदि सामाजिक कुरीतियां गहरी पैठ गई हैं। यद्यपि गाड़िया लुहार उत्तर भारत के सभी राज्यो मे पाये जाते है तथा मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र मे भी वे बडी सख्या मे मिलते है परन्तु पूछने पर सभी अपनी वंशोत्पत्ति सदैव चित्तौड़ के क्षत्रियो से ही बतलाते है।

४०० वर्ष के दीर्घकाल मे यह वीर घुमक्कड़ जाति अपने को जैसे भूल गई आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड गई। उसको इस बात का भी आभास नही कि देश मे क्रांतिकारी परिवर्तन हो गए देश स्वतत्र हो गया। चार सौ वर्षो पूर्व जो उनके पूर्वजो ने प्रतिज्ञा की थी उसको मान्य कर वे एक घुमक्कड़ जाति का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

किसी राजनीतिक नेता अथवा समाज सुधारक का ध्यान उनकी ओर नही गया। ऐसा कोई भारतीय नही होगा जिसने गाड़िया लुहारो के शिविरो को न देखा हो परन्तु किसी के मानस मे उनको जानने की जिज्ञासा उत्पन्न नही हुई और देश के स्वतत्र हो जाने के उपरान्त भी उनका जीवन पूर्ववत चलता रहा।

पहली बार श्री माणिक्यलाल वर्मा जब केकड़ी के पास उनसे मिले और उनके गत इतिहास की जानकारी प्राप्त की ४०० वर्षो से अपने देश की आजादी के लिए भटकने वाली इस जाति की ओर किसी ने ध्यान नही दिया तो अनायास उनके मन मे यह भावना उदय हुई कि इस वीर जाति को बसाने और उनके उत्थान करने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्होने वृद्ध गाडिया लुहारो से कहा कि भाई चित्तौड ही नही समस्त देश स्वतत्र हो गया है। चित्तौड़ भी अब स्वतत्र है तुम्हारे पूर्वजो की हुई प्रतिज्ञा पूरी हो चुकी है अब तुम्हे इस प्रकार भटकने की आवश्यकता नही है घर बनाकर रहना चाहिए और अपने उद्योग को विकसित करना चाहिए। वर्मा जी ने गाड़िया लुहारो से कहा कि अब तो देश स्वतत्र हो गया है किसी एक जाति का नही जनता का राज्य है उसमे तुम भी शामिल हो। मुगलो का राज्य सैकडो वर्ष पहले समाप्त हो गया और अग्रेज भी चले गए तुम अगर मजूर करो तो भारत के प्रधान मत्री पडित जवाहरलाल को चित्तौड लाऊं, तुम भी आवो। गभीरी नदी के उस पार तुम खडे रहो जिसको पार कर तुम चित्तौर नही जाते हो और दूसरी ओर पडित जवाहरलाल नेहरू खडे रहे और तुम्हारी मनुहार करे और चित्तौड़ किले पर चढाकर तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण करादे। गाडिया लुहारो ने कहा कि हमारा राज्य हो गया इसका क्या प्रमाण है? वर्मा जी ने उत्तर दिया कि दिल्ली के लाल किले पर जो तिरगा झडा फहराता है वह तुम्हारे हाथो से विजयस्तम्भ पर फहरा दू तो प्रमाण मानोगे या नही? गाडिया लुहारो को भरोसा हो गया।

परन्तु वर्मा जी की बातो का उन पर कोई असर नही पड़ा वे कल्पना नही कर सके कि चित्तौर स्वतत्र हो गया है और चार सौ वर्षो पूर्व जो उनके पूर्वजो ने प्रतिज्ञा की थी वह पूरी हो चुकी है। वर्माजी इससे निराश नही हुए। वे घूम-घूम कर गाडी लुहारो के समूहो से मिले। अजमेर, टोक, कोटा, किशनगढ आदि अनेक स्थानो पर वर्माजी स्वय गए गाड़ी लुहारो से मिले उन्हे समझाया कि अब उनका चित्तौड़गढ़ स्वतन्त्र है उनके

पूर्वजो की प्रतिज्ञा पूरी हो चुकी है अत उन्हे कही पर बसकर स्थायी रूप से रहना चाहिये। आरम्भ मे गाडिया लुहारो को वर्माजी की बात पर भरोसा नही होता था। परन्तु जब वर्माजी उनमे कहते कि यदि भारत के प्रधान मन्त्री पडित जवाहरलाल नेहरू तथा मेवाड के महाराणा स्वय तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी करावे और तुम से कहे कि चित्तौड़ अब स्वतन्त्र है और चित्तौड के विजय स्तम्भ पर तुम्हारे हाथो से भारत की राष्ट्रध्वजा तिरगा झडा फहराया जावे तब तो तुम्हे विश्वास होगा कि तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई है। वर्माजी के इस कथन से गाडी लुहारो को थोडा भरोसा हुआ वे चित्तौड़ आने के लिए तैयार होने लगे।

वर्माजी ने सोचा कि इस वीर घुमक्कड जाति को एक बार चित्तौड़ दुर्ग में प्रवेश कराकर औपचारिक रूप से उनके पूर्वजो द्वारा की गई प्रतिज्ञा को पूर्ण कराया जावे। देश भर के विभिन्न राज्यो में घूमनेवाले गाडिया लुहारो को बडी संख्या मे चित्तौड़ आमन्त्रित किया जावे और प्रधान मन्त्री नेहरू द्वारा चित्तौड़ मे प्रवेश कराकर उनका एक वृहद सम्मेलन किया जावे तो गाड़िया लुहारो को विश्वास हो जावेगा। वे मकान बनाकर स्थायी रूप से बसना आरम्भ करेगे और तब उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया जा सकता है। अतएव वर्माजी घूम घूम कर गाडिया लुहारो के समूहो से मिलने लगे। वे केवल राजस्थान मे ही गाडिया लुहारो से नही मिले उन्होने महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश मे घूमने वाले गाड़िया लुहारो से भी सम्पर्क स्थापित किया। स्वयं उनके शिविरो मे जाकर उन्हे चित्तौड़ आने के लिए आमन्त्रित किया और उन राज्यो के मुख्य मन्त्रियो तथा समाजसेवी व्यक्तियो से मिलकर इस जाति को बसाने का जो भगीरथ प्रयत्न वे कर रहे थे उसमे सहयोग देने के लिए उन्हे तैयार किया। चित्तौड़ में उन्होने अपने सहयोगी कार्यकर्ताओ की इस सम्बध मे एक सभा बुलाई उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि इस वीर घुमक्कड जाति को बसाना है वर्माजी के प्रोत्साहन के फलस्वरूप कर्मठ कार्यकर्ताओ की एक टोली इस कार्य के लिए जुट गई। राजस्थान सरकार को भी वर्माजी ने गाड़िया लुहारो की प्रतिज्ञा को पूरी कराने मे सहयोग देने के लिए तैयार कर लिया।

यह प्रारभिक तैयारी कर लेने के उपरात वर्माजी अजमेर मे होने वाली ए. आइ. सी. सी. की बैठक के अवसर पर प्रधान मत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से मिले और उन्होने इस वीर दृढ प्रतिज्ञ घुमक्कड़ जाति की प्रेरणादायक वीरगाथा उन्हे सुनाई। श्री जवाहर नेहरू गाड़िया लुहारो की प्रतिज्ञा और उनकी वीर गाथा को सुनकर बहुत प्रभावित हुए। बोले मुझे नही मालूम था कि भारत मे एक ऐसी भी जाति है जो चार सौ वर्षो से चित्तौड को स्वतन्त्र करने की प्रतिज्ञा से बधी हुई घुमक्कड़ जाति का जीवन व्यतीत कर रही है। स्वतन्त्र भारत मे उन्हे बसाने का अवश्य प्रयत्न होना चाहिए। प्रधान मन्त्री नेहरू ने इस जाति की वीर गाथा सुनकर उनमे अपनी गहरी दिलचस्पी दिखलाई और वर्माजी को वचन दिया कि वे अवश्य ही चित्तौड आकर उनकी प्रतिज्ञाको पूरी करावेंगे। वास्तव मे प्रधान मन्त्री गाड़िया लुहारो की कहानी सुनकर इतने अधिक प्रभावित हुए

कि वह उनके मन मे स्थायी रूप से बस गई। वे दिल्ली जाकर भी उनको नही भूले और उन्होने वर्माजी को पत्र लिखा कि कुछ चुने हुए गाडिया लुहारो को २६ जनवरी के अवसर पर वे दिल्ली लावे। इस सम्बन्ध मे उन्होने वर्माजी को एक पत्र लिखा था जो इस प्रकार है —

नई दिल्ली
२५ नवबर १६५४

प्रिय माणिक्यलालजी,

आपका १६ नवबर का पत्र कुछ दिन हुए मुझे मिला। मुझे पूरी तौर से याद है जो आपने मुझमे गाडिया लुहार जाति की निस्बत कहा था और मेरी इच्छा हे कि चित्तौडगढ जाऊ और उन लोगो से मिलू। लेकिन मेरी इस वक्त कुछ मजबूरिया है जिससे मै कोई तारीख मुकर्रर नही कर सकता या अगर गोल मोल मे आप चाहे तो मै कह सकता हूँ कि मार्च पहले सप्ताह मे आने की कोशिश करूगा।

अच्छा होगा अगर इन लोगो मे से कुछ चुने हुए आप यहा लाते मुझसे मिलने को और मै खुद उनमे बाते करता और वे लोग भी यहा कुछ देखते। यह भी हो सकता है कि उनमे से कुछ लोगो को आप लाते तो २६ जनवरी के दिन जब हमारी बडी परेड निकलती है और इसमे बहुत लोग हिस्सा लेते है और अलावा फौज के तो हम उनमे से कुछ लोगो को मिला दें हम चाहते है कि इस बडी परेड मे आम जनता की तरह के लोग हो।

इसके माने यह नही है कि बाद को मै नही आऊगा वह बात तो अलग है और पक्की है।

श्री माणिक्यलाल वर्मा,
१५६ नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली

श्री जवाहरलाल नेहरू की इस घुमक्कड जाति के प्रति गहरी दिलचस्पी वर्माजी ने पैदा करदी थी इस पत्र से यह स्पष्ट हो जाता है। प्रधान मन्त्री का यह पत्र प्राप्त होने के पश्चात वर्माजी ने चित्तौड मे गाडिया लुहारो की प्रतिज्ञा पूरी कराने तथा सम्मेलन करने की विस्तृत योजना तैयार की और जनवरी १६५५ मे मद्रास के सत्यमूर्ति नगर मे हो रहे अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन मे श्री नेहरू से पुन. भेट की और गाडिया लुहारो को चित्तौड प्रवेश कराने के सम्बन्ध मे अपनी सम्पूर्ण योजना से अवगत कराया। श्री नेहरू ने उस योजना को बहुत पसद किया और ६ अप्रेल को गाड़िया लुहारो के चित्तौड प्रवेश के समय स्वय चित्तौड आने की स्वीकृति दे दी। वर्माजी का उद्देश्य पूरा हो गया। प्रधान मन्त्री नेहरू द्वारा गाडिया लुहारो को चित्तौड मे प्रवेश करने के लिए कहने की बात जो उन्होने गाडिया लुहारो से कही थी वह पूरी हो गई। अब वर्माजी गाडिया लुहारो को चित्तौड़ मे प्रवेश कराने की योजना को क्रियान्वित कराने मे जुट गए।

सबसे पहले वर्माजी ने राजस्थान से सौ गाडिया लुहारो को २६ जनवरी, १६५५ के गणतन्त्र दिवस पर उस समारोह मे भाग लेने के लिए भिजवाया। उस समय वे स्वयं भी गए। गाड़िया लुहारो ने मुख्य समारोह मे भाग लिया और सास्कृतिक झांकियो मे इस घुमक्कड़ जाति की जीवन झाकी भी प्रस्तुत की गई। दूसरे दिन प्रधान मन्त्री ने वर्माजी सहित गाडिया लुहारो को राष्ट्रपति भवन मे जलपान के लिए बुलाया और उनका सम्मान किया। श्री नेहरू ने गाडिया लुहारो को विदा करते हुए स्नेह भरे शब्दो मे कहा "मै ६ अप्रेल १६५५ को चित्तौडगढ आ रहा हूं हम अब चित्तौड़गढ़ पर ही मिलेगे।"

प्रधान मन्त्री नेहरू के इस स्नेहपूर्ण और अपनेपन के व्यवहार से गाड़िया लुहार अत्यन्त प्रभावित हुए। गणतन्त्र के समारोह मे सम्मिलित होने के कारण उनके मनसे सदेह जाता रहा और वे लोग सब लौट कर अपने स्थानो पर गए तो वे अपने सजातियों को चित्तौड़ चलने के लिए प्रोत्साहित करने मे जुट गये। वास्तव मे गाड़िया लुहारो के दिल्ली जाने से सम्मेलन की सफलता का मार्ग प्रशस्त हो गया।

दिल्ली बुलाने के लिए उन्होने भारत के विभिन्न भागो में घूमनेवाले गाड़िया लुहारो के नाम एक छपा हुआ निमन्त्रण अपने कार्य कर्ताओ के हाथ भेजा था। वर्माजी ने गाडिया लुहारो के नाम नीचे लिखा सदेश भेजा था —

बन्धुओ,

चार सौ वर्षो से हिन्दुस्तान की आजादी के लिए भटकनेवाली कौम गाडिया लुहारो से उनकी प्रतिज्ञा चित्तौडगढ पर पूर्ण कराने की प्रार्थना मैने भारत सरकार के प्रधान मत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से की। उन्होने जनवरी सन् १६५५ को दिल्ली आने का बुलावा दिया। वे चाहते है कि चित्तौडगढ मे उनका सम्मेलन हो इससे पूर्व वे दिल्ली में आकर देखे कि उनका देश आजाद हो गया है। दिल्ली, चित्तौड़ तथा सारे भारत पर अब विदेशी राज्य नही रहा और अपने देशवासियो का राज्य हो गया है। इस मौके पर पडितजी स्वय गाड़िया लुहारो से बात करेगे और उस समय हम उनसे चित्तौड आने की तारीख निश्चित करायेगे। गाड़िया लुहार जबसे चित्तौड से गए है वे हैदराबाद, बम्बई, मध्यप्रदेश, मध्य भारत, पजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान आदि सभी प्रातो में फैले हुए हैं। उनका पेशा किसानो के औजार तैयार करना और बैलगाड़ियों मे फिरना है। उनको अपने औजार बनाने के लिए कच्चा माल नही मिलता और मिलता है तो तैयार हुए औजारो को वे सारे दिन तथा कभी कभी दो तीन दिन भटकने के बाद कम कीमत पर बेच पाते है। उनमे शराब पीने की बुरी आदत है जिसके कारण उनके पास पैसा बच नही पाता है। वे आपस मे खूब लडते है लेकिन उनका एक भी मुकद्दमा अदालत मे नही गया है। कन्या वाले शादी के मौके पर वर पक्ष से पांच सौ से दो हजार रुपये तक वसूल कर लेते है। उनमे शिक्षा बिलकुल नही है। वे भाव, भोपा, भूत, डाकिन मत्र तत्र के चक्कर मे पडे हुए हैं। बूढे और समझदारो के सिवाय अब वे चित्तौड़ की प्रतिज्ञा की कहानी भूलते जा रहे है कोई उनसे पूछता है तो कहते है कि चित्तौड़ की सतियो की आन है इसलिए घर नही बनाते है। ४०० वर्ष से अब तक उनकी किसी ने

सम्हाल नही की है। शहरो के नजदीक कुछ लोग अब बसने लग गये है। मगर लाखो लुहार अब भी प्रतिज्ञा पर दृढ है। बैलगाड़ियो मे तो वे खाट उल्टी बिछाते है मगर नीचे उतार कर कुछ लोग सीधी पर भी सोने लगे हैं। कुए से पानी खीचने का रस्सा वे अब तक नही रखते है। चित्तौड की कालिया माता की शपथ उनमे आज भी चल रही है।

इसलिए मैंने निश्चय किया हे कि सारे हिन्दुस्तान के गाड़िया लुहारो को चित्तौड बुलाया जावे। वे चित्तौड़ के नीचे ठहरे। उस दिन पडित जवाहरलाल नेहरू उनसे आकर कहे कि अब तुम्हारा देश हिन्दुस्तान आजाद हो गया है अब तुम चित्तौड़ पर चढो। आगे आगे पडित जी और पीछे गाड़ी लुहार सवारी के साथ चले। किले पर चढ़ने के बाद पडितजी उनके हाथ से तिरगा झडा विजय स्तम्भ पर फहरावे।

किले पर जाते समय प्रत्येक दरवाजे पर स्वागत हो। उदयपुर के महाराणा साहब भी उनका स्वागत करें और कहे कि अब हमारी शपथ पूरी हो गई आप चित्तौड़गढ पर चढो। उस समय गाड़िया लुहारो की ओर से पडित जी से निम्नलिखित प्रार्थनाए की जावें—

१. इन लोगो का धन्धा गाव गांव फिरने का है। इसलिए एक राज्य मे बस नही सकेंगे। मगर जिन जिन राज्यो मे बसना चाहते है उनको मकान बनाने और खेती के लिए जमीन दी जाय। बजर पडी जमीन के तैयार करने मे उनकी मदद की जावे। जमीन खेती के लायक होने के बाद लगान वसूल हो।
२. खेती की जमीन या तो नहरी राज्यो मे मिले या कुए खुदाने के लिए तकावी की व्यवस्था की जावे और उसकी लम्बी किश्ते की जावे।
३. अगर जगल पास हो तो मकान बनाने के लिए लकड़ी और पत्थर पहली बार मुफ्त दिलाया जावे।
४. प्रत्येक ३०० परिवारो पर बच्चो की पढाई के लिए पाठशाला खोली जावे और ५०० परिवारो के पीछे एक दवाखाना हो।
५. इनकी पंचायती दुकाने चलाई जाय जिनमे जरूरत की चीजे मिले।
६. इनके कच्चे लोहे का कोटा निर्धारित कर दिया जाय जो आबादी और वर्ष भर की आवश्यकता के अनुसार हो।
७. जितना तैयार माल वे बेच सके उसके बाद बचे माल को बेचने के लिए इन लोगो को भटकना नही पड़े और माल को बेचने की व्यवस्था, खादी भडारो, सहकारी समितियो, गांवो की पंचायतो द्वारा हो क्योकि जो माल वे तैयार करते है किसानो के काम आता है।
८. हाथो से बनाए हुए वे औजार जिनकी जरूरत सरकार को फार्म और एग्रीकल्चर स्कूल के लिए हो उन्ही लोगो से बनवाए जावे।
९. उनके बच्चो को लोहे की बढ़िया कारीगरी सिखाने की ट्रेनिंग दी जावे और उनको छात्रवृत्तियां दी जावे।

१०. आने वाले जमाने मे बिजली से सस्ते औजार तैयार होगे और उनके हाथ मे तैयार किए हुए औजार महगे पडेगे। इसलिए जहा भी उनकी बस्तियां बने वे स्थान ऐसे हो जहा बिजली आसानी से मिल सके और वे सस्ते औजार तैयार कर सके।

देहली मे गाडिया लुहारो को प्रधान मत्री से मिलाकर वर्मा जी सीधे चितौड आए और चित्तौड सम्मेलन की व्यवस्था मे जुट गए। उन्होने चित्तौड मे कांग्रेस तथा राजस्थान के मत्रियो की एक सभा बुलाई और स्वागत समिति का गठन किया। सर्व सम्मति से श्री माणिक्यलाल स्वागताध्यक्ष चुने गए और सम्मेलन की तैयारिया होने लगी। कार्यकर्ताओ के पास समय बहुत कम था। ११ फरवरी को स्वागत समिति का गठन हुआ और ६ अप्रेल को गाडिया लुहारो की प्रतिज्ञा पूरी कराई की तिथि निश्चित थी। वर्मा जी ने कार्यकर्ताओ को गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, हैदराबाद, पजाब आदि राज्यो मे गाडिया लुहारो को सम्मेलन मे भाग लेने के लिए आमन्त्रित करने के लिए भेजा वे स्वयं सम्मेलन की तैयारी मे जुट गए। राजस्थान सरकार का सहयोग प्राप्त कर वे सम्मेलन की तैयारिया करने लगे। वे महाराणा भूपालसिंह के पास गए। मेवाड के महाराणाओ का गाडिया लुहारो का जो अत्यन्त प्राचीन सबन्ध था उसकी उन्हे याद दिलाकर सम्मेलन के लिए उनका सहयोग मागा। उदार महाराणा ने पचास हजार रुपये सम्मेलन के लिए दिए। वर्मा जी ने इस ऐतिहासिक सम्मेलन मे देश भर के प्रमुख नेताओ को आमन्त्रित किया था राजस्थान के सभी प्रमुख राष्ट्रकर्मी समाज सेवक तथा मत्री सम्मेलन मे सम्मिलित हुए महाराणा भूपालसिंह ने अपने प्रतिनिधि के रूप मे महाराज कुमार भगवतसिंह जी को भेजा प्रधान मन्त्री श्री नेहरू के अतिरिक्त मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री रविशकर सात राज्यो के मुख्य मन्त्री तथा मुरारजी भाई ने भी इस सम्मेलन मे भाग लिया। वर्मा जी के प्रयत्नो के फलस्वरुप गाडिया लुहार सम्मेलन ने अखिल भारतीय महत्व प्राप्त कर लिया और देश के सभी समाचार पत्रो मे उसकी विशद चर्चा हुई थी।

वर्मा जी के प्रयत्नो के फलस्वरूप देश के विभिन्न भागो से चार हजार एक सौ पचहत्तर गाडिया लुहार इस सम्मेलन मे भाग लेने के लिए अपनी बैलगाड़ियो मे आने लगे १५ अप्रेल १९५५ को सभी गाडिया लुहार शिविर मे पहुँच गए। वर्मा जी ने इस अवसर पर गाडिया लुहारो मे जो दुर्गुण प्रवेश कर गए थे उनके निवारण के विचार से उनकी ५ अप्रेल १९५५ को एक सभा की। गाडिया लुहारो द्वारा पारस्परिक परिचय कराने के बाद वर्माजी ने एकत्रित गाडिया लुहारो से कहा कि अपने पूर्वजो की प्रतिज्ञा को पूरी करने और अपनी प्रिय मातृभूमि मे प्रवेश करने से पूर्व उन्हे शपथ लेनी चाहिए कि वे मद्यपान तथा कन्या विक्रय नही करेगे। वर्माजी के इस आवाहन पर गाडिया लुहारो ने सर्वसम्मति से वर्मा जी की बात को स्वीकार किया और शपथ ली।

वर्मा जी जहा पिछडी जातियो के उद्धारक थे वहा वे उनमे व्याप्त दुर्गुणो के कठोर आलोचक भी थे अतएव वे सदैव ऐसे अवसरो का उपयोग उन जातियो मे फैले हुए दुर्गुणो को समाप्त करने के लिए करते थे। यही उन्होने गाड़िया लुहारो के साथ किया

चित्तौर प्रवेश के पावन अवसर पर उन्होने गाड़िया लुहारो से शराब न पीने और कन्या विक्रय न करने की प्रतिज्ञा कराई ।

वर्मा जी केवल गाडिया लुहारो की प्रतिज्ञा पूरी करा कर ही चुप नही होगए उन्होने राजस्थान सरकार पर प्रभाव डाल कर समाज कल्याण विभाग के द्वारा चित्तौरगढ़ मे गाडिया लुहारो के बालको के लिए लुहार के काम को सिखाने के लिए एक प्राविधिक शिक्षण संस्था तथा छात्रावास स्थापित कराया । जिन राज्यो मे गाड़िया लुहार अधिकतर फिरते थे उन राज्यो मे उनकी बस्ती बसाने के लिए भूमि तथा आर्थिक सहायता दिलवाई । दिल्ली, ब्यावर, अजमेर , चित्तौरगढ पाली महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश गुजरात मे कुछ बस्तियां स्थापित भी हुई । यद्यपि राज्यो के समाज कल्याण विभागो की अकर्मण्यता और उदासीनता के कारण वर्मा जी जिस प्रकार गाड़िया लुहारो की बस्तिया बसाकर उनकी औद्योगिक बस्तियां स्थापित करना चाहते थे वैसा तो नही हो सका परन्तु कतिपय बस्तियां बस गई और गाडिया लुहार अब जहां सुविधाए मिलती है वहा वसने लग गए है । अब उनकी प्रतिज्ञा पूरी होगई इस कारण उनके लिए निरन्तर भटकते रहना आवश्यक नही रहा । यदि वर्माजी की योजना को राज्यो के विभाग लगन के साथ कार्यान्वित करते तो गाडिया लुहारों की समृद्धिशाली औद्योगिक वस्तिया दृष्टिगोचर होती । सरकार का ध्यान तो उसी वर्ग की ओर जाता है जिसके पास वोट है । घूमने वाली गाड़िया लुहार जाति के पास वोट नही है क्योकि वे घूमते ही रहते है अस्तु राज्य सरकार को उनकी ओर ध्यान देने का अवकाश नही है और आज उनकी सम्भाल करनेवाले वर्माजी जैसा उपेक्षितो का कोई त्राता नही है ।

अध्याय बारहवां

वर्माजी का रचनात्मक कार्य

वर्माजी ने किसानो तथा आर्थिक दृष्टि से अभावग्रस्त और पिछडे वर्ग के शोषण और उत्पीडन के विरुद्ध जीवन भर सतत सघर्ष किया। मेवाड़ प्रजामडल के द्वारा उत्तरदायी शासन की स्थापना तथा देश की स्वतन्त्रता का युद्ध लडा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त वे वरावर इस प्रयत्न मे रहे कि काग्रेस शक्तिवान बने और वह प्रगतिशील नीतियो को स्वीकार करे। जब कभी भी काग्रेस मे किसी नीति सम्वन्धी प्रश्न पर मतभेद खडे हुए उन्होने सदैव प्रगतिशील नीति का समर्थन किया। उदाहरण के लिए वे राजाओं के प्रिवीपर्स के प्रारम्भ से ही विरोधी थे और उसे समाप्त कर देने के पक्ष मे थे। भूमि सुधारो के कानून को अविलव लागू करने और जोत की अधिकतम सीमा निर्धारित कराने के लिए वे सदैव सरकार पर अपना प्रभाव डालते रहे और जीवन के अन्तिम दिनो मे वे तत्कालीन सरकार की अधिकतम जोत सीमा के कानून का कड़ाई से पालन न करने के कारण वहुत रुष्ट और क्षुब्ध थे जीवन के अन्तिम दिनो मे उन्होने लाखो भूमिहीनो को संगठित कर वलपूर्वक भद्र राजनीतिक किसानो तथा जागीरदारो की भूमि को जोतने का आदोलन खड़ा करने का निश्चय किया था। कहने का तत्पर्य यह है कि वे मूलतः राजनीतिक पुरुप थे परन्तु उनके रचनात्मक कार्यों का क्षेत्र भी वहुत अधिक विस्तृत और महत्वपूर्ण था। जहा उनके राजनीतिक कार्य, उनके सघर्ष और आदोलन, उनके राजनीतिक व्यक्तित्व के प्रकाशवान और तेजस्वी पक्ष के प्रतीक है वहा उनके रचनात्मक कार्य तथा पिछडे और उपेक्षित वर्गो की सेवा के कार्य उनके अन्तर मे जो निर्धनो, पिछडे और दलित वर्गो के प्रति गहन सहानुभूति और प्रेम था उसके प्रतीक है। राजनीति के रोमाचकारी, सत्ता सघर्ष, और दलगत राजनीति मे व्यस्त लोगो मे वर्माजी के समान उपेक्षितो निर्धनो और शोपित वर्गो के लिए ऐसा गहरा प्रेम उनकी सेवा के लिए अपने जीवन को लगा देने वाले राष्ट्रकर्मी उगलियो पर ही गिने जा सकते है।

सामाजिक कुरीतियों का विरोध—पर्दा :

जहा वर्माजी राजनीतिक विचारो मे उग्र और प्रगतिशील थे वहा सामाजिक कुरीतियो और रूढियो के भी उतने ही कट्टर विरोधी थे। स्त्रियो में पर्दा की प्रथा उनको असहनीय थी वे उसके गहरे विरोधी थे। उन्होने यह नियम बना रखा था कि वे उस

व्यक्ति के यहां कभी भोजन नही करते थे जिसकी पत्नी पर्दा करती हो। जब कोई काग्रेसी कार्यकर्त्ता अथवा अन्य व्यक्ति को अपने यहां भोजन करने के लिए आमत्रित करता तो उनकी पहली शर्त यह होती थी कि उनकी पत्नी घूघट खोलकर पुरस्कारी करें तभी वे उनका निमंत्रण स्वीकार करेंगे। ऐसा अनेको बार हुआ कि उनके निकट के कार्यकर्त्ता अपनी सहधर्मिणी को यदि पर्दा तोडने के लिए तैयार न कर सके तो वर्मा जी ने उनके यहां भोजन नही किया। इसी प्रकार यदि किसी विवाह मे कन्या या वधू घूघट मे हो तो वे उस विवाह मे सम्मिलित नही होते थे यदि उन्हे यह पता चल जाता कि कोई कांग्रेस कार्यकर्त्ता अपनी पत्नी से पर्दा कराता है तो वे उससे कहते कि तुम देश को आगे नही ले जा सकते, और उसे प्रोत्साहित करते। एक कांग्रेसी विधान सभा के सदस्य के सम्बन्ध मे उन्हे सदेह हो गया कि उनकी पत्नी पर्दा करती है तो स्वय उनके घर गए पत्नी को बुलाने के लिए कहा, एम. एल ए अन्दर गए तो निकले ही नही, तो उनके एक सबधी को अन्दर भेजा परन्तु वह भी नही निकला। वैसी दशा मे उनके समर्थको ने यह कह कर उनका पक्ष लिया कि उनकी पत्नी गर्भवती है इस कारण वर्माजी के सामने आने मे सकोच करती है। वर्मा जी यह कह कर कि फिर कभी परीक्षा करू गा चल दिए एक बार वर्मा जी एक प्रमुख काग्रेस कार्यकर्ता की पुत्री के विवाह में सम्मिलित हुवे उन्हे यह कल्पना भी नही थी कि उनकी पत्नी पर्दा करती होगी। उन्होने डायरी मे लिखा कि पुत्री भी घूघट मे थी और माता भी घूघट मे थी ऐसे विवाह मे मै सम्मिलित हुआ यह बात मेरे मन मे खटकती रहेगी उक्त कार्यकर्ता से उन्होने बाद मे कहा और निश्चय कर लिया कि भविष्य मे पूछ कर ही सम्मिलित हुआ करू गा। वे जब गांवो में जाते, अथवा आदिवासी लोगो मे जाते, महिलाओ की सभा मे भाषण देते, तो सबसे पहले महिलाओ से घूघट खुलवाते। अनेक युवको ने वचन दिया कि वे अपनी पत्नियो से पर्दा नही करवायेंगे जब वे युवक मिलते तो पूछते पत्नी पर्दा तो नही करती। अवश्य ही वर्मा जी ने पर्दा प्रथा को समाप्त करने के लिए कोई सस्था अथवा सगठन खडा नही किया किन्तु अपने व्यक्तिगत प्रभाव से ही हजारो स्त्रियो को पर्दे से मुक्त कर दिया।

राजस्थान मे मृत्यु भोज की पुरानी परम्परा थी वर्मा जी मृत्यु भोज के घोर विरोधी थे और जहा भी जाते मृत्यु भोज का विरोध करते। बिजोल्यां के किसानो ने एक मृत्यु भोज किया वर्मा जी को पता लगा उन्होने पत्र लिखा वह उनके विचारो की दृढता का द्योतक है।

श्री सरपंच तथा किसान भाई बहनो,

"मै हमेशा इस बात पर जोर देता हूँ कि हमे मृत्यु भोज बन्द करना खुशी से मजूर करना चाहिए। इसके बाद भी बहुमत ने इस सौगन्ध को तोड़ा है मुझे अब इस फौज के साथ नही रहना। जिसको अपने वचनो, सौगधो, की इज्जत का ख्याल न हो। ऐसे लोगो के भरोसे देश खेत मे पड़ सकता है। हमने वर्षों तक एक दूसरे का मुसीबत मे साथ दिया खूब लडे और स्वराज्य आ गया किसानो के जुल्मो का अन्त हो गया। अब आप पर कोई कर्जा नही, दबाव नही, आप अपने घर के मालिक हो गए। चाहे

बनावो या बिगाड़ो अब आपको मेरी सेवा की जरूरत नही है। कोई खतरा नही। आप खूब फलना फूलना और देश की इज्जत बचाने और अपनी साख कायम करने में जब कभी आपकी समझ आवे मदद करना। मै आपसे विदा लेता हूँ।" इसके उपरान्त लबे समय तक वर्मा जी बिजोल्या नही गए। जब बिजोल्या पंचायत ने क्षमा मागी और प्रतिज्ञा को दोहराया तो बिजोल्यां जाना शुरू किया।

आदिवासियों में प्रचलित कुरीतियां :

राजस्थान मे सभी पिछड़ी हुई जातियो तथा आदिवासियो में कन्या का पिता विवाह के समय "दापा" वर पक्ष से एक बड़ी रकम ले लेता है पुरुष एक से अधिक स्त्रियां रखते थे, जिस स्त्री का पति जीवित हो उससे भी नाता कर लेते थे। वर्मा जी ने आदिवासियो के तथा पिछडी जातियो के उत्थान का जितना प्रशसनीय कार्य किया है वैसे कार्य इस बापा के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति ने नही किया। वे इन जातियो के सम्मेलन बुलाते और उनसे प्रतिज्ञा कराते कि जीवित पति की पत्नी से नाता नही करूंगा, अपनी एक पत्नी के रहते दूसरी पत्नी नही करूगा, शराब नही पियूगा और इन जातियो की पचायतों से यह निश्चय करवाते कि दापा (कन्या का मूल्य) की रकम जो प्रचलित है उससे एक चौथाई ली जावेगी। जब कुछ व्यक्ति ऊपर लिखी शपथ लेते और पचायत दापा की रकम को कम करने का निश्चय कर लेती तो वर्मा जी क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता से कहते कि वे उन्हे समय समय पर रिर्पोट दे कि शपथ के अनुसार कार्य हो रहा है या नही। वे जब उस क्षेत्र मे पहुचते तो उन लोगो के बुलाते और जाच करते कि वे शपथ को निभा रहे है। मेवाड, डूगरपुर, बासवाड़ा, प्रतापगढ का कोई ऐसा गाव या भील पाल नही है जहा वर्मा जी न पहुचे हो और जहां के स्त्री पुरुषो को वे निकट से न जानते हो। अतएव जो लोग शपथ लेते थे उनकी जांच वे आसानी से कर लेते थे। यदि उन्हे ज्ञात होता कि किसी जाति की पचायत अथवा गाव वालो ने शपथ को तोड़ दिया है तो वे कहलवा देते कि मै तुम लोगो से अब कोई सम्बन्ध नही रखूंगा। समस्त मेवाड अंचल और दक्षिणी राजस्थान के किसान आदिवासी और पिछड़े वर्ग के लोग जानते थे कि उनके एक मात्र हितैषी सहायक और पथप्रदर्शक वर्माजी ही है। अस्तु उनके प्रतिनिधि उनके पास आते भूल के लिए क्षमा चाहते और उन्हें पुन. ले जाते।

लेखक ने वर्मा जी को बहुत निकट से देखा है। इन जातियो के सुधार के लिए जो बडी से बड़ी सस्थाए नही कर सकती थी वह अकेले वर्मा जी ने किया। हजारो पुरुषो से उन्होने शराब छुड़ाई। हजारो स्त्रियो का पर्दा समाप्त कर दिया, और जिन गावो से उनका अधिक घनिष्ट सम्बन्ध था वहां बहुपत्नी प्रथा तथा जिसका पति जीवित है उससे नाता करने तथा दापे की कुप्रथा को बहुत कम हो गई। यह उनके जन साधारण विशेष कर पिछड़ी जातियो पर गहरे प्रभाव और उनमे उन लोगो के अटूट विश्वास का परिणाम था।

पिछड़ी हुई तथा घुमंतू जातियों का विकास :

वर्मा जी ने अपने जीवन के पिछले पन्द्रह वर्ष अधिकतर आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से पिछडी जातियो तथा एक स्थान पर न रहकर घूमते रहनेवाली जातियो के आर्थिक और सामाजिक विकास के कार्यो मे ही लगाए उनके अन्तर मे इन जातियो के लिए कितना गहरा प्रेम था यह इसी से ज्ञात हो सकता है कि एक बार एक प्रसिद्ध राष्ट्र कर्मी ने उनसे पूछा कि आप अध्यात्मिक जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते है तो वर्मा जी ने उन्हे उत्तर दिया कि किसान, आदिवासी, पिछडी जातियो और घुमतू जातियो के कष्टमय और अभावग्रस्त जीवन मे यदि मैं थोडी प्रसन्नता ला सकू उनके कष्टो को कम कर सकूं यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना और भक्ति है।

वर्मा जी ने ३-११-६१ को तत्कालीन केन्द्रीय गृह मत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को अत्यन्त वेदना भरे शब्दो मे लिखा था :—

"महात्मा गाधी तथा ठाधुर वापा के प्रयत्नों के फलस्वरूप हरिजनों तथा आदिवासियो के आर्थिक और सामाजिक उत्तरदायित्व को देश के विधान मे सम्मिलित तो कर लिया गया है। गाधीजी व ठक्कर वापा का ध्यान हिन्दुस्तान की उन जातियो की ओर नही गया जो सदैव घूमती ही रहती है न उनके घर हे न उनके पास जमीन है, और न उनके जीवन की स्थिरता ही है। आज उनका यहा पड़ाव मिलेगा तो कल दस मील दूर जगल मे दिखाई देगे। हिन्दुस्तान की आजादी के इन पन्द्रह वर्षो के वाद भी वे भारत के नागरिक नही है, वे मतदाता नही है, उनका वोट नही है, इस प्रकार के लाखो स्त्री पुरुष बाल बच्चे भारत माता की गोद मे पैदा होते हुए भी उसके सुपुत्र नही है। हिन्दुस्तान की किसी पार्टी तथा किसी सभ्य नागरिक ने आज तक कभी भी इन पर निगाह नही डाली। क्योकि वे वोट से वचित है और आज जिनके पास वोट नही है उसे कोई पूछनेवाला नही है। मै आपका ध्यान उन जातियो की तरफ दिलाना चाहता हूँ जो वजारा कालवेलिया, गाडिया लुहार, साठिया, वनवावरी के नाम से मशहूर है। ये उत्तर प्रदेश, पजाव, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, आन्ध्र, कर्नाटक आदि प्रान्तो मे घूमते रहते है।

उन्हे यह बात बहुत अखरती थी कि भारत मे ऐसी भी घुमन्तू जातियां हे जिनको मताधिकार प्राप्त नही है। वे वास्तविक अर्थो मे भारत के नागरिक नही है।

गाडिया लुहारो को वसाने के लिए तथा उनके आर्थिक तथा सामाजिक विकास के लिए वर्मा जी ने भागीरथी प्रयत्न किया उसका विवरण हम एक स्वतन्त्र अध्याय मे कर चुके है।

हरिजनो के लिए गांधी जी ने हरिजन सघ की स्थापना की थी। आदिम जाति सेवक सघ की भी स्थापना की थी। वर्मा जी उसके जीवनदानी सदस्य थे। परन्तु घुमन्तू जातियो में सेवाकार्य करने के लिए कोई अखिल भारतीय संस्था नही थी। वर्मा जी ने केन्द्रीय नेताओ से इस सवंध मे वात की और उनके प्रयत्नो के फलस्वरूप "भारतीय घुमन्तू जनसेवा सघ" की स्थापना १९६१ मे हुई। श्री ढेवर भाई उसके

अध्यक्ष और वर्मा जी उसके प्रधान मंत्री चुने गए। वर्मा जी आजीवन घुमन्तू जन सेवक संघ के महामंत्री के रूप में इन जातियो के लिए कार्य करते रहे। भारत की जिन जातियों की ओर किसी की भी दृष्टि नही गई उनकी वर्मा जी ने आजन्म सेवा करना ही अपना धर्म और व्रत बना लिया था। वे यह जानते थे कि आजकी राजनीति मे जिस वर्ग या जाति के पास वोट नही है उसकी ओर किसी का भी ध्यान जानेवाला नही है और रचनात्मक कार्यकर्ताओ की वह पीढी भी समाप्त हो रही है जो बिना राजनीतिक स्वार्थ के सेवा का कार्य करती थी। अस्तु घुमन्तू जातियों की दशा तभी सुधर सकती है जबकि वे स्थायी रूप से कही बसें। अस्तु उन्होने घुमन्तू जनसेवक सघ के माध्यम से उनको बसाने का कार्य हाथ में लिया तथा केन्द्रीय सरकार ने संघ को सहायता दी।

भारत मे यो तो कई घुमक्कड जातियां हैं परन्तु मुख्य घूमन्तू जातिया बंजारा, गाड़िया लुहार, कालबेलिया, साठिया और बनबावरी है। वर्मा जी ने इनको बसाने का प्रयत्न किया।

बंजारा :

बंजारा जाति व्यापार करती थी माल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती थी एक-एक बंजारे के पास सैकड़ो और हजारो बैल होते थे जिसे बालद के नाम से पुकारते थे। किसी किसी बजारे के पास लाख बैल भी होते थे और वह लक्खी बंजारा कहलाता था। अंग्रेज शासन से पूर्व देश के भीतरी भागो का सारा व्यापार उनके हाथो मे था परन्तु अंग्रेजी शासन के साथ-साथ यातायात के साधनो का विकास के साथ उनका व्यापार भी चौपट हो गया परन्तु किसी ने भी उनको आर्थिक दृष्टि से जमाने की ओर ध्यान नही दिया फलत. वे अत्यन्त निर्धन हो गए। बनजारो की जाति घुमन्तू जाति है ४ उपजातियां हैं (१) बामणिया (२) गवारिया (३) मारु (४) लबाना यह चारो उप जातियां राजस्थान मे पायी जाती है। वर्मा जी ने राजस्थान के बजारो को बसाने का कार्य अपने हाथ मे लिया। राजस्थान सरकार से उनके लिए भूमि और आर्थिक सहायता प्राप्त की। वर्मा जी ने उन्हे शाहपुरा, भूपालसर, भदेसर तहसीलों और मावली और वल्लभनगर की तहसीलो मे बसाया। इन बस्तियो मे जाइए आज भी इन बस्तियों मे बसे हुए बंजारे वर्मा जी को श्रद्धा और आदर के साथ याद करते हैं। अब वे खेती करने लगे है।

कालबेलिया (संपेरे) :

कालबेलिया घुमक्कड़ जाति है। सापो को पकड कर उन्हे नियन्त्रण मे रख कर सर्वसाधारण को उनके खेल दिखाते हैं। विष का इलाज करना, सांप का जहर उतारना इनका मुख्य कार्य हैं तथा जादू टोना भी करते हैं। राजस्थान के उत्तरी पूर्वी भाग मे इन्हे कालबेलिया तथा दक्षिण पश्चिम भाग मे जोगी के नाम से पुकारा जाता है। यह नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी है। जंगलो से इमारती लकड़ी, खानो से गेरू गधो पर लाद

कर इधर उधर पहुंचाना इनका सहायक धधा है। इनकी स्त्रियां गीत गाकर भीख मांगती है।

वर्माजी ने उन्हे उदयपुर, अजमेर, चित्तौडगढ़ मे बसाकर सरकार से जमीन दिलाई। अब वे खेती करने लगे है।

साठिया :

साठिया भी गाडिया लुहारो की तरह भी घुमक्कड जाति है जो वस्तुओ का क्रय विक्रय करते है तथा बनवावरी जाति मरुभूमि मे रहती है और वहा मिलनेवाले विषैले जीव जन्तुओ को पकड कर अपनी उदरपूर्ति करती है। वर्माजी का ध्यान साठियो बनबावरियो तथा अन्य घुमन्तू जातियो की ओर भी गया था परन्तु वे उनके लिए कुछ कर नही पाए।

शिक्षा सम्बन्धी कार्य :

यद्यपि वर्मा जी को विधिवत शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त नही हुआ था परन्तु वे शिक्षा के कार्य को बहुत अधिक महत्व देते थे। हरिजनो, आदिवासियो, अनुसूचित जातियो, पिछडी जातियो घुमन्तू जातियो तथा किसानो के आर्थिक उद्धार का जहां उन्होंने भागीरथी प्रयत्न किया वहा उन्होने उनके बच्चो के लिए शिक्षा की व्यवस्था की ओर जितना ध्यान दिया उतना अन्य किसी कार्य की ओर नही दिया। उन्होने उनके लिए शिक्षण संस्थाए स्थापित नही कराईं वरन छात्रावास स्थापित किए जहां इन जातियो के बालक निवास, भोजन, वस्तु तथा पुस्तके प्राप्त कर सकें और स्थायी राजकीय तथा निजी शिक्षण सस्थाओ मे शिक्षा प्राप्त कर सके। राजस्थान मे नगरो तथा अन्य पिछडी जातियों के लिए छात्रावासो का एक जाल सा बिछा हुआ है, वह इन पिछडी जातियो को एक मात्र वर्मा जी की देन है। जहा वे देखते कि किसी क्षेत्र में इन जातियो के बच्चे गांवो के स्कूलो मे पढ़ने लगे है उसी क्षेत्र के नगर या कस्वे जहा कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय होता या कालेज होता वे या तो समाजकल्याण विभाग के निदेशक अथवा मंत्री और मुख्य मत्री से मिलकर राजकीय छात्रावास स्थापित कराते जहा गांवो से आने वाले बच्चो के लिए निवास, भोजन वस्त्र पाठ्य पुस्तको की व्यवस्था राज्य की ओर से की जाती अथवा वे राज्य द्वारा स्थानीय समाजसेवी सस्थाओ को छात्रावास के लिए अनुदान दिलवाते, और उनकी देखरेख मे छात्रावाम स्थापित करते। यही नही कि वे केवल छात्रावास स्थापित कराते थे स्वय उन छात्रावासो मे बहुधा जाते, बच्चो के मध्य रहते, उनके मनोभावो को जानने का प्रयत्न करते, उनकी समस्याओ का अध्ययन करते और राज्य सरकार से उनके अभावो को दूर करवाने का प्रयत्न करते। वर्मा जी लगातार दौरा करते थे। एक महीने मे वे २६ या २७ दिन तो राजस्थान के विभिन्न भागो मे दौरा करते थे, और केवल ३ या ४ दिन उदयपुर अपने मकान पर रहते थे। वहा भी उनका अधिकाश समय राजनीति अथवा रचनात्मक कार्यकर्ताओ से बातचीत करने मे व्यतीत होता। उनकी पत्नी उनके बच्चो और उनके परिवार को कठिनाई से एक महीने में

चौवीस घंटे वे दे पाते थे। सही अर्थो में उन्होने अपने को देश के लिए अपर्ण कर दिया था। हा तो वे अपने दौरे में जहा भी पहुँचते यदि वहा कोई छात्रावास होता, घुमन्तू जातियो की कोई बस्ती होती, भीलो का कोई वन सहकारी समिति होती, अथवा समाज सेवी सस्था होती तो वहा वे अवश्य जाते और उनकी देखभाल करते।

समाज कल्याण विभाग के निदेशक तथा अन्य अधिकारी इन छात्रावासों का जितना निरीक्षण करते थे उससे कई गुना अधिक वर्माजी देखभाल करते थे। सच तो यह है कि राजस्थान का समाज कल्याण विभाग एकमात्र वर्माजी के कारण सक्रिय और जागरूक रहता था। बहुधा वे समाजकल्याण विभाग के अधिकारियो को अपने साथ ले जाते थे। समाज कल्याण विभाग ने अनुसूचित जातियों, आदिवासियो और पिछड़ी जातियो के कल्याण के लिए जितनी योजनाएं हाथ में ली यदि उनके इतिहास का अध्ययन किया जावे तो उनके पीछे वर्माजी का हाथ था। वे अवैतनिक गैरसरकारी समाजकल्याण विभाग के प्रतिनिधि थे। श्री ठक्कर बापा को छोडकर किसी एक व्यक्ति ने इन पिछड़ी जातियो के इतना नही किया जितना कि वर्माजी ने किया।

यद्यपि वर्माजी ने शिक्षा सबधी कार्य में छात्रावासो की स्थापना को प्राथमिकता दी परन्तु कन्याओ की शिक्षा के लिए भीलवाडा मे उन्होने महिला सदन की स्थापना की जिसका सचालन श्रीमती नारायणी देवी करती है। उसके अतिरिक्त उन्होने उदयपुर मे वनवासी लडकियो के लिए एक छात्रावास की स्थापना की जिसमे रह कर यह बालिकाएं उदयपुर की विभिन्न शिक्षण सस्थाओ, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से लेकर विश्व-विद्यालय तक की शिक्षा प्राप्त करती है। यही नही उदयपुर मे उन्होने एक बडे छात्रावास की स्थापना करने मे पहल की जिसमे बाहर गावो से आनेवाले युवक जो विश्वविद्यालय मे पढते रहते है। जहा कभी वे दौरा करते और देखते कि उस क्षेत्र मे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नही है तो वे वहाँ के कार्यकर्ताओं से मिलकर भवन निर्माण के लिए धनराशि एकत्रित करवाते और शिक्षाविभाग के निदेशक, शिक्षा मत्री, तथा मुख्य-मत्री से मिलकर वहा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खुलवाते। शिक्षा के क्षेत्र मे वर्माजी की देन अमूल्य रही है। आज के आत्मविज्ञापन के युग मे वर्माजी एक ऐसे निस्पृह व्यक्ति थे कि उन्हे कभी इस बात की इच्छा नही हुई कि वे किसी संस्था के अध्यक्ष बने अथवा जो बहुत सी सस्थाए एक मात्र उनके प्रयत्नों से स्थापित हुई उनके साथ उनका नाम जोडा जावे। आज सस्थाएं व्यक्तिगत जागीरो का रूप धारण करती जाती है वर्माजी सस्था खडी करते और उसके लिए अथक परिश्रम करते और फिर किसी कार्यकर्त्ता अथवा कार्यकर्ताओ के समूह को सुपुर्द कर उससे अलग हो जाते। वर्माजी ने उदयपुर मे अनुसूचित जातियो मे कार्य करने के लिए उन्ही जातियों के युवको को प्रशिक्षण देने के लिए एक सस्था स्थापित की थी। लेखक उस समय महाराणा भूपाल कॉलेज का आचार्य था। उस संस्था की देखभाल और सचालन का भार उन्होंने लेखक पर छोड दिया स्वयं उससे अलग हो गए। उन्हे पद या सत्ता का मोह नही था उनका एकमात्र लक्ष्य यह था कि जो उपेक्षित, दलित, निर्धन और पिछडा वर्ग है उसकी आर्थिक सामा-

जिक शैक्षणिक उन्नति हो और वह मानवोचित जीवन व्यतीत कर सकें।

जीवन के अन्तिम वर्षो मे वर्माजी राजस्थान सरकार से राजस्थान मे अधिकतम जोत कानून को क्रियान्वित करने के सबध मे निराश हो गए थे। उनके मन मे इस बात को लेकर गहरा रोष और क्षोभ था। उन्होने देख लिया कि काग्रेस के मत्री, एम. एल. ए. तथा प्रभावशाली कार्यकर्ता भी भद्र-किसान बन गए हैं उनके पास भी बडे वडे फार्म हैं वे भी मेहनतकश है अतएव वे इस कानून को विफल और प्रभावहीन कर देना चाहते है। मुख्य मत्री श्री सुखाडिया तथा मत्रिमडल चुपचाप निष्क्रिय और मेहनतकशो के इस शोषण को सहन कर रहा है। राजस्थान सरकार से जब वर्माजी सर्वथा निराश हो गए और उनका इस सबध मे किया गया परिश्रम निष्फल हो गया तो उनका मन रोप और क्षोभ से भर गया और उनके अतर का योद्धा पुन सजग हो गया। उन्होने निश्चय किया कि अब सरकार से बात नही करनी उन भूमिहीन खेत मजदूरो, किसानो, आर्थिक दृष्टि से पिछडे लोगो को जिनकी आजीविका का कोई साधन नही है उनको सगठित कर बलपूर्वक बडे भू-स्वामियो की जमीन पर अधिकार करना होगा। उनकी योजना थी कि इन लाखो व्यक्तियो को सगठित कर भूमि पर बलपूर्वक अधिकार किया जावे और सरकार से सघर्प की तैयारी की जावे। जो भूमिहीनो का आदोलन देश मे बाद को हुआ और थोडे दिनो मे ही समाप्त हो गया, उस प्रकार के लम्बे और व्यवस्थित संघर्प की वर्माजी ने तैयारी आरभ कर दी थी और यदि उनकी शीघ्र ही मृत्यु न हो गई होती तो समस्त भारत चकित होकर उस व्यापक भूमि छीनो सघर्प को देखता। एक बार वडे व्यापक रूप मे बिजोल्या आदोलन की पुनरावृत्ति होती। उन्होने इस संघर्प के लिए तैयारी आरभ करदी थी। भूमि क्राति की इस योजना को उन्ही के शब्दों मे पढिए—

क्राति के लिए आवाहन
वीर भूमि चित्तौड दुर्ग के जयस्तम्भ के नीचे
कार्यकर्ताओ द्वारा प्रतिज्ञा

साथियो,

हमारे देश की आजादी के बीस वर्प बाद भी हम किसानो, भूमिहीनो के जमीन के मामले को हल नही कर पाए है। जहां किसानो के परिवार बढे हे वहा इधर लोगो की भूख भी जमीन के लिए बढ रही है, वहा परपरागत जमीदार जागीरदार राजा महाराजा और सेठ साहूकार आदि भूस्वामियो के पास लाखो बीघा जमीन है जिस पर वे श्रमिको द्वारा काश्त करवाकर बैठे बैठे खा रहे है। मेहनतकश किसान और मजदूर आज बेजमीन बना हुआ है और उसकी मेहनत का मुआविजा साधनसपन्न लोगो की जेब मे चला जाता है। इस समूचे शोषण को जड से उखाडने के लिए हमे एक बारगी पुन पूरी ताकत से जुट जाना होगा। बिना पूरी ताकत से जुटे बिना पूरी शक्ति लगाए और आदोलन मे मोड दिये बिना यह क्रातिकारी काम सभव नही है।

हमें यह ध्यान रखना है कि बगाल के नक्सलबाड़ी मे केवल कम्युनिस्टो का

ही आंदोलन नही था जनता भी भुखमरी और बेकारी के कारण साथ थी। आए दिन बढनेवाली बेकारी और भुखमरी कही हमारे जनतन्त्र के लिए सरदर्द न हो जावे। अतः दोस्तो, सावधानी के साथ सचेष्ट हो आगे आइये और बाजी को हाथ से न जाने दीजिए अन्यथा देश मे अधिनायकवाद लाने की जिम्मेदारी से हम बरी नही हो सकेगे आखिर हम निष्क्रिय रहेगे तो जमाना इन्तजार नही करेगा।

सभी साथियो से मेरा अनुरोध है कि इसी आगामी ३० जनवरी १९६२ को शहीद दिवस के पुनीत पर्व पर चित्तौड़ पहुँचकर ९ बजे प्रात काल जयस्तम्भ के नीचे प्रतिज्ञा ले। यदि किसी कारणवश चित्तौड पहुँच कर प्रतिज्ञा न ले सके तो ३० जनवरी को अपने स्थान पर ही प्रात.काल ९ बजे प्रतिज्ञा को दुहरावे और साथवाले प्रतिज्ञापत्र को भर कर भेज दे।

—माणिक्यलाल वर्मा

प्रतिज्ञा

मै ....उम्र.......... निवासी .... तहसील.............जिला...........
प्रतिज्ञा करता हूं कि उपरोक्त क्रान्ति के काम मे किसानो को जमीन दिलाने, जमीन पर कब्जा करवाने मे पूरी तरह किसानो और शोषितो का साथ दूगा। इस प्रक्रिया मे जो भी तकलीफे, जेल, लाठी गोली आदि आदि सामने आयेगी खुशी खुशी झेलूगा। इसके बदले मे किसी प्रकार का पुरस्कार नही चाहूँगा और हसते हसते कुरबान हो जाने को तैयार रहूँगा।

ह०

पूरा नाम पता

जवाहरनगर की बस्ती :

वर्मा जी ने धरियावद मे जवाहरनगर की भील बस्ती बसाने का निश्चय किया। राज्य सरकार को उसके लिए तैयार किया। एक बडी योजना बनाई गई। पाच सौ परिवारो की बस्ती की योजना थी परन्तु प्रथम चरण में केवल २०० परिवारो को बसाने का निश्चय किया गया। उदयपुर जिले मे धरियावद तहसील सघन वन से आच्छादित है। यह बस्ती धरियावद से तीन मील झाकम नदी के दोनो ओर बसाई गई है। २६ जनवरी १९५६ को वर्मा जी ने काग्रेस अध्यक्ष श्री ढेवर से उसका शिलान्यास करवाया। वर्मा जी के प्रयत्नो से ५०० भील परिवारो की बस्ती बसाई गई। जगल साफ किया गया, सहकारी समितियो के द्वारा खेती के लिए सभी सुविधाए उपलब्ध की गई। वर्मा जी ने यह नियम बनवाया कि जो शराब पीयेगा उसको बस्ती मे रहने नही दिया जावेगा। कुछ परिवार इस कठिन शर्त के कारण चले भी गए परन्तु उन्होने इस शर्त को ढीला नही होने दिया।

कथोड़ियों की बस्ती :

इसी प्रकार वर्मा जी ने कथोड़ियो को भी बसाया। वे कत्था के व्यापारियो के आर्थिक दास थे। उनकी आर्थिक दशा बहुत ही खराब थी। उन्होने कथोड़ियो को बसाया

और खैर से कत्था बनाने के लिए उनका सहकारिता के आधार पर सगठन किया। वर्मा जी ने कितने ही परिवारो को वसाया और उनकी आर्थिक स्थिति के सुधार का जो भी कार्य हुआ वह एकमात्र वर्मा जी के प्रयत्नो का ही परिणाम है।

सहकारी संगठन :

भीलो तथा अन्य अनुसूचित जातियो को वसाने तथा खेती के लिए जमीन दिलाने का तो काम वर्मा जी ने किया ही साथ ही वनो मे रहनेवाली इन जातियो की वन श्रमिक सहकारी समितिया स्थापित करदी कि जो वन विभाग से वनो का ठेका लेती थी और वन सम्पति, लकड़ी आदि को वेचने का ठेका लेती थी तथा वन सम्पत्ति लकडी आदि को वेचने का काम करती थी। अभी तक यह लोग ठेकेदारो के शोषण के शिकार थे अब उनकी सहकारी समितिया बनाकर वर्मा जी ने उनको ठेकेदारो के शोषण से मुक्त कर दिया। उसके लिए वे वन विभाग, सहकारिता विभाग के अधिकारियो से मिलते, मत्रियो और सचिवो के यहा जाते और इन पिछडी जातियो के आर्थिक विकास के लिए कार्य करते। उदयपुर, वासवाड़ा, डूगरपुर और चित्तौड जिलो मे तथा राजस्थान पाकिस्तान की सीमा पर जैसलमेर, वाडमेर और बीकानेर आदि जिलो में वर्मा जी के प्रयत्नो के फलस्वरूप ही सहकारी समितियो का विकास हुआ।

सिंचाई के साधनों के लिए प्रयत्न :

वर्माजी लगातार गावो मे दौरा करते थे। वर्माजी ने गावो की समस्याओ का जितने नजदीक से अध्ययन किया था वे गाववालो और किसानो की समस्याओ को जितनी अच्छी तरह से जानते थे अन्य कोई भी राष्ट्रकर्मी या राजनीतिक कार्यकर्ता नही जानता था। यही कारण था कि वे सिंचाई विभाग तथा कृषि विभाग को वरावर नई योजनाओ के लिए सुझाव देते थे। कहा तालाव वनाना चाहिए, कहा ट्यूब वेल लगाना चाहिए, कहा कोई वडी सिंचाई योजनाए कार्यान्वित की जानी चाहिए, वे इसके लिए प्रयत्न करते। यही नही जहा वडे वडे तालाव वाघ-राणाप्रताप सागर, भेजा वाध आदि बने और उसमे डूवनेवाले गावो के किसानो ने उनका विरोध किया तो सिंचाई विभाग ने प्रत्येक सिंचाई योजना को कार्यान्वित करने मे वर्माजी की सहायता ली। वर्माजी उन गावो के विरोध को समाप्त कराने, उनको क्षतिपूर्ति दिलाने तथा उनको जो कि सिंचाई योजना के कारण उजड जाते उनको वसाने और जमीने दिलाने का दायित्व अपने ऊपर ले लेते। यदि वर्माजी न होते तो कई स्थानो पर विरोधी राजनीतिक दल आन्दोलन खडा कर देते और सिंचाई योजनाए खटाई में पड़ जाती किसान वर्माजी को अपना सबसे वडा हितू और शुभेच्छु मानते थे अस्तु वर्माजी का कहना वे स्वीकार कर लेते थे।

जहा वर्माजी राज्य को इतना सहयोग देते थे वहा यदि उनको यह प्रतीत होता कि राज्य का विभाग किसी क्षेत्र विशेष के प्रति उदासीनता और उपेक्षा दिखाता है और लगातार प्रयत्न करने पर भी सरकार सक्रिय नही होती तो वे उग्र रूप धारण कर लेते थे और कांग्रेस सरकार का विरोध करने मे भी सकोच नही करते थे। किसानो का हित ही उनके लिए सर्वोपरि था।

इस सम्बन्ध मे मुझे एक घटना याद आती है। भीलवाडा और बिजोल्या के मध्य मडाल का एक तालाब बनाने और उस क्षेत्र मे सिचाई की सुविधा देने के लिए वर्माजी ने राजस्थान सरकार के सिंचाई मत्री श्री लड्ढा से कई बार चर्चा की। सिचाई मत्री ने आश्वासन दे दिया वहा के कार्यकर्ता सतुष्ट हो गए परन्तु वह योजना कार्यान्वित नही हुई। सिचाई मत्री उसको टालते रहे? अत मे वर्माजी का धैर्य समाप्त हो गया। उस समय वे रोग शय्या पर थे। मृत्यु से दो दिन पूर्व (२३ जनवरी को) उन्होने एक पत्र श्री भँवरलाल जोशी प्रधान पचायत समिति माडलगढ स्थानीय– कार्यकर्ता को भेजा जिसमे उन्होने रोष और क्षोभ के साथ लिखा था कि श्री लढ्ढा से कह दो कि हमारा आपके सहयोग का सम्बन्ध समाप्त होगया और समस्त क्षेत्र के किसानो को सगठित कर लगानबदी का आन्दोलन चलावो, सत्याग्रह करो। जो सरकार खेती के लिए अनिवार्य सुविधा सिचाई की व्यवस्था नही करती उसे लगान वसूल करने का कोई अधिकार नही है। स्वस्थ होने पर मै स्वय इस लगानबन्दी आन्दोलन का सचालन करने आऊगा। मृत्यु के दो दिन पूर्व भी वर्माजी में एक योद्धा का शौर्य और तेजस्विता विद्यमान थे उसमे जो अग्नि थी, उनमे अन्त तक कमी नही आई, उसकी उष्णता तनिक भी कम नही हुई थी।

लाणेला सत्याग्रह :

इसी प्रकार जैसलमेर महारावल के भाई श्री हुकुमसिह जी जो कि जैसलमेर राज्य के एक बडे जागीरदार थे और काग्रेस टिकट पर चुने जाकर राजस्थान विधान सभा के काग्रेसी विधायक एम. एल. ए. थे जब उन्होने लाणेला मे पुश्तो से खेती करनेवाले किसानो के खेतो की खातेदारी अपने नाम अस्थायी बन्दोबस्त के समय करवाली और कुछ किसानो को डरा धमका कर उनसे नौकरीनामा लिखा लिया और उन्हे अपने पुश्तैनी खेतो से बेदखल कर दिया, जिन किसानो ने नौकरीनामा लिखना स्वीकार नही किया उनकी फसल को अपने नौकरो द्वारा ट्रैक्टर चलवा कर नष्ट कर दिया तो लाणेला के दुखी किसान जिला अधिकारियो के पास गए। जब वहा से भी उन्हे न्याय नही मिला तो उन्होने मुख्य मत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया से प्रार्थना की। मुख्य मत्री ने जैसलमेर कलेक्टर को जाच करने की आज्ञा दे दी। श्रीहुकुमसिह कांग्रेस विधायक के साथ ही महारावल जैसलमेर के भाई तथा एक बडे जागीरदार होने के नाते अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति थे अस्तु जब किसानो ने देखा कि उनकी कही सुनवाई नही होती तो वे वर्मा जी के पास आए। वर्मा जी ने उस समय राजस्थान के सीमा प्रदेश (पाकिस्तान से लगे प्रदेश) मे रचनात्मक कार्य करना आरम्भ कर दिया था। वर्मा जी स्वयं लाणेला आए और उन्होने सारी स्थिति की जाच की और जब उन्हे विश्वास हो गया कि किसानो को अन्यायपूर्वक श्री हुकुमसिह जी ने बेदखल किया है तो उन्होने किसानों से कहा कि वे कदापि इस अन्याय को सहन न करें एव सत्याग्रह करे। सरकार को सूचित कर दे कि ९ अगस्त १९६४ तक यदि उनकी खेती की जमीन उन्हे नही सौप दी जाती तो वे भूमि पर हल चला कर बलपूर्वक कब्जा कर लेगे। वर्मा जी ने उनका नेतृत्व करने का आश्वासन दिया

और सत्याग्रह की तैयारियां आरम्भ कर दी। सभाए कर सत्याग्रह के लिए किसानो को भर्ती करने लगे और उन्होने मुख्यमत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया को लिख दिया कि लाणेला की स्थिति हमारे लिए ही नही वरन लोकतान्त्रिक समाजवाद के लिए खुली चुनौती है। स्वतत्रता के सत्रह वर्ष बाद भी किसानो को वेदखल करने का यह सामन्ती ढग सहन करने योग्य नही है। मैंने ४७ वर्ष किसानो के लिए सघर्ष मे ही व्यतीत किए हैं इसलिए अब सरकार व काग्रेस पार्टी के मोह वश किसानो के अधिकारो की छीना झपटी को सहन नही कर सकता। उन्होने मुख्यमत्री को स्पष्ट लिख दिया कि ९ अगस्त से पूर्व किसानो की जमीन उन्हे नही लौटाई गई तो वे स्वय लाणेला सत्याग्रह का सचालन करने के लिए जैसलमेर मे डेरा जमा देगे, और आवश्यकता पड़ी तो एक सत्याग्रही के रूप मे जेल जाने के लिए भी तैयार रहेगे। उधर वर्मा जी ने राजस्थान भर के साथी किसान कार्यकर्ताओ को लाणेला के किसान सत्याग्रह मे सम्मिलित होने के लिए आवाहन किया। वर्मा जी के आवाहन पर समस्त राजस्थान से कार्यकर्ताओ ने सत्याग्रह के लिए लाणेला पहुचने की स्वीकृति भेज दी। वर्मा जी ने किसानो को सत्याग्रह करने के लिए भर्ती करना शुरू कर दिया। सत्याग्रह के सबन्ध मे वर्माजी का बनाया गीत गावो मे गूजने लगा। वर्मा जी सत्याग्रह की तैयारी मे पूरी तरह जुट गए।

वर्मा जी के इस आदोलन के सूत्र अपने हाथ मे ले लेने से सरकार चौंकी मुख्य मत्री ने श्री हुकुमसिंह से वात की श्री हुकुमसिह भी समझ गए, समझौता हो गया और किसानो को उनकी जमीन दिला दी गई।

उपरोक्त घटनाओ से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्मा जी यद्यपि काग्रेस के अनन्य भक्त थे, मुख्य मत्री श्री सुखाड़िया के राजनीतिक जीवन का उन्होने निर्माण किया था उन पर उनका स्नेह था परन्तु जब भी उन्होने देखा कि किसानो अथवा शोषित वर्ग के साथ अन्याय हो रहा है तो उनका शौर्य जाग उठता। व्यक्तिगत सबन्ध तथा कांग्रेस का अनुशासन या पार्टी का मोह भी उन्हे बाध नही सकता था और वे उस अन्याय का प्रतिकार करने के लिए तैयार हो जाते थे। अपने गीतों मे उन्होने अपने अन्तर की पीड़ा को बड़े प्रभावशाली शब्दो मे व्यक्त किया है। कारण यह था कि वे देख रहे थे कि काग्रेस भी एक स्थिर स्वार्थवालो का दल बनता जा रहा है। वह सामाजिक तथा आर्थिक क्राति लाने मे गतिशील नही है इस कारण उनका अन्तर क्षोभ और रोष से भर जाता था। उनके गीत जो उन्हो ने अपने जीवन के अतिम वर्षों में लिखे थे उनकी आन्तरिक पीड़ा को व्यक्त करते है।

भारत सेवक समाज :

वर्मा जी के सामने जब भारत सेवक समाज के राजस्थान के सयोजक पद को स्वीकार करने का प्रश्न आया तो उन्हो ने इस उद्देश्य से उसे स्वीकार कर लिया कि उसके द्वारा राजस्थान मे रचनात्मक कार्य को गति दी जा सकेगी। उनके सयोजकत्व मे भारत सेवक समाज गतिशील बना। उस समय देश मे खाद्यान्न की समस्या ने विकट रूप धारण कर लिया था। स्थिति गभीर होती जा रही थी अतएव वर्मा जी ने भारत सेवक समाज

की राजस्थान शाखा के सयोजक बनते ही अधिक अन्न उपजाओ कार्यक्रम को हाथ मे लिया। समस्त राजस्थान का दौरा किया गाँव गाँव जाकर किसानो को तम्बाकू आदि फसलो को कम कर अधिक अन्न उपजाने के लिए प्रोत्साहित किया। भारत सेवक समाज के कार्यकर्ताओ की अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन को सफल बनाने के लिए नियुक्ति की। राजस्थान के २६ जिलों मे २६ वैतनिक पूरे समय के जिला कार्यकर्ता नियुक्त किए और उसके लिए भागीरथ कानोड़िया की सहायता से कलकत्ते मे धन सचय किया। अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन को सफल बनाने के लिए वर्मा जी ने सिचाई के साधनो के विकास पर अधिक बल दिया। किसानो द्वारा कुए खोदने के लिए उन्हे कर्ज तथा सहायता दिलाई तथा राजस्थान के सिचाई विभाग द्वारा छोटी सिचाई योजनाओं के शीघ्रतापूर्वक कार्यान्वित कराने की व्यवस्था की। परन्तु लवे अनुभव के उपरान्त वर्माजी भारत सेवक समाज के कार्य से सतुष्ट नही हो सके अस्तु उन्होने १७ मार्च १९५९ की बैठक मे त्यागपत्र दे दिया। १५ अप्रेल १९६३ की डायरी मे वर्माजी ने भारत सेवक समाज से त्यागपत्र देने के सम्बन्ध मे लिखा "जिन जिन सस्थाओ को जमाने मे मेरा हाथ रहा उनमे भारत सेवक समाज (राजस्थान) से निराश होकर छोड़ना पड़ा"।

आदिम जाति सेवक संघ :

वर्माजी भारतीय आदिम जातिसेवकसंघ के सस्थापक सदस्य थे। सघ ने यह निश्चय किया कि सघ के आजीवन सदस्य बनाए जावे परन्तु आजीवन सदस्य बनने का निमत्रण केवल उन्ही कर्मठ व्यक्तियो को दिया जावे कि उन्होने आदिम जातियो के उत्थान का कार्य किया हो। सघ ने वर्माजी को भी आजीवन सदस्य बनने का आमत्रण दिया। वर्माजी ने उसे सहर्ष स्वीकार किया। २८ जनवरी १९५८ को रात्रि को वर्माजी को श्री लक्ष्मीभाई कमिश्नर अनूसूचित जाति का तार मिला कि ३० जनवरी को चार बजे सायकाल राष्ट्रपति द्वारा आजीवन सदस्यो को राजघाट पर शपथ दिलाई जावेगी। वर्माजी आजीवन सदस्य की शपथ लेने ३० जनवरी १९५८ को प्रात.काल दिल्ली पहुँचे। बारह व्यक्तियो को राष्ट्रपति ने शपथ दिलाई। प्रतिज्ञा मे सघ की आजीवन सदस्यता स्वीकार करने, सघ के नियमो तथा अनुशासन का पालन करने, और जब भी सघ व्यक्तिगत तथा पारिवारिक निर्वाह व्यय का निश्चय करे उसे स्वीकार करने की तैयारी और जीवन को पवित्र बनाए रखने की प्रतिज्ञा थी। राष्ट्रपति ने सभी आजीवन सदस्यो को आशीर्वाद देकर रस्म पूरी की।

लिखित प्रतिज्ञा में ईश्वर का उल्लेख था। वर्माजी ने सघ के महामत्री श्री धर्मदेवजी शास्त्री से पूछा कि "मै तो ईश्वर को मानता नही हूँ फिर इन शब्दो को स्वीकार कर क्यो धोखा दू। मै तो सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूँ। शास्त्रीजी ने कहा कि हम ईश्वर शब्द को ही सत्यनिष्ठा मानले कोई फर्क नही है। मैने कहा कि आप यह अर्थ लगाते हैं तो मुझे स्वीकार है।" (डायरी ३० जनवरी १९५८)

वर्माजी ने भारतीय आदिम जाति सेवक संघ की आजीवन सदस्यता सघ के

सगठन को शक्ति प्रदान करने के लिए स्वीकार की थी यो वे पहले से ही अपनी सारी शक्ति और समय आदिवासियो, घुमक्कड़ जातियो किसानो तथा पिछडे वर्गो के उत्थान के लिए अर्पित कर चुके थे।

राजस्थान आदिम जाति सेवक संघ :

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त तथा विशाल राजस्थान की सूची मे केवल डूगरगढ, वासवाडा तथा प्रतापगढ के आदिवासियो को ही सम्मिलित किया गया और उनकी सख्या को ध्यान मे रखते हुए विधान सभा मे केवल तीन स्थान और लोक सभा मे केवल एक स्थान आदिमवासियो के लिए सुरक्षित रखा गया। जबकि राजस्थान के अन्य भागो मे भी आदिवासी सीमित अचलो मे बिखरे हुए है। वर्माजी ने केन्द्रीय नेताओ से बातचीत की और उनके अथक परिश्रम के फलस्वरूप उदयपुर, चित्तौड़गढ, भीलवाडा, कोटा, बून्दी, सवाई माधोपुर, झालावाड, जयपुर, पाली, सिरोही, जालौर, तथा राजस्थान के अन्य भागो मे भी अनूसूचित आदिम जातियो की सूची मे आदिवासियों को सम्मिलित किया गया। फलस्वरूप राजस्थान मे विधान-सभा मे एक के स्थान पर दो स्थान आदिवासियो के लिए सुरक्षित हो गए।

वर्माजी आदिवासियो को राजस्थान के विधान तथा लोक सभा मे अधिक सुरक्षित स्थान दिला कर ही सतुष्त नही हुए। उन्होने १४ नवबर १९५७ को आदिवासियो के सर्वागीण विकास के लिए "राजस्थान-आदिम-जाति-सेवक सघ" की स्थापना की। सघ का उद्देश्य आदिम जातियो, भील, मीणा, डॉमोर, गरासिया, सहारिया, कोली ठाकुर (आबू रोड तहसील) का शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक, तथा नैतिक उत्थान करना है जिससे कि वे राष्ट्रीय जीवन मे उचित स्थान और नागरिकता के उचित अधिकार प्राप्त करने मे सक्षम हो सके।

सघ की स्थापना करने के उपरान्त वर्माजी ने १७ अक्टूबर १९५८ मे आबू रोड़ मे एक विशाल आदिवासी सम्मेलन का आयोजन किया और श्री जवाहरलाल नेहरू को सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए तैयार किया। स्वागताध्यक्ष की हैसियत से वर्माजी ने आदिवासियो की समस्याओ का अपने भाषण मे विशद् वर्णन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि नेहरूजी की आदिवासियो की समस्याओ के प्रति जानकारी और रूचि बढी और वर्माजी आदिवासियो के लाभ के बहुत से कार्य केन्द्र से करवा सके।

इसी प्रकार उदयपुर से कुछ दूरी पर स्थित ऋषभ-देव में १७ और १८ अप्रेल १९६६ को वर्माजी ने पुन एक विशाल आदिवासी सम्मेलन किया जिसकी अध्यक्षता के लिए उन्होने श्री मुरारजीभाई-देसाई को आमन्त्रित किया। सम्मेलन का उद्घाटन प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरागाधी ने किया।

वर्माजी के कार्य करने की यह एक शैली थी। वे जिस वर्ग के उत्थान के कार्य को हाथ मे लेते पहले उनका सगठन खडा करते। तत्पश्चात् उनका एक विशाल सम्मेलन आयोजित करते, जिसमे केन्द्रीय नेताओ को लाते तथा राजस्थान के मुख्यमत्री

तथा अन्य मन्त्रियो को बुलाते और उस पिछडी जाति या वर्ग के विकास की योजना रखते और केन्द्र तथा राज्य सरकार से उसको स्वीकृत कराकर क्रियान्वित करते। केन्द्र तथा राज्य द्वारा सहायता मिलने पर योजना के अनुरूप उन्हे बसाने खेती के लिए जमीन दिलाने, उद्योग-धधो के लिए कर्ज तथा आर्थिक सहायता दिलाने, के साथ उनके बच्चो की शिक्षा के लिए उन क्षेत्रो मे छात्रावास स्थापित करते, तथा उनके सगठन के द्वारा उनमे प्रचलित कुरीतियो के विरुद्ध प्रचार करते।

वर्माजी ने २० नवबर १९६१ को कोटा के शहाबाद क्षेत्र मे सीतावाड़ी नामक स्थान पर एक विशाल सहारिया सम्मेलन किया जिसका उद्घाटन श्री ढेबर भाई ने किया। सासी और कजर सम्मेलन का उद्घाटन श्री लालबहादुर शास्त्री से करवाया इत्यादि।

राजस्थान आदिम जाति सेवक सघ के द्वारा वर्माजी ने बहुत बड़ी संख्या मे छात्रावास कराए जिससे कि आदिवासियो के बच्चे भी शिक्षा प्राप्त कर सकें आगे चल कर वे अपने द्वारा स्थापित छात्रावासो को तो समाजकल्याण विभाग को सौंप देते और सघ की ओर से नए छात्रावास स्थापित करते जहा बच्चो को भोजन वस्तु पाठ्य पुस्तके नि.शुल्क दी जाती। आज भी सघ द्वारा २७ छात्रावास तथा दो आश्रम स्कूल चल रहे है। वर्माजी के प्रयत्नो के फलस्वरूप बहुत बड़ी सख्या मे आदिवासियो को बसाया गया उन्हे जमीन दी गई मकान बनाने के लिए आर्थिक सहायता दी गई और उद्योग धधे स्थापित किए गए।

सच तो यह है कि श्रद्धेय ठक्कर बापा के बाद किसी अन्य व्यक्ति ने वर्माजी के समान आदिवासियो के उत्थान का कार्य नही किया।

राजस्थान मे वर्माजी ने विमुक्त जाति सेवक सघ की भी स्थापना की थी परन्तु बाद को जब उन्हे ज्ञात हुआ कि उनके एक प्रमुख कार्यकर्ता ने भ्रष्टाचार किया हैं तो उन्होने श्री हरिभाऊ उपाध्याय जो कि उस समय समाजकल्याण विभाग के मत्री थे लिख कर उसकी जाच कराने पर बल दिया। इसी प्रकार जब राजस्थान आदिम जाति ग्रामोद्योग सघ उदयपुर के सबध मे विधान सभा मे इस आशय की चर्चा हुई कि सघ मे फिजूल खर्ची होती है तथा धन का दुरुपयोग होता है तो वर्माजी ने सर्वश्री देश पाडेजी, गुलाबसिह, हरिभाऊजी उपाध्याय को पत्र लिखा कि सस्था की जाच कराई जावे। (डायरी ३ अप्रेल १९६३)

आदिवासी सामाजिक कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र :

वर्माजी चाहते थे कि आदिवासियो मे कार्य करने के लिए शिक्षित आदिवासी युवको को तैयार किया जावे इसी उद्देश्य से भारत सरकार की सहायता से उन्होने आदिवासी सामाजिक कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र की उदयपुर मे स्थापना की। उनका कहना था कि आदिवासियो मे प्रचलित कुरीतियो और कुप्रथाओ को दूर करने तथा आदिवासियो के सर्वागीण उत्थान का कार्य शिक्षित आदिवासी युवक ही कर सकते हैं अस्तु उन्हे समाजसेवा कार्य का प्रशिक्षण देना चाहिए। उस समय लेखक महाराणा

भूपाल कालेज का आचार्य था उन्होने लेखक को उस केन्द्र के सचालन का भार सौपा। वर्माजी के कार्य करने का ढंग यह था कि वे जब कोई सस्था खड़ी करते तो उसको उसके उपयुक्त व्यक्ति को सौंप कर उसमे हस्तक्षेप नही करते थे।

लोक सभा की सदस्यता :

वर्माजी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जव १९५२ मे प्रथम आम चुनाव हुए तो चित्तौडगढ़ क्षेत्र से लोक सभा के चुनाव मे काग्रेस टिकट पर खडे हुए थे। चित्तौड़गढ़ का क्षेत्र सामन्तवर्ग का शक्तिशाली गढ़ था। वर्माजी आजीवन सामन्ती वर्ग से सघर्ष करते रहे थे। भारतवर्ष मे सर्व प्रथम वर्माजी ने पूर्व राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने की पहल की थी। काग्रेस मे वे सदैव जागीरदारो का विरोध करते रहे थे। अस्तु जागीरदार उनसे वहुत रुष्ट थे। वे वर्माजी को अपना प्रथम और घोर शत्रु मानते थे अतएव सभी जागीरदारो ने अपनी सम्मिलित शक्ति वर्माजी के विरुद्ध लगाई और जनसघ के उम्मीदवार श्री त्रिवेदी का समर्थन किया। जागीरदारो का इस क्षेत्र मे ग्रामीण जनसख्या पर परम्परागत वहुत अधिक प्रभाव था। अस्तु वर्माजी के विरुद्ध जागीरदारो ने सारी शक्ति लगा दी परिणाम यह हुआ कि वर्माजी की पराजय हो गई। परन्तु कुछ ही दिनो के उपरान्त टोक की लोकसभा की सीट स्थानीय लोकसभा के सदस्य की मृत्यु के कारण खाली हो गई। काग्रेस ने वर्माजी को टोक क्षेत्र से खड़ा किया वर्माजी एक लाख से अधिक मतो से विजयी हुए। उसके उपरात १९५७ और १९६२ मे वे चित्तौड़ क्षेत्र से लोक सभा के लिए खडे हुए और भारी वहुमत से विजयी हुए। १९६७ के चुनाव मे काग्रेस ने वहुत आग्रह किया कि वे पुन. लोक सभा के लिए चित्तौड़ क्षेत्र से खडे हो परन्तु वर्माजी लोक सभा से भी निराश हो चुके थे अतएव उन्होने लोक सभा के चुनाव मे खड़े होना अस्वीकार कर दिया। परन्तु काग्रेस प्रत्याशी श्री ओकारुलाल वोहरा को उस क्षेत्र से विजयी बनाने मे अपनी शक्ति लगाई।

वर्माजी लोक सभा को अपना वास्तविक कार्यक्षेत्र नही मानते थे इस कारण वे लोक सभा मे नियमित रूप से उपस्थित नही रहते थे। यदि वे ऐसा करते तो उनके जो किसानो आदिवासियो घुमक्कड़ जातियो (गाड़िया लुहार, वनजारा, सासी बावरी) आदि सीमा प्रदेश सम्बन्धी, तथा अन्य रचनात्मक कार्य उपेक्षित हो जाते और वे केवल लोकसभा के सदस्य भर रह जाते। महीने मे अपने परिवार के साथ तो वे केवल तीन दिन रहते थे। उनका भी अधिकांश भाग सार्वजनिक कार्य मे ही व्यय हो जाता था। अतएव वे लोक सभा का जव सत्र चलता था तो जव राष्ट्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्न होते, भूमि सुधार अथवा देश को समाजवादी अर्थव्यवस्था की ओर ले जानेवाले प्रश्न उपस्थित होते तब तो उपस्थित रहते और उसमें सक्रिय भाग लेते अन्यथा वे अपने कार्यक्षेत्र मे चले जाते।

एक बार श्री जवाहरलाल नेहहरू ने वर्माजी से व्यग मे कहा कि तुम लोकसभा से बहुधा गायव रहते हो तो वर्माजी ने उत्तर दिया कि यह तो उन लोगो की सभा है जिनका अपना कोई कार्यक्षेत्र नही है जिनके पास और कोई काम नही है जो ठलुआ

है। यदि मै यहां का होकर ही रह जाऊं तो मेरे कार्यक्षेत्र का क्या होगा मेरे लिए वह अधिक महत्वपूर्ण है। श्री जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा तो फिर तुम चुनाव मे क्यो खडे होते हो ? वर्माजी ने उत्तर दिया कि बात यह है कि अपने परिवार के भरण पोषण की दृष्टि से लोकसभा मे चला आता हूँ यहा के भत्ते से घर का खर्च चल जाता है किसी के सामने अपने निजी व्यय के लिए हाथ नही पसारना पडता जवाहरलालजी वर्माजी का उत्तर सुनकर चुप हो गए।

यद्यपि वर्माजी लोकसभा को अपना मुख्य कार्यक्षेत्र नही मानते थे परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नही है कि वे उसके महत्व को नही समझते थे अथवा जो महत्वपूर्ण प्रश्न लोकसभा मे आते थे उनकी उपेक्षा करते थे। जब जब भी लोकसभा मे राष्ट्रीय महत्व के प्रश्न आए अथवा भूमि सुधार, किसानो आदिबासियो घुमक्कड़ जातियो अनुसूचित जातियो अथवा पिछडी जातियो के विकास की योजनाओ के प्रश्न आए अथवा देश को समाजवाद की ओर ले जाने के प्रश्न उपस्थित हुए उन्होने उनमे केवल सक्रिय भाग ही नही लिया वरन् लोकसभा मे उनके पक्ष मे वातावरण बनाने का सफल प्रयत्न भी किया लेखक यहा केवल कतिपय उदाहरण देकर वर्माजी के लोकसभा में कार्य पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करेगा।

१५ एप्रिल १६५६ को लोकसभा मे सहकारी सम्मिलित कृषि पर बहस चल रही थी श्री मीनू मसानी ने सहकारी सम्मिलित खेती का प्रबल विरोध तथ्यो के साथ किया था। वर्माजी ने श्री मसानी को मुह तोड उत्तर देते हुए कहा कि श्री मसानी की आवाज पूजीपतियो की आवाज है उनको ग्रामीण जीवन का अनुभव नही है आज भी किसान मिलकर कुआ बनाते है और सम्मिलित सिचाई करते है। केवल सिचाई ही नही बहुत से स्थानो पर खेती भी सम्मिलित करते है। अस्तु सहकारी खेती को प्रोत्साहन देना अत्यन्त आवश्यक है। सहकारी खेती के साथ साथ वर्माजी ने खेती मे सहकारिता के साथ सहकारिता के आधार पर आधुनिक उद्योगो का विकेन्द्रीयकरण करके उनको गावो मे स्थापित करने पर जोर दिया। उनका कहना था कि रेलवे, हवाई जहाज मोटर यन्त्रो तथा अन्य उद्योगो का विकेन्द्रीयकरण किया जावे और उनके पुर्जो को बनाने का उद्योग सहकारिता के आधार पर गावों मे स्थापित किया जावे इसके लिए गावो मे विद्युत शक्ति पहुचानी होगी, गाव वालो को प्राविधिक प्रशिक्षण देना होगा, तथा कच्चे माल की व्यवस्था करनी होगी। वर्माजी ने गावो को केवल चर्खा और तेलघाणी मे उलझाने का विरोध किया। विकास खडो मे अकेली युवतियो को न रखने, पति के साथ साथ काम करने का अवसर देने पर विशेष बल दिया। सिचाई, पावर, उद्योग, यातायात शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्न, स्वावलम्बन आदि कार्यक्रमो को पूरा करने के लिए जोर देते हुए वर्माजी ने लोक सभा मे इन कथित सास्कृतिक कार्यक्रमो (नृत्य) आदि पर शक्ति तथा व्यय न करने पुरातत्व के खडहरो की निगरानी करने परन्तु खुदाई की रकम से सिचाई की सुविधाओ को बढाने की माग की। गावो मे मकान बनाने के लिए कर्ज देने, रेगिस्तान मे गहरे पानी के निकालने, पहाड़ो मे ऐनिकट तालाब बाधने मे

रिटन की शर्त (प्रतिशत लाभ) हटा देने पर बल दिया और कहा नहरी जलूसों और सभाओ से प्रभावित होकर किसान का अनाज सस्ता मत करिए नही तो पैदावार घट जावेगी।

इसी प्रकार ७ अप्रेल १९७९ को लोक सभा मे खेती की अधिकतम जोत के कानून पर जल्दी अमल कराने के लिए वर्माजी ने बड़े प्रभावशाली शब्दो मे माग की और काग्रेसजनो को चेतावनी दी कि यदि सीलिंग के कानून पर शीघ्र अमल नही किया गया तो भूमिहीनो के धैर्य का बाध टूट जावेगा देश में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो जावेगी। वर्माजी की भविष्यवाणी कितनी सही निकली यह आगे होनेवाली घटनाओ ने सिद्ध कर दिया।

२९ मार्च, १९६२ को लोक सभा मे एअर कारपोरेशन बिल के सशोधन पर बोलते हुए वर्माजी ने कहा था "पार्टी के सदस्य होने के नाते सशोधन बिल का समर्थन करूंगा मगर इसका उद्देश्य समाजवाद को असफल करने और पब्लिक-सैक्टर को फेल करने की यह साजिश है और यह विभाग फेल हुआ है यह चेतावनी देता हूँ। बात यह थी कि एयर कारपोरेशन मे घाटा हो रहा था व्यय अधिक आने के कारण प्राइवेट सेक्टर को नया रूप देने के अधिकार प्राप्ति की उस सशोधन के द्वारा माग की गई थी। कहने का अर्थ यह है कि जब भी देश को समाजवाद की ओर लेजानेवाले प्रश्न लोकसभा मे उपस्थित होते तब वर्माजी बहुत शीघ्र पहुंच जाते थे और अपनी सारी शक्ति समाजवाद को देश मे सफल बनाने मे लगाते थे।

जब बैंको के राष्ट्रीयकरण का प्रश्न लोकसभा मे उपस्थित हुआ तो वर्माजी उन थोडे से लोक सभा के सदस्यो मे से थे जिन्होने जोरदार शब्दो मे बैंकों के राष्ट्रीयकरण का केवल समर्थन ही नही किया वरन ५६ लोकसभा के सदस्यो के हस्ताक्षर करवा कर एक ज्ञापन पण्डित जवाहरलाल नेहरू को भिजवाया। यद्यपि उस समय राष्ट्रीयकरण नही हो सका परन्तु वर्माजी ने बैंको के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में वातावरण तैयार कर दिया। (डायरी २० नवम्बर १९६३)

पद्म भूषण की उपाधि :

वर्माजी की देशसेवा आदिवासियो, घुमक्कड जातियो, किसानो, दलितो तथा पिछड़े वर्ग की सेवा तथा उनके विस्तृत रचनात्मक कार्य के उपलक्ष मे राष्ट्रपति ने २५ जनवरी १९६५ को वर्माजी को पद्मभूषण की उपाधि प्रदान की उसके सबध में वर्माजी के मन मे जो प्रतिक्रिया हुई वह उनके ही शब्दो मे सुनिए जो उन्होने अपनी डायरी मे लिखे है, २६ जनवरी १९६५ .- आज राष्ट्रपति द्वारा घोषित तथा उनके तार द्वारा मुझे पद्मभूषण की उपाधि दी गई। यद्यपि मै इसका उपयोग करूंगा नही फिर भी मेरे देशवासियो का आज राज्य है राष्ट्रीय सरकार ने उपाधि दी है मुझे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

२८ जनवरी ६५ : आज सारा दिन मिलने जुलने में नष्ट हुआ और पद्म भूषण की उपाधि की खुशी मे लोग दावत देना चाहते थे। मैंने अस्वीकार किया।

भविष्य मे किसी का निमन्त्रण न मानने का फैसला किया। मेरा देश इस समय संकट की घड़ियो से गुजर रहा है। पद्मभूषण की उपाधि की खुशी मे दावते लेता फिरूं यह मेरे लिए शर्म की बात होगी। इसलिए इसकी खुशी नही मानना। वैसे मेरे स्वतन्त्र देश और कांग्रेस सत्ता ने मुझे उपाधि दी सहर्ष मजूर कर ली मगर दिल का दर्द नही गया है।

वर्माजी ने अपनी डायरी मे उपाधि के सम्बन्ध मे जो लिखा वह उनकी अन्तर भावना को व्यक्त करता है। जब देश सकट मे हो तो उपाधि मिलने पर खुशी न मनाना यह उनकी एकान्त निष्ठा का ज्वलंत उदाहरण है कितने राष्ट्रधर्मी है जिनमे इतनी गहरी देशभक्ति की भावना है और जो केवल इसलिए उपाधि स्वीकार करे क्योकि राष्ट्रीय सरकार ने उसको दिया है। आज जो सत्ता मे है वे ऐसे अवसरो पर जैसा भोडा प्रदर्शन करते हैं वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व के राजाओ और महाराजों को भी पीछे छोड देता है।

केवल लोक सभा मे ही नही वर्माजी ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तथा कांग्रेस पार्लियामेटरी पार्टी मे और भी अधिक स्पष्ट और बल के साथ अपने प्रगतिशील विचारो को रखा थे। १० अगस्त १९५९ को उन्होने पार्लियामेटरी पार्टी में जो विचार व्यक्त किये थे वे उनके विचारो और भावना का सही प्रतिविम्ब है उस दिन उन्होने आवेश के साथ कहा था "आप सहकारी सयुक्त खेती का नारा जिन कांग्रेसवालो के द्वारा देश मे पहुचाना चाहते है उसके पूर्व उनकी सयुक्त खेती हो जानी चाहिए तब उनकी वाणी का जनसाधारण तथा किसान पर असर पड़ेगा। ग्रामदान के असफल होने का कारण ग्रामदान के उपदेशो द्वारा अपने व्यक्तित्व का तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति का समाप्त नही करना है। पार्टी मे केवल समाजवादी सिद्धात के पोषको को रखे। केवल उन्ही को टिकट दे अभी तो पार्टी मे सभी प्रकार के व्यक्ति है। यह समय पर साथ नही देगे चाहे मुरारका हो चाहे सोमाणी हो। पहली बार जो कांग्रेस मे आवे अथवा कांग्रेस के विरुद्ध लड़ कर आवे उनकी पांच वर्ष तक परीक्षा करने के बाद कांग्रेस टिकिट दे। भ्रष्टाचार देश की भीषण समस्या है। कांग्रेस की कामयाबी इसी समस्या को हल करने पर है लोग अब कहने लग गये हैं कि गाधीजी ने देश को आजाद किया। सरदार पटेल ने देश का एकीकरण किया, जवाहरलाल प्रजातन्त्र का ढाचा कायम कर वैदेशिक नीति की नीव लगा जावेगे, परन्तु भ्रष्टाचार उनसे नही मिटेगा अस्तु आप (श्री जवाहरलाल को संबोधन) इस प्रजातन्त्र मे भ्रष्टाचार दूर करने के लिए जनता पर प्रभावशाली असर डालिए। फिर भ्रष्टाचार सर्व प्रथम लोकसभा तथा राज्य सभा के सदस्यो मे से जाना चाहिए। इनमे से कई लोगो ने अपने सरकारी बगले जो लोक सभा तथा राज्य सभा के सदस्यों को मिलते हैं किराए पर दे रखे है और जिसको सरकारी मकान किराये पर दिया है मुफ्त मे भोजन उसी का खाते है। एक छोटी बात कि पार्टी के सरक्यूलरो मे तीन मन्त्रियो के हस्ताक्षर क्यो चल रहे है इस छोटी समस्या को हल करे। (डायरी)

वर्माजी लोक सभा मे जब भी उन्हे अवसर मिलता पिछड़े वर्गो की हिमायत करने तथा सरकार से उनके विकास के लिए आश्वासन प्राप्त करने से चूकते नही थे।

२४ मार्च १९६० को गृह मन्त्रालय की अर्थ सम्बन्धी मांग पर वर्माजी ने शेड्यूल्ड ट्राइब्स, एक्स क्रिमिनल ट्राइब्स, नौमेडिक ट्राइब्स (घुमक्कड़ जातियों) की दयनीय अवस्था का अत्यन्त प्रभावोत्पादक चित्रण किया जिससे कि लोकसभा का उन्हे समर्थन सहज ही प्राप्त हो गया उन्होने घुमक्कड़ जातियो के लिए गश्ती स्कूल, गश्ती औद्योगिक कारखाने खोलने, उन्हे बसाने, ऐक्स क्रिमिनल ट्राइब्स मे उद्योग धन्धे स्थापित करने पुलिस को सदाचारी और दुराचारी मे अन्तर करने, आदिवासियो को पहाडो पर से उतार कर समतल जमीन पर लाने उन्हें जमीन देने, जमीन पर पानी देने के लिए सिंचाई की व्यवस्था करने, जगल ठेका आदिवासियो की वनश्रम सहकारी समितियो को देने, जंगल में उत्पन्न होनेवाली वस्तुओ का पक्का माल तैयार करने के लिए उद्योग धन्धे स्थापित करने खनिज सम्पत्ति का सर्वेक्षण कराकर खनिज उद्योग आदिवासियो को देने तथा पहाडी प्रदेशो मे रेलवे लाइन डालने तथा सड़के बनाने के लिए भारत सरकार का जोरदार शब्दो मे आह्वान किया। लोक सभा मे बहुत कम सदस्य थे जिन्हे इन उपेक्षित जातियो का कभी ध्यान आता है। कारण यह था कि यह जातियां सभ्यता केंन्द्रो से बहुत दूर पहाड़ो, वनो और मरुभूमि मे निवास करती है जहां लोक सभा के अधिकांश सदस्य कभी पहुँचते ही नही। वर्माजी का अधिकाश समय इन्ही जातियो की सेवा मे व्यतीत होता था इस कारण वे उन्हे बहुत नजदीक से जानते थे और उनके अन्तर मे उनके लिये गहरी पीडा और सहानुभूति थी। यही कारण था कि जब वे इन उपेक्षितो के सबध मे बोलते तो श्रोता आत्मविभोर हो उठते और वर्माजी को उनका सहज ही समर्थन प्राप्त हो जाता। गृह मन्त्री ने वर्माजी को आश्वासन दिया कि भारत सरकार शीघ्र ही इन जातियो के विकास लिए प्रयत्नशील होगी। केवल लोकसभा मे ही वर्माजी ने प्रगतिशील नीतियो का समर्थन नही किया वरन कांग्रेस की पार्लियामेन्ट्री पार्टी मे वे सदैव प्रगतिशील नीतियो का समर्थन करते थे और स्पष्ट शब्दो मे काग्रेस की भूलो की भर्त्सना करते थे। कभी कभी काग्रेसजन वर्माजी की इस स्पष्टवादिता से खिन्न हो जाते थे परन्तु वर्माजी ने किसी की नाराजगी की परवाह नही की।

२ अप्रेल १९५८ की घटना वर्मा जी के इस [पक्ष पर अच्छा प्रकाश डालती है। लोक सभा मे खाद्य तथा कृषि मत्रालय की माग पर बहस चल रही थी। वर्मा जी को कृषि मत्रालय की शिथिलता तथा किसानो की कठिनाइयो के प्रति उपेक्षा की भर्त्सना करने का अनुकूल अवसर मिल गया। उन्होने कृषि मत्रालय की उपेक्षा और शिथिलता की कड़ी आलोचना की। वर्मा जी ने अधिकतम जोत कानून के लागू न करने को जघन्य अपराध बतलाया। नहरी सिंचाई की दरो और बन्दोबस्त द्वारा निर्धारित मालगुजारी की दरें शहरो और गावो की दूरी के अनुसार स्थिर करने का जोरदार शब्दो मे समर्थन किया। उन्होने बन्दोबस्त लगान की पद्धति का कडा विरोध किया और खेती की आय पर आयकर लगाने की सिफारिश की। सरकार द्वारा सभी मध्यस्थो को समाप्त कर किसानो से सीधा सम्पर्क स्थापित कर, धूलझाड़ तथा छाताधारी किसान सगठनो को प्रोत्साहन न देने पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने विचारो को व्यक्त करते समय

उन्होने खाद्य एव कृषि मंत्रालय पर कडा प्रहार किया। तत्कालीन काग्रेस दल के (चीफ-व्हिप) मुख्य सचेतक श्री सत्यनारायण सिन्हा ने अजितप्रसाद जैन से वर्मा जी की शिकायत की—पार्टीमैन (काग्रेस पार्टी के सदस्य) होकर भी वर्मा जी इस कदर हमारे विरोध मे बोले यह उचित नही था। जब श्री जैन ने वर्मा जी से श्री सत्यनारायण सिन्हा की शिकायत और प्रतिक्रिया का उल्लेख किया तो वर्मा जी ने उनको उत्तर दिया "हमने अपना जीवन किसी की स्तुति करने के लिए नही खपाया है। सत्य को सत्य कहने और करने के लिए ही हम जी रहे है।" (डायरी २ अप्रेल १९५८) वर्मा जी अपने विचारो को अत्यन्त निर्भीकतापूर्वक व्यक्त करते थे। श्री लालबहादुर शास्त्री से उन्होने केन्द्रीय मंत्रिमडल के सबन्ध मे जो कहा था वह उनकी निर्भीकता का परिचायक है उन्होने शास्त्री जी से कहा "आपकी कैबिनेट मे पूजीवादियो के प्रतिनिधि और कम्यूनिस्टो के हिमायती बैठे है इनसे पडित जी (जवाहरलाल नेहरू) को सावधान करो, मैनन (कृष्णा मैनन) को देशद्रोही बनकर रशिया के साथ समझौता कर डिक्टेटरशिप के जरिए सत्ता अपनाने वाला मानता हूँ और मुरारजी भाई सत्ता पर आजावेंगे तो पूजीपतियो को प्रसन्नता होगी। इसलिए दोनो से बचना चाहिए। (डायरी १६ मार्च ५९)

जब जब लोकसभा मे ऐसे प्रश्न उपस्थित हुए कि जिससे वर्माजी को लगा कि राष्ट्र का अहित होने की आशका है तब तब वे बहुत सक्रिय हो जाते थे और लोकसभा मे उसके विरुद्ध वातावरण बनाने का प्रयत्न करते थे। नवबर १९५९ मे काग्रेस पार्लिया-मेटरी पार्टी मे रक्षामत्री श्री मैनन के विरुद्ध वातावरण बन गया था उस समय वर्मा जी को लगा कि यह सब विदेशी प्रभाव के कारण है श्री नेहरू के विरुद्ध है। उनके मन पर जो उसकी प्रतिक्रिया हुई वह उन्ही के शब्दो में सुनिए।

"आज मै दो दिन से इस कोशिश मे लगा हूँ कि रक्षा मत्री श्री मैनन के विरुद्ध हटाए जाने की आवाज कैसे उठी और वह बजाय पडित जी (जवाहरलाल नेहरू) से व्यक्तिगत कहने के पार्टी में क्यो आई। मेरी यह मान्यता है कि पडित जी की कैबिनेट मे अमेरिकन तथा रशिया के पक्षपाती है। रशिया मैनन को और अमेरिका मुरारजी को भावी प्रीमियर पसंद करेगा। १६ मार्च ५९ को श्री लालबहादुर शास्त्री से चर्चा मे मैंने इशारा किया था। कल श्री ामसुभगसिह और त्यागी को मैने कहा। पार्टी मे श्री मैनन के विरुद्ध कहने के बजाय पडित जी को क्यो नही कहते। वे पार्टी मे बोलने का ही आग्रह कर रहे थे। करीब पद्रह-बीस एम. पी गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पजाब, बिहारवालो से मिला और वातावरण बनाया कि हमारे मे कुछ काग्रेसियो का 'सीटो' की तरफ झुकाव होने से वे वैसा वातारण बना रहे है। आज श्री रामेश्वर टांटिया स्पष्ट शब्दो मे 'सीटो' की तरफ जाने के हिमायती नजर आए। मैंने कहा इसका माने होगा सामन्तवाद और पूजीवाद का बोलवाला। हम डटकर मुका-बला करेगे। पडितजी से अलग मिला। 'सीटो' और मिलिटरी की हालत समझी वे परेशान थे। कहते थे कि मुझे साफ कहदे तो मै अपना पद छोड दू अन्यथा देश को खतरे मे नही पड़ने दूगा। पड़ित जी से मैने कहा भविष्य मे टिकट देते समय सावधान रहना। समाज-

वाद विरोधी तत्व वापस मत ले लेना।" (डायरी २०-११-५६)

"त्यागी जी (महावीर त्यागी) के घर गया और उनसे चर्चा हुई वे यह मान गए कि मैनन के विरुद्ध इस समय हल्ला सैनिक तानाशाही को बुलावा देना है।" (डायरी २२-११-५६)

" आज काफी एम. पी से वात हुई और काग्रेस पार्लियामेंटरी पार्टी मे बोला। जिसमे मैने वताया कि डिफेन्स की वहस पार्टी मे होनी ही नही चाहिए क्योकि यह पार्टी शिवजी की वरात है जिसमे देश की आजादी के योद्धा और उस समय के देशद्रोही गद्दार तथा पापी धर्मी सव आगए है। यहा चर्चा बन्द करो और घर मे जाकर पडितजी (जवाहरलाल नेहरू) के सामने अपनी बात कहो। श्री रामसुभग सिंह, त्यागी, फीरोज गांधी जो यहा कहते है उनसे सव मिलकर कहते है कि बोली बोलते है। मै नेता से अपील करूगा कि सन् १९२१ से १९४२ तक जिन लोगो ने काग्रेस को अपनी जवानी तथा खून देकर वडा वनाया उनको बुलावे बाते सुने। (डायरी २२ नवम्बर ५६)

कहने का तात्पर्य यह कि यद्यपि वर्माजी लोकसभा को अपना मुख्य कार्यक्षेत्र नही मानते थे परन्तु जब भी राष्ट्र के महत्वपूर्ण प्रश्न वहा उपस्थित होते अथवा किसान आदिवासी घुमक्कड जातियो, जरायम पेशा, तथा पिछडे वर्गो के प्रश्न वहा उपस्थित होते थे तो वे अत्यन्त जागरूक रहते और अपनी समस्त शक्ति उन समस्याओ के समाधान मे लगाते थे।

संस्थाओं और लोकसभा से निराशा :

यद्यपि वर्माजी ने अनेक रचनात्मक सस्थाओ को जन्म दिया, उनको पनपाया, और उनके द्वारा रचनात्मक कार्य को गति प्रदान की परन्तु जीवन के अन्तिम वर्षो मे वे संस्थाओ के प्रति निराश हो गए थे। यही स्थिति लोकसभा के सबध मे भी। लोकसभा से भी वे निराश थे। प्रथम तो यह बहुत रुचिकर नही लगता था कि अपनी सेवाओ का वखान किया जावे और उनके उपलक्ष मे वोट मांगा जावे। आत्मप्रशसा और सेवा का मूल्य मागना दोनो ही उन्हे अप्रिय थे। यही कारण था कि १९६७ के चुनाव मे काग्रेस जनो के वहुत कहने पर भी उन्होने लोकसभा के लिए खडे होने से इन्कार कर दिया था। वर्माजी लेखक से बहुधा कहा करते, "सक्सेनाजी, लोकसभा मे जो स्थिति है उसको देखकर मैने निश्चय कर लिया है कि अगले चुनाव मे नही खडा होऊगा। रचनात्मक कार्य करनेवाली सस्थाओ और लोकसभा के संबध मे उन्होंने अपनी डायरी तथा सस्मरण मे जो लिखा है वह उनके अन्तर की इस भावना को व्यक्त करता है।

वर्माजी का निश्चय :

" मैने अब यह जीवन का अन्तिम फैसला कर लिया है कि सस्थाओ से दूर रहना। फिर भी जीवन मे जब तक शक्ति है व्यक्तिगत रूप से बन सके उतनी सेवा करते जाना चाहिए। सस्थाओ मे आनेवाला नया रक्त समाज में वहनेवाले तूफानो, प्रलोभन

चापलूसियो से वचने में असमर्थ दिखलाई देता है। फिर भी कई संस्थाओं को उनके हाथ मे छोड़ कर अलग हो गया हूँ। उनके भविष्य को देखना है। मेरी कामना है कि उनमें प्रलोभनो से वचने और पिछड़े वर्गो की निस्पृह सेवा करने की शक्ति विकसित हो और वे अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करे।"

पार्लियामेन्ट से आशा छोड़ो :

"मै अनेक वर्पो से पार्लियामेट का सदस्य चला आ रहा हूँ। जनता ने मुझ पर वार बार विश्वास कर चुनकर भेजा है। मैं अपने निर्वाचको का आभारी हूँ किन्तु मैंने देखा है कि लोकसभा या राज्यसभा मे शायद ही कोई मेम्वर ऐसा होगा जो कांग्रेसी होते हुए भी कांग्रेस सरकार की आलोचना नही करता परन्तु जव व्हिप जारी होता है तो अनुशासन के नाम पर सरकार का साथ देना है। सत्ता चलानेवाले के सामने गलती मानने से भी इनकार नही करता। डिप्टी मिनिस्टर वनने की, तो मिनिस्टर कैविनेट श्रेणी का वनने की, कैविनेट वाला चाहता है कि उसे अमुक विभाग मिलना चाहिए तथा वह प्रधान मत्री वनने के योग्य है।"

इस प्रकार की अवसरवादिता सरकार, कर्मचारियों, छात्रो और सर्वसाधारण पर वुरा असर डालता है और अव फोड़ा फूट चुका है तो पीप वह रहा है। यह कांग्रेस की सत्ता मे ही हुआ हो मै ऐसा नही मानता। देवताओ से लगाकर, यादवो, राजपूतों मुगलो आदि के राज्यो मे हम देख रहे है। हम उनकी ही सतान है। अपनी फूट के कारण देवताओ को राक्षसो से पराजित होना पड़ा। यादवो की शरावखोरी और फूट मिटाने मे कृष्ण जैसे महापुरुष को असफल होना पडा। गाँधी "हे राम अब तो उठालो" कहता चला गया।" राजपूत राजाओ का राज्य चला गया और मुआविजा मिल रहा है। वेटा चाहता है कि वाप मर जावे तो मुआविजा मेरा हो जायगा। समाज दुर्व्यवसनो, भ्रष्टाचार और फूट का शिकार है। यह अच्छे लक्षण नही है।"

"इन पक्तियो के साथ मैं अपनी लेखनी को विश्राम देता हूँ। जीवन मे राष्ट्र की आजादी के लिए लडे और राजाओ सामन्तो से होने वाली टक्कर में झीनी-झीनी चोटें खाई· जो आज भी वादलो के उभार के साथ उभरती है। यह कष्ट उठाते हुए देशभक्तो ने जो सपने देखे थे वे साकार नही हुए किन्तु मन मे यह आशा संजोये हैं कि वे शायद कभी तो सत्र होगें।" (वर्माजी के सस्मरण)

शिड्यूल ट्राइव कमीशन :

लोकसभा मे वर्माजी तथा अन्य आदिवासियो के उत्थान में रुचि लेनेवाले सदस्यो के प्रयत्नो के फलस्वरूप भारत सरकार ने शिड्यूल ट्राइव कमीशन की स्थापना की। श्री ढेवर भाई उसके अध्यक्ष थे और श्री माणिक्यलाल वर्मा उसके सदस्य बनाए गए। कमीशन ने भारत के उन सभी भागो का दौरा किया कि जहां शिड्यूल ट्राइन्स रहते थे। हिमाचल, असम, नेफा, हिमालय, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत मे जहा जहा आदिवासियो की आवादी थी वहां आयोग के सदस्य गए और आदिवासियो के संवध मे एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई। इस भ्रमण से वर्माजी को एक वडा लाभ यह हुआ कि देश मे वसे हुए सभी आदिवासियो के जीवन को वहुत नजदीक से देख सके।

अध्याय तेरहवां

सीमा पर मरुभूमि में

वर्माजी पर प्रधान मंत्री पडित जवाहरलाल नेहरू का अटूट विश्वास था। वे जानते थे कि वर्माजी उन इनेगिने व्यक्तियो मे से है जिन्होने अपना जीवन देश और समाज के पिछड़े तथा पीडित वर्ग के लिए अर्पण कर दिया है। स्वतत्रता प्राप्ति के उपरान्त जहा अधिकांश कांग्रेस कर्मियो मे पद और स्वार्थ की अत्यन्त अशोभनीय प्रवृत्ति उत्पन्न होगई थी, कांग्रेस संगठन में जिसका थोडा भी प्रभाव था वह पद और सत्ता की आपाधापी में एक दूसरे को ढकेल कर स्वय आगे बढ़ जाना चाहता था वर्माजी दृढ़ निश्चय अडिग पद और सत्ता से सर्वथा दूर रह कर पिछड़े और पीड़ितो तथा शोषित की सेवा मे लगे थे। कई बार ऐसे अवसर आये कि जब उनके सामने राजस्थान के मुख्य मत्री बनने का प्रस्ताव रखा गया परन्तु उन्होने उसे अस्वीकार कर दिया। यही कारण था कि पडित जवाहरलाल नेहरू के हृदय मे वर्माजी के लिए स्नेह और आदर था। श्री नेहरू यह भी जानते थे कि सर्वहारा वर्ग तथा ग्रामीण जनता को जितना वर्माजी जानते और समझते हैं उतने बहुत कम राष्ट्रकर्मी जानते हैं अस्तु वे बहुधा वर्माजी से उनके सबध मे जानकारी लेते थे। जब वर्माजी पार्लियामेट के सदस्य थे (१९६२) उस समय श्री नेहरू ने उनसे भारत के सीमा क्षेत्रो का दौरा कर वहां रहनेवाली जनता की सही स्थिति क्या है इसके सम्बन्ध मे अपनी निजी राय देने का आदेश दिया था।

श्री नेहरू के आदेश के अनुसार वर्माजी ने काश्मीर घाटी, पजाव पाक सीमा क्षेत्र, राजस्थान पाक सीमाक्षेत्र तथा बंगाल पाक सीसाक्षेत्र का कई बार दौरा किया, और श्री जवाहरलाल नेहरू को वहां की स्थिति से अवगत कराया। जब उन्होने राजस्थान पाक सीमा पर थार की मरुभूमि का दौरा किया और मरुभूमि मे रहने वालो की दयनीय दशा देखी तो उनका हृदय क्षुब्ध और उद्वेलित हो उठा। उन्होने देखा कि उस निर्जन प्रदेश मे जहा प्रकृति भी उस प्रदेश से रूठी हुई है, जहा मीलो जल के दर्शन नही होते वर्षा वर्ष मे नाम मात्र की होती है और दुर्भिक्ष सदैव मुह बाए खड़ा रहता है, सैकड़ो मील तक रेत के टीवो के अतिरिक्त और कुछ नही है। रेत से भरी आधिया चलती हैं किसी प्रकार वहा के निवासो पशुओ को चराकर

और यदि वर्षा ऋतु में कुछ छींटे पड़ गए तो भूमि पर कुछ अनाज उत्पन्न कर किसी प्रकार जीवन यापन करते है वहा समाज ने भी उसकी ओर से मुख मोड़ लिया है। पाकिस्तान की सीमा से सटा होने के कारण आए दिन पाकिस्तानी लुटेरे उनके पशुओ को ले जाते हे। वहा गमनागमन यातायात के साधनो की कोई व्यवस्था नही है। जहां समस्त देश में पचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत विकास कार्य हो रहे है वहा वह प्रदेश विकास की छाया से भी अछूता है। शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, पेय जल सभी का अभाव है, सरकार भी उसकी ओर से उदासीन है और आज तक किसी भी रचनात्मक सस्था, समाजसेवी रचनात्मक कार्यकर्ता अथवा राजनीतिक सगठन ने उस प्रदेश की ओर दृष्टिपात करने की आवश्यकता नही समझी। खेती के लिए तो वहा अनुकूल परिस्थितियां नही है परन्तु उद्योग धधो का भी नितात अभाव है। उसका परिणाम यह है कि वहां हद दर्जे की आर्थिक निर्धनता, सामाजिक पिछड़ापन और अज्ञान का साम्राज्य है। ऊपर से पाकिस्तानी घुसपैठियो का प्रत्येक क्षण भय बना रहता है। हमारे सरकारी अधिकारी और मत्रीगण जो अधिकांश दौरो के प्रेमी होते हैं वे भी इस अभावग्रस्त शुष्क प्रदेश में जाने की आवश्यकता नही समझते। वर्माजी ने उसी समय यह निर्णय कर लिया कि जीवन के शेष वर्ष वे अभावग्रस्त प्रदेश को समर्पित करेगे।

वर्माजी ने केवल सीमा पर रहनेवालो की दयनीय दशा और उस प्रदेश की अभावग्रस्तता के कारण ही यह निश्चय नही किया वरन् भारत की सीमा सुरक्षा के विचार ने भी इस मरु प्रदेश मे अपने को खपा देने के लिए कृत सकल्प किया था। वे भली भाति जानते थे कि शत्रु सर पर खड़ा है केवल सीमा सुरक्षा दल अथवा सेना के द्वारा ही देश की सीमा सुरक्षा नही की जा सकती। सीमा से लगे हुए प्रदेश के निवासियो का मनोबल भी ऊचा होना चाहिए और होनी चाहिए उनमे कट्टर देशभक्ति। विना सीमा समीपवर्ती प्रदेश के निवासियो के सक्रिय सहयोग और सजगता के सीमा की सुरक्षा सभव नही है। यही कारण था कि वर्माजी ने जीवन के अतिम वर्षो को उस मरुप्रदेश मे खपाने का निश्चय कर लिया। उसी समय चीन ने भारत पर आक्रमण किया उससे प्रेरित हो वर्माजी ने नवम्बर १९६२ से सीमा प्रदेश पर कार्य करना आरम्भ कर दिया।

सीमा प्रदेश को अपना भावी कार्यक्षेत्र वनाने के उपरान्त उन्होने सबसे पहला काम यह किया कि वे लगातार वहा के गावो मे जाते और वहा ग्रामीण जनता से सपर्क स्थापित करते। अल्पकाल मे ही उन्होने सीमाक्षेत्र के ग्रामवासियो का विश्वास प्राप्त कर लिया। उन्होने आशा भरे हृदय से आश्चर्य चकित होकर देखा कि नितात उपेक्षित सीमा प्रदेश के निवासियो को अपने स्नेह और मार्गदर्शन से उठानेवाला देवदूत आ पहुंचा है।

बात यह थी कि चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के कारण हमारे नेताओं का ध्यान सीमाओ की सुरक्षा की ओर गया और उन्हे अनुभव हुआ कि सैनिक व्यवस्था के साथ साथ वहा के जनमानस को भी सबल और सुसगठित वनाने की

आवश्यकता है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने एक समन्वय समिति बनाई जिसके अध्यक्ष श्री बलवन्तराय मेहता थे। उक्त कमेटी के सुझाव पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने राजस्थान पाक सीमाक्षेत्र के कार्य का उत्तरदायित्व श्री माणिक्यलाल वर्मा को सौप दिया। इस प्रकार वर्माजी को काग्रेस का पाक सीमा पर कार्य करने का आदेश प्राप्त हुआ था।

सीमा क्षेत्र पर कार्य करने का उत्तरदायित्व लेते ही वर्माजी ने एक साथ आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर सीमाक्षेत्र की समस्याओ से युद्ध छेड़ दिया। वे श्री ढेबर भाई से मिले। श्री ढेबर भाई खादी ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष थे उन्हे बतलाया कि सीमा क्षेत्र की कैसी दयनीय स्थिति है वहा के रहनेवालो की आर्थिक दशा सुधारने के लिए वहा ग्राम्य उद्योगो को पनपाने की आवश्यकता है। उन्होने राजस्थान सरकार से शिक्षा और चिकित्सा की सुविधाओ को प्रदान करने के लिए, भारत सरकार से नलकूपो का निर्माण करने के लिए, हरिजन सेवकसघ, आदिम जाति सेवक सघ, गौ सेवक सघ, गाँधी स्मारक निधि इत्यादि जितनी भी रचनात्मक कार्य करने वाली सस्थाएँ थी उनसे सीमावर्ती क्षेत्र मे अपने क्षेत्र के कार्य को हाथ मे लेने का आग्रह किया जिससे सीमावर्ती क्षेत्र मे शिक्षा, स्वास्थ्य, जल की समस्या तथा आर्थिक समस्या का हल हो सके।

गाँधी स्मारक निधि को वर्मा जी ने जो पत्र लिखा था उसको हम यहा देते हे जो उनकी कार्यप्रणाली पर प्रकाश डालता है।

१५६ नार्थ ऐवेन्यू
नई दिल्ली
१९ मार्च, १९६३

प्रिय महोदय,

आपको संभवतः यह ज्ञात होगा कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने भारत-पाक सीमा पर विभिन्न कार्य करने का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा है जिससे कि राष्ट्र को सुरक्षा मे सहायता पहुँचे। इस प्रदेश मे राजस्थान खादी बोर्ड द्वारा ऊन और चमडे का उद्योग स्थापित किया जा रहा है। गौ सेवासघ ने इस क्षेत्र मे बारह केन्द्र ने घी बनाने और उसकी बिक्री की व्यवस्था करने के लिए स्थापित करने का निश्चय किया हैं। क्योकि यातायात की सुविधाओ के अभाव मे ताजा दूध नही भेजा जा सकता। राजस्थान आदिम जाति सेवक सघ ने आदिवासी छात्रो के लिए दो छात्रावास बाडमेर, जैसलमेर और बीकानेर जिले मे प्रति सौ मील पर एक हरिजन छात्रावास खोलेगा। राजस्थान सरकार ने भी निश्चय कर लिया है कि प्रति सौ मील पर सरकार का शिक्षाविभाग एक स्कूल और स्वास्थ्य विभाग एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय स्थापित करेगा।

इस प्रकार सीमा क्षेत्र के कार्य का सफलतापूर्वक शुभारभ हुआ है गाँधी स्मारक निधि को ऐसे राष्ट्रीय कार्य मे अवश्य सहायता करनी चाहिए। इस क्षेत्र मे जल की बहुत

कमी है मुझे तथा मेरे सहयोगी कार्यकर्ताओं को महीने में कम से कम दो बार संपूर्ण सीमा क्षेत्र का सेवा कार्य की देखभाल करने के लिए दौरा करना पड़ता है। दुर्भाग्यवश मुझे सरकार अथवा अन्य किसी सस्था से जीप के खर्च की आर्थिक सहायता नहीं मिली। मुझे ५८० मील (गगानगर को छोड़कर) के सीमा क्षेत्र का दौरा करना पड़ता है। इस कार्य के लिए कम से कम दस कार्यकर्ताओं को रखना होगा प्रति कार्यकर्ता दो सौ रुपये मासिक व्यय होगा। मुझे विश्वास है कि गांधी स्मारक निधि इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य के लिए अवश्य आर्थिक सहायता प्रदान करेगी।

मत्री, गांधी स्मारक निधि
राजघाट, नई दिल्ली।

भवदीय
माणिक्य लाल वर्मा

कहने का तात्पर्य यह है कि वर्मा जी सभी स्रोतों से सीमा कार्य के लिए सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे श्री ढेबर भाई से मिलकर उन्होंने खादी ग्रामोद्योग कमीशन को इस क्षेत्र मे सक्रिय किया। कमीशन ने इस क्षेत्र का सर्वेक्षण कराकर सीमाक्षेत्र का सर्वेक्षण कराकर सीमा क्षेत्र मे पचास मील की चौडाई मे ऊन की कताई और रेशा उद्योग प्रारम्भ किया। परिणाम स्वरूप पिछले वर्षो मे बाडमेर, जैसलमेर, बीकानेर जिलो मे पाक सीमा से सटे हुए प्रदेश मे सैकड़ो गामो मे ऊन की कताई और रेशा उद्योग से लोगो को लाखो रुपये का रोजगार उपलब्ध हुआ। लगभग ६५ ऊन तथा रेशा उद्योग के केन्द्र चल रहे है।

वर्माजी केवल भारत सरकार, राजस्थान सरकार तथा अखिल भारतीय रचनात्मक कार्य करने वाली सस्थाओ के भरोसे ही नही रहे उन्होंने "पश्चिमी राजस्थान सीमा समिति" नामक सस्था की स्थापना कर उसके माध्यम से सीमा क्षेत्र के विकास की योजना बनाई और उसको मूर्त रूप देने मे जुट गए।

वर्माजी ने सीमा क्षेत्र को अपना घर ही बना लिया था। वे निरन्तर वहा के गावो का दौरा करते थे प्रत्येक गांव को वे निकट से जानते थे वहा के स्त्री पुरुष और युवक सभी उनको अपना रक्षक और हितू समझते थे और उनसे उनके घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो गए थे। वर्माजी को शिक्षा के सम्बन्ध मे एक बात खटकी। सीमा क्षेत्र मे जो स्कूल थे वे तो प्राथमिक विद्यालय ही थे और राज्य का शिक्षाविभाग गांवो में प्राथमिक विद्यालय ही स्थापित कर सकता था। माध्यमिक विद्यालय जिन स्थानो पर थे वहा आदिवासियो हरिजनो तथा पिछडी जातियो के बालको के लिए आदिम जाति सेवक सघ, हरिजन सेवक सघ तथा राजस्थान सरकार के समाजकल्याण विभाग ने छात्रावास स्थापित किये थे और उन्हे छात्रवृत्ति मिलती थी। वर्माजी के प्रयत्नो के फलस्वरूप वहा यह सस्थाए और सरकार के विभाग अधिक सक्रिय हो गए थे। वर्माजी ने राज्य सरकार को प्रभावित कर हरिजनो और आदिवासियो के लिए दस छात्रावास

स्थापित करवा दिए जिनमे हरिजन और आदिवासी छात्र रहकर शिक्षा प्राप्त करते है। इनके अतिरिक्त और भी छात्रावास आगे चलकर स्थापित हुए। इनमे हरिजनो के सात और आदिवासियो के लिए तीन छात्रावास थे। परन्तु ऊची जाति के बच्चो अर्थात् राजपूत ब्राह्मण, महाजन, जाट, माली आदि की शिक्षा की कोई व्यवस्था नही थी उपरोक्त संगठन या विभाग इन जातियो के बालको के लिए न तो छात्रावास ही स्थापित कर सकते थे और न उन्हे छात्रवृत्ति ही दे सकते थे। इन जातियो की आर्थिक स्थिति हरिजनो और आदिवासियो से भी गिरी हुई थी। जो लोग विभाजन के उपरान्त पाकिस्तान से भारत आए थे उनकी दशा अत्यन्त दयनीय थी। उसका परिणाम यह होता था कि इन जातियों का बालक चाहे जितना मेधावी या कुशाग्र बुद्धि क्यो न हो पांचवी कक्षा के आगे नही पढ सकता था क्योंकि उसके माता पिता की आर्थिक स्थिति ऐसी नही थी कि वह उसे जिला केन्द्र में भेज कर पढा सके।

जब वर्माजी ने सीमा क्षेत्र का दौरा किया तो इन ऊची कही जाने वाली जातियो की इस दुर्दशा को देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठा। उन्होने पश्चिमी राजस्थान सीमा विकास समिति के द्वारा जैसलमेर, बीकानेर तथा बाडमेर, मे सवर्ण जातियो के बालको के लिए तीन बडे छात्रावास स्थापित किए। इन छात्रावासो मे सवर्ण जातियो के वे बालक जिनके अभिभावको की आर्थिक दशा गिरी हुई है प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर निवास स्थान और आर्थिक सहायता प्राप्त कर अपना आगे का अध्ययन जारी रखते हैं। यह जातिया अभी तक नितात उपेक्षित थी। वर्माजी के इस कार्य ने उनके विकास के अवरुद्ध मार्ग को खोल दिया। यही कारण है कि इन जातियो के युवक वर्माजी को अपने उद्धारकर्ता के रूप मे आज तक श्रद्धा और भक्ति अर्पित करते है। प्रत्येक छात्रावास मे एक सौ छात्रो के रहने की व्यवस्था है।

जहा तक आर्थिक कार्यक्रम था वर्माजी ने सर्व प्रथम भूमिहीनो को खेती की भूमि दिलाने का कार्य अपने हाथ मे लिया। राजस्थान सरकार से बातचीत कर बाडमेर जिले के गांव 'बामणिया की ढाणी' से लेकर जैसलमेर जिले के गाव किशनगढ तक ३१४ मील लम्बी और ४६ मील चौडी पट्टी मे जो भी हरिजन, राजपूत, भील, कोली तथा अन्य भूमिहीन थे उन सभी को प्रति परिवार पचहत्तर बीघा भूमि दिलवाई और उन पर उनका कब्जा करवा दिया। आज वे उस पर खेती कर स्थाई रूप से इस पट्टी मे जम गए हैं अन्यथा वे इधर उधर भटकते रहते थे जहा थोडा बहुत कार्य मिल जाता वहा चले जाते थे।

भूमिहीनो को भूमि दिलाने. खादी कमीशन के द्वारा ऊन, चमडा तथा रेशा उद्योग के केन्द्र चलवाने के अतिरिक्त वर्माजी ने भारत सेवक समाज को प्रेरणा दी कि वे सीमा की पट्टी मे सत्रह लोक कार्य क्षेत्र केन्द्र स्थापित करवाए। केन्द्रीय भारत सेवक समाज ने लोक कार्यक्षेत्रो का सचालक श्री वर्मा को नियुक्त कर दिया। इन लोककार्य क्षेत्रो के द्वारा जनता के अभाव अभियोगो को दूर कराने का कार्य किया जाता था तथा शिक्षा का भी कार्य किया जाता था। शाहगढ़ केन्द्र के दो कार्यकर्ताओ को वर्मा जी ने

मुसलमानो की आबादी मे स्कूल चलाने का कार्य सौपा था। मुसलमान अपने पशुओं के साथ पानी की खोज मे फिरते थे जहां पानी सूख जाता वहां से वे चल देते और ऐसे स्थान पर अपने पशुओ को ले जाते कि जहां पशुओ को पानी मिल सके। वर्मा जी ने शिक्षको को भी उनके साथ जहां वे पशुओ के साथ जावे, जाने के लिए कहा इस प्रकार सीमा पर वर्मा जी ने चलते फिरते स्कूलो की व्यवस्था कर एक नई परम्परा डाली। नही तो जो सीमावर्ती जनसख्या स्थायी रूप से एक स्थान पर नही रहती उसके वच्चे तो कभी शिक्षित ही नही हो सकते थे। वर्मा जी की यह एक मौलिक सूझ थी कि हमे सीमा पर चल-विद्यालयो की व्यवस्था करनी चाहिए।

जल की समस्या :

वर्मा जी का ध्यान आरभ से ही सीमावर्ती प्रदेश मे जल के अभाव को दूर करने की ओर गया था उन्होने भारत सरकार के विभिन्न मत्रालयो का इस ओर ध्यान दिलाया और उन्हे प्रेरित किया कि वे इस शुष्क प्रदेश मे जो कि राजस्थान नहर के जल क्षेत्र के वाहर है जहा राजस्थान नहर का जल नही पहुँच सकता नलकूपो का निर्माण करें। लेखक ने उनका एक पत्र जो तत्कालीन कृषि और खाद्य मन्त्री श्री रामसुभगसिंह को लिखा गया था देखा। उसमे उन्होने वड़ी वेदना और दृढता के साथ उन्हे लिखा था कि राजस्थान की मरुभूमि का वह भाग जो पाकिस्तान की सीमा पर है ६५० मील लम्वा और २५० मील चौडा है। प्रति वर्ष यहा अकाल पड़ता है। देश को स्वतन्त्र हुए सत्रह वर्ष हो गए परन्तु भारत सरकार ने अकाल को समाप्त करने की ओर कोई ध्यान नही दिया केवल राजस्थान सरकार के हाथ मे वहा की जनता की तकदीर सौप रखी जो राजस्थान सरकार की शक्ति और सामर्थ्य के वाहर है कि वह इस दुर्भिक्ष के अभिशाप को समाप्त कर सके। सीमा पर सुरक्षा की भी कोई उचित व्यवस्था की गारन्टी नही है। भारत सरकार ने सीमा सुरक्षा का कार्य भी राजस्थान सरकार को सौप रखा है। हजारो गांवो में कोई रास्ते नही है एक करोड़ एकड़ से अधिक भूमि रेगिस्तान मे पड़ी जहा सिचाई की वात तो दूर रही पीने का पानी भी नही है। मुझे तो इस समय सीमा की पट्टी की जनता मे यह विश्वास पैदा करना है कि भारत सरकार हमारी सम्हाल करती है वह गरीवी मिटाने के लिए चिन्तित है। इसलिए आप राजस्थान सरकार के कृषि मन्त्री को वुलाकर यह फैसला करदे कि साठ ट्यूब वैल्स (नलकूप) इसी वर्ष चाहे उनका व्यय भारत सरकार दे अथवा राजस्थान सरकार से दिलावे खुद जाना चाहिए। नलकूपो की सूची साथ भेज रहा हू।

नलकूपो के सम्वन्ध मे वर्माजी का जो भारत के प्रधान मन्त्री, कृषि तथा खाद्य मन्त्री, स्वास्थ्य मन्त्री तथा योजना मन्त्री से पत्रव्यवहार हुआ है उससे एक तथ्य प्रगट होता है कि विकास के कार्य मे भी हमारे मन्त्रीगण निजी राजनीतिक लाभ और स्वार्थ से ऊपर नही उठ पाते। तत्कालीन स्वास्थ्य मन्त्री सुश्री सुशीला नैयर ने वर्माजी को एक पत्र लिखा था जिसका नीचे लिखा अंश इसकी पुष्टि करता है।

स्वास्थ्य मन्त्री
स्वास्थ्य मन्त्रालय, नई दिल्ली
१२ जुलाई, १९६५

पत्रांक
१२-१/६५ स्वा म

माननीय श्री माणिक्यलाल वर्मा,

आपका २७ जून का पत्र मिला। ७० लाख रुपये राजस्थान सरकार को ही हम तो दे सकते थे। उनको हमने विशेष रूप से कहा था कि वे इस पैसे को अधिकतम बोर्डर क्षेत्र मे ही खर्च करे। खासकर बीकानेर आदि की योजना को प्रथम स्थान देने को कहा था। मै नही कह सकता कि उन्होने कहा और कैसे वह रुपया खर्च किया। आप का यह कहना सही है कि पानी की समस्या को हल करने का कार्य मेरे मत्रालय का है लेकिन मेरे मत्रालय की तरफ से सीधे पानी की समस्या को हल करने का कार्य किसी भी स्टेट मे नही होता। राज्य सरकार द्वारा ही योजना बनती है और वे ही पैसा खर्च करते है।

विनीता
सुशीला नैयर

वर्माजी ने एक बडी योजना ट्यूब वैल्स (नलकूपो) के निर्माण करने की तैयार की और प्रधान मन्त्री तथा सभी को खटखटाया। उनके लगातार परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि केवल सात स्थानो पर ट्यूब वैल्स खोदने का प्रयाग हुआ। वर्माजी ने अपने एक पत्र मे लिखा था "सात जगह नलकूप खोदने का काम चल रहा है परन्तु यह काम प्रगति नही कर रहा है क्योकि अफसर रेगिस्तान के उस हिस्मे मे जाना नही चाहते जहा जीप नही जा सकती। इसके साथ उनका कहना है कि हैवी वेहाईकिल्स (भारी वाहन) का अभाव है इस कारण नलकूप खोदने की मशीनो को वहा ले जाने मे कठिनाई होती है।"

वर्माजी का कहना था कि राजस्थान नहर तो थोड़े से क्षेत्र का ही सिंचन करेगी पाक सीमा क्षेत्र की पट्टी की विस्तृत मरुभूमि तो राजस्थान नहर के वरदान से भी वचित रहनेवाली है। यदि इस मरुभूमि में नलकूपो का एक जाल बिछा दिया जावे तो इस मरुभूमि का दुष्काल समाप्त हो सकता है।

वर्माजी ने प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री को इस सम्बन्ध मे लिखा उनसे इस सम्बन्ध मे बात की और सीमा प्रदेश के लिए उनकी सहानुभूति प्राप्त की परन्तु शास्त्रीजी का शीघ्र निधन हो गया। उसके उपरान्त उन्होने इन्दिरा गाधी को लिखा। उन्होने सीमाक्षेत्र मे नलकूपो की बडी योजना बना कर प्लानिंग कमीशन को भेजी। उनका कहना था कि इस पट्टी मे जो राजस्थान नहर के जल से लाभान्वित नही होगी उसमे नलकूपो से सिंचाई की व्यवस्था की जावे तो भारतवर्ष खाद्यान्न की दृष्टि से स्वावलम्बी बन सकता है। उन्होने अपनी योजना इस आधार पर बनाई थी।

१. राजस्थान मे वह मरुस्थल प्रदेश जो आए दिन दुर्भिक्ष से पीड़ित रहता है

६५० मील लम्बा और ४०० मील चौडी है अर्थात् कुल क्षेत्रफल २,६०,००० वर्गमील है।

२. राजस्थान नहर से लाभान्वित होनेवाला क्षेत्र नहर की लबाई ३६४ मील है उसके दोनो किनारो पर तीस मील तक के क्षेत्र मे जल पहुचेगा अर्थात कुल सिंचित क्षेत्र १०,०२० वर्गमील होगा।

३. अर्थात २,४९,९८० वर्गमील शुष्क मरुस्थल शेष रहेगा जिसमे यदि सिचाई की व्यवस्था हो जावे तो वह भारत का खलिहान वन सकेगा।

यदि प्रति चार वर्ग मील मे एक नल कूप लगाया जावे तो ६२,४९५ नल कूपों की आवश्यकता होगी। इतने नलकूपो का निर्माण कर सकना निकट भविष्य मे सभव नही हो सकता क्योकि प्रर्याप्त आर्थिक साधन उपलब्ध नही किए जा सकते अतएव भारत सरकार को समस्त मरुस्थल प्रदेश के सीमावर्ती १०० मील चौड़ी पट्टी मे ही नल कूपो का निर्माण करना चाहिए। ६५० मील लबी और १०० मील चौडी मरुस्थली पाक सीमा की पट्टी का कुल क्षेत्रफल ७५ हजार वर्गमील है उसमे १०,०२० वर्गमील राजस्थान नहर से सिंचित होगी अस्तु ५४९८० वर्गमील की पट्टी मे नलकूपो का निर्माण किया जावे तो १३७४५ नलकूपो की आवश्यकता होगी। पहले वे स्थान चुन लिए जाये कि जहां नलकूपो का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। प्रतिवर्ष एक हजार नलकूपो का निर्माण किया जाना चाहिए। इस प्रकार चौथी योजना मे पाच हजार नलकूपो का निर्माण हो।

उनका कहना था कि नलकूप की औसद गहराई ७५० से ११०० फीट होगी और औसद लागत व्यय पचास से पचहत्तर हजार रुपए होगा।

यही नही वर्माजी ने सीमा की समस्त मरुस्थल पट्टी के क्षेत्र का अध्ययन कर उस क्षेत्र मे गाव गांव घूम कर एक विस्तृत सूची तैयार की थी कि कहा कहा नलकूपों का निर्माण होना चाहिए। उन्होने प्राथमिकता की सूची भी तैयार करके योजना आयोग भारत सरकार से कृषि तथा खाद्य विभाग को दी थी।

सत्तर वर्ष से अधिक आयु होने पर भी वर्माजी उस निर्जन मरुस्थल प्रदेश मे भटकते थे और उस शुष्क प्रदेश को सिंचित करने के लिए अथक परिश्रम कर रहे थे कि उनका स्वर्गवास हो गया।

केवल नलकूपो की ही विस्तृत योजना वर्माजी ने तैयार नही की थी वरन् उन्होने चौथी पचवर्षीय योजना मे सीमावर्ती प्रदेश के कृषि उद्योग धधो, यातायात तथा शिक्षा आदि की भी एक विस्तृत योजना तैयार की और सरकार के सामने यह प्रस्ताव रखा कि सरकार सीमावर्ती प्रदेश के विकास के लिए एक प्रभावशाली बोर्ड गठित करे जो वहा विकास कार्य की व्यवस्था करे। परन्तु उनके स्वर्गवासी होने के उपरान्त सीमा प्रदेश की ओर सरकार का ध्यान दिलानेवाला कोई नही रहा।

वर्माजी ने केवल सीमावर्ती प्रदेश के आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए ही प्रयत्न नही किया वहा की जनसख्या मे प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध भी अभियान आरभ किया। जहा भी वे जाते वहा उन प्रचलित कुरीतियो के विरुद्ध वातावरण बनाते स्त्री पुरुषो को शपथ दिलवाते कि वे कन्या विक्रय नही करेंगे, शराब नही पियेगे जिस स्त्री

का पति जीवित है उससे नाता नही करेगे। मृत्यु भोज आदि पर अधिक व्यय नही करेगे इत्यादि वे गावो मे सगठन करते जो उनके समाज सुधार के कार्य को करता। ग्राम संगठन के द्वारा जनता मे बच्चो तथा लडकियो को पढाने के लिए उत्साह उत्पन्न करते। वर्माजी ग्राम युवको से मिलते और उनसे बीड़ी न पीने की प्रतिज्ञा कराते। जब वे सीमा का दौरा करते तो छात्रावासो मे जाते वहा के छात्रो से मिलते उनकी समस्याओ और कठिनाइयो को सुनते और उनको दूर करने के लिए प्रयत्न करते साथ ही उनमे देश भक्ति की भावना उत्पन्न कर भविष्य मे देश की सेवा करने की चाह उत्पन्न करते। वे बहुधा रात्रि मे छात्रावासो मे ही रहते थे जिससे कि छात्र युवक उनके समीप आ जाते थे।

आए दिन पाकिस्तान से मिली सीमा पर स्थित गावो पर पाकिस्तानी लुटेरे आक्रमण कर पशुओ को ले जाते तथा लूटपाट करते थे। वर्माजी ने ग्रामरक्षक दल की योजना तैयार की और कई गावो में ग्राम रक्षकदल सगठित किए। उनकी योजना थी कि प्रत्येक क्षेत्र मे ग्रामरक्षक दल हो उन्हे अस्त्र-शस्त्रो को चलाने का प्रशिक्षण दिया जावे और वे सीमावर्ती जवानो की सहायता करने तथा सीमारक्षा की दूसरी पंक्ति का काम दे उन्होने प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को इस सम्बन्ध मे लिखा था कि यदि हम सीमा को सुरक्षित करना चाहते है और तस्कर व्यापार को रोकना चाहते है तो हमे सीमाक्षेत्र का आर्थिक विकास करना चाहिए और ग्रामरक्षक दलो का सगठन करना चाहिए। वर्माजी की योजना थी कि ग्रामरक्षक दलो का ऐसा शक्तिशाली सगठन खड़ा किया जावे कि जो आज सीमा क्षेत्र के निवासी डाकुओ और लुटेरो से आतकित रहते है वे आश्वस्त हो जावे और तस्कर व्यापार पर रोकथाम हो सके। ग्रामरक्षक दल में प्रशिक्षित स्वयसेवक हो जो आग्नेयाअस्त्रो को चलाना जानते हो सरकार उन्हे आवश्यक हथियार दे।

वर्माजी निरन्तर सीमाक्षेत्र का दौरा करते थे और वहां के निवासियो की जो कठिनाइयां होती उनको सरकार के समक्ष रखकर उनको दूर कराने का प्रयत्न करते थे। सीमाक्षेत्र मे कार्य करने से उन्हे यह भी कटु अनुभव हुआ कि कतिपय प्रभावशाली किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय और असामाजिक तत्वो को सत्तारूढ राजनीतिज्ञो और राज्याधिकारियो का आश्रय प्राप्त है और वे निरीह ग्रामवासियो को लूटते और खसोटते है और उन्हे आतकित करते है। असहाय ग्रामवासियो की करुणाजनक स्थिति देखते तो वर्माजी का अन्तर पीड़ा से भर जाता वे तुरन्त राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित करते भ्रष्ट अधिकारियो के सबंध में सरकार को जानकारी देते। गाववालो के कष्टो को दूर कराने का प्रयत्न करते। ऐसे भी अनेक अवसर आए कि जब किन्ही कारणोवश विशेषकर अवाछनीय व्यक्तियो के राजनीतिक प्रभाव के कारण राज्य सरकार ने गाववालो के कष्टो के प्रति उदासीनता बरती तो वर्माजी का क्षोभ, रोष और शौर्य जाग पडा और उन्होने सरकार को भी चुनौती दी। यहा स्थानाभाव के कारण सभी घटनाओ का विवरण तो दिया नही जा सकता लेखक केवल बाखासर ग्राम की घटना का उल्लेख मात्र करेगा। इससे ज्ञात हो जावेगा

कि वर्माजी के अन्तर मे पीड़ितो के लिए कितनी गहन पीड़ा थी और वे उनके लिए कहां तक जा सकते थे ।

बाखासर बाडमेर जिले की चौहटन तहसील मे एक गाव था जागीरीप्रथा समाप्त हो जाने पर भूतपूर्व जागीरदार के भाई इत्यादि गाववालो को आतंकित करते उनको डरा कर उनसे धन वसूल करते और लूटपाट करते परन्तु क्योंकि वे प्रभावशाली थे राज्य कर्मचारी भी उनके समर्थक थे पुलिसवालो से वे मेल रखते थे अतएव वे निर्भय होकर मनमानी करते थे । इस सबध मे वर्मा जी ने कई पत्र तत्कालीन मुख्य मत्री श्री मोहन लाल सुखाडिया को लिखे उनके कुछ अश यहा उद्धृत करना आवश्यक है ।

"... आप जब पिछली बार मेरे साथ बाखासर आए मैने खुली मीटिंग मे उपरोक्त लुटेरो के जुल्मो की कहानी आपके सामने सुनाई तब ...... मौजूद था । मैंने साफ कह दिया था कि राजस्थान सरकार इस विषय मे जीरो (शून्य) है जागीरी के जमाने मे जिस प्रकार टैक्स और लगान वसूल किया जाता था उसी प्रकार आज भी किसानो से लगान और टैक्स वसूल करते है । आपने सारी बाते गौर से सुनी और अपने अफसरो को जो कुछ भी हिदायते देनी थी दी होगी । मगर मै कह सकता हूँ तारीख १२ जून १९६६ तक आपके दिए हुए आदेशो और राजस्थान सरकार का अस्तित्व नगण्य था ।

अब आपके देखने की बात है कि आया इस हुकूमत को निस्तेज रखकर आपको मुख्यमन्त्रित्व चलाना है अथवा कुछ ठोस कार्यवाही करके इन जातियो के जुल्मो का खातमा करना है ।

मे आपके अन्य किसी अफसर पर विश्वास नही करूगा । स्वयं आई. जी. पी. श्री हनुमानप्रसाद जी और जाच करनेवाले होम सेक्रटरी श्री शिवशकर जी और कमिश्नर बोर्डर पर जाकर उन्हे गिरफतार करे, और बाद मे जनता मे विश्वास प्राप्त कर जाच करे ।

बाखासर गाववालो को मैंने सलाह दी है कि मेरे पत्र पर राजस्थान सरकार किसी कलेक्टर या एस. पी. को जाच पर भेजे जिसका काम यह हो कि वह राजस्थान सरकार को रिपोर्ट करदे और राजस्थान सरकार फिर बाद मे कदम उठये तो बयान देने के लिए इनकार कर देना ऐसे असमर्थ और अनाधिकारी अफसरो के सामने कोई ध्यान मत देना नही तो आपकी इज्जत अधिक बिगडेगी ।

सैकडो व्यापारी बाखासर से भाग चुके है बस्ती उजड रही है । अब वहा केवल बारह व्यापारी हैं, जो ६ माह के भीतर भीतर बाखासर को उजाड करनेवाले है ।

मैने उन्हे यह भी सलाह दी कि ३ माह के अन्दर राजस्थान सरकार कोई कदम न उठाए तो बेशक बाखासर को उजाड कर देना ।

मै यह लिखना नही चाहता था । मैंने आपको मुख्य मत्री के नाते कडे से कडे पत्र लिखे लेकिन परिणाम कोई नही निकला । इसलिए ग्राम बाखासर के सबन्ध मे आपके पास भेजा जाने वाला यह अतिम पत्र है, फिर मुझे कोई ठोस कदम उठाना होगा,

उठाऊँगा। (माणिक्यलाल वर्मा) (वर्मा जी द्वारा मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया को २०-६-१९६६ को लिखे गए पत्र से)

बाखासर के संबन्ध मे पहला पत्र वर्मा जी ने गडरा रोड से श्री मोहनलाल सुखाडिया तत्कालीन मुख्य मत्री को २१-१-६४ को लिखा था उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं —

...... बाड़मेर जिले की चोहटन तहसील का बाखासर एक बदकिस्मत गाव है जहां आज भी राक्षसो का अत्याचार है और उन अत्याचारो के कारण (१) कई व्यक्ति चुपचाप कत्ल कर दिए गए पुलिस चुप रही एक भी कातिल गिरफ्तार नही किया गया। (२) कई वहिनो का सतीत्व लिया गया (३) व्यापारियो से मनमानी चीजे वसूल की गई और कीमत नही दी गई (४) सैकड़ो आदमी खुले आम पीटे गए।

इस सत्रह वर्ष के स्वराज्य मे राजस्थान का आतंकित और शोषित यह बाखासर किसी जमाने मे पांच हजार की आबादी का गांव था। आज वहा दो हजार से अधिक की जनसख्या नही रही है। डेढ़ सौ व्यापारी परिवार भाग चुके है। २०-२५ परिवार वचे है वे अन्त तक चले जावेगे। बाखासर में तब कोई व्यापारी नही रहेगा।

बाखासर मे मैं जब जब पहुंचा इस बर्बादी के कारणो का पता न लगा सका। अबकी वार लुहाणा जाति के व्यापारी वीरचंद उपसरपच ग्राम पचायत से मैने बाते की उसने आखो मे आसू बहाते हुए कहा—हमे आप जाने दीजिए मत रोकिए। उसका कहना था कि क्या आप यह चाहते हैं कि जब कोई कार्यवाही हो तो हम यह जाहिर बयान दे कि हमारी अमुक बहिन बेटी की इज्जत ली गई है और अमुक वस्तु मुफ्त मे ली है। क्या यह सरकार इस गांव के उजड़ने का इतने दिनो तक पता नही लगा सकी ?

सबसे बडा सदमा गांववालो को तब लगा जब आपका और आपके मिनिस्टरो का दौरा हुआ और साधुवेषधारी ..... के यहा आप खाना खाने गए। गाववालो से आपने अलग बात तक नही की। यहा की पुलिस आर. ए. सी. आफिसर्स सब जागीरदारो के पुर्जे है।

मैने फैसला किया है कि १५ फरवरी तक आपने व्यक्तिगत दिलचस्पी लेकर इस गांव का आतंक दूर नही किया तो बाकी बचे व्यापारियो को निर्भयता से बाखासर मे रहने का विश्वास पैदा नही किया तो मेरा भावी जीवन बाखासर में लगेगा और राजस्थान का सार्वजनिक कार्य और पाकिस्तान बोर्डर की सभाल भी छोड दूगा और बाखासर को निर्भय बनाने मे जीवन का अत होगा।

ऊपर दोनो पत्रो के कुछ अश पढने से जहां वर्मा जी के अन्तर की व्यथा और भावना का दिग्दर्शन होता है वहां यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आज की दूषित राजनीति मे जो भी व्यक्ति कुछ वोट बटोर सकता है किसी क्षेत्र विशेष मे प्रभावशाली है वह कानून की भी उपेक्षा कर सकता है। वर्मा जी के चरित्र की यह विशेपता थी कि पीड़ितो पर अत्याचार हो यह वह सहन नही कर सकते थे। जब जब ऐसे अवसर आए

उन्होने सरकार का विरोध किया और अपने प्रिय जनो की आलोचना करने से भी संकोच नही किया। इस घटना से लेखक के मन में यह प्रश्न स्वत: उत्पन्न होता है कि आज की सरकार कितनी गतिहीन हो सकती है। जिस व्यक्ति के नेतृत्व मे एक स्वयसेवक की भाति सत्तारुढ़ मन्त्रियो ने राजनीतिक प्रशिक्षण प्राप्त किया हो जिसने मंत्रियो के राजनीतिक भविष्य का निर्माण किया हो उसको इस राज्यतंत्र को गतिशील बनाने के लिए इतने कठोर कदम उठाने पड़े तो साधारण नागरिक के करुण-क्रन्दन की सुनवाई किस प्रकार हो।

सीमा क्षेत्र के ग्रामवासियों के कष्टों की कहानी वर्मा जी के पत्रो में भरी पड़ी है केवल सीमाक्षेत्र ही नही वे तो मेवाड़ तथा राजस्थान के अन्य क्षेत्रो में निरन्तर दौरा करते थे किसान और आदिवासी अपने कष्टो की कहानी उन्हे सुनाते थे और वे उनके कष्टो को दूर करने मे संलग्न हो जाते थे। उन्होने अपना सपूर्ण जीवन उनकी सेवा मे खपा दिया था यही कारण था कि वे उन्हें अपने त्राता के रूप मे देखते थे।

जहां वर्मा जी सीमा क्षेत्र के ग्रामीणो की सम्हाल करते थे वहां उनकी दृष्टि देश की पाकिस्तान से सटी सीमारक्षा की ओर भी थी। पाकिस्तान से सटी राजस्थान की सीमा ६४७ मील लंबी और १५० से २०० मील चौड़ी हैं जो अत्यन्त शुष्क मरुभूमि है। केवल गगानगर जिले मे एक सौ मील की पाकिस्तान की सीमा की पट्टी नहर से सिंचित है और वहां के पंजाबी किसान समृद्धिशाली और शक्तिशाली है। शेष ५४७ मील का क्षेत्र जो बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर जिलो मे है अत्यन्त शुष्क मरुभूमि है। इस क्षेत्र मे सत्तर प्रतिशत जनसंख्या मुसलमानो की, २० प्रतिशत हरिजनों (मेघवालो) की और दस प्रतिशत मे राजपूत भील आदि बसे है। अधिकाश बस्तियां ऐसी हैं जहां केवल मुसलमान ही रहते हैं। पाकिस्तान के एजेन्ट उनमे से कुछ को लालच देकर राष्ट्र द्रोही बना लेते हैं और उनकी सहायता से आये दिन सीमा पर घटनाएं होती हैं वर्मा जी ने सरकार के सामने मिश्रित बस्तियो की एक योजना रखी। उनका कहना था कि जब तक सरकार इस क्षेत्र के निवासियो की आर्थिक दैन्यता को दूर नही करती तब तक न तो यह घटनाएँ ही बद होगी और न तस्कर व्यापार ही रोका जा सकता है। अस्तु उनका सुझाव यह था कि ट्यूब वैल (नलकूपो) का निर्माण किया जावे और उससे सिंचित भूमि में केवल एक जाति के लोग ही नही मिश्रित बस्तियां बसाई जावे तो यह घटनाए तथा तस्कर व्यापार बंद हो सकता है। वर्मा जी ने मुस्लिम बस्तियो मे जाकर उन्हे बतलाया कि पाकिस्तानी लुटेरो को शरण देना या सहायता देना अत्यन्त राष्ट्रद्रोहिता का कार्य है। यही नही उन्होने जो सत्रह लोककार्य क्षेत्र स्थापित किए थे उनके कार्यकर्ताओ के द्वारा वे सीमा क्षेत्र पर पाकिस्तान की गतिविधियो की जानकारी प्राप्त कर प्रधान मत्री को अवगत करते थे।

वर्मा जी की यह दृढ मान्यता थी कि जब तक सीमावर्ती निवासियों को रोजगार नही मिलेगा तब तक तस्कर व्यापार बद नही होगा इसी कारण वे भारत सरकार तथा राजस्थान शासन का ध्यान उस प्रदेश के आर्थिक विकास की ओर विशेष रूप से

दिलाते थे ।

जब १९६५ मे भारत पाक युद्ध हुआ और पाकिस्तान ने राजस्थान से लगे सीमा क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया तो वर्माजी ने सीमा क्षेत्र के गांवो मे जाकर वहां के निवासियो का मनोबल बनाए रखने का कार्य किया और राजस्थान सरकार को वस्तुस्थिति से परिचत कराया। जब भारत पाक युद्ध समाप्त हुआ तो वर्मांजी ने शरणार्थियो के पुनर्वास का कार्य अपने हाथ मे लिया और भविष्य मे सीमा की सुरक्षा की दृष्टि से राजस्थान के मुख्य मत्री तथा भारत सरकार की एक योजना भेजी जो इस प्रकार थी ।

"पिछले संघर्ष मे यह अनुभव हुआ कि भारत मे बोर्डर पर बसे भारतीय लडाई छिड़ते ही अपने घर छोड़ कर चले आए शत्रुओ के लिए स्थान खाली छोड दिया। भारत सरकार के सुरक्षा विभाग और पुलिस फोर्स की यह कमजोरी रही कि स्थानीय जनता को मुकाविले के लिए तैयार नही किया और उनमे साहस नही भरा। भविष्य के लिए मेरे नीचे लिखे सुझाव हैं।

१. सीमावर्ती क्षेत्र मे प्रत्येक १८ वर्ष से ऊपर के युवक को अनिवार्य सैनिक शिक्षा दी जावे।

२. सैनिक प्रशिक्षण समाप्त होते ही प्रत्येक युवक को आधुनिक हथियार दिए जावे ।

३. उनका एक रजिस्टर रखा जावे जिससे कि संकट के समय उनकी सेवाएं प्राप्त की जावे। परम्परागत सैनिक जातियो को सैनिक शिक्षा देकर सीमाक्षेत्र की अगली पक्ति में बसाया जावे और प्रत्येक परिवार के लिए ५० बीघा सिंचित और ५० बीघा गैर सिंचित भूमि खेती के लिए दी जावे।

दूसरी पक्ति मे उन लोगो को बसाया जावे जो सीधे संघर्ष के लिए उपयुक्त न हो परन्तु खेती उद्योग तथा व्यापार कर अपना जीवन यापन करनेवाले बसाए जावें। इस सुझाव के अनुसार राजपूत भील और जाटो को पहली पक्ति में तथा अन्य जातियो को दूसरी पक्ति में बसाया जावे। दूसरी पक्ति मे बसाए जानेवाले लोगो को भी सैनिक शिक्षा दी जानी चाहिए ।"

भारत पाक सघर्ष के समय तथा उसके उपरान्त जनता का मनोबल गिरा नही उसका मुख्य कारण वर्माजी थे। वहा की जनता को उन पर दृढ विश्वास था।

परन्तु जहा वर्माजी ने अपने जीवन के अतिम वर्षो को सीमा क्षेत्र की सेवा में खपा दिया और उस क्षेत्र मे नया जीवन उत्पन्न किया जो स्वतंत्रता प्राप्ति के सत्रह वर्षो बाद भी नितांत उपेक्षित था वहा उनको भारत सरकार, राजस्थान सरकार से रचनात्मक सस्थाओ से उतना अधिक सहयोग नही मिला जितना चाहिए था। छात्रावासो के लिए सीमाक्षेत्र पर जो कार्यकर्त्ता उन्होने बिठाये थे उनके लिए तथा स्वय अपने दौरे के लिए जीप के व्यय के लिए भी उन्हे स्वय ही धन भी एकत्रित करना पड़ता था। सरकार से आंशिक सहायता ही मिलती थी। इस सम्बन्ध मे वर्माजी का भारत सरकार,

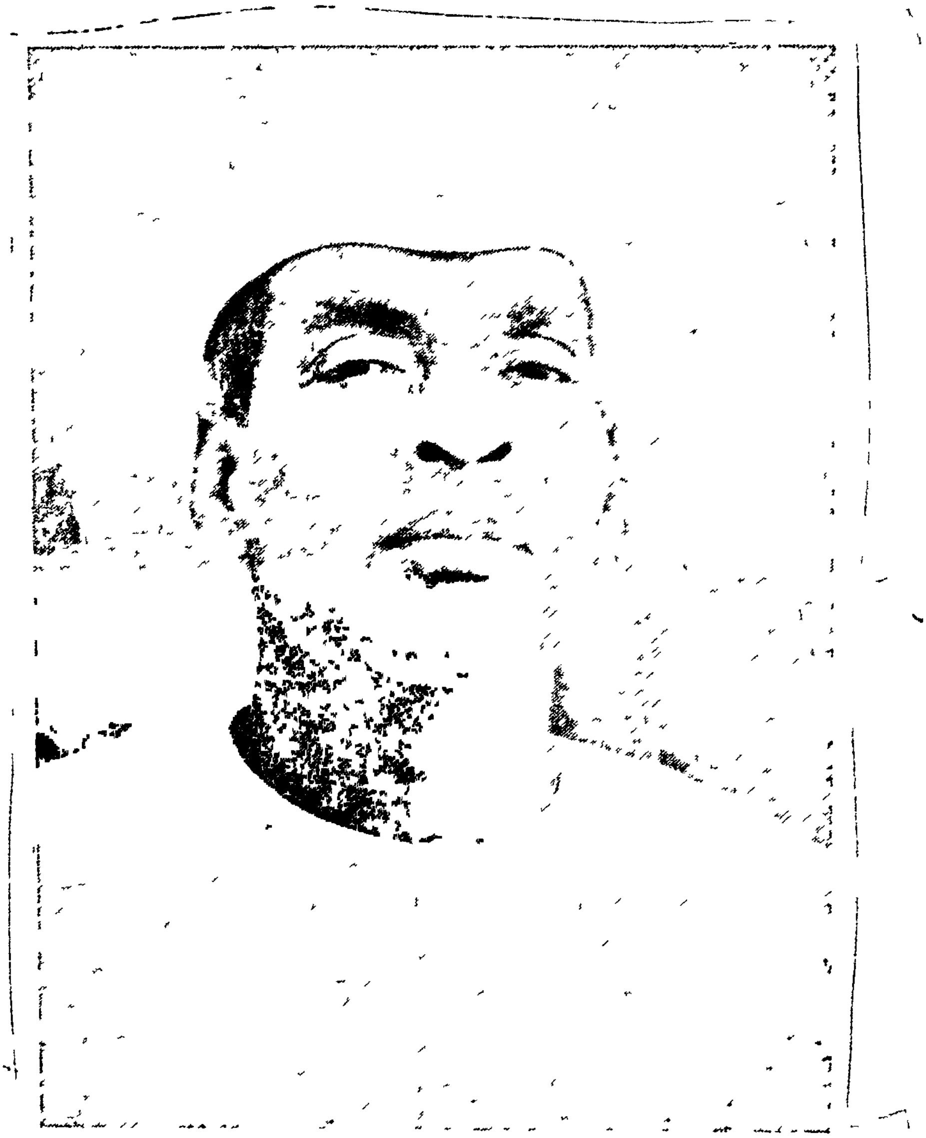
राजस्थान सरकार तथा कलकत्ते के कतिपय उद्योगपतियो से जो लम्बा पत्र व्यवहार हुआ उसको पढकर लेखक के मन में सहसा यह विचार उत्पन्न हुआ कि उन्हे कितनी अधिक शक्ति इस कार्य मे लगानी पडती थी। यदि वे इस चिन्ता से मुक्त होकर सीमा क्षेत्र मे कार्य कर पाते तो कितना अच्छा होता।

इस सम्बन्ध में एक बात का उल्लेख यहां कर देना आवश्यक है। मृत्यु के कुछ समय पूर्व वर्माजी ने राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष पद को स्वीकार कर लिया था। राजस्थान सरकार ने उन्हे बगला इत्यादि मन्त्री स्तर की सभी सुविधाए तथा बारह सौ मासिक वेतन देना निश्चय किया था। उस समय बहुत से सार्वजनिक कार्यकर्ताओ को आश्चर्य हुआ था और उनको वर्माजी द्वारा बोर्ड की अध्यक्षता स्वीकार करना कुछ अटपटा सा लगा था। लेखक ने जब अन्तिम बार उनसे जयपुर मे मिलना हुआ था इस सम्बन्ध मे उनसे बात की थी तो मुझे ज्ञात हुआ कि उन्होने केवल इस उद्देश्य से उस पद को स्वीकार किया था कि वे राजस्थान के पिछडे वर्गो और विशेषकर सीमाक्षेत्र के निर्धन देशवासियो को रोजगार दिलाने के लिए खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड का उपयोग कर सकेंगे और स्वयं अपने दौरे के लिए जो उन्हे जीप आदि प्राप्त न कर सकने के कारण बहुत अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता था वह दूर हो जावेगी। बोर्ड की जीप का वे दौरे के लिए उपयोग कर सकेंगे।

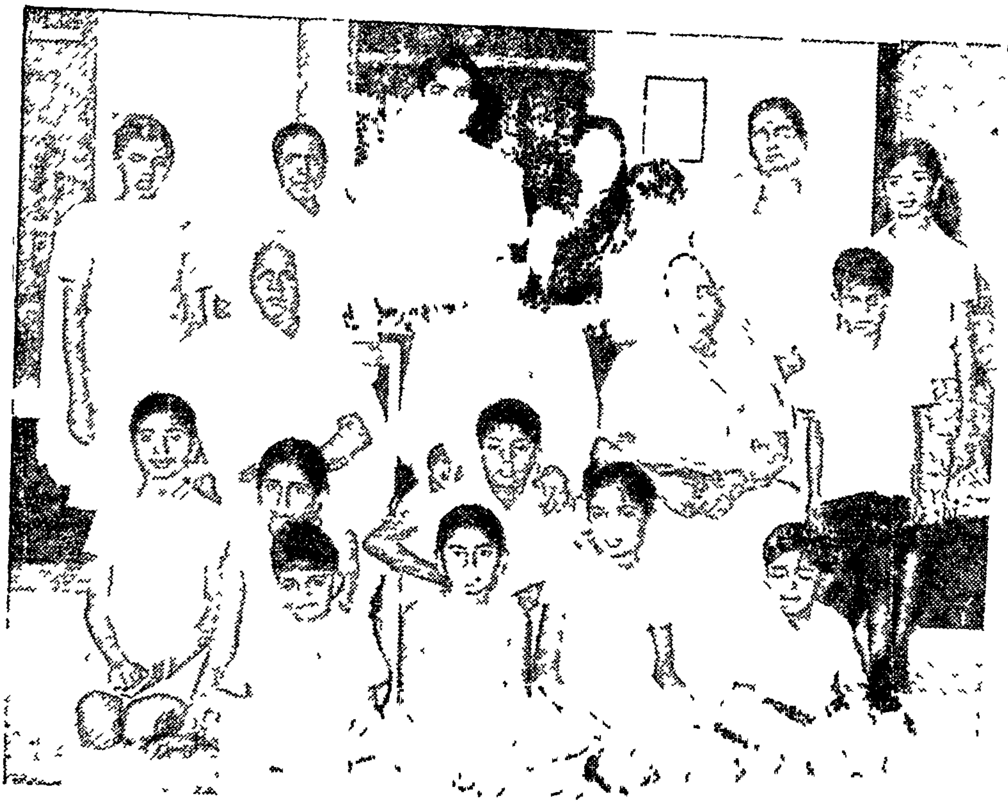
यह सभी जानते है कि वर्माजी ने जो मृत्यु के पूर्व अल्प समय बोर्ड के अध्यक्ष रहे मत्री स्तर की कोई सुविधा स्वीकार नही की। उन्होने कभी भी सरकारी बगला स्वीकार नही किया, न सरकारी मोटर का उपयोग किया न निजी सचिव लिया और न अन्य सुविधाए ही स्वीकार की। वे बोर्ड के कार्यालय के एक कमरे मे रहते थे और उन्होने बारह सौ रुपये मासिक वेतन स्वीकार न कर केवल पांच सौ रुपया मासिक वेतन ही लिया। इससे यह स्पष्ट है कि उन्होने जो यह पद स्वीकार किया था वह केवल आर्थिक दृष्टि से गिरे हुए ग्रामवासियो की सेवा के उद्देश्य से ही स्वीकार किया था।

वर्माजी के सीमावर्ती क्षेत्र के कार्य की जानकारी पाकर श्री बलवन्त भाई मेहता जो कि पब्लिक कोआपरेशन पब्लिक रिलेशस डिफैस कमेटी के अध्यक्ष थे ने वर्माजी से एक बार (१६ जनवरी १९६३) कहा था कि इसी प्रकार का काम नेफा (पूर्वी सीमा) मे जमाओ। वर्माजी ने उन्हे उत्तर दिया था कि यह प्रयोग सफल करके नेफा मे जाऊगा उन्होने स्वीकार किया था कि पहले राजस्थान के पाक सीमा पर भली भांति काम जमालो फिर नेफा मे इसी प्रकार का सगठन करो (डा. १६ जनवरी १९६३)

जब लेखक वर्माजी की डायरी तथा सीमाक्षेत्र सबधी वर्माजी की फाइलो की विपुल सामग्री को पढ रहा था तो उसके हृदय मे रह रह कर यह विचार उठता था कि बहत्तर वर्ष की आयु मे और लगभग पिछले तीस वर्षो से पेट की भयकर खराबी को लिए हुए वर्माजी उस निर्जन जलविहीन शुष्क प्रदेश में जहां रेतीली आधियां चलती है गाव गाव घूमते थे और वहां की उपेक्षित जनता के कष्टो को दूर करने के लिए अथक परिश्रम करते थे तो वह आश्चर्य चकित रह जाता। देशसेवा तथा लोकसेवा करने



श्री माणिक्यलाल वर्मा



स्वर्गीय श्री वर्मा जी अपने परिवार के साथ

वाले देशभक्तो और लोकसेवकों की इस देश में कमी नही है परन्तु कितने ऐसे देशभक्त हैं कि जो वर्माजी की भांति अपने स्वास्थ्य की परवाह न कर अपने को खपा देते है। देश सीमा सुरक्षित हो सीमा पर बसे हुए हिन्दू मुसलमान सभी मे राष्ट्रीय भावना जागृत हो वे राष्ट्रविरोधी तत्वो से सावधान और सतर्क हो वे राष्ट्र विरोधी न हो उनको न पनपने दे इसके लिए वर्माजी ने सीमा क्षेत्र में जो प्रशसनीय कार्य किया उसका ध्यान कर लेखक का सिर उनके लिए श्रद्धानत हो जाता है। काश हमारे राष्ट्रकर्मी वर्माजी का अनुकरण कर सकते तो आज देश मे जो नैराश्य, क्षोभ और आन्तरिक पीडा व्याप्त है वह न होकर देश सिर ऊचा कर स्वाभिमान के साथ उठ खडा होता।

वर्माजी की सीमावर्ती जनता की इस एकनिष्ठ सेवा का ही परिणाम था कि वे सीमावर्ती प्रदेश के जन जन के हृदय मे बस गए थे। स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध सभी उनको अत्यन्त आदर श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे और उनका सहज, सरल और स्वाभाविक स्नेह उनको प्राप्त था। जब वे सीमावर्ती किसी गांव मे पहुचते तो गाव की सीमा पर खेलते बालक खेतो मे काम करते हुए या पशुओ को चराते हुए स्त्री पुरुष हर्षातिरेक से चिल्ला उठते और जोर से चिल्ला कर गांव को सूचना देते। "वर्माजी पधारिया"। यह खबर विद्युत की तरह सारे गाव मे फैल जाती। स्त्री पुरुष बाल वृद्ध सभी अत्यन्त उल्लास और उत्साह से उमड पडते। ऐसा प्रतीत होता कि मानो उनका कोई अत्यन्त प्रियजन आया हो जिससे मिलने के लिए वे हृदय की आकुलता को लेकर प्रतीक्षा कर रहे थे। वर्माजी जब उन ग्रामवासियो से घिरे हुए उनसे बात करते तो उन भोलेभाले ग्रामीणो की आंखो में झाक कर जिन्हे देखने का सौभाग्य मिला है वे ही वर्माजी के प्रति उनके सहज प्रेम और श्रद्धा का अनुमान लगा सकते हैं। वर्माजी को अपने बीच पाकर उनके मुख पर जो आत्मसंतोष और उनकी आखो मे हर्ष की रेखाएं झलकती वह दृश्य किसी को भी आत्मविभोर कर देने के लिए यथेष्ट था। उसका एकमात्र कारण यह था कि देश के स्वतन्त्र हो जाने के उपरान्त भी इतने लम्बे वर्षो तक किसी भी राष्ट्रकर्मी को इस निर्जन शुष्क मरुभूमि के निवासियो के कष्टमय जीवन से परिचित होने का अवकाश नही मिला, किसी ने भी उनकी सुध नही ली कोई उनकी कष्टगाथा सुनने नही आया। सच तो यह है कि वर्माजी मे ग्रामवासियो के मनोभावों को समझने, उनके हृदयो को जीतने की अद्भुत क्षमता थी। यही कारण था कि ग्रामवासियो और पिछड़े वर्गों को सगठित करने मे उनको अभूतपूर्व सफलता मिली थी।

अध्याय चौदहवां

जीवन के अन्तिम वर्ष

वर्माजी के पिताश्री का स्वर्गवास उनकी शिशु अवस्था में ही हो गया था। यो भी वर्माजी का परिवार आर्थिक दृष्टि से कोई सम्पन्न या समृद्धिशाली परिवार नही था। पिता का शैशव अवस्था मे ही स्वर्गवास हो जाने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति और भी गिर गई थी। बालपन समाप्त होते होते जब वे तरुण हुए तभी श्री विजयसिंह पथिक के सम्पर्क मे आ गए और उनसे प्रेरणा पाकर उन्होने आजन्म देशसेवा तथा पीड़ितो और शोषितो की सेवा का व्रत ले लिया। उस दिन से अपनी मृत्यु पर्यन्त वे एक निष्ठ देशसेवा के पुनीत कार्य मे लगे रहे और स्वतन्त्रता के उपरान्त उन्होने किसानो, आदिवासियो, हरिजनो, घुमक्कड़ जातियो तथा अन्य पिछड़ी जातियो के उत्थान के कार्य को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। वे मानो उन्ही के लिए जीवित रहते थे। पीडित और शोषित जनसमुदाय उनको अपने उद्धारक और त्राता के रूप मे देखता था। लेखक जब जब उदयपुर मे उनसे मिलने जाता भीलों, किसानो और पिछडी जातियो के प्रतिनिधियो को उनके पास बैठे देखता। दूर दूर के अचलो से चल कर वे उन्हे अपने कष्टो की कहानी सुनाने आते। उन्हे यह विश्वास था कि यदि हमारी पीडा को कोई समझ सकता है और उस कष्ट को दूर कर सकता है तो वे केवल वर्माजी है। वर्माजी भीलपालो, गावो तथा घुमक्कड़ जातियो के शिविरो मे पैदल घूमते उनकी समस्याओ का अध्ययन करते और सरकार से उनके कष्टो को दूर कराने का प्रयत्न करते। उनका सम्पूर्ण जीवन ही आदिवासियो, किसानो और पिछड़े वर्गो के साथ एक रस हो गया था इसमे तनिक भी अतिशयोक्ति नही है कि राजस्थान मे ही नही देश मे बहुत कम ऐसे राजनीतिक नेता थे जिनका पिछड़े वर्गो से इतना निकट का सम्बन्ध और सम्पर्क हो। वे उनके झोपडो में रहते, उनके जीवन को समीप से देखते और उनके यहा भोजन करते। अस्तु उनका देश के इस वर्ग की समस्याओ का, उनके अभावग्रस्त जीवन का, जितना गहन अध्ययन था उतना इस देश के बिरले राष्ट्रकर्मियो का ही होगा। सक्षेप मे वर्माजी उन राजनीतिक नेताओ में से थे जिन्होने स्वयं अभावग्रस्त जीवन व्यतीत किया था, निर्धनता और अभावो का स्वय अनुभव किया था, जीवन के लबे वर्षो तक वे तत्कालीन राज्य सरकार से जूझते रहे और देश के स्वतन्त्र होने के

उपरान्त सत्ता में आने के बाद काग्रेस संगठन मे शीर्ष स्थान पाकर भी वे जन साधारण से दूर नही हुए जैसे कि अधिकाश काग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता जन साधारण से दूर पड़ गए थे।

यही कारण था कि देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात जब काग्रेस के अधिकार में देश की शासन सत्ता आई और क्रमश. काग्रेसजनो में पदलोलुपता प्रतिक्रियावादी तत्वो से समझौता कर किसी प्रकार सत्तारूढ बने रहने की भावना दृढ होती गई। काग्रेस सरकार क्रातिकारी नीति को अपनाने मे हिचकने लगी, भूमिहीन किसानो को भूमि देने तथा खेती की भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारित करने का अधिनियिम व्यर्थ हो गया, कांग्रेसजन पूजीपतियो के लिए सरकार से परमिट लाइसेन्स और अन्य सुविधाओ को प्राप्त कराने की दलाली करने लगे। काग्रेस में दलबन्दी और भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया, अवसरवादी तत्व तपे हुए त्यागी काग्रेसजनो को धक्का देकर सत्ता मे घुसने लगे, काग्रेस के मन्त्रियो ने सादा सरल और साधना का जीवन छोडकर विलासिता का जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया उनके पुत्र और पुत्रियो के विवाहो की शानशौकत ने राजा महा-राजाओ की विलासिता तथा वैभव और राजकुमारो और राजकुमारियो के विवाहो के समय होने वाली शान शौकत को भी पीछे छोड दिया। मत्रिमडल में पूंजीपति, सामती और राष्ट्रद्रोही तत्व लिये जाने लगे। काग्रेस के मन्त्रियो के भ्रष्टाचार की कहानिया सुनने को मिलने लगी। सत्ताधारी काग्रेसजन जनसाधारण से दूर हटने लगे, निर्धन अधिक निर्धन होने लगे राजनीतिक भ्रष्टाचार के द्वारा समाज मे एक वर्ग धनी बन गया। काग्रेस एक के बाद दूसरी प्रगतिशील नीति की तिलाजलि देने लगी तो वर्माजी के अन्तर मे तीव्र रोष और क्षोभ की भावना जागृत हो गई।

जिस व्यक्ति ने जीवन पर्यन्त अत्याचार से सतत सघर्ष किया हो जिसने राजनीति और सेवा कार्य को अपने जीवन की साधना और तपस्या के रूप मे स्वीकार किया हो वह क्या जानता था कि स्वतन्त्रता के उपरान्त जब सत्ता आवेगी तो कांग्रेस के कार्यकर्ता देश सेवा और राजनीति को अपने ज्ञापन का पेशा बना लेगे। अतएव जब काग्रेसजनो मे और काग्रेस सगठन मे ऊपर लिखे दोष आ गए तो वर्माजी के मन को पीड़ा होना स्वाभाविक ही थी।

यद्यपि सुखाडिया जी वर्माजी के अत्यन्त प्रिय और निकट थे। सुखाडियाजी के राजनीतिक जीवन का निर्माण ही वर्माजी के द्वारा हुआ था पर उनकी समझौतावादी नीति से वे अक्सर क्षुव्ध हो उठते थे। १९५७ के चुनावो के उपरांत, सुखाडियाजी ने एक राजनयिक को मत्रिमडल मे ले लिया जिसको वर्माजी तथा उदयपुर के कार्यकर्त्ता पसन्द नही करते थे। उसके सम्बन्ध मे वर्माजी ने अपनी डायरी में नीचे लिखे अनुसार अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

२३ अप्रैल, १९५७

रात्रि को सुखाडियाजी का फोन आया कि ...... को लेने का फैसला काग्रेस पार्लियामेंटरी पार्टी राजस्थान विधान सभा ने कर लिया। मैने कहा ठीक है क्योकि

जब पार्टी का फैसला हो गया तो मैं क्या कहता। मुझे इस मंत्रिमंडल के विषय में खुद को यह फैसला करना पडा कि सुखाडियाजी सिद्धान्त के पक्के नही है, अपनी सत्ता चलाने के लिए किसी भी बुराई से समझौता कर सकते है। और यह नीति उनके जीवन का विकास रोकेगी तथा सत्ता मजबूती और प्रगतिशीलता से नही चला सकेंगे। एक धक्का भी लगा कि बस इसान अपने अस्तित्व के लिए क्या क्या कर सकता है।

वर्माजी के मन मे कांग्रेस शासन मे व्याप्त निर्बलताओं के प्रति कितना गहरा रोष था यह उनकी डायरी मे लिखे शब्दो से स्पष्ट हो जाता है।

३१ मार्च १९६३ को उन्होंने अपनी डायरी में लिखा।"... चित्तौड़गढ के सिंचाई विभाग के बंगले मे सुखाडिया जी के साथ बातचीत हुई। रोशन जी, गुलाबसिंह किशन जी, शिवचरण जी भी थे। मैंने "नवयुग" के लिए राजस्थान विमुक्त जाति सेवक संघ के दस हजार रुपए खर्च करना, जीप का दुरुपयोग करना, बेगू अफीम चोरी मे जीप काड, मिनिस्ट्री बहुमत मे भ्रष्ट होना आदि बाते कही, सुखाडिया जी ने चीफ मिनिस्टरी छोडने की इच्छा जाहिर की, मैंने उन्हे प्रोत्साहन दिया कि छोड़ देवे। मेरा विश्वास है कि सिद्धान्तहीन भ्रष्ट पतित व्यक्तियो के बल पर सत्ता चलाने के बजाय छोड़ देना हमारे सगठन और देश को बचाना है। मैंने कहा जिन व्यक्तियो पर मेरा अधिकार हैं उन्हे भ्रष्ट पथ पर चलते देख मुझे कहने का अधिकार है ....से कहने का मुझे कोई अधिकार नही है।"

वास्तव मे १९६२ के उपरान्त ही वर्माजी कांग्रेस मन्त्रिमंडल की नीति और कार्य प्रणाली से असतुष्ट थे परन्तु काग्रेस सगठन के अनुशासन को ध्यान मे रख कर वे काग्रेस सगठन के अन्दर तो अपने विचारो को प्रगट कर देते थे परन्तु बाहर उनको प्रगट नही करते थे। परन्तु उनका अन्तर अत्यन्त क्षुब्ध था। जैसे जैसे समय व्यतीत होता गया यह क्षोभ घटने के स्थान पर बढता गया क्योकि जो रोग काग्रेसजनो मे और विशेषकर पदारूढ़ तथा प्रभावशाली कांग्रेसजनो मे घुस गया था वह घटने के बजाय बढ़ता गया।

जब १९६७ का चुनाव हुआ तो वर्माजी की यह पीडा और क्षोभ चरम सीमा पर पहुच चुका था। बात यह थी कि काग्रेस मे घुसी भीतरी कमजोरियो के अतिरिक्त काग्रेस में प्रतिक्रियावादी तत्व भी सक्रिय हो गए थे। किसी भी प्रकार काग्रेस सत्ता मे आ जावे यह दृष्टिकोण सबल होता जा रहा था। यही कारण था कि कांग्रेस मन्त्रिमन्डल तथा कांग्रेस विधान सभाई दल मे ऐसे व्यक्तियो को भी स्थान मिलने लगा था कि जो कभी भी कांग्रेस के समीप नही आए थे वे जीवन भर काग्रेस के विरोधी रहे, जिन्होंने स्वतन्त्रता आदोलन में कांग्रेसजनो का दमन किया था। नीति सिद्धात और आदर्श पीछे छूटते जा रहे थे काग्रेस मन्त्रिमण्डल किस प्रकार बने यही एक मात्र ध्येय बन गया था।

ऐसी स्थिति मे १९६७ के चुनाव हुए। वर्माजी ने निश्चय कर लिया कि वे लोकसभा के चुनाव मे खड़े नही होगे। राजस्थान के सभी कार्यकर्त्ताओ ने विशेषकर

मेवाड़ क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने वर्माजी से बहुत आग्रह किया और उन पर दबाव डाला कि वे लोकसभा के लिए चित्तौड़ क्षेत्र से अवश्य खड़े हो परन्तु वर्माजी अडिग रहे उन्होंने लोकसभा के लिए खड़े न होने का निर्णय कर लिया। बात यह थी कि राजस्थान के सभी कार्यकर्त्ता जानते थे कि काग्रेस के शीर्षस्थ नेता तथा केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल वर्माजी के प्रति अत्यन्त आदरभाव रखता है। राजस्थान के औद्योगिक विकास, हिम्मतनगर रेलवे लाईन, सिंचाई की बड़ी परियोजनाओ आदि के लिए जब भी वर्माजी ने कहा केन्द्र ने स्वीकार कर लिया। राजस्थान सरकार के वर्माजी केन्द्र में अत्यन्त प्रभावशाली वकील थे। राजस्थान मे और कोई व्यक्ति ऐसा नही था जिसका केन्द्रीय शासन पर इतना अधिक प्रभाव था। यही कारण था कि राजस्थान के सभी काग्रेसजन चाहते थे कि वर्माजी लोकसभा के लिए अवश्य खडे हो। परन्तु वर्माजी ने यह कहकर खडे होने से इन्कार कर दिया कि हम काग्रेसजनो मे पद और सत्ता से चिपटे रहने का आग्रह अच्छा नही है इससे सगठन निस्तेज हो रहा है आखिर कुछ लोगो को इससे पृथक रह कर सगठन को सक्रिय और सतेज बनाने मे अपनी शक्ति लगानी चाहिए और नए व्यक्तियो के लिए स्थान रिक्त कर देना चाहिए। वर्माजी स्वय खड़े नही हुए परन्तु काग्रेस के प्रत्याशियो के लिए धुआधार प्रचार किया। उदयपुर क्षेत्र मे जो काग्रेस को सफलता मिली उसका एक बडा कारण वर्माजी थे। चित्तौड़ क्षेत्र से डा. शर्मा, जो जनसघ के उम्मीदवार थे, के विरुद्ध श्री ओकार लाल बोहरा की विजय का एक प्रधान कारण वर्माजी का प्रचार था।

जब चुनाव परिणाम निकले तो राजस्थान विधान सभा में कांग्रेस को बहुमत नही मिला। वर्माजी ने सुखाड़ियाजी को राय दी कि वे मत्रिमडल न बनावे विपक्षियो को मत्रिमण्डल बनाने दें इस सम्बन्ध मे उन्होने अपनी डायरी मे लिखा था —

"१३ मार्च, १९६७ श्री सुखाड़िया जी से साढ़े सात बजे मिला। काग्रेस का बहुमत न होने से मैंने सलाह दी कि यदि प्रजातन्त्र चलाना है तो विपक्षियो को आने दो अन्यथा हिंसा फूट पडेगी। सुखाड़िया जी ने मान लिया अन्य सब मिनिस्टर काग्रेस बहुमत का थोथा दावा करते थे और सुखाड़ियाजी को चकमा दे रहे थे।"

वर्माजी की मान्यता थी कि यदि काग्रेस का बहुमत न होने की दशा मे मन्त्रिमण्डल बनाया गया तो अवाछनीय तत्वो को उनके मूल्य पर मत्रिमडल में लेना होगा। कांग्रेस का उन पर कोई स्थायी अनुशासन आरोपित नही किया जा सकेगा। ऐसा मत्रिमंडल प्रगतिशील नीतियो का पालन नही कर सकेगा। काग्रेस के प्रति सर्व साधारण की आस्था को गहरा धक्का लगेगा। वे यह भी सोचते थे कि सबसे बडा दल होने के कारण यदि इस समय काग्रेस मत्रिमडल न बनाये और विपक्ष को मत्रिमडल बनाने दे तो वह मन्त्रिमण्डल अधिक दिनो तक नही टिक सकेगा और अन्ततः काग्रेस का मत्रिमडल बनेगा परन्तु उस समय काग्रेस में जो लोग आवेंगे वे काग्रेस की शर्तों पर आवेगे उनका काग्रेस नीति पर कोई दुष्प्रभाव नही पडेगा।

वर्माजी का सोचना कितना सही था वह आगे की घटनाओ से सिद्ध हो गया।

जयपुर मे जो गोलीकाड हुआ वह काग्रेस द्वारा लोगो को तोडकर दल बदलवाकर कांग्रेस का बहुमत स्थापित कर मत्रिमडल बनाने का ही परिणाम था। किसी भी प्रकार मत्रिमडल बने इसके लिए मुख्य मन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया ने गहरी कीमत चुकाई गलत तत्वो को काग्रेस मे ले लिया इससे सर्वसाधारण की दृष्टि मे काग्रेस का स्वरूप धूमिल हो गया।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने लेखक से यह स्वीकार किया कि मत्रिमडल का गठन करते समय उन्होने वर्माजी से कोई राय नही ली, परामर्श नही किया। इसका कारण सभवतः यही था कि वे यह भलीभाति जानते थे कि जिन व्यक्तियो को वे मत्रिमडल मे लेना चाहते थे उनको लिये जाने का वर्माजी स्वप्न मे भी समर्थन नही करेगे, अस्तु उन्होने मत्रिमडल के गठन मे वर्माजी से कोई राय नही ली। यह प्रथम अवसर था कि जब सुखाडियाजी के नेतृत्व मे मत्रिमडल बना किन्तु वर्माजी से कोई परामर्श नही किया गया। नही तो व्यासजी ने जब त्यागपत्र दिया तब से जितने भी मत्रिमडल बने सुखाडियाजी ने वर्माजी से राय करके ही बनाये थे। यह पहला अवसर था कि उन्होने ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर उनसे कोई परामर्श नही किया।

१९६७ के चुनाव के उपरात सुखाड़िया जी ने जो मत्रिमंडल बनाया उसमें कुछ ऐसे तत्व थे जिन्हे वर्माजी राष्ट्रद्रोही मानते थे। उनका मानना था कि वे भारत में बैठे पाकिस्तानी एजेन्टो के बहुत नजदीक है। उसके अतिरिक्त उस मत्रिमंडल मे ऐसे सामन्ती तत्व भी थे जिनका पिछला इतिहास ऐसा गौरवहीन और लज्जाजनक था और उनके कार्य ऐसे थे कि उन्हे मत्रिमण्डल मे स्थान देना काग्रेस के लिए शोभाजनक नही था। परन्तु उस समय स्थिति ऐसी थी कि उनको लिए बिना काग्रेस का मंत्रमण्डल बन ही नही सकता था। श्री सुखाडिगा जी का सोचना संभवत यह था कि यदि कांग्रेस ने मत्रिमण्डल नही बनाया और विपक्ष का मन्त्रिमण्डल बना तो पदलोलुप कतिपय कांग्रेस टिकिट पर चुनाव लडनेवाले ही दल बदलकर विपक्ष मे चले जावेगे और भविष्य मे काग्रेस मन्त्रिमण्डल बने इसकी आशा नही रहेगी। वर्माजी की मान्यता यह थी कि यदि काग्रेस ने मन्त्रिमण्डल नही बनाया और कुछ अवसरवादी काग्रेसी दल बदलकर विपक्ष के साथ मिल गए तो उससे काग्रेस का अनायास ही शुद्धिकरण हो जावेगा काग्रेस के निरन्तर सत्ता मे रहने का एक परिणाम यह हुआ था कि सत्ता के लोभ मे अवसरवादी, पदलोलुप और भ्रष्ट व्यक्ति काग्रेस मे घुस आए थे। सत्ता से दूर बने रहने का परिणाम यह होगा कि ऐसे अवाछनीय तत्व स्वतः काग्रेस को छोड़कर चले जावेगे और काँग्रेस मे निष्ठावान, गहन देशभक्ति की भावना वाले, प्रगतिशील नीतियोमे आस्था और विश्वास रखने वाले त्यागी कार्यकर्ता रह जावेगे। उन अवाछनीय तत्वो के काग्रेस से निकल जाने का परिणाम यह होगा कि काँग्रेस एक बार पुन तेजवान प्रगतिशील नीति मे विश्वास रखने वाला राष्ट्रीय दल बन सकेगा।

वर्माजी को काग्रेस के प्रति गहरा मोह था सत्ता मे आने के उपरान्त उन्होने देखा कि काग्रेस मे प्रतिक्रियावादी तथा अवाछनीय तत्व तेजी से घुस आए है और

जिन देशभक्तों ने अपने को स्वतन्त्रता के युद्ध में खपा दिया अपने जीवन का सर्वोत्तम काल देश की सेवा मे व्यतीत कर दिया, अपने लिए नही देश के लिए वे जिये, वे या तो कांग्रेस से उदासीन हो अन्य राजनीतिक दलो मे चले गये अन्यथा उदासीन होकर चुप बैठ गए। उन्हे इस बात की गहरी पीडा थी। यही कारण था कि स्वतन्त्रता आदोलन मे जिन्होने काग्रेस ध्वज के नीचे कार्य किया था वे उनकी काग्रेस से हट जाने पर भी कद्र करते थे, उनके लिए उनके हृदय मे आदर भाव था। हा तो वर्माजी के मन मे यह दृढ भावना थी, इस समय काग्रेस का बहुमत नही है अस्तु यदि काग्रेस सत्ता मे न जावे तो काग्रेस मे जो यह कूडा कचरा भरा हुआ है यह साफ हो जावेगा काग्रेस उससे तेजवान और शक्तिशाली बनेगी।

परन्तु यह नही हुआ सुखाड़ियाजी सभवत: अपने साथियो के दबाव के कारण सत्ता का मोह नही छोड सके और उन्होने वर्माजी से बिना परामर्श किए मन्त्रिमण्डल बना लिया। वस्तुत. सुखाडिया जी ने उस समय वर्माजी की बात न मान कर गहरी भूल की। जून १९७१ मे जो उन्हे विवश होकर मुख्य मन्त्री पद से त्यागपत्र देना पड़ा उसका बीजवपण उसी दिन हो गया था जिस दिन उन्होने बहुमत न होने पर मन्त्रिमडल बनाया था। उन्हे गलत आदमियो को मन्त्री बनाना पडा। मन्त्री ही नही प्रत्येक विधान सभा का सदस्य बहुत प्रभावशाली हो गया। मुख्य मन्त्री किसी को भी नाराज करने की स्थिति मे नही थे। प्रत्येक विधान सभाई इतना अधिक महत्वपूर्ण हो गया कि दल का नेता उसको विमुख नही कर सकता था। मन्त्रिमण्डल पर मुख्यमन्त्री जी का अकुश जैसे हट गया। शासन मे विधान सभाइयो का हस्तक्षेप चरम सीमा पर पहुँच गया। कतिपय मन्त्रियो के सम्बन्ध मे सड़क पर चलनेवाले साधारण नागरिक जिनका किसी भी राजनीतिक दल विशेष से सम्बन्ध नही था वे यह कहते सुने जा सकते थे कि अमुक मन्त्री अफसरो के स्थानान्तरण मे हजारो रुपये की रिश्वत लेता है। अमुक मत्री ने अमुक कार्य के लिए इतनी धनराशि ली इत्यादि। भ्रष्टाचार की नित नई कहानी सुनने को मिलने लगी। वर्माजी के रोष और क्षोभ की तीव्रता भी उसी अनुपात मे बढ़ने लगी।

उन्ही दिनों कतिपय मन्त्रियो के पुत्रो और पुत्रियो तथा सम्बन्धियो के विवाह हुए। उन विवाहो मे ऐश्वर्य, विलासिता, और वैभव का ऐसा वीभत्स प्रदर्शन हुआ कि राजस्थान के वृद्ध जन भी जिन्होने राजा महाराजाओ के ऐश्वर्य को देखा था आश्चर्य चकित रह गये। जनसाधारण भ्रमित हो गया। वह सोचने लगा कि काग्रेस के विधान सभाइयो और मन्त्रियो का सादे जीवन और देशसेवा का आदर्श एक आवरण मात्र था। उस आवरण से ढकी हुई ऐश्वर्य के प्रदर्शन की भावना ने राजा महाराजाओ को भी पीछे छोड दिया। उन विवाहो के अवसरो पर ढोलनियो, सिने तारिकाओ के नाच गानो ने ऐसा समा बाध दिया मानो अवध के वाजिदअली शाह की आत्मा का अवतरण हुआ हो। मत्री स्वय नाच में भाग लेने लगे। उस वैभव विलास के प्रवाह मे काग्रेस के मन्त्री और विधान सभाई इत्यादि सभी ऐसे बह गये कि एक काग्रेसकर्मी की मर्यादाओ

और अनुशासन को वे जैसे भूल गए हो।

वर्माजी उस समय अस्वस्थ थे जब अन्य कार्यकर्त्ता उन्हे यह सब सुनाते तो उनका मन रोष और क्षोभ से भर जाता। वे विचलित हो उठते, उनके मुख पर आन्तरिक क्षोभ और आक्रोश की रेखाए खिच जाती उनका अन्तर तड़प उठता।

मत्रिमडल अधिकतम जोत निर्धारण के अधिनियम को भी कार्यान्वित न कर सका। जिनके पास सैकडो हजारो बीघा भूमि थी उन्होने उसको अपने परिवार तथा सबधियो मे बाट कर उस अधिनियम को ही व्यर्थ कर दिया। जिस मत्रिमंडल मे अवाछनीय तत्व हो उससे आशा भी करना व्यर्थ था। वर्माजी जब देखते कि भूमिहीनो को भूमि नही मिलती जिनके पूर्वजों ने कभी खेती नही की वे अपने राजनीतिक प्रभाव के कारण भूमिहीन किसान बन गए और बिना मूल्य उन्हे खेती की जमीन मिल गई तो उनका धीरे धीरे यह विचार दृढ हो गया कि सरकार के भरोसे बैठे रहना व्यर्थ है। भूमिहीनो को सगठित कर सत्याग्रह के द्वारा बलपूर्वक भूमि पर भूमिहीनों का अधिकार करवाना चाहिए। सर्वोदय कार्यकर्ताओ और भूदान आन्दोलन से भी उन्हे आशा नही थी। वे यह नही मानते थे कि भूदान आन्दोलन से भूमिहीनो की समस्या हल हो सकेगी। भूमि पर बलपूर्वक कब्जा करो आन्दोलन जो उनकी मृत्यु के बाद देश के विभिन्न भागो मे फूट पडा उसको अहिंसक रूप मे वृहद आकार में चलाने का विचार वर्माजी के मन मे दृढ हो गया था। उनकी कल्पना थी कि क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं, भूमिहीन ग्रामीणो तथा छोटे किसानो को बहुत बडी सख्या (लाख में) सगठित किया जावे और फिर भूमि पर अधिकार करो सत्याग्रह आन्दोलन छेड़ दिया जाय। इसी उद्देश्य से उन्होने भूमि क्रान्ति के लिए कार्यकर्ताओ का आह्वान अपनी मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व किया था और प्रतिज्ञापत्र भरवाने का आरभ किया था। उस समय वर्माजी ने जो नीचे लिखी विज्ञप्ति निकाली थी उससे उनकी मनोभावना का स्पष्ट प्रतिरूप हमें देखने को मिलता है।

क्रान्ति के लिए आह्वान

वीरभूमि चित्तोड़ दुर्ग के विजयस्तम्भ के नीचे
कार्यकर्ताओ की प्रतिज्ञा

साथियो,

हमारे देश की आजादी के बीस वर्ष बाद भी हम किसानों, भूमिहीनो और जमीन के मसले को हल नही कर पाये है। जहा किसानो के परिवार बढे है तथा इधर लोगो की भूख भी जमीन के लिए बढ रही है, वहा परम्परागत जमीदार, जागीरदार, राजा महाराजा सेठ साहूकार आदि भूस्वामियो के पास लाखो बीघा जमीन है जिस पर श्रमिको द्वारा काश्त करवा कर बैठे बैठे जी रहे है। मेहनतकश किसान और मजदूर आज तक बेजमीन बना हुआ है और उसकी मेहनत का मुआवजा साधन सम्पन्न लोगों की जेब में चला जाताहै। इस समूचे शोषण को जड़ से उखाड़ने के लिए हमे एक बारगी पुनः पूरी ताकत से जुट जाना होगा। बिना पूरी शक्ति लगाए और आन्दोलन

में मोड़ दिए यह क्रान्तिकारी काम सभव नही है ।

हमे यह ध्यान रखना है कि वगाल के नकसलबाडी मे केवल कम्युनिस्टो का ही आन्दोलन नही था, जनता भी भुखमरी और वेकारी के कारण साथ थी । आए दिन वढनेवाली वेकारी कही हमारे जनतत्र के लिए सर दर्द न वन आए । अतः दोस्तो सावधानी के साथ सचेष्ट होकर आगे आइए और वाजी को हाथ से नही जाने दीजिये । अन्यथा देश में अधिनायकवाद लाने की जिम्मेदारी से हम वरी नही हो सकेगे । आखिर हम निष्क्रिय रहेगे तो जमाना इन्तजार नही करेगा ।

आप सभी पुराने और नए साथियो से मेरा अनुरोध है कि इस क्रान्तिकारी काम मे पूरी शक्ति लगाने के लिए तुरन्त जुट जावे और इसके लिए सकल्पवद्ध हो । इसी आगामी ३० जनवरी १९६८ को शहीद दिवस के पुनीत पर्व पर चित्तौड़ पहुच कर विजयस्तम्भ के नीचे नई क्रान्ति के लिए प्रतिज्ञा ले ।

मेरा विश्वास है कि किसान मजदूर और शोषितो के प्रति हमदर्दी रखने वाले मेरे सभी साथी इस पवित्र काम मे सहर्ष अग्रसर होगे और २९ जनवरी की शाम अथवा ३० जनवरी के प्रात काल तक चित्तौड पहुँच जायेगे । प्रतिज्ञा विजयस्तम्भ के नीचे चित्तौड किले पर प्रात.काल ९ वजे ली जावेगी ।

माणिक्यलाल वर्मा

विशेष सूचना .—

यदि किसी पूर्व निश्चित अन्य कार्यक्रम या विशेषकारण से आपका चित्तोड़ पहुँचना सभव न हो तो अपने यहा ३० जनवरी के दिन प्रात काल ९ वजे संकल्पबद्ध होकर साथवाले प्रतिज्ञा-पत्र को भरकर डाक द्वारा चितौड के पते पर भेज दे ।

प्रतिज्ञा-पत्र

मै .... उम्र .... वर्ष ....निवासी..............

तहसील .... जिला..................

"मेरे देश भारत मे मेहनत करनेवाले लाखो किसान भूमिहीन हैं और जिन किसानो के पास भूमि है उनका परिवार इतना बढ गया है कि वर्तमान जमीन पर उनका गुजर वसर नही हो पाता । आजादी के बीस वर्ष बाद और सरकार द्वारा सीलिग कानून के वावजूद पंसे के वल पर खुदकास्त के नाम पर पूंजीपतियो और सामन्तवादियो ने लाखो एकड़ जमीन दबा रखी है । ऐसे लोग जो न तो खुद काश्त करते है न पसीना वहाते है, केवल उन मेहनतकशों को पातिया देकर उनके श्रम का दो तिहाई या आधा हिस्सा स्वय ले लेते है ।

किसानो मे जागृति आई है, आज नौजवान किसान महसूस करता है कि ये मुफ्तखोरे जमीन के मालिक क्यो बने रहे । सार्वजनिक कार्यकर्ता के नाते शोषितो और भूमि से वचित किसानो को अपने हक प्राप्त करवाने तथा जमीन पर कब्जा करवाने के लिए जुट जाने का हमारा फर्ज हो जाता है ।

अत: मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उपरोक्त क्रान्ति के काम में किसानो को जमीन दिलाने जमीन पर कब्जा करवाने मे पूरी तरह किसानो और शोषितो का साथ दूंगा। इस प्रक्रिया मे जो भी तकलीफे जेल, लाठी, गोली आदि सामने आयेगी, खुशीखुशी झेलूगा। इसके बदले किसी प्रकार का पुरस्कार नही चाहूँगा और हसते हसते कुर्बान हो जाने की तैयारी रखूंगा।

(पूरा नाम और पता)

वर्माजी जो भूमिहीनो, छोटे किसानों और कार्यकर्त्ताओ को प्रतिज्ञावद्ध कराकर एक सगठन खडा कर रहे थे उसका एकमात्र उद्देश्य यह था कि वे यदि आवश्यकता पडे तो भूमिहीनो के लिए भूमि पर अधिकार करेगे। काग्रेस मन्त्रिमण्डल की ढिलमिल नीति के कारण वर्माजी का उस पर से विश्वास उठ गया था। उन्होने देख लिया था कि इस मत्रिमण्डल मे राष्ट्रद्रोही और प्रतिक्रियावादी तत्व घुस गए हैं वे भूमि सम्बन्धी क्रान्तिकारी नीति कभी अमल मे नही आने देगे अस्तु उन्होने काग्रेस मन्त्रिमण्डल से आशा छोड दी थी। भूदान आदोलन से भूमि की समस्या हल हो सकेगी, इसमे भी उनका विश्वास नही था। उनका मानना था कि भूदान आन्दोलन से थोडे से भूमिहीनो को भूमि भले ही मिल जावे परन्तु उसके द्वारा भूमि की समस्या हल नही हो सकती। अतएव उनके मस्तिष्क मे यह विचार दृढ हो गया था कि भूमि पर अधिकार किया जावे और भूमिहीनो को उसे देकर उस पर खेती की जावे और इसके लिए जो भी सरकारी दमन हो लाठी, गोली, कारावास इत्यादि को सहन किया जावे।

वर्माजी के राजनीतिक जीवन का शुभारम्भ श्री विजयसिह पथिक के नेतृत्व मे हुआ था उस समय भारत मे विदेशी प्रभुत्व था और वह एक देशी राज्य में एक जागीरदार के विरुद्ध किसान आदोलन के रूप मे आरम्भ हुआ था। वे सम्भवत: अपने राजनीतिक जीवन का अन्त पुन स्वतन्त्र भारत मे काग्रेस सरकार के विरुद्ध एक विशाल और वलशाली किसान आन्दोलन चलाकर करना चाहते थे। उनकी योजना यह थी कि दो ढाई लाख व्यक्तियो को प्रतिज्ञावद्ध कराकर उन्हे भूमिक्राति के यज्ञ मे दीक्षित कर उनको प्रशिक्षण देकर राजस्थान मे भूमि क्राति के लिए एक वातावरण उत्पन्न किया जावे, सरकार को अंतिम चुनौती दे दी जावे और फिर भूमि पर अधिकार करने का सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जावे।

परन्तु नियति ने उनको यह अवसर प्रदान नही किया। किसानो, पिछडे वर्गो, दलितो और शोपितो के लिए जीवन भर सतत सघर्ष करने वाला सौ युद्धो का वह विजयी योद्धा इससे पूर्व कि भूमि क्राति का शख वजाता महाप्रयाण कर गया। भावी संभवत उस दृश्य को देखना नही चाहती थी कि जब गुरु शिष्य के विरुद्ध अभियान करे। सुखाडियाजी परिस्थितियो से विवश थे उस समय उन्हे काग्रेस का मन्त्रिमण्डल वनाने के लिए ऐसे व्यक्तियो को अपने साथ लेना पडा, जो मूलत प्रतिक्रियावादी थे।

इतिहास दोहराया गया :

वर्माजी की जीवनी के लेखक के नाते अपने कर्तव्य को ध्यान मे रखकर लेखक

यह कहने पर विवश है कि जीवन के अन्तिम दिनो मे वर्माजी श्री मोहनलाल सुखाड़िया (तत्कालीन मुख्य मन्त्री राजस्थान) से दूर हट गये थे। जिन श्री सुखाडिया को मेवाड़ प्रजामडल मे एक स्वयसेवक और साधारण कार्यकर्ता के रूप मे उन्होने भर्ती किया, जिनके नेतृत्व और शिष्यत्व मे सुखाडियाजी का राजनीतिक प्रशिक्षण हुआ, जिन्होंने महाराणा श्री भूपालसिंह के शासनकाल मे गठित मत्रिमण्डल मे सुखाड़ियाजी को मेवाड़ प्रजामडल के प्रतिनिधि के रूप मे मन्त्री वनाकर भेजा। उन्होने जव स्वय अपने नेतृत्व मे पूर्व राजस्थान का मत्रिमडल बनाया तो सुखाडियाजी को मन्त्रिमण्डल मे लिया और जव हीरालाल शास्त्री को हटाकर श्री जयनारायण व्यास मुख्यमन्त्री वने और श्री जयनारायण व्यास से मतभेद होने पर जो श्री जयनारायण व्यास के विरुद्ध श्री मोहनलाल सुखाडिया को कांग्रेस विधान सभाइयो ने विश्वास प्रदान किया उसके पीछे श्री माणिक्य लाल वर्मा का प्रभाव काम कर रहा था। राजस्थान के कांग्रेस विधान सभाइयो का विश्वास प्राप्त कर लेने के उपरात भी केन्द्रीय नेतृत्व स्वय श्री जवाहरलाल नेहरू श्री सुखाड़िया को राजस्थान का मुख्य मन्त्री वनाए जाने के पक्ष में नही थे। सुखाड़ियाजी के विरुद्ध केन्द्रीय कांग्रेस नेतृत्व मे गहरा अविश्वास था, केन्द्रीय नेतृत्व की दृष्टि मे सुखाड़ियाजी का चित्र वहुत उज्ज्वल व आकर्षक नही था वे उनको मुख्य मन्त्री वनाने के पक्ष मे नही थे, उनका गहरा विरोध था कि उस समय उस प्रबल विरोध को समाप्त कर सुखाडियाजी को मुख्य मन्त्री वनाना वर्माजी के राजनीतिक प्रभाव का ही चमत्कार था। राजस्थान के मुख्य मन्त्री वन जाने के उपरांत केन्द्रीय नेतृत्व मे उनके प्रति उदासीनता को दूर करने तथा उनके विरोधी तत्वो को शक्तिहीन करने का सारा श्रेय वर्माजी को है। सक्षेप मे यह कहने मे तनिक भी अतिशयोक्ति नही होगी कि कि सुखाडियाजी के राजनीतिक जीवन का निर्माण करनेवाले एकमात्र वर्माजी थे। सुखाड़ियाजी को अपने राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप मे ही देखा था। उन्ही सुखाड़ियाजी से जीवन के अतिम वर्षो मे वे दूर हटवाये उनकी नीतियो और कार्यो से वर्माजी को गहरी निराशा और क्षोभ उत्पन्न हो गया। फिर भी सुखाड़ियाजी के प्रति उनका व्यक्तिगत स्नेह वना रहा जिस प्रकार राष्ट्रपिता गाधी अपने जीवनकाल के अतिम दिनो मे अपने राजनीतिक उत्तराधिकारी श्री जवाहरलाल नेहरू की सरकार और नीतियो से क्षुव्ध और खिन्न थे उसी प्रकार वर्माजी सुखाडियाजी तथा उनकी सरकार की नीतियो से अत्यन्त क्षुव्ध और खिन्न हो गए थे। सत्ता से जिन्हे मोह नही होता उन्हे सत्ता की राजनीति मे डूवे हुए अपने शिष्यो या उत्तराधिकारियो से निराशा ही प्राप्त होती है।

इस सम्वंध मे लेखक का निश्चित मत है कि सत्ता की राजनीति का जलाशय इतना पकिल होता है कि उसमे घुसने पर कोई अपने वस्त्रो और शरीर को पकिल होने से वचा सके यह साधारण मानवो के लिए अत्यन्त दुष्कर है। इसके अतिरिक्त सत्ता की राजनीति मे वस्तुत. कोई किसी का उत्तराधिकारी नही होता। जव राजाशाही थी तो उत्तराधिकार का प्रश्न यही तक सीमित था कि सम्राट अथवा नरेश की मृत्यु पर

उसका ज्येष्ठ पुत्र सिंहासन पर बैठेगा और ऐसी भी घटनाएं इतिहास में भरी पड़ी हैं कि सिंहासनारूढ शासक के दीर्घायु हो जाने पर उसके युवराज का धैर्य समाप्त हो गया और उसने अपने पिताश्री को मौत के घाट उतार कर स्वय सिंहासनारूढ हो गया, अथवा छोटे भाई ने युवराज की हत्या कर अपने राज्यारोहण का मार्ग प्रशस्त कर लिया। आप चाहे जिस पद्धति को ले चाहे वह जनतान्त्रिक पद्धति हो अथवा सैनिक अधिनायकवाद की पद्धति हो सत्ता की राजनीति मे आगे वाले को धक्का देकर उसे अपदस्थ कर स्वय आगे वढने का सत्ता मे आने का कुचक्र चलता ही रहता है। आज जो भारत मे "आयाराम गयाराम" की दलवदलू राजनीति का अशोभनीय दृश्य उपस्थित है वह इसी सत्य को प्रकट करता है। जब राष्ट्रपिता गाधी जैसे दीर्घदृष्टा द्वारा चुना हुआ उनका राजनीतिक उत्तराधिकारी उनकी निराशा का कारण बना तो यदि वर्माजी को श्री मोहनलाल सुखाडिया से निराशा हुई तो कोई आश्चर्य नही है। १६६७ के चुनाव के उपरात सुखाड़िया जी ने जो मन्त्रिमण्डल गठित किया उसमे उन्होने कुछ ऐसे तत्वो को भी लिया जो प्रतिक्रियावादी थे अथवा जिनकी देशभक्ति सदेहास्पद थी। अवश्य ही सुखाडिया जी को विवश होकर उन्हे लेना पडा होगा। क्योकि उसके विना उन्हें बहुमत प्राप्त नही होता और वे मन्त्रिमन्डल नही वना सकते, और यही कारण है कि १६६७ के चुनाव के उपरान्त मन्त्रिमडल बनाते समय उन्होने वर्माजी से कोई परामर्श नही किया। मंत्रिमडल मे प्रतिक्रियावादी तत्वो के प्रभावशाली हो जाने के कारण ही भूमि समस्या को वे हल न कर सके जो कि वर्माजी की खिन्नता का मूल कारण था। सत्ता के लिए उन्हे यह समझौता करना पड़ा था।

राजस्थान सरकार की भूमि सम्बन्धी ढीली नीति से क्षुब्ध होकर ही वर्माजी ने यह निश्चय किया था कि भूमि पर अधिकार कर उसे भूमिहीनो को दे दिया जावे। यदि देखा जावे तो वर्माजी ने बहुत पहले ही इस समस्या का क्रातिकारी हल सोच लिया था और वे उसे क्रियान्वित करने की योजना वना रहे थे कि उनकी मृत्यु हो गई।

वर्माजी के अतर मे तत्कालीन कांग्रेस सरकार की भूमि सम्बन्धी नीति तथा प्रशासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार तथा काग्रेस सगठन मे व्याप्त आदर्शहीनता के प्रति जो आक्रोश था वह उनके वनाए गीतो "इन पच राज ने रिश्वत री चांदडली खा गई रे।" "कुछ देदो कुछ खालो" "नही रहेगे गुलाम हाली" "आज क्या हो गया" "मंजूर करो" इत्यादि और जो थोडे से लेख उन्होने उन दिनो लिखे थे उनमे उनके सस्मरण तथा डायरी और निजी पत्रों मे उमड पडा था। और यही कारण था कि वे भूमि क्राति के द्वारा काग्रेस सगठन और सरकार को एक वार झकझोर देना चाहते थे। परन्तु नियति को यह मजूर नही था उससे पूर्व ही वे महाप्रयाण कर चले गए।

हम यहा उनके कतिपय लेखो के अश उदधृत करते है जिनसे उनके अन्तिम समय के विचारो पर जो उनके मन और हृदय को उद्वेलित कर रहे थे प्रकाश पड़ता है।

वर्माजी के लेखों के अंश

विशाल राजस्थान कलकत्ता १८ सितम्बर '६७

कांग्रेस के लिए क्रांतिकारी कदम

मैं इस समय काग्रेस का केवल चार आना सदस्य हूँ और सक्रिय सदस्य पी. सी. सी., ए. आई. सी. सी. की मेम्बरी से पीछे हट गया हूँ। इसके माने यह नही है कि मै धीरे-धीरे काग्रेस छोड़ रहा हूँ। मैं अपने जीवन के अन्तिम सास तक काग्रेसी रहूँगा और जहां तक वन सकेगा उसे क्रांतिकारी पथ पर लाऊगा अन्यथा मैं अकेले ही क्राति के रास्ते जाऊंगा और उसका पहला कदम होगा.—

(१) जो लोग भूमिहीन है उनको जमीन दिलाना (२) जो लोग स्वय खेती नही करते और हल चलाना अपनी शान के खिलाफ समझते है उन्हे श्रम करने के लिए प्रेरित करना और वाद में सरकार से अपील करना कि यदि उनकी तैयारी न हो तो श्रम करनेवाले को जमीन सौंप दे (३) इसी प्रकार उनके पास उतनी ही जमीन रहे जिस पर वे श्रम कर सके और उत्पादन वढ़ा सके। मेरे ख्याल मे एक परिवार के लिए १२ वीघा पीवल, ३६ बीघा माल, ५० बीघा रेगिस्तानी सूखी भूमि काफी है। इसके बाद जिसके पास जमीन बचे किसान को दे दी जावे। (४) किसान का घर का हल चलाने वाला हो हालियो से खेती करवानेवालो की जमीन हालियो को दे दी जाय।

पहले सरकार से अपील की जावे कि वह कानूनी नियम बनाकर यह कदम उठावे। मेरा विश्वास है कि राज्य सरकार यह स्वीकार कर लेगी मगर सवाल तो उस पर अमल करने का है। अभी तक केन्द्रीय तथा राज्य सरकारो ने समाजवाद और सीलिंग का नारा लगाया मगर अमल नही किया। यदि सरकार कानून नही वनावे या उस पर अमल नही करे तो मेरा तथा क्रातिकारी काग्रेसमैन का फर्ज होगा कि अपने कधे पर तिरगा झडा ले और भूमिहीन किसानो का कब्जा उन जमीनो पर कराये। इसके लिए जो भी मुसीबत उस पर आवे वह हसते हसते झेले।

दूसरा प्रश्न आवेगा राजाओ के प्रिवीपर्स खत्म कराने का। जहाँ तक विश्वस्त सूत्रो से पता चला है केन्द्र से लगाकर राज्यो तक की कांग्रेस सरकारे राजाओ को नाराज करने वाली नही है अथवा प्रिवीपर्स बन्द नही करेगी। प्रिवीपर्स कायम रखा तो देश मे विषमता पैदा करनी होगी अगर सरकारे ढिलाई दिखावे उपेक्षा करे तो उन राज्यो में जिन राजाओ को जितना खर्च दिया जाता है उतनी आय राज्य सरकार के खजाने मे जमा नही होने देने के लिए जनता को तैयार किया जाय और उसका अगुआ स्वयं खतरे मे पड़े।

जहा तक पूजीपतियो के पास गडे घन का प्रश्न है इस कदम को वाद मे उठाया जावे। राजाओ की तरह पूजीपतियो मे कोई दम नही है। इसलिए पूजीपतियो को मनवाने मे हमे कोई दिक्कत नही होगी। मैं मानता हूँ कि हमारे खजाने मे इतना पैसा नही है जिसके आधार पर कारखाने खोले जा सके। अस्तु व्यक्तियो को कारखाना

खोलने की अपनी पूजी लगाने की आजादी होगी मगर उसके शोषण, मूल्यों पर नियन्त्रण रखना होगा और यदि कोई पूजीपति उस नीति पर न चले तो उसके कारखाने को सरकार ले ले साथ ही शिक्षित बच्चो को औद्योगिक ट्रेनिग देकर धधे मे लगाने के लिए कर्जा और कच्चा माल देना होगा और उनके माल को बाजारो मे बेचने की जिम्मेदारी सरकार को लेनी होगी। सारांश यह है कि मुल्क को श्रम का अधिकार देना होगा, और मुफ्तखोरो को भारत की छाती पर आश्रय नही मिलेगा।

उपरोक्त नीति तथा कार्यक्रम को चलाने के लिए कांग्रेसी आगे आवे अन्यथा उन काग्रेसियों की मौत जल्दी आने वाली है जो—(१) जो मिनिस्टर अथवा अफसरो से सिफारिश कर तबादलो का धधा करते है (२) जो सरकार से बसो का रूट, सरकार के निर्माण कार्यो का ठेका, कोटा, परमिट के चक्कर मे पड़े हुए है (३) जो स्वय खेती न कर खेती दूसरो से कराते है (४) जो मच पर मन्त्री के कान मे "क्या पानी लाऊं" बात कर जनता पर रोब जमाने का काम करते है।

वर्माजी का एस. आई. एस. को बयान

२ अक्टूबर साप्ताहिक (९-५-६७)

पद्मभूषण श्री माणिक्यलाल वर्मा ने भूतपूर्व ससद सदस्य होते ही अपनी पहली संवाददाता भेट में उदयपुर स्थित एस आई. एस. को बयान दिया है कि "नव गठित सुखाड़िया सरकार सामन्तो और देशद्रोहियो का अखाड़ा और काग्रेस का दफ्तर भूतों का घर हो गया है।"

उन्होने कांग्रेसजनो पर यह कटाक्ष किया है वे सब राजधानी जयपुर के निकट खिसक गए है और उनका क्षेत्र बेकाम हो गया है।

श्री वर्माजी ने सीमा स्थित राज्याधिकारियो पर आरोप लगाया कि वे राष्ट्र के प्रति गद्दारी कर रहे है जिन्हे काग्रेस की सरकार का सरक्षण प्राप्त है।

श्री वर्माजी ने कबूल किया है कि आज की काग्रेस दलबन्दी और क्षुद्र स्वार्थों के ऊपर उठ सकेगी उसकी उन्हे कतई आशा नही है।

लोकजीवन (भीलवाड़ा) ७ दिसम्बर, १९६७

वर्माजी का कार्यकर्ताओं के आह्वान

"आज काग्रेस पर जो तत्व हावी हो गए हैं, उन लोगो से यह विश्वास नही है कि वे समाजवाद लाकर आम जनता को खुशहाल कर पायेगे। सत्ता का भूत काग्रेस के नेताओ पर बुरी तरह सवार हो गया है कि वे साठगांठ के प्रयत्नो मे मशगूल रहकर अपना लक्ष्य ही भूल गए है। काग्रेस सगठन मे भी पूजीवादी और शोषक तत्व भारी संख्या में मे घुस गए है। आजकी हालत मे सही काग्रेसमैन का यह फर्ज है कि वह घर घर घूम कर क्रांति का अलख जगाए। मै इसी तरह के कार्यकर्त्ता चाहता हूं जो गांव गांव जाकर लोगो मे सामाजिक क्राति का बिगुल बजावे।"

मै ३० जनवरी १९६८ के बलिदानी दिवस पर अपने मन मे क्रान्ति की भावना

रखने वाले कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन आमन्त्रित कर रहा हूं।

विशाल राजस्थान–कलकत्ता, दीपावली विशेषाक '६८, वर्माजी लेख—

कांग्रेस सच्चा समाजवाद शीघ्र लाए

हमारी कांग्रेस मे ऐसे लोग थे जो जाहिरा तौर पर तो खादी पहिनते थे और दूसरी तरफ अग्रेजो तथा राजाओ से मिले हुए थे। यही नही उसके सत्ताधारी इनको खुफिया के रूप मे हमारी बैठको में भेजते थे। किन्तु काग्रेस के सक्रिय आन्दोलन मे इन लोगो की पोल खुल गई और सन् १९४२ मे तो इनका पर्दाफाश हो गया। हमारे राजस्थान मे ही कई नेताओ के काले कारनामो के रिकार्ड मौजूद है लेकिन फिर भी आज बहुत कुछ सीमा तक वे अवसरवादी कांग्रेस के शासको और जनता को धोखा देने मे सफल हो रहे हैं लेकिन एक दिन उनका काला इतिहास स्पष्ट होगा ही।

पडित जवाहरलालजी के देश का नेतृत्व सभालते ही कई चापलूस और अवसरवादी काग्रेस मे घुस आए और आज जो लोग आजादी के पूर्व हुकूमत के खुफिया थे, काग्रेस पुराने सेवक बनने का दावा करते है और प्रतिष्ठित नेताओ की आड मे अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

तीसरा वर्ग एक ऐसा भी है कि जो सत्ताधारियों को मायाजाल मे डालकर कांग्रेस का टिकट प्राप्त करते हैं और अपने परिवार, रिश्तेदारो और मित्रो को कच्चा माल दिखाकर चोर बाजारी करवाते है और नियमित मुनाफा कमाते रहते है। इनमे वे लोग भी शामिल हैं जो अपने नजदीक छात्रो को अमेरिका इगलैड जर्मनी आदि देशो मे छात्रवृत्ति से पढने भेजते हैं और स्वय किसी शिष्ट मडल मे सदस्य बनकर विदेशो का दौरा करते हैं। ये अवसरवादी काग्रेसियो के साथ लोकतान्त्रिक समाजवाद का नारा भी लगाते है।

समाजवाद के साथ लोकतन्त्र शब्द जोडने का एक बहाना है कि भारत में जब कभी समाजवाद आयेगा तो वह जबरदस्ती किसी पर नही थोपा जाएगा। जनता की इच्छा के अनुकूल वह धीरे धीरे स्थापित होगा इस नए शब्द ने सत्ता पर बैठने वालो को निश्चित कर दिया। इसका परिणाम यह निकला कि खेती की जमीन पर सीलिंग का जो नारा लगा था वह केवल नारा बन कर रह गया। समाजवाद के दर्शन और उसकी सही आस्था को इस शब्द ने नाश कर दिया केवल सीलिंग का एक हल्ला मचा ऐक्ट बने और उनमे इतनी छूट रखी गई कि जमीदारो, राजाओ और जागीरदारो ने एक एक जमीन बेच दी और अब सीलिंग करने के लिए उनके पास कोई जमीन नही बची है।

वर्माजी का लेख :

यदि भारत मे समाजवादी व्यवस्था कायम नही हुई तो काग्रेस का राज्य कायम नही रह सकेगा।

प्रजासेवक, जोधपुर (३ फरवरी, १९६८)

मेरा यह दृढ विश्वास है कि यदि भारत मे समाजवाद अमली रूप मे नही आया जैसा कि पिछले व्यापारियो के अधिवेशन मे श्री घनश्यामदासजी बिड़ला ने अपने

भाषण मे कहा था " कि व्यापारियो, डरो मत कांग्रेस अपनी संस्था है इसके नेता यदि भारत की गरीबी के प्रति सहानुभूति नही बतावे और समाजवाद का नारा नहीं लगावें तो उनकी फिर लोकप्रियता कैसे कायम रहे ?

अस्तु, कांग्रेसी नेता समाजवाद नही लावेंगे तो यह सरकार एक दिन अवश्य उखडेगी।

अन्यथा खतरा एक ही है कि जिस चीन को हम दुश्मन मान घृणा का पात्र बना चुके है धीरे च्यागकाई शेक के राज्य के प्रान्तो को आज एक खाया, कल दूसरा, इस प्रकार देश पर हावी न हो जावे। यद्यपि हमसे दूर है मगर उसके हजारो भक्त भारत मे बैठे है और तब आज की तरह इस सरकार के खिलाफ जैसी लेखनी उठा रहा हूँ उस समय मेरी छाती पर गोली होगी उस समय तानाशाही ही होगी कोई बच्चा अन्याय को अन्याय नही कह सकेगा।

इन सब पापो का प्रायश्चित करना है तो हमे आज की नौकरशाही को बदलना होगा। उनमे अनेक नौजवान योग्य अफसर या कर्मचारी है उन्हे ऊपर लाना होगा, सीनियरिटी ज्यूनियरिटी का शोषण बन्द करना होगा। एक दिन एक कलम से सभी अफसरो को बर्खास्त किया जायगा और दूसरे दिन से नये अफसरो की भर्ती होगी। इस काम को करने के लिए जनता आगे आये। राजाओ और सामन्तो के पालने मे पले अफसरो को उखाड़ दे और चालाकी से रखे गए इस कलकमय राजस्थान नाम को बिलकुल मिटा दे।

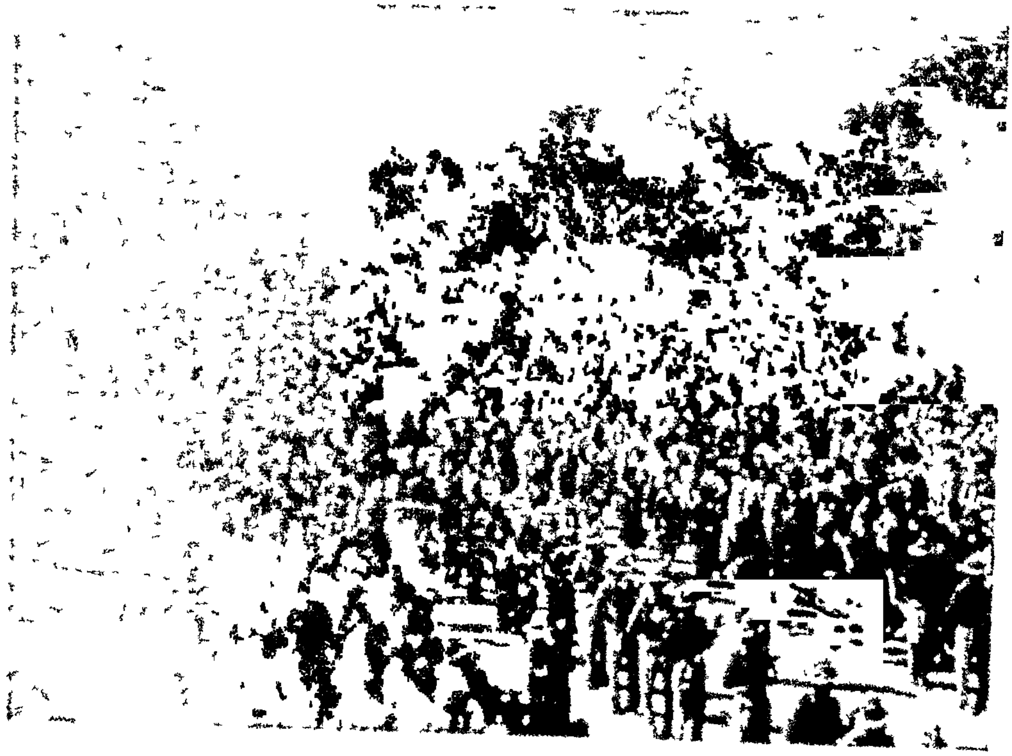
मेरे दृष्टिकोण में इसका नाम विंध्यार्बुद प्रान्त रखा जा सकता है या जन प्रदेश में परिवर्तित किया जा सकता है।



वर्माजी चिरनिद्रा मे



वर्माजी की अन्तिम-यात्रा



सैनिक सम्मान के साथ शव जलूस-यात्रा



[illegible]

अध्याय पन्द्रहवां

वर्माजी की वसीयत

हम पिछले परिच्छेद मे लिख आए है कि वर्माजी अपने जीवन के अन्तिम दिनो में देश की परिस्थिति, काग्रेस में बढते हुए भ्रष्टाचार, कार्यकर्त्ताओ की सिद्धात-हीनता तथा अवसरवादिता तथा काग्रेस सरकारो की पीडितो शोषितो की ओर उदासीनता, भूमि सुधारो को क्रियान्वित करने में आनाकानी तथा मन्त्रिमण्डल मे अवांच्छनीय व्यक्तियो को ले लिए जाने और प्रशासन की रीति नीति से बहुत क्षुब्ध थे। उनके मन मे गहरी पीडा थी वे एक बार राजस्थान के भूमिहीनो तथा शोषित और पीडितो को लेकर नया सघर्ष छेड़ने का सकल्प कर रहे थे, तभी पीडितो और शोषितो का वह कल्याणकर्त्ता, किसानो का महान नेता और क्रातिकारी विचारो का वह देशभक्त अपने अतिम युद्ध का बिगुल बजाने के पूर्व ही चल बसा। वर्माजी ने अपनी एक कापी में अपने कुछ सस्मरण लिखे थे। लेखक ने उन्हे पढा तो उसे ऐसा लगा कि वास्तव मे वे विचार जो उन्होने उस पुस्तिका मे अकित किए थे आने वाली पीढी के नाम उनकी पावन वसीयत है। उसको पढने से वर्माजी के व्यक्तित्व, उनके अन्तर मे जो विचार उनको उद्वेलित कर रहे थे, उनका स्पष्ट चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। यही नही वे पक्तियां उनके जीवन, जीवन-लक्ष्य और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती है। अतएव वह उनकी उस वसीहत को उनके ही शब्दो में अविकल यहां उद्धृत कर देना आवश्यक समझता है, अपने सस्मरण के अन्त में उन्होने लिखा था —

"इन पक्तियो के साथ मै अपनी लेखनी को विश्राम देता हूं। जीवन मे राष्ट्र की आजादी के लिए लडे और राजाओ और सामन्तो से होने वाली टक्कर में झीनी झीनी चोटे खाई, जो आज भी वादलो के उभार के साथ उभरती हैं। यह कष्ट उठाते देशभक्तो ने जो सपने देखे थे वे साकार नही हुए किन्तु मन मे यह आशा सजोये हैं कि वे शायद कभी तो सत्य होगे।"

"मैं अपने मनोरथो (मनकी इच्छाओ) की झांकी संक्षेप मे नीचे दे रहा हूं।"

(१) भारत की अखंडता :

"अग्रेजो ने जाते समय देश के टुकड़े कर दिये। वे वापस एक हो और भारत अखंड बने। उस अखड भारत मे गरीबी का समूल उन्मूलन हो। (वर्माजी के सस्मरण)

वर्माजी के ऊपर दिए लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्माजी के अन्तर में भारत के विभाजन की पीडा जीवन के अंत तक नही मिटी थी। उनके हृदय के अन्तर ने देश के विभाजन को स्वीकार नही किया था। अवश्य ही कांग्रेस तथा देश के वरिष्ठ नेताओ ने विभाजन को स्वीकार कर लिया इस कारण देश ने उसे स्वीकार लिया था परन्तु उस समय करोडो देशवासियो को उससे गहरी पीडा हुई थी और सच तो यह है कि जहा भारत की स्वतत्रता प्राप्ति, राष्ट्रीय आन्दोलन की महान सफलता थी वहा उसका विभाजन हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन की भयकर असफलता भी थी। परन्तु कालान्तर में देश के राजनीतिक कार्यकर्ताओ तथा नेताओ के मन से विभाजन की पीड़ा समूल नष्ट हो गई। जो सत्ता और अधिकार देश के स्वतत्र हो जाने के उपरान्त राष्ट्र कर्मियों के हाथ मे आया उसकी चकाचौंध मे देश के विभाजन की पीड़ा को भूल गए परन्तु वर्माजी उस पीडा को नही भूल सके। उनकी गहरी देश भक्ति का यह एक प्रमाण है। केवल देश की अखडता की ही उनके मन में कामना नही थी अखड भारत मे गरीबी का समूल उन्मूलन हो यह उनकी गहन इच्छा और कामना थी। आज तो गरीबी हटाओ चुनाव का केवल एक नारा बन कर रह गया है।

(२) श्रम का राज्य :

" जो हल चलाता है जो जंगल की लकडी कुल्हाडी से काटता है, कोयले बनाता है। जो सडक बनाता है, मिट्टी खोदता है, और ढोता है। जो धरती से कुदाली और गेती के बल पर धन निकालता है, जो कारखाने की मशीने चला कर अपना जीवन समाप्त करता है, उसके हाथों मे देश का राज्य आए। और बुद्धिजीवियो के इशारो की मेहरबानी का परवश जीवन नही रहे।" (वर्माजी के ससमरण)

दूसरे शब्दो मे वर्माजी चाहते थे कि श्रमजीवी वर्ग का देश मे वर्चस्व स्थापित हो वे प्रभावशाली बने। बुद्धिजीवी वर्ग (नौकरशाही) जो आज देश पर छाया हुआ है और पूजीपति वर्ग के समान ही राजनीतिक शोषण कर रहा है वह स्थिति नही रहे वह श्रमजीवी वर्ग का सहायक बने स्वामी नही।

(३) "प्रत्येक भारतीय परिवार को अपने रहने के लिए दो कमरे एक मेहमानघर, स्नानाघर, शौचालय, रसोईघर बच्चो के खेलने का मैदान, पशुओ के लिए छायादार जगह तथा सामानघर मिलें। श्रम के औजार मिलें।" (वर्माजी के संस्मरण)

कहने का तात्पर्य यह है कि वर्माजी की कल्पना के भारत में प्रत्येक परिवार को एक स्वतत्र आवास की सुविधा होनी चाहिए जिससे कि परिवार संस्था सबल और शक्तिवान हो और उसके माध्यम से परिवार के सदस्यो का विकास हो सके। स्पष्ट है कि राज्य का यदि यह उत्तरदायित्व हो जाता है तो भारत का जो निर्धन और आर्थिक दृष्टि से पिछडा वर्ग है उसके लिए आवास की सुविधा राज्य को करनी होगी.

(४) "सन् १९८० तक २५० रुपए मासिक आमदनी वाले भारतीय की शिक्षा और धन्धे मे लगाने की जिम्मेदारी राज्य की हो।"

(५) "बीमारी मे इलाज कराने के लिए अस्पतालो का ठीक प्रबन्ध हो।

रोगियो को कतारों मे खडा न होना पड़े वरन डाक्टर उनके घरो में पहुंच कर इलाज करें। चिकित्सा निशुल्क हो।"

(६) "दो गाए, चार बैल, एक घोड़ा, इतनी पशु सम्पत्ति के अलावा किसी भारतीय के घर मे अधिक पशु न हो।

(७) "प्रत्येक भारतीय किसान को पांच एकड़ सिंचित खेती की भूमि मिले और वह खेती के आधुनिक औजारो का प्रयोग करे।"

(८) "प्रत्येक भारतीय को अपने घर, कुए तथा उद्योग के लिए बिजली सुलभ रहे।"

(९) "प्रत्येक भारतीय के पास आधुनिक हथियार हो और उसे सैनिक शिक्षा दी जावे ताकि दुश्मन के आक्रमण के समय सारा देश मुकाबला करे। केवल पेशेवर सेना पर ही निर्भर न रहा जावे।"

राष्ट्र को शक्तिवान बनाने के लिए तथा, सैनिक व्यय देश के आर्थिक विकास के मार्ग मे बाधक न हो। वर्माजी सर्वसाधारण को सैनिक शिक्षा देने के पक्ष मे थे। साथ ही उनकी धारणा थी कि जिस राष्ट्र मे साधारण नागरिक के पास भी हथियार हो और उसे सैनिक शिक्षा प्राप्त हो वहा कभी भी इस बात की सभावना नही हो सकती कि सैनिक शासन हो और जनतन्त्र को समाप्त किया जा सके। भारत जैसे देश जिसकी इतनी अधिक जनसख्या है कि यदि वहां का साधारण नागरिक शिक्षा प्राप्त हो और उसके पास हथियार हो तो न तो कभी इस बात की सभावना हो सकती है कि वहां जनतंत्र को समाप्त कर सैनिक शासन स्थापित हो सके और न किसी अन्य राष्ट्र का उस पर आक्रमण करने का साहस हो सकता है। साथ ही सैनिक व्यय का भार आर्थिक विकास को अवरुद्ध भी नही कर सकता।

(१०) "आज की चुनाव प्रणाली समाप्त हो। गांव की जनता द्वारा सरपच और उन सरपचो द्वारा लोक सभा और राज्य सभा अर्थात पार्लियामेंट के सदस्य चुने जावें। राज्य सरकारे खत्म हो। देश मे एक सरकार चले। सरपचो के द्वारा दस लाख की आबादी पर चुना हुआ एम. पी. (सदस्य) क्षेत्र की इकाई का प्रबन्धक हो, जो केवल विकास फंड (कोष) का उपयोग करे। रोजमर्रा की जनता की दिक्कतो को स्वयं दूर कर लें।

स्पष्ट है कि वर्माजी देश के वर्तमान प्रशासनिक ढांचे के विरुद्ध थे। वे देख रहे थे कि राज्य सरकाररो के कारण देश मे पृथकतावाद की प्रवृत्ति के बढ़ने का भय है। केन्द्र की शक्ति कम होती है तथा केन्द्र मे किसी एक दल का बहुमत होने तथा राज्य मे किसी अन्य दल का शासन होने पर दोनो मे आंतरिक संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी और देश मे प्रदेशवाद पनपेगा। देश की एकता को उससे खतरा पैदा होगा अस्तु वे राज्य सरकारो को समाप्त कर देने के पक्ष मे थे और एकीय शासन पद्धति के समर्थक थे। उनकी मान्यता थी कि देश को सशक्त तथा आर्थिक दृष्टि से समृद्धिशाली बनाने के लिए एकीय शासन प्रणाली (यूनीटैरी गवर्नमेंट) की आवश्यकता है। राज्य सरकारो की

स्थापना से प्रदेशवाद को बल मिलता है।

(११) "गाव में पटवारी या पुलिस का कोई हस्तक्षेप न हो। चोर, बदमाश और व्यभिचारी को गांव वाले मनमानी सजा दे।"

"गाव की आबादी पाच हजार जन-सख्या की हो। छोटे छोटे गांवों को भगकर व्यवस्थित गाव बसें।

(१२) "सिंचाई के लिए आज के अनेक कुए सभी बन्द हो, प्रति एक सौ एकड पर गाव पचायत अपना कुआ खुदाए जो दो सौ फिट गहरा हो और पम्प के द्वारा सिंचाई की जावे।"

वर्माजी का अभिप्राय यह था कि पचायत अपने निज के ट्यूबवैल (नलकूप) खोदे और बिजली से सिंचाई की जावे। प्रत्येक किसान यदि कुआं खोदेगा तो वह आर्थिक दृष्टि से उतना लाभदायक नही होगा देश के लिए अधिक व्यय साध्य होगा और अधिक शक्ति धन और श्रम लगेगा।

(१३) "खेती की जमीन पर कोई लगान न हो। तीन हजार रुपए वार्षिक आमदनी छोडकर ऊपर की आमदनी पर अतिरिक्त इनकम-टैक्स (आयकर) लिया जावे"। "मजदूर कोई रहने नही दिया जाय।"

वर्माजी का इससे अभिप्राय यह है कि गांव मे कोई भूमिहीन खेत मजदूर नहीं होना चाहिए। कारण वह था कि वर्माजी ने देखा था कि गाव में भूमिहीन खेत मजदूर की स्थिति दयनीय थी, वह पशुवत जीवन व्यतीत करता था, इस कारण उसमे मानवोचित मूल्यो का उदय नही हो सकता था। उनका मन था कि यदि सभी के पास भूमि न हो तो ग्रामीण तथा कुटीर उद्योगो को इस प्रकार सगटित किया जावे कि जिससे प्रत्येक ग्रामीण आर्थिक दृष्टि से स्वतत्र और स्वावलबी जीवन व्यतीत कर सके, अपनी आजीविका के लिए किसी पर आश्रित न रहे।"

(१४) "नाई, धोबी, तेली, लुहार सुथार (बढई) कुम्हार आदि कारीगरो पर जब तक कि स्वय का परिवार श्रम करता रहे कोई टैक्स (कर) न हो, मजदूर रखने की मनाही हो।

वर्माजी आर्थिक स्वावलबन के पक्ष मे थे। उनकी मान्यता थी कि जब मनुष्य किसी व्यक्ति विशेष पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर हो जाता है तो उसका स्वय का स्वाभिमान नष्ट होकर उसका केवल पतन ही नही होता उसका आर्थिक शोषण भी होता है अतएव वे मनुष्य के लिए आर्थिक स्वावलम्बन के प्रबल समर्थक थे। वे यह भी सोचते थे कि यदि केवल राज्य द्वारा ही सारा उत्पादन होने लगेगा और समस्त जनसख्या राजकीय औद्योगिक सस्थानो मे अथवा राजकीय विशाल खेतो पर श्रमिक की भाति कार्य करने लगेगी तो भी व्यक्ति का व्यक्तित्व दबा रहेगा और राजकीय पू जीवाद के कारण जनतत्र एक व्यग मात्र बन जावेगा।

(१५) "दफ्तरो के बाबूओ की भीड़ हटा दी जावे। केवल विभागीय मार्गदर्शक और श्रमी पेशे के लोग ही स्वय अपने दफ्तर चलावें।"

(१६) "वकील, भाड, भाट, भिक्षा मांगने वाले और गोचर बताकर ठगने वाले (ज्योतिषी और पडित) मुफ्तखोरो को पेशा छुडा कर किसी उत्पादन कार्य मे लगाया जावे।"

वर्माजी उन व्यक्तियो तथा पेशो के घोर विरोधी थे जो स्वय धन का उत्पादन न कर समाज द्वारा उत्पन्न किए हुए धन मे साझीदार बनते हैं।

(१७) "कैदी कोई नही रहे समाजद्रोही का बहिष्कार हो।"

(१८) "कन्याओ को बीस वर्ष तक पढाकर उनका योग्य वरो के साथ विवाह कर दिया जाये और उन्हे राष्ट्र के काम मे लगाया जावे।"

(१९) "सिनेमा केवल राष्ट्रभक्ति उत्पन्न करने के लिए दिखाया जावे।"

(२०) "गहना पहनने तथा अपनी साज-सज्जा करने को युवक युवतियो मे बढती हुई प्रवृत्ति को उठा दिया जावे।

(२१) आजकल व्यक्तिगत मिलकियत मे चलने वाले प्रेस तथा समाचार पत्र बन्द कर दिए जावे। आठ लाख जनता पर पचायत प्रखड इत्यादि के प्रबन्ध द्वारा स्थानीय पत्र तथा देश मे एक करोड जनता पर एक पत्र सरकार निकाले।

(२२) "शराब, सिगरेट, भाग, गाजा आदि नशो पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय और उनका व्यसन करने वालो को दडित और लज्जित किया जावे।

(२३) "घर-घर चक्की चूल्हे बन्द हो। प्रति सौ घरो पर एक तदूर चले और प्रति समय चार आने मे (२५ पैसे) मे एक सब्जी, दही अथवा छाछ प्रत्येक भारतीय को मिले।"

(२४) पाच वर्ष तक के बच्चे को केवल दूध मिले अन्न नही दिया जावे।

(२५) २५ वर्ष के ऊपर युवक और २० वर्ष के ऊपर युवती की शादी हो, इसके नीचे शादी करने वालो को एकात जीवन की सजा दी जावे।

(२६) भारतीय नागरिक का कद साधारणतया ६ फिट लम्बा हो।

(२७) चप्पल का उपयोग बिल्कुल बन्द कर दिया जाय ताकि चाल न बिगड़े।

(२८) होट लाल करने वाली स्त्रियो के होठो पर डामर पोत दिया जाय। वर्माजी स्त्रियो द्वारा प्रदर्शन के लिए सजने के घोर विरोधी थे।

(२९) कालेजो मे लडकियो से छेडकानी करने वाले छात्रो का काला मुंह करके गधे पर बैठा कर घुमाया जाय।

(३० छोटी कक्षा से मशीनो और उद्योग की ट्रेनिंग शिक्षा के साथ शुरू हो जो दसवी कक्षा तक समाप्त हो।

(३१) विदेशो मे अनुभव प्राप्त करने, खोज शोध करने, खेती और उद्योग में मार्गदर्शन करने योग्य छात्रो को दसवी कक्षा के आगे पढाया जावे अन्यथा कालेजो और विश्वविद्यालयो मे व्यर्थ की भीड न बढाई जावे।

(३२) पाच हजार सख्या वाले गांव को सड़क से जोड़ा जावे और उसमें

बिजली पहुँचाई जाये ।

(२३) अपने हस्ताक्षरो के साथ जाति लिखने वाले भारतीय नागरिकता से वचित कर दिए जाय ।"

वर्माजी जाति प्रथा के घोर विरोधी थे, बहुधा वे लेखक से कहा करते थे कि भारत के पतन का मुख्य कारण जाति पृथा है और उसकी जितनी शीघ्र समाप्ति हो देश के लिए हितकर है। उनको मान्यता थी कि देश केवल सामाजिक दृष्टि से ही नही, जाति पृथा के कारण भी राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से पगु और निर्बल बना रहेगा। आज जो चुनावो मे जातिवाद का खुल कर प्रयोग होता है, वह इसका प्रमाण है ।

(२४) "पाच वर्षो के एक चुनाव मे पुरुषो को और दूसरे चुनाव मे महिलाओं को बारी बारी से राज्य करने का अवसर दिया जाय, जिससे यत्येक भारतीय में अनुभव और साहस उत्पन्न हो। स्त्रियो के लिए अबला शब्द का प्रयोग बन्द किया जावे।"

लेखक को वर्माजी से उनके इस विचार के सबध मे चर्चा करने का अवसर नही मिला कि प्रति पाच वर्षों के उपरान्त बारी बारी से पुरुष या स्त्रियों देश का शासन सूत्र सम्हाले। परन्तु लेखक को वर्माजी से समाज मे महिलाओ के स्थान के सम्बन्ध मे लम्बी चर्चाए हुई है। वर्मा की यह दृढ मान्यता थी कि स्त्रियो को प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुषो की ही भाति कार्य करने का समान अधिकार होना चाहिए। यहा तक कि वे सेना और वायुयान चालन में भी पुरुषो की भाति ही स्त्रियो के कार्य करने के पक्ष मे थे ।

(२५) जिस गांव और समाज मे हरिजनो के साथ भेद भाव करने की प्रथा चालू हो ऊच नीच का भेद किया जाता है, उनके खेतो और उद्योग धन्धो को जब्त कर लिया जाय ।

वर्माजी के मन मे भारत मे प्रचलित छुआछूत और ऊंच नीच के भेदभाव के विरुद्ध ऐसा तीव्र रोष था कि वे उसके विरुद्ध कड़ा से कड़ा दण्ड देने के पक्ष मे थे। बड़े छोटे के भेदभाव को वे किसी भी दशा मे सहन नही कर सकते थे। लेखक को एक घटना का स्मरण है: उदयपुर की बात है एक छोटी सी सभा हो रही थी। गांव के किसान आए तो उनकी व्यवस्था करने वालो ने नीचे जमीन पर बिठा दिया। राजनीतिक नेताओ और अधिकारियो के लिए सोफा लगे हुए थे। वर्माजी को किसानो के साथ इस व्यवहार से इतना रोष उत्पन्न हुआ कि वे स्वय सोफे से उतर कर जमीन पर बैठ गए। जब तक कि किसानो के कुर्सियो पर बैठने की व्ययस्था नही हो गई उन्होने ऊपर बैठने से अस्वीकार कर दिया ।

(२६) जो मिनिस्टर तथा अफसर अपने चपरासियों के साथ बैठकर भोजन नही करे उनको अपने पद से मुक्त कर दिया जाय ।

(२७) चुनावो मे केवल पैदल फिरने की अनुमति दी जावे जीप, मोटर आदि सब गाड़ियो के उपयोग को बिलकुल बन्द कर दिया जाय ।

(२८) दस वर्ष तक रचनात्मक कार्य करने वाला ही चुनाव मे उम्मीदवार हो ।

वर्माजी वर्तमान चुनाव प्रणाली से अत्यधिक निराश हो चुके थे। उनकी मान्यता थी कि आज की स्थिति यह है कि चुनाव बहुत अधिक व्यसाध्य हो गए हैं। अतएव चुनाव मे खड़े होने के लिए व्यक्ति अथवा दलो को पूंजीपतियो व्यवसायियो और धनिको से सहायता लेनी पड़ती है अतएव वे समाजवाद की स्थापना नही कर सकते अथवा दल विदेशी सहायता प्राप्त कर उनके एजेन्ट का काम करते है और राष्ट्रदोह करते हैं। अतएव चुनावो को सस्ता बनाया जावे।

(३९) देश मे काग्रेस, जनसघ, स्वतत्र, आदि कोई पार्टी नही रहे केवल देश निर्माण सघ नाम की संस्था हो, उसी के आदमी सत्ता मे आवे।

(४०) राजनीतिक नेताओ और सिविल सर्विस का सत्ता मे कोई स्थान न हो।

(४१) किसी मुसीबत और समस्या के हल मे जनता सत्ताधारियो के पास नही आए। सत्ताधारी स्वयं उनके पास पहुँच कर जनता की मदद से उसे हल करे।

(४२) देश के टुकडे करने की माग करने वाले, स्वतंत्र राष्ट्र का नारा लगाने वाले, जाति के नाम पर चुनाव मे वोट लेने वाले, चोर बाजार करने वाले लोगो और रिश्वतखोरो पर उनकी अचल सम्पत्ति जब्त होकर उनको सार्वजनिक रूप से गोली से उड़ाया जावे।

(४३) सरकारी नौकरी मे चपरासी से लगाकर अफसर या मत्री तक को उसके परिवार निर्वाह योग्य समान वेतन मिले।

(४४) युवक वृद्ध बीमार और बच्चो की पौष्टिक खुराक निर्धारित की जावे।

(४५) एक एक विदेशी मेहमान को प्रत्येक भारतीय अपना मेहमान बनाए।

(४६) प्रत्येक भारतीय के पास मोटरकार हो।

(४७) प्रत्येक घर मे टेलीफोन और रेडियो हो।

(४८) प्रत्येक बूढे भारतीय को ५० वर्ष की उम्र के बाद रात को और नीची उमर वाले को सुबह आधा सेर दूध दिया जाय। चाय बिलकुल बन्द करदी जावे।

(४९) प्रत्येक मंदिर की चल अचल सम्पत्ति कारखाने, शिक्षालयों, चिकित्सालयो के उपयोग में आवे।

(५०) प्रत्येक भारतीय के पास ६ हजार रुपये नकद से अधिक राशि बैंक में न हो।

(५१) बताई हुई सीमा के अलावा निजी मिलकियत कर दी जावे।

यह सूची और भी लबी हो सकती है किन्तु मै उसे अधिक बढाना नही चाहता। मेरा आशय यह है कि इस देश के नागरिक स्त्री पुरुष सादे. परिश्रमी. सचित्र, एक दूसरे के साथ सहयोग करने वाले साहसी सक्षम आत्मनिर्भर अधविश्वासो से मुक्त और देशभक्त हो। यह मनोरथ पूरा करने के लिए समाज के नेताओ और स्वय समाज को पुरूषार्थ और परिश्रम करना चाहिए।"

—माणिक्यलाल वर्मा

वर्माजी ने जो ऊपर अपने विचार तथा कल्पनाए अकित की है उसके सम्बन्ध मे केवल यही कहा जा सकता है कि उनकी कल्पना का भारत किस प्रकार का हो और भारतीय किस प्रकार का जीवन व्यतीत करे यह उसमे प्रतिबिम्बित और प्रलक्षित होता है।

अवश्य ही वर्माजी ने जो विचार व्यक्त किये है उनकी विशद व्याख्या वे नही कर सके वे केवल अपनी इच्छा तथा विचारो के सकेत मात्र दे सके। वे केवल जो उनके जीवनकाल मे कभी कभी कतिपय प्रश्नो तथा समस्याओ पर लेखक ने उनसे चर्चा की उन समस्याओ के सम्बन्ध मे वह उनके विचार जानता था जो सक्षेप में उसने उनके विचार के नीचे लिख दिए है। परन्तु अधिकाश के सम्बन्ध मे उसको उनसे विस्तारपूर्वक चर्चा करने का अवसर नही मिला। अतएव उनके सम्बन्ध मे वह कोई स्पष्टीकरण नही कर सकता।

उनके ऊपर लिखे विचारो को किस प्रकार देश मे कार्यान्वित किया जा सकता है उनको कार्यान्वित करने के लिए किस प्रकार की शासन व्यवस्था और समाज व्यवस्था की आवश्यकता होगी तथा देश का आर्थिक सगठन किस प्रकार का होगा, यह एक अत्यंत गम्भीर प्रश्न है जिसके सम्बन्ध में वर्माजी के विचार स्पष्ट रूप से कही लिखे नही मिले। अस्तु उस सम्बन्ध मे कुछ कह सकना कठिन है। वर्माजी ने जो विचार ऊपर व्यक्त किए है उनके सम्बन्ध मे बहुत से राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ को शका हो सकती है उनके विचार तथा मान्यताए कहा तक व्यवहारिक तथा हितकारी है यहा यह बताना लेखक का उद्देश्य नही है। उनको केवल इस दृष्टि से उद्धृत किया गया है कि उनके माध्यम से वर्माजी के मन मे जो देश तथा देशवासियो के सम्बन्ध मे कल्पनाए थी वे पाठक जान सके। क्योकि उनके द्वारा ही वर्माजी के अन्तर की सही झाकी मिलती है।

उनकी वसीयत को पढकर प्रत्येक व्यक्ति यह समझ सकता है कि उनके अतर की भावना यह थी कि राष्ट्र शक्तिशाली बने, व्यक्ति राष्ट्र के लिए जिए, और जो भी शक्तियां राष्ट्र को शक्तिहीन बनाती है उनको समाप्त कर दिया जावे। जो समाज मे निर्बल है, पिछडे हुए है, उनको राष्ट्र सबल और शक्तिवान बनाए। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्माजी के अन्तर मे गहन देशभक्ति की धारा प्रवाहमान थी। मातृभूमि के लिए जिए और मरें, यही उनका मूल मंत्र था।

अध्याय सोलहवां

वर्माजी के गीत

जब वर्माजी ने ठिकाने की नौकरी छोडकर देशसेवा का व्रत लिया तो उन्होने अपनी सेवाएं पथिकजी को समर्पित कर दी। पथिकजी में अद्भुत सगठन शक्ति थी तथा वे प्रचार की कला मे भी दक्ष थे। उन्होने यह अच्छी तरह देख लिया था कि किसानो तथा ग्रामीण स्त्री पुरुषो मे यदि किसी विचार को फैलाना हो और उन्हे किसी कार्य के लिए उत्साहित कर त्याग के लिए प्रेरित करना हो, तो उसका सर्वोत्तम साधन उन ग्रामीणो की भाषा मे गाए गए गीत थे। ग्रामीण के मन पर गाए गए गीतो का स्थायी प्रभाव पडता था। भाषण उसको उतना नही छूते थे जितने कि गीत। यही कारण था कि उन्होने स्वय मेवाडी गीतो की रचना की और अपने साथियो को इस पद्धति को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। पथिक जी को यह जानने मे देर नही लगी कि युवक माणिक्यलाल वर्मा मे लोक गीत बनाने और उनको गाने की अपूर्व प्रतिभा विद्यमान है अतएव वर्माजी तथा प्रज्ञाचक्षु श्री प्रेमचन्द भील का उन्होने इस कार्य मे खूब उपयोग किया।

वर्माजी केवल लोक गीतो को लिखते ही नही थे वरन स्वय उनको सभा मे खडे होकर खजरी ढोलक और हारमोनियम पर गाते भी थे। जिन्होने उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक गीत 'पछीडा' को चग बजाकर गाते सुना है वे उसके प्रभाव को आज भी नही भूले है। जब वर्माजी 'पछीडा' गाते तो किसानो मे उत्साह और ठिकाने के अत्याचारो का प्रतिकार करने की भावना जागृत होती और वे झूम उठते।

वर्माजी के इन लोकगीतो का बिजोल्या के किसान सत्याग्रह मे अत्यन्त प्रभावशाली और गौरवपूर्ण स्थान रहा है। जिस समय भारत का वह प्रथम किसान सत्याग्रह चल रहा था, ठिकाने और मेवाड़ सरकार का पाशविक अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था तो एक समय ऐसा भी आया जब निरीह किसान विचलित हो उठा। पथिकजी कानपुर मे 'प्रताप' के द्वारा भारत को बिजोल्या किसान सत्याग्रह की कहानी सुना रहे थे। किसानो का नेतृत्व वर्माजी कर रहे थे। उन्होने देखा कि भयकर अत्याचार से कही किसान साहस न छोड दे। स्थानीय होने के कारण उन्हे पता लग गया कि किसानो का धैर्य और साहस समाप्त होने की सीमा पर पहुँच चुका है।

थे चिन्तित हो उठे। उन्होने रात्रि को किसानों की वृहद सभा बुलाई। (बिजोल्यां सत्याग्रह के समय रात्रि में ही छिपकर सभाएं होती थी) और एक गीत बना कर गाया गया। जिसका शीर्षक था :

मरदां के मर जाजो, हांसल मत दीजो,
लागत बागत मत दीजो, लाटा कूंता मत दीजो।

रात्रि के शान्त और निस्तवद्ध वातावरण मे चग पर थाप के साथ जब वर्माजी का कण्ठ स्वर लहराने लगा तो गीत की प्रत्येक पक्ति के साथ निराश और उत्साहहीन किसानो के हृदयो और आखो मे शौर्य का तेज झलकने लगा। वे तन्मय होकर वर्माजी की ललकार भरा वह गीत सुन रहे थे। जो किसान अभी तक ठिकाने और मेवाड सरकार के दमन के समक्ष पराजय स्वीकार करने की बात सोच रहे थे दमन और आतंक के कारण उनको समझाने का कोई प्रभाव नही पड़ा था, उनमे उत्तेजना और उत्साह की लहर फूट पड़ी। वर्माजी के गीत ने उनके अन्तर के स्वाभिमान और वरित्व को जगा दिया था। वे सब के सब उठ खड़े हुए सबो ने हाथ उठाकर शपथ खाई कि चाहे प्राण चले जावे वे लगान वेगार आदि नही देगे। वर्माजी की यह अभूतपूर्व विजय थी।

एक दूसरे अवसर पर इसी प्रकार किसानो मे आतक फैल गया वे अत्यन्त भयभीत हो उठे अतएव पुरुष सत्याग्रह सम्बन्धी सभा से बचने लगे। उनकी उपस्थिति कम होने लगी परन्तु महिलाए बड़ी सख्या मे उत्साह के साथ सभा मे भाग लेती थी। वर्माजी के ध्यान मे आया कि मेवाड़ी महिलाए अपने पतियों के शौर्य को जागृत कर उन्हे देश की स्वतत्रता के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए सजा कर और आरती उतार कर रणभूमि मे सैकड़ो वर्षो से भेजती रही है उस परम्परा को पुनः जीवित क्यो न किया जावे। उन्होने एक गीत लिखा और उसको महिलाओ से सभा मे अपने साथ गवाया उसकी प्रारंभिक पक्तिया थी :—

थूं चाल सभा मे चाल म्हारा ढोला जी,
लहगा साड़ो थे पहरो, थाके पगड़ी म्हाने दो।
ल्यो हाथा मे चूड़ी थाल, म्हारा ढोला जी।
थूं चाल सभा में चाल म्हारा ढोला जी।

जब वर्माजी के साथ महिलाओ ने यह गीत सभा मे गाया पुरुषो मे हलचल मच गई। स्त्रियो ने उनके पुरुषत्व को ललकारा था, चुनौती दी थी, उनका शौर्य और पौरुष जो ठिकाने के दमन और आतक के कारण तेजहीन हो गया था सतेज हो उठा और वे उत्साह के साथ सभा मे भाग लेने लगे।

बिजोल्या सत्याग्रह वर्माजी की एक प्रयोगशाला थी। उन्होने जान लिया था कि ग्रामीण के हृदय मे किसी विचार को स्थायी रूप से प्रविष्ट कराने के लिए उसकी भाषा मे लिखे और गाये जाने वाले लोकगीत अत्यन्त कारगार होते है। तबसे उन्होने

भावी संघर्षों मे अपनी व्यूह रचना मे लोक गीतो को महत्वपूर्ण स्थान देना आरंभ कर दिया ।

जब १९३८ मे वर्माजी ने मेवाड़ प्रजामण्डल स्थापित किया और दो सप्ताह भी व्यतीत नही हुए मेवाड़ राज्य सरकार का दमन चक्र चला, मेवाड़ प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता सत्याग्रह कर जेल जाने लगे तब वर्माजी ने प्रजामण्डल के सत्याग्रह सम्बन्धी अनेक गीतो की रचना की और उनके द्वारा प्रचार कार्य किया । जब वर्माजी द्वारा रचित गानो को सत्याग्रह वीर गाते चलते तो सर्व साधरण के हृदय में अनायास ही सत्याग्रह के प्रति आदर भावना जाग उठती । जब सत्याग्रही गाते हुए चलते—

मां प्रजामण्डल खोलांगा
था क्या थांका जुल्मां सूं
मां प्रजामण्डल खोलागा
छाना रेवा को यो आर्डर
तोड़ा मुख से बोलांगा

तो साधारण मेवाड़ी आश्चर्य चकित होकर देखता कि मेवाड़ के निरकुश शासन को प्रजामण्डल चुनौती दे रहा है । अल्प समय मे ही मेवाड़ प्रजामण्डल का नाम समस्त मेवाड मे फैल गया । खेद है कि बिजोल्या सत्याग्रह तथा मेवाड प्रजामण्डल के समय वर्माजी ने जो बहुत अधिक सख्या मे गीत लिखे थे उनका एक स्थान पर सग्रह नही किया गया ।

जब १९४१ मे वर्माजी ने भीलवाडा मे मजदूरो का सगठन खड़ा किया तो उस समय भी उन्होने मजदूरो को जगाने के लिए गीत बनाए—

अब जागो जागो रे मजूर
थे एकठ करलो रे मजूर

की ध्वनि आज भी भीलवाडा के मजदूरो मे कार्य करने वाले मजदूरो के नेताओ के कानो मे गूंजती है ।

जीवन के अन्तिम वर्षो मे वर्माजी कांग्रेस सगठन मे घुसे हुए स्वार्थ, भ्रष्टाचार, पदलोलुपता के कारण बहुत क्षुब्ध थे । कांग्रेस सरकार की नीतियो की वे कठोर आलोचना करते । जिन लोगो को उन्होने राजनीति मे आगे बढ़ाया, उनको आगे लाए, उनके सत्ता मे जाने पर उनके द्वारा की गई भूलो से वे क्षुब्ध हो उठते थे । बीस वर्षो मे भी समाज के शोषितो और पीडितो के दुख दर्द को नही मिटाया जा सका, किसान और आदिवासियो तथा अन्य पिछडे वर्गों के कष्टो से उनका सवेदनशील मन कराह उठा । उनके प्रगतिशील व्यक्तित्व मे एक बार फिर क्राति की अग्नि को प्रज्ज्वलित करने की चाह और उत्साह उमड़ पड़ा । उन्होने पीड़ितो और शोषितो को पुन सगठित किया और जमीन पर अधिकार करने के विचार को शक्ति दी । जीवन के अन्तिम वर्षों

में जो उन्होने गीत लिखे उनमे उनके उस क्रान्ति की हुकार की ध्वनि स्पष्ट सुनाई पडती है । वे सभवत आने वाले क्रान्तिकारी सघर्ष की भूमिका तैयार कर रहे थे कि उन्होने महाप्रयाण किया । परन्तु उनके जीवन के अन्तिम वर्षो मे उनके द्वारा लिखे गए गीत उनके आक्रोश पीडा और क्षोभ को स्पष्ट कर देते है ।

जब वर्माजी की वाणी से फूट निकला "म्हारी जनसत्ता ने भूइयां री मादड़ली खागई रे, इन पच राज ने रिश्वत री चादड़ली खागई रे ।" तो यह नोकरशाही द्वारा प्रभावित राजतत्र पर करारा प्रहार था ।

"ए बाग के माली पकड कुदाली हिन्द को हरा बनाना"

"घरती करसारी" 'कुछ दे दो कुछ खालो' 'नही रहेगे गुलाम हाली जमीन लेगे जमीन लेगे ।" 'इन भूखो की बीमारी को मजूर करो मजूर करो' घरती पर जिसका गिरे पसीना उसके रहने पायेगी, मेहनतकश के नए लुटेरो जमीन तुमसे जायेगी" आदि गीतो में वर्माजी के हृदय और मन मे जो क्रान्ति की भावना हिलोरे मार रही थी उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखलाई देता था । उन्होने जीवन के अन्तिम दिनो मे बहुत से गीत लिखे थे जिनमे उनका आक्रोश, तथा क्षोभ फूट पड़ा है और सत्ता मे अपने कर्तव्य को भूल जाने वाले सहकर्मियो को चेतावनी भी दी है । क्या ही अच्छा हो कि कोई वर्माजी का भक्त उनके सब गीतो को लिपिबद्ध करले और उनका पृथक सग्रह निकाला जावे । नही तो वो कालान्तर मे विस्मृत के गर्त मे चले जावेगे ।

वर्माजी कोई साहित्य परम्परागत गीतकार या कवि नही थे । उन्होंने जो लोकगीत लिखे वे 'स्वान्त सुखाय' के लिए नही अपने राजनीतिक तथा देश सेवा के कार्यो के प्रचार के उद्देश्य से लिखे थे । उनका यह सृजन कार्य साउद्देश्य से था, उनमे साहित्यिक काव्य कला की बारीकिया चाहे न मिले परन्तु उनमे विचारो को उद्वेलित करने की शक्ति विपुल मात्रा मे मिलती है । उन्होने राजनीतिक क्रान्तिकारी विचारो को अशिक्षित ग्रामवासियो और सर्व साधारण मे प्रसारित करने का यह अनोखा और सशक्त उपाय खोज निकाला था ।

जब वे उदयपुर मे होते और कोई नया गीत बनाते तो आदिवासी कन्या छात्रावास मे जाकर आदिवासी लडकियो से गवाते, कभी कभी उनके साथ बैठ कर स्वयं भी गाते थे ।

१६ अगस्त १९७० को जब लेखक श्रीमती नारायणी देवी वर्मा के साथ आदिवासी कन्या छात्रावास गया और छात्रावास के सभा कक्ष मे छात्रावास की बालिकाओ द्वारा वर्माजी के गीत सुन रहा था तो जनसाधारण के विचारो को उद्वेलित करने की उनकी महान शक्ति को समझ और पहचान सका । मै जब छात्रावास को बालिकाओ के कंठ से निकले हुए उन गीतो को सुन रहा था तो अनायास मन मे यह भाव उदय हुआ कि वर्माजी मरे नही, अमर है । उन गीतो के माध्यम से वे आज भी अपना कार्य कर रहे हे । आवश्यकता इस बात की है कि इनके समस्त गीतो का सकलन किया जावे और उनको पुस्तक रूप मे प्रकाशित कर दिया जावे ।

लेखक ने उनके कतिपय गीतो को यहा इस उद्देश्य से दिया है कि पाठक

उनके विचारो को विशेषकर उनके अन्तिम दिनो मे जो हृदयगत भावनाएं उठ रही थी उनको समझ सके तथा उनके प्रचार कार्य करने की पद्धति को जान सके।

पीडितों का पंछीड़ा

यह वर्माजी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक गीत है जो कि उस समय लिखा गया था कि जब पथिक जी बिजोल्या के किसानो का संगठन कर रहे थे। हजारो किसानो में जब वर्माजी ने उसे गाया तो किसान आत्मविभोर हो गए। आगे चल कर यह गीत बहुत प्रिय और प्रसिद्ध हुआ। ऊपरमाल के किसान इसे प्रत्येक सभा मे गाते थे :—

मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा।
तन का कपड़ा खोवे छा, हाय पड्या पड्या थे रोवे छा।
आसू सूँ डीलड़ो धोवे छा, मर्दा ओरे काली तो.......... ।
ढांडा थाने जाण सिपाही कूटे छा, धन माल कमाई लूटे छा,
दूजां के खूँटे खूँटे कूटे छा, आपस मे भाई फूटे छा।
मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा।
मर्दा ओर वेगारा का जूता था के सिर पर लागे छा।
पहरा में नितका जागे छा, थे देख सिपाही भागे छा।
वेगारी नाम सू बागे छा, पहरा मे नितका जागे छा।
मर्दा ओरे काली तो भादूडारी राता सोवे छा।
मर्दा ओरे गहना को वो खाट तोडवो उठयो छा।
लोहू को गुटको छुट्यो छा, लुण्या की हाँडो फूटयो छा।
यो नार आक सू खूटयो छा, मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा।
मर्दा ओरे पडक दडक रुपया को छन छन निठगी छा।
कठती वत्ती सब कटगी छा।
घिसा और गाडया मिटगी छा, परणा की कीमत घटगी छा।
मर्दा ओरे काली ते भादूडारी राता सोवे छा।
मर्दा ओरे दौड़ दौड कर घूटयो नजराणो देवो छा।
छ ने छाने रिश्वत लेवोछा।
वो पागल उल्लू कहवो छा, बल्दां ज्यूं रात दिन वहवो छा।
मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा।
मर्दा ओरे एकठ था को देख सभा ने रोके छा।
वन्दे की बोली टोके छा।

झूंठा भूतां ने धोके छा, विन बादल मोरया को के छा ।
मर्दा ओरे काली ने भादूडारी राता सोवे छा ।
मर्दा ओरे थां बालक हाथ कवारा रेवे छा ।
पण नुत वराड़ी देवे छा, घर भूखा रहवी सहवो छा ।
थे हाय निसासी लेवे छा ।
मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दा ओं रे हाकम हाकम करता करता हारया छा ।
कूंतां में पूरा मारया छा, घर में नही बचता खास्य छा ।
सोमल खां मरनो धान्या छा, मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दा ओरे सुणकर अर्जी एक देवता□ आयो छा ।
जीको पैतों नही पाया छा । बूंटी सत्याग्रह लाज्यो छा ।
सब लोगां के मन में भाग्यो छा ।
मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दा ओरे देखो आंख्या खोल सूरजो उग्यो छा । दूजो काकोजी पूग्यो छा ।
पापीड़ो पडग्यो लूग्यो छा, बीज धर्म को उग्या छा ।
मर्दा ओरे काली भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दा ओरे कांटा की हय बाढ़ खेतने खागी छा ।
या भुख ज्वाला लागी छा, लुगायां होगी नागी छा ।
या मौत सामने आगी छा, मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दा ओरे चेतो झटपट नही तो पापणी खाजासी ।
तैय्यार रसोई पाजासी । नही मिलसी टुकडो भी बासी ।
सब डील डाकणी खाजासी छा जासी ।
मर्दा ओरे काली भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दा ओरे थां की हिम्मत अन्याया के खटके छा ।
मन अगल बगल ये भठके छा, थाने घबराबाबान भटके छा ।
सत देख्या पाछे भटके छा, मर्दा ओरे काली तो भादूडारी राता सोवे छा ।
मर्दा ओरे थां को सत की काम काल जे छा ।
अब पसली फसली हाले छा, वे भूठ अडगा डाले छा । पण अपनी चालाँ चाले छा । मर्दा ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।

□ देवता शब्द वर्माजी ने पथिकजी के लिए उपयोग किया है।

मर्दां ओरे वे भी मिलकर एकठ करवा लाग्या छा ।
अब अठी उठी न भाग्या छा, रुपया राज का खाग्या छा ।
भांण्डा खाली अब वाग्या छा,
मर्दां ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दां ओरे देखी थांकी चोटी हाकिम पकडेगा, दोई हाथ बांध वे जकड़ेगा ।
तब रुपया थांका निकलेगा, मजबूती सू पाछा सकड़ेगा ।
मर्दां ओरे काली ते भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दां ओरे थांके ऊपर घटा विपत्ति की आवेगी ।
काली बादलियां छावेगी,
फिर बिजली भी चमकावेगी, आंधी थाने डरपावेगी ।
मर्दां ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दां ओरे रीछ बांदरा नार स्याल सब भूमेगा ।
काली नागण भी फूकेगा, फिर चोर लुटेरी लूटेगा, कपड़ा लेबाने घूमेगा ।
मर्दां ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दां ओरे काल कोठरी भीतर थाने खड़केगा ।
बन्दूक्यां न्याली अड़केगा, तोपों की जोडया धड़केगा ।
वे सपना मे भी भड़केगा, मर्दां ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दां ओरे हाथ जोड़बो छोड़ आख्यां-राती करलो, ई खुसामद ने
दूरी धर लो, भूठो मत पीवो था जड़दो, यो मर्द नसो डील मे भरदो ।
मर्दां ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दां ओरे मरती मर जास्यो पर लागत मत दीज्यो
घणी करे तो हासिल भी मत दीज्यो, वेड़ी के दुख थे पालीज्यो ।
अन्नदाता कहबो छोड दो यो मत खिज्यो ।
मर्दां ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।
मर्दां ओरे यदि ओरे करज्यो ललकारी
वडी अन्त मे धूजेगा, खरला मे भी जस गूंजेगा ।
हो रोग अन्यायी सूजेगा, पग पाछा थांका पूजेगा ।
मर्दां ओरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।

☐ अर्जी (सन् १९२२ मे नानक भील के बूंदी की पुलिस द्वारा निहत्थे किसानो पर गोली चलाने के कारण मारे जाने पर वर्माजी ने यह कविता 'अर्जी' बनाकर सुनाई थी ।

अर्जी

लेता जाजो जी नानक जी भील, अर्जी पचा की ।
दीजो म्हांकी अरजी परम पिता के हाथ ।
बून्दी की दुखिया परजा की कीजो सारी बात ।
डूब्यो धरम पाप छायो छै, नीत राज की खोटी ।
बालक बूढा पचा रात दिन, फिर भी मिले न रोटी ।
तन ढकवा सारु न चीथरा, नान्या डोले नांगी ।
फिर भी पापी म्हाके ऊपर गोल्या भर भर दागी ।
राजो दारु पी सूतो, गोला लूट मचाई ।
सब रैय्यत ने लूट लूट मोटी हेल्या बणवाई ।
भूगतो धणी दुखा मे रैय्यत, अब तो कठ तक डूबी ।
मरबा सारू सत्याग्रह पर अब तो डटकर ऊबी ।
तू अनाथ का नाथ कहावे, हे तिरलोकी नाथ ।
छोड़ बडाने अब तो धरदे म्हा के माथे हाथ ।
इतरी डाक खानवा छां म्है नानक थारे साथ ।
दूजी डाक फेर आवे छै, कह दीजो या बात ।
कह दीजो जां तक म्हाकी होगी नही सुणाई ।
मरवा ऊपर ऊबा छा सब बालक लोग लुगाई ।
धन्य धन्य थारी जननी ने मरयो देश के काम ।
चांद सूरज बूदी है जां तक थारो रहसी नाम ।
डाबो का कुछ देशद्रोहो, बुरो देश को ताक्यो ।
दूजा मोडो, ओनाडी ठाकर था पर फदयो नाक्यो ।
रामकिशन हाकम, इकरामो सुपरडट को डक ।
नाजिम धन्नालाल यं मा थे, रहसी सदा कलक ।
छोरा छोरयां को धोको मत लाज्यो रत्ती मन मे ।
वे म्हांका छे, म्हां वाका छां ई दुख सुख जीवन में ।
कै तो थारी बलि सू दुखा सू म्हां छूट जावां छां ।
दूजू मोड़ा बेगा म्हा भी, सारा ही आवां छां ।
अब तो हो मे एक किनारा पर ही रहसी बात ।
कै तो अन्याय मिटेगो, के म्हा को सिर साथ ।

अर्थ

हे नानक भील किसान पंचो की अर्जी ले जाकर परम पिता को देना, बूंदी राज्य की दुखी प्रजा की दुख गाथा उन्हे सुनाना। कहना कि वहां धर्म डूब गया पाप छाया हुआ है राज्य की नीति वहुत अनिष्टकारी है। बालक वृद्ध रात दिन श्रम करके थकते हैं फिर भी उन्हे पेट भर रोटी खाने को नही मिलती, शरीर ढकने के लिए सावित कपडा भी नही है और छोटी लडकिया नगी फिरती है। ऐसी दशा मे भी पापियो ने हमारे ऊपर गोली वर्षा की। राजा शराब के नशे मे वेहोश होकर सोता है उसके गोलो (रखेलो से उत्पन्न) ने लूट मचा रक्खी है। समस्त प्रजा को लूट-लूट कर इन्होने बडी-वड़ी हवेलिया वनवाली हैं। रैय्यत वहुत अधिक दुखी है अब तो वह दुख मे कठ तक डूब गई है और मरने के लिए सत्याग्रह पर डट गई है। हे त्रैलोक्यनाथ तू अनाथो का नाथ कहलाता है अब तो बडो धनवानो और सत्तावानो को छोड दे और हम निर्धनो और दुखियो के सर पर हाथ रख दे।

इतनी डाक (समाचार) हे नानक हम तुम्हारे साथ भेजना चाहते हैं। परम पिता से यह भी कह देना कि अभी दूसरी डाक और आवेगी। परम पिता परमेश्वर से कहना कि जव तक हम दीन दुखियो की सुनवाई नही होगी हम सब स्त्री-पुरुष मरने के लिए तैयार खडे हैं। हे नानक भील तेरी जननी धन्य है क्योकि तुम देश के कार्य मे मरे जव तक आकाश मे चन्द्रमा और सूर्य निकलते हैं और बूदी रहेगी इस पृथ्वी पर तुम्हारा नाम (यश) रहेगा। डावी के कुछ देशद्रोहियो ने देश का बुरा सोचा दूसरे ओनाडी ठाकुर ने तुम पर फंदा फेका, रामकृष्ण हाकिम, तथा डक रूपी पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट इनकराम तथा नाजिम धन्नालाल इसमे शामिल थे। इन पर सदैव के लिए अमिट कलक लगा रहेगा। तुम अपने लडके-लडकियो के वारे मे तनिक भी चिन्ता न करना इस जीवन के दुख-सुख मे वे हमारे हैं और हम उनके हैं या तो तुम्हारे इस वलिदान से हमारे दुख मिट जावेगे नही तो आगे पीछे हम सभी तुम्हारे पीछे आवेगे। अब तो दो मे से एक ही बात होगी या तो अन्याय मिट जावेगा अथवा हमारा सिर नही रहेगा, हम अन्याय के विरोध मे वलिदान हो जावेंगे।

जब वर्माजी ने यह अर्जी गाकर सुनाई तो समस्त जनता मे निराशा के स्थान पर उत्साह और जोश की लहर फैल गई, उन्होने शपथ ली कि वे अन्याय के सामने कभी नही झुकेंगे उसका प्रतिशोध करेगे। जन भाषा मे ऐसी मर्मस्पर्शी हृदयग्राही और ओजस्वनी कविता के द्वारा ही वर्माजी निरक्षर जन समूह मे अन्याय का प्रतिकार करने की भावना उत्पन्न कर देते थे।

भारत-महिमा

बता दो उस धरती का नाम।
युग-युग में जहां पैदा होते गांधी, गौतम, राम।

बता दो उस धरती का नाम :
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान
बता दो....।

(राम) कैकेयी की मनी व्यथा पर, जिसने गद्दी छोड़ी हो।
सुखों की तृष्णा को जिसने, दुखो में ही मोड़ी हो।
आया हुआ राज तज कर जो, कभी न भोगी बन पाया।

(भरत) रहा-विषय से दूर—गाल दी जिसने तप में ही काया।
राम पादुका रख गादी पर, तपा हो दिन और याम।
बतादो उस धरती का नाम।

(गौतम) एक मुर्दे को देख जिन्होंने मानव का मरना जाना।
बुद्ध यह नश्वर है देह समझ कर पहना योगी बाना।
जगल ढूंढा तीरथ ढूढे, खुदा मिला नहि कही जिसे।
गरीब की सेवा ईश्वर है, मिला मन्त्र ही यही जिसे।
गद्दी छोड़ घूम कर जिसने किया नही विश्राम।
बता दो उस धरती का नाम।

महाभारत में मन्त्र फूंक कर, पांडव राज चलाया था।
काश्तकार का वच्चा वनकर, पशुधन खूब चराया था।
(श्रीकृष्ण) जव जब मौका मिला राज का, तिलभर अश न खाया था।
सौंपी मित्रजनों को सत्ता, चक्कर में नहि आया था।
कृष्ण ग्वाल है महाकाल है, फैला चहुं दिश नाम।
बता दो उस धरती का नाम।

सोया मानव जगा जगाकर, मुर्दो में जाने डाली।
वेहथियार भगा गोरो को देश करवाया है खाली।
(गांधी) सत्ता आई नहि भोगी, दुनिया का एक नमूना था।
जोत रहा वाट तख्त दिल्ली का उस बिन सूना था।
नो-आखली घूम कर कहता, अरे उठालो राम।

बता दो उस धरती का नाम।
(माणिक्यलाल वर्मा)

वतन पर मरने वाले तू

वतन पर मरने वाले तू, कुरवां की तैयारी कर।
कि मक़तल पर चढा मंसूर, वैसी होशियारी कर।
भगतसिंह सा भगत बनजा, या नरसी की फकीरी ले।
लुटा दे मुल्क पर दौलत, घर की भी ख्वारी कर।
चढ़े सूली लगे गोली, जलाया जंगलों में जाय।
निशां न हो कब्र का भी, उस दोज़ख में सूबूरी कर।
खुदा, जनता का सेवक बन, गरीबी का निशां धो दे।
न तू नजदीक बहिश्त के हो, न दोजख की ही दूरी कर।
न बन जालिम कभी भी तू, न बन खिदमत का ठेकेदार।
न डिक्टेटर का आदी हो, न भूली सी जम्हूरी कर।

देश भक्ति का वृत जिसने लिया है उसे सभी कुछ देश के लिए त्यागना होगा यह तैयारी जिसने करली है वही सच्चा देश भक्त बन सकता है। इस भावना को वर्माजी ने ऊपर लिखे गीत में व्यक्त किया है। उन्होने सब कुछ देश के लिए त्याग कर देश के लिए जीने और मरने का वृत लेने के लिए भारतीयजनो का आह्वान किया है।

मेवाड़ हमारा

है इसके हम, यह हमें प्राण से प्यारा।
हम है मेवाड़ी, मेवाड हमारा।
इसके कारण बन बन फिरे राते काटी।
थे चढ़े अश्व पर नही उतारी काठी।
विश्राम न था सेकी भालो पर बाटी।
दे रही अभी तक साक्षी हल्दी घाटी।
सब कुछ खोया पर साहस कभी न हारा।
हम है मेवाड़ी, यह मेवाड़ हमारा।
जिसके पीछे लाखों का खून बहा है।
जिसकी रक्षा हित सदियो कष्ट सहा है।
बनकर दरिद्र उन धनिकों से धानी थी।
हो गए रंक सम्राटों से ठानी थी।
बस टिका हमी पर था शासन सारा।
हम है मेवाड़ी, यह मेवाड़ हमारा।

मच रही लूट कोई करता नही रखवाली ।
ऐरों गैरो ने किया खजाना खाली ।
बंगले पर बंगले बढते ही जाते है ।
वे फूस के झौंपड़े उजड़े नजर आते हैं ।
यह जुल्म सितम हम कब तक करे गवारा ।
हम है मेवाडी, यह मेवाड हमारा ।
हम बोले कुछ क्यों जबां बन्द की जाती ।
मिलजुल रोने पर कड़ी सजा दी जाती ।
मशीनगनों से गया उड़ाया हमको
बासों से घर घर जा पिटवाया हमको ।
बह रही आज तक अविरल आंसू धारा ।
हम हैं मेवाड़ी, यह मेवाड़ हमारा ।

जीवन के अन्तिम वर्षों मे वर्माजी के मन मे कांग्रेस तथा देश की स्थिति से अत्यन्त क्षोभ और पीडा उत्पन्न हो गई थी वह उनके गीतो मे फूट पडी । नीचे उनकी उस आन्तरिक पीड़ा की अभिव्यक्ति एक मेवाड़ी भाषा के गीत मे प्रतिध्वनित हुई है ।

मांदड़ली खागई रे

म्हारी जनसत्ता ने मुंश्यां री मांदड़ली खा गई रे ।
इन पचराज ने रिश्वत री चांदड़ली खा गई रे ।
कागज दाबे क्लर्क लोग ये हुक्म हजूरां भूले ।
आम सुखाया जावे चौड़े–बूल मजां सूं फूले ।
इन पोतडिया नेता रो या खांदड़लो खा गई रे । म्हारी....
उद्योगां में काचो माल न मिले चिमनियां ठंडी ।
भीतर नाज भरयो कोठा में बाहर मडी सूनी ।
इण चोर बाजारी धींगां री धांधड़ली खा गई रे । म्हारी....
तीन योजना पूरी हो गई कोई कसर न राखी ।
शुद्ध गाय काय का दूध मायने आकर पड़ गई माखी ।
इण सूझती रा आटा ने आंदड़ली खा गई रे । म्हारी....
कांग्रेस का अनुशासन मे चुप रहणो है म्हाने ।
गलत्यां पर गलत्यां देखां तो रोवां छाने छाने ।

इण वर्मा ने एम. पी. पद की वांदड़ली खा गई रे। म्हारी ..
गाँधी री पीढी जीवे पण घानी घानी जोवे
आपस में घुस फुस वांता में टसक टसक कर रोवे।
इण सती सासरी हिम्मत ने कादरली खा गई रे।
म्हारी जनसत्ता ने मुश्याँ री मादड़ली खा गई रे।

अर्थ

मांदड़ली—शिथिलता, रिश्वत रीं चांदड़ली—रिश्वत का द्रव्य, हजूरां—मन्त्रिगण तथा उच्च अधिकारी, पोतडिया—अवसरवादी, खादड़ली—सिफारिश, वांदड़ली—गुलामी, छाने—छिपकर।

ऊपर लिखे वर्माजी के गीत मे उनके अन्तर की पीडा मानो मुखरित हो उठी हो। उन्होने शासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार पर जहां कठोर प्रहार किया है वहा अपने को भी नही छोड़ा। "कांग्रेस मे रहने के कारण हमको चुप रहना पड़ता है छिप छिप कर हम रोते हैं वर्मा को एम पी पद के बन्धन ने शक्तिहीन बना दिया है" आज कितने राजनीतिक कर्मी है जो स्वय अपनी इतनी निष्ठुरता के साथ आलोचना कर सकते है।

वर्माजी दूर दृष्टा थे। वे देख रहे थे कि देश की स्थिति भयकर होती जा रही है। शोषित और पीड़ितो की सहन शक्ति सीमा पार कर गई है। देश हिंसक क्रांति के कगार पर खड़ा है। उन्होने अपने नीचे लिखे गीत मे देश को चेतावनी दी है और हिंसक क्राति की ओर सकेत स्पष्ट शब्दो में किया है।

चेतावनी

कुछ दे दो कुछ खालो।
ऐ नई जवानी वालो ? ऐ हिन्द के नौनिहालो।
रोता है उसे सम्हालो, कुछ दे दो कुछ तुम खा लो।
कांग्रेसी सत्ता जायेगी, पार्टी स्वतन्त्र नही आयेगी।
जनसघ कही छिप जायेगी, नक्सलवाड़ी छा जायेगी।
गुरवत को जल्द मिटालो, कुछ दे दो कुछ तुम खालो।
नौ मजिल महल गिरेंगे, सोने के चोर घिरेंगे।
ये तोदे मारी जाये, लाशों को कुत्त खाये।
आई है कल्या मत टालो, कुछ दे दो कुछ तुम खालो।
भूखा है चमन का माली तेरी ऊब रही है थाली।
फिर चढ़ा रहा है प्याली, ऊपर से देता गाली

अब फौरन घर पर चलो, कुछ दे दो कुछ तुम खालो।
इक रोज बगावत होगी, लागों पर दावत होगी।
कब्रो पर इबादत होगी, दोज़ख में शहादत होगी।
संभलो ऐ माला मालो—कुछ दे दो कुछ तुम खालो।

वर्माजी ग्रामीणो मे उन्ही की भाषा मे देशभक्ति की भावना तथा समाज सुधार के विचारो का प्रचार करते थे। वे अपने गीतो मे उनके दोषो और प्रचलित कुरीतियो पर कडा प्रहार करते थे। नीचे लिखे गीत मे उन्होने ग्रामवासियो के दोषों का कैसा नग्न चित्रण किया है देखिए।

आवाहन

खोटो काम कभी मत करजे रे,
लाजे थारो देश सारो भारत लाजे रे।
कपड़ो धान अमल का टोटा तीदू वाला पान
छाने छाने चोरी चोरी पूगे पाकिस्तान।
देश ने धोखा को काम न करजे रे।
लाजे थारो देश सारो भारत लाजे रे।
डोकरारे मरे बारा दिन में मती गालजो खाड
बेटा की बू चो री पाप सू हो जावेगी रांड।
पाप सू थोड़ा तो थू डरजे रे।
लाजे थारो देश सारो भारत लाजे रे
क्वारी कन्या, विधवा बेटी को पैसो मत लीज्यो
खून्या पटक कर जीव निकलसी अहडो या धन की ज्यो
गंडक की मौत कभी मत मरजे रे।
लाजे थारो देश सारो भारत लाजे रे।
'माणक' की ई खरी वात पले वांध ज्यो भाई
नही मानो तो पानी देवा बचे न मायो जाई
धरम की नाव बैठकर तरजे रे।
लाजे थारो देश सारो भारत लाजे रे।

ऊपर लिखा गीत वर्माजी ने पाकिस्तान की सीमा पर ग्रामवासियों के उद्बोधन के लिए लिखा था। पाकिस्तान से छिपे छिपे व्यापार करने के सम्बन्ध मे उन्हे उलहना दिया गया है।

मैं रो नहीं सकता

यह रोना चाहता है दिल मगर मै रो नही सकता।
मै अपने खेत मे अपनी मरजी मुताविक वो नही सकता।
वजाहिर मै वना मालिक वना हूं शान से खालक।
वना चुप चाप ना वालिग, मै वालिग हो नही सकता।
मैं गम मे दिल चलाता हूँ, हमेशा हल चलाता हूं
पसीने तक गलाता हूं उसे मै धो नही सकता
वगीचा खूं से सीचा था, दिल ने इक नकशा खीचा था
गुलों को तोड़ कर अपनी मैं माला पो नही सकता
मिटा ईसाइयत मेरी वनाना चाहता शैताँ
मेरी इस जिन्दगी मे मैं कभी भी खो नही सकता।

गाना (होली राग)

शहीदां की जय बोलो

सुखाड़िया जी आगे हालो
शहीदो की जय वोलो
मिनिस्टर सव आगे होलो ? शहीदां की जय वोलो
आजादी का जग मे पेल जगाई जोत
विण खेत मे छांड़ दो पाणी वाली थोद
खजाना को तालो खोलो ? शहीदा की जय वोलो
खोद कुआ पाताल का इजन दो लगवाय
सूखी जमी बचे नही पाणी पाणी नजर आय
धरा पर अमृत धोलो शहीदां की जय बोलो
विजली के वल धंधा चाले पीवे खेतड़ा पाणी
आजादी का शूर सिपाही बोलो जय चय वाणी।
नूर कुछ गावा मे भी दो, शहीदां की जय वोलो
बड़ा बड़ा कालेजां, शहरी करे नही श्रमदान
खावे खल नागढ भैस्यां ज्यों जूर चरायो धान

बोल जो गाधो जी को लो शहीदां की जय बोलो
आज बाला और आंतरी मेलो ऊपर माल
भागीरथ वण गंगा दे दो करदो आज निहाल
हेम पर मोतीडा बो दो । शहीदा की जय बोलो

इस गीत मे वर्माजी ने सत्ताधारियो को गावों की दशा सुधारने के लिए आह्वान किया है। साथ ही मन्त्रिमण्डल को यह भी उलाहना दिया है कि बडे बडे शहरों मे कॉलेज, अस्पताल सभी अन्य सुविधाए सरकार दे रही है। शहरी लोग उसके लिए तनिक भी श्रम या त्याग नही करते। वे इसी प्रकार है जैसी कि बाझ भैंस चारा दाना खाती रहती है और दूध कभी नही देती। गीत मे इस बात का भी सकेत है कि यह जो सत्ता आई है वह शहीदो के बलिदान का फल है।

लाणोता सत्याग्रह

महारावल जैसलमेर के चाचा श्री जो कि काग्रेस दल मे थे और विधान सभा के सदस्य भी थे जब अपनी भूमि पर किसानों को बेदखल करने लगे तो सत्ता चुप रही, किसान वर्माजी के पास आए। वर्मा के मन को गहरा आघात लगा उनका शौर्य जागृत हो उठा। उन्होने किसानो से सत्याग्रह करने के लिए कहा। वर्माजी की सघर्ष की पद्धति यह थी कि वे सघर्ष के सम्बन्ध मे किसानो की ही भाषा में गीत बनाते और उनको स्वय गाकर तथा स्त्रियो और पुरुषो से गवाकर उस विचार का प्रचार करते तथा सघर्ष की भूमिका तैयार करते। लाणोला सत्याग्रह के अवसर पर भी उन्होने एक गीत पत्नी और पति के सवाद के रूप मे बनाया था जिसमे पत्नी अपने पति को सत्याग्रह के लिए उत्साहित करती है।

पत्नी थूं चाल ढ़ोला चाल लाणोला रा झगड़ा में
पति मू नही चाऊं म्हारी नारी लाणोला रा झगड़ा में
थूं चाल ढोला चाल ...
पत्नि डरपे कदी न मारू जी देश भलाई सारू,
ले सत्याग्रह की ढाल लाणोला रां झगड़ा मे।
थूं चाल ढ़ोला चाल लाणोला रा झगड़ा मे।
पति नही राज री धाक अठे, नही न्याय री साख जठे
है फैल्लो भ्रष्टाचार लाणोला मे थू चाल ढ़ोला चाल....
पत्नि आंख्या सारो काजलियो गला मे पैरा मांदलियो
थूं खाग्यो रे घर को माल, लाणोला रा झगड़ा में।
थूं चाल ढोला चाल लाणोला रा झगड़ा में।

पति महाराज कुटवा वेला, माल मतो लुटवा वेला
पड़सी मेरे पर मार लाणोला रा झगड़ा मे ।
थूं चाल ढ़ोला चाल....

पत्नी डरपे तो घाघरियो पेर, साड़ी री लहरावे लेर
तू चाल जनानी चाल लाणोला रा झगड़ा में
थू चाल ढोला चाल लाणोला....

पति जनता सब थर थर कापे, अफसर भी है है हापे
नेता ने चढयो बुखार लाणोला रा झगड़ा मे ।

पत्नी थारो फेटो म्हाने दो, म्हारी कांचली थे पेरो
थने दूं ओरा मे घाल, लाणोला रा झगड़ा में ।
थूं चाल ढोलां चाल लाणोला रा झगड़ा मे ।

अर्थ

पत्नी प्रिय तुम लाणोला के सत्याग्रह मे चलो
पति प्रिय मैं लाणोता सत्याग्रह मे नही जाऊगा
पत्नी हे प्रिय तुम भयभीत न हो देश की भलाई का कार्य करो और सत्याग्रह करो ।
पति हे प्रिय यहा राज्य सरकार का कोई प्रभाव नही है कोई न्याय नही करता समस्त लाणोला मे भ्रष्टाचार फैला हुआ है । राज्य अशक्त है ।
पत्नी हे प्रिय तुम अपनी आँखो मे काजल लगालो, गले मे जेवर पहिन लो तुम व्यर्थ मे घर के धन को खाकर नष्ट कर रहे हो ।
पति महाराज मुझे बुरी तरह पिटवायेगे जो कुछ घर मे लोटा थाली है वह भी लुटवा लेगे मुझ पर बुरी तरह मार पडेगी ।
पत्नी हे प्रिय, यदि तुम डरते हो तो घाघरा (लहगा) पहिन लो चूनरी साडी ओढ लो जो लहरावेगी और औरतो की चाल चलने लगो ।
पति हे प्रिय महाराज के भय के कारण समस्त जनता थर थर कापती है । अफसर भी उनसे भयभीत हो हापते है और यह राजनीतिक नेता जो वढ बढकर बाते करते है महाराज से इतने भयभीत है कि बुखार चढ गया है वे बोलने का साहस ही नही करते ।
पत्नी हे प्रिय तो फिर अपना फेटा साफा (मुडासा) मुझे दे दो, मेरी काचली तुम पहन लो तुम्हे मैं कोठरी मे बन्द कर सत्याग्रह मे जाऊगी ।

जब इस गाने को स्वय गाकर और स्त्री पुरुषो से गवाकर वर्माजी ने लाणोता मे प्रचार किया तो समस्त ग्रामीण क्षेत्र मे उत्साह की लहर फैल गई और किसान धड़ाधड़

सत्याग्रह करने के लिए आने लगे। वर्माजी ने महाराज को तथा राजस्थान सरकार को चेतावनी दे दी कि भूमि पर किसान अमुक दिन हल चलावेंगे। महाराज झुक गए, वर्माजी के नेतृत्व मे किसानो की विजय हुई।

भूस्वामियों से

धरती पर जिसका गिरे पसीना उसके रुकने पायेगी।
मेहनतकश के नए लुटेरो जमीन तुमसे जायेगी।
जोते जिसकी धरती है यह अब तक खालीना था।
व उसूल इन हुक्कामो का मिलता रहा सहारा था।
नकसलवाड़ी डाकिन तुमको पकड़ पकड़ कर खायेगी।
मेहनतकश के नए लुटेरो जमीन तुम से जायेगी।
खाद बीज अपना तुम दे दो आधा हिस्सा दे दो तुम।
मै मालिक हूँ तुम गुलाम हो, दुनियां भर मे कहदो तुम।
पकड़ पकड़ कर गरदन यह धरती जुतवाई जायेगी।
मेहनत कश के नए लुटेरो जमीन तुम से जायेगी।
वासी रोटी फटा पुराना कपड़ा जूता देते थे।
बुला बुला कर बहन बेटियो की इज्जत तुम लेते थे।
वक्त आ गया बदले का चमड़ी खिचवाई जायेगी।
मेहनतकश के नए लुटेरो जमीन तुम से जायेगी।
माफी मागो उन गुनाह की अभी बचाए जाओगे।
गाधी के दीपक से पापी वर्मा तुम बच पाओगे।
नही सम्हालोगे तो किसान ये लाल दिया लायेगी
मेहनतकश के नए लुटेरो जमीन तुम से जायेगी।

मेरी कामना

ऐ भारत थारी इज्जत पर तन मन धन सब अर्पण कर दूं।
थारी रक्षा, थारी सेवा पर खपजा वारी प्रण कर दूं।
मोटा, छोटा भूखा, धाप्या, नागा धनरा तागड धिन्ना।
इण भेदभाव का परवत पर घण पटक पटक कण कण करदू।

अफसर नौकर, मालिक मजूर को नाम मिटा दूं धरती पर।
जहरीला फंफाड़े थेथा सापारो फटो पण भर दूं।
थोरी वेटियां थारां घर मे, फाटे घाघरिये सिया मरे।
धरती गाड़यो सोनो लेकर इन छोरिया ने वण ठन करदू।
थारी धरतो उगले हीरा, थारा टाबर पीवे नीरा।
थारी गायों रो दूध टेम दोया रो पूरो मण कर दूं
ये जात पात मचहव वाला हड़क्या मडक रे खत्म करू।
वाल वूढ़ा रे होठ जीभ पर हिन्द सुमरण कर दूं।

जिस देश में चोर लुटेरे हो, उस देश की कहानी क्या होगी

जिस देश मे चोर लुटेरे हो, उस देश की कहानी क्या होगी,
जिस देश मे रिश्वतखोरे हो, उनसे कुर्बानी क्या होगी।

हर चीज मिलावट वाली हो, जिसमे जहरीली थाली हो,
जिसकी जवान पर गाली हो, सौगन्ध से जवानी क्या होगी।

पानी के झरने सूखे हो, जहा राहत के रस्ते रुखे हो,
जिस देश के वच्चे भूखे हो, उसकी यह जवानी क्या होगी।

जहा मतलव मेल परस्ती हो, डाकू चोरो की वस्ती हो,
जहां बदचलनी सस्ती हो, वहां दिलजोनी भी क्या होगी।

जहां खूब लुटेरे रहते हो, गन्दे नाले भी वहते हो,
जहां हांजी हांजी कहते हो, वहां आनाकानी क्या होगी।

झूठे आश्वासन मिलते हो, सन्तो के आसन हिलते हों,
जहा फूल वनावटी खिलते हो, सच्ची कहानी क्या होगी।

श्री वर्माजी बहुत स्पष्ट वक्ता थे। जीवन के अन्तिम दिनो मे राजनीतिक कार्यकर्ताओ तथा शासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार से वहुत खिन्न थे वे वहुधा अपने रोष को कार्यकर्त्ताओ के मध्य प्रकट भी करते थे। इस कविता मे उन्होने अपने हृदयगत भावो को बड़ी स्पष्ट भाषा मे व्यक्त किया है।

वर्माजी की प्रिय शेरे

लेखक ने वर्माजी की गत पच्चीस वर्षों की दैनन्दिनियो (डायरियो) को पढा तो उसे यह देखकर थोडा आश्चर्य हुआ कि उन्हे शेरो के प्रति बहुत रुचि थी। प्रत्येक वर्ष की दैनन्दिनी मे आरभ में वे अपनी कुछ प्रिय शेरें लिखते थे। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ शेरें उन्हे बहुत प्रिय थी क्योकि उनमे से कुछ शेरे ऐसी थी कि प्रत्येक वर्ष की डायरी के आरभ मे वे उनको दोहराते थे। हम यहाँ उनकी केवल वे ही चुनी हुई थोडी सी शेरे देते है जिनसे उनकी मनोभावना पर प्रकाश पड़ता है।

शेरें

(१) चमन को इसीलिए माली ने खूं से सीचा था,
कि उसकी अपनी निगाहें बहार को तरसे।

(२) सांस के पदो मे बजता ही रहा साजे हयात,
मौत के कदमो की आहट तेजतर होती गई।

(३) कलियां रोती है कि भवरों ने उन्हे क्यो ताका,
भंवरे हैरान है कि कलियो को निखारा किसने।

(४) ये चमन यो ही रहेगे और हजारो बुलबुले,
अपनी अपनी बोलियां सब बोल कर उड़ जायगी।

(५) उफ न की मैने जरा और जान दे दी इसलिए,
आज मकतल में मेरे कातिल की बदनामी न हो।

(६) नशा पिलाके गिराना तो सबको आता है,
मजा तो जब है कि गिरतों की थाम ले साकी।

(७) मैं इन खडकती हुई खुश्क पत्तियो के बीच,
गरजता गूंजता अब्रे बहार देखता हूं।

(८) यह जिन्दगी तो बसहर, शमए-महफिले गम है,
उधर जलाई गई, इधर बुझाई गई।

(९) जाहिद शराब पीने दो मस्जिद मे बैठकर,
या वह जगह बता जहा खुदा न हो।

(१०) वक्ते पीरी दोस्तो की बेरुखी का क्या गिला,
बच के चलता है, हर एक गिरती हुई दीवार से।

(११) उन्ही के मतलब को कह रहा हूं जबान मेरी है बात उनकी है
उन्ही की महफिल संवारता हूँ, चिराग मेरा है रात उनकी है।

(१२) अगर किश्ती हो तूफा मे, तो काम आती है तदबीरें,
मगर किश्ती मे तूफां हो तो मिट जाती है तकदीरे।

(१३) नीचे लिखी शेर मे राजनीतिज्ञो पर कैसी करारी चोट की गई है।
व जाहिर उजेले, बबातन अधेरे,
लिबासे रफीके सफर म लुटेरे
खुदा के लिए इनसे बच कर निकलना,
यह अहले सियासत न तेरे न मेरे।

(१४) इनकलाबे जिन्दगी दौरां तो देखिए,
मंजिल उन्हे मिली जो शरीके सफर न थे।

(१५) रिन्द बख्शे गए कयामत मे,
शेख कहता रहा हिसाब हिसाब

(१६) उन्ही की आंख बचाकर निकल गई बहार,
जिनके खून से फूलों मे रंग आया है।

(१७) सब बांध चुके कब के, सर साखे नशेमन,
इक हम है कि गुलशन की हवा देख रहे हैं।

(१८) एक नुकते ने हमे महरब से मुजरिम कर दिया,
हम दुआ लिखते रहे, वे दगा पढते रहे।

(१९) साकी की इनायत उन पर है, पीने का सलीका जिनको नहीं,
दस्तूर कायम ये अगर रहा आबाद न होगा मयखाना।

(२०) मरे थे जिनके लिए वो रहे वजू करते,
मेरी नमाजे जनाजा पढ़ी तो गैरों ने।

(२१) तुम्हे गैरो से कब फुरसत, हम अपने गम से कब खाली,
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली।

(२२) बशर राजए दिल्ली कहकर–जलीनो ख्वार होता है,
निकल जाती है जब खुशबू तो गुल बेकार होता है।

(२३) आने के वक्त तुम तो कही के कही रहे,
अब आए तुम तो फायदा ? हम ही नही रहे।

अध्याय सत्रहवां

व्यक्तित्व : वर्माजी ने बिजोल्या जैसी पिछड़ी जागीर मे जन्म लिया। उस कस्बे मे जन्म लिया जो यातायात के साधनो से सर्वथा वचित था और एक ऐसे परिवार मे जन्म लिया कि जो परंपरागत रूप से ठिकाने की नौकरी कर अपनी आजीविका उपार्जन करता था जो जागीदार को अपना आश्रयदाता और अन्न दाता के रूप मे स्वीकार करता था। जबकि वे सवा साल के अबोध शिशु थे तभी पिता श्री का वरदहस्त उनके सर पर से उठ गया वे स्वर्गवासी हो गए। पित्रहीन और साधनहीन परिवार मे माता की देखरेख मे उनका लालन पालन हुआ और परिवार की आर्थिक विपन्नता और बिजोल्यां मे शिक्षा की सुविधाओ के अभाव मे जो थोडी शिक्षा प्राप्त कर सकना सम्भव था वह प्राप्त करके बहुत छोटी उम्र मे ही ठिकाने में नौकरी करने लगे।। इस पृष्ठभूमि को देखते कोई भी यह कल्पना नही कर सकता था कि ऐसी परिस्थितियो मे पला बालक एक दिन केवल बिजोल्यां राव को ही नही मेवाड़ के महाराणा तथा दुर्वमनीय प्रबल ब्रिटिश सरकार को चुनौती देगा और मेवाड़ तथा राजस्थान के महान नेता के रूप मे देशभर मे आदरित होगा। तो यह चमत्कार कैसे हुआ? परम पिता परमेश्वर प्रत्येक बालक को कुछ छिपी प्रतिभा और गुण प्रदान करता है किन्तु वह ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा और गुण उसी प्रकार बालक के अन्तर में अविकसित दशा मे छिपे पडे रहते है कि जिस प्रकार जलती हुई लकड़ी के कोयलो पर राख की परते जम जाती है और जब तक कि कोई फूंक कर अथवा पखे से हवा करके उन कोयलो को पुन: जागृति प्रज्ज्वलित नही कर देता तब तक उन कोयलो मे लपट नही निकलती वे शनै: शनै बुझते जाते है, और अन्त में राख का ढेर बन जाते है। तो वर्माजी के अन्तर मे जो ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा और गुण थे उनको जागृति और प्रज्ज्वलित करने और वर्माजी के जीवन को एक क्रांतिकारी मोड़ देकर तेजवान और शौर्यवान बनाने वाले राजस्थान को जगाने वाले महान क्रान्तिकारी अपने सम्पूर्ण जीवन को देश सेवा मे खपा देनेवाले श्री विजयसिह पथिक थे।

जब श्री साधू सीताराम आदि के आग्रह को स्वीकार कर पथिकजी बिजोल्या आए और उन्होने ठिकाने के अत्याचार और शोषण से किसानो को मुक्त करने के लिए ऊपरमाल (बिजोल्याँ) के किसानो का सगठन करना आरम्भ किया तो पथिक जी की दीर्घ दृष्टि ऐसे स्थानीय युवको को ढूंढ रही थी जो देशसेवा के लिए अपने जीवन को

अर्पित करदे और आजन्म देशसेवा का वृत ले। वर्माजी तत्कालीन ठिकाने के नायब मुंसरिम श्री डूंगरसिंह जी भाटी के सहयोग और प्रोत्साहन से स्थापित विद्या प्रचारणी सभा के अधिवेशनो मे भाग लेते थे। पथिक जी विद्या-प्रचारणी सभा मे ही आकर ठहरे और उसके द्वारा ही उन्होने अपना कार्य आरम्भ किया। उनकी सूक्ष्म दृष्टि ने वर्माजी को परख लिया। वे जान गए कि उनमे जीवट, शौर्य और कुछ करने की आकांक्षा है अस्तु उन्होने वर्माजी को अपने निकट लेकर उनको देश सेवा के लिए प्रशिक्षित करना आरम्भ कर दिया। वर्माजी में जन साधारण को और विशेषकर ग्राम वासियो को संगठित करने, उनका अटूट विश्वास प्राप्त करने, सहयोगियो से काम लेने तथा लोकभाषा मे गीतो के द्वारा प्रचार करने की कला का जो अद्भुत गुण देखने को मिलता था वह उनके पथिक जी के नेतृत्व मे कार्य करने तथा उनके निकट सम्पर्क में आने का परिणाम था। जब पथिकजी ने देखा कि वर्माजी का अन्तर देशसेवा की भावना से अनुप्राणित हो गया है तो बिजोल्या के समीप पार्श्वनाथ के मन्दिर मे उन्होने वर्माजी को आजन्म देशसेवा का वृत लेने की प्रेरणा दी। पथिकजी ने उन्हे आजीवन देशसेवा करने का संकल्प देकर दीक्षित कर दिया। उसी क्षण से जीवन की अन्तिम श्वांस तक वर्माजी ने उस प्रतिज्ञा को निवाहा और देश मे लगे रहे। यद्यपि उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त गम्भीर थी परन्तु उन्होने ठिकाने की नौकरी छोड़ दी और पथिकजी के साथ देशसेवा मे लग गए। जिस प्रकार खान से निकले बहुमूल्य पत्थर मे कोई सौन्दर्य कान्ति तथा प्रकाश नही होता और कारीगर उसको घिस कर उसकी छिलाई कर उसे सुन्दर कान्तिमय और प्रकाश वान हीरे मे परिणित कर देता है। उसी प्रकार पथिकजी के कुशल हाथो में पडकर वर्माजी एक तेजवान हीरे की भांति सार्वजनिक जीवन मे चमकने लगे। वस्तुत वर्माजी राजस्थान को पथिकजी की देन थे।

गौर वर्ण, लंबा कद, उन्नत ललाट, प्रभावशाली मुखाकृत और अंतर के तेज और शौर्य से दीप्त तेजवान आंखे सब मिलाकर वर्माजी का शारीरिक व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक और प्रभावशाली था जो प्रत्येक व्यक्ति को उनकी ओर बरबश आकर्षित करता था। जब वे किसी से बात करते तो जैसे उनके अन्तर के कपाट खुल जाते। उनकी वाणी और आंखो मे उनका अन्तर मानो स्पष्ट रूप से चित्रित हो रहा हो। वे सीधी सादी भाषा में बिना लाग लपेट के अपनी बात कहते थे। सुनने वाला देख सकता था कि उनके अन्तर और वाणी मे कोई भेद नही है। यही कारण था कि उनको सर्व साधारण का सहज विश्वास प्राप्त हो जाता था। वह उन पर भरोसा करने लगता था। जब वे कार्यकर्ताओ, सर्व साधारण नागरिको, तथा अनेक ग्रामीणो के बीच जो कि उनके पास अपनी समस्याओ को लेकर निरन्तर प्रति दिन आते थे बैठ कर बात करते और कोई व्यंग की बात होती तो अपने सर पर हाथ फेरते हुए अट्टहास करते तो प्रत्येक व्यक्ति उनके अन्तर को जैसे झाक कर देख सकता था कि इस व्यक्ति ने अपने अन्तर मे कुछ छिपाकर नही रखा है। लेखक को उनके उस अट्टहास की स्मृति कभी नही भूलती। जब भी उनका ध्यान आता है तो उस अट्टहास की ध्वनि कानो मे गूंजती है और

उनका खिला हुआ आकर्षक चेहरा आंखो के सामने फिर जाता है।

सर पर खद्दर की सफेद गाधी टोपी खद्दर का सफेद कुर्ता और दो लगी मेवाड़ी खद्दर की धोती पैरो मे देशी जूता यह थी उनकी वेशभूषा। जाडो में ऊनी जवाहर बडी पहिनते थे। उनकी चाल मे दृढता और मुख पर स्वाभिमान और दृढ़ प्रतिज्ञा की तेजस्विता अंकित रहती थी। कोई भी उनको देख कर और थोड़े समय उनसे बात कर यह जान जाता था कि इस व्यक्ति मे स्वाभिमान, अदम्य साहस, और दृढता कूट कूट कर भरी है साथ ही उपेक्षित तथा पीडितो के लिए उनके हृदय मे अगाध सहानुभूति और ममता भरी है।

जिन कठिन परिस्थितियो मे से वर्माजी निकले थे उनकी अमिट छाप उनके समस्त जीवन पर उनके स्वभाव मन और विचारो पर पडी थी। जब पथिकजी के नेतृत्व में उन्होने बिजोल्या के किसानो के सगठन का कार्य किया और ठिकाने के विरुद्ध आन्दोलन हुआ तो वर्मा परिवार को जैसा साधनामय जीवन व्यतीत करना पडा उसने उन्हे हद दर्जे का परिश्रमी और कष्ट सहिष्णु बना दिया था। बिजोल्या आन्दोलन के समय कार्यकर्ताओ को रात्रि मे भीलो ऊपरमाल के उबड खाबड और वन आच्छादित प्रदेश मे पैदल चलना पडता था। प्रतिदिन दस बीस मील पैदल चलना उनके लिए साधारण बात थी। आन्दोलन के समय सभाए रात्रि को की जाती थी। कभी सभा एक गांव मे होती तो दूसरे दिन दूसरे गांव मे होती, दिन मे सभा बुलाना सभव नही था। सडको का नितान्त अभाव था,सवारी की कोई सुविधा न थी अतएव एक स्थान से दूसरे स्थान पैदल ही जाना पडता था।

उमाजी के खेड़े मे जब वे विद्यार्थियो को पढाते थे तो उन्होने स्वयं अपने श्रम से श्रीमती नारायणी देवी की सहायता से रहने के लिए एक मकान बनाया था जो आज भी विद्यमान है। किसानो के बालको से वे अनाज लेकर तथा समय मिलने पर खेतो पर मजदूरी कर वे अपना जीवन निर्वाह करते थे। इसी प्रकार जब उन्होने डूंगरपुर मे भीलो मे कार्य किया और खेडलाई मे एक टेकरी पर आश्रम की स्थापना की और आप नेझोपडे बनाए तो जल बहुत दूर से लाना पडता था। वर्माजी तथा नारायणी देवी जल भर कर और सिर पर मटका रख कर जल लाते थे। इसी प्रकार जब वर्माजी ने मेवाड प्रजामडल की स्थापना की तो एकाकी साइकिल पर उन्होने मेवाड के गांवो और कस्बो का भ्रमण किया और मेवाड प्रजामडल का संगठन किया। अपने सार्वजनिक जीवन मे उन्होने जो परिश्रम और कष्ट और सहिष्णुता को स्वीकार किया उसने जीवन पर्यन्त उनका साथ नही छोडा। पूर्व राजस्थान के मुख्य मत्री बन जाने के बाद भी उनका जीवन कठोर और परिश्रमी बना रहा। यही कारण था कि वे भीलों की पालो पर घुमक्कड जातियो के शिविरो में और सीमा प्रदेश मरुभूमि में भटकते फिरे और पीड़ित जातियो की इतनी अधिक सेवा कर सके नहीं तो लेखक ने बहुत से राजनीति कर्मियों को देखा कि वे कालान्तर मे आरामतलब हो गए, और कष्ट और परिश्रम के जीवन के अभ्यस्त नही रहे। इस कारण उनका जन साधारण और विशेषकर

ग्रामीण क्षेत्र से संपर्क टूट गया। वे शहरी राजनीतिज्ञ भर रह गए। उनके पैरो के नीचे से पृथ्वी खिसक गई। वर्माजी उन थोडे से राजनीतिक नेताओ मे से थे जिनके पैर पृथ्वी मे गहरे जमे हुए थे। ग्रामीण जनता उनको अपना आराध्य मानती थी। इसका एक मात्र कारण यह था कि वर्माजी उनके झोपडो में स्वय पहुंचते थे। देश मे इनेगिने ही ऐसे राजनीतिक नेता थे जिनका ग्रामीण, पिछड़ी जनता से इतना घनिष्ठ सम्पर्क हो।

लेखक को वर्माजी के जीवन की कई घटनाए याद हैं जबकि एक रात मे उन्होने तीस और चालीस मील की पैदल यात्रा की थी। शारीरिक श्रम को वे गौरव पूर्ण और आवश्यक मानते थे। यद्यपि सेवा कार्य मे वे वहुत अधिक व्यस्त रहते थे इस कारण वे महीने मे तीन सप्ताह से अधिक उदयपुर के वाहर ही रहते थे परन्तु जव भी वे उदयपुर आते तो देवारी के पास अपने खेत पर जाते और वहां खेत में हल चलाने से लेकर खुदाई इत्यादि कठोर परिश्रम करते। एक वार लेखक उनके खेत पर उनसे मिलने गया तो उनको फावड़ो से सतरे के पेड लगाने के लिए गहरे गड्ढे खोदते पाया। एक घटना मुझे आज तक भी नही भूलती है। जब वर्माजी डूंगरपुर मे खडलाई की भील पाल पर रहते थे और भीलो मे कार्य करते थे उस समय मैं अपने परिवार सहित उनसे मिलने गया था। मेरी माता भूरी शहरी महिला थी वे खुले जंगल मे शौच जाने की कल्पना भी नही कर सकती थी। हम लोग वहा रात्रि को पहुंचे थे। मेरे सामने वडी कठिनाई उपस्थित होगई। मैंने अत्यन्त सकोच के साथ वर्माजी से अपनी माता की कठिनाई का उल्लेख किया। क्या देखता हूँ कि वर्माजी ने एक अन्य व्यक्ति को साथ ले फावडा और गेती सम्हाली कुछ दूर नीचे जा एक अस्थायी शौचालय का निर्माण कर दिया।

यद्यपि वर्माजी का एक वडा परिवार था परन्तु सेवा कार्य को वे परिवार के ऊपर मानते थे। उनके जीवन में कई वार ऐसे अवसर आए जव साधारण व्यक्ति विचलित हो जाता परन्तु गहरा से गहरा आघात भी उनको अपने सेवा कार्य से विरक्त नही कर सका। लेखक को उनके जीवन की दो घटनाए कभी नही भूलती। जव भी वर्माजी के वारे में सोचता हूँ तो वे दो घटनाए मेरी आखो के सामने विजली की कौंध के समान घूम जाती हैं। जब डूगरपुर में भील सेवा कार्य मोडकर महारावल के दवाव के कारण वर्माजी सपरिवार अजमेर आगए थे तो उन्होने मेवाड़ प्रजामडल को जन्म देकर सीधा राजनीति कार्य करने का सकल्प कर लिया था। उसी समय उनके युवा पुत्र की मृत्यु हो गई। वह अत्यन्त कठोर आघात था परन्तु अपने सकल्प मे अडिग वर्माजी को मेवाड़ प्रजामडल का संगठन करने के लिए एकाकी साइकिल पर मेवाड़ भ्रमण से वह नही रोक सका। दूसरी घटना उस समय की है कि जव कि वे सीमावर्ती प्रदेश मे भटक रहे थे और उनकी पुत्री सुश्री सुमित्रा पडित के पति का जयपुर मे अकस्मात हृदगयति के वन्द हो जाने से स्वर्गवास हो गया। लेखक शोक मे सम्मिलित होने के लिए सुमित्रा के यहा जव गया तो उसको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि फोन द्वारा सूचना मिलने पर रात्रि भर जीप से लवी यात्रा कर वर्माजी पहुंच चुके थे और यद्यपि अपनी प्रिय पुत्री के युवा

अवस्था मे ही विधवा हो जाने का उनके मन पर गहरा आघात था परन्तु वे अत्यन्त शान्त और गम्भीर थे तथा बाडमेर मे जल कष्ट मिटाने के लिए नलकूपो के निर्माण के लिए केन्द्रीय मत्री को एक कार्यकर्त्ता को पत्र लिखवा रहे थे। लेखक ने सोचा अद्भुत है यह व्यक्ति जो जीवन के प्रत्येक क्षण को देशवासियो की सेवा के लिए अर्पित करता है अपने प्रियजनो की मृत्यु के आघात को सहकर भी अपने सेवावृत्त को निभा रहा है। वर्माजी सही अर्थों मे केवल अपने परिवार अथवा प्रियजनो के लिए ही नही वरन देश और समाज के विशेषकर उस वर्ग के लिए जीवित रहते थे कि जो उपस्थित था। वे अपने परिवार की सीमित परिधि मे बधे न रहकर जन जन के प्रिय और आदर तथा श्रद्धा के केन्द्र बन गए थे।

भोग विलास तथा भौतिक ऐश्वर्य ने वर्माजी को कभी भी आकर्षित नही किया। जब उनका जन्म हुआ पिता श्री की शीघ्र मृत्यु हो जाने के कारण परिवार घोर आर्थिक अभावो और सकट मे फस गया। आर्थिक अभावो मे ही उनका लालन पालन हुआ और ठिकाने की नौकरी छोड देने के उपरान्त तो जैसे वे फोकमस्त ही बन गए थे। बिजोल्या आदोलन के दूसरे चरण मे जब उनका श्री जमुनालाल बजाज से परिचय हुआ तो श्री बजाज ने उनके परिवारके लिए तीस रुपये मासिक की व्यवस्था की थी। तीस रुपये मे वर्माजी और उनकी पत्नी श्रीमती नारायणी देवी उस बड़े परिवार का व्यय चलाते थे। अवश्य ही उस बड़े परिवार को तीस रुपए मासिक मे अभाव का जीवन ही व्यतीत करना पडा। वर्माजी के सामनेकई बार मेवाड़ राज्य की ओर से प्रलोभन दिए गए, उन्हे हाकिम बनाने का प्रस्ताव हुआ। जब सर टी विजयराघवाचार्य मेवाड राज्य के दीवान थे तो उन्हे निदेशक का पद और विकास कार्यो के लिए लाखो रुपये के बजट का प्रलोभन दिया गया परन्तु वर्माजी ने अभावग्रस्त जीवन को ही पसद किया। विधान निर्मात्री सभा के सदस्य निर्वाचित होने और पूर्व राजस्थान के मुख्य मन्त्री बनने के पश्चात तथा पन्द्रह वर्षो तक लोक सभा के सदस्य रहने के उपरात भी आर्थिक दृष्टि से वे अभावग्रस्त ही रहे। उनके पास उदयपुर मे एक साधारण मकान और श्री कमल नयन बजाज से पाच हजार रुपए ऋणस्वरूप लेकर देवारी के समीप खेत की पन्द्रह बीघा जमीन के अतिरिक्त कोई स्थावर सम्पत्ति नही थी। उनके पास कोई बैंक बैलेस नही था उनकी पत्नी के पास कोई आभूषण नही थे। उनके पास कोई सवारी तथा अन्य कीमती वस्तुएं नही थी, हा कर्जा उन परअ वश्य था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरात देश मे कौन है जो कि विधान निर्मात्री सभा का सदस्य रहा हो, एक राज्य का मुख्य मन्त्री रहा हो और पन्द्रह वर्षो तक लोक सभा का सदस्य तथा राजस्थान प्रादेशिक काग्रेस का अध्यक्ष रहा हो फिर भी उसकी आर्थिक स्थिति ऐसी दयनीय हो। आज तो सरपच जिला प्रमुख विधान सभा के सदस्यो तक की आर्थिक स्थिति अधिकाश मे अच्छी होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्थिक दृष्टि से वर्माजी कभी सम्पन्न नही रहे परन्तु उन्होने उसकी कभी भी चिन्ता नही की। अभावग्रस्त रहकर भी उन्होने कभी अपने सिद्धातो के विरुद्ध समझौता नही किया और न अपने

राजनीतिक प्रभाव का ही कभी उपयोग किया। इस सम्बन्ध मे उन्होंने अपनी डायरी में एक घटना का उल्लेख किया है जो कि उनकी इस सम्बन्ध मे मनोभावना पर अच्छा प्रकाश डालती है। मै यहां उनकी डायरी मे लिखे उनके शब्दो को उद्धृत करना आवश्यक समझता हूँ।

"शनिवार १८ अप्रेल १९५१ गणपतलालजी को कहा कि आप अपनी खान मे मुझे चार आना हिस्सा देना चाहते थे और आपने यह प्रस्ताव श्रीमती नारायणी देवी के सामने रखा था। उसके माने यह है कि प्रत्यक्ष मे मैं यह कहता हूँ कि मै केवल खेती करता हूं अन्य कोई आय नही है और गुप्त रूप से आपकी वसो में और खानो मे हिस्सा रखूं। जीवन मे कभी पाखण्ड नही किया अब इस कुमार्ग को पकडूं। इससे तो मरना पसद करूंगा मैंने खेती इसलिए अपनाई है कि स्वय परिश्रम करू और स्वावलम्बी बनूं।"

ध्यान में रखने की वात है कि श्री गणपतलाल श्रीमती नारायणी देवी के भाई और वर्माजी के साले थे। अपने वहिन के परिवार की आर्थिक स्थिति को देखकर सम्भवत: उन्होने यह प्रस्ताव अपनी बहन के समक्ष रखा होगा। जीवन के अन्तिम समय जब वे राजस्थान खादी वोर्ड के अध्यक्ष नियुक्त हुए तो उन्हे एक हजार दो सौ मासिक वेतन, बंगला, मोटर तथा एक कैबिनेट स्तर के मन्त्री की समस्त सुविधाएं प्रदान की गई परन्तु वर्माजी ने केवल पाच सौ रुपए मासिक वेतन ही स्वीकार किया, मन्त्री स्तर की सुविधाओ को अस्वीकार कर दिया वे खादी बोर्ड के कार्यालय के एक कमरे मे रहते, सरकारी बंगले, मोटर, नौकर आदि को उन्होने स्वीकार नही किया। धन का उन्हे कभी मोह नही रहा वे एक निर्लोभी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के रूप मे ही सादा जीवन व्यतीत करते रहे। आज तो प्रभावशाली राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ और मन्त्रियो के बच्चो के विवाहों पर धन वैभव तथा विलास का तथा ठाठ बाट का ऐसा प्रदर्शन होता है कि भूतपूर्व राजे और महाराजो की शान शौकत की याद अनायास आ जाती है परन्तु वर्माजी की पुत्रियो और एकमात्र पुत्र के विवाह को जिन लोगो ने देखा है वे जानते है कि उनके विवाह ठीक उसी प्रकार हुए जैसे कि साधारण गृहस्थ के जिसके पास धन नही होता होते हैं।

वे सदैव इस वात पर वल देते थे कि प्रत्येक कांग्रेसकर्मी को अपनी समस्त निजी सम्पत्ति का ब्यौरा काग्रेस को देना चाहिए और जब भी उसके पास सम्पत्ति मे वृद्धि हो तो उसकी सूचना तथा वह किस प्रकार प्राप्त हुई यह वतलाना चाहिए। उनका मानना था कि कांग्रेस संगठन तभी तक देश को आगे ले जाने वाला सिद्ध होगा जब तक कांग्रेस के कार्यकर्त्ता शुद्ध आचरण और निष्ठावान रहेगे। उन्होने कई बार काग्रेस सगठन मे इस नियम को वनवाने का प्रयत्न किया परन्तु बहुमत ने उसको स्वीकार नही किया।

जहां तक उनका व्यक्तिगत प्रश्न था उन्होने पडित जवाहरलाल को इस सवध मे जो पत्र लिखा था वह उनकी मनोभावना तथा मान्यता का सही चित्रण करता है। वह पत्र इस प्रकार है.—

१५६, नोर्थ एवेन्यू
नई दिल्ली
ता० ६ अप्रेल १९५६

आदरणीय पडितजी,

भारत को समाजवादी ढांचे पर ढालने का जो प्रयास आप कर रहे हैं ऐसी भावना को लेकर मै यह सोचता हूँ कि मै अपने परिवार के खाने, वस्तु, मकान, शिक्षा औपधि की क्यो चिन्ता करू और यह सब आप पर छोडू । आप राष्ट्र के प्राण है और विश्व के पथ रचयिता है इसलिए मेरे भी प्यारे नेता है, और नेता के निश्चित मार्ग पर चलू तथा अपने व्यक्तित्व को समाप्त करू ।

मेरे पास खेती के लिए आठ एकड़ जमीन है जिस पर आठ हजार रुपया और रहने के मकान पर चौबीस हजार रुपये खर्च हुए है । करीब आठ साल की भारतीय ससद की सदस्यता से मैने अपने परिवार का खर्च चलाने के बाद बीस हजार रुपयो की बचत से और बारह हजार कर्जा कर उपरोक्त सम्पत्ति बनाई है । यह सम्पत्ति आपके चरणो मे अर्पित करता हूँ ।

मेरे परिवार मे पाच कन्याए और एक लडका तथा धर्म पत्नी है । तीन कन्याओ का विवाह हो चुका है । एक कन्या की उम्र २३ साल, एम. ए. हे, भील कन्या छात्रालय मे अवैतनिक सेवा करती है । मेरी धर्मपत्नी इस कन्या छात्रालय तथा भीलवाडा मे चलने वाले महिला आश्रम की अवैतनिक सचालिका है ।

सम्पत्ति तथा परिवारिक रिपोर्ट सक्षेप मे जानने के बाद मुझे तन मन धन सहित आप अपने अर्पित समझेगे और इस भक्त के सर पर अपने प्रेम का हाथ बनाए रखेगे ।

आपका
माणिक्यलाल वर्मा

आदरणीय जवाहरलाल नेहरू
प्रधान मन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली

पडित जवाहरलाल का उत्तर न आने पर वर्माजी ने ३० अप्रेल को एक पत्र और लिखा, तद्उपरात पडित जवाहरलाल का नीचे लिखा पत्र आया ।

न० १०१८ पी राम राव ५६
नई दिल्ली
६ मई १९५६

प्रिय माणिक्यलालजी,

आपके दो पत्र मिले एक ६ अप्रेल का दूसरा ३० अप्रेल का । जवाब देने मे देरी हुई, माफ कीजिएगा ।

आपने जो लिखा है उस पर मैंने विचार किया, और आपकी भावना से मुझ पर असर हुआ। लेकिन इसके मानी क्या है जैसा कि आप लिखते है कि आप सब मेरे ऊपर छोड़ दे ? बहुत दिन हुए आपने अपने को देश के काम मे लगा दिया और एक मानी मे देश पर छोड दिया। अब आपको किसी को देना क्या रहा।

राजस्थान मे आपको बड़े काम करने है और इसकी बहुत आवश्यकता है। उस काम को तो आप छोड़ नही सकते। कोई कठिनाई आपको हो, काम के वारे मे या अपने बारे मे, तो जरूर मुझसे आकर कहिए और हम सलाह मशवरा करें।

एक दिन आकर मुझ से मिलिए।

आपका
जवाहरलाल

वर्माजी की धन सम्बन्धी इस साधना और निर्लिप्तता मे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नारायणी देवी का प्रशसनीय योगदान रहा है। यदि उनकी पत्नी ने वर्माजी से वैवाहिक सूत्र मे बन्धने के उपरान्त साधना और तपस्या का जीवन स्वीकार कर अभावग्रस्त जीवन के कष्टो को सहकर भी प्रसन्नतापूर्वक अपने पति के साधनामय जीवन को सम्बल न दिया होता तो यह कह सकना कठिन है कि वर्माजी अपनी उस साधना मे कहा तक सफल होते।

जब वर्माजी पूर्व राजस्थान के मुख्य मन्त्री थे, उनकी दो पुत्रिया सत्यवती और सुमित्रा महाराणा भूपाल कालेज मे अध्ययन करती थी और लेखक कालेज का प्रिन्सिपल था। वे दोनो एक दिन भी मुख्य मन्त्री की सरकारी गाडी में कालेज मे नही आई वे सदैव कालेज की बस मे ही कालेज आती थी ऐसी सिद्धातवादिता और निष्ठा आज हमारे मन्त्रियो और ऊचे पदो पर आसीन राजनीतिज्ञो मे देखने को भी नही मिलती। वर्माजी के सम्पूर्ण परिवार ने वर्माजी के इस साधनामय जीवन से अपना तादात्म स्थापित कर लिया था। उन्होने कभी भी शान शौकत और वैभव के जीवन की आकाक्षा या अपेक्षा नही की। वर्माजी के सामने कई बार मन्त्रिपद स्वीकार करने के उच्च नेतृत्व द्वारा प्रस्ताव आए उस समय उनकी धर्मपत्नी तथा पुत्रियो ने मन्त्रिपद स्वीकार करने का घोर विरोध किया था। एक वरिष्ठ राजनीतिक नेता ने जब वर्माजी को मन्त्रिपद स्वीकार करने के लिए बहुत विवश किया तो वर्माजी ने उनसे कहा था कि श्रीमती नारायणी देवी ने मुझे शपथ दिलादी है कि मैं कभी मन्त्रीपद स्वीकार न करूं और मेरी पुत्रियो का भी गहरा विरोध है इस कारण मैं इसे स्वीकार नही कर सकता। केवल वर्माजी में ही धन वैभव और पद के प्रति असक्ति और आकाक्षा नही थी, वरन उनकी धर्मपत्नी तथा सतान ने भी उनकी इस भावना को दृढ बनाने मे सहयोग दिया था। कभी कभी कभी लेखक सोचता है कि श्रीमती नारायणी देवी ने यदि इतनी गहरी साधना न की होती तो वर्माजी अपने जीवन मे जो कुछ कर सके वह क्या

कर पाते। वर्माजी के तेजोमय राजनीति जीवन के पीछे श्रीमती नारायणी देवी की अदृश्य साधना तपस्या छिपी हुई है।

पद्मभूषण की उपाधि :— पदम विभूषण की उपाधि मिलने पर वर्माजी के मन मे जो प्रतिक्रिया हुई वह उन्ही के शब्दों में जो उन्होने अपनी डायरी में लिखे है सुनिए—

" २६ जनवरी १९६५— आज राष्ट्रपति द्वारा घोषित तथा उनके तार द्वारा मुझे " पद्म विभूषण " की उपाधि दी गई यद्यपि मै इसका उपयोग करूँगा नही फिर भी मेरे देशवासियो का राज्य है मुझे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। किया। २८ जनवरी ६५— आज सारा दिन मिलने जुलने और पदम विभूषण की बधाइयो मे ही व्यर्थ बीता। इसलिए सोचा कि कल खेत पर चले जाना ताकि कोई आवे ही नही और आवे तो निराश हो जावे।"

२९ जनवरी १९६५ :— खेत पर गया कुछ लोग कार्यकर्ता आए पद्म विभूषण की उपाधि की खुशी में दावत देना चाहते थे। मैंने अस्वीकार किया। भविष्य मे किसी का निमन्त्रण न मानने का फैसला किया। मेरा देश इस समय सकट की घड़ियो से गुजर रहा है। पद्म विभूषण की उपाधि की खुशी मे मै दावतें लेता फिरूं यह मेरे लिए शर्म की बात होगी। इसलिए इसकी खुशी नही मानना। वैसे मेरे स्वतंत्र देश और काग्रेस सत्ता ने उपाधि दी, सहर्ष मजूर करली। मगर दिल का दर्द नही गया है।"

पद्म विभूषण उपाधि मिलने पर उनके मन पर जो प्रतिक्रिया हुई और जो उनकी डायरी के पृष्ठो पर अकित है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे आत्म प्रकाशन से कितनी दूर थे और देश के प्रति उनकी कितनी प्रगाढ भक्ति थी।

वर्माजी मे स्वाभिमान कूट कूट कर भरा हुआ था दो घटनाओ से उनके जीवन के इस पृष्ठ पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। जब वृहद राजस्थान का निर्माण हुआ पूर्व राजस्थान जयपुर जोधपुर बीकानेर तथा अजमेर मिला कर वर्तमान राजस्थान बनाया गया और जयपुर मे सरदार पटेल द्वारा उसका उद्घाटन हुआ तो वहां बैठने की समुचित व्यवस्था नही थी। पूर्व राजस्थान के मन्त्रियो और उच्च अधिकारियो के लिए भी वहा बैठने की उचित व्यवस्था नही की गई थी। जब वर्माजी आए और उन्होने यह स्थिति देखी तो उनके स्वाभिमान को चोट लगी वे उद्घाटन समारोह मे सम्मिलित नही हुए सीधे कृष्णगढ़ चले गए और वहा जाकर विश्राम किया। इसी प्रकार महाराणा भूपाल सिह से जब एक बार वे होली खेलने गए और उनके दरबारियो ने उनके पैरो पर अबीर गुलाल डालने को कहा तो वर्माजी ने भविष्य मे कभी भी महाराणा साहब से होली खेलने न आने का निश्चय कर लिया।

किन्तु जहां उनमे हद दर्जे का स्वाभिमान था वहां उनमे चरम सीमा की उदारता भी थी। जिस पुलिस इंस्पेक्टर लक्ष्मी शकर दशौरा ने मेवाड़ प्रजामंडल के आन्दोलन के समय वर्माजी की निर्मम पिटाई की थी उन्हे पेड़ से बांध कर लात घूंसा

लाठी से बुरी तरह पीटा था पूर्व राजस्थान के मुख्य मत्री बनने पर जब दशोरा मे मन अत्याधिक घबराया हुआ और दुखी था तो वर्माजी ने उसको सान्तवना देते हुए कहा था तुमने जिस निष्ठा से महाराणा की सरकार की सेवा की उसी निष्ठा और भक्ति से कांग्रेस सरकार की सेवा करो घबराने की कोई बात नही है। यही नही वर्माजी ने उस पुलिस अधिकारी की पदोन्नति की और उसे डिप्टी सुपरिटेन्डेन्ट बना दिया। उदारता और विशाल हृदयता के ऐसे उदाहरण इतिहास मे अधिक नही मिलते।

राजनीतिक दृष्टि से वर्माजी श्री हीरालाल शास्त्री के सदैव विरोधी रहे। १९४२ मे उनके द्वारा भारत छोडो आन्दोलन मे जयपुर राज्य की सरकार से समझौता करने को वे देशद्रोह की सज्ञा देते थे और उनके विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास कराने तथा उन्हे मुख्य मंत्री पद से हटाने मे वर्माजी ही प्रमुख शक्ति थे परन्तु जब शास्त्री जी मुख्य मत्री पद से हटा दिए गए और व्यासजी मुख्य मंत्री बने तो उन्होने व्यासजी से श्री हीरालाल शास्त्री द्वारा सचालित वनस्थली विद्यापीठ के सम्बन्ध मे जो कहा वह उनकी डायरी मे लिखे शब्दो मे ही पढिए:—

"१ अप्रेल १९५४ — आज व्यासजी से मैने कहा कि हीरालाल शास्त्री द्वारा संचालित वनस्थली विद्यापीठ आर्थिक सकट मे है। आप देख लेना कि कही अफसर लोग संस्था के साथ अन्याय न कर बैठे क्योकि शिक्षा मत्री शास्त्री जी से नाराज है।"

शास्त्री जी के घोर विरोधी होते हुए भी सस्था को उनके कारण कोई हानि न पहुंच जावे यह उनकी उदारहृदयता का सुन्दर उदाहरण था।

इसी प्रकार जिन लोगो ने देश के स्वतत्रता आन्दोलन मे भाग लिया था, कष्ट उठाए थे, दमन के शिकार हुए थे यद्यपि बाद को उनसे राजनीतिक मतभेद के कारण वे विरोधी बन गए थे परन्तु उनके लिए वर्माजी के हृदय मे बहुत आदर और श्रद्धा थी। श्री जयनारायण व्यास से अन्त मे गहरा विरोध होने पर भी जब श्री नेहरू ने व्यासजी को अनुशासनहीनता के आरोप मे ६ वर्ष के लिए काग्रेस से बहिष्कृत करने का निश्चय किया तो वर्माजी ने व्यासजी की देश के प्रति की गई अमूल्य सेवाओ का उल्लेख करते हुए लिखा था कि यदि उन्हे काग्रेस से निकाला तो मै भी काग्रेस से त्यागपत्र दे दूगा। परिणाम स्वरूप व्यासजी के विरुद्ध कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही नही की गई। इसी प्रकार बलवन्त सिंह मेहता तथा नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी से मतभेद रहते हुए भी अन्त मे उनके मन मे उनके लिये गहरा स्नेह था। स्वामी कुमारानन्द काग्रेस विरोधी और कम्युनिस्ट थे परन्तु जब उन्हे ज्ञात हुआ कि वे कष्ट मे है तो उन्होने सुखाड़िया जी को लिखा कि उनकी आर्थिक सहायता की जानी चाहिए। उन्होने देश के लिये बहुत कष्ट झेले है।

वर्माजी यद्यपि स्वय साधनहीन थे परन्तु उनके प्रति आदर और श्रद्धा रखने वाले धनी लोग बहुत थे। यही कारण था कि वे रचनात्मक कार्य के लिए तथा जो कार्यकर्ता आर्थिक कष्ट मे होते उनके लिए उनसे आर्थिक सहायता प्राप्त करते थे। लेखक को ज्ञात है कि उन्होने अनेको कार्यकर्ताओ को अपने प्रशसको से आर्थिक सहायता

दिलवाई थी। कार्यकर्ताओ के लिए उनके मन मे गहरा स्नेह था यदि उनको ज्ञात होता कि अमुक कार्यकर्ता कष्ट मे है तो वे विचलित हो उठते और उसके कष्ट को दूर करने के लिए तुरन्त प्रयत्न करते थे। कार्यकर्ताओ के लिए उनके मन मे कितनी पीडा थी, एक घटना से उसका अनुमान किया जा सकता है।

जब वर्माजी सीमा क्षेत्र मे काम रहे थे तो जैसलमेर के श्री सत्यदेव व्यास के सम्बन्ध मे उन्हे ज्ञात हुआ कि उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है उन पर ६ हजार रुपए का ऋण है। श्री सत्यदेव एक सेवाभावी सच्चे कार्यकर्त्ता थे वर्माजी के मन को यह जानकर कष्ट हुआ। उन्होने स्थानीय व्यक्तियो से तीन हजार रुपए की व्यवस्था करने को कहा और तीन हजार रुपए की स्वय जिम्मेदारी ली। इसी प्रकार श्री हरिभाई किंकर के सम्बन्ध मे जब उन्हे ज्ञात हुआ कि वे कष्ट मे हे तो उन्होने सुखाडिया जी को पत्र लिखकर उनको राजनीतिक पीड़ितो की पेशन दिलवाई।

जहा वे कार्यकर्ताओ के कष्टो के निवारण का ध्यान रखते थे वहा यदि उन्हे यह ज्ञात होता कि कोई कार्यकर्ता भ्रष्ट हे तो वे उसे एक क्षण के लिए भी सहन नही करते थे। एक छात्रावास के व्यवस्थापक के भ्रष्ट होने का उन्हे प्रमाण मिला तो एक मास का अग्रिम वेतन देकर उन्होने उसे तुरन्त विदा कर दिया। विजोल्या मे एक शिक्षण सस्था (विद्यापीठ) जिसके वे स्वय अध्यक्ष थे उसके मत्री के सम्बन्ध मे जब उन्हे ज्ञात हुआ कि उसने सरकार से जितने छात्र थे उससे अधिक छात्र सख्या बताकर अधिक धन ले लिया तो सबन्धित मत्री को जाच करवाने के लिए लिखा। भ्रष्ट काग्रेसियो को सगठन से हटाने के लिए वे निरन्तर प्रयत्न करते थे। काग्रेस अध्यक्ष तथा श्री जवाहर लाल नेहरू से इस सम्बन्ध मे उन्होने कई बार चर्चाए की थी इसका उल्लेख उन्होने अपनी डायरी मे कोई स्थानो पर किया है। काग्रेसजनो के सम्बन्ध मे पडित जवाहर लाल से जो उनकी वात होती थी उसका एक उदाहरण उनकी डायरी से यहा उद्धृत है—"१७ जुलाई, १९५७ आज ५ बजे सायकाल जवाहरलाल नेहरू से वात हुई। मैंने कहा जनता और सरकारी कर्मचारियो मे से भ्रष्टाचार मिटाने के पूर्व हमारी काग्रेस मे से तो निकाले। कई लोगो ने अपनी हैसियत से अधिक सम्पत्ति बनाली है उन्ही की जाच करे। पडितजी ने कहा मैं जानता हू बनाली है, मगर क्या किया जाय? मैने कहा जिस पर भी सन्देह हो सगठन जाच करे।"

इसी प्रकार अब काग्रेस अध्यक्ष ढेवर भाई ने वर्माजी से बात की उसके सबध मे वर्माजी ने अपनी डायरी मे इस प्रकार लिखा है.—

"७ मई १९५८ आज दिन मे ३ बजे ढेबर भाई के पास पहुँचा (उन्होने बुला भेजा था) मौजूदा देश की स्थिति और पडितजी के रुख पर मेरा रुख जानना चाहा। मैंने कहा प्रथम (१) काग्रेस को समाजवादी ढाचे की काग्रेस बनाइए। (२) राजा महाराजा, पूंजीपति तथा जागीरदारो को हटाइए (३) भ्रष्टाचार की दृष्टि से केन्द्र मे दो तीन मन्त्री खराब है उनको भी विदाई दीजिए। मैने कहा पडितजी से मै तो एकांत मे कहना चाहता हूँ भीड़ मे नही।

साहस और शौर्य के प्रति — वर्माजी ने जीवन भर यद्यपि राजनीतिक और रचनात्मक कार्य िए परन्तु उनमे साहस और शौर्य एक वीर योद्धा जैसा था। १९६५ मे जब भारत पाकिस्तान युद्ध हुआ और युद्धवंदी के वाद पाकिस्तान ने राजस्थान की सीमा पर अचानक आक्रमण कर कुछ चौकियो पर अपना अधिकार कर लिया और भारतीय जवानो और पाकिस्तानी मुजाहिदो के बीच युद्ध छिडा तो भी वर्माजी ने अपना सीमा प्रदेश का दौरा जारी रखा। वहा युद्ध के भय और आतक से लोग मकानो के वाहर निकलने का साहस नही करते थे, वहा युद्ध की अग्नि की परवाह न कर वर्माजी जीप मे बैठकर भारतीय सेना के जवानो की सम्भाल करते थे और भयभीत ग्रामीणो को धैर्य बधाते थे। जबकि वे मियाजलार के पास से निकले तो उनको पता चला कि मियाजलार पर पाकिस्तानियो ने अधिकार कर लिया है और उसके सीमावर्ती गाव के लोग अत्यन्त भयभीत है। उन्होने अधिकारियो को सूचना दी और वहा सुरक्षा व्यवस्था कराई। आश्चर्य की बात यह थी कि जैसलमेर के कलेक्टर को यह पता नही था कि मियाजलार पर पाकिस्तानियो ने अधिकार कर लिया है। लोगो ने उन्हे बहुत मना किया कि जब युद्ध की स्थिति है तब आप चौकियो पर न जाइए परन्तु वर्माजी कब मानने वाले थे। खतरे की परवाह न कर चौकियो के जवानो के पास जाते। एक बार ऐसा हुआ कि भुट्टोवाला चौकी पर वर्माजी गए। वहा के जवानो से मिलकर आगे बढे कि पाकिस्तानी सैनिको ने उस चौकी पर हमला कर दिया। भारतीय जवानो ने वीरता के साथ युद्ध किया और उस युद्ध मे पूनमसिह वीरगति को प्राप्त हुआ। जब आगे की चौकी पर वर्माजी को यह सूचना मिली तो पूनमसिह की वीरता की प्रशसा करते हुए उन्होने कहा कि मातृभूमि की रक्षा करते अपने प्राण देने से अधिक गौरवशाली मृत्यु क्या हो सकती है।

युद्ध के दिनो मे वर्माजी सीमावर्ती गावो मे घूम घूम कर लोगो और जवानो के साहस को बढाते। ग्रामवासियो को अपना गाव न छोडने के लिए कहते और जवानो से कहते कि देश की रक्षा करने का गौरवशाली दिन आया है। वे उन दिनो राष्ट्रीय गीतो को गाकर सबो के मनोबल को ऊचा करते। गीतो का भाव यही होता है कि मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणो का बलिदान देने से बढकर और अधिक गौरवशाली मृत्यु नही हो सकती। सीमावर्ती चौकियो के सैनिक वर्माजी के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे क्योकि वर्माजी ने प्रधान मन्त्री, रक्षा मन्त्री तथा राजस्थान के मुख्य मन्त्री से स्वय जाकर सीमा सुरक्षा दल के सैनिको को बहुत सी सुविधाए दिलवाई थी। पाकिस्तान के युद्ध के समय जब वर्माजी सीमा क्षेत्र का दौरा कर रहे थे तो ड्राइवर को अत्यन्त ऊबड खाबड अनजाने प्रदेश मे जीप चलानी पडती वह अत्यन्त सावधानी और सतर्कता से जीप धीरे धीरे चलाता तो वर्माजी उससे कहते भाई प्राणो को इतना मोह क्यो, जीप को उलटने दो सीमाक्षेत्र मे ही हमारी समाधि बनने दो। सीमाक्षेत्र के लोग आज भी वर्माजी के उस साहस को पाकर श्रद्धानवत होते है।

१९६५ का पाकिस्तान का युद्ध समाप्त होने पर वर्माजी ने तत्कालीन रेलवे

मन्त्री श्री रामसुभगसिंह से जैसलमेर तक रेलवे लाइन का निर्माण कराने का विशेष आग्रह किया था। यह उनके प्रयत्नो का ही फल था कि १५ अगस्त, १९६७ को जैसलमेर स्टेशन पर पहली मालगाडी पहुँची उस समय स्वय वर्माजी वहा उपस्थित थे।

वर्माजी अपने सक्रिय जीवनकाल मे अपने कार्य की मासिक रिपोर्ट काग्रेस के अध्यक्ष, प्रधान मन्त्री, प्रदेश काग्रेस कमेटी, आदिम जाति सेवक सघ, के केन्द्रीय कार्यालय तथा उन सभी अखिल भारतीय रचनात्मक सस्थाओ को नियमित रूप से भेजते थे जिसमे उनके द्वारा उस मास मे जो भी राजनीतिक और रचनात्मक कार्य किया जाता उसका ब्यौरा रहता था। काग्रेस अध्यक्ष तथा श्री नेहरू ने एक बार मासिक रिपोर्ट के सदर्भ मे कहा था कि यदि थोडे भी काग्रेसकर्मी वर्माजी का अनुकरण कर सके तो काग्रेस सगठन कितना तेजवान और वलशाली वनजावे। उनकी मान्यता थी कि जब मै काग्रेस का सक्रिय सदस्य हूँ तो मेरी समस्त शक्ति और क्षमता तथा समय, कांग्रेस तथा सम्वन्वित सस्थाओ का है मुझे सगठन को यह वतलाना चाहिए कि मै अपनी कार्य क्षमता तथा समय का किस प्रकार उपयोग कर रहा हू। यदि उनकी मासिक रिपोर्टों को पुस्तकाकार मे प्रकाशित किया जा सके तो राजस्थान के राजनीति तथा सार्वजनिक जीवन के इतिहास का वह एक मूल्यवान सदर्भ ग्रन्थ वन सकता है। चित्तौड के भूतपूर्व लोक सभा सदस्य श्री ओकार लाल वोहरा ने अपने सस्मरण मे ठीक ही लिखा था— "श्री वर्माजी की मृत्यु असामयिक थी। दर असल वे मृत्यु के पहले अनेक प्रकार के राजनीतिक घातो प्रतिघातो, विशेषकर राजस्थान की परिस्थितियो से ऊव चुके थे और अपनी ओजस्वी वाणी एव निर्भीकता से एक नया परिवर्तन लाना चाहते थे। परिवार को तो वर्षो पहले ही वे अपने जीवन मे गौण वना चुके थे। सोते वैठते खाते पीते उन्हे केवल देश की चिन्ता थी। वढती हुई वेरोजगारी, गरीवी, शोषण एव भ्रष्टाचार देखकर उनका दिल दहल उठता था और वे उसके लिए शासन को जिम्मेदार मानते थे और चाहते थे कि तेजी से परिस्थितिया वदल जावे। परन्तु उसके लिए वे निष्ठावान, ईमानदार, सच्चरित्र कार्य कर्ताओ की खोज मे थे। उनके द्वारा वे काग्रेस सगठन और सत्ता मे परिवर्तन लाने का इरादा करते थे परन्तु विधि ने उन्हे यह अवसर नही दिया और वे अपना दहकता दिल लेकर चले गए।" सन् १९६७ के लोक सभा के चुनाव मे श्री ओकार लाल वोहरा को श्री वर्माजी के प्रयत्न से ही काग्रेस टिकट मिला था और वे उनके अधिक निकट आगए थे वर्माजी वहुधा अपनी मनोभावना उनसे व्यक्त करते थे।

उनकी मान्यता थी कि सेवा कार्य करने वालो को लगन, सच्चाई, निष्ठा ईमानदारी और आचरण की शुद्धता रखनी चाहिए। अपने स्वय पर वे इनको कड़ाई से लागू करते थे। जव वे किसी सार्वजनिक कार्यवश यात्रा करते वे महीने मे २५-२६ दिन घर से वाहर सेवा कार्य से रहते थे तो एक एक पैसा का हिसाब रखते। यदि उनके पास सामान अधिक न हो तो कुली नही करते। आवश्यक हो जावे

तभी ऊचे दर्जे मे यात्रा करते। कही सभा इत्यादि मे जाना हो और सस्था की सवारी न हो और अधिक दूर न हो तो पैदल चले जाते। एक वार वे दिल्ली से जयपुर आए, श्री भोगीलाल पडया के यहा ठहरे। प्रादेशिक कांग्रेस की एक अत्यन्त आवश्यक सभा मे सम्मिलित होने के लिए उन्हे अजमेर पहुँचना था। काग्रेस को जीप खराब थी, ट्रेन निकल चुकी थी पडया जी उस समय मत्री थे उन्होंने सरकारी मोटर मे उन्हे अजमेर पहुचा दिया। वर्माजी ने डायरी मे लिखा कि आज मुझे सरकारी वाहन का विवश होकर उपयोग करना पड़ा मै इसे उचित नही समझता।

जब वे किसी कार्यकर्त्ता के सम्बन्ध मे कोई अपवाद सुनते तो उसकी जाच करते और यदि उनको यह विश्वास हो जाता कि अपवाद मे सच्चाई है तो वे उस कार्यकर्त्ता को सावधान कर देते थे और यदि देखते कि उसने अपने आचरण को नही सुधारा तो उसका वहिष्कार कर देते थे।

उनमे स्पष्टवादिता का गुण वडी मात्रा मे विद्यमान था अपने निकट से निकट व्यक्ति के किसी कार्य का वे समर्थन यदि नही कर सकते थे तो स्पष्ट उससे कह देते थे। जबकि उच्च सत्ता तथा काग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री हीरालाल शास्त्री को काग्रेस मे लाना चाहते थे और उनसे बाते हो रही थी तो शास्त्रीजी ने वर्माजी से पूछा कि क्या तुम मन से चाहते हो कि काग्रेस मे आऊ तो वर्माजी ने कहा था कि यदि मन की बात पूछते हो तो मैं चाहूँगा कि इस समय काग्रेस मे न आवे कुछ समय उपरान्त आवे। इसी प्रकार वर्माजी ने श्री सुखाडिया की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुबाला सुखाडिया से उनके एक निकट सवन्धी के सवध मे जो कहा था वह उनकी डायरी में लिखे शब्दो मे पढिए।

"२८ फरवरी १९६३ दस वजे सुखाड़ियाजी के पास गया। आज श्रीमती इन्दु वहिन से(··· ·· ··) के भ्रष्टाचार की चर्चा हुई वह असमर्थता जाहिर कर रही थी मैंने कहा यदि ठीक रास्ते पर न आता हो तो रिश्ते व सवध तोड दो।"

स्वास्थ्य :— वर्माजी का स्वास्थ्य मेवाड़ की जेलो की रेत मिली रोटिया खाने से तथा वहा के अस्वस्थकर और कटोर जीवन से खराव हो गया था। उनके पेट मे अल्सर हो गए थे। इस कारण उन्हे कई प्रकार के पेट के कष्ट रहते थे परन्तु उनकी दृढ इच्छा शक्ति तथा देश की सेवा की लगन इतनी थी कि रोग भी उनसे पराजित हो जाता था। कभी कभी वे महीने दो महीने के लिए भोजन छोड देतै केवल छाछ या दूध पर रहते उनकी डायरियो को पढ जाइये तो आपको मिलेगा कि आज स्वास्थ्य खराव रहा पेट मे कष्ट था अथवा ज्वर था परन्तु दूसरे दिन ही जीप से दो सौ मील की यात्रा कर वे अपने कार्यक्रम को पूरा करते थे। सत्तर वर्ष से अधिक आयु में वे सीमा क्षेत्र की मरुभूमि मे फिरते जो भी और जैसा भी मिलता वे खाते थे। जीवन के अतिम वर्षो मे जब उनका स्वास्थ्य वहुत गड़वड़ होने लगता तो डाक्टरो के वहुत कहने से वे अडा लेने लगे थे। अंडा लेने के सवध मे भी उन्होने अपनी डायरी मे लिखा है :—

"डाक्टरो के कहने से अडा लेता हू उससे लाभ हुआ यह इसलिए डायरी मे लिख रहा हूँ कि मेरी मृत्यु के उपरान्त जनता मेरी कमजोरियो को भी जाने" ऐसे थे वे स्पष्टवादी।

मृत्यु के सबध मे जब कभी चर्चा होती तो वे अट्टहास के साथ कहते "मै काम करते हुए मरना चाहता हूँ। लबी बीमार से रोगशय्या पर पडकर मुझे मरना रुचिकर नही है। गोली से, जीप दुर्घटना में, अथवा हृदय गति रुक जाने से मैं मरना पसद करूगा" उनकी इच्छा पूरी हुई अन्त समय तक वे कार्य करते रहे हृदय कष्ट से हृदय की गति बन्द होने के कारण वे कुछ घटो की बीमारी के पश्चात ही महाप्रयाण कर गए।

पंडित जवाहरलाल नेहरू और वर्माजी — वर्माजी पडित जवाहरलाल नेहरू के अनन्य भक्त थे, नेहरूजी भी उनको स्नेह और आदर करते थे। यद्यपि वर्माजी के हृदय में नेहरूजी के लिए असीम श्रद्धा थी परन्तु फिर भी जब उन्हे लगता कि पडित जी का निर्णय राष्ट्रीय हित मे नही है तो वे दृढता के साथ उसका विरोध भी करते थे और कई बार पडित जी को वर्माजी के आग्रह पूर्ण विरोध के कारण अपना निर्णय बदलना पडा। जब पडित जवाहरलाल नेहरू ने मास्टर आदित्येन्द्र को लोक सभा का टिकट न देकर श्री रामनाथ पोदार को सभा का टिकट देने का निश्चय किया तो वर्माजी के विरोध के कारण ही उनको अपना निर्णय बदलना पडा था। इसी प्रकार जब श्री जयनारायण व्यास की अनुशासनहीनता के दण्ड स्वरूप ६ वर्षो के लिए काग्रेस से निष्कासित किया गया तो वर्माजी ने श्री नेहरू के इस निर्णय का स्वयं अपना काग्रेस से त्याग पत्र भेजकर विरोध किया। वर्माजी के विरोध के परिणामस्वरूप श्री व्यास के निष्कासन का निर्णय बदल दिया गया।

राजस्थान के काग्रेस कर्मियो मे कोई भी व्यक्ति श्री जवाहरलाल नेहरू के इतना नजदीक नही था जितने वर्माजी थे। काग्रेस सगठन के गभीर प्रश्नों पर वे वर्माजी से विचार विमर्श करते थे। यह नेहरूजी पर वर्माजी के प्रभाव का ही परिणाम था कि श्री मोहनलाल सुखाडिया राजस्थान के मुख्य मत्री बने अन्यथा व्यासजी के विरुद्ध कांग्रेस विधायको का बहुमत प्राप्त करने पर भी उनका मुख्य मत्री बनना सभव नही होता। श्री नेहरू के निधन पर वर्माजी ने अपनी डायरी मे जो कुछ लिखा है वह उनके नेहरू जी के साथ निकट के सबध को व्यक्त करता है।

२७ मई १९६४:—"ठीक १२ बजे लोक सभा की लाबी मे पहुचा, खबर मिली कि पडितजी बेहोश हैं। उन्हे हार्ट का दौरा हुआ है। १२ बजे उनकी मृत्यु हो गई। एक गहरी चोट दिल को लगी। राष्ट्र को जबरदस्त धक्का लगा है और ऐसा नेता जो देश को अपनी बात मनवा सके होने वाला नही है। भावी नेता हिन्दुस्तान की जनता के इशारे पर चलेगा। काग्रेस सगठन मे अनैतिकता हो जावेगी जो दर्द उनके दिल में देश के लिए था वह दूसरे मे नहीं होगा। अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए बाहरी दिखावा भावी नेता करता रहेगा।"

"मुझे यह दर्द ज्यादा महसूस हुआ क्योंकि वे कभी मुझे जाते हुए पीठ से धक्का देते थे, और कभी चुपचाप गर्दन पकड़ते और जब मैं राष्ट्र सगठन, तथा समाजवाद सम्बन्धी चर्चा करते हुए गुस्से मे होकर कहता तो वे शान्ति से समझाते थे। एक दिन उनके मुह से निकल गया कि अकड रहे हो। जब ढेवर भाई अध्यक्ष थे वर्किंग कमेटी मे बुलाया गया मैंने इन्कार कर दिया पर वे नाराज नही हुए। मैं उन्हे जहा जहा ले गया गए। खासकर जयनारायण को ६ वर्ष के लिए काग्रेस से निकालने पर जब मैंने त्याग पत्र दे दिया तो उन्हे एक दिन के लिए भी नही निकाला। आज चुपचाप खूब रोया । श्रीमती नारायणी देवी ने लेखक को बतलाया कि जीवन मे वर्माजी को उन्होने इतना दुखी कभी नही पाया। नेहरू जी के निधन पर उनका अन्तर इतना व्यथित हो गया कि अपने कमरे को बन्द कर वे घण्टो रोते रहे।" जवाहरलाल जी के प्रति उनकी गहरी भक्ति थी नेहरूजी भी उनमे सहज स्नेह करते थे। यदि देखा जावे तो दोनो मे बाह्यरूप से कोई समता नही थी, बहुत अन्तर था, परन्तु उन दोनो के अन्तर एक थे नेहरूजी के कार्य से बहुत अधिक प्रभावित थे इस कारण वे उनका बहुत आदर करते थे। एक बार भावावेश मे नेहरूजी ने वर्माजी से राजस्थान के सम्बन्ध मे बात करते हुए स्नेह से उनके कधे पर अपना हाथ रखते हुए कहा था "राजस्थान को तुम सम्हाले हुए हो" उनका वर्माजी मे गहरा विश्वास था और उनकी देशभक्ति और सेवा कार्य के प्रति गहरा आदर था। यही कारण था कि वर्माजी किसी बात पर आग्रह करते थे तो नेहरू जी अन्तत उसको स्वीकार कर लेते थे। देश के प्रमुख काग्रेसी वर्माजी के प्रति नेहरूजी की इस भावना को जानते थे यही कारण था कि वे नेहरूजी के पास अपनी भावनाए पहुँचाने के लिए उनको अपना माध्यम बनाते थे।

वर्माजी की डायरी मे अनेक स्थलो पर ऐसी बाते लिखी मिलती है जिनसे ज्ञात होता है कि वर्माजी पर जवाहरलाल जी का गहरा विश्वास था उनकी डायरी मे लिखी एक घटना से यह स्पष्ट हो जाता है। ऐसी घटनाए अनेक बार हुई जबकि नेहरूजी ने गम्भीर प्रश्नो पर वर्माजी से बातचीत की थी।

४ मई १९७३ : "आज पडित मे डिप्टी लीडर के सम्बन्ध मे बात की। वे स्वय ही लोकसभा मे से उठकर मुझे ले गए। फिर आतुल्य बाबू, श्री महताब तथा श्री सत्यनारायणसिंह जी से आपसी चर्चा करके दोनो डिप्टी लीडर्स पुरानो को यथावत रखने का फैसला कराया।'

वर्माजी की विचारधारा : जहा तक राजनीतिक विचारधारा का प्रश्न है वर्माजी उग्र समाजवादी थे। सामन्तवाद और पूजीवाद से वे किसी भी दशा मे समझौता करने के विरोधी थे। उन्होने अपने पूर्व राजस्थान के अल्पकालीन मुख्य मन्त्रित्वकाल मे जागीरदारी प्रथा को समाप्त कर दिया। भारतवर्ष मे सर्व प्रथम सामन्तशाही को समाप्त करने का श्रेय वर्माजी को ही है। आजीवन उन्होने सामन्तवाद का विरोध किया। काग्रेस द्वारा भूतपूर्व राजो, जागीरदारो, और पूजीपतियो को काग्रेस टिकट दिए जाने का भी उन्होने सदैव विरोध किया। वे चुनावो में राजो,

महाराजो, पूंजीपतियो, जागीरदारो की सहायता लेने का भी विरोध करते थे इसको कांग्रेस की सिद्धातहीनता और निर्वलता मानते थे। १९६७ के चुनावों मे उदयपुर, चित्तौड, भीलवाडा (मेवाड) क्षेत्र मे महाराणा भगतसिंह का सहारा लेने की प्रवृत्ति की भी उन्होने भर्त्सना की और कहा कि इससे कॉंग्रेस निर्वल होगी। श्री जयनारायण व्यास से उनका मतभेद जागीरदारो को कांग्रेस मे लेने के प्रश्न पर ही हुआ, श्री सुखाडिया जी ने जब १९६७ के चुनावो के उपरान्त जो मन्त्रिमण्डल बनाया उसमे सामती तत्वो को लेने के कारण वे क्षुब्ध और रुष्ट थे। सामन्त प्रथा के प्रति उनका विरोधी दृष्टिकोण कितना गहरा था यह उनकी डायरी मे नीचे लिखे शब्दो से स्पष्ट प्रगट होता है।

१६ जुलाई १९५५ : "आज महाराणा भगवतसिंह का उत्तराधिकार का दिन था। मैं वहा जाना नही चाहता। प्रश्न यह है कि सामन्ती रस्मो मे मैं क्यो सम्मिलत होऊ, क्यो उनका महत्व बढाऊ।"

यह सभवत. बहुत कम लोगो को ज्ञात है कि बैको के राष्ट्रीय करण का प्रश्न सर्वप्रथम कांग्रेस मे वर्माजी ने ही उठाया। उन्होने ही ५६ लोक सभा के सदस्यो से हस्ताक्षर करवा कर एक ज्ञापन पडित जवाहरलाल को दिया था। यद्यपि बैको का राष्ट्रीयकरण उनकी मृत्यु के उपरान्त हुआ परन्तु उन्होने ही काग्रेस मे सबसे पहले बैको के राष्ट्रीयकरण की आवाज उठाई थी। इस सम्बन्ध मे उन्होने अपनी डायरी मे निम्न प्रकार लिखा था।

२० दिसंबर १९६३ · "आज दिन भर लोक सभा मे रहा। कल ५६ एम. पी. के हस्ताक्षर बैको के राष्ट्रीयकरण के पक्ष मे कराए। कल ही उसे पडित जी के पास भेज दिया। आज उस पर शाम को पार्टी मे बहस हुई।"

इसी प्रकार वे राजो महाराजो की प्रिवीपर्स के समाप्त किए जाने के पक्ष मे थे। अपनी डायरी मे वर्ष की आकाक्षाओ मे कई स्थानो पर उन्होने प्रिवीपर्स के समाप्त किए जाने की बात लिखी है।

गहन देश भक्त होने के कारण वे देश के विभाजन को नही भूल सके उनकी डायरी में अपनी आकाक्षाओ के सबध में उन्होने कई स्थानो पर यह भावना व्यक्त की है कि भारत पुन. अखड बने।

जहां वर्माजी राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त प्रगतिशील थे वहां उनकी सामाजिक विचारधारा और अधिक उग्र थी। साम्प्रदायिकता, जातिप्रथा, पर्दा प्रथा, दहेज, बाल विवाह, एक से अधिक पत्नी रखने की प्रथा, मृत्यु भोज, सिगरेट, और मदिरापान इत्यादि के वे कट्टर विरोधी थे। उनकी सामाजिक प्रगतिशीलता केवल विचारो तक ही सीमित नही थी उन्होने उसको कडाई के साथ कार्यान्वित भी किया था। उन्होने अपनी सन्तान के विवाहो में कभी जाति का ध्यान नही रखा। अवश्य ही उनकी दो पुत्रियां कायस्थो में व्याही गई परन्तु वहां जाति मुख्य नही थी, योग्य वर उन्हे मिले वे कायस्थ थे। उनकी दो पुत्रियो का विवाह ब्राह्मणो मे हुआ। लेखक को याद है कि वे एक सज्जन के

लडके से अपनी बडी पुत्री की पुत्री के विवाह की बात कर रहे थे। उनकी बडी पुत्री का विवाह ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। लड़के वालो ने उनको लिखकर पूछा कि लडकी के पिता का कौनसा गौत्र है, कौन ब्राह्मण है। वर्माजी ने उन्हे उत्तर दिया कि मै तो आपको प्रगतिशील विचारो का समझता था आप तो यह मान कर चले कि वह भगी की लड़की है यदि ऐसी तैयारी हो तो बात करे।

पर्दा पृथा के तो वे घोर विरोधी थे। जब वे गावो मे जाते तो सभा मे बैठी हुई महिलाओ से प्रतिज्ञा कराते कि वे घूघट नही निकालेगी। वे ऐसे किसी विवाह मे स्वय नही जाते थे जहा कन्या विवाह सस्कार मे घूघट निकाले। इस सबध मे एक घटना का उल्लेख उन्होने अपनी डायरी मे किया है जो उनके मनोभावो को स्पष्ट करती है।

१४ मई १९५४ : "कुशलगढ विवाह मे सम्मिलित हुआ। वर वधू को देखा लडकी घूघट मे थी हरदेव के लिए आश्चर्य हुआ कि वे सामाजिक क्रान्तिकारी नहीं। उनकी स्त्री भी घू घट मे डोल रही थी। सोचा कि उनसे कभी कहूँगा कि तुम देश को आगे नही ले जा सकते और मुझे इस हालत मे बुलाना नही चाहिए था। इस समय तो उलझ गया। भविष्य मे किसी से स्पष्टीकरण करके ही सम्मिलित होना चाहिए था। होली के दिन महाराणा के यहा जाना और इस शादी मे सम्मिलित होना इस वर्ष की दो घटनाएं दम घोट रही थी।" २२ जून १९५५–"वैद्य जी के लडके की शादी थी। लड़के ने वादा किया कि मैं अपनी पत्नी का घूघट छुडवाऊगा। सरदार शहर गया वहां मूलचद सेठिया ने आग्रह किया कि खाना खाइए। मैने कहा कि यदि आप अपनी स्त्री से घूंघट छुड़वादें तो जरूर खाऊगा। उनकी तैयारी नही मिली इसलिए उनके यहा खाना नही खाया। चदनमल वैद्य ने पहले ही अपनी पत्नी का घू घट छुटवा दिया था उनके यहां खाना आया।"

वर्माजी तो क्षेत्र मे घूमते ही रहते थे जहा भी जाते वहाँ ग्रामीण स्त्रियो से घू घट छोडने के लिये कहते उनसे प्रतिज्ञा कराते, और स्थानीय कार्यकर्ता को इस बात का उत्तरदायित्व सौंपते कि वह देखे कि वे अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर रही है अथवा नही।

आदिवासियो मे तथा कुछ अन्य जातियो मे मद्यपान करने, जिसका पति जीवित है उससे भी नाता कर लेने, तथा दापा (कन्या के लिए धन लेने) की कुप्रथाये बहुत अधिक प्रचलित थी। वर्माजी उनकी सभाए करते सम्मेलन बुलाते इनके विरुद्ध प्रस्ताव पारित कराते उन्हे शपथ दिलाते और स्थानीय कार्यकर्ता को उनकी देखभाल का भार सौंपते। जब पुन उस क्षेत्र मे दौरे पर आते तो इस बात की खोजबीन करते कार्यकर्त्ता से रिपोर्ट लेते कि जिन्होने मदिरापान न करने की शपथ ली थी उनमे से कितनो ने शपथ तोडी है।

वे इस सम्बन्ध मे कितने अडिग और दृढ थे यह उनकी डायरी के नीचे लिखे अश से स्पष्ट हो जावेगा।

३१ अक्टोबर ५६– " जवाहरनगर बस्ती वालो को बुलाया। पूछा कि जमीन का व्यक्तिगत पट्टा नही मिलेगा। कुछ लोगो ने कहा कि कभी शराब पीने की गलती

हो तो दड जुर्माना कर दिया जाय। सपत्ति जमीन की जब्ती न हो। इसके लिए मैने साफ इनकार कर दिया। फिर कहा कि जो व्यक्ति निशिद्ध नशे का उपयोग करेगे और सहकारी समिति के नियमो के विरुद्ध चलेगे उन्हे यहा नही रहने दिया जायेगा उनकी अचल जायदाद सभी सहकारी समिति की होगी।

आदिवासी पुरुषो से प्रतिज्ञा कराते कि जिस स्त्री का पति जीवित हो उससे नाता नही करेगे। आदिवासी तथा हरिजन छात्रावासो मे जाते जहा आदिवासी या हरिजन छात्रावास होते तो बहुधा रात्रि मे वही रुकते और छात्रो से बीडी न पीने की शपथ लेते।

वर्माजी ने हजारो स्त्रियो के घू घट छुडा दिए वडी सख्या मे शराब पीना छुडा दिया। एक बार बिजोलिया मे मृत्यु भोज पचायत की सहमति से होगया तो उन्होने एक बहुत कड़ा पत्र लिखा और दीर्घकाल तक वहा गए नही। जब पचो ने क्षमा मांगी और शपथ ली तब गए। समाज सुधार कार्य करने का उनका तरीका कितना प्रभावशाली था यह उनकी डायरी मे नीचे लिखे विवरण से स्पष्ट हो जाता है।

१३ अप्रेल १९६७ "आज सुबह सराडा के स्त्री पुरुष और बच्चे एकत्रित हुए। नौजवानो ने बीडी तम्बाकू चाय छोडी वृद्धो ने शराब छोडने, हस्ताक्षर करना सीखने की प्रतिज्ञा की। महिलाओ ने घू घट छोडा। इस गाव का नाम आनन्दपुर रखना तय किया। इसी प्रकार वे गाव गाव जाकर सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध अभियान चलाते थे।

यह बहुत कम लोग जानते है कि जहा वर्माजी एक बडे राजनीतिक नेता थे वहा वे एक बहुत बडे समाज सुधारक भी थे। जो काम एक बडी से बडी समाज सुधार की सस्था करती उससे कही अधिक कार्य सामाजिक रूढियो और कुरीतिया को मिटाने का उन्होने अकेले स्वय किया था। वे स्वय में एक बहुत बड़ी समाज सुधारक संस्था थे।

यद्यपि वे जीवन पर्यन्त कांग्रेस में रहे और राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के प्रति उनकी असीम भक्ति और श्रद्धा थी परन्तु उनको अहिसा मे उतना गहरा विश्वास नही था। आवश्यकता पडने पर वे हिंसा को अपनाने के पक्ष मे थे, अवश्य ही वे हिंसा को उपयोग उसी समय करने के पक्ष मे थे जबकि न्यायोचित उद्देश्य के लिए हो और दूसरा कोई विकल्प न हो। यही कारण था कि जब श्री जमनालाल बजाज ने उन्हे गाधी आश्रम वर्धा मे स्थायी रूप मे रखना चाहा तो उन्होने अस्वीकार कर दिया।

जीवन के अन्तिम वर्षो मे गाधी जी और आचार्य विनोबा भावे की अहिसा और हृदय परिवर्तन के प्रयोगो पर उनकी आस्था समाप्त हो चली थी। जीवन के अन्तिम वर्षो मे वे पुन देश की वर्तमान परिस्थितियो के विरुद्ध विद्रोह का शखनाद करना चाहते थे।

यद्यपि वे कांग्रेस सगठन तथा शासन मे बढते हुए भ्रष्टाचार, पदलोलुपता,

स्वार्थपरता, चरित्रहीनता तथा प्रतिक्रियावादी तत्वों से समझौता करने की प्रवृत्ति की कड़ी निन्दा करते थे और कहा करते थे कि यदि काग्रेस मे परिवर्तन नही हुआ तो देश मे साम्यवाद आवेगा परन्तु फिर भी उनकी पूरी निष्ठा काग्रेस के लिए ही समर्पित थी। कम्युनिष्टो की विदेशी निष्ठा को वे किसी भी दशा मे क्षमा नही कर सकते थे। यही कारण था कि काग्रेस के आर्थिक कार्यक्रमो तथा रीति नीति से असंतुष्ट होने हुए भी देश के लिए वे उसको आवश्यक समझते थे।

उनके अन्तर का कण कण देश भक्ति की भावनाओ से ओतप्रोत था और वे केवल यही चाहते कि देश मे गहन राष्ट्रीयता व्याप्त हो और राष्ट्रीय तत्व शक्तिशाली हो।

यद्यपि जीवन भर उन्होने निर्धन किसानो, हरिजनो, आदिवासियो, घुमक्कड जातियो तथा शोषितो और पीड़ितो के लिए काम किया था परन्तु जीवन के अन्तिम वर्षो में आर्थिक दृष्टि से पिछड़े साधनहीन गरीबी के बोझ से दबे हुए साधनहीन ब्राह्मण राजपूत वैश्य तथा अन्य उच्च जातियो को भी अनुसूचित जातियो के समान ही राज्य द्वारा साधन सुविधा देने की वे माग करने लगे थे।

वर्माजी कभी पूजापाठ धार्मिक कृत्य इत्यादि नही करते थे। उनका पूजापाठ और धार्मिक कृत्य देश तथा शोषितो और पीडितो की सेवा थी। प्रात काल वे जल्दी उठते, शौचादि तथा स्नान मे निवृत्त हो, जलपान कर वे सेवाकार्य मे जुट जाते। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण देश के लिए ही समर्पित था यही उनकी पूजा और तपस्या थी यही उनका एक मात्र आराध्यदेव था, वे केवल एक मत्र जानते थे " करो देश सेवा बनो तुम फकीर " सब कुछ देश पर निछावर करना और देश के लिए अपने को मिटा देना ही एक मात्र उनकी साधना थी।

जयहिन्द

परिशिष्ट—१

ने जीवनकाल मे देश सेवा के उपलक्ष में २१५७ दिन कारागार में रहे उसका ब्योरा इस प्रकार है :-

वर्माजी की जेल यात्रा

१९१८ मे ३ दिन	१९३०—३१ में ९० दिन
१९१९ मे ९३ दिन	१९३२—३३
१९२३ मे ३५ दिन	एव ३४ मे ६०० दिन
१९२७-२८	१९३८ मे ९० दिन
एव २९ मे ७५५ दिन	१९४२ मे ४९१ दिन
	योग— २१५७ दिन

परिशिष्ट—२

महाप्रयाण

वर्माजी को २३ जनवरी १९६९ की रात्रि को बारह बजे अचानक पेट का दर्द उठा और लगभग डेढ बजे दिल का दौरा पडा, अनुभवी डाक्टरो के सब प्रयत्न विफल हुए, सात आठ घण्टे की अल्पकालीन बीमारी के बाद २४ जनवरी १९६९ को प्रात:काल आठ बजे वह महान् देश भक्त जो केवल देश के लिए ही जिया जिसका प्रत्येक रोम देश के लिए अर्पित था, सोते जागते खाते पीते जिसे केवल देश की ही चिन्ता थी वह सौ युद्धों का योद्धा हृदय-गति रुक जाने से महाप्रयाण कर गया।

यह समाचार विद्युत की भाति फैल गया। उनका पार्थिव शरीर भूपालपुरा स्थित उनके निवास स्थान पर एक बर्फ की शिला पर फूलो से ढक कर रख दिया गया। उदयपुर तथा समीपवर्ती क्षेत्रो से हजारो की सख्या मे जनता अपने प्रिय नेता को अन्तिम श्रद्धाजलि देने के लिए उमड पड़ी। समस्त राजस्थान पर शोक की काली छाया फैल गई। २५ जनवरी के प्रात:काल राजस्थान के कौने कौने से लोग अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन करने और अपनी श्रद्धा के सुमन चढाने के लिए उदयपुर पहुंचे।

मुख्य मत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया कलकत्ते में थे २५ जनवरी के प्रात:काल उदयपुर पहुच गए। हवाई अड्डे से सीधे वर्माजी के निवास स्थान पर पहुँचे, अपने राजनीतिक गुरु नेता और पिता तुल्य लोक नायक वर्माजी को चिर निद्रा मे सोते देख वे बालको के समान विलख कर रोने लगे। सुखाडिगा जी का अन्तर पीडा और विषाद से भर गया। २५ जनवरी के प्रात.काल राजस्थान सरकार के सभी मंत्री प्रदेश कांग्रेस

के अध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, विधान सभा के स्पीकर, मेवाड़ प्रजामडल के पुराने साथी, विधान सभा के अधिकांश सदस्य, सैकडो की सख्या मे राजनीतिक और रचनात्मक कार्यकर्ता, उच्च सरकारी अधिकारी, व्यापारी, किसान, मजदूर, विद्यार्थी, पत्रकार हजारो की संख्या मे उपस्थित थे ।

शवयात्रा भव्य रूप से सुसज्जित ट्रक पर अत्यन्त समारोह पूर्वक निकाली गई । उनका पार्थिक शरीर राष्ट्रीय ध्वज में लिपटा हुआ था और सुगन्धित पुष्पो से लदा था । लोकनायक वर्माजी के पार्थिव शरीर की अन्तिम यात्रा आरम्भ होने से पूर्व पुलिस दल ने गार्ड ऑफ आनर दिया और बैंड ने शोक ध्वनि बजाई । शव यात्रा आरम्भ होने से पूर्व राजस्थान सरकार के सभी मत्रियो अधिकारियो और असख्य जन समुदाय ने पुष्पांजलि अर्पित की । लगभग ग्यारह बजे उनकी शव यात्रा आरम्भ हुई । मार्ग मे दोनो ओर खड़े हुए तथा मकानो की छतो पर चढे हुए हजारो स्त्री पुरुषो और बच्चो ने अपने प्रिय दिवगत नेता पर पुष्प वर्षा कर उनको अपनी अन्तिम श्रद्धाजलि अर्पित की ।

वर्माजी के एकमात्र आत्मज दीनबन्धु वर्मा तथा उनके राजनीतिक शिष्य और उत्तराधिकारी मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने चिता की अग्नि प्रज्ज्वलित की, समस्त शमशान भूमि, मेवाड़ केसरी माणिक्यलाल वर्मा अमर हैं, के शेरे राजस्थान जिन्दाबाद, लोकनायक वर्माजी जिन्दाबाद के गगनभेदी नारो से गूंज उठी पच्चीस हजार शोकाकुल वर्माजी के प्रशसको और भक्तो के सामने उनका पार्थिव शरीर भस्म हो गया । उदयपुर, नाथद्वारा, चित्तौड़, वेगू, बिजोल्या आदि अनेक स्थानो मे हड़ताल रही । समस्त राजस्थान मे २५ जनवरी को सार्वजनिक अवकाश घोषित कर दिया गया । उदयपुर मे दो दिन का सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया । दोनो दिन झडे झुके रहे । वर्माजी के निधन पर उदयपुर शोक मग्न हो उठा । प्रत्येक व्यक्ति ऐसा अनुभव करता था कि मानो उनका कोई अत्यन्त निकट का प्रियजन स्वर्गवासी हो गया । बिजोल्यां, वेगूं, चित्तौड़, उदयपुर के किसान आदिवासी, घुमक्कड़ जातियो के लोग फूट फूट कर रोते और कहते कि हम अपना दुख दर्द अब किससे जाकर कहेगे । वे निस्सहायक अनुभव कर रहे थे, उनका सच्चा हितैषी चला गया ।

वर्माजी मृत्यु के सम्बन्ध मे जो कामना करते थे कि रोग शय्या पर दीर्घ काल तक रोग ग्रस्त होकर नही मरना चरितार्थ हो गई, कुछ घण्टो मे ही सब कुछ समाप्त हो गया । जीवन भर जन जन की सेवा करने वाले वर्माजी ने किसी से सेवा नही ली । वर्माजी के निधन पर तत्कालीन राष्ट्रपति डाक्टर जाकिर हुसैन, प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से लेकर देश के सभी नेताओ तथा साधारण कार्यकर्ताओ के देश के कोने कोने से हजारो की सख्या मे तार और पत्र आए जिनमे वर्माजी की देश के प्रति की गई महान सेवाओ की चर्चा कर उनके प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई थी ।

वर्माजी के पार्थिव शरीर की भस्मि पुष्कर तीर्थ मे श्री मोहनलाल सुखाडिया मुख्यमन्त्री ने प्रवाहित की और हरिद्वार मे उनके पुत्र दीनबन्धु वर्मा ने प्रवाहित की । यद्यपि वर्माजी का भौतिक शरीर नष्ट हो गया परन्तु उनका यश शरीर और उनके सेवा

कार्यों की सुरभि सदैव जीवित रहेगी। आगे आने वाली पीढिया याद करेगी कि एक ऐसा भी व्यक्ति था जिसने जीवन भर देश और समाज को दिया ही दिया उससे लिया बहुत कम।

वर्माजी के निधन पर "माणिक्य लाल वर्मा स्मारक समिति" का गठन हुआ, उनके कार्य क्षेत्र के प्रमुख केन्द्रो मे उनके स्मारक निर्माण करने के लिए पाच लाख रुपये एकत्रित करने का निश्चय किया गया परन्तु शीघ्र ही समिति निष्क्रिय हो गई। वर्माजी का स्मारक बनाने का कोई प्रयत्न नही किया गया। जहा वर्माजी का दाह सस्कार हुआ था, वहां अवश्य एक समाधि बनाई गई।

मुख्यमन्त्री सुखाड़िया जी की प्रेरणा से राजस्थान सरकार ने अवश्य ही कतिपय शिक्षा सस्थाओ तथा तालाबो के नाम वर्माजी के नाम पर रख दिए। होना तो यह चाहिए था कि वर्माजी के नाम पर एक सेवक सघ की स्थापना होती जो देश सेवा करने के लिए अपना जीवन अर्पित करने वालो को तैयार करता, परन्तु यह सब कुछ न हो सका, बहुत शीघ्र ही जैसे हम वर्माजी को भूल गए।

परिशिष्ट—३

परिवार

वर्माजी अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती नारायणी देवी वर्मा, पांच पुत्रियाँ सुश्री स्नेहलता, सुशीला, सत्यवती, सुमित्रा, शीलवती तथा एकमात्र पुत्र दीनबन्धु वर्मा को छोड़ कर गए।

श्रीमती नारायणी देवी वर्मा : जब श्रीमती नारायणी देवी का वर्माजी से विवाह हुआ उस समय वे बारह तेरह वर्ष के लगभग थी। विवाह के कुछ दिनों के बाद ही वर्माजी ने ठिकाने की नौकरी छोड़ कर पथिक जी की प्रेरणा से आजन्म देशसेवा का व्रत ले लिया। नव विवाहित वधू की सुख सुविधाओ और अमोद प्रमोद से वचित होकर वे पति के साथ देश सेवा के कठिन यज्ञ में अर्धागिनी के रूप मे अपनी आहुति देने को तैयार हो गई। लेखक कभी कभी यह सोचता है कि चौदह पन्द्रह वर्ष की नारायणी देवी जिनको शिक्षा प्राप्त करने का कभी अवसर नही मिला, जो वैवाहिक जीवन के मधुर स्वप्नो को अपने मन में सजोये अपने पितृ गृह से पति गृह आई और आते ही उन्होने देखा कि वर्माजी ने देशसेवा का कटकाकीर्ण मार्ग अपना लिया है तो वे एक क्षण के लिए भी विचलित नही हुई, विरोध मे एक शब्द भी नही कहा नितांत अभाव के जीवन की एक क्षण भी शिकायत नही की और अपने पति के कधे से कंधा

मिलाकर एक सच्ची जीवन सगिनी की भाति वे भी देश सेवा के उस महान यज्ञ मे जुट गई तो वह कभी कभी सोचता है कि वर्माजी अपने जीवन मे जो कुछ कर सके उसका श्रेय उनकी धर्मपत्नी को है। नारायणी देवी जी ने घर की चिन्ता से वर्माजी को मुक्त कर दिया। उन्होने केवल गृहस्थी का भार ही अपने ऊपर नही उठाया वरन वर्माजी के सेवाकार्य मे भी उनकी सहायता की। बिजोल्या आदोलन के समय उन्होने खेतो पर मजदूरी की, उमाजी के खेडे मे वर्माजी के साथ मिलकर रहने के लिए मकान बनाया, महिलाओ को सगठित किया, मेवाड प्रजामडल का जब आदोलन हुआ तो उन्होने स्वयं सत्याग्रह किया और जेल गई और जब वर्माजी गिरफ्तार हो गए तो अजमेर में रहकर मेवाड़ प्रजामडल के कार्यकाल का स्वय सचालन किया क्योकि सभी कार्यकर्ता जेल में चले गए थे। कुम्भलगढ की नजरबन्दी के समय तथा डूगरपुर मे जब वर्माजी ने भीलो में कार्य किया तो वे उनके सेवा कार्य मे एक कर्मठ कार्यकर्ता की भाति कार्य करती रही। सच तो यह है कि जहां वर्माजी अपने देश सेवा के कार्य को ही करते थे वे एक सक्रिय कार्यकर्त्ता और गृहणी के दो कर्त्तव्यो को निबाहती थी। वास्तविकता तो यह है कि वे सच्चे अर्थो मे वर्माजी की जीवन सगिनी थी। और वर्मा जी के देश सेवा के महान कार्य के पीछे श्रीमती नारायणी देवी की तपस्या और साधना का बल था।

अधिक शिक्षा प्राप्त करने का उन्हे अवसर नही मिला परन्तु उनको भगवान ने प्रभावशाली व्यक्तित्व और कुशाग्र बुद्धि तथा व्यवहारिक सूझबूझ का धनी बनाया है यही कारण था कि स्वय वर्माजी उनको अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखते थे और उनकी बात ध्यान से सुनते थे। वर्माजी यह जानते थे और मन में समझते थे कि उनके राजनीतिक जीवन तथा देश सेवा के कार्य के पीछे उनकी पत्नी की महान तपस्या और साधना है यही कारण था कि श्रीमती नारायणी देवी का वर्माजी पर गहरा प्रभाव था। श्रीमती नारायणी देवी ने भीलवाडे के महिला आश्रम तथा उदयपुर के आदिवासी कन्या छात्रावास की सचालिका के रूप मे व्यवस्था करने की क्षमता का जैसा परिचय दिया है वह उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व को और अधिक तेजवान बनाता है।

जब वर्माजी पूर्व राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने तो भी श्रीमती नारायणी देवी ने अपने सादे जीवन मे कोई परिवर्तन न आने दिया। वर्मा परिवार पहले की तरह सादा जीवन व्यतीत करता था, मुख्यमन्त्री पद ने वर्मा परिवार मे शान शौकत, वैभव विलास की भूख जागृत नही की। दीर्घकालीन अभावो का जीवन व्यतीत करने के उपरान्त भी वर्मा परिवार वैभव की लालसा से अभिभूत नही हो गया, इसका श्रेय श्रीमती नारायणी देवी को ही है। यही नही श्रीमती नारायणी देवी ने भविष्य मे कभी मन्त्री पद स्वीकार न करने के लिए वर्माजी पर बहुत जोर डाला था और जो वर्माजी ने बाद की सत्ता मे जाने से इन्कार कर दिया उसका एक कारण श्रीमती नारायणी देवी तथा उनकी पुत्रियो का प्रबल विरोध था। बहुधा होता यह है कि सत्ता मे जाने वाले राजनीतिज्ञो की पत्निया और परिवार के लोग ही उनके अपवाद और कलंक के कारण बनते है किसी की पत्नी, किसी का पुत्र, किसी का भाई और भतीजे और किसी की

पुत्रियां तथा किसी का साला, उनकी सार्वजनिक प्रतिष्ठा और यश को धूमिल करता है परन्तु वर्मा परिवार ही ऐसा था कि जिसे सत्ता का विष दूषित नही कर सका। वर्मा परिवार ने सत्ता के विष भरे पद पर ही केवल विजय प्राप्त नही की वरन् सत्ता को भी तिलांजलि दे दी।

कुछ लोग श्रीमती नारायणी देवी को केवल वर्माजी की धर्मपत्नी के रूप मे ही देखते हैं। वर्माजी जैसे गौरवशाली जन नायक की पत्नी होना जहां एक महान गौरव की बात है वहां उनका अपना निज का प्रभावशाली व्यक्तित्व है उनका अपना सेवाकार्य है उसको दृष्टि से ओझल करना उनके प्रति न्याय करना नही होगा। कांग्रेस द्वारा उन्हें राज्य सभा का टिकिट देना वर्माजी की पत्नी का ही सम्मान नही वरन उनके निज के प्रभावशाली व्यक्तित्व और सेवाकार्य की स्वीकारोक्ति है।

वर्माजी के आत्मज श्री दीनबन्धु वर्मा का परिचय

दीनबन्धु : वर्माजी के एकमात्र पुत्र दीनबन्धु का शैशवकाल उस समय व्यतीत हुआ कि जब वर्माजी देशी राज्य से संघर्ष कर रहे थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत उन्होने महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर मे शिक्षा प्राप्त की। शान्त, गम्भीर, शिष्ट परन्तु दृढ दीनबन्धु ने राष्ट्रप्रेम तथा देश सेवा का गुण विरासत मे प्राप्त किया है। वर्माजी की भावना थी कि वे तो स्वयं खेती के द्वारा अपने तथा श्रीमती नारायणी देवी के लिए आय प्राप्त करे और दीनबन्धु कोई स्वतन्त्र धन्धा करे। उन्होने अपनी डायरी में इस सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार लिखा है.

"११ अगस्त १९५९ आज श्री मनुभाई शाह से (केन्द्रीय सरकार के उद्योग मन्त्री) मे मिला। मैंने कहा खेती करता हू परन्तु जीवन निर्वाह खेती पूरा नही करती। राजस्थान सरकार का अहसान मुझे नही लेना है। इसलिए दीनबन्धु क्या धन्धा करे सलाह बतावे। श्री भागीरथ जी कनोडिया का पावरलूम का सुझाव भी बताया। श्री शाह ने कहा पावरलूम मे स्कोप नही है। पहले एक वर्ष कलकत्ता रहकर व्यवसाय को चलाने तथा तकनीकी ट्रेनिंग ले ले, फिर २०-२५ हजार का कोई भी काम शुरू करदे भारत सरकार अस्सी प्रतिशत कर्जा दे देगी। राजस्थान सरकार के अहसान की जरूरत नही।"

वर्माजी अपने एक मात्र पुत्र के लिए भी अपने राजनीतिक प्रभाव को काम मे नही लाना चाहते थे। परन्तु व्यवसाय के लिए पूंजी की व्यवस्था न हो सकी और दीनबन्धु को जिंक स्मैल्टर मे नौकरी करनी पडी। परन्तु उनको वह पसन्द नही आई कुछ ही समय के उपरात उन्होने वहा से त्यागपत्र दे दिया और कांग्रेस के सक्रिय सदस्य के रूप मे वे राजनीति मे आज सक्रिय है। वर्माजी जैसे तेजस्वी राजनीतिक नेता के पुत्र मे यदि राजनैतिक जीवन के प्रति झुकाव हो तो यह कोई आश्चर्य की बात नही है यह स्वाभाविक ही हे। आशा है कि संघर्षमय राजनीतिक जीवन मे दीनबन्धु वर्माजी के सच्चे उत्तराधिकारी सिद्ध होगे।

श्रीमती स्नेहलता वर्मा—संक्षिप्त परिचय

श्रीमती स्नेहलता वर्मा स्व. लोकनायक श्री माणिक्यलालजी वर्मा की ज्येष्ठ संतान हैं। आपका जन्म सन् १६२२ मे बिजोल्या मे ही हुआ। स्व. वर्मा साहब के राजनैतिक जीवन का दुष्परिणाम वैसे तो सभी सतानो को भोगना पडा, किन्तु ज्येष्ठ सन्तान होने से आपको अन्यो की तुलना मे अधिक कठिनाइयो से गुजरना पड़ा। बाल्य-काल में आपको अधिकतर खानाबदोश का जीवन व्यतीत करना पडा, परिणाम स्वरूप आपकी समुचित शिक्षा दीक्षा नही हो सकी। प्रारम्भिक शिक्षा नारेली आश्रम मे हुई, किन्तु अपनी शिक्षा का अधिकतर भाग आपने निजी रूप से पूरा किया। निजी रूप से अध्ययन कर आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की रत्न परीक्षा उत्तीर्ण की।

इस बीच मे आपने राजनैतिक गतिविधियो मे भी भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। मेवाड प्रजामंडल की स्थापना के समय से आप राजनीति मे क्रियाशील हैं। सन् १६३८ मे आपने महिलाओ के एक जत्थे का नेतृत्व किया, तथा बन्दी बनाई गईं।

सन् १६४४ से आपने भीलवाडा को अपना निवास स्थान बनाया तथा मुख्य रूप से स्त्री शिक्षा के लिए अपने को समर्पित कर दिया। महिला आश्रम, भीलवाड़ा की स्थापना करने मे एवं इसे उन्नति की ओर अग्रसर करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान है।

श्रीमती स्नेहलता वर्मा की राजनीति मे भी वैसी ही रुचि है जैसे कि स्त्री शिक्षा के क्षेत्र मे, किन्तु इस रुचि का प्रदर्शन उन्हे मर्यादा के भीतर करना पड़ता है। निजी स्तर पर अनेक लोगो की अनेक प्रकार से सहायता करने को हर समय तत्पर रहती हैं। आपके पास सहायता के लिए पहुँचने वाले पीडित व शोषित वर्ग के वे लोग हैं जो या तो कही नौकरी मे सहायता चाहते हैं या अपने दवा-दारू की व्यवस्था। सरकारी काम काज मे भी अपने पास आने वालों की यथाशक्ति सहायता करती हैं।

भीलवाडा जिले मे केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के महिला एवं बाल कल्याण के कार्यो को सर्व प्रथम आपने ही स्थापित किया था। सन् १६५२ में इस प्रकार की योजना यहां प्रारम्भ हुई जिसकी योजना समिति की आप ही चेयरमैन थी।

सरलता, स्पष्टता एव निर्भीकता आपके मुख्य गुण हैं। अन्याय का प्रतिकार करने मे आप कभी नही घबराती तथा उसके लिए सकट भी उठाने को तैयार रहती है।

श्रीमती सुशीला माथुर—एक परिचय

स्व० लोकनायक श्री माणिक्यलाल वर्मा की सतान में श्रीमती सुशीला माथुर का स्थान दूसरा है। आपका जन्म सन् १६२८ में वर्मा साहब के पैतृक निवास स्थान बिजोल्यां में हुआ। वर्मा साहब के आंदोलनकारी जीवन के कारण आपके लालन पालन का अधिक भार आपकी माता श्रीमती नारायणी देवी वर्मा को उठाना पड़ा।

आपका बाल्यकाल अधिकतर सकटो मे बीता, जिसमे न निवास का स्थायित्व था, न ही शिक्षा दीक्षा की कोई समुचित व्यवस्था। प्रारंभिक शिक्षा ६ वर्ष की अवस्था मे दिल्ली मे हुई, किन्तु वहा भी कठिनाइयां उपस्थित हुई। बाद की शिक्षा एक वर्ष तक नरेली आश्रम मे तथा हाई स्कूल तक की शिक्षा वनस्थली विद्यापीठ मे हुई। नवी कक्षा की पढाई करते समय देश मे सन् १९४२ की प्रसिद्ध अगस्त क्राति हुई जिसमे आपने भी हिस्सा लिया तथा लगभग ६ मास तक कारावास मे रहना पडा। शिक्षा के प्रति आपका अत्यन्त लगाव रहा है तथा अनेक बाधाओ को सहते हुए भी आपने उसे जारी रखा तथा प्राइवेट रूप से बी. ए. की उपाधि प्राप्त की।

आपका विवाह श्री शिवचरण जी माथुर (वर्तमान में राजस्थान के कृषि, पशुपालन, भेड़ व ऊन, खाद्य एवं नागरिक रसद मन्त्री) के साथ उदयपुर मे सन् १९४६ मे सपन्न हुआ। उस समय वहा देशी राज्य लोक परिषद का अधिवेशन प० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे हो रहा था। प० नेहरू ने विवाह सस्कार मे शामिल होकर आपको आशीर्वाद प्रदान किया। इस अधिवेशन मे ही आपने अध्यक्ष के जलूस का भी नेतृत्व किया था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश की राजनैतिक एव सामाजिक स्थिति मे परिवर्तन हुआ। परिवर्तित परिस्थितियो मे कुछ काल तक आपने राज्य शिक्षा विभाग मे अध्यापिका का पद स्वीकार किया, किन्तु इसे आपने राजनैतिक एव सामाजिक जीवन में बाधक पाकर बालिका माध्यमिक (मिडिल) विद्यालय की प्रधानाध्यापिका के पद पर राजकीय सेवा से छुट्टी ले ली।

आपकी रुचि राजनीति के क्षेत्र में निरन्तर रूप से विकसित होती रही है तथा वर्तमान मे अपने पति श्री शिवचरण माथुर की सभी प्रकार के कार्यो मे सहायता करती हैं। मन्त्रिपद के कार्यों को निपटाने मे श्री माथुर साहब को अधिक व्यस्त रहना पडता है, किन्तु उनके सगठन व अपने क्षेत्र के कई गुरुत्तर कार्य आप स्वय देखती है तथा सच्चे अर्थो मे उनकी सहधर्मिणी है। प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी की प्रगतिशील नीतियो मे आपकी अटूट आस्था है तथा इसके लिए आपने बडे से बडा त्याग करने मे जरा भी आगा पीछा नही किया है।

स्त्री शिक्षा एव समाज कल्याण के क्षेत्र मे भी आपकी उपलब्धियां श्लाघनीय हैं। भीलवाड़ा मे बालिका शिक्षा के क्षेत्र मे महिला आश्रम का विशिष्ट स्थान है तथा आप उसकी मन्त्री हैं, इस सस्था को साधारण विद्यालय से हायर सैकण्डरी स्तर (कला एव विज्ञान विषयो के साथ) प्रदान करने में आपका पूर्ण सहयोग रहा है। यह संस्था अब स्त्री शिक्षा बाल कल्याण एव ग्रामोद्योग के क्षेत्र मे अपने ढग से बढ रही है तथा इन सबके पीछे आपकी सूझबूझ, लगन एवं अध्यवसाय है।

श्रीमती माथुर एक सरल हृदय महिला हैं, किन्तु इस सरलता के बीच आप राजनीति की कई पेचीदगियो को हल करने मे सक्षम हैं। कठिनाइयो मे कभी विचलित नहीं होना आपका प्रधान गुण है। आप उस दिन की प्रतीक्षा मे है जब देश से शोषण

एव असमानता समाप्त होगी तथा देश मे सच्चे अर्थो मे समाजवाद की स्थापना होगी। यह भावना आपको अपने पिता से विरासत मे मिली है।

श्रीमती सत्यवती का जीवन परिचय

वर्माजी की तीसरी पुत्री श्रीमती सत्यवती ने अपने सस्मरण लिख भेजे थे जिन्हे ज्यो का त्यो यहां दे रहा हूं .

"जन्म ३० जुलाई १९३० मे बिजोल्यां कस्बे मे हुआ। बचपन हमारा किन कठिनाइयो मे व्यतीत हुआ इसका हमे स्मरण नही। डूगरपुर की निर्वासित अवस्था मे हमारा सम्पर्क वहां की भील जाति से हुआ। वे ही हमारे पडौसी थे। बचपन मे हमारी शिक्षा हमारे पिताजी द्वारा स्थापित पाठशाला मे ही हुई। पिताजी का दिन भर काम गांव में जा जा कर अपने उन्ही की भाषा मे दिए गए भाषण तथा गानो से गाववालो मे देश के प्रति जागरूकता पैदा करना था।

सामाजिक कुरितियो पर भी उनके अच्छे गाने बनाये हुए थे। उदयपुर मे पिताजी को बार-बार पुलिस द्वारा पकड कर ले जाना हमे याद है पर हम घबराते नही थे हममे जोश पैदा होता था। उनका अधिकतर समय जेलो मे ही व्यतीत हुआ। हमारी पढाई की अच्छी व्यवस्था के लिए वनस्थली विद्यापीठ भेज दिया गया। वहा पर हमने ८वी कक्षा तक अध्ययन किया।

१९४२ मे हम वनस्थली से आ गए और उदयपुर मे रहकर एम ए. किया। १९५३ मे मेरा विवाह हो गया। मेरे पति राजस्थान विद्युत मण्डल मे अधिशासी अभियता है। मै यहां नरेन्द्र वी दुर्लभजी बालमन्दिर की प्रधानाध्यापिका हू। पिताजी की देश के प्रति आस्था तथा उसके लिए उनके द्वारा दी जाने वाली कुर्बानियो ने हमारे मन में भी देश को प्राथमिकता दी। ईमानदारी से कार्य किये जाओ यही हमारे पिताजी की शिक्षा है।"

श्रीमती सुमित्रा पंडित

श्रीमती सुमित्रा पडित वर्माजी की चौथी पुत्री है। उनका जन्म १९३१ मे बिजोल्यां के समीप उमाजी के खेड़ा गांव में हुआ था। यह वही गाव है जहां कि वर्माजी ने ठिकाने की नौकरी छोडकर पथिकजी की प्रेरणा से देशसेवा का आजन्म व्रत लेकर पाठशाला चलाई थी और बिजोल्या आदोलन का सचालन किया था। उनका बालकपन उस समय व्यतीत हुआ, जब वर्माजी बिजोल्यां आदोलन, भील सेवाकार्य (डूंगरपुर) तथा बाद को प्रजामडल मे जुटे हुए थे। अस्तु उनका बालकपन अभावो और कष्टो में व्यतीत हुआ।

वर्माजी ने उन्हे शिक्षा के लिए वनस्थली विद्यापीठ भेज दिया परन्तु साधनो के अभाव से उदयपुर के राजकीय कन्या स्कूल मे प्रवेश दिलाकर कुछ वर्षों बाद उदयपुर बुला लिया। श्रीमती सुमित्रा पडित आरम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि, मेधावी थी। हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर वे महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर में विद्याध्ययन के लिए

आई । उस समय तक उदयपुर मे कोई कन्या महाविद्यालय नही था । इनकी माता श्रीमती नारायणी देवी वर्मा को, उन्हे लडको के कालेज मे भेजने मे थोड़ी हिचक थी लेखक उसी वर्ष महाराणा भूपाल कालेज का आचार्य होकर उदयपुर आया तो उन्होने उनका प्रवेश कालेज मे करा दिया ।

जब वे कालेज मे अध्ययन कर रही थी उस समय वर्माजी पूर्व राजस्थान के मुख्य मन्त्री थे परन्तु उनमे इस बात का लेशमात्र भी अहकार नही था । एक दिन भी वे मुख्य मन्त्री की अथवा अन्य सरकारी मोटर मे कालेज नही आई, । कालेज के लिए जो लडकियो की बस थी उसी मे वे कालेज आती थी । कालेज के सास्कृतिक कार्यक्रमो मे वे सक्रिय भाग लेती थी । शास्त्रीय सगीत मे उनकी अच्छी गति थी । वे कालेज की एक मेधावी छात्रा थी ।

बी ए. कर लेने के उपरान्त उनका विवाह जयपुर के श्री चन्द्र प्रकाश पंडित से हुआ । श्री पडित ने एक सफल टुअरिस्ट एजेन्सी 'मयूर एजेन्सी' की स्थापना की थी । दुर्भाग्यवश श्रीमती सुमित्रा पडित का दाम्पत्य जीवन अल्पकालीन रहा । उनके पति का जनवरी १९६८ मे हृदयगति रुक जाने से यकायक स्वर्गवास हो गया । श्रीमती सुमित्रा पडित पर वज्र प्रहार हुआ । उन पर घर तथा व्यापार का समस्त भार आ गया । इस भयकर आघात को उन्होने जिस धैर्य साहस और दृढता के साथ सहन किया वह उनके दृढ व्यक्तित्व का सूचक है ।

उन्होने केवल अपने दिवगत पति के व्यवसाय को सम्हाला ही नही उसको और अधिक विकसित और उन्नत बनाया । आज वे मयूर यात्री एजेन्सी तथा पडित गैस सर्विस का सफल सचालन कर रही है ।

श्रीमती शीला माथुर

श्रीमती शीला माथुर वर्माजी की पाचवी पुत्री है । उनका जन्म १९४१ मे कपासन मे हुआ । उस समय वर्माजी मेवाड प्रजा मडल का सगठन कार्य करते हुए कपासन मे रह रहे थे । शीला की शिक्षा दीक्षा उदयपुर मे हुई । महाराणा भूपाल-कालेज, उदयपुर से शिक्षा प्राप्त कर उन्होने राजस्थान-विश्वविद्यालय से एम. ए. इतिहास की उपाधि प्राप्त की. आकर्षक व्यक्तित्व और स्वभाव की अत्यन्त मधुर होने के साथ साथ उन्हे अपने पिता के सभी गुण उत्कट देश प्रेम, स्वाभिमान सादगी और चरित्र की दृढता विरासत मे प्राप्त हुए है । उनका विवाह राजस्थान सरकार के विद्युत विभाग के इन्जीनियर श्री प्रेमनारायण माथुर से हुआ है ।

व्यासजी से मतभेद अध्याय की परिशिष्ट

वर्माजी के संबंध में स्टेटसमैन की टिप्पणी

स्टेटसमन १४ मई, १९५१

व्यास मंत्रिमंडल को कांग्रेस का समर्थन प्राप्त

काग्रेस में फूट पडने की कोई सम्भावना नही, किशनगढ़ अधिवेशन का शुभ परिणाम

राजस्थान काग्रेस मे जो एकता दृष्टिगोचर हुई उसका सारा श्रेय श्री माणिक्यलाल वर्मा को है जो कि सर्वसम्मति मे काग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। उनको राजस्थान मे सभी काग्रेसजन उनकी सेवाओ के कारण श्रद्धा की दृष्टि से देखते है।

अपने जीवन के प्रारभिक काल मे वे एक ठिकानेदार की सेवा मे थे। उन्होने उदयपुर राज्य के बिजोलिया ठिकाने के किसानो को सत्याग्रह के लिए संगठित करने तथा उनका नेतृत्व करने के लिए ठिकाने की नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। राजस्थान का यह दावा है कि वह भारत का सर्व प्रथम सत्याग्रह था। महात्मा गांधी ने अफ्रीका से वापस लौटकर जो देशव्यापी सत्याग्रह छेडा इससे भी पूर्व बिजोलिया मे किसान सत्याग्रह हुआ। उस सत्याग्रह के फलस्वरूप उस क्षेत्र के किसानो को मूल्यवान अधिकार प्राप्त हुए थे। किसान सत्याग्रह उनको उनके अधिकार दिलाने मे सफल हुआ। जब से वर्माजी को वहा की जनता एक वीर पुरुष के रूप मे श्रद्धा करती है।

पूर्व राजस्थान के मुख्य मत्री की हैसियत से उन्होने पूर्व राजस्थान मे दस राज्यो के जागीरदारो के सभी प्रशासनिक, न्यायिक और राजस्व अधिकार समाप्त कर दिए। दृढ वाम पक्षीय विचार धारा के होने के कारण नेहरूजी का उन पर गहरा विश्वास है। नेहरूजी के अतिरिक्त काग्रेस कार्यकर्ता किसान और मजदूरो को भी उनमे गहरी आस्था है। वे जान-बूझ कर मत्रिमडल मे इस कारण नही गए क्योंकि वे राजस्थान मे आगामी चुनावो के लिए काग्रेस को सुसगठित करना चाहते हैं। उन्होने राजस्थान काग्रेस कमेटी के सदस्यो को सबोधित करते हुए स्पष्ट शब्दो मे कहा कि वे जेल जाने की पुरानी देश सेवा के उपलक्ष में चुनाव मे काग्रेस के प्रत्याशी के रूप चुने जाने की आशा न करे। अतएव उन्हे जनता के बीच जाना चाहिए और उनकी सेवा कर उनके विश्वास को प्राप्त करना चाहिए। जो लोग अधिकतम मतदाताओ का समर्थन प्राप्त कर लेगे वे ही काग्रेस के प्रत्याशी चुने जावेगे।

वे एक दृढ़ व्यक्ति थे

लोकप्रिय होने के साथ ही उनमे दृढ व्यक्ति होने के गुण है वर्तमान मत्रिमडल पर उन्होने अपना पूरा प्रभाव स्थापित कर लिया है और राजस्थान काग्रेस के आदेशो को मत्रिमन्डल द्वारा क्रियान्वित किए जाने के लिए वे कृत सकल्प हैं। उन्होने मुख्य

मन्त्री को एक पत्र भेजा है जिसमे उन्होने सोलह सूत्री कार्यक्रम दिया है जिसको उनके मत्री मडल को शीघ्र से शीघ्र क्रियान्वित करना है। उस कार्यक्रम मे नीचे लिखे महत्वपूर्ण विषयो का समावेश किया गया है। किसानो से अनाज की लेवी, किसानो के अधिकार, जागीर क्षेत्र मे बन्दोबस्त, नियत्रित वस्तुओ का वितरण, मिलो मे श्रमिको के विवाद, सरकार द्वारा पेन्शन तथा अन्य देय का भुगतान, राजकीय कर्मचारियो में असतोष, सरकारी तत्र मे से भ्रष्टाचार को हटाना, राजस्थान प्रशासकीय सेवा मे राजस्थान के बाहर के लोगो को भरती करने का निषेध, सरकारी तन्त्र द्वारा पूर्व राजस्थान के जागीरदारो को दी गई सुविधाओ को सम्पन्न करना, और शेष राजस्थान के जागीरदारो को पूर्व राजस्थान के समान अधिकारच्युत करना, पिछडे तथा आदिवासी वर्गो का उत्थान और जागीरी क्षेत्र मे बन्दोबस्त को लागू करना।

यह पत्र राजस्थान प्रदेश कांग्रेस मे पढा गया और मुख्यमन्त्री से उसका उत्तर देने के लिए कहा गया।

मुख्य मंत्री श्री व्यास ने राजस्थान प्रदेश कांग्रेस को आश्वासन दिया कि उनका मन्त्रिमन्डल कांग्रेस द्वारा निर्देषित सुझावो के अनुसार जनता को सुविधाएं प्रदान करेगा। उन्होने कहा कि वे उन जागीरदारो के विरुद्ध कठोर कदम उठायेगे जो किसानो को परेशान करते हैं। सेवाओ के एकीकरण को आगे रोक दिया गया है और इससे पहले किये गए एकीकरण के सबध मे जो शिकायते है उनकी जाच की जावेगी। पूर्व राज्य की राजधानियो के महत्व को वे बनाए रखने और इनके विकास का प्रयत्न करेगे।

कहने का तात्पर्य यह है कि मुख्यमन्त्री ने वर्माजी के कार्यक्रम को स्वीकार कर लिया। वर्माजी के कांग्रेस के अध्यक्ष पद से हट जाने के उपरान्त मत्रिमडल पर सगठन का प्रभाव क्षीण हो गया।